एक ओंकार सतिगुरू प्रसादि ॥

जन्म साखी दस गुरु

अर्थात्

सूरज प्रकाश

www.9009.co.in

ੴ एक ओंकार सतिगुरू प्रसादि ॥ ੴ

जन्म साखी दस गुरू

अर्थात्

सूरज प्रकाश

www.9009.co.in

विषय-सूची

	पृष्ठ
मंगल	१५
श्री गुरु नानक देव जी—पहली पातिशाही	१७
गुरु आगमन से पहले देश की दशा	१७
गुरु अवतार का कर्त्तव्य	१७
गुरु जी का अवतार	१८
गुरु जी के अवतार का सृष्टि पर प्रभाव	१८
महिता कालू जी ने जन्मकुण्डली बनवाना	१८
पं. हरिदयाल ने बालक के लक्षण देखने	१८
गुरु जी की बाल लीला	१९
पाँधे के पास पढ़ने बैठना	२०
मुल्लाँ के पास पढ़ने बैठना	२२
जनेयु पहनने की रस्म करनी	२४
संस्कृत पढ़ने के लिए पंडित पास पढ़ने भेजना	२६
गाय, भैंस चराना तथा खेती हरी करनी	२७
साँप ने छाया रहनी	२८
माता तृप्ता जी का प्यार	२८
खेती करनी	२८
गुरु जी ने खेती नष्ट कर देनी और वैराग्य धारण कर लेना	२९
वृक्ष की छाया खड़ी करनी	२९
राए बुलार की श्रद्धा	३०
वैद को उपदेश	३०
सच्चा सौदा करना	३२
पिता कालू चन्द जी ने चाँटे मारने	३२
सुलतानपुर लोधी जाना	३३
मोदी की नौकरी करनी	३३
मंगनी और शादी	३४
गुरु जी की सन्तान	३४
मोदीखाने का दूसरी बार हिसाब होना	३५
मोदीखाने का तीसरी बार हिसाब होना	३५
वेईं नदी में प्रवेश	३५

	पृष्ठ
सचखण्ड से निरंकारी उपदेश	३६
मोदीखाना त्याग कर शमशान भूमि में जा बैठना	३७
नवाब और काजी के साथ नमाज पढ़ने की लीला	३७
पहली उदासी पूर्वी प्रदेश की	३८
भाई लालो के पास ऐमनाबाद में	३८
मलिक भागो का ब्रह्मभोज और उसको उपदेश	३९
ऐमनाबाद के खान का लड़का बीमार होना	३९
गुरु जी ने तलवंडी जाना	४०
राए बुलार को उपदेश	४२
सज्जन ठग को उपदेश	४२
कुरुक्षेत्र सूर्यग्रहण	४३
पश्चिम की तरफ पानी (हरिद्वार के पांडों के साथ चर्चा	४४
दिल्ली के बादशाह सिंकदर लोधी को उपदेश	४५
मथुरा वृंदावन में उपदेश	४६
गोरख मता—योगियों से चर्चा	४६
नानक मता प्रसिद्ध होना	४८
मीठा रीठा	४८
अयोध्या नगरी	४९
काशी (बनारस) पंडितों के साथ चर्चा	४९
पटना शहर—सालस राए जौहरी का प्रसंग	५०
गया—पितृगति	५२
बुद्ध गया	५३
ढाका बंगाल कामरूप देश	५३
जगननाथ पुरी	५४
कलियुग के साथ वार्तालाप	५५
एक नगर के राजे को उपदेश	५६
कटक शहर भैरों के पुजारी से चर्चा	५७
आगरे शहर माई-जस्सी का प्रेम	५७
रुहेल खंड गुलाम छुड़ाए	५७
बेबे नानकी के पास सुलतानपुर लोधी	५८

www.9009.co.in

	पृष्ठ
लाहौर से तलवण्डी	५८
दीपालपुर कोढ़ी निस्तारा	५८
सुलतानपुर बेबे नानकी के पास	५९
कीर्तपुर साईं बुड्ढण शाह के पास	५९
सिआलकोट हमजा गौंस	६०
मूला किराड़ 'मरना सच्च और जीउणा झूठ'	६१
लाहौर शहर दुनी चंद को उपदेश	६२
पखोके रंधावे करतारपुर बसाना	६३
दूसरी उदासी दक्षिण—दिशा	**६४**
सरसा के पीर के साथ चर्चा	६४
बीकानेर में सरेवड़े साधु के साथ चर्चा	६५
कौडे राक्षस का उद्धार	६६
संगलादीप के राजा शिवनाथ को उपदेश	६६
कजली बन में भर्थरी योगी से चर्चा	६७
बहावलपुर उच्च के पीर के साथ चर्चा	६८
तीसरी उदासी—उत्तर दिशा की	**६९**
मटन का ब्रह्म दास	६९
बदरी नाथ कैलाश पर्वत	६९
चौथी उदासी—पश्चिम दिशा की	**७१**
टिल्ला बाल गुंदाई	७२
चोहा साहिब	७२
सखर भखर और साध बेला	७३
मक्के का काबा फेरना	७३
मदीने की यात्रा	७५
हमीद कारूँ को उपदेश	७७
नसीहत नामा	७८
गुरु जी ने बगदाद जाना	८०
ईरान, तुरकिस्तान और काबल जाना	८३
हसन अबदाल वली कंधारी का अहंकार तोड़ना (पंजा साहिब)	८३
सिआलकोट जाना-मूले किराड़ की मौत	८५
सैदपुर ऐमनाबाद-भाई लालो के पास	८६
वापसि करतारपुर परिवार के पास	८९
गृहस्थी का धर्म सिद्धान्त	८९

	पृष्ठ
अचल बटाले शिवरात्रि का मेला सिद्ध गोष्ट	९०
सिद्धों ने हार स्वीकार करनी और गुरु जी का गुणगान करना	९३
मुलतान के पीरों के पास	९४
करतारपुर निवास	९५
श्री लहिणा जी से मिलाप	९६
श्री लहिणा जी की गुरु पदवी	९७
साहिबज़ादों की ईर्ष्या	९७
गुरु जी का ज्योति-ज्योत समाना	९८
श्री गुरु अंगद साहिब जी—दूसरी पातिशाही	**१००**
गुरु दर्शन की प्रेरणा	१०१
श्री लहिणा जी का प्रेम और श्रद्धा	१०१
परीक्षा	१०२
श्री लहिणा जी को गुरु पदवी	१०५
श्री गुरु अंगद देव जी का खडूर आवास	१०६
श्री गुरु अंगद जी ने प्रगट होना	१०६
गुरु जी का नित्यकर्म	१०६
मनोरंजन	१०७
आप जी के पास श्री अमरदास जी ने आना	१०८
जन्म साखी लिखवानी	१०८
हमायूँ बादशाह का अहंकार दूर करना	१०८
एक तपस्वी योगी की ईर्ष्या	१०९
भाई पारो जुलका	१११
गुरु जी के और सिक्ख	१११
भाई दीपा नारायण दास और बूला	१११
हरीके गाँव का अहंकारी चौधरी	१११
खडूर का मिरगी रोग वाला शराबी	११२
श्री गुरु अमरदास जी की प्रारम्भिक कथा	११३
श्री गुरु अंगद साहिब जी की शरण में आना	११४
श्री अमरदास जी ने घाल घालनी	११६
वर की प्राप्ति	११७
श्री अमरदास जी को वरदान	११८
श्री अमरदास जी का गोइंदवाल बसने जाना	११८
गोइंदवाल का निर्माण	११९

	पृष्ठ
श्री गुरु अंगद साहिब जी ने गोइंदवाल जाना	११९
श्री अमरदास जी को गुरुगद्दी	१२०
श्री गुरु अंगद साहिब जी ने ज्योति-ज्योति समाना	१२१
श्री गुरु अमरदास जी—तीसरी पातिशाही	१२३
गुरु जी का नित्य कर्म	१२४
गुरु जी ने सावण मल्ल को हरीपुर भेजना	१२५
सावण मल्ल को अहंकार हो जाना	१२७
राजे ने गुरु जी के दर्शन करने आना	१२८
बाबा दातू जी का विरोध	१२९
गुरु जी ने बासरके जा कर गुप्त होना	१३०
शेखों को उन के किए हुए फल	१३१
डल्ले गाँव के सिक्ख और सुलतानपुर का भाई महेशा	१३२
नेइए ज्वर की कथा	१३३
भाई जग्गा निहाल हुआ	१३४
भाई खानू मईआ और गोविंद	१३५
डल्ले गाँव के सिक्खों को उपदेश	१३६
श्री जेठा जी ने गोइंदवाल आना	१३७
बीबी भानी जी के साथ शादी	१३९
बाउली का निर्माण करना	१४०
काबल की एक पतिव्रता माई	१४१
माणक चंद जीवड़ा का प्रसंग	१४२
बाउली स्नान का महातम	१४२
बैसाखी का मेला करना	१४३
गुरु जी का तीर्थ यात्रा को जाना	१४३
पद्म रेखा बताने वाले पंडित को वरदान	१४७
बाउली का शुभोद्घाटन करना और लोभी तपा	१४८
मथो मुरारी	१४९
गोंदे के पुत्र की ईर्ष्या	१५०
एक माई का पुत्र जीवित किया	१५१
अकबर बादशाह ने लंगर के लिए झबाल परगणा देना	१५२
लंगड़े की टाँग ठीक करनी	१५२
श्री गुरु अमरदास जी ने ज्योति-ज्योत समाना	१५३
श्री गुरु रामदास जी—चौथी पातिशाही	१५६
पहली अवस्था	१५६
श्री जेठा (रामदास) जी ने गोइंदवाल जाना	१५६
श्री रामदास जी की शादी संतान	१५७
श्री (गुरु) रामदास जी ने सेवा करनी	१५७
लाहौर के क्षत्रि सोढियों का क्रोध	१५७
क्षत्रि ब्राह्मणों की अकबर के पास शिकायत	१५९
श्री रामदास जी ने लाहौर जाना	१५९
बीबी भानी जी की सेवा और वरदान	१६०
गुरुगद्दी के लिए परीक्षा	१६१
झबाल प्रगणे की जागीर	१६३
गुरु चक्क की नींव रखनी	१६४
संतोखसर ताल की नींव रखनी	१६४
श्री (गुरु) रामदास जी का गोइंदवाल जाना	१६५
अमृत तीर्थ की पुरातन कथा	१६५
आयु और गुरुगद्दी का वरदान	१६६
बीबी भानी जी को वरदान	१६७
श्री गुरु रामदास जी का वैराग्य	१६८
गुरु के चक्क आना	१६९
सिद्धों से चर्चा	१६९
एक तपस्वी का भ्रम निवृत करना	१७१
सिक्खों को सेवा का उपदेश	१७२
पिंगले और रजनी का प्रसंग	१७३
गुरु जी का अपने सम्बन्धियों की प्रार्थना को स्वीकार करके लाहौर जाना	१७५
भाई हिंदाल को वरदान	१७६
भाई गुरदास जी को आगरे भेजना	१७६
बाबा श्री चंद जी ने आना	१७७
सिक्ख की रहनी का उपदेश	१७७
श्री (गुरु) अर्जन देव जी को लाहौर भेजना	१७८
भाई आदम को पुत्र का वरदान	१७९
महानंद, बिधीचंद, जापा मईया और नईया खुल्लर आदि सिक्खों को उपदेश	१८१
श्री (गुरु) अर्जन देव जी ने लाहौर से पत्र लिखने	१८३

www.9009.co.in

	पृष्ठ
श्री (गुरु) अर्जन देव जी को गुरुगद्दी	१८४
बाबा पृथी चंद जी का झगड़ा	१८४
गुरु जी ने गोईंदवाल चले जाना	१८५
बैकुंठ गमन	१८६
कुल आयु और गुरुगद्दी का समय	१८६
श्री गुरु अर्जन देव जी—पाँचवी पातिशाही	**१८७**
अवतार धारण करना	१८७
दोहिता-बाणी का बोहिथा	१८७
श्री गुरु अर्जन देव जी की शादी	१८८
गुरुगद्दी का तिलक	१८८
बाबा प्रिथी चंद का विरोध और श्री गुरु अर्जन देव जी का धैर्य	१८९
प्रिथी चंद ने क्रोध करके अमृतसर आना	१८९
प्रिथी चंद जी का सुलही खाँ को मिलना	१८९
भाई गुरदास जी का आगरे से आना	१९०
गुरु का लंगर और नमकीन रोटियाँ	१९०
भाई गुरदास जी ने संगत को प्रेरित करना	१९१
बाबा प्रिथीचंद जी का भाई गुरदास के प्रति क्रोध	१९२
श्री प्रिथीचंद जी और महादेव जी को गुज़ारा मिलना	१९२
मिहरवान का जन्म	१९३
गुरु तीर्थ की सेवा सब से उत्तम सेवा	१९३
राजा मण्डी ने अमृतसर आना	१९३
गुरु तीर्थ की महिमा	१९४
भाई कल्याण	१९४
संतोखसर की सेवा	१९७
गुरु जी के प्रसिद्ध प्रेमी सिक्खों की वार्ता	१९८
भाई मंझ (गुरु का बोहिथा)	१९८
भाई बाहडू	२००
भाई बहिलो	२००
भाई बुधू	२०२
काबल वाली माई	२०३
गंगा राम ब्राह्मण	२०४
भाई अजब और अजायिब	२०५

	पृष्ठ
पंडित गंगाराम के वरदान से मूलचंद का जन्म	२०५
हरिमंदर की उसारी	२०६
विष्णु भगवान मनुष्य का रूप धारण करके कार सेवा करने आया	२०६
तरनतारन सरोवर की रचना	२०७
भाई हेमे के पास-छापड़ी गाँव	२०९
चोला भांजन	२०९
डल्ले गाँव	२१०
करतारपुर नगर की नींव रखना	२११
वडाली निवास	२१२
(श्री गुरु हरिगोबिंद जी ने अवतार धारण करना)	२१२
छः हरटा कूआँ लगवाना	२१३
गुरु जी ने पुनः अमृतसर आ जाना	२१३
श्री हरिगोबिंद जी को सीतला निकलनी	२१४
बाबा प्रिथीचंद जी ने हेहर गाँव में दुख निवारण सरोवर लगवाना	२१४
ठाकर पूजा पण्डित को उपदेश	२१५
शहर के बाणियों की प्रार्थना	२१६
बीबी भानी जी का परलोक गमन	२१७
गुरु जी का लाहौर जाना	२१७
संमन और मूसन का प्रेम	२१७
ननकाणे साहिब के दर्शन	२१९
सहिंसरे गाँव गुरु की रोड़	२२०
डेरा बाबा नानक से गाँव बारठ बाबा श्री चंद जी के पास	२२०
सुखमनी साहिब की महिमा	२२१
बाबा मोहन जी से पोथियाँ लेनी	२२१
खारी बीड़	२२३
सत्ता बलवण्ड और भाई लधा परोपकारी	२२४
बाबा महादेव जी का परलोक गमन	२२५
भक्त, कान्हा, पीलो, छज्जु और शाह हुसैन	२२५
झूठ का त्याग और उपदेश	२२७
भाई पैड़ा, मोखा (पुत्र दान और सुख प्राप्ति)	२२७
बाला, कृष्णा को मन शान्ति का उपदेश	२२८

www.9009.co.in

	पृष्ठ
संमुख और बेमुख-समुन्दे को उपदेश	२२८
गुरमुख और मनमुख	२२९
ब्रह्म का आदि अंत	२३०
'करे कराए आपे प्रभु' और 'जैसा बीजै (बोए) सो (काटे) लुणे'	२३०
मन की शान्ति का साधन	२३१
चंदू लाल की लड़की का रिश्ता लौटाना	२३२
नारायण दास डल्ले ने लड़की का रिश्ता करना	२३३
सुलही खाँ ने चढ़ कर आना	२३३
सुलही खाँ की मौत	२३४
खुसरो ने गुरु जी को मिलना	२३५
गुरु जी ने लाहौर जाना	२३६
जहाँगीर का हुक्म	२३६
चंदू की कैद में	२३६
गुरु जी को कष्ट देने	२३७
१. पानी की उबलती हुई देग में बैठाना	२३७
२. गर्म रेत शरीर पर डालना	२३८
३. गर्म लोह पर बैठाना	२३८
साईं मीयाँ मीर का आना	२३८
चंदू की पुत्रवधू की श्रद्धा	२३८
गुरु जी ने शरीर त्यागना	२३९
अमृतसर पहुँच कर सिक्खों ने साका बताना	२४०
श्री गुरु हरिगोबिंद जी—छेवीं पातिशाही	**२४१**
अवतार	२४१
श्री गुरु हरिगोबिंद जी ने गुरुगद्दी पर बैठ कर प्रण करना	२४१
गुरु जी के विवाह	२४२
घोड़े और शस्त्रों की भेंट स्वीकार करनी	२४२
युद्ध अभ्यास और प्रसंग सुनने	२४३
गुरु जी का नित्य कर्म	२४३
चंदू ने चिट्ठी लिखनी	२४४
चंदू ने जहाँगीर को भड़काना	२४४
जहाँगीर ने गुरु जी को दिल्ली बुलाना	२४४
दिल्ली मजनूं टिले डेरा और जहाँगीर से भेंट	२४५

	पृष्ठ
गुरु जी ने शेर मारना	२४५
गुरु जी ने आगरे जाना	२४६
एक घसियारे ने सच्चे पातशाह के दर्शन करने	२४६
एक सिक्ख लड़की को दर्शन देने	२४७
गुरु जी का ग्वालियर के किले में प्रवेश	२४७
किले में कैद बावन राजे	२४९
जहाँगीर को रात स्वप्न में डर लगना	२४९
गुरु जी का कैदी राजाओं सहित किले से बाहर आना	२५०
चंदू को जहाँगीर ने गुरु जी के हवाले करना	२५१
जहाँगीर के संग गुरु जी का अमृतसर आना	२५२
गुरु जी का लाहौर जाना और चंदू की मौत	२५३
जहाँगीर ने कश्मीर जाना	२५४
सोढी मेहरवान और चंदू के पुत्र का मेल	२५४
गुरु जी ने मेहरवान को मिलना	२५५
जहाँगीर बादशाह का परलोक गमन	२५५
काबल से सिक्ख ने घोड़ा लेकर आना	२५५
घोड़े का बीमार होना और बादशाह ने काजी को देना	२५६
काजी ने घोड़े का मूल्य माँगना	२५७
गुरु जी का साईं मीयाँ मीर जी को मिलना	२५८
कौलां ने गुरु जी की शरण आना	२५८
काजी ने घोड़े का मूल्य लेने अमृतसर आना	२६०
काजी और कौलां का मिलाप	२६०
काजी और शाहजहाँ में हुई बात से वज़ीर खाँ ने गुरु जी को सूचित करना	२६१
गुरु जी का दूसरा विवाह	२६१
नानक मते जाने की तैयारी	२६२
पैंदे खाँ को नौकर रखना	२६३
नानक मते भाई अलमस्त के पास	२६३
योगियों ने गोरख नाथ को बताना	२६४
योगियों ने गुरु जी को करामातें दिखाना और पराजित होकर दौड़ जाना	२६५
गुरु जी का वापिस पंजाब आना	२६६

www.9009.co.in

	पृष्ठ
श्री गुरदित्ता जी का जन्म	२६६
वैसाखी का मेला करना	२६७
अमृतसर शब्द चौकी नियत करनी	२६७
गुरु जी ने अमृतसर आना	२६८
सिक्खों के प्रति उपदेश	२६८
गुरु जी ने कशमीर जाना	२७१
माई भाग भरी को निहाल करना	२७२
कटूशाह की अभेदता	२७३
वापिस पंजाब आना	२७४
जपुजी के भाव अर्थ	२७४
ननकाना साहिब के दर्शन	२७५
मदर में गुरु अर्जन देव जी के जूते के दर्शन	२७६
गुरु जी का तीसरा विवाह	२७६
अमृतसर पहुँचना और साहिबज़ादों के जन्म	२७७
श्री गुरदित्ता जी की मँगनी	२७७
बीबी वीरो की मँगनी	२७७
श्री अटल राए जी का जन्म	२७८
श्री गुरु तेग बहादर जी का जन्म	२७८
कौलसर सरोवर की रचना	२७९
गुरु जी ने बकाले जा कर मेहरे की भावना पूरी करनी	२७९
माता गंगा जी ने शरीर त्यागना	२८०
बिबेकसर की रचना	२८०
बीबी वीरो के विवाह की मिठाई को तुर्क लूटेंगे, गुरु जी का श्राप	२८२
गुरु जी के शिकारियों ने बादशाह का बाज पकड़ना	२८३
लोहगढ़ का किला निर्माण संवत् १६८५	२८३
पहला युद्ध मुख़लिस ख़ाँ से	२८४
झबाल गाँव में बीबी वीरो का विवाह करके गोइंदवाल चले जाना	२८५
शाहजहाँ को मुख़लिस ख़ाँ और फौज के मरने की खबर	२८५
करतारपुर निवास और माता कौलां का परलोक गमन	२८६
गुरु जी ने करतारपुर से चलना	२८६
भगवान दास घेरड़ की मौत	२८७
युद्ध गाँव रुहेला संवत् १६८७	२८७
गुरु जी ने शहर बसाना	२८८
शुद्ध जपुजी साहिब के पाठ का महात्म्य तथा माई गोपाल	२८९
नए नगर का नाम श्री हरिगोबिंदपुर रखना	२९०
बाबा बुड्ढा जी का परलोक गमन	२९०
गुरु जी ने करतारपुर के दर्शन करने	२९१
अमृतसर दीवाली का मेला	२९१
माई देसां को पुत्रों को बरदान	२९२
श्री अटल राए जी की महिमा	२९३
भाई गुरदास का घोड़े खरीदने काबल जाना	२९४
भाई जी ने काशी पहुँच जाना	२९६
गुरु जी ने भाई गुरदास को बुलाना	२९६
सूबा जालन्धर के पुत्र वली ख़ाँ ने गुरु जी के विरुद्ध शाहजहाँ के पास शिकायत करनी	२९७
बाबा श्री चंद जी से मेल	२९९
साईं बुडन शाह की वार्ता और कीरतपुर का बसाना	३००
वडाली में सूर का उद्धार करना	३०२
गुरु स्थानों की यात्रा	३०३
भाई गुरदास जी का स्वर्ग सिधारना (गुरु जी गोइंदवाल)	३०५
बाबा गुरदित्ता के घर साहिबज़ादे का जन्म	३०५
डरोली भाई साईं दास के पास जाना	३०५
भाई साध और उसकी स्त्री को सिक्खी दान	३०६
भाई साधु और रूपे का प्रेम गुरु जी ने जल पीना	३०७
माता दमोदरी जी का गुरपुरी सिधारना	३०९
बीबी रामो, भाई साईं दास और उसके पिता नारायण दास का परलोक गमन	३१०
परिवार की गुरु जी ने करतारपुर भेज देना	३१०
गुरु ज़ी ने भाई रूपे को मंझी बख़्शनी	३१०
कांगड़ निवासी जोधशाह ने दर्शन को आना	३११

www.9009.co.in

	पृष्ठ
लाहौर के सूबे ने काबल के सिक्खों से गुरु जी के लिए लाए दो घोड़े छीन लिए	३११
भाई बिधी चंद ने एक घोड़ा ले आना	३१२
भाई बिधी चंद ने दूसरा घोड़ा लाना	३१३
जंग की तैयारी	३१५
बादशाही फौज की चढ़ाई	३१६
ललाबेग की मौत पर गुरु जी की जीत	३२०
शहीदों की सम्भाल	३२०
मराज सिक्ख को श्राद्ध देना	३२१
हसन खाँ को काबल का सूबा बनाने का वचन	३२१
जोध राए के पास कांगड गाँव	३२३
कालू नाथ का प्रसंग	३२३
एक अजगर साँप का उद्धार	३२४
जोधराए और सलेमशाह को वरदान तथा कांगड़ से कूच	३२५
करतारपुर निवास	३२६
दीवाली का मेला	३२६
वैसाखी का मेला	३२७
पैंदे खाँ को वरदान	३२८
पैंदे खाँ के दामाद ने गुरु जी का बाज पकड़ लेना	३२८
पैंदे खाँ की बेईमानी	३२९
पैंदे खाँ के घर से गुरु जी ने बाज आदि चीजें मँगवा कर उसको अपने द्वारा निकाल देना	३२९
पैंदे खाँ ने सूबा जालन्धर के पास जाना	३३०
पैंदे खाँ ने बादशाह से मिल कर सेना चढ़ानी	३३१
गुरु जी की तस्वीर उतारनी	३३२
अनवर खाँ ने भेद लेने आना गुरु जी को शाही लश्कर आने की खबर मिली	३३२
धीरमल ने पैंदे खाँ को चिट्ठी लिखनी	३३३
काले खाँ ने आक्रमण की तैयारी करनी	३३४
गुरु जी की तैयारी	३३४
दोनों दलों का टकराव	३३४
पैंदे खाँ, असमान खाँ, कुलब खाँ, काले खाँ की मौत और गुरु जी की जीत	३३६

	पृष्ठ
गुरु जी का कीरतपुर चले जाना	३३८
बुढण शाह के साथ मिलाप	३३९
बुढण शाह का परलोक गमन	३३९
गुरु जी का दरबार	३३९
बाबा गुरदित्ता जी का गाए जीवित करना	३४०
श्री गुरदित्ता जी का परलोक गमन	३४१
श्री हरि राए जी को दस्तारबंदी	३४२
दीवाली का मेला	३४२
श्री हरि राए जी का प्रण	३४२
बाबा आनंद जी को कीरतपुर बुलाना	३४३
श्री गुरु हरि राए जी को गुरुगद्दी का विचार	३४३
श्री धीरमल का कीरतपुर आना और गुरु बन कर बैठना	३४४
श्री हरि राए जी को गुरुगद्दी	३४५
सूरजमल के प्रति प्रसन्नता	३४६
माता नानकी जी का वरदान लेना	३४६
गुरु जी की स्वर्ग सिधार जाने की तैयारी	३४७
श्री हरि राए जी के प्रति वचन	३४७
सिक्खों और परिवार को आज्ञा	३४८
संगत के प्रति वचन	३४८
स्वर्ग की ओर ध्यान	३४९
श्री गुरु हरि राए जी — सातवीं पातिशाही	**३५०**
अवतार धारण करना	३५०
श्री गुरु हरि राए जी का गुरु कर्तव्य	३५०
संगत का दर्शनार्थ आना-जाना	३५१
भाई भगतू और भाई फेरु की वार्ता	३५१
शाहजहाँ का गुरु जी से हरड़ और लौंग लेना	३५३
एक माई की श्रद्धा पूरी करनी	३५४
संगत को उपदेश धर्म की कृत करनी.	
नाम जपना और लंगर लगाना	३५६
भक्त भगवान की वार्ता	३५६
गुरु जी का करतारपुर जाना	३५७
भाई भगतू का दर्शन करने आना	३५८
खोटा धन खाने से दुखों की प्राप्ति	३५९

www.9009.co.in

	पृष्ठ
भाई जीवन का एक ब्राह्मण पुत्र के लिए प्राण त्यागने	३५९
दारा शिकोह ने गुरु जी के दर्शन करने	३६०
औरंगज़ेब का गुरु जी को दिल्ली बुलाना और गुरु जी का राम राए को भेजना	३६१
गुरु जी का राम राए जी को त्यागना	३६४
गुरु जी ने जंगल प्रदेश को जाना	३६५
काले के भतीजों को वरदान देना	३६६
भाई भगतू के पुत्र गौरे की वार्ता	३६७
सिक्खी का जहाज़ फूटना	३६९
श्री हरि कृष्ण जी को गुरुगद्दी	३६९
श्री गुरु हरि राए जी का ज्योति-ज्योत समाना	३७०
श्री गुरु हरि कृष्ण जी—आठवीं पातिशाही	**३७१**
अवतार धारण करना	३७१
राम राए जी ने क्रोध करना	३७१
औरंगजेब ने राजा जै सिंह के द्वारा गुरु जी को दिल्ली बुलाना	३७२
गुरु जी का दिल्ली आना	३७२
अनपढ़ पुरुष से गीता के अर्थ कराने	३७२
दिल्ली जा कर रोगियों के रोग दूर करना	३७३
बादशाह का शहिज़ादे को गुरु जी के पास भेजना	३७४
जै सिंह की रानी ने गुरु जी की परख करनी	३७४
गुरु जी को सीतला	३७५
ज्योति-ज्योति समाना	३७५
श्री गुरु तेग बहादर जी—नवम् पातिशाही	**३७६**
अवतार	३७६
विवाह तथा संतान	३७६
गुरुगद्दी की प्राप्ति	३७६
पहली जीवन अवस्था	३७७
आप जी ने गुरु प्रकट होना	३७८
गुरु जी का गद्दी लगाकर बैठना, धीरमल के आदमियों ने चढ़ावा उठा कर ले जाना	३७९
मक्खन शाह का सब कुछ वापिस ले आना परन्तु गुरु जी का वापिस करवा देना	३८०
गुरु जी ने अमृतसर दर्शन करने आना	३८०
गुरु जी ने बकाले से चलना	३८२
सिरी गुरु ग्रंथ साहिब को ब्यास नदी में रखना	३८२
गुरु जी का कीरतपुर जाना	३८३
कीरतपुर से आगे आ कर डेरा करना	३८३
आनंदपुर की नींव रखनी	३८४
एक पीर का भ्रम निवृत करना	३८५
तीर्थ यात्रा के लिए जाना	३८६
खारा कूआँ मीठा करना	३८६
सेखों गाँव का चौधरी तिलोका	३८७
हडियाए नगर बुखार रोग दूर किया	३८८
गांव ढिलवां गाए दान और यज्ञ करना	३८८
गुरु जी का प्रताप देखकर तपस्वी का सिक्खी धारण कर लेना गाँव भंदेर और अलीशेर के लोगों का भोलापन	३८९
खीवा कलां के मनमुख लोग	३९०
भिखीविंड गाँव का देसू सरदार	३९१
सुलीसर, एक चोर की वार्ता	३९३
धमधान गाँव- दूध लहू के समान	३९३
धमधान के एक लोभी ज़िमींदार	३९४
कुरुक्षेत्र में सुरस्ती तीर्थ	३९५
कैथल डेरा	३९५
बारने गाँव ज़िमींदार से तम्बाकू छुड़ाना	३९६
थानेसर मेला-सूर्य ग्रहण	३९७
बनी बदरपुर	३९७
सुढैल गाँव ब्राह्मणों को दान	३९८
बड़ा मानकपुर संत मलूक दास का भ्रम दूर करना	३९८
पूर्व प्रदेश की संगत को प्रेम और श्रद्धा	४००
प्राग राज निवास	४००
श्री दसमेश जी का गर्भ प्रवेश	४०१
श्री गुरु जी का काशी जाना	४०२
जौनपुर की संगत के मुखी गुरबख्श को वरदान	४०२
सासाराम नगर चाचे फग्गू का प्रेम	४०३

www.9009.co.in

	पृष्ठ		पृष्ठ
गया छेत्र-पिंड दान	४०४	साहिबज़ादे को भांति-भांति की शिक्षा मिलनी	४२७
पटने निवास	४०४	गुरुगद्दी का तिलक लगना	४२८
रास बारहवीं आरंभ हुई--		शस्त्र विद्या का अभ्यास करना	४२८
राजाराम सिंघ जै पुरीए का मिलाप	४०५	विवाह	४२९
राजे के साथ कामरूप देश को जाना	४०६	गुरु जी का नित्य कर्म	४२९
ब्रह्म पुत्र दरिया के किनारे दमदमा तैयार कराना	४०६	दूनीचंद मसंद काबल से बहुमूल्य चांदनी लाया	४३०
कामरूप के राजे का गुरु जी की शरण में आना	४०६	आसाम के राजा की ओर से प्रासादी हाथी भेंट	४३०
आसाम के राजा राम राए को पुत्र का वरदान	४०७	दूसरा विवाह	४३१
साहिबज़ादे के जन्म की खबर मिलनी	४०८	गुरु जी ने रणजीत नगारा बजाना और	
सतिगुरु तेग बहादर जी का पटने वापिस आना	४०८	राजा भीम चंद का ईर्ष्या करनी	४३२
गुरु जी ने पटने से आनंदपुर आना	४०८	नाहन के राजे मेदनी प्रकाश का बुलावा	४३३
औरंगज़ेब का ज़ोर ज़ुल्म	४०९	गुरु जी का पाऊँटा नगर बसाना	४३४
कश्मीरी पंडित गुरु जी की शरण	४१०	पीर बुद्धू शाह का गुरु जी के पास आना	४३४
साहिबज़ादे की धार्मिक दृढ़ता	४१०	नित्य कर्म	४३५
गुरु जी को दिल्ली बुलाना	४११	राजा फतह शाह की मेदनी प्रकाश से सन्धि	
गुरु जी बंदी खाने में	४१२	करवानी	४३५
भाई मती दास तथा दिआले की शहीदी	४१३	शेर मारना	४३६
साहिबज़ादे को गुरुगद्दी देनी	४१४	पीर बुद्धू शाह वापिस सढौरे को—सिक्ख सेवकों	
गुरु जी की शहीदी	४१४	का आना-जाना	४३७
शीश और धड़ की सम्भाल	४१५	बुद्धू शाह ने पाँच सौ पठान नौकर रखवाने	४३७
श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी—दसवीं पातिशाही	**४१६**	बाबा राम राए जी से मेल	४३८
गुरु जी को खबर भेजनी	४१६	पुरातन ग्रंथों के अनुवाद और वाणी की रचना	४३९
पीर भीखन शाह ने दर्शन करने	४१७	कपाल मोचन तीर्थ का मेला	४३९
गुरु जी की बाल्यावस्था	४२०	बाबा राम राए जी का स्वर्ग सिधारना	
गंगा के चरण छूने	४२०	तथा मसंदों का सुधार	४४०
पानी भरने वालियों के घड़े तोड़ने	४२०	राजा फतह शाह को गुरु जी ने तंबोल भेजना तथा	
सोने का कड़ा गंगा नदी में फेंकना	४२१	भीम चंद के कहने पर तंबोल वापिस करना	४४१
पंडित शिवदत्त को राम स्वरूप में दर्शन देना	४२२	भंगानी का युद्ध	४४२
राजा फतह चंद की रानी का प्रसंग	४२३	पठान नौकरों की गद्दारी	४४२
काज़ी रहीम खाँ करीम खाँ का बाग अर्पण करना	४२४	बुद्धूशाह और योद्धाओं को वरदान	४४३
साहिबज़ादे का पंजाब आना	४२५	भंगानी युद्ध का व्योरा	४४४
लखनौर निवास करना	४२६	गुरु जी का आनंदपुर वापिस आना	४४५
आनंदपुर प्रवेश	४२७	गुरु जी ने किला बनवाना	४४६
		भीम चंद ने गुरु जी के पास वज़ीर भेजना	४४६

www.9009.co.in

	पृष्ठ		पृष्ठ
भीम चंद का गुरु जी को मिलने आना	४४७	भाई फेरू मसंद	४७०
कवियों का सम्मान और बखशिशें	४४८	दुनी चंद और नंद चंद की वार्ता	४७१
जेब काटने वाले चोर को शिक्षा	४४८	गाँव बजरूड़ निवासियों का सुधार	४७२
मीयाँ खाँ तथा अलफ खाँ की चढ़ाई	४४९	मेले का फल	४७२
युद्ध नादौण	४५०	शुद्ध गुरुवाणी पढ़ने का महात्म्य	४७३
आलसून गाँव के लोगों का सुधार	४५२	पाठ कीर्तन तथा कथा	४७४
साहिबजादे का जन्म	४५३	पाँच प्रकार की सिक्खी	४७४
आनंदपुर के चोरों का सुधार	४५३	चरण पाहुल तथा खंडे के अमृत की शक्ति	४७५
दिलावर खाँ की चढ़ाई तथा भांज	४५३	अगम्य वाक्य, भाई राम कौर के प्रति	४७५
हुसैनी युद्ध	४५४	आज्ञा मानने की व्याख्या	४७६
साहिबजादे का जन्म	४५६	गुरु की देग वाहिगुरु की देग है	४७७
ग्रंथों के अनुवाद व कवियों का सम्मान	४५६	सुनार सिक्ख नहीं	४७७
साहिबजादा फतह सिंघ का जन्म	४५६	सिक्ख को उपदेश	४७८
ब्राह्मणों की परीक्षा करनी	४५७	नाम की महिमा का उपदेश	४७९
पंडित केशोदास का प्रसंग	४५८	गुरु जी ने सिक्खों का छल प्रकट करना	४८०
हवन आरम्भ	४५८	भाई नंद सिंघ को उपदेश	४८१
पाँच प्यारों का चुनाव करना	४५९	माता जी ने ब्रह्म ज्ञानी के दर्शन करने	४८२
अमृत तैयार करके छकाना	४६०	कढ़ाह प्रसाद की लूट तथा भाई राम कुंवर	
शिक्षा	४६१	जी का श्राप	४८३
चार कुरहतें	४६२	भाई कुंवर जी ने अमृत छकना	४८५
गुरु जी ने आप अमृत छकना	४६२	भाई योगा सिंघ की वार्ता	४८५
गुरु जी ने यज्ञ करना तथा पंडित केशोदास ने		गुरु दरबार की रौणक	४८७
रूष्ठ जाना	४६२	गुरु जी के विरूद्ध राजा भीम चंद के पास	
राजा भीमचंद को सिक्खी धारण करने का उपदेश	४६३	प्रजा की पुकार	४८८
मसंदो से छुटकारा	४६४	राजा बलीया चंद तथा आलम चंद से मुठभेड़	४८८
गधे को शेर की पौशाक पहना कर सिक्खों को		शाही सेना से युद्ध	४८९
शिक्षा	४६५	पहाड़ी राजाओं ने औरंगजेब से सहायता माँगी	४८९
सारा सिक्ख और आधा सिक्ख	४६६	पैंदे खाँ की मौत और सिंघों की जीत	४९०
भाई नंद लाल की वार्ता	४६६	बाईधार के राजाओं की आनंदपुर पर चढ़ाई	४९०
लंगर की परीक्षा	४६७	पहाड़ी राजाओं ने आनंदपुर को घेरा डाल कर	
होला खेलना	४६७	बैठ जाना	४९२
सुथरे शाह की श्रद्धा	४६८	पहाड़ निवासियों ने किला तोड़ने के लिए	
हिन्दू तथा तुर्कों ने ईर्ष्या करनी	४६९	मस्त हाथी भेजना	४९२
भंडो ने मसंदों की नकल करनी	४६९	भाई बिचित्र सिंघ ने हाथी को भगा देना	४९३

www.9009.co.in

	पृष्ठ
राजा भीम चंद ने सूबा दिल्ली तथा	
सरहंद से सहायता माँगी	४९३
पहाड़ी राजाओं ने गाए की सुगंध देकर गुरु जी से	
आनंदपुर खाली करवाना	४९४
पहाड़ियों का गुरु जी पर तोप का गोला मारना	४९५
सूबा सरहंद का फौज लेकर आना	४९५
सूबा वज़ीर खाँ का अफ़सोस करना	४९६
गुरु जी का सतलुज नदी के पार जाना	४९६
राजा बिसाली के पास निवास	४९७
राजा बिभौर के पास निवास	४९७
आनंदपुर वापिस	४९८
राजा भीम चंद ने सलाह करनी	४९८
गुरु जी ने शस्त्र तैयार करवाने	४९९
दशाहरा मनाना	४९९
भाई जग्गा सिंघ की निर्माण सेवा	४९९
पत्थर तथा पतासे से शिक्षा	५००
मेंढक का प्रमाण	५००
भीम चंद की खोटी सन्धि	५०१
रवालसर के मेले पर राजाओं से मेल	५०१
मंडी के राजे के पास किला गोबिंदगढ़ का निर्माण	५०२
आनंदपुर में वापिसी	५०२
जीव की अन्तिम गति का भेद	५०२
और उपदेश	५०३
लाल सिंघ की ढाल की परीक्षा	५०४
अरदास की महत्ता	५०५
पूर्ण सिक्ख के लक्षण	५०५
सिक्ख के धारण करने योग्य बातें	५०६
कुरुक्षेत्र के मेले जाना	५०६
चमकौर नगर के पास डेरा करना	५०६
भीम चंद ने तुर्क सेना से हमला करवाना	५०७
पहाड़ी राजाओं से जंग	५०७
सैदा खाँ ने गुरु जी की शरण ग्रहण करनी	५०७
रमज़ान खाँ की मौत तथा आनंदपुर की लूट	५०९
सैदा खाँ ने गुरु जी की शरण ग्रहण करनी	५१०

	पृष्ठ
आनंदपुर को घेरा	५१०
सिंघों ने तुर्कों की रसद लूटनी	५११
गुरु जी ने सब धन सतलुज में फेंक देना	५११
राजाओं और बादशाह की तरफ से सौगंध पत्र	५१२
सिंघों ने बेदावा लिख कर देना	५१२
गुरु जी ने आनंदपुर छोड़ना	५१३
पहाड़ियों और तुर्कों ने पीछे से हमला करना	५१४
परिवार का बिछड़ना	५१४
चमकौर की गढ़ी में मोर्चा	५१४
युद्ध चमकौर और बलिदान	५१५
पाँच सिंघों की प्रार्थना स्वीकार करना	५१५
गुरु जी का चमकौर की गढ़ी से निकल जाना	५१६
माछीवाड़े पहुँचना	५१७
तीन सिंघों का मिलाप और गुलाबे के घर	५१८
भाई संगत सिंघ संत सिंघ की शहीदी	५१८
गनी खाँ नबी खाँ का गुरु जी को मिलना	५१९
उच्च के पीर बनना	५१९
नबी खाँ गनी खाँ को वरदान	५२०
गाँव राए कोट चौधरी कल्ले के पास	
छोटे साहिबज़ादे की शहीदी की खबर	५२०
चौधरी कल्ले को कृपाण का वरदान	५२१
दीने गाँव निवास करना	५२१
औरंगज़ेब को चिट्ठी (ज़फरनामा) लिखना	५२२
गाँव दीने कोट कपूरा चौधरी कपूरे के पास	५२३
चौधरी कपूरे को श्राप	५२३
सांढी कोल के पास गाँव ढिलवाँ	५२४
ढिलवां से खिदराणे की ढाब तक	५२४
माझे के सिंघों ने बेदावा देना	५२४
वजीद खाँ ने पीछे लौट जाना	५२६
भाई महा सिंघ ने टूटी गंढणी तथा	
शहीदों का संस्कार करना	५२६
खिदराणे की ढाब को मुक्तसर का वरदान	५२७
भाई भागो की वार्ता	५२७
जैसा देश वैसा भेस	५२८

www.9009.co.in

	पृष्ठ
गाँव बजीदपुर डेरा	५२८
गाँव थेहड़ी ऐ नाथ का अहंकार दूर किया	५२८
बैराड़ नौकरों ने तनखाहें माँगनी	५२९
गुप्तसर खजाना रखना	५३०
ब्रह्मी फकीर अमृत छक कर अजमेर सिंघ	५३०
सुखू तथा घुदू का प्रेम	५३०
बग्गा सर की महिमा का प्रसंग	५३१
जस्सी आए चले, गुड़ खाए चले	५३२
तलवंडी चौधरी डल्ले के पास	५३२
डल्ले का अहंकार दूर करना	५३२
माता सुन्दरी जी तथा साहिब देवां जी ने दिलली से आना	५३४
डल्ले की श्रद्धा	५३४
युद्ध का कमरकस्सा खोलना तथा तलवंडी का नाम दमदमा रखना	५३५
शारीरिक तैयारी तथा अरदास करके किसी काम पर जाने की आज्ञा	५३५
डल्ले को सूबा सरहिंद की चिट्ठी	५३६
गुरु जी ने बठिंडे का किला देखना	५३६
दमदमे वापिस	५३७
सूबा सरहिंद की डल्ले को दूसरी चिट्ठी	५३७
डल्ले के ऊपर प्रसन्नता, गुरु जी ने वर्षा करानी	५३७
डल्ले को अमृत छकाना	५३८
भाई मनी सिंघ से गुरु ग्रंथ साहिब लिखाना	५३८
गुरु जी का दक्षिण दिशा को जाना	५३९
भाई धर्म सिंघ, पर्म सिंघ को वरदान	५४०
दादू द्वारे चर्चा	५४०
बाजों ने मोठ बाजरी खानी	५४२
भाई दया सिंघ का औरंगज़ेब से वापिस आना	५४३
बहादुर शाह ने गुरु जी से सहायता माँगनी	५४३
ताराजम की मौत और बहादुरशाह की जीत	५४४
नवम् गुरु जी की दिल्ली में यादगार स्थापित करनी	५४५
गुरु जी ने आगरे जाना	५४६
आगरे पहुँच कर निवास करना	५४६
बहादुरशाह को मिलना	५४७
आगरे से दक्षिण को जाना	५४७
बुरहानपुर निवास करना	५४८
नादेड़ पहुँचना	५४८
माधोदास बैरागी के साथ मेल-मिलाप	५४८
माधोदास को अमृत छका कर सिंघ सजाना	५४९
बंदा सिंघ को पाँच तीरों की बख्शिश तथा शिक्षा	५४९
बंदा सिंघ को पंजाब की ओर भेजना	५५०
नादेड़ में कौतुक	५५०
गुरु जी के महिल साहिब देवां जी तथा बाबा गुरबख्श सिंघ जी ने पंजाब आना	५५१
गुरु जी पर एक पठान का कटार से वार करना	५५२
सिरी गुरु ग्रंथ साहिब जी को गुरु स्थापित करना	५५३
सिंघों को धैर्य तथा अन्तिम उपदेश	५५३
चढ़ाई का कमर कस्सा	५५४
अनंत में अंत	५५५

www.9009.co.in

दस गुरु साहिबान का

मंगल

सवैया

इक जोत उदोतक रूप दसो शुभ,
होत अंधेर गुबार उदारा।।
जग मैं सु प्रकाश चहय करिबे,
उपदेश दियो सिख भे नर नारा।।
परलोक सहाइि अशोक करे,
इस लोक मैं राक करे सिरदारा।।
गुर ब्रिंदन के पग सुन्दर को,
अरबिंद मनो अविबंद हमारा ।।

(सू: प्र: रास १ अंसू २)

www.9009.co.in

कथा श्री गुरु नानक देव जी

गुरु आगमन से पहले देश की दशा

भाई गुरदास जी

चारे[1] जागे चहु[2] जुगी[3] पंचाइणि प्रभ आपे होआ।।
आपे पट्टी कलम आप आपे लिखणहारा होआ।।
बाझ गुरू अंधेर है खहि खहि मरदे बहु बिधि लोआ।।
वरतिआ पाप जगत्र ते धउल उडीणा निसदिनि रोआ।।
बाझ दइिआ बल हीण हो निघर चलो रसातल टोआ।।
खड़ा इकिते पैर ते पाप संग बहु भारा होआ ।।
थंमे कोइि न साध बिनु, साधु न दिसै जग विच कोआ।।
धरम धौल पुकारे तलै खड़ोआ ।। २२ ।। (वार : १)

गुरु अवतार का कर्त्तव्य

सुणी पुकार दातार प्रभु गुर नानक जग मांहि पठाइिआ।।
चरन धोइि रहिरास करि चरणांमृित सिखां पीलाइिआ ।।
पारब्रहम पूरन ब्रहम कलिजुग अंदर इिक दिखाइिआ।।
चारे पैर धरम दे चार वरण इिक वरन कराइिआ ।।
राणा रंक बराबरी पैरी पवणा जगि वरताइिआ ।।
उलटा खेल पिरंम दा पैरां उपरि सीस निवाइिआ ।।
कलिजुग बाबे तारिआ सतिनामु पढ़ि मंत्र सुणाइिआ।।
कलि तारण गुर नानक आइिआ ।। २३ ।। (वार : १)

---

१. हिदुओं के चार वरन और मुसलमानों के चार मज़हब।
२. चार जुगां सत्ययुग, द्वापर, त्रेता और कलियुग।
३. न्यायकर्त्ता ।

www.9009.co.in

गुरु जी का अवतार

ज़ोर-ज़बर और हाकमों के अत्याचारों से संतप्त सृष्टि की पुकार सुन कर अकाल पुरुष ने गुरु नानक जी के रूप में जगत जलंदे की रक्षा करने के लिए माता तृपता जी के गर्भ से महिता कालू चंद जी बेदी क्षत्रि के घर राए भोए की तलवंडी (अब ननकाणा साहिब) में कार्तक सुधी पूर्णामाशी संवत् १५२६ वि. को अवतार धारण किया।

गुरु जी के अवतार का सृष्टि पर प्रभाव

भाई गुरदास जी

सतिगुर नानक प्रगटिआ मिटी धुंध जगि चानणु होआ ।।
जिउं कर सूरज निकलिआ तारे छपे अंधेर पलोआ ।।
सिंघ बुके मिरगावली भंनी जाइि न धीर धरोआ ।।
जिथै बाबा पैर धरै पूजा आसण थापण सोआ ।।
सिध आसण सभि जगत दे नानक आदि मते जे कोआ ।।
घर घर अंदर धरमसाल होवै कीरतनु सदा विसोआ ।।
बाबे तारे चार चक नौ खंड पिरथमी सचा ढोआ ।।
गुरमुख कलि विच परगट होआ ।।२७।। (वार : १)

महिता कालू जी ने जन्मकुण्डली बनावाना

गुरु जी के प्रातः काल अवतार धारण के उपरान्त जब दिन हुआ, तो महिता जी ने पण्डित हरदियाल को बुला कर कहा कि बालक की जन्मकुण्डली बनाओ और लग्न महूर्त देख कर बताओ कि बालक कैसा होगा। माता-पिता तथा खानदान का नाम उज्ज्वल करने वाला होगा या कुछ काम-विगाड़ू होगा ?

पं. हरिदयाल ने बालक के लक्षण देखने

मानवमात्र ने पण्डित महिता जी को कहा कि बालक की दाय को बुला कर पूछो कि जन्म समय इस के मुँह से कौन सी आवाज़

निकली थी। तब दौलतां दाय ने आ कर बताया कि पण्डित जी ! मेरे हाथों में अनेक बालकों ने जन्म लिया है परन्तु इस तरह का बालक मैंने आज तक कोई नहीं देखा। और बालक तो जन्म लेकर रोते हैं परन्तु यह तो हँसता था और घर में ऐसे लगता था जैसे दोपहर का सूर्य निकल आया हो। सारे घर में सुगन्धि फैल गई थी। दौलतां दाय की यह बातें सुन कर पण्डित ने अनुभव कर लिया कि यह कोई अवतार पैदा हुआ है, इस के दर्शन करने चाहिए।

जब दौलतां दाय बालक को बाहर ले कर आई तो पण्डित हरदियाल ने उस के चिह्न-चक्र देख कर बताया कि महिता जी ! यह आप का बालक बहुत भाग्यशाली है, इस में सारे ही लक्षण शुभ प्रतीत होते हैं। यह या तो कोई चक्रवर्ती राजा होगा और अथवा कोई और बड़ा पुरुष जिस के सिर पर छत्र झूलेगा। इस का नाम मैं तेहरवें दिन रखूँगा। जब तेहरवाँ दिन हुआ माता और बालक ने स्नान कर लिया तो पण्डित हरदियाल ने जन्मकुण्ली से विचार करके बालक का नाम नानक रखा और महिता जी को कहा कि जिस तरह यह नानक नाम मिलाजुला हिन्दू-मुस्लमान का साँझा है, इसी तरह इस को दोनों ही अपना करके मानेंगे, यह दोनों का साँझा होगा। दोनों का उद्धार करेगा।

पण्डित जी की यह बातें सुन कर महिता जी बहुत प्रसन्न हुए और पण्डित जी को मर्यादा अनुसार आटा, गुड़, कपड़ा और नकद भेंट देकर विदा किया।

गुरु जी की बाल लीला

जब गुरु जी पाँच वर्ष के हो गए तो अपने हम-उमर बालकों के साथ खेलने लगे। गुरु जी अन्य बालकों को बहुत प्यार करते और उन्हें खाने और खेलने की वस्तुएँ घर से ले जा कर बाँट देते।

आप के इस स्वभाव को महिता कालू जी अच्छा नहीं समझते थे, जिस कारण कई बार आप को डाँट भी खानी पड़ती। मगर लोग आप के इस उदार स्वभाव की बहुत श्लाघा करते थे और साथी बालक आप के साथ बहुत प्रेम करते थे।

पांधे के पास पढ़ने बैठना

बाबा कालू जी ने आप जी को चुस्त और उदार देख कर पांधे के पास शुभ दिन-वार पूछ कर, नए वस्त्र पहना कर और पाँधे के लिए योग्य भेंट कुछ मिष्ठान्न और नकदी लेकर पाठशाला ले गए। गोपाल पांधे को अच्छी तरह प्रेम प्यारसहित हिन्दी पढ़ाने की पक्की करके महिता जी घर को आ गए। पाँधा गुरु जी को अपने हाकम राए बुलार के पटवारी कालू चंद जी का पुत्र समझ कर बड़े उत्साह और प्रेम से पढ़ाने लगे। कुछ दिन पढ़ाई के पश्चात् ही पाँधा आप जी की स्मरण-शक्ति को देख कर आप को एक होनहार बालक समझ कर बड़ी श्लाघा करता और महिता कालू जी के पास बड़ी उपमा करता कि आप जी का यह बालक बड़ा बुद्धिमान और होनहार है।

एक दिन गुरु जी ने पाँधे को कहा, पाँधा जी ! यह बंधन रूप लेखा अब मैंने नहीं पढ़ना। आप मुझे वह लेखा पढ़ाओ जो अन्त समय यमों के बंधनों से मुझे छुड़ाये। पाँधे ने कहा, अच्छा ! वह लेखा कौन सा है ? तब गुरु जी बोले—

सिरी रागु महला।। १।।

जालि मोहु घसि मसु करि मति कागदु करि सारु ।।
भाउ कलम करि चितु लेखारी गुरु पुछि लिखु बीचारु ।।
लिखु नामु सालाह लिखु लिखु अंतु न पारावारु ।। १।।
बाबा एहु लेखा लिखि जाणु ।। जिथै लेखा मंगीऐ
तिथै होइ सचा नीसाणु।। १।। रहाउ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब: पृ० १६)

www.9009.co.in

गुरु जी के यह विचार सुन समझ कर पाँधे ने कहा जो कुछ आप के विचार हैं यह ठीक हैं, मगर जो नाम जपने वाले हैं, उन को गरीबी दशा में देखा जाता है। फिर मरना भी सभी का समान रूप से ही होता है। इन बातों को देख कर मेरे मन में नाम स्मरण की विशेष महत्ता पाँधे के इन विचारों का उत्तर गुरु जी ने शब्द के दूसरे पद का उच्चारण किया—

सी रागु महला १

जिथै मिलहि वडिआईआ सद खुसीआ सद चाउ।।
तिन मुखि टिके निकलहि जिन मनि सचा नाउ।।
करमि मिलै ता पाईऐ नाही गली वाउ दुआउ ।। २।।

(स्री गुरु ग्रथ साहिब, पृ० १६)

पाँधा जी ! ज्ञानी और अज्ञानी के मरने में भेद है। जैसा कि अज्ञानी पुरुष अन्त को शोक और चिंता के साथ कई प्रकार के विषय-विकारों को लेकर मरते हैं, मगर नाम जपने वाले ज्ञानी लोग परमात्मा को सदा अपने अंग-संग देखते हैं और यमों से निर्भय होकर शरीर त्यागते हैं। फिर पांधे ने हैरान हो कर पूछा, महाराज! जो पुरुष सारी उमर रंग-तमाशों में ही व्यतीत कर देते हैं, कभी नाम स्मरणा नहीं करते, उनका अंत को क्या हाल होता है ?

गुरु जी बोले—

सिरी रागु महला १

इकि आवाहि इकि जाहि उठि रखीअहि नाव सलार ।।
इकि उपाए मंगते इकना वडे दरवार ।।
अगै गइआ जाणीऐ विण नावै वेकार ।। ३।।

(स्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ० १६)

जब पाँधे ने कहा, महाराज ! जो पुरुष कभी भूल कर भी नाम नहीं जपते, उन्हें मालक का डर क्यों नहीं लगता कि वे नाम स्मरण करें ।

गुरु जी फिर बोले—

सिरी रागु महला १

भै तेरै डरु अगला खपि खपि छिजै देह।।
नाव जिना सुलतान खान होदे डिठे खेह।।
नानक उठी चलिआ सभि कूड़े तुटे नेह ।।४।।६।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ० १६)

गुरु जी के यह वचन सुन कर पाँधे ने हाथ जोड़ कर आप जी से क्षमा माँगी कि अगर मैं ने अयोग्य बात कह दी है तो उसे क्षमा कर दें।

मुल्लां के पास पढ़ने बैठना

पाँधे गोपाल से लेखाकारी की पढ़ाई पूरी करके जब गुरु जी को कुछ महीने बीत गए तो महिता कालू चन्द जी आप को फ़ारसी पढ़ने के लिए मुल्लां कुतबदीन के पास ले गए। कुछ मिष्ठान्न और नकदी मुल्लां की भेंट रख कर कहा कि इस को प्यार से पढ़ाना, क्योंकि यह कुछ प्यार से ही पढ़ता है। जब इस तरह कुछ समय मुल्लां के पास पढ़ते हुए व्यतीत हो गया तो एक दिन गुरु जी गाँव से बाहर एक वृक्ष के नीचे चादर ताणकर चुप-चाप लेट गए। तत्पश्चात् जब रोज़ ही उस तरह गुरु जी करने लगे तो महिता कालू चन्द जी ने यह समझ कर कि इस को किसी भूत-प्रेत की छाया है। उन्हों ने मुल्लां को कहा कि नानक को चल कर देखो, उस को कोई छाया पड़ गया लगता है। तब मुल्लां ने गुरु जी के पास बैठ कर दुआ की कि हे नेक बालक! तेरे ऊपर परवरदगार की मेहर हो, तुम मुझे बताओ कि तेरे इस तरह चुप रहने का और लेटे रहने का क्या कारण है ? खुदा के लिए आपने मन की बात बताओ। तब गुरु जी उठ कर बैठ गए और यह वचन तिलंग रागु में बोले—

दुनीआ मुकामे फानी तहकीक दिल दानी ।। मम सर मूइ
अजराईल गिरफतह दिल हेचि न दानी ।। १ ।। रहाउ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिबः पृ० ७२१)

हे मुल्लां जी ! मैं यह दुनियाँ नश्वर जान कर सदा मौत से डरता रहता हूँ, इस लिए मेरी यह दशा है। मुल्लां ने कहा, अभी तो आप बच्चे हो, आप को यह बातें नहीं सोचनी चाहिए। जवान हो कर स्त्री-पुत्रों के सुख प्राप्त करो और संसार के रंगों का आनन्द भोगो।

गुरु जी ने कहा, मुल्लां जी ! मौत का कुछ पता नहीं, किस समय आ जाए, इस लिए मन को विकारों की ओर से मोड़ कर परमेश्वर आगे सदा ही विनयशील बने रहना चाहिए। यथा —

रागु तिलंग महला १

यक अरज गुफतम पेसि तो दर गोस कुन करतार ।।
हका कबीर करीम तू बेऐब परवदगार ।। १ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ० ७२१)

मुल्लां ने कहा आपकी यह बात सच्ची है कि मन को सदा प्रभु के स्मरण में लगाए रखना चाहिए, परन्तु फिर भी क्योंकि आपके माता-पिता और सम्बन्धी आपकी इस दशा पर दिलगीर हैं। आप उठ कर इन के साथ घर जाओ और काम-काज करके सब को प्रसन्न रखो। इस पर गुरु जी बोले—

रागु तिलंग महला १

जन पिसर पदर बिरादरां कस नेस दसंतगीर ।।
आखर बिअफतम कस न दारद चूं सवद तकबीर ।। २ ।।

(स्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ० ७२१)

मुल्लां जी ! किसी भी स्त्री-पुरुष सम्बंधी ने अंत समय साथ नहीं देना, इस लिए इन केलिए परमात्मा को नहीं भूलना चाहिए।

www.9009.co.in

यह बात सुन कर मुल्लां ने गुरु जी की बहुत श्लाघा की कि आप इस छोटी अवस्था में ही परमेश्वर के रंग में रंग गए हो। जब गुरु जी ने शब्द का तीसरा पद उच्चारण किया—

रागु तिलंग महला १

सब रोज गसतम दर हवा करदेम बदी खिआल ।।
गाहे न नेकी कार करदम ममईं चिनी अहवाल।। ३ ।।

(स्री गुरु ग्रंथ साहिबः पृ० ७२१)

अर्थात्— पुरुष रात-दिन बुरे विकारों में घूमता रहता है। नेकी का काम कभी भी नहीं करता। मेरा भी यही हाल है। मेरी श्लाघा क्यों करते हो ? मुल्लां ने कहा महाराज ! आपकी, जिन का मन सदा ही ईश्वर के रंग में रंगा रहता है, बराबरी और कोई नहीं कर सकता। तब गुरु जी ने कहा—

रागु तिलंग महला १

बदबखत हम चु बखील गाफिल बे नजर बेबाक ।।
नानक बुगोयद जनु तुरा तेरे चाकरां पा खाक ।। ४ ।।

(स्री गुरु ग्रंथ साहिबः पृ० ७२१)

अर्थात्— मैं अभाग्यशाली, ईर्ष्यालु तथा भुलकड़ हूँ जो ईश्वर की ओर से निर्भय हो कर नेकी-बदी का ख्याल नहीं करता। मैं उस प्रभु का सेवक हूँ और उस के दासों की चरणधूलि चाहता हूँ।

गुरु जी के यह उपदेशमय वचन सुन कर मुल्लां ने गुरु जी को नमस्कार किया और अपने अयोग्य वचन बोलने की क्षमा माँगी।

जनेयु पहनने की रस्म करनी

जब गुरु जी ग्यारह साल के हो गए तो महिता कालू जी ने अपनी वंश की रीति के अनुसार गुरु जी को जनेयु पहनाने का दिन निश्चित करके पुरोहित हरदियाल को कहा। नियत दिन पुराहित ने महिता कालू जी के घर आकर पहले गाए के गोबर का

लेप किया। फिर उस पर चौंक पूरा और गुरु जी को अपने पास बैठा कर कुछ मन्त्र उच्चारण करके आप के गले में पहनाने के लिए जनेयु पकड़ा और बताया कि यह क्षत्रि धर्म की मर्यादा आदि ब्रह्ममा से ही चली आई है। प्रत्येक क्षत्रि और ब्रह्ममण के लिए इस को धारण करना जरूरी है। गुरु जी ने कहा पुरोहित जी जब यह मैला हो जाता है, इसको उतार कर और नया पहनना पड़ता है और अंत समय यहाँ ही रह जाता है। इस लिए जनेयु वह पहनना चाहिए जो सदा साथ निभे और कभी मैला न हो। पण्डित ने पूछा, वह किस तरह का जनेयु है ? गुरु जी ने यह श्लोक उच्चराण किया—

दइआ कपाह संतोखु सूतु तु गंढी सतु वटु ।।
एहु जनेऊ जीअ का हई त पांडे घतु ।।
ना एहु तुटै न मलु लगे ना एहु जलै न जाइ ।।
धंनु सु माणस नानका जो गलि चले जाइ ।।

पण्डित ने कहा यह यज्ञोपवीत (जनेयु) कैसा है। मैं आप को पहनाता हूँ। यह वेद धर्म में पवित्र माना गया है, इस सम्बन्ध में गुरु जी ने कहा—

चउकड़ि मुलि अणाइआ बहि चउकै पाइआ ।।
सिखा कंनि चड़ाईआ गुरु ब्राहमणु थिआ ।।
ओहु मुआ ओहु झड़ि पइआ वतगा गइआ ।।१।।

अर्थात्—पण्डित जी यह चार कौड़ी का धागों का जनेयु खरीद कर चौंके पर बैठा कर आप पुरुष के गले में डालते हो और उपदेश देते हो कि तेरा गुरु ब्राह्मण है, मगर जब वह पुरुष मर जाता है तो वह जनेयु भी साथ ही जल जाता है मगर फिर वह जनेयु के बिना ही दरगाह में पुरुष जाता है। तब इस का लाभ क्या?

www.9009.co.in

पण्डित ने कहा वह कौन सा जनेयु है जो कभी न मैला होता है, न टूटता है और अंत समय दरगाह में साथ जी जाता है। गुरु जी बोले—

नाइ मंनिऐ पति ऊपजै सालाही सचु सूतु ।।
दरगह अंदरि पाईऐ तगु न तूटसि पूत ।। ३ ।।

अर्थात्—परमेश्वर का नाम स्मरण से कपास उपजती है और परमेश्वर की श्लाघा करने से सूत तैयार होता है। इस सूत के धागे का जनेयु अगर धारण कर लें तो वह पवित्र जनेयु कभी नहीं टूटता और दरगाह में भी साथ ही जाता है।

गुरु जी के यह विचार सुन कर पण्डित सहित सभी सम्बन्धी चुप हो गए। मगर महिता कालू जी ने यह कहा कि यह कोई अलौकिक बालक है जो अपनी गति को आप ही जानता है। तत्पश्चात् भोजन खा कर और महिता कालू जी से दक्षिणा ले कर सब विदा हो गए।

संस्कृत पढ़ने के लिए पंडित पास पढ़ने भेजना

तत्पश्चात् महिता कालू जी ने गुरु जी को पण्डित बृज लाल की पाठशाला में संस्कृत विद्या पढ़ने के लिए बैठा दिया। कुछ दिनों के पश्चात् जब पण्डित को भी गुरु जी ने ओंकार के अर्थ करके सुनाए, तो वह हैरान हो गया। पण्डित ने महिता कालू चन्द जी को कहा कि महिता जी ! यह आप का बच्चा किसी के पढ़ाने योग्य नहीं है, यह सब को आप पढ़ाने वाला है, गुरु जी यहाँ से भी पढ़ाई छोड़ कर आँखें बन्द करके घर में ही उदासीन हो कर लेट गए।

गाय भैंस चराना तथा खेती हरी करनी

गुरु जी को इस तरह चुप-चाप बगैर किसी कामकाज के घर में ही लेटे रहता देख कर महिता जी ने सोचा कि इस को किसी काम पर लगा देना चाहिए जहाँ इस का मन भी लगा रहेगा और घर का कुछ काम भी चलता जाएगा। यह सोच कर महिता जी ने गुरु जी को कहा कि आप गाय भैंसों को बाहर चारागाह में चरा लिया करो। तब दूसरे दिन गुरु जी गाय भैंसों को बाहर चारगाह में चराने के लिए ले गए। तीन चार दिन सब काम ठीक चलता रहा। सुबह आप हर रोज पशुओं को बाहर ले जाते और शाम के समय घर को ले आते।

एक दिन गुरु जी गाय भैंसों को चरती छोड़ कर आप अन्तर्ध्यान हो कर अपनी मस्ती में बैठे रहे, पास ही जिमींदार का एक हरा-भरा खेत था। गाय भैंसों ने उस खेत में जा कर खेत का बहुत नुकसान किया। कुछ मुंह के साथ चर लिया और कुछ पाओं के नीचे मस्ल दिया। इतने में उस खेत का मालिक भी आ गया, वह अपने खेत की बुरी हालत देख कर बहुत क्रुद्धित हुआ और उसने गाय भैंसों को घेर कर राए बुलार के आगे पुकार करी कि आप जी के पटवारी के लड़के ने गाय भैंसों को छोड़ कर मेरा खेत नष्ट कर दिया है। मुझे मेरी खेती का मुआवज़ा दिलाया जाए। तब गुरु जी ने प्रातः काल ही राए बुलार को कहा, राए जी ! अपना आदमी भेज कर देख लो, इस की खेती नहीं नष्ट हुई, यदि नष्ट हो गई हो तो हम हानि की पूर्ति कर देंगे। तब राए बुलार ने जब अपना आदमी भेज कर देखा तो खेती बिल्कुल ठीक-ठाक और हरी-भरी खड़ी थी। जिमींदार तथा अन्य लोग इस अद्भुत चमत्कार को देख कर बड़े हैरान हुए और गुरु जी की स्तुति करने लगे।

साँप ने छाया करनी

गुरु जी रोजाना ही गाय भैंसों को चराने के लिए जंगल में ले जाते थे। एक दिन वैशाख महीने की दोपहर के समय गाय भैंसों को एक वृक्ष की छाया में बैठा कर आप पास ही वृक्ष के नीचे लेट गए। सूर्य ढलने के साथ जब वृक्ष की छाया भी ढल गई तो आप जी के मुख पर सूर्य की धूप देख कर एक सफेद साँप अपनी फन की छाया करके बैठ गया। उसी समय राए बुलार शिकार खेल कर वापिस घोड़े पर अपने आदमियों के साथ घर को आ रहा था, उस को देख कर साँप वहाँ ही अलोप हो गया। राए बुलार इस चमत्कार को देख कर बहुत हैरान हुआ और गुरु जी को नमस्कार करके मन ही मन में आप की महिमा करता हुआ घर को आ गया।

माता तृप्ता जी का प्यार

एक दिन सन्ध्या के समय जब गुरु जी गाय-भैंसे चरा कर घर आए तो माता तृप्ता जी ने महिता जी को कहा कि गर्मी की लू के साथ नानक जी का रंग भी काला हो गया है, इस को इतनी गर्मी की ऋतु में गाय-भैंस चराने न भेजा करो। महिता जी ने अपनी सुपत्नी से पुत्र प्यार की ऐसी बातें सुन कर गुरु जी को पशु चराने के लिए बाहर भेजना बंद कर दिया, तो आप जी घर में ही आनंद मनाने लगे।

खेती करनी

जब ग्रीष्म ऋतु निकल गई और वर्षा ऋतु सावन भाद्रव आ गई तो महिता जी ने यह विचार करके कि इसे बेकार रहने देना ठीक नहीं है। अब वर्षा के पानी से भरी हुई धरती बोने योग्य हो गई है और फसल बोने का समय है। इस लिए नानक जी को खेती बोने का काम करना चाहिए। इस तरह एक नौकर के साथ बैलों

की जोड़ी आदि तैयार करके महिता जी ने गुरु जी को गेहूँ बोने के लिए खेतों में भेज दिया। गुरु जी ने खुले-खुले सिआड़ निकाल कर सारा बीज बखेर दिया। चार पाँच दिनों के पश्चात् जब गुरु जी के पिता महिता कालू जी ने जा कर देखा तो सारे खेत में बहुत घनी हरियाली खड़ी है तो वह बहुत प्रसंन हुए और गुरु जी की प्रशंसा करने लगे।

गुरु जी ने खेती नष्ट कर देनी और वैराग्य धारण कर लेना

पिता कालू चन्द जी की धन कमाने की खुशिओं को पूरा करने के लिए गुरु जी जब खेत की रखवाली करने के लिए जाते तो आप किसी भी पशु को बाहर न निकालते, जिस कारण सारी खेती पशुओं ने चर ली। एक दिन खेती को नष्ट हुई देख कर महिता जी ने गुरु जी को बहुत क्रोध के बचन कहे।

खेती का काम त्याग कर गुरु जी गाँव से बाहर दूर एक वृक्ष के नीचे सारा दिन अकेले बैठे रहते। हर समय वैराग्य में ही मस्त रहते, कुछ दिनों के पश्चात् उन्होंने खाना-पीना भी त्याग दिया।

वृक्ष की छाया खड़ी रहनी

एक दिन दोपहर ढली के समय बाहर जा कर आप जी एक वृक्ष के नीचे चादर बिछा कर सोए हुए थे। उस समय सब वृक्षों की परछाइयाँ ढल चुकी थीं। परन्तु जिस वृक्ष के नीचे गुरु जी सोए हुए थे, उस की परछाई वैसी की वैसी ही वहाँ खड़ी थी। दो घड़ी के पश्चात् अपने खेतों की निगरानी करता हुआ घोड़े पर सवार होकर उधर से राए बुलार आ गया। यह अद्भुत लीला देख कर वह बड़ा हैरान हुआ। उस ने अपने आदमियों को बताया कि देखो

जिस वृक्ष के नीचे श्री गुरु नानक जी सोए हुए है, उस की परछाई वहीं पर ही खड़ी है, यह निश्चय ही कोई अवतार हैं। परन्तु अपने आप को प्रगट नहीं करना चाहते। इस से पहले भी एक अद्भुत लीला देखी थी कि इन पर एक साँप ने अपनी फन से छाया की हुई थी। इस प्रकार की स्तुति करता हुआ राए बुलार गुरु नानक देव जी को नमस्कार करके घर आ गया।

राए बुलार की श्रद्धा

राए बुलार ने महिता कालू जी को कहा कि तुम बहुत भाग्यशाली हो जिस के घर नानक जैसा पुत्र पैदा हुआ है। इसे आज से कड़वा शब्द न बोलना। मेरी ओर से एक सुन्दर पौशाक ले जाओ और नानक जी को पहनाओ। आगे से भी मैं उन की हर प्रकार की जरूरत अनुसार सेवा करने के लिए तैयार हूँ। महिता जी ने कहा, राए जी ! आप जी का दिया हुआ सब कुछ है। बस मुझे यही चिंता खाए जाती है कि इस को जिस काम पर भी लगाया जाता है उस को इस ने संवारा नहीं बल्कि बिगाड़ा ही है। अब भी देखो मस्तानों की तरह गाँव से बाहर जा कर सारा दिन बैठा रहता है। आप इस की बहुत प्रशंसा करते हो, परन्तु मुझे तो इस में कुछ भी नज़र नहीं आता।

राए बुलार ने कहा— महिता कालू चन्द ! तेरी बुद्धि माया के फेर में फँसी हुई है, इन के दैवी गुणों को नहीं जान सकती। तुम चिंता न करो तुझे जल्दी ही सब कुछ पता चल जाएगा।

वैद को उपदेश

इस तरह वर्षा ऋतु के पश्चात् जब शीत ऋतु आ गई तो गुरु की एकाग्र चित्त होकर घर में इकांत ही लेटे रहते। एक दिन माता जी ने कहा—पुत्र! इस तरह चुप-चाप बीमारों की तरह क्यों लेटे

www.9009.co.in

रहते हो, अपने घर का कोई काम-काज दिल लगा कर किया करो। अगर खेती का काम अच्छा नहीं लगता तो कोई वाण्ज्य-व्यापार का काम कर लो। काम करोगे तो मन लगा रहेगा, घर में धन आएगा, कोई भला क्षत्रि आपको देख कर अपनी लड़की का रिश्ता दे देगा, आप परिवार वाले हो जाओगे। देख ! तेरा रंग पीला हो गया है, शरीर शिथिल और कमज़ोर हो गया है। अगर तुझे कोई रोग है तो बता दो मैं वैद को बुला कर तेरा इलाज करा दूँ। माता जी की इन बातों का गुरु जी ने कोई उत्तर न दिया।

तब माता जी ने निश्चय ही गुरु जी को कोई रोगी समझ कर, वैद हरिदास को बुला कर गुरु जी की नबज़ दिखाई। जब वैद को रोग का कोई पता न लगा तो गुरु जी ने यह श्लोक उच्चारण किया—

सलोक।। वैद बुलाइआ वैदगी पकड़ि ढढोले बांह।।
भोला वैद न जाणई करक कलेजे माहि ।। १।।
वैदा वैदु सु वैदु तूं पहिला रोग पछाणु ।।
ऐसा दारू लोड़ि लहुं जितु वंञै रोगा घाणि ।।
जितु दारू रोगु अठिअहि तनि सुखु वसै आइ ।।
रोगु गवाइ हि आपणा त नानक वैदु सदाइ ।। २।।

वैद हरिदास आप जी के यह विचार सुन कर हैरान हो गया और हाथ जोड़ कर कहने लगा—महाराज ! आप जी के वचन सुन कर मेरा अज्ञान दूर हो गया है, आप कृपा करके मेरे मन का रोग (अहंकार) भी दूर कर दो। वैद की विनय सुन कर गुरु जी ने कहा, सत्संग किया करो, अहंकार रोग को दूर करने वाला यही एक बड़ी औषधि है।

www.9009.co.in

सच्चा सौदा करना

इसी दशा में ही गुरु जी को जब दो महीने बीत गए तो फिर अपने आप ही इच्छापूर्वक उठ कर थोड़ा-थोड़ा खाना-पीना और चलना-फिरना आरम्भ कर दिया।

माता-पिता आप जी की सुधरी दशा को देख कर बहुत खुश हुए। सभी सम्बन्धी आप जी को देखने आए और सब ने खुशी प्रगट की और कहा कि इस का जो आत्मिक रोग था वह दूर हो गया है। महिता जी को बधाई हो। जब कुछ समय आप जी को घर बाहर मेल-मिलाप करते व्यतीत हो गया तो एक दिन महिता जी ने आप जी को कहा कि अपने साथ भाई बाले को लेकर बीस रुपए ले जाओ और किसी दूसरे नगर से लाभदायक व्यापार करके लाओ।

गुरु जी ने आज्ञा का पालन करते हुए पिता जी से बीस रुपए पकड़ लिए और बाले को लेकर घर से निकल पड़े। चलते-चलते रास्ते में गाँव चूहड़काणे के पास आप जी को एक साधु मण्डली डेरा लगा कर बैठी हुई मिल गई। यह सारी मण्डली ही भजन स्मरण में लगी थी। गुरु जी ने बाले को कहा कि यहाँ हमें एक सच्चा व्यापार मिला है। इस को छोड़ना नहीं चाहिए।

यह विचार करके गुरु जी ने चूहड़काणे नगर में से बीस रुपए की खाद्य सामग्री आटा, चावल, मिष्ठान्न, घी आदि लेकर साधुओं को भेंट कर दिया और आप उनको प्रणाम करके भाई बाले के साथ तलवंडी को खाली हाथ वापिस आ गए।

पिता कालू चन्द जी ने चाँटे मारने

इस तरह जब गुरु जी खाली हाथ ही वापिस लौट आए तो गाँव के पास आ कर एक सूखे तालाब के किनारे वृक्ष के नीचे बैठ गए

और भाई बाला अपने घर आ गया। महिता कालू जी ने जब भाई बाले को पूछा कि नानक जी कहाँ हैं ? और क्या सौदा करके आए हो तब भाई बाले ने सारी बात बताई कि नानक जी बीस रुपए की खाद्यसामग्री ले कर चूहड़काणे गाँव के पास बैठे साधुओं को दे आए हैं और आप बाहर तालाब के पास बैठे हैं। यह बात सुन कर महिता जी ने सूखे तालाब के पास जा कर गुरु नानक जी को दो थप्पड़ जोश से लगाए और कुछ बढ़-चढ़ कर कहा। इस बात का जब राए बुलार को पता चला तो उस ने महिता कालू जी को बुला कर कहा। तुम इन को कुछ न कहा करो। यह जो भी नुकसान करें मुझ से ले लिया करो। यह तुम्हारे घर पर तुम्हारी कुलों और संसार को तारने वाला पुत्र हुआ है। इन का तुम निरादर न किया करो।

सुलतानपुर लोधी जाना

गुरु जी की बड़ी बहिन बीबी नानकी जी सुलतानपुर लोधी जै राम जी के साथ विवाहित थी। उस समय ही जब वह दोनों तलवंडी आए तो महिता कालू जी ने और राए बुलार ने सलाह करके गुरु जी को उन के साथ सुलतानपुर लोधी भेज दिया और कहा कि वहाँ अपने पास ही इन को किसी अच्छे से काम पर लगा देना।

मोदी की नौकरी करनी

पहले कुछ समय गुरु जी अपने बहिन-बहनोई के पास बेकार बैठे आनन्द लेते रहे। तद्उपरान्त जै राम जी ने आप जी को नवाब दौलत खां के पास मोदी का काम करने के लिए लगवा दिया। गुरु जी के पास सुबह शाम तक मोदी खाने सौदा लेने वालों की भीड़ लगी रहती। गुरु जी जब ग्राहकों को सौदा तोल कर देते तो तेरह तेरह अंक की तोल के बाद फिर तेरह ही कह कर तोलने लगते।

आप जी का यह व्यवहार देख कर ईर्ष्यालु निंदकों ने नवाब को कहा कि आप जी का मोदी सब रसद लुटाए जा रहा है। थोड़े समय में ही वह मोदीखाना खाली कर जाएगा। यह शिकायत सुन कर नवाब ने अपने अधिकारियों को मोदीखाने का हिसाब करने के लिए आज्ञा दी। जब हिसाब हुआ तो गुरु जी को एक सौ पैंतीस रुपए की बढ़ोत्री निकली। बढ़ौत्री सुनकर नवाब बड़ा प्रसन्न हुआ और गुरु जी फिर पहले की तरह ही खुले हाथों मोदीखाने का धंधा करने लगे।

मंगनी और शादी

जब कुछ समय मोदीखाने का धंधा करते हुए बीत गए तो आप जी की कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई। आप जी को योग्य वर देख कर पखोके रंधावे गाँव के मूल चंद चोणा क्षत्रि ने दास (लागी) को भेज कर अपनी पुत्री सुलखनी जी का शगन भेज दिया। जैराम जी और बीबी नानकी जी ने बड़ी प्रसंनता के साथ शगन स्वीकार कर लिया। तत्पश्चात् दिन नियत करके ७ जयेष्ठ सम्वत् १५४५ विक्रमी को सुलतानपुर से बारात चल कर बटाले, जहाँ मूल चन्द चोणे का घर था, वहाँ पहुँची और दो दिन बारात को रख कर मूल चन्द ने विदा किया। डोली ले कर आप खुशियों और बाजों के साथ सुलतानपुर लोधी पहुँचे।

गुरु जी की सन्तान

गुरु जी के घर माता सुलखनी जी के उदर से पाँच सावन, संवत् १५५१ विक्रमी को बाबा श्री चन्द जी और १६ फाल्गुन संवत् १५५३ विक्रमी को बाबा लखमी चन्द जी पैदा हुए।

मोदीखाने का दूसरी बार हिसाब होना

गुरु जी मोदीखाने की नौकरी पहले की तरह ही उदारता के साथ चला रहे थे। ईर्ष्यालु अधिकारियों ने फिर नवाब के पास चुगली करी कि आप का मोदी बड़ी बेपरवाही से मोदीखाने लुटाए जा रहा है। थोड़े दिनों में ही मोदीखाना खाली हो जाने वाला है। यह बात सुन कर नवाब ने फिर अपने मुंशी को मोदीखाने का हिसाब करने के लिए कहा। मुंशी ने बड़ी सूझ-बूझ और मेहनत से हिसाब की जाँच करके नवाब को बताया कि मोदी के तीन सौ इक्कीज रुपए सरकार की ओर ज्यादा निकले हैं। अपने मुंशी से यह बात सुन कर नवाब बड़े खुश हो गए और गुरु जी को फिर अपने मोदीखाने की नौकरी करने के लिए कहा।

मोदीखाने का तीसरी बार हिसाब होना

जब इसी तरह खुले हाथ मोदी की नौकरी करते हुए कुछ समय व्यतीत हो गया तो चुगलखोरों ने फिर नवाब को जाकर कहा कि अब तो मोदी पहले से भी दुगना-चौगना मोदीखाना लुटाए जा रहा है। बिना किसी लिखने पढ़ने के सभी को जो भी उस के पास आए, बिना मापतोल के ही सब कुद दिए जाता है। अगर सब कुछ लुटा कर दौड़ गया तो फिर क्या ले लोगे? नवाब ने उन की बात पर भरोसा कर के फिर अपने मुंशी को कहा कि जल्दी से जल्दी मोदीखाने की पड़ताल करके बताओ कि बढ़ा है कि कम हुआ है। इस बार भी जब मुनशी ने पड़ताल की तो गुरु जी का सात सौ साठ रुपया नवाब की ओर ज्यादा निकला।

वेईं नदी में प्रवेश

एक दिन अपनी नित्य की मर्यादा के अनुसार जब गुरु जी प्रातः काल नदी में स्नान करने गए तो किनारे पर अपने कपड़े सेवादार

को पकड़ा कर आप पानी में गोता लगा कर इस तरह अलोप हुए कि बाहर न आए। सेवादार ने नवाब दौलत खां और भाई जैराम जी को जा कर बताया। इन्होंने बहुत ढूँढा, नदी में आदमी भेजे, जाल डलवाए, परन्तु आप जी का कोई पता न चला।

सचखण्ड से निरंकारी उपदेश

जब तीन दिन के बाद गुरु जी वेईं नदी से बाहर आए तो आप जी के दर्शन करने वालों की भीड़ लग गई। स्नेहियों ने पूछा, महाराज ! आप तीन दिन नदी में किस तरह रहे? तब गुरु जी ने बताया कि यहाँ से हम निरंकार के पास सचखण्ड गए थे। निरंकार जी ने हमें आज्ञा की है कि आप लोगों में प्रेमा भक्ति पैदा करके सत्य का प्रचार करो। तब गुरु जी ने विनयपूर्वक यह शब्द उच्चारण किया—

सिरी रागु महला १।।

कोटि कोटी मेरी आरजा पवणु पीअणु अपिआउ।।
चंदु सूरजु दुइ गुफै न देखा सुपनै सउण न थाउ।।
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ।। १।।
साचा निरंकारु निज थाइ।। सुणि सुणि आखणु आपणा
जे भावै करे तमाइ ।। १।। रहाउ।। कुसा कटीआ वार
वार पीसण पीसणा पाइ अगी सेती जालीआ भसम सेती
रलि जाउ।। भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा
नाउ।। २।। पंखी होइ कै जे भवा सै असमानी जाउ।।
नदरी किसै न आवऊ ना किछु पीआ न खाउ।। भी तेरी
कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ।। ३।। नानक
कागद लख मणा पड़ि पड़ि कीचै भाउ।। मसू तोटि न
आवई लेखणि पउणु चलाउ।। भी मेरी कीमति ना पवै हउ
केवडु आखा नाउ।। ४।।

(स्री गुरु ग्रंथ साहिबः पृ० १४)

www.9009.co.in

इस पर प्रसन्न हो कर अकाल पुरुष निरंकार ने हमें यह गुर मन्त्र—

१ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ।। (जपुजी)

दिया, और आज्ञा दी कि इस को आप जपो और कलिजुग के जीवों के कल्यान के लिए उनसे इस का जाप कराओ।

मोदीखाना त्याग कर शमशान भूमि में जा बैठना

(न कोई हिन्दू न मुसलमान)

वेईं नदी से चल कर गुरु जी अपनी दूकान पर गए और सब कुछ त्याग कर फकीरी वेश धारण करके शमशान भूमि में जा बैठे और 'ना कोई हिन्दू न मुसलमान' के वचन उचारते हुए तीन महीने शमशान भूमि में ही बैठे रहे। इस समय मूल चन्द जी ने आप जी के ससुराल और चंदोरानी सासु ने शामे पण्डित को आपके पास भेजा कि आप जी को समझा कर घर लाए, परन्तु गुरु जी ने उस को सत्य नाम का उपदेश दे कर कृतार्थ कर दिया और वहीं पर बैठे रहे। फिर शहर के काजी ने जब सुना कि नानक जी 'न कोई हिन्दू न मुसलमान' की रट लगाए जा रहे हैं तो काजी ने आप जी को पूछा कि आप के इन शब्दों का क्या मतलब है। तब गुरु जी ने कहा कि इस समय अपने धर्म के अनुसार चलने वाला न कोई सच्चा हिन्दू है और न कोई अपने दीन मज़हब के अनुसार चलने वाला सच्चा मुसलमान ही है।

नवाब और काजी के साथ नमाज़ पढ़ने की लीला

काजी ने जब इस तरह सारी बात नवाब को बताई तो नवाब ने गुरु जी को बुला कर कहा अगर आपकी नज़र में हिन्दू मुसलमान बराबर हैं तो आज जुमे (शुक्रवार) का दिन है। आप मेरे साथ

मस्जिद में चल कर नमाज पढ़ो। गुरु जी सत्य वचन कह कर नवाब के साथ मस्जिद में चले गए। नवाब और काजी और दूसरे सभी लोग नमाज़ पढ़ते रहे परन्तु गुरु जी चुप चाप खड़े रहे। जब नमाज़ के पश्चात् आप जी को पूछा गया कि आप ने नमाज़ क्यों नहीं पढ़ी तो आप जी ने बताया कि नवाब साहिब काबल में घोड़े खरीदते फिरते थे और काजी साहिब यह सोच रहे थे कि ऐसा न हो उन की नई दूही घोड़ी का बछेरा घर के कूँए में ही गिर पड़े, जल्दी ही वह घर लौट जाए। इस लिए हम नमाज़ किस के साथ पढ़ते? शरीर करके आप मस्जिद में हाजिर थे और मैं भी हाजिर था, परन्तु मन आपका अपने निजी काम-काज में लगा हुआ था और मेरा मन आपके मन की देख भाल कर रहा था। आप जी के यह वचन सुन कर काजी और नवाब दोनों ने आप को नमस्कार किया और अपनी भूल की क्षमा माँगी।

पहली उदासी पूर्वी प्रदेश की

(संवत १५५६-१५६५विक्रमी)

भाई लालो के पास ऐमनाबाद में

चौदह साल सुलतान पुर लोधी निवास करके आप जी अपने सब परिवार बहिन बहिनोई और सास ससुर को उत्तर दे कर भाई मरदाने को साथ ले कर चल पड़े। गोईंदवाल से व्यास नदी को पार करके रास्ते में कई नगरों के लोगों को सत्यनाम का उपदेश देते हुए आप जी लाहौर से होकर ऐमनाबाद अपने एक पुरातन मित्र भाई लालो के पास चले गए। भाई लालो ने आप जी की बड़े प्रेम और श्रद्धा से सेवा करके कुछ दिन आप को अपने पास रखा।

मलिक भागो का ब्रह्मभोज और उसको उपदेश

इस समय ऐमनाबाद के अधीक्षक मलिक भागो ने ब्रह्मभोज करके सब क्षत्रियों ब्राह्मणों और साधु तथा फ़कीरों और नगरवासिओं को बुलाया। मलिक के बुलावे पर सब ने आ कर भोजन खाया, परन्तु एक केवल गुरु नानक जी भोजन खाने के लिए न गए। जब मलिक को इस बात का पता चला कि एक तपा साधु आप जी के बुलावे पर नहीं आया तो उस ने क्रोध से गुरु जी को बुलवा कर ब्रह्मभोज पर न आने का कारण पूछा। गुरु जी ने कहा भाई लालो की ईमानदारी की कृत की कमाई का भोजन दूध के समान है, परन्तु तुम्हारी अत्याचार तथा लूट-खसूट की कमाई से तैयार किये खीर और माहल पूड़े आदि भोजन लहू के समान हैं। दूध को छोड़ कर कोई भी सूझ-बूझ वाला लहू नहीं पीएगा। मलिक ने कहा इस बात का सबूत दो कि मेरा भोजन लहु के समान है और लालो शूद्र का भोजन दूध के समान। जब गुरु जी ने भाई लालो की रोटी का टुकड़ा दायें हाथ और मलिक भागो के बहु प्रकार का भोजन मंगवा कर बायें हाथ में पकड़ कर दोनों हाथों को ज़ोर से दबाया, तो लालो के भोजन में से दूध और मलिक भागो के भोजन में से लहू के कतरे निकलने लगे। गुरु जी की इस दैवी शक्ति को देखकर सारी सभा हैरान हो गई और मलिक भागो मन में परेशान होकर गुरु जी से क्षमा माँगने लगा। उसने आप को भविष्य में ईमानदारी की कमाई करने का निश्चय दिलाया।

ऐमनाबाद के खान का लड़का बीमार होना

ऐमनाबाद में एक नवाब (खान) रहता था, उसका बेटा बीमार हो गया। जब वह किसी दवा दारु से ठीक न हुआ तो उस को

मलिक ने बताया कि यहाँ एक नानक तपा रहता है उसको बुलाकर लड़के को दिखाओ वह कामल फ़कीर है। तुम्हारा लड़का ज़रूर ठीक हो जायेगा। खान ने गुरु जी को बुलाकर कहा कि मेरे इस बीमार लड़के को अपने आशीर्वाद से ठीक कर दो, अगर नहीं करोगे तो तुम्हें उमर कैद की सजा करवा दूंगा। खान की यह बात सुनकर गुरु जी ने स्वाभाविक ही कहा हे खान ! जिस बेटे के लिए तुम हमें कैद करने को कह रहे हो, वह तो यमपुरी भी पहुँच गया है। यह खबर सुनकर खान व्याकुल हो कर रोने लगा और गुरु जी उठ कर तप स्थान पर आ गये।

गुरु जी ने तलवंडी जाना

इस तरह कठोर तप करके और भूले भटकों को उपदेश देते हुए जब कुछ समय व्यतीत हो गया तो एक दिन अचानक ही भाई लालो को कहा कि हमें राए बुलार याद कर रहा है। हम उस के प्रेम को पूरा करने के लिए तलवंडी जा रहे हैं। गुरु जी तलवडी आ कर भाई बाले के पिता चंदर भान के कूएँ पर गाँव से बाहर ही बैठ गए। जिस समय महिता कालू चन्द आदि परिवार को पता चला तो वह सभी वहाँ ही आ गए। गुरु जी ने सब परिवार को उपदेश देकर धैर्य दिया और कहा कि जो परमात्मा को छोड़ कर दूसरी तरफ लग जाता है वह सदा ही दुख पाता है। तब तो एक निरंकार की आज्ञा में ही रहना चाहिए।

तद्उपरान्त राए बुलार ने आप जी की बहुत प्रेम सहित सेवा की और प्रार्थना की कि आप यहाँ अपनी खेती कराओ, मैं आपको नौकर रख दूँगा। उस समय गुरु जी ने यह शब्द उच्चारण किया—

सोरठि महला १ घरु १।।

मनु हाली किरसाणी करणी सरमु पाणी तनु खेतु ।।
नामु बीजु संतोखु सुहागा रखु गरीबी वेसु ।।
भाउ करम करि जंमसी से घर भागठ देखु ।।
बाबा माइआ साथि न होइ ।।
इनि माइआ जगु मोहिआ विरला बूझै कोइ ।।
रहाउ।। (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ० ५९५)

तब राए ने कहा, खेती नहीं तो दूकान ही कर लो। फिर आप जी बोले—

हाणु हटु करि आरजा सचु नामु करि वथु ।।
सुरति सोच करि भांडसाल तिसु विचि तिसनो रखु ।।
वणजारिआ सिउ वणजु करि लै लाहा मन हसु ।। २।।
(श्री गुरु ग्रंथ साहिबः पृ० ५९५)

दूकान करने से भी इन्कार सुन कर फिर उन्होंने कहा कि सौदागरी कर लो। घर में धन आएगा। जिस से बहुत सुख प्राप्त होगा। गुरु जी ने कहा—

सुणि सासत सउदागरी सतु घोड़े लै चलु ।।
खरचु बंनु चंगिआईआ मतु मन जाणहि कलु ।।
निरंकार कै देसि जाहि त सुख लहहि महलु ।।
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ० ५९५)

फिर महिता जी ने कहा कि अगर यह काम नहीं करनो तो राजा की नौकरी कर लो। परन्तु यह फ़कीरी वेश उतार दो। गुरु जी बोले—

लाइ चितु करि चाकरी मंनि नामु करि कंमु ।।
बंनु बदीआ करि धावणी ताको आखै धंनु ।।
नानक वेखै नदरि करि चढ़ै चवगण वंनु।। ४।।
(श्री गुरु ग्रंथ साहिबः पृ० ५९५)

राए बुलार को उपदेश

यह उत्तर सुन कर जब सभ चुप हो गए तो राए बुलार ने कहा कि अब मुझे अपना अन्तिम समय नज़दीक लगता है। आप कृपा करके ऐसा ज्ञान उपदेश दें जिस से मेरा जन्म-मरण मिट जाए।

गुरु जी ने बचन किया कि स्त्री, पुत्र और राज्य तब तक ही तुम्हारे हैं जब तक तुम्हारे शरीर में बोलने वाली चेतन शक्ति विद्यमान है। इन का अहं भाव सब बंधन रूप हैं, तू आप सदा ही सच्च स्वरूप चेतन जन्म-मरण से रहित है, तुम अपने इस शुद्ध स्वरूप का ध्यान करो, तेरा कल्याण हो जाएगा। आप जी का यह उपदेश सुन कर राए ने नमस्कार करके कहा, आप जी की कृपा से अब मैंने अपने स्वरूप के भेद को जान लिया है, यह मेरा सौभाग्य है।

सज्जन ठग को उपदेश

इस प्रकार अपने माता-पिता और राए बुलार आदि को मिल कर कुछ दिनों के पश्चात् गुरु जी भाई बाले मरदाने को साथ ले कर तलवंडी से चल पड़े और रावी नदी को पार करके मुलतान की ओर चल दिये। रास्ते में आप को पता चला कि तुलभा नगर (जिला मुलतान) में एक सज्जन नाम का ठग रहता है जो यात्रियों को रात के समय विश्राम और रोटी पानी की सेवा करने के बहाने अपने विश्राम घर में ठहरा कर लूट-खसूट लेता था। उस का यह बुरा कर्म सुन कर, गुरु जी भी बाले मरदाने के साथ उस को सीधे रास्ते पर लाने के लिए उसी तरफ चल पड़े और उस के नीचों वाले हाव-भाव देख कर गुरु जी ने उस को बुरे कामों से हटाने के लिए यह शब्द उच्चारण किया—

www.9009.co.in

सूही महला १ घरु ६ ।।

उजलु कैहा चिलकणा घोटिम कालड़ी मसु ।।
धोतिआ जूठि न उतरै जे सउ धोवा तिसु।। १।।
सजण सेई नालि मै चलदिआ नालि चलंन्हि ।।
जिथै लेखा मंगीऐ तिथै खड़े दिसंन्हि।। १।।
रहाउ।। कोठे मंडप माड़ीआ पासहु चितवीआहा ।।
ढठीआ कंमि न आवन्ही विचहु सखणीआहा।। २।।
नानक नामु समालि तूं बधा छुटहि जितु।। ६।।
१।। ३।। (श्री गुरु ग्रंथ साहिबः पृ० ७२९)

इस शब्द का भावार्थ समझ कर सज्जन गुरु जी के चरणों पर गिर पड़ा और आगे से लोगों को ठगने का कर्म त्याग कर गुरु जी का शिष्य बन गया। गुरु जी ने यहाँ सत्यसंग करने के लिए धर्मशाला बनवाई और उसको कहा कि ईमानदारी की कमाई किया करो और सत्यसंग करना।

कुरुक्षेत्र सूर्यग्रहण

ठग सज्जन को सच्चा सज्जन बना कर गुरु जी पाकपटन शेख ब्रह्म के साथ आत्म ज्ञान की चर्चा करके कुरुक्षेत्र पहुँच गये। उस समय वहाँ सूर्यग्रहण का मेला था, जिस लिए लोग दूर-दूर से आए हुए थे। गुरु जी भी वहां सुनहरी सरोवर के दूसरे किनारे डेरा डाल कर बैठ गये। एक राजकुमार, जो हरिण का शिकार करके आ रहा था, उसने अपना शिकार गुरु जी की भेंट कर दिया कि इसकी खाल से अपना आसन बनवा लेना। परन्तु गुरु जी ने अपने सच्चे मिशन के प्रचार के लिए उस हरिण को देग में डालकर पकने के लिए रख दिया। उधर जब सूर्यग्रहण का समय हुआ तो लोग आग पर पकती हुई वस्तु को देख कर इकट्ठे हो गए। नानू पंडित

जोउनकी अगवानी कर रहा था उसको जब पता चला कि इस देग में माँस पक रहा है तो उस ने गुरु जी पर कई प्रकार के प्रश्न किये कि आप जी का साधु धर्म है और इस सूर्यग्रहण के पवित्र समय आपने यह माँस जैसी बुरी वस्तु को क्यों अग्नि पर रखा हुआ है ? गुरु जी ने अपने पक्ष की सिद्धि के लिए यह शब्द उच्चारण किया—

सलोक मः १ ।।

पहिलां मासहु निमिआ मासै अंदरि वासु ।।
जीउ पाइ मासु मुहि मिलिआ हडु चंमु तनु मासु ।।
मासहु बाहरि कढिआ मंमा मासु गिरासु ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिबः पृ० १२८९)

यह सारा शब्द सुन समझ कर पंडित नानू ने गुरु जी को नमस्कार किया और साथियों को कहा कि यह कलिजुग में अवतार हो कर आए हैं, इन्हें नमस्कार करनी ही बनती है। अब इस स्थान पर एक साधारण गुरुद्वारा पहली पातशाही करके प्रसिद्ध है।

पश्चिम की तरफ पानी
(हरिद्वार के पांडों के साथ चर्चा)

कुरुक्षेत्र से चलकर गुरु जी करनाल और पानीपत के शेखों के साथ चर्चा करके हरिद्वार पहुँच गए। यहाँ जब आप ने देखा कि लोग गंगा में स्नान करते समय नवोदित सूर्य की ओर पानी हाथों से उछाल रहे हैं तो आप जी पश्चिम की तरफ मुँह करके दोनों हाथों में पानी भर-भर कर फेंकने लगे। इस पर पांण्डों ने पूछा कि आप पश्चिम की ओर पानी क्यों फेंक रहे हो ? गुरु जी ने कहा, आप पूर्व दिशा की तरफ क्यों फेंक रहे हो? पांण्डों ने कहा हम तो सूर्य को पानी दे रहे हैं। गुरु जी ने कहा हम अपनी खेती को पानी

www.9009.co.in

दे रहे हैं। पाण्डों ने कहा आप की खेती जो आप तीन सौ कोस बताते हो, उस को इतनी दूर पानी किस तरह पहुँचेगा? गुरु जी बोले अगर क्रोड़ों कोस दूर सूर्य को आप का पानी पहुँच सकता है तो हमारा तीन सौ कोस दूर हमारी खेती को क्यों नहीं पहुँचेगा? ज़रूर पहुंचेगा। आप की यह बात सुन कर पांण्डे चुप हो गए। तत्पश्चात् गुरु जी ने पांडों और पंडितों को ब्राह्मण, वेद पाठी, योगी, गृहस्थी राजा और पढ़े हुए के गुण बता कर कहा कि इन्हीं गुणों को धारण करना ही सूर्य को सच्चा अर्ग देना है। इस समय आप ने यह शब्द उच्चारण किया—

सारंग वार मः १ ।।

नानक चुलीआ सुचीआ जे भरि जाणै कोइि।। सुरते चुली
गिआन की जोगी का जतु होइि।। ब्रहमण चुली संतोख की
गिरही का सतु दानु।। राजे चुली निआव की पड़िआ सचु
धिआनु।। पाणी चितु न धोपई मुखि पीतै तिख जाइि।।
पाणी पिता जगत का फिरि पाणी संभु खाइ।। २ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिबः पृ० १२४०)

दिल्ली बादशाह सिकंदर लोधी को उपदेश

हरिद्वार से चल कर गुरु जी दिल्ली शहर से बाहर यमुना के किनारे आ बैठे। दिल्ली का बादशाह सिकंदर लोधी बहुत अत्याचारी था। इस ने भक्त कबीर, सधना और नामदेव आदि भक्तों को कष्ट दिये, और भी अनेक फ़कीरों को उसने उन्हें करामात दिखाने के लिये कैद किया हुआ था। गुरु जी ने जब बादशाह का मरा हुआ हाथी जिंदा किया तो बादशाह अपने मसलती काजी को साथ ले कर दर्शन करने आया। उसने प्रार्थना की कि आप खुदा का रूप हो। मुझे भी उपदेश दो। गुरु जी ने कहा— यह निर्दोष साधु जो आप ने कैद किये हुए हैं, इन्हें मुक्त

www.9009.co.in

कर दो और आगे से धर्म व न्याय के मार्ग पर चलो। किसी निर्दोष को दुख न दिया करो। बादशाह ने गुरु जी के वचन मान कर सभी साधु संतों को रिहा कर दिया और आगे से ऐसी कोई कारवाई न करने का प्रण लिया। इस स्थान पर यमुना नदी के किनारे गुरुद्वारा मजनूं टिला करके प्रसिद्ध है। यहाँ एक मजनूं नाम के साधु ने बहुत समय बैठ कर भजन बंदगी की थी, जिस के नाम पर यह टिला प्रसिद्ध हुआ।

मथुरा वृंदावन में उपदेश

दिल्ली से चल कर गुरु जी मथुरा और वृंदावन पहुँचे। यहाँ आप ने देखा कि लोग राजे रानियों और कृष्ण गोपियों के साँग बना कर रास-लीला डालते और नाचते कूदते हैं। उन की यह दशा देख कर गुरु जी ने यह शब्द उच्चारण किया—

वार आसा महला १ ।।

वाइनि चेले नचनि गुर ।। पैर हलाइनि फैरनि सिर।।
उडि उडि रावा झाटै पाइि ।। वेखै लोकु हसै घरि जाइि।।
रोटीआ कारणि पूरहि ताल।। आपु पछाड़हि धरती नालि।।
गावनि गोपीआ गावनि कान्ह।। गावनि सीता राजे राम।।

(स्री गुरु ग्रंथ साहिब पृ० ४६५)

गुरु जी ने इन लोगों को कहा यह सब काम उपजाऊ क्रीढ़ाएँ हैं। पुरुष को अपने गुरु पीरों के उपदेश धारण करके अपने जीवन को ऊँचा करना चाहिए।

गोरख मता—योगियों से चर्चा

मथुरा से चल कर गुरु जी योगियों के प्रसिद्ध स्थान गोरख मते पहुँचे। यहाँ जंगल में कानफटे योगी गोरखनाथ और उस के शिष्य रहते थे। गुरु जी ने उन्हीं के डेरे से कुछ दूर बैठ कर कीर्तन आरम्भ कर दिया। सारे योगी आप जी के पास इकट्ठे हो गये। योगियों ने पूछा आप का मत क्या है? आप कौन हो और कहाँ से

आए हो? और यहाँ किस तरह आए हो? गुरु जी ने कहा-हम निरंकारी हैं और निरंकार के देश से आए हैं। यहाँ आप के दर्शन करने आए हैं। योगियों ने कहा हमारा योग मत धारण कर लो, आपको सच्चा मार्ग प्राप्त हो जायेगा। गुरु जी बोले कि सच्चा मार्ग किसी वेश में सीमित नहीं है। जो भी पुरुष अपने आप को जगत् की बुराइयों से बचा कर रखता है, उसको ही सच्चा मार्ग प्राप्त हो जाता है। अनेक प्रकार की चर्चा करके सिद्धों ने आप को कामल फ़कीर देख कर कहा कि आप योग मत के चिह्न खिंथा, मुंदरा, झोली और डंडा आदि धारण कर लो और शरीर से यह रंगदार वस्त्र उतार कर राख मल लो। हमारा वेश धारण कर लेने से आप की बहुत मान्यता हो जाएगी। गुरु जी ने कहा इन चिह्नों के धारण करने से योग (ईश्वर के साथ जुड़ना) नहीं हो सकता। यथा— आप जी ने कथन किया—

सुही महला १ घरु ७

जोगु न खिंथा जोगु न डंडै जोगु न भसम चड़ाईऐ ।।
जोगु न मुंदी मूंडि मुडाइऐ जोगु न सिंडी वाईऐ ।।
अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति इव पाईऐ ।। १ ।।

(स्री गुरू ग्रंथ साहिब पृ० ७३०)

... ...

नानक जीवतिआ मरि रहीऐ ऐसा जोगु कमाईऐ ।।
वाजे बाझहु सिंडी वाजै तउ निरभउ पदु पाईऐ ।।

(स्री गुरू ग्रंथ साहिब पृ० ७३०)

हे योगी जनो ! खिन्था और डंडा धारण करना शरीर के ऊपर राख मलना, सिंडी बजानी और सिर मुण्डवाने से योग नहीं होता। योग की युक्ति यह है कि माया में रहते हुये ऐसा जीवन व्यतीत करो कि संसार की तरफ से शव समान उडोल अनेच्छित और

निर्विकार रहो। फिर जब सिंडी को फूँक मारने के बिना ही अनहद की ध्वनि हो उठे तो अलख निरंजन पद को ग्रहण करते हैं।

गुरु जी के यह वचन सुनकर सिद्ध आदेश-आदेश करके अपनी इच्छा से उठ कर पहाड़ों की तरफ चले गये।

नानक मता प्रसिद्ध होना

सिद्धों के ऊपर इस चर्चा के द्वारा गुरु जी की विजय के कारण गोरख मते का नाम नानकमता प्रसिद्ध हो गया। यहाँ पर गुरुद्वारा स्थित है और वैशाखी वाले दिन यहाँ बहुत भारी मेला लगता है।

मीठा रीठा

इस नानकमते के स्थान से चल कर जब गुरु जी पूर्व दिशा बनारस की तरफ जा रहे थे तो रास्ते में कुछ आगे जाकर मरदाने ने कहा—महाराज ! जंगलों और पहाड़ों में ही लिये फिरते हो, मुझे भूख बहुत लगी है, अगर कुछ खाने को मिल जाए तो खा कर आपके साथ चलने के योग्य हो जाऊँगा। उस समय गुरु जी एक रीठे के वृक्ष के नीचे आराम कर रहे थे। आप जी ने वृक्ष फल देखकर मरदाने को कहा, मरदाना अगर तुझे भूख लगी है तो इस रीठे की टहनी को हिलाकर रीठे गिरा कर खा लो।

मरदाने ने आज्ञा का पालन कर के जब रीठे गिरा कर खाए, तो वह छुहारे जैसे मीठे थे। उसने पेट भर कर खाय। इस वृक्ष के रीठे आज भी मीठे ही हैं, जो नानक मते जाने वाले प्रेमियों को प्रसाद के तौर पर दिये जाते हैं। मीठा रीठा नानक मते से पूर्व दिशा की तरफ ४५ मील दूर है।

www.9009.co.in

अयोध्या नगरी

इसी प्रकार ही पहाड़ी क्षेत्रों में से चलते हुए गुरु जी श्री राम चन्द्र जी के जन्म स्थान अयोध्या नगरी आ गये। बहुत से लोग और पंडित गुरु जी के करीब एकत्र हो गये। गुरु जी ने एक पंडित से पूछा कि हमने सुना था कि अयोध्या नगरी को श्री राम चन्द्र जी अपने साथ ही बैकुण्ठ को ले गये थे, फिर यह तो यहीं की यहीं है? पंडितों ने कहा, वह केवल अयोध्या नगरी के जीवों को ही साथ लेकर गये थे, महल आदि और सब कुछ यहाँ ही रहा था। गुरु जी ने कहा उन लोगों ने श्री राम चन्द्र जी के दर्शन किये थे जिस के लिए वह उनके साथ ही वैकुण्ठ को चले गये थे। परन्तु तुम लोग जब तक गुरु उपदेश के द्वारा भक्ति धारण नहीं करोगे तब तक तुम बैकुण्ठ नहीं जा सकते। उन्होंने कहा गुरु तो कई प्रकार के हैं, हम किस गुरु को धारण करें? गुरु जी ने कहा— जिसके अपने मन में पूर्ण ज्ञान हो, मोह माया से निर्लेप हो, वह आप भी मुक्त हो जाता है और दूसरे भी जो उसके साथ चलते हैं वह अन्त समय बैकुण्ठ को जाते हैं। गुरु जी के यह वचन सुन कर पंडितों ने कहा महाराज ! हमें आप ही उपदेश दो। तब आप जी ने उनको सत्यनाम का उपदेश देकर सौभाग्यशाली बनाया।

काशी (बनारस) पंडितों के साथ चर्चा

अयोध्या से चल कर गुरु जी रास्ते में अपने मिश्न का पहाड़ी लोगों में प्रचार करते हुए बनारस पहुँच गए। यह शहर हिंदू मत के बड़े-बड़े विद्वान् पंडितों का केंद्र था। आप जी का बाहरी आश्चर्यजनक पहरावा, गेरुए रंग वाला कुर्ता, ऊपर सफेद चादर, एक पाँव जूती और एक पाँव में खौंस, सर पर टोपी, गले में माला और माथे पर केसर का तिलक, देख कर बहुत लोग इक्ट्ठे हो

गए। अनेक प्रकार के प्रश्न पूछने लगे। जब लोगों ने देखा कि आप प्रश्नों के उत्तर बड़े गम्भीर ढंग से देते हैं तो वह एक विद्वान् पंडित चतर दास को बुला लाए। उस ने गुरु जी के साथ चर्चा छेड़ दी।

पंडित चतर दास ने कहा—महाराज ! हम रोज ही चाहे वेद शास्त्र पढ़ते और सुनते हैं, मगर हमारे मन का अहंकार नहीं मिटता और मन को शान्ति नहीं आती। इस का क्या कारण है? गुरु जी ने कहा—अगर मन के अंदर सदा ही बुराई का चितवन होता हो तो फिर वेद शास्त्रों के उपदेश का असर किस तरह हो सकता है? पहले अपने मन से झूठ, निंदा, लोभ, लालच आदि बुराइयों को दूर करो। फिर वेद शास्त्रों को पढ़ सुन कर उसके ज्ञान उपदेश को धारण करो तो आपके मन को शान्ति प्राप्त होगी। फिर पंडितों ने कहा महाराज ! परमेश्वर के किस नाम का जाप करने से मुक्ति होती है? गुरु जी ने कहा— जिस तरह सभी नावें नदी से पार कराने वाली होती हैं। जिस पर कोई चढ़ जाये, उसे वही बेड़ी नदी से पार उतार देती है। इस तरह ही गुरु रूपी मलाह जिस नाम रूपी बेड़ी पर चढ़ावे, उस पर ही चढ़कर पार उतरा जा सकता है। पंडितों ने कहा, महाराज ! हमें किस नाम का स्मरण करना चाहिए? गुरु जी ने कहा, आप सत्यनाम का स्मरण किया करो, आपकी मुक्ति हो जाएगी। इस तरह ज्ञान अपदेश की चर्चा करके गुरु जी वहाँ से आगे को चल पड़े।

पटना शहर—सालस राए जौहरी का प्रसंग

बनारस से चल कर गुरु जी अनेक प्राणियों को सुमार्ग पर डालते हुए जा रहे थे कि मरदाने ने कहा, गुरु जी मुझे बहुत भूख लगी है। गुरु जी ने कहा—मरदाना ! तीन कोस पर एक नगर है

www.9009.co.in

वहाँ चल कर जो दिल चाहे जी भर कर खा लेना। मरदाने ने कहा— महाराज ! हमारे पास कौन सी धनराशि है, जो खर्च करके कुछ खा लेंगे। तब गुरु जी ने अपने पाँव से रेत को टटोल कर मरदाने को कहा, यह एक कीमती लाल है इसको पकड़ कर गाँठ बांध लो, शहर में जाकर जिस वस्तु की जरूरत हो इसको बेच कर ले लेना। मरदाने को शहर भेज कर आप गुरु जी शहर से बाहर की गंगा के किनारे बैठ गए। मरदाना उस लाल को लेकर शहर में चला गया। जब मरदाने ने एक जौहरी को वह लाल बेचने के लिये दिखाया तो वह उस बहुमूल्य लाल को देख कर मरदाने के साथ ही गुरु जी के पास आ गया। श्रद्धा से गुरु जी को माथा टेक कर बैठ गया और आप के वचन सुन कर उसने कहा, यह बहुमूल्य लाल तो आप की कृपा से मैंने पहली बार ही देखा है। आप लालों के भी लाल हो, जिन के दर्शन करके मैं धन्य हो गया हूँ। तब गुरु जी ने उसे उपदेश देने केलिए यह शब्द उच्चारण किया—

बिलावल महला १।।

लालो लाल उपाइआ लालो लाल दिसंनि।। जिन्हां लाली नेतर महि दूजा ना जाणंनि।। १।। सुणि सालस तूं जवाहरी आपणा लाल पछाण।। कूड़े लाल न गंढ बंन लीजै भले सिंवाणु।। १।। रहाउ।। कंकर पथर मेलि कै नाउ सदाइओ साहु।। बिन सतिगुर पूरे अंधु है मूल न बूझै राहु।। २।। मेरा मेरा कर संजिओ राती अते देहु।। काई साख न उपजीआ कलर वुठा मेहु।। ३।। सुणि सालसु इिह बेनती जि करम प्रापति होइ।। नानक एक अराधीऐ दूख न लागै कोइ ।। ४।।

(स्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से नहीं है)

गुरु जी ने फर्माया—सालस शाह यह झूठे लाल एकत्र करने का कोई लाभ नहीं है आप अपने आप को पहचानो जो असल लाल

www.9009.co.in

है। इस के भावार्थ को समझ कर सालस राए ने गुरु जी की बड़े प्रेम और श्रद्धा के साथ सेवा की और सत्यनाम का उपदेश लेकर धन्य हुआ। सालस राए से वहाँ गुरु जी ने सत्यसंग के लिए एक धर्मशाला बनवाई और अधरके को उसका महंत थापा।

नोट : फतह चन्द मैनी जिस की रानी गुरु गोबिंद सिंध जी को बालकों समेत बुला कर धुंगनिआं दिया करती थी, इस सालस राए के वंश में से ही थी। इन्हीं का घर गुरुद्वारा मैनी संगत करके प्रसिद्ध है।

गया-पितृगति

पटने से चल कर गुरु जी गया पहुँचे। यह शहर गयासुर दैंत्य का बसाया हुआ है, जिस के नाम पर ही इस का नाम गया प्रसिद्ध है। हिंदुओं के निश्चय अनुसार यहाँ प्रणियों के पिंड बनाने से उन की गति हो जाती है। जब गुरु जी वहाँ पहुँचे तो पंडों ने कहा आप भी अपने पितृों की गति के लिए पिंड भराओ। तब गुरु जी ने इस प्रथाए यह शब्द उच्चारण किया—

आसा महला १ ।।

दीवा मेरा ऐकु नामु दुखु विचि पाइिआ तेलु ।।
उनि चानणि ओहु सोखिआ चूका जम सिउ मेलु ।। १ ।।

... ...

पिंडु पत्तलि मेरी केसउ किरिआ सचु नामु करतारु।।
ऐथै ओथे आगै पाछै एहु मेरा आधारु।। २ ।।

... ...

इक लोकी होरु छमिछरी ब्रामहणु वटि पिंडु खाइि।।
नानक पिंडु बखसीस का कबहूं निखुटसि नाहि।। ४ ।।
२ ।। ३२ ।। (स्री गुरु ग्रंथ साहिब पृ० ३५८)

इस शब्द का मूल भाव समझा कर गुरु जी ने बताया कि अपने हाथों से किया हुआ दान कभी खत्म नहीं होता। इस लिए अपने

जीते अपने हाथों के साथ दान करना ही लोक-प्रलोक में सहायक होता है। तत्पश्चात् प्राणी नमित पिंड आदि भरवाने और अन्य दान-पुण्य करना उस के किसी काम नहीं होता।

बुद्ध गया

इस तरह पंडों को नाम स्मरण का उपदेश दे कर गुरु जी जहाँ से नजदीक ही वह स्थान देखने चले गए जहाँ महात्मा बुद्ध ने बैठ कर निर्वाण प्राप्त किया था। इस बुद्ध गया मंदिर में महात्मा बुद्ध की एक पूरे शरीर की सोने की मूर्ति स्थापित है। यहाँ के मुख्य पुजारी के साथ गुरु जी ने चर्चा करके उसको सत्यनाम का उपदेश दिया।

ढाका बंगाल कामरूप देश

बुद्ध गया से चल कर गुरु जी मरदाने के साथ बिहार के नगरों शहरों से होते हुए मुरशिदाबाद के रास्ते आसाम देश के कामरूप क्षेत्र के गोहाटी शहर से बाहर जा बैठे। मरदाना कुछ खाने के लिए शहर में चला गया। शहर की एक प्रसिद्ध जादूगरनी नूर शाह ने मरदाने को भेडू बना कर अपने घर में बांध लिया। इस बात का जब सत्यसेवी अन्तर्यामी गुरु जी को पता चला तो आप सत्यनाम का जाप करते हुए नूरशाह के वहाँ पहुँच गए। नूरशाह ने गुरु जी को भी जादू से काबू करना चाहा, मगर गुरु जी के आगे उस की कोई पेश ने गई तो उसने गुरु जी के चरणों पर माथा टेक कर अपनी भूल की क्षमा मांगी और अपने उद्धार के लिए विनय की। गुरु जी ने कहा, आप लोग सिखी धारण करके एक धर्मशाला बनवाओ उस में सत्यसंग किया करो, आपका उद्धार हो जाएगा। गुरु जी की आज्ञा मान कर उन्होंने पाहुल लेकर सिखी धारण कर ली और धर्मशाला बनवाकर प्रतिदिन सत्यसंग करने लगे।

जगन नाथ पुरी

कामरूप गोहाटी से जादूगरनियों का सुधार और उद्धार करके गुरु जी ढाका शहर से होते हुए चिटागांव आए। यहाँ के राजा को सत्यनाम का उपदेश देकर अपना सिख बनाया और वहाँ सत्यसंग करने के लिए धर्मशाला बनवाई। इस से आगे गुरु जी समुन्द्र के रास्ते जगन नाथ पुरी पहुँच गए। पुरी शहर जो समुन्द्र के किनारे है, में कृष्ण जी की एक बहुत बड़ी आदम कद मूर्ति है। सन्ध्या समय पाण्डों को इस मूर्ति के आगे दिये जला कर आरती करते हुए देख कर गुरु जी ने यह शब्द उच्चारण किया—

धनासरी महला १ आरती

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती।। धूपु मलआनलो पवरणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती।। १।। कैसी आरती होइ भव खंडना तेरी आरती।। अनहता सबद वाजंत भेरी।। १।। रहाउ।। सहस तव नैन नन नैन है तोहि कउ सहस मूरति नना एक तोही।। सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही।। २।। सभ महि जोति जोति है सोइि।। तिस कै चानणि सभ महि चानणु होइि।। गुरसाखी जोति परगटु होइि।। जो तिसु भावै सु आरती होइि।।३।। हरि चरण कमल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहि आही पिआसा।। कृपा जलु देहि नानक सारिंग कउ होइि जाते तेरै नामि वासा।। ४।। १।। ७।। ६।। (स्री गुरु ग्रंथ साहिबः पृ० ६६३)

गुरु जी ने कहा, इस प्रकार की आरती परमेश्वर की रचना में सदा हो रही है। हम सदा ही इस सर्वमय सर्वव्यापक सच्ची आरती में विलीन रहते हैं। यहाँ आप ने दो दिन आवास किया।

कलिजुग के साथ वार्तालाप

अगले दिन गुरु जी मरदाने के साथ समुन्द्र के किनारे बैठ कर शब्द कीर्तन करने लगे, मगर क्या देखते हैं कि एक बहुत बड़ी लाल अन्धेरी आ रही है जिस का गुबार सारे आकाश में फैला हुआ है। इस भयानक अन्धेरी में मरदाने ने देखा कि एक बड़ी भयानक आकृति जिस का सिर आकाश के साथ और पांव पाताल में हैं, सामने आ रही है। जब मरदाना उस को देख कर बहुत डर गया तो गुरु जी ने कहा मरदाना तुम वाहिगुरु का स्मरण करो इसको देख कर न डरो। यह बला तेरे नजदीक नहीं आएगी। उस भयानक डरावनी आकृति ने कई अति भयानक रूप धारण किये मगर गुरु जी अडोल ही बैठे रहे। आप जी की अडोलता और निर्भीकता को देख कर उसने मनुष्य रूप धारण करके गुरु जी को नमस्कार किया और कहा कि मैं इस युग का राजा हूँ। मेरा सेनापति झूठ और निन्दा चुगली मार-धाड़ और जूआ शराब आदि खोटे कर्म मेरी फौज हैं। आप मेरे युग के अवतार हो, मैं आपको मोतियों से जड़े हुए सोने के मन्दिर तैयार कर देता हूँ, उन्हीं में ही आप निवास करना। ऐसे मन्दिर चंदन और कस्तूरी के साथ लिप्त होंगे, केसर का छड़काओ होगा—आप ने सुख लेना और आनंद करना। तब गुरु जी ने यह शब्द उच्चारण किया—

सिरी रागु महला पहला घरु १ ।।

मोती त मंदर ऊसरहि रतनी त होहि जड़ाउ ।।
कसतूरि कुँगू अगरि चंदनि लीपि आवै चाउ ।।
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ।। १ ।।

... ...

धरती त हीरे लाल जड़ती पलघि लाल जड़ाउ ।।
मोहणी मुखि मणी सोहै करे रंगि पसाउ ।।
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ।। २ ।।

... ...

हुकमु हासलु करी बैठा नानका सभ वाउ।।
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ।। ४।।

(स्री गुरु ग्रंथ साहिब पृ० १४)

गुरु जी के यह वचन सुन कर कलिजुग ने कहा, महाराज ! मुझे निरंकार की आज्ञा है कि मैं सभी जीवों की बुद्धि उलट दूँ, जिस कारण वह चोरी यारी झूठ निंदा चुगली आदि खोटे क्रम करने, गुनी लोगों का निरादर कराना और मूर्खों को राजाओं के पास बिठा कर स्तुति करवाना। जत-सत का नाम न रहने देना और ऊँच-नीच को बराबर कर देना। मगर आप जैसे हुकम करो मैं उसकी भी पालना करुँगा। गुरु जी ने कहा जो हमारे प्रेमी श्रद्धालु सिख प्रेम के साथ हरि कीर्तन और सत्यसंगत करने वाले हों उन पर आप की यह सेना धावा न बोले। फिर आप का प्रभाव हमारे उन प्रेमियों पर भी न पड़े जिन का हमारे वचनों पर भरोसा है। कलिजुग ने हाथ जोड़ कर कहा, महाराज ! जो पुरुष निरंकार के स्मरण को अपने हृदय में बसाये रखेगा, उस पर मेरा बहुत थोड़ा प्रभाव पड़ेगा। यह भरोसा दे कर कलिजुग अन्तर्ध्यान हो गया।

एक नगर के राजे को उपदेश

तद्उप्रान्त यहाँ से चल कर गुरु जी कुछ दूर एक नगर के बाहर वृक्ष के नीचे जा बैठे। संत रूप गुरु जी का आगमन सुन कर वहाँ का राजा आप जी के दर्शन करने आया। उस ने प्रार्थना की महाराज ! मुझे उपदेश देकर अपना सिख बना लो, जिस से मेरा जन्म सफल हो जाए। गुरु जी ने कहा यह मानव जन्म अमोलक है, इसे कौड़ीमूल्य नहीं गवाना चाहिए। धर्मशाला बनाओ, सत्यसंग किया करो, विकारों को मन से दूर करो, शुद्ध हृदय के साथ नाम का जाप करो। तत्पश्चात् गुरु जी ने अपनी चरण पाहुल दे कर राजे को सिखी का मंत्र प्रदान किया।

www.9009.co.in

कटक शहर भैरों के पुजारी से चर्चा

यहाँ से चल कर गुरु जी पीछे पंजाब की ओर चल पड़े। कुछ दिनों के पश्चात् आप कटक शहर पहुँच कर भैरों के मंदिर पास आ गये, मगर जब आप अडोल बैठे रहे तो पुजारी ने आप को शक्तिशाली समझ कर अपनी भूल की क्षमा मांगी। गुरु जी ने कहा कि नाटक चेबक दिखा कर लोगों को पूजा करानी ठीक नहीं है, नाम स्मरण का अभ्यास करके अपना जीवन सफल करो। यहीं सच्चा मार्ग है, यहाँ गुरु जी ने जो अपनी दातुन करके दबा दी थी वह वृक्ष के रूप में सुशोभित है।

आगरे शहर माई-जस्सी का प्रेम

कटक से चल कर रास्ते में कई प्राणियों को नाम दान का उपदेश देते हुए गुरु जी आगरे पहुँच गए। यहाँ एक माई जस्सी श्री राम चन्द्र की मूर्ति की पूजा करती और उसके आगे वीणा बजा कर भजन गाती थी। माई साधु संतों की भी सत्यसंगी थी। इसने गुरु जी को अपने घर रख कर बड़े प्रेम के साथ सेवा की और गुरु जी से उपदेश ले कर मूर्ति पूजा छोड़ कर नाम स्मरण में जुड़ गई। अब यहाँ माई के घर वाली जगह गुरुद्वारा 'माई थान' बना हुआ है।

रुहेल खंड गुलाम छुड़ाए

आगरे से चल कर गुरु जी रुहेल खण्ड-बरेली से बदायूँ के क्षेत्र में एक अपने सिख भाई 'हरा' की रुहेले सरदारों की कैद से मुक्ति कराने गए। गुरु जी का उपदेश सुन कर रुहेले सरदार ने भाई हरे सहित सारे गुलामों को आज़ाद का दिया और आगे से गुलाम खरीदने और बेचने का काम छोड़ दिया।

www.9009.co.in

बेबे नानकी के पास सुलतानपुर लोधी

रुहेल खंड के प्रदेश से चल कर गुरु जी कई नगरों और शहरों में प्राणियों का उद्धार करते हुए मरदाने सहित संवत् १५६५ विक्रमी में सुलतानपुर लोधी अपनी बहिन बीबी नानकी जी के पास पहुँच गए। साहिबज़ादे श्री चन्द और लखमीदास और महिल श्री सुलखणी जी को आप जी के दर्शन कर के बहुत खुशी हुई।

लाहौर से तलवण्डी

कुछ दिन तलवंडी विश्राम करके गुरु जी यहाँ से चल कर दूसरी बार ब्रह्म को मिलने के लिए पाकपटन से पश्चिम दिशा से कुछ दूर बाहर ही बैठ गए। शेख गुरु जी को मिलने के लिए अनके पास गया और मिल कर गुरु जी से ज्ञान चर्चा करके बड़ा खुश हो गया। गुरु जी ने इस चर्चा के समय 'आसा दी वार' की पहली नौ पउाड़ियों का उच्चारण किया। इस स्थान पर गुरुद्वारा नानकसर विद्यमान है।

दीपालपुर कोहड़ी निसतारा

पाकपटन से चल कर गुरु जी दीपाल पुर शहर से बाहर एक कुटिया देख कर उस के पास जा बैठे। उस कुटिया में एक कोहड़ी रहता था जिसे उस के सम्बन्धियों ने बना दिया था। गुरु जी को देख कर उस कोहड़ी ने कहा कि संत जी मुझे कुष्ट रोग है आप मेरे से दूर ही रहो। गुरु जी कुटिया के पास एक पीपल के नीचे डेरा डालकर बैठ गए। दूसरे दिन आप ने अपनी कृपा दृष्टि करके उस का रोग दूर कर दिया और उसे सत्यनाम के स्मरण का उपदेश दे कर आगे चल पड़े। इस स्थान पर आप जी के आगमन की याद में गुरुद्वारा बना हुआ है जो आज कल पाकिस्तान में है।

www.9009.co.in

सुलतानपुर बेबे नानकी के पास

दीपालपुर से चल कर गुरु जी कसूर के रास्ते पट्टी आए और पट्टी से अपने गाँव जिस का नाम उस समय पट्ठे विंड था और अब डेहरा साहिब है, पहुँचे। इस गाँव से बाहर ही एक रात काट कर आप जी व्यास नदी को पार करके सुलतानपुर चले गए।

कीर्तपुर सांई बुढण शाह के पास

कुछ दिन अपने परिवार के पास सुलतानपुर विश्राम करके आप जी एक और प्रसद्धि महापुरुष को मिलने के लिए कीर्तपुर को चल पड़े। सतलुज नदी को पार करके सांई बुढण शाह के पास उस के पहाड़ी मुकाम पर पहुँच गए। साई एक वृद्ध उमर का प्रसिद्ध शक्तिशाली फ़कीर था। इस के पास शेर और वृद्ध बकरियाँ रहती थीं।

बुढण शाह ने गुरु जी को कहा कि संसार में भ्रमण करके, प्रभु की भक्ति नहीं हो सकती, जिस लिए मैं इस पहाड़ी पर एकांत आवास करके प्रभु की भक्ति में लीन रहता हूँ।

गुरु जी ने कहा, सांईं जी ! सब से बड़ा एकांत आवास यह है कि पुरुष एक मन होकर सत्यसंग करे और सत्यसंग में प्रभु के प्यार वाले श्रेष्ट उपदेश रूपी मोती चुन कर अपना जीवन ऊँचा करे। बुढण शाह ने प्रार्थना की कि आप मेरे पास सदा ही टिके रहो, मैं आपकी संगत करता रहूँगा। गुरु जी ने कहा, शरीर करके संगत सदा स्थिर नहीं रह सकती, आप हमारा उपदेश नाम स्मरण सदा ही अपने पास रखो। आप जी के यह वचन सुन कर बुढण शाह बहुत खुश हुआ। आप जी की इस याद में यहाँ गुरुद्वारा चरण कमल करके प्रसिद्ध है। इस स्थान के उत्तर की ओर श्री गुरु हरिगोबिंद जी ने अपने बड़े सुपुत्र बाबा गुरदित्ता जी से सम्वत्

१६८३ विक्रमी में एक गाँव बसाया था और इस गाँव क नाम कीर्तपुर रखा गया।

सिआलकोट हमजा गौंस

साई बुढण शाह से विदा हो कर गुरु जी सुलतानपुर, वैरोवाल, जलालाबाद, किड़ियाँ पठानां से होते हुए शैदपुर भाई लालो के पास पहुँच गए। भाई लालो के पास कुछ दिन विश्राम करके आप जी पसरूर के रास्ते सिआलकोट शहर आ गए और शहर से बाहर एक बेरी के वृक्ष के नीचे आप ने आवास किया। इस स्थान के पास ही एक फ़कीर जिस का नाम हमजा गौंस था। एक मकबरे के हजूरे में बैठा हुआ था। वह कहता था कि यह शहर झूठों का है और मैंने इसे श्राप से नष्ट कर देना है। बात यह थी कि यहाँ एक क्षत्रि के घर संतान नहीं होती थी। उस ने हमजा गौंस के मनौत की कि अगर मेरे घर संतान होगी तो पहला लड़का मैं हमजा गौंस को दे दूँगा। परन्तु जब उस के घर लड़का पैदा हो गया तो हमजा गौंस के मांगने पर भी उस क्षत्रि ने लड़का न दिया। जिस कारण हमजा गौंस क्रोध से श्हार को नष्ट करने के लिए बैठा हुआ था।

इस बात का पता लगने पर गुरु जी हमजा गौंस को मिलने के लिए उनके मकबरे के पास पहुँच गये, परन्तु उसके मुरीदों ने कहा कि पीर जी की आज्ञा है कि जब तक यह शहर नष्ट नहीं हो जाए तब तक हमने न सूर्य देखना है और न किसी स्त्री पुरुष के दर्शन ही करने हैं। यह झूठों का शहर नष्ट होने के योग्य है।

गुरु जी यह वचन करके अपने ठिकाने बेरी के नीचे वापिस आ गए। कि आज दोपहर को ही पीर जी सूर्य देख लेंगे और उनका प्रण भी टूट जाएगा। तद्उपरान्त जब दोपहर का सूर्य तो पीर के मठ का गुंबज तिड-तिड़ करके खरबूजे की फाँक जैसे ऊपर से

नीचे तक फट गया और सूर्य की किरणें पीर के ऊपर जा पड़ीं। जिस समय पीर ने देखा कि गुम्बज फट गया है तो शीघ्र ही दरवाजा खोल कर वह बाहर आया। गुरु जी के वचन करने से अपना प्रण टूटा देख कर पीर शीघ्र ही गुरु जी के पास आ गया। गुरु जी ने कहा पीर जी! एक अपराधी के बदले सारे शहर को नष्ट कर देना अच्छा नहीं है। दरवेशों को कहर करना ठीक नहीं होता। सब को दया की नज़र से देखना चाहिए। गुरु जी के शान्तमय वचन सुन कर उस ने अपनी भूल मान ली और आगे से सब की भलाई का प्रण लिया। इस स्थान पर गुरु जी का गुरुद्वारा बेर साहिब प्रसिद्ध है, जहाँ बैठ कर गुरु जी ने हमजा गौंस को उपदेश दिया था।

मूला किराड़ 'मरना सच्च और जीउणा झूठ'

इस स्थान से ही गुरु जी ने मरदाने को एक टके का झूठ और सच्च खरीदने के लिए भेजा था। मरदाना बहुत दूकानों पर गया। मगर किसी से भी उसको सच्च और झूठ न मिला। अन्त में एक मूले किराड़ ने एक कागज़ पर 'मरना सच्च' और दूसरे पर 'जीउणा झूठ' लिख कर मरदाने को दे दिया। और आप भी दूकान से उठ कर मरदाने के साथ ही यह देखने के लिए आया कि यह सौदा खरीदने वाला कौन सा व्यापारी है। मूला गुरु जी के दर्शन करके धन्य हो गया और नाम दान का उपदेश लेकर गुरु जी का शिष्य बन गया। मूले के घर वाले इसी स्थान पर गुरुद्वारा बाउली साहिब बना हुआ है।

www.9009.co.in

लाहौर शहर दुनी चंद को उपदेश

सिआल कोट से गुरु जी ऐमनाबाद आए और ऐमनाबाद से लाहौर आ गये। उस समय श्राद्धों के दिन थे, और दुनी चन्द शाहूकार अपने पिता का श्राद्ध सम्पन्न करके बहुत से ब्राह्मणों और संतों को भोजन खिला रहा था। गुरु जी को परम संत रूप समझ कर भोजन खिलाने के लिए अपने घर ले गया। गुरु जी ने पूछा आज आप के घर क्या है जिस लिए तुम ने इतना यज्ञ आयोजित किया है? उस ने कहा, जी आज मेरे पिता का श्राद्ध है, जिस के कारण यह सब कुछ मैंने किया है। गुरु जी ने कहा, आप का पिता तीन दिन से भेड़िये के रूप में बाहर जंगल में भूखा बैठा हुआ है, उस को आप का यह पुण्य दान का भोजन कुछ नहीं पहुँचा। दुनी चंद ने कहा, महाराज ! मेरा पिता भेड़िये की योनि में क्यों पड़ा है, वह तो बड़ा धर्मात्मा था? गुरु जी ने बताया कि अन्त समय आप के पिता को माँस खाने की इच्छा हुई थी, इस लिए मर कर उसको भेड़िये की योनि प्राप्त हुई है। जब तक वह अपनी इस अंतिम इच्छा को भोग नहीं लेगा तब तक उस की यही गति बनी रहेगी। मानव के अपने किये हुए कर्म ही उस के आगे आते हैं, दूसरे का किया हुआ किसी को कुछ नहीं मिलता। दुनी चन्द को उपदेश देने के लिए गुरु जी ने 'आसा दी वार' की पंद्रह पउड़ियाँ उच्चारण कीं।

दुनी चन्द ने गुरु जी से चरण पाहुल ले कर सिखी धारण कर ली और सत्यसंग करने के लिए अपने घर में ही धर्मशाला बना दी जो दिल्ली दरवाज़े के अंदर चौहटा मुफती बाकर के नाम से प्रसिद्ध है।

पखोके रंधावे करतार पुर बसाना

दुनी चन्द को उपदेश दे कर गुरु जी लाहौर से रावी नदी के बायें किनारे के साथ-साथ कई प्राणियों को सत्यनाम का उपदेश देते हुए गाँव पखो के रंधावे पहुँच कर गाँव से बाहर एक बरगद के नीचे बैठ गए। इस गाँव में गुरु जी का ससुर मूला चोणा पटवारी लगा हुआ था और श्री सुलखणी जी आप जी के महल और दानों साहिबज़ादे भी यहाँ अपने नाने नानी के पास ही रहते थे।

जब मूले चोणे को पता लगा कि श्री नानक जी बाहर बरगद के नीचे बैठे हुए हैं तो वह उस गाँव के चौधरी अजिते रंधावे को साथ ले कर गुरु जी के पास आया और कई प्रकार की छोटी-मोटी बातें कीं। तत्यश्चात् चौधरी अजिते रंधावे की प्रार्थना स्वीकार करके गुरु जी अपने परिवार को साथ लेकर रावी के पार दायें किनारे डेरा करके बैठ गए। चौधरी अजिते ने गुरु जी के निवास के लिए मकान बनवा दिया और जिस वस्तु की जरूरत थी वहाँ पहुँचा दी। तत्पश्चात् चौधरी दोदे की प्रेरणा से लाहौर के क्षत्रि करोड़ी मल्ल ने गुरु जी के लिए पक्के मकान और धर्मशाला बनवा दी और खर्च आदि के लिए कुछ ज़मीन भी नाम लगवा दी।

यहाँ एक सत्यसंगी पुरुष ने गुरु जी से पूछा कि नेक पुरुष के क्या लक्षण होते हैं? गुरु जी ने कहा, नेक आदमी वह है—

१. जिस के विचार नेक हों। २. जो दूसरों का यश सुन कर प्रसन्न हो। ३. जो संत साधु का साथ रखता हो। ४. जो अपने ऊपर उपकार करने वाले का आदर करता हो। ५. जो अपने से बड़ों की सेवा आदरसहित करता हो। ६. जो गरीबों पर दया करता हो। ७. जो एका नारी सदा यति की पालना करता हो। ८. जो खोटे पुरुषों की संगत से दूर रहता हो।

दूसरी उदासी दक्षिण दिशा

(संवत् १५६७-१५७१ विक्रमी)

लगभग दो साल का समय करतारपुर में व्यतीत करके गुरु जी भाई भगीरथ और भाई बुड्ढा आदि कुछ सिखों को अपने परिवार के पास छोड़ कर आप फिर लोक कल्याण के लिए वैशाख संवत् १५६७ को चल पड़े। इस उदासी में आप जी के पाँवों में पादुकाएँ, हाथ में डंडा, कमर पर रस्से लपेटे हुए थे और माथे पर टीका लगाया हुआ था।

सरसा के पीर के साथ चर्चा

करतारपुर से चल कर गुरु जी सुलतानपुर बीबी नानकी जी के पास आए और यहाँ मेल-मिलाप की खुशियाँ करके फिर बठिंडे और भटनेर (हनुमान गढ़) आदि नगरों के रास्ते सरसे पहुँच गए। उस समय सरसा मुसलमान पीरों का प्रसिद्ध ठिकाना था। पीरों ने पूछा संत जी ! तप करना अच्छा है कि नहीं? गुरु जी ने कहा,अगर मन विकारी हो और शरीर के बल करके विकार करता हो तो शरीर को निर्बल करके मन को शुद्ध बनाने के लिए तप करना ठीक है। अगर मन और शरीर दोनों शुद्ध हों, कोई विकार न करता हो तो नाम-स्मरण करना चाहिए, यह तपों सिर तप है। पीरों ने कहा आप हमारे साथ भोरे में बैठ कर ४० दिन का तप करो फिर हम देखेंगे कि आप में तप करने की शक्ति है कि नहीं? तब गुरु जी और खवाजा शमसदीन, खवाजा रोशनदीन आदि पाँच पीरों के साथ ४० दिन का चिला काटने के लिए अलग-अलग भोरों में बैठ गए। पीरों ने जौं के दाने और पानी का सेवन करके ४०

दिन काटे, मगर गुरु जी निराहार नाम-स्मरण में बैठे रहे। ४० दिनों के पश्चात् जब पीर और गुरु जी बाहर आए तो पीरों के शरीर शिथिल और चेहरे मुरझाए हुए थे, मगर गुरु जी का शरीर पहले जैसा और चेहरा चढ़दी कला में थे। इस तरह गुरु जी का तप तेज़ देख कर पीरों ने गुरु जी को नमस्कार की और उन्हों ने आप जी के सिद्धान्त को स्वीकार किया। सरसे में गुरु जी का इस याद में गुरुद्वारा स्थित है और पास ही पाँच पीरों की कोठड़ियाँ भी हैं।

बीकानेर में सरेवड़े साधु के साथ चर्चा

सरसे से चल कर गुरु जी बीकानेर के इलाके में से गुज़र कर दक्षिण को जा रहे थे कि आप जी की एक सरेवड़े साधु के साथ चर्चा हुई। इस चर्चा में गुरु जी ने सरेवड़ियों के धर्म सम्बंधी एक शब्द उच्चारण किया--

वार माझ सलोक महला १ ।।

सिरु खोहाड़ि पोअहि मलवाणी जूठा मंगि मंगि खाही।।
फोलि फदीहति भुहि लैनि भड़ासा पाणी देखि सगाही।।

... ...

माऊ पीऊ किरत गवाइनि टबर रोवलि धाही।।

(स्री गुरु ग्रंथ साहिबः पृ० १४९)

आप जी ने बताया कि पानी सब जीवों का मेल है, इस के बगैर किसी की गति नहीं है—जिस को आप जीव हत्या के दोष से बचने के लिए प्रयोग करने से संकोच करते हो। मैला कुचैला खाते हो और सिर के बालों को हाथों से खाक लगा कर नोचते हो इत्यदि आप के नियम धारण करने से मुक्ति नहीं हो सकती।

www.9009.co.in

कौडे राक्षस का उद्धार

इस से आगे आप विंध्याचल के दक्षिणी जंगलों में रहने वाले एक आदमखोर भील कौडे के पास गए। कौडा मरदाने को तेल में तल कर खाने लगा था। परन्तु समय पर पहुँच कर गुरु जी ने मरदाने की रक्षा की और कौडे को धर्म की कृत करके खाना, जीवों पर दया करनी और नाम-स्मरण का उपदेश दे कर दैत्य जीवन से देवता जीवन वाला बना दिया।

संगलादीप के राजा शिवनाथ को उपदेश

कौडे का जीवन सुधार कर गुरु जी नदियों, पहाड़ों, जंगलों, नगरों, शहरों और उजाड़ों से निकल कर अनन्त जीवों का सुधार और उद्धार करते हुए नागापटम से समुन्द्र के किनारे रामेश्वरम पहूँचे। रावण से युद्ध करके सीता जी को लाने के लिए जब राम चन्द्र जी समुन्द्र पार करने के लिए पुल तैयार करने लगे तो आप जी ने यहाँ पहले शिवलिंग स्थापित करके अपने इष्ट शिवजी की पूजा की थी। जिस कारण इस स्थान का नाम राम-ईश्वर (रामेश्वर) प्रसिद्ध हो गया।

संगलादीप जा कर गुरु जी ने राजा शिवनाभ को सत्यनाम का उपदेश दे कर धन्य बनाया। गुरु जी की आज्ञा के अनुसार राजा ने सत्यसंग करने के लिए एक धर्मशाला बनवाई और सत्यसंग की नींव रखी।

हठ योग के अनुसार प्राणायाम करने के लिए गुरु जी ने राजा को जो साधन समझाया, वह एक पोथी के रूप में लिखा गया। जिसका नाम प्राणसंगली प्रसिद्ध हुआ। गुरमति के अनुकूल न होने के कारण श्री गुरु अर्जन देव जी ने गुरबाणी संगृहीत करते समय इसको अंगीकार नहीं किया था।

कजली बन में भर्थरी जोगी से चर्चा

मैसूर राज्य में बीजापुर के इलाके में एक घने जंगल का नाम कजलीबन है। इस बन में योगियों का एक आश्रम था। इस आश्रम में जब गुरु जी गए तो योगियों के मुखी भृर्थरी के साथ आप जी की चर्चा हुई। जब भृर्थरी ने कहा आप योग धारण कर लो तो आप जी ने कहा आपके हठ और योग से शरीर को कष्ट होता है, जिस लिए मन इस से भागता है, टिकता नहीं और मन के न टिकने से परमतत्त्व की प्राप्ति नहीं होगी। मगर हम अपनी लिव करतार से लगाये रखते हैं जिस लिए शरीर को कष्ट नहीं होता और मन सदा आनन्दमय और टिका रहता है। यह हमारा सहज योग है जिसको हम सदा ही धारण किये रखते हैं। फिर भृर्थरी ने कहा हम सोमरस (मद) का प्याला पी कर अखण्ड घर समाधि लगाते हैं और हमें अलख निरंजन के दर्शन होते हैं। गुरु जी ने कहा हम नाम रस का प्याला पी कर सदा ही मतवाले रहते हैं और हमारी रात-दिन लिव लगी रहती है। इस प्रथाए आप जी ने इस शब्द के द्वारा अपने मद के प्याले और उस को पी कर मतवाले रहने का उल्लेख किया है।

आसा महला १।।

गुड़ करि गिआनु धिआनु करि धावै करि करणी कसु पाईऐ।।
भाठी भवनु प्रेम का पोचा इतु रसि अमिउ चुआईऐ।। १।।
बाबा मनु मतवारो नाम रसु पीवै सहज रंग रचि रहिआ।।
अहिनिसि बनी प्रेम लिव लागी सबदु अनाहद गहिआ।। १।।
रहाउ।। पूरा साचु पिआला सहजे तिसहि पीआए जाकउ नदरि
करे।। अमृत का वापारी होवै किआ मदि छूछै भाउ धरे।।
२।। गुर की साखी अमृत बाणी पीवत ही परवाणु

भइआ।। दर दरसन का प्रीतमु होवै मुकति बैकुंठै करै
किआ।। ३।। सिफती रता सद बैरागी जूऐ जनमु न हारै।।
कहु नानक सुणि भरथरि जोगी खीवा अमृत धारै ।। ४।।

हे भृर्थरी ! गुरु जी ने कहा— परमात्मा के यशगान में लगा हुआ सदा ही योगी है, वह अपना जन्म निष्फल नहीं गँवाता। ऐसा मस्त हुआ पुरुष अप्ने आत्मा स्वरूप दर्शन रूपी अमृत को धारण करता है।

भृर्थरी ने सच्चे मद प्याले का, सहज समाधि और नित्य दर्शन का निर्णय सुन कर गुरु जी को नमस्कार की। फिर भृर्थरी के साथी दूसरे योगियों ने कहा कि गृहस्थ को त्याग कर योग साधना के द्वारा ही प्रभु की प्राप्ति हो सकती है। गुरु जी ने कथन किया— हे योगी ! जो पुरुष अपनी ईमानदारी की कृत करके अपनी निर्वाह करता है और उस से जरूरतमंदों को भी यथाशक्ति देता है, प्रेमा भक्ति के द्वारा मन को परमात्मा के स्मरण में लगाये रखता है, उसको गृहस्थ में ही प्रभु की प्राप्ति हो जाती है। इस तरह के प्रश्न उत्तरों की चर्चा करके गुरु आगे को चल पड़े।

बहावल पुर उच्च के पीर के साथ चर्चा

कजलीबन से चल कर गुरु जी समुन्द्र के पश्चिमी तट के साथ-साथ मालाबार, गुजरात, बंबई आदिक इलाकों में सत्यनाम का प्रचार करते हुए सिंध में उच्च के पीरों के पास बहावपुर आए। पीर बहावलदीन ऋद्धियों-सिद्धियों और करामातों में यकीन रखता था। गुरु जी ने कहा—पीर जी ! इन करामातों से लोगों को भ्रमा कर माया इकट्ठी करना और अपनी पूजा मान्यता करवानी उपयुक्त नहीं है। यह माया मुर्दा है। मुर्दा खाना नीचों का काम है। आप प्रभु की भक्ति करने वाले हंस हो, परमात्मा के नाम मोती को

www.9009.co.in

खाकर तृप्त रहना चाहिए। ऐसे सत्य वचन सुन कर वे गुरु जी के श्रद्धालु हो गए। यहाँ से चलकर गुरु जी बीबी नानकी जी को सुलतानपुर मिल कर करतारपूर परिवार पास पहुँच गए।

तीसरी उदासी उत्तर दिशा की

दक्षिण दिशा से वापिस आकर गुरु जी कुछ महीने करतारपुर ही रहे। दोनों वक्त सिख संगत इकट्ठी होती और गुरु जी के दर्शन उपदेश के द्वारा खुशियाँ प्राप्त करके धन्य होती। तद्उपरान्त आप जी ने फिर संवत् १५७१ को उत्तर दिशा के पहाड़ी लोगों को सत्यनाम कर उपदेश देने के लिए यात्रा आरंभ कर दी।

मटन का ब्रह्म दास

करतारपुर से जम्मू के रास्ते श्री नगर इलाके में जब मटन चश्में पर गए तो आप जी ने वहाँ के एक ब्रह्म दास कशमीरी विद्वान पण्डित को, जो सालग राम का उपाशक था, निंरकार की उपासना ग्रहण कराई और इस इलाके का उस को प्रचारक नियत किया। यहाँ गुरु जी का इस याद में एक गुरुद्वारा बना हुआ है।

बदरी नाथ कैलाश पर्वत

यहाँ से चल कर गुरु जी बदरी नाथ, हेम कुन्ट के रास्ते सुमेर तथा कैलाश पर्वत पर सिद्ध मण्डली के स्थान मानसरोवर के पास पहुँच गए। यहाँ सिद्धों से जो वार्तालाप हुई उसको भाई गुरदास जी इस तरह वर्णान करते हैं—

बाबे ढिठी प्रिथवी नवे खंडि जिथै तक आही।।
फिर जाइ चड़िआ सुमेर पर, सिध मण्डली दृष्ट आई।।

चउरासीह सिध गोरखादि मन अंदर गणती वरताई।।
सिध पुछ्ण सुण बालिआ कउण सकति तुहि एथे लिआई।।
(उत्तर) हउ जपिआ परमेरी भाउ भगति संग ताड़ी लाई।।
(प्रश्न) आखण सिध सुणि बालिआ अपणा नाम तुम देहु बताई।।
(उत्तर) बाबा आखे नाथ जी ! नानक नाम जपे गति पाई।।
नीच कहाए ऊच घरि आई।। २८।।

अर्थात्- बाबा गुरु नानक जब सुमेर पर्वत पर गया तो वहाँ चौरासी सिद्ध और गोरख नाथ मण्डली आप जी को मिली। उन्हों ने पूछा—हे बालके ! तुझे कौन सी शक्ति यहाँ ले आई है ?

गुरु जी ने कहा—मैंने एक परमेश्वर का स्मरण किया है और प्रेमा भक्ति के साथ लिव लगाई है। जिस की शक्ति से मैं यहाँ आया हूँ। फिर सिद्धों ने कहा, हे बालके! अपना नाम भी हमें बता दो। गुरु जी ने कहा—मेरा नाम नानक है और मैंने परमेश्वर का नाम जप कर यह पद प्राप्त किया है। अपने आप को नीच कहलवा कर ही उच्च पद पर आया जाता है।

आप जी का यह उत्तर सुन कर सिद्धों ने पूछा कि स्वर्ग का कैसा व्यवहार है। गुरु जी ने भाई गुरदास जी के कथन अनुसार इस तरह बताया है—

वार १।।

कल आई कुत्ते मुही खाज होआ मुरदार गुसाई।।
राजे पाप कमांवदे उलटी वाड़ खेत कउ खाई।।
परजा अंधी ग्यान बिन कूड़ कुसत्तु मुखहु आलाई।।
चेले साज वजाइंदे नच्चन गुरू बहुत बिधि भाई।।
सेवक बैठन घरां विच गुरू उठ घरीं तिनाड़े जाई।।
काजी होए रिशवती वढी लै के हक गवाई।।
... ...
वरतिआ पाप सभस जग मांही ।। ३०।।

स्वर्ग का यह व्यहवार बता कर फिर गुरु जी ने सिद्धों को कहा—

> सिधि छप बैठे परबती, कउण जगति कउ पार उतारा ।।
> जोगी गिआन विहूणिआ, निसदिन अंगि लगाइन छारा।। २९।।

हे सिद्धों ! आप छिप कर पहाड़ों में बैठ रहे हो जगत् की मुक्ति और कौन करे। ज्ञानहीन हो कर आप दिन रात शरीर पर खाक लगा कर रहते हो, लोगों के कल्याण के लिए आप कोई काम नहीं करते।

फिर सिद्धों ने गुरु जी को अपनी करामातें दिखा कर अपने वश में करने का यत्न किया, मगर किसी तरह भी उन्हें सफलता न मिली तो आदेस-आदेस और अलख-अलख के बोल बोलते हुए उठ कर इधर-उधर चले गए। गुरु जी वहाँ से चल कर नेपाल, सिक्कम और भूटान का भ्रमण करते हुए तिब्बत के रास्ते ही वापिस जम्मू आए। जम्मू से नीचे उतर कर व्यास नदी पार करके सुलतानपुर लोधी बेबे नानकी के पास आ गए। आप जी के यहाँ आवास के दूसरे दिन बीबी नानकी जी और एक दिन उस के पश्चात् जै राम जी परलोक सिधार गए। गुरु जी इनकी अन्येष्ठि करके करतारपुर अपने स्थान पर पहुँच गए। इस तरह सम्वत् १५७५ में आप जी की तीसरी उदासी सम्पन्न हुई।

चौथी उदासी पश्चिम दिशा की

उत्तर दिशा की यात्रा समाप्त करके गुरु जी कुछ समय करतारपुर ही संगतों श्रद्धालुओं का कल्याण करते रहे। तद्उपरान्त संवत् १५७५ में आप जी ने अपनी चौथी यात्रा आरंभ

कर दी। करतारपुर से आप जी तलवंडी गए और तलवंडी से चल कर वैशाखी, सम्वत् १५७६ का मेला कटास राज जिला जेहलम में जा कर किया। यहाँ मेले में आये हुए संन्यासियों को गुरु जी ने कहा कि जो लोग गृहस्थ के दुखों से डर कर घर परिवार छोड़ कर वैराग्य धारण कर लेते हैं, वे मंद वैरागी होते हैं, जिस का फल बहुत थोड़ा होता है। दूसरे वे लोग जो परमात्मा के स्मरण की लिव में लग कर घर के सभी सुखों को त्याग कर उपराम हो जाते हैं, वे सच्चे वैरागी होते हैं। संन्यासी को सच्चा वैराग्य धारण करना चाहिए।

टिल्ला बाज गुँदाई

कटासे से गुरु जी रुहतास टिल्ला बाल गुँदाई पहुँचे। यहाँ कान फटे योगियों का डेरा था। इस डेरे का प्रधान योगी अपने डेरे में आए संत साधु अथवा अतिथि की वस्त्र और खाने-पीने की बहुत सेवा करता था। आप बहुत साधारण भोजन खाता और वस्त्र पहनता था। गुरु जी इसकी इस करनी पर बहुत प्रसंन हुए और कहा कि योगी जी ! सच्चा योगी बनने के लिए अपने मन की वासना को रोक कर परमात्मा का स्मरण करना और अपनी वृत्ति को उस में जोड़ना चाहिए।

चोहा साहिब

टिल्ले की पहाड़ी के नीचे एक भगतू सिख बैठा था, उस ने गुरु जी के पास प्रार्थना की कि यहाँ पानी की बहुत कमी है, आप कृपा करें, तो मेरी यह मुश्कल सदा के लिए दूर हो जाए। गुरु जी ने उस की यह योग्य प्रार्थना प्रवान करके एक पत्थर उठा कर पानी का प्रवाह जारी कर दिया। इस का पानी प्रवास (चश्मा) आज तक चल रहा है। इस के पास ही एक सरोवर और एक गुरुद्वारा है।

www.9009.co.in

सखर भखर और साध बेला

भाई भगतू को आनन्दित करके गुरु जी कई स्थानों के लोगों का कल्याण करते हुए डेरा इसमाईल खां, डेरा गाज़ी खां, जामपुर, मीरां पुर, नौशैहरा, राजनपुर और भिठन कोट, यहाँ पंजाब के पाँच दरिया इक्ट्ठे होते हैं, पहुँचे। यहाँ से सखर-भखर और रोहड़ी, साध बेला जा कर एक बरगद के नीचे बैठ गए। साध बेले के साधुओं के साथ आत्मिक ज्ञान की चर्चा कर के आप जी, लाड़काना, अमरकोट, टांडा, हैदराबाद, उडयारे सिंध नदी के किनारे गए। फिर ठटे की राजघाट से कराची पहुँच गए और हाजियों के साथ मिल कर मक्के मदीने चले गए।

मक्के का काबा फेरना

मक्के में मुसलमानों का एक सिद्ध पूज्य स्थान है, जिस को काबा कहते हैं। गुरु जी वहाँ जब रात के समय काबे की तरफ पैर करके सो गये, तो एक जीऊण नाम के मुजावर ने क्रोध के साथ कहा 'कि तुम कौन काफिर हो जो खुदा के घर की तरफ पैर फैला कर सोये हुए हो?' गुरु जी ने बड़ी नम्रता के साथ कहा, मैं सफर की थकावट के कारण सोया पड़ा हूँ, मुझे मालूम नहीं कि खुदा का घर किधर है। यह बात सुन कर जीऊण ने बड़े क्रोध से गुरु जी के चरण घड़ीस कर दूसरी तरफ कर दिए । जब चरण छोड़ कर देखा तो उसको काबा उस तरफ ही नज़र आया। इस तरह ही जब उसने दूसरी तरफ चरण किये तो काबा उसको फिर उधर ही नज़र आया। जीऊण ने जब देखा कि काबा उन चरणों के साथ ही फिर जाता है तो उस ने मक्के के मुजावर को सारी बात बताई। इस बात से बहुत से हाजी, मुलाणे और लोग इक्ट्ठे हुए।

काजी रुकनुलदीन, पीर जलाल दीन और बहाउदीन सहित सब हाजियों के साथ आप जी के बहुत प्रश्न उत्तर हुए। जब सभी निरुत्तर हो गए तो पीर बहाउदीन ने अपने साथियों को सम्बोधित करके कहा—

बोलिया पीर बहावुदीन सुण जलाल दी पीर।।
नानक पासों पुछना बहुती है तकसीर।।
ज़ाहर अजवत एक दी काबा दिता फिराइ।।
मजब सभे सनसुख कर आंदे है सू जेर।।
मंनिआ है सु खुदाए एक दूजा होर न कोइ।।
दूजा मुरशद पीर सचा राह दिखाए जोइ।।
हिंदू देख न भुल तूं मुसलमान भि नाहि।।
दोए रदे मजबां घते नी दोजख माहि।।
वडा फकीरी मरतबा मारफत सच्चा राह।।
मारफतों जो बाहरे बाहरे सभै हैं गुमराह।।
महिरम तुसीं न पीर जी नानक वडा फकीर।।
रब जिनों दे हुकम विच सो सभनां दे पीर।।

पीर बहाउदीन से यह निश्चयपूर्वक कथन सुन कर सभी पीर और फकीर गुरु जी के चरणों में पड़ गए और क्षमा माँगी। कुछ दिनों के बाद जब गुरु जी ने वहाँ से चलने की तैयारी की तो काबे के पीरों ने प्रार्थना करके गुरु जी की एक पादुका निशानी के तौर पर अपने पास रख ली।

मक्के की यात्रा के सम्बन्ध में भाई गुरदास जी लिखते हैं—

वार १।।

बाबा फिर मक्के गइिआ नील बसत्र धारे बनवारी।।
आसा हथ्थ किताब कछ कूजा बांग मुस्सला धारी।।
बैठा जाइि मसीत विच जिथे हाजी हज गुजारी।।
जां बाबा सुत्ता रात नूं वल महिताबे पाइि पसारी।।
जीवण मारी लत्त दी किहड़ा सुत्ता कुफ़र कुफ़ारी।।

www.9009.co.in

लत्तां वलि खुदाइदे किऊं करि पइिआ हुई बजगारी।।
टंगों पकड़ घसीटिआ फिरिआ मक्का कला दिखारी।।
होइ हैरान करेन जुहारी।। ३२।।

फिर जैसे काजी और मुल्लां इकट्ठे होकर बातें पूछने लगे। भाई साहिब जी उस का वर्णन भी इस प्रकार करते है –

वार १।।

पुछन गल्ल ईमान दी काज़ी मुल्लां इकट्ठे होई।।
वडा सांग वरताइिआ लख न सके कुदरति कोई।।
पुछण फोलह किताब नूं हिंदू वरा कि मुसलमानोई।। ३३।।

गुरु जी का उत्तर—

वार १।।

बाबा आखे हाजीआँ शुभ अमला बाझों दोवें रोई।।
हिंदू मुसलमान दोइ दरगहि अंदर लैन न ढोई।।
कच्चा रंग कुसुंभ का पाणी धोतै थिर न रहोई।।
करन बखीली आप विच राम रहीम कथाइ खलोई।।
राह शैतानी दुनीआं गोई।। ३३।।

काजियों और मुल्लाओं ने गुरु जी के एक पैर की पादुका लेकर निशानी के तौर पर अपने पास रख ली। भाई जी लिखते हैं—

वार १।।

धरी निशानी कौस दी मक्के अंदर पूज कराई।।
जिथ्थै जाइ जगत विच बाबे बाझ न खाली जाई।। ३४।।

मदीने की यात्रा

मक्के से चल कर गुरु जी मदीने आए। इस स्थान पर हज़रत मुहम्द साहिब दफ़नाए गए थे। इस कारण मुसलमानों का यह एक बड़ा पूज्य स्थान है। यहाँ आ कर गुरु जी ने पैगम्बर की कबर के पास बैठ कर यह शब्द गाया—

www.9009.co.in

बसंतु हिंडोलु महला १ घरु २

नउ सत चउदह तीनि चारि करि महलति चारि बहाली।।
चारे दीवे चहु हथि दीए एका एका वारी।। १।।

... ...

आदि पुरख कउ अलहु कहीऐ सेखाँ आई वारी।। देवल
देवतिआ करु लागा ऐसी कीरति चाली।। ५।। कूजा
बांग निवाज मुसला नील रूप बनवारी।। घरि घरि मीआ
सभनां जीआं बोली अवर तुमारी।। ६।। जे तू पीर महोपति
साहिबु कुदरति कउण तुमारी।। ७।।

... ...

नानक नामु मिलै वडिआई मेकां घड़ी सम्हाली।। ८।।

(स्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ० ११९०)

इस शब्द का गायन सुन कर बहुत से मुसलमान शरई लोग गुरु जी को ईंट पत्थर मारने लगे, परन्तु सब के हाथों के साथ ही पत्थर जुड़ गए। जब इस कौतक का पता वहाँ के हाकम को चला तो वह अपने साथ कई प्रसिद्ध काज़ियों, मुल्लाओं और पीर, फ़कीरों को ले कर गुरु जी के पास आया। गुरु जी अपने शब्द गायन में मस्त हो कर लगे रहे। जब भोग पड़ा तो उनको नमस्कार कर गुरु जी के पास बैठ कर कई प्रकार के प्रश्न किये और उन्हीं के पर्थाए उत्तर सुन कर सब निरुत्तर हो गए। फिर गुरु जी से माफी माँग कर पूछने लगे कि आप अल्ला को पहुँचे हो, उस का रूप ही हो। इस लिए आप हमें वह रास्ता बताओ जिस से मौत का डर दूर हो जाए और दरगाह में हो कर जाएँ। तब गुरु जी ने कहा—

नानक आखे सच दी सुणहो पंद इमाम।। छडो खुदी
तकबरी बणो ना शरा गुलाम।। तोबा करो गुनःह थीं हम
पराइिआ छड।। लोक दिखावा ना करो मन अला विच

गड।। उही मुहंमद महा देव कलमां मंतर एक।। कर अला की बंदगी एको एही होइि।। सिल अलूणी चटणी पउसी मुशकल खोइि। इिको दी कर बंदगी दूजा फानी धार।। किती लख पैगंबरां किते हैं अवतार। हाजर नाजर रब इिक हिंदू मुसलमान।। जो चले सो पहुंच है तजके मजब गमान।। सचा फिरका साजिआ नानक शाह फकीर।। जो आवै दृड़ भाउ कर पावै गुणी गहीर।।

(जन्म साखी भाई बाले वाली में से)

गुरु जी के यह विचार सुन कर इमाम बहुत खुश हुए और गुरु जी को अल्ला का सच्चा पैगंबर मान कर उन्हें नमस्कार करने लगे। जब कई दिन यहाँ ठहर कर गुरु जी चलने लगे तो आप जी के दूसरे पाँव की पादुका निशानी के तौर पर इमाम ने यहाँ रख ली।

हमीद कारूँ को उपदेश

मदीने के ईमामों से चर्चा करके गुरु जी रोम (रूम) देश के सुलतान हमीद कारूँ को मिले। इस ने बहुत पाप अत्याचार करके ४० गंज दौलत इकट्ठी की हुई थी। यह अत्यन्त कंजूस था। इस ने कबरों से मुर्दे निकाल कर उन के मुंह से भी पैसे निकाल लिए थे। इस की आज्ञा थी कि मेरे राज्य में कोई भी अपने पास या घर में पैसा नहीं रख सकता। इन कारणों से प्रजा का दुख दूर करने के लिए गुरु जी इसके पास गए और इस के महल के आगे बैठ कर ठीकरियाँ इकट्ठी करने लगे। कारूँ ने पूछा, पीर जी ! इन ठीकरिओं को क्या करोगे? गुरु जी ने स्वभावक ही वचन किया, यह हम परलोक में अपने साथ ले जाने के लिए इकट्ठी कर रहे हैं। कारूँ ने कहा, हे दरवेश ! यह ठीकरियाँ आपके साथ कैसे जा सकती हैं? शरीर अगर हमारे साथ है यह भी यहीं रह जाना है।

अंत समय एक तिनका भी साथ नहीं जाएगा। जब गुरु जी ने कथन किया—हे बादशाह ! तुम देश में लोगों पर जुल्म करके जिन पापों से ४० गंज धन इकट्ठे किए हुए हो, यह तुम्हारे साथ कैसे जाएगे? लोगों पर किए जुल्मों के कारण तुम दोज़खों (नर्कों) में पड़कर बहुत दुख पाओगे। यह तेरा पापों से इकट्ठा किया हुआ धन तेरे और वारिस ले जाएंगे और तुम दोज़खों में पड़े तड़पोगे। यह बात अच्छी तरह विचार लो। अगर तुम अपना भला चाहते हो तो यह पापों की कमाई गरीबों में बाँट दो। गुरु जी के दर्शन करके और उन से प्रभावशाली वचन सुन कर कारूँ ने कहा, हे अल्लाह के प्यारे दरवेश ! जो कुछ पीछे गुज़र गया सो तो गुज़र ही गया, अब तुम उपदेश दो, जिस से मुझे खुदा पर भी विश्वास हो जाए और मैं उस राह पर चलूँ। उस की श्रद्धापूर्वक प्रार्थना सुन कर गुरु जी ने यह नसीहतनामा उच्चारण किया। यह प्रसिद्ध चाहे बहुत है, मगर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में दर्ज नहीं है।

नसीतह नामा

राग तिलंग।। कीचै नेक नामी जो देवै खुदाइ।। जो दीसै जिमी पर सो होसी फनाइ।। दाइम व दौलत कसे बेशुमार।। न रहेंगे क्रोड़ी न रहिंगे हजार।। दमड़ा उसी का जो खरचे अर खाइ।। देवै दिलावै रजावै खुदाइ।। होता न राखै इकेला न खाइ।। तहकीक दिलदानी वही भिशत जाइ।। कीचै तवजिओ न कीचै गुमान।। न रहिसी इहि दुनीआ न रहिसी दीवान।। हाथी न घोड़े व लशकर हजार।। होवेंगे गरक कुछ लागे न बार।। दुनीआ का दिवाना कहे मुलक मेरा। आई मौत सिर पर न मेरा न तेरा। आइआ इकेला इकेला चलाइआ।। चलते वखत कोई काम न आइआ।। लेखा मंगीजै किआ दीजै जवाब।। तोबा पुकारे तो पावै अजाब।। दुनीआ पर कीआ जोर

दमड़ा कमाइिआ।। खाइआ हंढाइिआ अजाईं गवाइिआ।। आखर पछोताणा करे हाइि हाइि।। दरगहि गइिआ सोऊ पावै सजाइि।। लानत है तैकू अरु तैंडी कमाई।। दगेबाजी करके दुनीआं लूट खाई।। पीए पिआले औ खाइि कबाब।। देखो रे लोको जु होते खराब।। जिसका तूं बंदा तिसीका सवारिआ।। दुनीआ के लालच तैं साहिब विसारिआ।। न कीती इिबादत न रखीओ ईमान।। कीती हकूमत पुकारे जहान।। अंदर महिलां के बैठों तूं जाइि।। हरमां से खेलैं खुशबोई हवाइ मन पूछै न बूझै जु बाहर किआ होइि।। हरामी गरीबां को मारे विगोइि।। बसती उजाड़ैं फिर न बसावैं।। कूकहि पुकारहि दाद न पावै।। लखोड़ी क्रोड़ी कीए बेशुमार।। न रहैंगे करोड़ी न रहेंगे हजार।। हाकम कहावैं हकूमत न होइि।। दुनीआं का दिवाना फिरै मसत लोइि।। लूटे मुलक बहुत पहिरे अर खाइि।। दोजक की आतश मारेगी जलाइि।। गरब सिउं न देख दुनीआ के दिवाने।। हमेशां न रहेगी तूं ऐसी न जाने।। उठावे सफा उसको लागे न बार।। किसकी इिह दुनीआं किसके घर बार।। चंद रोज चलना किछ पकड़ो करार।। न कीचै हिरस बहुत दुनीआं के यार।। शरमिंदा न होइि कुछ नेकी कमाइ।। लानत का जामा पहिरके न जाइि।। गफलत करहुगे तो खावोगे मार।। बेटी व बेटा को लहैगो न सार।। तोबा करहु बहुर कीचै न जोर।। दोजक की आतश जलावोगे गोर।। मसाइिक पैगंबर केते शाहखान।। न दीसें जिमी पर तिनों के निशान।। चलते कबूतर लनावर की छाऊं।। केते खाक हूऐ को पूछे न नाउं।। चाली गंज जोड़े न रखिओ ईमान।। देखो रे कारुं ! जु होते परेशान।। न दानी न दुनीआं व फानी मुकाम।। तूं खुद चशमबीनी इह चलना जहान।। तोबा न कीतीआ करके गुनाह।। नानक इस आलम से तेरी पनाह।।

गुरु जी के यह वचन सुन कर कारूँ का मन पिगल गया। वह अपने किए हुए जुल्म और पापों को याद करके काँप उठा। इस भयभीत हूई दशा में उस ने गुरु जी को कहा कि मैं धन लालच के कारण तृष्णा की नदी में बहता जा रहा था, आप की कृपा से मैं इस में से निकला हूँ। अब मुझे खुदा का रास्ता बताओ।। जिस को ग्रहण करके मेरा पार उतारा हो। उस की श्रद्धा और पच्छाताप को देख कर गुरु जी ने कहा यह ४० गंज खज़ाना जो तुमने पापों से इकट्ठा किया है यह प्रभु के नाम पर गरीबों को बाँट दो और अहं से रहित होकर प्रभु की बंदगी किया करो। इस से तेरे पाप धुल जाएँगे। गुरु जी के वचनों को मान कर कारूँ ने सभी खज़ाने गरीबों में अनाज कपड़े के रूप में बाँट दिए। इस से सारे देश में लोगों को बहुत प्रसन्नता हुई और लोग शान्ति के साथ रहने लगे। कारूँ ने गुरु जी के चरणों पर नमस्कार करके कहा कि आप ने मुझ भूले हुए को सुमार्ग पर डाला है। आप की बड़ी कृपा है। आप ने सारे देश को सुखी बना दिया है। कुछ दिन वहाँ विश्राम करके कारूँ को आनन्दित करके गुरु जी आगे की ओर चल पड़े।

गुरु जी ने बगदाद जाना

कारूँ के पास से चल कर गुरु जी बगदाद शहर के पूर्व की ओर पहाड़ी के नीचे जा बैठे। यहाँ का राजा बड़ा अत्याचारी था, उसने कई पीर-फ़कीरों को करामात देखने के लिये कैद किया हुआ था, जब गुरु जी ने वहाँ गुरुवर अकाल की बाँग लगाई तो सभी सुनने वाले लोग सुन्न हो गए। इस का पता करने के लिए कि यह शक्तिशाली बाँग किस ने दी है, पीर दस्तगीर ने समाधि लगा कर देखा तो उस को पता चला कि एक बड़ा मस्ताना फ़कीर है, जिस ने यह बाँग दी है। भाई गुरदास जी इस वार्ता का वर्णन इस तरह करते हैं—

वार १।।

बाबा गइआ बगदाद नूं, बाहिर जाइ कीआ असथाना।।
इक बाबा अकाल रूप दूजा रबाबी मरदाना।।
दिती बांग निमाज़ करि, सुंन मसान होआ जहाना।।
सुंन मुंन नगरी भई, देख पीर भइआ हैराना।।
वेखै धिआन लगाइ करि इक फ़कीर वडा मसताना।।
पुछिआ फिर के दसतगीर, कौण फ़कीर किस का घराना।।

उस को उत्तर मिला कि—

नानक कल विच आइआ रब्ब फ़कीर इक पहिचाना।।
धरति अकास चहूँ दिस जाना ।। ३५ ।। वार १ ।।

जब पीर को यह पता चला कि यह वही पीर हैं जिन्हों ने मक्का घुमा दिया था और मदीने के इमामों को चर्चा के साथ जीता है तो वह आप गुरु जी के दर्शन करने आया। दस्तगीर ने पूछा आप क़िस स्वरूप के फ़कीर हो और आप का नाम क्या है? मरदाने ने कहा यह (गुरु) नानक है जो एक प्रभु के ही स्वरूप को मानने वाला है।

यह सभी आकाश, पृथ्वी और चारों दिशाओं में प्रसिद्ध हैं। फिर पीर ने और कई प्रश्न उत्तर करके पूछा कि आप जो अपने कलाम में लाखों पातालों और लाखों आकाशों की बात करते हो, यह आप ने किस आधार पर कहे हैं? हमारे हज़रत साहिब ने तीन आकाश और तीन ही पाताल बताए हैं, और हिंदू मज़हब सात आकाश और सात पाताल मानता है। इस लिये आप का कहना कुफर (झूठ) है। मानने में नहीं आ सकता। गुरु जी ने कहा पीर जी ! जितनी किसी को समझ हो वह उतनी ही कहता है। हमें करतार ने लाखों की सूझ दी है, हम ने लाखों कहे हैं। पीर ने कहा हमें इस का यकीन किस तरह हो, गुरु जी ने कहा हम आपको दिखा सकते हैं, आप हमारे साथ चलो, पीर ने कहा आप मेरे बेटे को साथ ले जाना।

www.9009.co.in

उस को दिखा दो। मेरी तस्सली हो जाएगी। तब गुरु जी ने पीर के बेटे को कहा कि आँखें बंद करो, जब उस ने आँखें बंद कर लीं तो उस को साथ लेकर आँख के झपकने में ही आकाश में चढ़ गए और लाखों ही आकाश दिखा कर फिर क्षण में ही पाताल में ले जा कर लाखों ही पाताल दिखाए। पातालों से वापिस आते समय एक जगह पर संगत एकत्र हुई थी। वहाँ प्रसाद बाँटा जा रहा था। वहाँ से गुरु जी ने पीर के बेटे को एक कचकौल (मिटी का ठूठा) कढ़ाह प्रसाद का भर कर दिया और वापिस पीर के पास आ बैठे।

पीर के बेटे ने अपने पिता को बताया कि मैं इन्हों के साथ लाखों ही आकाश और लाखों ही पाताल देखता-देखता थक गया हूँ। इन की गणना नहीं की जा सकती। उस ने कढ़ाह प्रसाद का एक कचकौल पीर के आगे रख कर कहा कि इन्हीं के मुरीद सारे ही आकाशों और पातालों में हैं। यह हलवा हमें इन्हीं के मुरीदों ने पाताल से दिया है। सारी बात सुन कर पीर ने गुरु जी को नमस्कार की और क्षमा याचना की।

भाई गुरदास जी ने इस वार्ता को इस तरह वर्णन किया है—

वार १।।

पुछे पीर तकरार कर एह फ़कीर वडा आताई।। एथे विच
बगदाद दे वडी करामात दिखलाई।। पातालां आकास
लख ओड़क भाली खबर सुनाई।। फेर दुराड़िण दसतगीर
असीं भि वेखां जो तुहि पाई।। नाल लीता बैटा पीर का
अखीं मीट गिआ हावाई।। लख अकास पताल लख अख
फुरक विच सभ दिखलाई।। भर कचकौल प्रसाद दा धुरों
पतालों लई कड़ाही।। ज़ाहर कला न छपै छपाई।। ३६।।

इस स्थान पर आप जी की याद में एक चबूतरा बना हुआ है। जिस की चार दीवारी की एक शिला पर गुरु जी का यहाँ आगमन उल्लेख लिखा हुआ है।

www.9009.co.in

ईरान, तुरकिस्तान और काबल जाना

बगदाद से चल कर गुरु जी ईरान देश के तहरान शहर में आए। यहाँ के राजा को भक्तिमार्ग का उपदेश दे कर लोगों पर जुल्म करने से उन्हें हटाया। तद्उपरान्त रूस देश के इलाके में शहर ताशकंद, समरकंद और बुखारा आदि शहरों के लोगों को नाम दान और जीवों पर दया करने का उपदेश देते हुए, काबल शहर में लुंडे दरिया के पार एक पहाड़ी पर आ बैठे। यहाँ गुरु जी की याद में गुरुद्वारा बना हुआ है और एक चश्मा गुरु जी के नाम से प्रसिद्ध है। नौ चंदे रविवार को यहाँ मेला लगता है और कढ़ाह प्रसाद की देग बाँटी जाती है। यहाँ गुरु जी ने एक पठान को उपदेश दिया था कि पढ़ा-लिखा व्यक्ति वह है जिस के हृदय के अंदर प्रभुनाम का आवास है, क्योंकि विद्या का आभूषण प्रभु नाम है। परमेश्वर के नाम से ही विद्या सुशोभित होती है।

हसन अबदाल वली कधारी का अहंकार तोड़ना

(पंजा साहिब)

काबल से चल कर गुरु जी दर्रा खैबर से गुजरते हुए पिशावर आए। यहाँ आप जी गंज महल्ले में एकश्रद्धालु केपास ठहरे। यहाँ एक धर्मशाला बाबा श्री चंद जी केनाम से प्रसिद्ध है। यहाँ भी कुछ दिन आप जी ने नाम वाणी के उपदेश द्वारा प्रेमियों को निहाल किया और फिर होती मरदान और नौशहरे से होते हुए हसन अबदाल गाँव के बाहर पहाड़ी के नीचे आ बैठे। इस पहाड़ी पर एक वली कंधारी रहता था। जिस को अपनी करामात पर बहुत अहंकार था। इस के पास ही पहाड़ी पर एक पानी का चश्मा निकलता था। गुरु जी ने इस का अहंकार तोड़ने के लिए मरदाने को इस पहाड़ी पर चश्मे से पानी लेने के लिए भेजा। पहाड़ी पर

पहुँच कर मरदाने ने वहुत मिन्नतें की, मगर वली कंधारी ने कहा कियदि आप का पीर शक्तिशाली है तो वह आप अपना नया चश्मा निकाल कर तुझे पानी दे दे। जव यह बातें मरदाने ने गुरु जी को आ कर बताई तो गुरु जी ने मरदाने को कहा कि सत्य बोल कर एक पत्थर उठा कर पीछे रख दो, करतार की आज्ञा से पानी का चश्मा चल पड़ेगा। जब मरदाने ने गुरु जी की आज्ञा का पालन किया तो वहाँ से तुरंत ही पत्थर के नीचे से पानी का चश्मा चल पड़ा और इसके चलने के साथ ही पहाड़ी पर वली कंधारी का चश्मा बंद हो गया।

जब वली कंधारी ने देखा कि उस का चश्मा बंद हो गया है और नीचे बहने लगा है तो उस ने क्रोधित होकर अपनी शाक्ति के साथ पहाड़ी की एक चोटी की चटान ही गुरु जी पर धकेल दी कि वह इस के नीचे आकर मर जाएँगे। मगर उस को लुड़कती हुई देख कर गुरु जी ने अपने हाथ के पंजे से रोक लिया। गुरु जी की यह दोनों शक्तियाँ, पहली पानी का चश्मा नीचे ले आने वाली और दूसरी पहाड़ को हाथ से ही अपने ऊपर गिरने से रोक लेना देख कर वली कंधारी पहाड़ी से नीचे उतर आया और अहंमुक्त होकर गुरु जी को अपमानजनक कहे हुए वचनों की क्षमा माँगी।

गुरु जी के हाथ लगे हुए पंजे वाला पत्थर अब तक गुरुद्वारा पंजा साहिब-हसन अबदाल के स्थान पर दर्शन दे रहा है। हज़ारों लोग श्रद्धा के साथ इस के दर्शन करके गुरु नानक जी की महमा करते हैं और सुनते हैं। यहाँ पाकिस्तान बनने से पहले वैशाखी को भारी मेला लगता था। दूर-दूर के देशों-परदेशों से श्रद्धालु लोग अपनी श्रद्धा के फूल भेंट करने के लिए एकत्र हो कर गुरु साहिब जी की खुशियाँ प्राप्त करके अपना सोभाग्य समझते थे। अब

www.9009.co.in

पाकिस्तान सरकार की पाबन्दियों के कारण थोड़े ही यात्री वैशाखी के मेले के समय एकत्र होते हैं । पंजा साहिब की यह वार्ता ३ वैशाख १५७९ में हुई लिखी है।

सिआलकोट जाना-मूले किराड़ की मौत

वली कंधारी का अहंकार चूर करके उस को नम्रता और दया का उपदेश दे कर गुरु जी यहाँ से चल कर रावलपिंडी, मरी, काहूटा, जिहलम मीरपुर, भिंबर के लोगों को सुमार्ग पर लगाते हुए सिआलकोट पहुँच गए। यहाँ अब बाबे की बाउली है आप वहाँ सुशोभित हुए। गुरु जी जब पहले यहाँ आए तो मूले ने 'सच मरना और झूठ जीउणा' मरदाने को लिख कर दिया था। फिर गुरु जी इस को अपने साथ ही ले गए थे, मगर कुछ दिनों के पश्चात् यह रास्ते से ही लौट कर आ गया था।

अब जब स्यालकोट आ कर गुरु जी उसे घर मिलने गए, तो उस की पत्नी ने, उपलों के कोष्ठ में उसे छिपा लिया कि कहीं गुरु जी फिर इस को साथ न ले जाएँ । जब गुरु जी ने घर के द्वार के आगे होकर उसे आवाज़ लगाई तो इस की पत्नी ने कहा, सन्त जी ! मूला नहीं है। जब तीन बार मूले की पत्नी ने गुरु जी को यही कहा तो गुरु जी ने भाई मरदाने को कहा, आओ मरदाने! अगर मूला नहीं है तो न सही। यह वचन करके जब गुरु जी अपने ठिकाने आके बैठे तो जल्द ही खबर आ गई कि उपलों के कोष्ठ में जहाँ मूले को उस की पत्नी ने छुपाया था, वहाँ उसे साँप ने डस लिया है और मूला मर गया है। यह खबर सुन गुरु जी ने यह श्लोक उच्चारण किया—

सलोक वारां और वधीक महला १।।

नालि किराड़ा दोसती कूड़ै कूड़ी पाड़ि।।
मरणु न जापै मूलिआ आवै कितै थाइ।। २१।।

(श्री गुरू ग्रंथ साहिबः पृ० १४१२)

www.9009.co.in

सैदपुर ऐमनाबाद-भाई लाला के पास

स्यालकोट से सल कर गुरु जी फिर तीसरी बार अपने भाई लालो के पास ऐमनाबाद आ गए। एक दिन अन्तर्यामी गुरु जी ने भाई लालो को ऐमनाबाद में होने वाले विनाश का हाल इस शब्द के द्वारा बताया—

तिलंग महला १ ।।

जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआनु वे लालो ।।
पाप की जंञ लै काबलहु धाइआ जोरी मंगै दानु वे लालो ।।
सरमु धरमु दुइ छप खलोए कूड़ु फिरै परधानु वे लालो ।।
काजीआ बामणा की गलि थकी अगदु पड़ै सैतानु वे लालो ।।
मुसलमानीआ पड़हि कतेबा कसट महि करहि खुदाइवे लालो ।।
जाति सनाती होर हिदवाणीआ एहि भी लेखै लाइ वे लालो ।।
खून के सोहिले गावीअहि नानक रतु का कुंगू पाइि वे लालो ।।
१ ।। साहिब के गुण नानकु गावै मास पुरी विचि आखु
मसोला ।। जिनि उपाई रंगि रवाई बैठा वेखै वखि इकेला ।।
सचा सो साहिबु सचु तपावसु सचड़ा निआउ करेगु मसोला ।।
काइआ कपड़ु टुकु टुक होसी हिदुसतानु समालसी बोला ।।
आविन अठतरै जानि सतानवै होरु भी उठसी मरद का चेला ।।
सच की बाणी नानकु आखै सचु सुणाइसी सच की बेला ।।
२ ।। ३ ।। ५ ।। (स्री गुरू ग्रंथ साहिब, पृ० ७२२)

इस आकाश वाणी के जल्दी ही पश्चात् संवत् १५७८ को बाबर फौज ले कर काबल से चढ़ाई करके सैदपुर पहुँच गया। सैदपुर के पठान राजाओं ने उसका डट कर सामना किया मगर बाबर की फौजों के आगे पठानों की कोई पेश न गई। बाबर ने खूनी होली खेल कर शहर को लूट-खसूट कर नष्ठ कर दिया, और हिंदू मुसलमान सब स्त्रियों का उसके सैनिकों ने बहुत अनादर किया। जो बच्चे बूढे स्त्री मर्द खूनखराबे से बच गए उन्हें

पकड़ कर कैदी बना लिया। गुरु जी और मरदाना भी कैदी बना लिए गए। लूट का माल सब बन्दियों के सिरों पर उठवा कर बाबर फौज को ले कर आगे लाहौर की तरफ चल पड़ा। कैदी स्त्रियों की बुरी हालत को देख कर गुरु जी ने इस शब्द का उच्चारण किया—

आसा महला १ ।। असटपदीआ घरु ३

जिनि् सिरि सोहनि पटीआ मांगी पाइि संधूरु।।
सो सिर काती मुंनीअनि् गल विचि आवै धूड़ि।।
महला अंदरि होदीआ हुणि बहणि न मिलनि् हदूरि।। १ ।।

... ...

आदेसु बाबा आदेसु ।। आदि पुरख तेरा अंतु न पाइिआ
करि करि देखहि वेसु ।। १ ।। रहाउ।।

... ...

इिक्न्हा एहो लिखिआ बहि बहि रोवहि दुख।।
जो तिसु भावै सो थीऐ नानक किआ मानुख।। ७ ।। ११ ।।

(स्री गुरू ग्रंथ साहिब, पृ० ४१७)

यह शब्द सुन कर सारे बंदियों को इस तरह अनुभव हुआ कि कोई उनका दुख बाँटने वाला हमदर्द आ गया है। जब बाबर को पता लगा कि बंदियों में दो फ़कीर भी पकड़े हुए हैं तो उस ने गुरु जो के दर्शन करने के लिए उन्हें बुलाया। दर्शन करके बाबर ने बहुत प्रभावित होकर आप को कामल फ़कीर जान कर नमस्कार की और विनय की कि कोई सेवा बताओ। गुरु जी ने कहा कि इन बंदी पुरुष औरतों की मुक्ति करके इन का लूटा हुआ माल वापिस कर दो। यह अपने-अपने घरों को चले जाएँ। गुरु जी का वचन मान कर बाबर ने सब स्त्री पुरुषों को छोड़ दिया और उनका सामान भी उन्हें दे दिया। इन मुक्त हुए लोगों के साथ गुरु जी भी सैदपुर आ गए और गाँव के विनाश का हाल देख कर आप जी ने इस शब्द द्वारा वर्णन किया—

www.9009.co.in

आसा महला १ ।।

कहा सु खेल तबेला घाडे कहा भेरी सरनाई।।
कहा सु तेगबंद गाडेरड़ि कहा सु लाल कवाई।।
कहा सु आरसीआ मुह बंके ऐथे दिसहि नाही।। १ ।।
इहु जगु तेरा तू गोसाई।। एक घड़ी महि थापि
उथापे जरु वंडि देवै भांई ।। १ ।। रहाउ।।

... ...

आपे करे कराए करता किसनो आखि सुणाईऐ।।
दुखु सुखु तेरै भार्णे होवै किसथै जाई रूआईऐ।।
हुकमी हुकमि चलाए विगसै नानक लिखिआ पाईए।। ७ ।। १२ ।।
(स्री गुरू ग्रंथ साहिबः पृ० ४१७-१८)

फिर गुरु जी ने अपनी मस्ती में आकर परमात्मा को सम्बोधन करके यह शब्द उच्चारण करके मरदाने की रबाब की धुन के साथ गाया—

आसा महला १ ।।

खुरासान खसमाना किआ हिंदुस्तानु डराइिआ।।
आपै दोस न देई करता जमु करि मुगलु चड़ाइिआ।।
ऐती मार पई करलाणे तैं की दरदु न आइआ।। १ ।।
करता तूं सभना का सोई।। जे सकता सकते
कउ मारे ता मनि रोसु न होई।। १ ।। रहाउ ।।
सकता सीह मारे पै वगै खसमै सा पुरसाई।।
रतन बिगाड़ि बिगोए कुती मुइआ सार न काई।।
आपे जोड़ि बिछोड़े आपे वेख तेरी वडिआई।। २ ।।
जे को नाउ धराए वडा साद करे अमनि भाणे।।
खसमै नदरी कीड़ा आवै जेते चुगे दाणे।।
मरि मरि जीवै ता किछु पाए नानक नामु वखाणे।। ३ ।।
५ ।। ३६ ।। (स्री गुरू ग्रंथ साहिबः पृ० ३६०)

वापिस करतारपुर परिवार के पास

(गुरु जी की चौथी उदासी समाप्त हुई)

लोगों को अपने-अपने घरों में वापिस करके और ऐमानाबाद की दशा पर अपने गम्भीर विचार प्रगट करके गुरु जी पसरूर के रास्ते संवत् १५७६में करतारपुर आ कर अपने परिवार में गृहस्थी वस्त्र पहन लिए। भाई गुरदास जी इस प्रथाए इस प्रकार वर्णन करते हैं—

फिरि बाबा आइआ करतारपुर, भेखु उदासी सगल उतारा।।
पहिर संसारी कपड़े मंजी बैठि कीआ अवतारा।।

यहाँ बैठ कर गुरु जी ने आए गए अतिथि साधु सन्तों और सिक्ख सेवकों के लंगर के लिए खेती करनी आरम्भ कर दी। जो अनाज आता उसका सदा ही अटूट लंगर लगा रहता।

गृहस्थी का धर्म सिद्धान्त

यहाँ करतारपुर गुरु जी के पास अनन्त सिक्ख संगत दर्शन करने आती थी और अनेक प्रकार की भेंट अर्पण करती थी। परन्तु आप जी किसी की नकद भेंट अंगीकार नहीं करते थे। जैसा कि भाई संतोख सिंह जी लिखते हैं—

मानव खिले अनेक हजारा।। सरब देग ते खाइ अहारा।।
सरब उपाइन आनहि केई।। किह ते लेहि न फेरहि सेइ।। ४०।।

इस कथन के अनुसार गुरु जी ने यह स्पष्ट कर दिया कि गृहस्थी को पूजा का धन भेंट के रूप में नहीं लेना चाहिए, बल्कि उसे आप कृत करके खाना चाहिए और ज़रूरतमंदों को खिलाना चाहिए।

अचल वटाले शिवारात्रि का मेला सिद्ध गोष्ट

बटाले के पास ही सिद्धों का एक स्थान है, जो अचल बटाला करके प्रसिद्ध है। यहाँ हर साल शिवरात्रि को मेला लगता था, जिस में सिद्धों योगियों का बहुत इक्ट्ठ होता था और वह अपनी करामातें दिखा कर लोगों से आदर और पूजा करवाते थे।

इस बार गुरु जी भी अजिते रंधावे को साथ लेकर मेले पर अचल बटाले आ गए। भाई गुरदास जी लिखते हैं—

वार १।।

मेला सुण शिवरात दा बाबा अचल वटाले आई।।
दरशन वेखण कारने सगली उलट पई लोकाई।।
लगी बरसण लछमी रिधि सिधि नउनिधि सवाई।।
जोगी वेख चलित्र नों मन विच रिसक घनेरी खाई।।
भगतीआं पाई भगत आन लोटा जोगी लिआ छुपाई।।
बाबा जाणी जाण पुरख कढिआ लोटा जहां लुकाई।।
वेख चलित्र जोगी खुणसाई।। ३६ ।।

अर्थात्—गुरु जी जिस समय मेले में गए तो आप जी के दर्शन करने के लिए सभी लोग(यागियों को छोड़कर) गुरु जी के पास आ गए और उन्होंने गुरु जी के आगे माया के ढेर लगा दिए। इस कौतुक को देख कर योगियों को बड़ी ईर्ष्या हुई। गुरु जी के पास उस समय लोगों का इक्ट्ठ देख कर रासधारियों ने रास खेल खेला। ईर्ष्या करके यागियों ने उन का पैसों वाला लोटा छिपा दिया। सर्वज्ञ गुरु जी ने उन का अहंकार चूर करने के लिए उनका छिपाया हुआ लोटा प्रकट कर दिया। यह कौतुक देख कर यागियों को क्रोध आ गया। वो गुरु जी से चर्चा करने लगे।

भाई गुरदास जी इस का वर्णन करते हैं—

वार १।।

खाधी खुणसि जुगीसरां गोसट करन सभे उठि आई।।
पुछे जोगी भंग्रनाथ तुहि दुध विच किउं कांजी पाई।।
फिटिआ चाटा दुध दा रिड़किआ मखण हथ न आई।।
भेख उतार उदास दा वत किउं संसारी रीत चलाई।।

... ...

अर्थात्—योगी ईर्ष्या करके सभी उठ कर गुरु जी के पास चर्चा करने आ गए।आते ही भंगरनाथ योगी ने गुस्से में कहा-आप ने दूध में काँजी डाल दी है जिस से दूध का सारा मटका ही फट गया है। अब इस को मथने से मक्खन नहीं निकलेगा। आप ने उदासी का भेख धारण करके फिर गृहस्थ को क्यों धारण कर लिया है? इस का उत्तर गुरु जी ने भाई गुरदास जी के शब्दों के अनुसार यह दिया कि—

नानक आखे भंग्रनाथ तेरी माउं कुचज्जी आई।।
भांडा धोइि न जाति ओन भाइि कुचज्जे फुल सड़ाई।।
होइि अतीत ग्रिहसत तज,फिर उनहूँ के घरि मंगनिजाई।।
बिन दिते किछु हथ्थ न आई।। ४०।।

हे भंगरनाथ ! तेरी माँ बुद्धिहीन थी जिस ने बर्तन अच्छी तरह से साफ करके धोये बगैर ही दूध को जामन लगा दी। जिस का फल यह हुआ कि आप गुहस्थ को छोड़ कर अतीत हुआ, मगर फिर खाने पहनने के लिए घर ही मांगने को जाता है।

गुरु जी का यह उत्तर सुन कर योगी क्रोध से किलकारियाँ मार कर अपना बहुत भयानक रूप धारण करके गुरु जी को डराने लगे। भाई गुरदास जी उन के इस रूप का वर्णान करते हैं—

वार १।।

एह सुण बचन जोगीशरां मार किलक बहु रूअ उठाई।।
खट दरशन कउ खेदिआ कलिजुग बेदी नानक आई।।

सिध बोलन सभि औखधीआं तंत्र मंत्र की धनो चढ़ाई।।
रूप वटाइिआ योगिआं सिंघ बाघ बहु चलित दिखाई।।
इिक पर करके उडरन पंखी जिवों रहे लीलाई।।
इिक नाग होइि पवन छोड इिकना वरखा अगनि वसाई।।
तारे तोड़े भंग्रनाथ इिक चड़ मिरगानी जल तर जाई।।
सिधां अगनि न बुझै बुझाई।। ४१ ।।

जब सिद्धों के ऐसे कृत देख कर लोग डरने लगे, तो गुरु जी ने अजिते रंधावे को कहा, चौधरी ! सत्यनाम का नाम लेकर इन लोगों के चौगिर्द लकीर खींच दो, फिर इसके अंदर सिद्धों की कोई शक्ति नहीं चलेगी। अजिते ने जब इस तरह किया तो लोग निर्भीक होकर खड़े हो गए। गुरु जी की इस शक्ति को देखकर सिद्धों ने जो कहा, उस का भाई गुरदास जी वर्णान करते हैं—

सिध बोले सुण नानका तुहि जग नूं करामात दिखलाइि।।
कुझ दिखाइि असां नूं तूं किउं ढिल अजेही लाई।। ४२ ।।

गुरु जी ने जो इसका उत्तर दिया उसे भाई गुरदास जी ऐसे लिखते हैं-

बाबा बोले नाथ जी! असां वेखे जोगी वसतु न काई।।
गुर संगत बाणी बिना दूजी ओट नहीं है राई।। ४२ ।।

इसके फलस्वरूप भाई जी अपनी ओर से लिखते हैं—

शिव रूपी करता पुरख चले नांही धरत चलाई।।
सिध तन्त्र मंत्र कर झड़ पए शबद गुरू के कला छपाई।।
... ...
सो दिन नानक सतिगुर सरणाई।। ४२ ।।

अर्थात्— सिद्धों ने चाहे बहुत तन्त्र-मन्त्र किए, परन्तु गुरु जी धरती की तरह अडोल ही बैठे रहे। सिद्धों की शक्ति को गुरु जी के

शब्दों ने शक्तिहीन बना दी। सिद्ध दीन होकर गुरु जी की शरण पड़ गए।

सिद्धों को शरण आया देख कर उन को गुरू जी ने जो वचन कहे उस का वर्णन भाई गुरदास जी करते हैं—

वार १।।

बाबा बोले नाथ जी ! सबद सुनहु सच मुखहुं अलाई।।
बाझहु सचे नाम दे होर करामात असां थे नांही।।
करो रसोई सार दी सगली धरत नथ चलाई।।
बसतर पहिरो अगनि के बरफ हमाले मंदर छाई।।
तोली धरति अकाश दुइ पिछे छाब टंक चढ़ाई।।
इिह बल रखा आप विच जिस आखां तिस पार कराई।।
सतिनामु बिन बादर छाई।। ४३।।

गुरु जी ने कहा नाथ जी! चाहे मुझ में बड़ी से बड़ी शक्तियाँ हैं और मैं सब कुछ अपनी आज्ञा में कर लूँ इस पर सत्यनाम के बिना सब शक्तियाँ एक बादल की छाया के सामान हैं।

सिद्धों ने हार स्वीकार करनी और गुरु जी का गुणगान करना

जब गुरु जी ने सिद्धों पर इस तरह जीत प्राप्त कर ली तो सिद्धों ने जो कहा उसे भाई गुरदास जी वर्णान करते हैं—

वार १।।

सिध बोलन शुभ बचन, धंन नानक तेरी वडी कमाई।।
वडा पुरख प्रगटिआ कलजुग अंदर जोत जगाई।। ४४।।

इस तरह गुरु जी की स्तुति करते हुए सिद्ध नमस्कार कर के चले गए।

मुलतान के पीरों के पास

भाई गुरदास जी के कथन अनुसार—

वार १।।

मेलिओं बाबा उठिआ मुलताने दी ज़्यारत जाई।।
अगों पीर मुलतान दे दुध कटोरा भरि लै आई।।
बाबे कढ करि बगल ते चंबेली दुध विच मिलाई।।
जिंउ सागर विच गंग समाई।। ४४।।

अर्थात् —शिवरात्रि के मेले से उठ कर गुरु बाबा जी मुलतान की यात्रा करने चल पड़े। जब मुलतान पहुँचे तो वहाँ के पीरों ने बाबा जी को दूध का कटोरा भर कर यह बताने के लिए भेजा कि मुलतान से आगे भी बहुत से पीर हैं। आपकी यहाँ समाई नहीं है। इस पर बाबा जी ने उस लबालब दूध से भरे हुए कटोरे पर बगली (चोली) में से एक बगली का फूल निकाल कर रख दिया और यह दर्शाया कि हम पीरों में इस तरह समा जाएँगे जिस प्रकार सागर में गंगा समा जाया करती है। हम इस फूल की तरह अडोल टिकेंगे। हम किसी को दुख देने नहीं आए।

पीरों ने जब गुरु जी का यह स्वभाव देखा, तो वह बहुत प्रसन्न हुए। पीर शमसदीन ने पूछा कि पीर जी! मन को मारने के लिए मैंने बड़े कठिन तप किए हैं, जिस से मेरा शरीर सूख कर तिनका हो गया है। परन्तु मन फिर भी एक क्षण भर नहीं स्थिर रहता। इस को मारने का क्या तरीका है ?

गुरु जी ने कहा, वर्मी को मारने से साँप नहीं मरता, साँप तो मन्त्रों से ही वश में होता है। जगत् के पदार्थों को झूठा जान कर उन का कोई संकल्प तथा इच्छा नहीं करनी चाहिए। मन संकल्प विकल्पों को रोकने से ही वश में होता है, और कोई जप तप आदि साधन इसको वश में नहीं करते।

पीर बहावदीन ने कहा, पीर जी ! आप माया को झूठ बताते हो मगर इस के बगैर संसार का कोई काम नहीं होता। गुरु जी ने कहा जिस तरह माया झूठी है, इस के व्यवहार भी झूठे हैं। परमेश्वर का नाम सदा ही सत्य है, उस को हृदय में बसाओ, आप के सारे काम पूरे हो जाएँगे।

फिर रुकनदीन ने पूछा, जी ! सन्तों के लक्षण क्या होते हैं? गुरु जी ने कहा पहली बात यह है कि सन्त पराए गुण को सुन कर प्रसन्न होते हैं और गुणवानों की सेवा करते हैं। पराई स्त्री को बुरी नज़र से नहीं देखते, बुरे पुरुषों की संगत नहीं करते, वैरी-मित्र को एक बराबर जानते हैं। शोक हर्ष और आदर-अनादर को एक समान जानते हैं। परमेश्वर के स्मरण में लीन रहते हैं। गुरु जी ने कहा, पुरुष को परमेश्वर का नाम जपना और उसका भय रखना, सन्तों की संगत करनी, मन में विकारों के संकलप को मारना ही एक मात्र उद्धार का साधन है। इस प्रकार आप जी के वचन सुन कर पीरों ने आप जी को नमस्कार किया और कहा कि आप धन्य हैं, जिन्होंने सच्चा उपदेश देकर कलियुग के करोड़ों जीवों का उद्धार किया है।

करतारपुर निवास

जैसा कि भाई गुरदास जी लिखते हैं—

वार १।।

ज़्यारत करि मुलतान दी फिर करतारपुरे नूं आइआ।।
चढ़े सवाई दहि दिही कलिजुग नानक नाम धिआइआ।। ४५।।

मुलतान की यात्रा करके बाबा जी फिर करतारपुर आ गए। कलियुग मेंआप जी ने करतार का नाम जपाया। आप जी का प्रभुत्व दिन प्रति दिन सवाया होने लगा।

करतारपुर निवास कर के गुरु जी आप खेती-बाड़ी का काम करते और धनधान्य का आप जी का सदा लंगर चलता रहता। अनन्त सिक्ख सेवक बाहर से आ कर दर्शन करते और उपदेश ले कर अपना जन्म सफल करते।

श्री करतारपुर के निवास समय गुरु जी से जिन सिखों ने उपदेश ग्रहण किया उन में ं से कुछ नाम यह है—

भाई बुड्ढा जी, मालो शेख, उबारे खाँ, अद्रहमन, मूला कीड़, प्रिथा, खेडा, प्रिथी मल, रामा, मालो, मांगो, कालू , भगता, ओहरी, जापू वंसी, शीहां, गजण, फिरणा, खहिरा, जोध और सैदो घिओ आदि।

श्री लहिणा जी से मिलाप

श्री लहिणा जी प्रतिवर्ष संगत सहित देवी के दंर्शन करने के लिए जाते थे। इस बार जब आप जी करतारपुर से निकलने लगे, तो गुरु जी की बहुत महिमा सुन कर दर्शन करने के लिए आप वहाँ पर गए।

गुरु जी के दर्शन करके आप जी ने संगत को आगे भेज दिया और आप वहाँ गुरु चरणों में ही टिक गए। कुछ दिन सेवा और दर्शन करके मन में विचार आया कि घर से आए हुए उसे बहुत दिन हो गए हैं। अगर आप ही गुरु जी मुझे घर जाने की आज्ञा दे दें तो मैं इन को अन्तर्यामी समझूँगा। तब दूसरे दिन ही श्री लहिणा जब गुरु जी की सेवा में उपस्थित हुए तो गुरु जी ने पूछा! तेरा घर कहाँ है, और तेरा नाम क्या है? श्री लहिणा जी ने बताया, महाराज! मेरा नगर खडूर है और मेरा नाम लहिणा है। आप जी की महिमा सुन कर मुझे आप जी के दर्शन की इच्छा हुई थी, जो

www.9009.co.in

आप जी ने कृपा करके पूरी कर दी है। लहिणा जी के यह श्रृद्धा भरे वचन और भक्तिभाव वाले चिह्न तथा दूर दृष्टि को देख कर गुरु जी ने कहा, तूँ लहिणा है और हमने देना है। अब तुम अपने घर जाओ और घर से लौट कर फिर आना। यह वचन सुन कर लहिणा जी बड़े प्रसंन हुए कि इन्हों ने मेरे मन की बात जान ली है। इस तरह आज्ञा लेकर श्री लहिणा जी खडूर आ गए।

कुछ दिन परिवार को मिल कर लहिणा जी फिर करतारपुर गुरु जी के पास आ गए और रात दिन गुरु जी की सेवा में तनमन एक करके लग गए।

श्री लहिणा जी की गुरु पदवी

गुरु जी ने कई बार अपने सभी प्रेमी सिखों की परीक्षा ली और गुरुगद्दी के योग्य श्री लहिणा जी को गद्दी पर बैठा कर पाँच पैसे और नारियल उन्हों के आगे रख कर तीन परिक्रमा करके पहले आप माथा टेका और फिर सारी संगत से टिकवाया।

भाई गुरदास जी लिखते हैं—

वार १।।

थापिआ लहिणा जींवदै गुरिआई सिर छत्र फिराइिआ।।
जोती जोति मिलाइिके सतिगुर नानक रूप वटाइिआ।।
लख न कोई सकई आचरजे आचरज दिखाइिआ।।
कायां पलट सरूप बणाइिआ।। ४५।।

साहिबज़ादों की ईर्ष्या

जब गुरु जी ने आषाढ़ संवत् १५९६ को गुरु पदवी श्री लहिणा जी को दे दी, तो गुरु जी के सुपुत्र बाबा स्री चन्द जी और लखमी दास जी ने इस बात का बहुत बुरा मनाया और कहा कि गुरुगद्दी पर अधिकार हमारा है, यह एक हमारा सेवादार है, इस को गुरुगद्दी

www.9009.co.in

लेने का कोई अधिकार नहीं है। जब गुरु जी की आज्ञा मान कर सभी सिख सेवकों ने लहिणा जी को माथा टेका, तो गुरु जी के दोनों पुत्रों ने यह कह कर माथा न टेका कि हम गुरु पुत्र हो कर इस सेवक को माथा टेकते अच्छे नहीं लगते। इस तरह दोनों रूष्ठ कर घर माता जी के पास चले गए।

साहिबज़ादों के इस तरह विरोध को देख कर गुरु जी ने श्री लहिणा जी को कहा, पुरुष ! अब तुम खडूर अपने घर को चले जाओ, यहाँ साहिबज़ादे आप से ईर्ष्या करेगें। इस तरह आज्ञा के अनुसार श्री लहिणा जी जो गुरु अंगद जी बन चुके थे, अपने घर खडूर साहिब आ गए।

गुरु जी का ज्योति-ज्योत समाना

तत्पश्चात् गुरुगद्दी की सारी बातचीत भाई बुड्ढा जी आदि सियाने निकटवरती सिखों को समझा कर गुरु जी ने बैकुण्ठ जाने की तैयारी कर ली।

गुरु जी की बैकुण्ठ सिधारने की तैयारी को सुन कर दूर-दूर से सिख सेवक आप जी के अंतिम दर्शन करने के लिए आ गए। गुरु जी अपनी धर्मशाला में बैठे थे और कीर्तन हो रहा था। इस समय माता सुलखनी जी भी दीन मन हो कर गुरु जी के पास आ बैठे। तब गुरु जी ने अपने दोनों साहिबज़ादों को भी बुला भेजा, मगर साहिबज़ादे आ कर थोड़ा समय ही पास बैठ कर चले गए।

असूज सुदी दसवीं संवत् १५९६ को समूह संगत के सामने गुरु जी चादर तान कर लेट गए और संगत को धैर्य दे कर कहा कि आप सभी सत्यनाम का जाप करो। जाप कर रही संगत ने जब कुछ समय पश्चात् देखा, तो गुरु जी अपना शरीर छोड़ कर बैकुण्ठ

www.9009.co.in

में जा चुके थे। पश्चात् आप जी का अंतिम संस्कार करने के लिए हिंदू कहें कि हमारा गुरु है, हम ने संस्कार करना है, मुस्लमान कहें कि हमारा पीर है हम ने दफ़न करना है। इस तरह जब झगड़ा करते दोनों धर्मावलम्बियों ने चादर उठा कर देखा तो आप जी का शरीर अलोप था, केवल चादर ही वहाँ रह गई थी। इस चादर को ले कर आधा हिंदुओं ने संस्कार कर दिया और दूसरा मुस्लमानों ने कबर में दफ़न कर दिया।

गुरु जी शरीर त्याग करके संसार में ७० साल पाँच महीने और सात दिन पातशाही करके असूज सुदी १० संवत् १५९६ को करतारपुर में ज्योति-ज्योत समाए।

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

श्री गुरु अंगद साहिब जी

पातिशाही दूसरी

श्री गुरु अंगद साहिब जी फेरू मल जी तरेहण क्षत्रि के घर माता दया कौर जी की पवित्र कोख से मत्ते की सराए प्रगना मुक्तसर में वैशाख सुदी इकादशी सोमवार संवत् १५६१ को प्रगट हुए। जन्म से ही आप जी का नाम लहिणा जी था, तद्उपरान्त गुरु नानक साहिब जी को अपने सेवाभाव से प्रसन्न करके आप जी श्री गुरु अगंद साहिब जी के नाम से प्रसिद्ध हुए।

आप जी बड़े संयमी और प्रेमी देवी के उपासक थे। आप जी की शादी खडूर निवासी श्री देवी चन्द क्षत्रि की सुपुत्री खीवी जी के साथ १६ मघर संवत् १५७६ में हुई। खीवी जी की कोख से आप जी के घर दो साहिबज़ादे दासू जी जो भाद्रव संवत् १५८१ और १ वैशाख संवत् १५८४ को दातू जी ने जन्म लिया और दो लड़कियाँ अमरो जी संवत् १५८५ में और अनोखी जी संवत् १५९२ को पैदा हुई।

बाबर के भारतवर्ष पर दूसरे आक्रमण के समय गाँव मते की सराए लुटेरों की लुट के कारण नष्ट हो गया था। जिस करके फेरू मल जी अपने रिश्तेदारों के पास खडूर आ गए। इस गाँव में श्री लहिणा जी का विवाह हुआ था, जिस कारण आप जी यहाँ ही दूकान करने लगे। श्री लहिणा जी देवी के उपासकथे और प्रतिवर्ष संगत के साथ मिल कर वैष्णों देवी के दर्शन करने जाते थे।

www.9009.co.in

गुरु दर्शन की प्रेरणा

खडूर में एक गुरसिख भाई जोध रहता था। उस से गुरु जी की महिमा सुन कर श्री लहिणा जी को भी गुरु दर्शन की प्रेरणा मिली। साल संवत् १५८६ के असूज महीने में जब आप जी संगत के साथ करतारपुर के पास से गुजरने लगे तो आप जी गुरु जी के दर्शन करने के लिए गुरु जी के डेरे आ गए। गुरु जी ने पूछा कि आप कहाँ से आए हो और कहा चले हो। तो श्री लहिणा जी ने अपनी सारी बात बता दी कि मैं खडूर से संगत के साथ मिल कर वैष्णों देवी के दर्शन करने जा रहा हूँ। मेरा नाम लहिणा है और खडूर में दूकान करता हूँ। आप जी की महिमा सुन कर दर्शन करने की मन में उमंग पैदा हुई। अतः उपस्थित हुआ हूँ। कृपा करके उपदेश दो। जिस से मेरा जन्म सफल हो जाए। गुरु जी ने कहा, भाई लहिणा तुझे प्रभु ने वरदान दिया है, तूमने लेना है ते हमने देना है। अकाल पुरुष की भक्ति किया करो। यह देवी देवते सब उस के ही बनाए हुए हैं।

श्री लहिणा जी का प्रेम और श्रद्धा

गुरु जी के दर्शन करके और उनके वचन सुन कर श्री लहिणा जी ने साथियों को कहा कि आप देवी के दर्शन कर आओ, मुझे मोक्ष देने वाला पूर्ण पुरुष मिल गये हैं। श्री लहिणा जी के साथियों ने आप जी के साथ जाने के लिए बड़ा विवश किया और कुछ देर गुरु जी के पास ही सेवा करते रहे। और फिर नाम दान का उपदेश लेकर वापिस खडूर अपनी दूकान पर आ गए। परन्तु आप जी का मन सदा ही करतारपुर गुरु चरणों की ओर रहता और यही चाहते कि वहाँ उन की सेवा में ही अपना जीवन व्यतीत करें।

www.9009.co.in

अतः कुछ दिनों के पश्चात् आप जी अपनी दूकान से गुरु के लंगर के लिए नमक की गट्ठड़ी लेकर करतारपुर आ गए। नमक को रखकर आप जी गुरु जी के दर्शन करने के लिए खेतों में चले गए। उस समय गुरु जी धान में से नदीन निकलवा रहे थे। जब श्री लहिणा ज़ी उस के पास गए तो गुरु जी ने कहा, पुरुष! यह एक गठड़ी नदीन को उठा कर घर गाय भैसों के लिए ले चलो, लहिणा ने जल्द ही भीगी पानी बहती गठड़ी सिर पर उठा ली और घर ले आए। जब गुरु जी घर आए तो माता सुलखणी जी ने कहा आप बड़ी बेपरवाही करते हैं, जिस सिख को आप ने पानी से भीगी नदीन की गठड़ी उठा कर भेजा था। उसके सारे कपड़े कीचड़ से भीग गए हैं। आप ने उस से यह गठड़ी नहीं उठवानी थी।

गुरु जी ने हँस कर कहा, यह कीचड़ नहीं जिस से उस के कपड़े भीगे है, बल्कि केसर है यह गट्ठड़ी को और कोई नहीं उठा सकता था। अतः उस ने उठा ली है।

श्री लहिणा जी प्रतिक्षण गुरु जी की सेवा में उपस्थित रहते थे। प्रतिक्षण सत्यनाम का स्मरण करते और ध्यान गुरु जी के चरणों में ही लगाये रखते।

परीक्षा

सिखों को श्री लहिणा जी की योग्यता बताने के लिए गुरु जी ने अपने दोनों साहिबज़ादों और भाई बुड्ढा जी आदि और प्रेमी सिखों की परीक्षा के लिए कई कौतक रचे जिन में से कुछ प्रसिद्ध इस प्रकार हैं—

१. एक दिन श्री गुरु जी ने आधी रात के समय अपने दोनों सुपुत्रों और कुछ निकटवर्ती सेवकों को बारी-बारी कहा कि हमारे वस्त्र नदी पर धो कर सुखा लाओ। दोनों साहिबज़ादों ने कहा,

अब रात आराम करो दिन निकले धो लायेंगे। उपरान्त इस तरह ही और दो चार सिखों ने रात का समय कह कर गुरु जी की आज्ञा न मानी। सब से पश्चात् जब आप जी ने श्री लहिणा को कहा तो वह उसी समय आप जी के वस्त्र ले कर धोने चले गए और सुखा कर ले आए।

२. एक दिन गुरु जी के निवास स्थान पर एक चूहिया मरी पड़ी थी। गुरु जी ने पहले स्री चंद जी को फिर लखमी दास जी को और फिर अन्य सिखों को बारी-बारी कहा कि बेटा ! यह मृत चूहिया बाहर फेंक आओ। मगर किसी ने प्रवाह न की क्योंकि उस में से बहुत बदबू आ रही थी। फिर गुरु जी ने श्री लहिणा जी को कहा, पुरुष ! यह मृत चूहिया बाहर फेंक कर फर्श साफ कर दो, तब लहिणा जी ने उठ कर तत्काल ही चूहिया पकड़ कर बाहर घर से दूर फेंक दी और फर्श धो कर साफ़ कर दिया।

३. एक दिन गुरु जी ने अपना कांसी का एक कटोरा कीचड़ वाले पानी में फेंक दिया और दोनों पुत्रों और कुछ सिखों को बारी-बारी कहा कि कीचड़ से हमारा कटोरा निकाल कर साफ कर लाओ, मगर सभी ने यह कह कर इन्कार कर दिया कि हमारे वस्त्र खराब हो जाएँगे। फिर गुरु जी ने जब श्री लहिणा जी को आज्ञी दी तो वह उसी समय कीचड़ वाले गड्डे में चला गया और कटोरा निकाल लाया। इसे साफ करके गुरु जी के आगे रख दिया।

४. एक बार तीन दिन तक लगातार ही वर्षा होती रही और लंगर का कोई प्रबन्ध न हो सका, संगत बहुत इक्ट्ठी हो गई थी। संगत की भूख दूर करने के लिए गुरु जी ने अपने सुपुत्र स्री चंद जी, लखमी चंद जी और अन्य निकटवर्ती सिखों को कहा, कि इसी

सामने वाले कीकर के पेड़ पर चढ़ कर हिला कर मिठाई झाड़ो ताकि संगत खा कर तृप्त हो जाए। सब ने कहा, महाराज ! कीकरों पर भी कभी मिठाई होती है, जो हिलाने पर नीचे गिरेगी? संगत से हमें क्यों लज्जित कराते हो ? तब गुरु जी ने श्री लहिणा जी को कहा, पुरुषा ! तुम ही कीकर को हिला कर संगत को मिठाई खिलाओ। संगत भूखी है। तब श्री लहिणा जी ने कीकर पर चढ़ कर ज़ोर-ज़ोर से हिलाया तो बहुत सारी मिठाई नीचे गिरी। जिसे संगत ने पेट भर कर खाया और कई घरों को भी ले गए।

५. एक दिन गुरु जी ने सिखी की परीक्षा के लिए मैले-कुचैले वस्त्र पहन लिए, एक हाथ में कटार और एक हाथ में डंडा पकड़ लिया, कमर पर रस्से बाँध लिए। चार पाँच कुत्तिया-कुत्ते पीछे लगा लिए और जंगल की तरफ चल पड़े। कुछ सिख भी आप जी के पीछे-पीछे चल पड़े। जो सिख आप जी के नज़दीक जाए उसको ही एक दो चोट लगा दें। इस तरह मार खा कर बहुत से सिक्ख भाग गए। तत्पश्चात् जब गुरु जी जंगल में पहुँचे तो उस समय केवल पाँच सिक्ख, बाबा बुड्ढा जी और श्री लहिणा जी आदि साथ रह गए। वहाँ जंगल में गुरु जी ने अपनी माया के साथ चादर में लपेटा हुआ एक मुर्दा पड़ा हुआ दिखाया और सिखों की तरफ मूँह करके कहा कि इस मुर्दो को खाओ। यह बात सुन कर दूसरे सिख दूर वृक्ष के पीछे जा खड़े हुए मगर श्री लहिणा जी वहाँ ही खड़े रहे। गुरु जी ने आप जी को कहा, तुम कयों नहीं जाते, तब श्री लहिणा जी ने कहा जी ! मेरे तो तुम ही तुम हो, मैं कहा जाऊँ ? तब गुरु जी ने कहा, आप ने नहीं जाना तो इस मुर्दे को खाओ। लहिणा जी यह आज्ञा सुनकर मुर्दे के पास जा खड़े हुए और पूछा, जी महाराज! किस तरफ से खाऊँ, सिर की तरफ से कि पाँव की

तरफ से ? गुरु जी ने कहा कि पाँव की तरफ से। जब लहिणा जी ने सत्य वचन कह कर पाँव वाला कपड़ा उठाया तो वहाँ उस मुर्दो की जगह कढ़ाह प्रसाद प्रतीत हुआ। जब लहिणा जी उस को खाने के लिए तैयार हुए तो गुरु जी ने प्रसन्न हो कर उसको अपनी बाहों में लेकर वचन किया कि हमारे अंग के साथ लग कर आप अंगद हो गए हो।

श्री लहिणा जी को गुरु पदवी

इस तरह श्री लहिणा जी की हर प्रकार की परीक्षा लेने के पश्चात् गुरु जी ने आप जी को अपनी गद्दी का योग्य अधिकारी जान कर १७ आषाढ़ संवत् १५९६ को पाँच पैसे और नारियल आप जी के आगे रख कर तीन परिक्रमा कीं और पहले आप ने माथा टेका, फिर सारी संगत से टिकवाया। तद्उपरान्त वचन किया कि आज से इन्हों को मेरा ही रूप समझना जो इन को नहीं मानेगा वह मेरा सिख नहीं है। गुरु जी की आज्ञा का पालन करके सभी सिखों ने श्री गुरु अगंद देव जी को माथा टेक दिया मगर दोनों साहिबज़ादों ने यह कह कर माथा न टेका कि हम अपने एक सेवक को माथा टेकते अच्छे नहीं लगते।

सत्ता बलवंड डूम ने रामकली की वार में आप जी के चयन सम्बन्धी इस तरह से लिखा है —

सिखां पुत्रां घोखि कै सभ उमति वेखहु जिकिओनु।।
जां सुधोसु ता लहणा टिकिओनु।।४।।

(स्री गुरु ग्रंथ साहिबः पृ० ९६७)

www.9009.co.in

श्री गुरु अंगद देव जी का खडूर आवास

जब गुरु जी ने देखा कि आप जी के सहिबज़ादे श्री गुरु अंगद देव जी के साथ ईर्ष्या व विरोध करते हैं तो आप जी ने कहा-पुरुषा! अब आप अपने घर खडूर चले जाओ, यहाँ हमारे साहिबज़ादे आप के साथ ईर्ष्या करेंगे। आज्ञा मान कर श्री गुरु अंगद जी खडूर आ गए आप जी की लिव सदा ही गुरु चरणों में लगी रहती थी और वियोग के कारण उदास ही रहते थे। इस कारण आप जी अपनी फूफी भिराई के कोष्ठ में एकांत वास करके बैठे रहते।

श्री गुरु अंगद जी ने प्रगट होना

जब असूज सुदी १० संवत् १५९६ में गुरु नानक साहिब जी ज्योति- ज्योत समा गए तो सब संगत भाई बुड्ढा जी को साथ लेकर खडूर साहिब आई। बाबा बुड्ढा जी ने आपको माथा टेक कर बड़े दुख से कहा कि गुरु बाबा जी ज्योति-ज्योत समा गए हैं। आप बाहर बैठ कर संगत को दर्शन उपदेश दो, संगत गुरु दर्शन के बिना व्याकुल हो रही है। बुड्ढा जी से गुरु जी के बैकुण्ठ सिधारने की खबर सुन कर आप जी के नेत्रों में जल आ गया और वचन किया—

जिसु पिआरे सिउ नेहु तिसु आगै मरि चलिऐ ।।
ध्रिगु जीवणु संसार ताकै पाछै जीवणा ।।

गुरु जी का नित्यकर्म

गुरु जी एक पहर रात रहती उठ कर शौच करके हाथ पैर पानी से धोकर फिर दातुन करते थे। तद्उपरान्त ठण्डे साफ जल से स्नान करके निर्विकल्प समाधि में लीन जाते थे। सूर्योदय के

www.9009.co.in

बाद संगत में बैठ कर रबाबी से कीर्तन सुना करते थे। इस तरह जब गुरु जी अपनी समाधि से उठ कर बाहर आते तब जिस रोगी (शोकग्रस्त) व्यक्ति पर आपकी नज़र पड़ जाती थी उस का दुख दूर हो जाता था। तद्उपरान्त संगत को उपदेश देते थे और गुरु बाबा जी के पवित्र चरित्रों को भाई बाले से सुन कर लिखवाते थे।

आप जी को जो कुछ संगत से माया आदि की भेंट होती थी वह सब गरीबों, अनाथों में बाँट देते थे और बाकी जो बचता वह लंगर में दे देते थे।

लंगर के समय संगत के साथ पंगत में बैठ कर खाते थे। आप जी के लंगर में सदा ही घी वाली खीर बनती थी। जैसा कि सत्ते बलवण्ड ने लिखा है—

रामकली की वार राइ बलवंडि सतै डूमि आखी

लंगरि दउलति वंडीऐ, रसु अंमृतु खीरि घिआली।।

(स्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ० ९६७)

अर्थात्— दौलत जो भेंट होती थी और लंगर गुरु का जो तैयार होता था वह जरूरतमंदों को ही बाँट देते थे और अपने पास बहुत थोड़ा ही निर्वाह मात्र रखते थे।

आप जी अपने पास न माया एकत्र करते थे और न ही किसी प्रकार की दुख-सुख की बात होने देते थे। शत्रु मित्र को एक समान ही आप जानते थे।

मनोरंजन

भोजन आदि खा कर आप जी कुछ समय विश्राम करके तीसरे पहर गाँव के छोटे बालकों को इक्ट्ठा करके उन के खेल और कुशतियाँ देखा करते थे। यह स्थान खडूर साहिब में 'मल्ल अखाडा' के नाम से प्रसिद्ध है। पिछले पहर आप जी का दीवान

www.9009.co.in

सजता था जिस में रबाबी कीर्तन करते थे। सन्ध्या समय अपना सन्ध्या का नेम करके भोजन खा कर रात्रि समय सो जाते थे।

आप जी के पास श्री अमरदास जी ने आना

श्री अमरदास जी भल्ले क्षत्रि गाँव में करियाने की दूकान करते थे, एक दिन आप जी को श्री अंगद साहिब जी की सुपुत्री बीबी अमरो जो कि बासरके गाँव में विवाहित थी, से कुछ गुरुबाणी की तुकें सुन कर गुरु दर्शन की इच्छा हो गई। आप जी बीबी जी को साथ लेकर खडूर साहिब आ गए और गुरु जी के दर्शन करके वहाँ ही उन की सेवा में लग गए।

जन्म साखी लिखवानी

आप जी ने गुरु नानक साहिब जी की वाणी को, जो कई भाषाओं के अक्षरों में लिखी हुई थी,भाई बाले से सुन कर सुलतानपुर के निवासी भाई पैड़े मोखे क्षत्रि से संवत् १५९७ में गुरुमुखी अक्षरों में लिखवाया। इस बात से यह प्रसिद्ध है कि गुरुमुखी अक्षर श्री गुरु अंगद देव जी ने ही प्रचलित किये थे।

हमायूँ बादशाह का अहंकार दूर करना

आषाढ़ संवत् १५९७ में शेर-शाह ससराम के शासक से कनौज के युद्ध में दिल्ली का बादशाह हमायूँ हार खा कर भागा हुआ गुरु घर की महिमा सुन कर सम्राट का वरदान लेने के लिए गुरु जी के पास खडूर साहिब आया। गुरु जी अपनी समाधि में लिव लीन बैठे हुए थे कि हमायूँ आप जी के सामने आकर खड़ा हो गया। जब पाँच दस मिनट खड़े हुए को हो गए तो इस ने यह समझ कर कि मैं देश का बादशाह हूँ। इन्हों ने मेरा कोई आदर स्वागत नहीं किया। इसको अपना अनादर समझ कर इस ने गुरु

www.9009.co.in

जी की हत्या करने के इरादे से मियान में से अपनी तलवार निकाल ली और जब गुरु जी पर वार करने के लिए तैयार हुआ तब गुरु जी ने इस ओर संकेत से देख कर कहा बादशाह शेरशाह के सामने जंग में जहाँ यह तलवार तुमने चलानी थी वहाँ तो चलाई नहीं और अब फ़कीरों पर चलाने लगे हो। गुरु जी के इन शब्दों ने हमायूँ के मन पर बहुत असर किया। उस ने गुरु जी के चरण पकड़ लिए और क्षमा मांगी। गुरु जी ने कहा अगर तुम हमारे ऊपर तलवार म्यान से न निकालते तो तुम्हारा राज्य तुम्हें शीघ्र ही मिल जाना था, परन्तु तुमने बादशाहत के अहंकार के कारण गुरु घर का अनादर किया है इस कारण अब बारह साल बाद तुझे दिल्ली के तख्त की बादशाही मिलेगी। यह वचन सुन कर हमायूँ नमस्कार करके लाहैर चला गया और वहाँ से काबल पहुँच गया।

एक तपस्वी योगी की ईर्ष्या

खडूर साहिब एक तपस्वी रहता था। जो यहाँ के खैहरे जाटों का गुरु कहलाता था। वह गुरु जी का यश देख कर आप जी से बड़ी ईर्ष्या रखता था। और निंदा भी किया करता था। संवत् १६०१ में जब वर्षा न हुई तो भयंकर सूखा पड़ा। जिस के कारण वहाँ के लोग बहुत दुखी हो गए। लोग इक्ट्ठे होकर इस के पास आए कि वर्षा करवाओ। तपस्वी ने कहा कि श्री अगंद जी एक गृहस्थी होकर अपने आप को गुरु कहलाता है और पूजा कराता है। यह बड़ी उल्टी गंगा वहने वाली बात है। जब तक आप इस को गाँव से बाहर नहीं निकालोगे तब तक वर्षा नहीं पड़ेगी। इस को गाँव से निकाल दो तब मैं आठ पहर में वर्षा करा दूँगा। उसकी ऐसी बातों को सुनकर गाँव के पंच आदि मिल कर गुरु जी के पास

आए और कहा कि गुरु जी या आप वर्षा कराओ नहीं तो हमारे गाँव से चले जाओ। फिर तपस्वी गुरु वर्षा कराएगा। गुरु जी ने कहा कि भाई ! हम परमात्मा के विरुद्ध नहीं है; यदि हमारे जहाँ से चले जाने से वर्षा हो जाती है तो हम जहाँ से चले जाते हें। बाद में जब गाँव खान रजादे की संगत को इस बात का पता लगा तो वह आ कर गुरु जी को अपने गाँव ले गए। बाद में खडूर में तपस्वी ने लोगों को बहुत धैर्य दिया और वर्षा कराने के यत्न पर भी जब आठ दिन तक वर्षा न हुई, तो लोग बहुत निराश और दुखी हो गए। बाद में एक दिन स्वाभविक ही जब श्री अमरदास जी गुरु जी को खडूर साहिब मिलने आए तो आप जी गुरु जी के गाँव चले जाने की सारी बात सुन कर बहुत दुखी हुए। आप जी ने संगत को समझाया कि अगर आप योगी तपस्वी को गाँव में से निकाल दोगे और गुरु जी ने क्षमा माँग कर वापिस ले आओ; तब बहुत वर्षा होगी। आप जी गुरु नानक जी की गद्दी पर सुशोभित हैं; जो बहुत शक्तिशाली हैं। आप जी को प्रसन्न करके ही वर्षा होने की आशा हो सकती है; गुरु घर का निरादर करने से वर्षा नहीं होगी।

भाई अमरदास जी के श्रद्धापूर्वक वचन सुन कर जिमींदारों ने तपस्वी को कहा कि गुरु जी को गाँव से निकाल कर भी आप आठ दस दिन वर्षा नहीं करा सके; इस लिए आप गाँव से चले जाओ। हम गुरु जी को वापिस ला कर वर्षा कराएंगे। पंचों की यह बात मान कर तपस्वी गाँव से चला गया और इक्ट्ठी होकर गुरु जी के पास गई और अपनी क्षमा माँग कर आप जी को वापिस खडूर ले आए। बाद में आकाश पर शीघ्र ही बादल छा गए और बहुत वर्षा हुई जिस से लोगों को खुशी हुई और गुरु घर पर उनका निश्चय पक्का हो गया।

भाई पारो जुलका

डल्ले गाँव का रहने वाला एक जुलका क्षत्रि पारो गुरु जी के पास आया और गुरु जी से उपदेश लेकर उनका सिक्ख बन गया। तत्पश्चात् गुरु अंगद देव जी की सेवा श्रद्धापूर्वक करके उसने 'परमहंस' की पदवी प्राप्त की। गुरु अंगद देव जी ने इस को प्रचारक स्थापित करके मंजी प्रदान की। वैसाखी का मेला सबसे पहले इसी सिक्ख ने ही दूसरे गुरु जी से आज्ञा ले कर आरम्भ करवाया था।

गुरु जी के और सिक्ख

श्री गुरु अंगद देव जी से भाई शीहै; भाई गुजर और भाई धिंगा ने उपदेश लेकर अपने जन्म सफल किए। भाई धिंगा ने ईस प्रकार तन-मन से गुरु जी की सेवा की कि इस को ब्राह्म ज्ञान की प्रप्ति और परमहंस की पदवी प्राप्त हुई।

भाई दीपा नारायण दास और बूला

यह सिक्ख डल्ले गाँव के रहने वाले एक दिन गुरु जी के पास आए और प्रार्थना की कि हमारा जन्म-मरण का दुख दूर हो जाए; हमें काई ऐसा उपदेश दो। गुरु जी ने कहा ईश्वर की भक्ति किया करो और ईमानदारी से कमाई करके निर्वाह किया करो। गुरु जी का उपदेश धारण करके वे सदा ही गुरु घर की सेवा करते हुए अपने जीवन को सफल कर गए।

हरीके गाँव का अहंकारी चौधरी

एक बार गुरु जी ने अपने साथ कुछ सिक्ख सेवकों को लेकर अपने कुछ पुराने मित्रों को मिलने के लिए हरीके गाँव गए। आप

जी की महिमा सुन कर बहुत लोग श्रद्धा और प्रेम के साथ दर्शन करने आए। हरीके का चौधरी जो गाँव का सरदार था उसने अपने आने की खबर गुरु जी को पहले ही भेज दी कि मैं दर्शन करने के लिए आ रहा हूँ। गुरु जी ने उस के बैठने के लिए एक पीहड़ा रखवा कर उस पर चादर बिछवा दी। जिस समय वह चौधरी आया तो वह पीहड़े पर बैठना अपना निरादर समझ कर गुरु जी के पलंघ पर उन्हीं के साथ सिर की ओर बैठ गया। जब वह बातचीत करके चला गया तो बाद में सिक्खों ने कहा-महाराज ! यह चौधरी बड़ा अहंकारी है जो आप जी से ऊँचा हो कर आप जी के साथ ही बैठ गया। गुरु जी ने कहा कि जो बड़ों का निरादर करता है वह छोटा ही रहता है और जो बड़ों का आदर करता है वह अपने आप ही बड़ा हो जाता है। गुरु जी के इस स्वाभाविक वचन से वह सरदार छोटा होते-होते छोटा हो गया; कुछ दिन यहाँ रह कर गुरु जी वापिस खडूर आ गए।

खडूर का मिरगी रोग वाला शराबी

खडूर का एक चौधरी जो शराब बहुत पीता था उस को मिरगी का रोग था। एक दिन उसने गुरु जी के पास आकर प्रार्थना कि मैं ने सुना है कि आप रोगियों के रोग दूर कर देते हो; मुझे इस बात का विश्वास तब आएगा यदि मेरा मिरगी रोग दूर हो जायेगा। गुरु जी ने कहा-चौधरी ! अगर तू शाराब पीनी छोड़ दे तो तेरा मिरगी रोग दूर हो जाएगा। यदि तू फिर शराब पीने लग गया तो यह रोग तुझे फिर लग जाएगा। चौधरी गुरु जी के पास शाराब न पीने का प्रण करके चला गया । उस ने शराब पीनी छोड़ दी तो उसे फिर मिरगी न हुई। इस तरह जब कुछ समय बीत गया तो एक दिन उस ने फिर शराब पी ली और शराबी हो कर वह अपने

मकान पर चढ़ गया। मकान के ऊपर से गुरु जी की तरफ मुँह करके ऊँची-ऊँची बोल कर कहने लगा; गुरु जी आज मैंने फिर शराब पी ली है; मुझे कोई मिरगी नहीं हुई। गुरु जी ने कहा; सावधान हो फिर मिर्गी का रोग तुम्हें लग गया है। तब उसी क्षण ही चौधरी को मिरगी का दौरा पड़ा वह मकान की छत्त से उल्ट कर नीचे आ गिरा तथा उसकी मौत हो गई ।

श्री गुरु अमरदास जी की प्रारम्भिक कथा

गाँव बासरके जिला अमृतसर में एक तेजभान भल्ल क्षत्रि रहता था। इन्हीं के घर श्री अमरदास जी पैदा हुए। श्री अमरदास जी जब जवान हुए तो निकटवर्ती गाँव में घूम कर सौदा बेचते रहे। आप जी परमेश्वर के भय वाले थे। आप जी अपनी कमाई को सफल करने के लिए साल दर साल संघ के साथ मिल कर हरिद्वार तीर्थ स्नान करने जाया करते थे। वहाँ स्नान करके पाठ पूजा और पुण्य दान करके अपना नेम पूरा करके वापिस अपनी दूकान की कृत पर आ लगते। इस तरह करते हुए जब आप जी बीसवीं बार स्नान करने के लिए हरिद्वार को जा रहे थे तो रास्ते में मिहड़ी गाँव में एक दुर्गा नामक पण्डित के घर विश्राम करने के लिए ठहर गए। आप जी गोड़े पर टाँग रख कर लेटे हुए थे कि पण्डित ने आप जी के पाँव में पद्म रेखा देखकर कहा कि इस रेखा के फलस्वरूप आप चक्रवर्ती राजे बनोगे और आपके शीष पर छत्र झूलेगा।

कुछ समय विश्राम करके जब गुरु जी वहाँ से चलने लगे तो पण्डित कुछ भेंट देने लगे तो पण्डित ने कहा; महाराज ! यह भेंट मैं अब नहीं लूँगा जब आप बहुत समर्थ हो जाओगे तब लूँगा। अब केवल इतना ही वचन दो कि जब कोई बात सच्ची हो जाएगी तो आप मुझे मुँह माँगा दान देंगे। गुरु जी ने कहा; अगर आप का यह

www.9009.co.in

वचन सच्चा हो गया तो फिर हमें आकर मिलना; हम आपको मुँह मांगा दान देंगे।

हरिद्वार से स्नान करके आप जी जब वापिस आ रहे थे, तो रास्ते में एक ब्रह्मचारी साधु मिला, जो आप जी के साथ प्रेम करके बासरके आ गया। दो चार दिन इक्ट्ठे रह कर जब संगत करते रहे, तो एक दिन ब्राह्मचारी ने पूछा; भक्त जी ! आपका गुरु कौन है? जिस से आप ने दीक्षा ली है। श्री अमरदास जी ने कहा; मैंने अभी तक कोई गुरु धारण नहीं किया और न किसी से दीक्षा ली है। आप जी से यह बात सुन कर ब्रह्मचारी ने बड़े दुख से कहा कि मेरे जप तप और तीर्थ आदि सब नष्ट ही गए है; जो मैं आप जैसे निगुरे की संगत करके उस के हाथों भोजन खाया है। यह बात करके वह उठ कर चला गया। बाद में श्री अमरदास जी को बड़ा पश्चाताप हुआ कि अगर निगुरे पुरुष के हाथ का खाना खाने या पानी पीने से सब शुभ काम निष्फल हो जाते हैं तो फिर निगुरा जो आप शुभ काम करता है उस का अच्छा फल उस को किस प्रकार मिल सकता है। यह विचार करके आप जी को यह तीव्र ज्ञासा हुई कि गुरु को जल्द धारण करना चाहिए। इस विचार को ध्यान में रख कर आप जी रात-दिन अरदास और विनय करते रहे कि–हे प्रभु ! मुझे जल्द ही सतिगुरु का मेल करवाओ ताकि मेरा जन्म सफल हो जाए।

श्री गुरु अंगद साहिब जी की शरण में आना

श्री अमरदास जी के भतीजे से श्री गुरु अंगद साहिब जी की सुपुत्री बीबी अमरो विवाहित थी। अपनी चिंता के प्रभाव में चिंतित व्यक्ति के विषय में कहावत है कि 'जरूरत खोज की माँ है' आप जी ने बीबी अमरो जी को कहा कि पुत्री ! मुझे अपने पिता गुरु जी

के पास ले चलो मैं उन के दर्शन करके सफल होना चाहता हूँ। पिता समान वृद्ध श्री अमरदास जी की बात को सुन कर बीबी जी ने अपनी सास ससुर और पति से आज्ञा ले कर आप जी को साथ लेकर खडूर साहिब की ओर गाड़ी में बैठ कर चल पड़ी। घर आ कर बीबी श्री अमरदास जी को अलग कमरे में बिठा कर आप गुरु पिता के पास जहाँ वे सुशोभित थे, गई।

गुरु जी ने अपनी सुपुत्री को देख कर प्यार दिया। कुशल मंगल पूछी और कहा कि बेटा! जिन को साथ लेकर आई है, उन को अलग क्यों बिठा कर आई हो? उनको भी हमारे पास ले आओ। जब यह बात बीबी जी ने अमरदास को बताई तो आप बहुत खुश हुए और उठ कर बीबी के साथ गुरु जी के पास आ गए। गुरु जी आप जी को अपना सम्बन्धी जान कर आगे आकर मिले और आदरसहित पास बिठा कर कुशल पूछी। आप ने कहा महाराज! आप अब मुझे सम्बन्धी न समझें। मैं आप जी का सिक्ख बनने आया हूँ। आप गुरु बनो और मुझे उपदेश देकर सिक्ख बनाओ।

इतने में जब लंगर तैयार हो गया, तब गुरु जी आप जी को भी भोजन खिलाने के लिए अपने साथ लंगर में ले गए। लंगर में जब आप जी ने सोचा कि मैं तो माँस कभी नहीं खाता, अगर अब खा लिया तो प्रण टूट जाएगा और अगर वापिस कर दिया तो जिनको मैंने गुरु धारण किया है वह अपना अनादर समझ कर नाराज हो जाएँगे। बात कुछ टेढ़ी सी और बिगड़ती लगती है। इस से कैसे बचा जाए। हाँ ! अगर गुरु अंतर्यामी हैं तो वह अपने आप ही मेरे अन्दर की बात जान कर लांगरी को मेरे आगे माँस रखने से मना कर देंगे।

www.9009.co.in

आप के मन में ऐसा विचार आते ही गुरु जी ने लंगर बाँटने वाले को कहा कि इन के आगे माँस नहीं रखना। यह वैष्णव भोजन ही करते हैं। यह बात सुन कर आप जी बड़े खुश हुए और मन में ही कहा कि गुरु जी ठीक ही अंतर्यामी हैं, घट-घट की जानने वाले हैं। इनको ही गुरु धारण करना चाहिए।

श्री अमरदास जी ने घाल घालनी

गुरु जी के पास आकर जब कुछ दिन व्यतीत हो गए तो आप जी ने भाई बुड्ढा जी से आज्ञा लेकर और सिक्खों की तरह घर की सेवा में लग गए। प्रातः काल गुरु जी के लिए जल की गागरें लाकर स्नान कराते। फिर वस्त्र साफ करके आप एकांत चित्त होकर गुरु जी की मूर्ति का ध्यान करके बैठ जाते। स्मरण से उठ कर लंगर के लिए पानी लेकर आते, झाड़ू देते और बर्तन साफ करते। आप जी सेवा में इतना तत्पर रहते कि आप जी को खाने-पीने और पहनने की भी लालसा न रही। अनथक रात-दिन सेवा करने के कारण आप जी का शरीर कमज़ोर हो गया और शरीर के पहनने वाले कपड़े भी फटे पुराने से रहते थे। गुरु जी ने आप जी की सेवा से खुश होकर आप को एक अंगोछा दिया जो आप जी ने गुरु जी का प्रसाद समझ कर सिर पर बांध लिया। आप जी तन करके गुरु जी की सेवा और मन करके गुरु जी का नाम चिंतन करते रहते थे। आप जी की सेवा पर खुश होकर गुरु जी आपको अंगोछा साल दर साल बखशिश करते, वह आप जी पहले के ऊपर ही सिर पर बांधते जाते। इस प्रकार जब ग्यारह साल बीत गए तो इन अंगोछों का आप जी के सिर पर एक बोझ-सा बन गया। आप जी का शरीर पतला और छोटे कद का था जो वृद्ध अवस्था के कारण बहुत निर्बल हो चुका था।

वर की प्राप्ति

एक दिन आप जी नित्य प्रति के नियम अनुसार गुरु जी के स्नान के लिए प्रातः पानी की गागर सिर पर उठा कर लिए आ रहे थे कि रास्ते में एक जुलाहे कि खड्डी के खूँटे से आप जी को चोट लगी, जिस से आप जी खड्डी में गिर गए। जब आप जी के वहाँ पर गिरने की आवाज़ जुलाहे ने सुनी, जो उस ने जुलाही से पूछा कि बाहर कौन है, कोई चोर है या कोई और पुरुष! जुलाही ने कहा इस समय और कौन हो सकता है, अमरू घरहीन ही होगा, जो रात दिन समधियों का पानी ढोता फिरता है। जुलाही की यह बात सुन कर श्री अमरदास जी ने कहा-कमलीए! मैं घरहीन नहीं हूँ, मैं गुरु वाला हूँ । तूँ पागल है जो इस तरह कहती हो। यह बात कह कर आप जी गागर उठा कर गुरु जी के पास आ गए।गुरु जी को पथ-यथा नेम स्नान करवा कर सेवा में लग गए।

उधर आप जी के वचन से जुलाही पागलों की तरह बुखलाने लगी। जब दिन चढ़ा तो अन्तर्यामी गुरु जी ने जुलाहे जुलाही को बुला कर पूछा कि आज प्रातः काल क्या बात हुई थी, सच्च बताना। जुलाहे ने कहा, महाराज ! जब आप के सेवादार बाबा जी पानी की गागर लाते समय हमारी खड्डी के खूँटे के साथ ठोकर खा कर गिर पड़े तो मैंने पूछा कौन है? मेरी पत्नी ने कहा कि यह अमरू घरहीन होगा। यह सुन कर उन्हों ने कहा, पागल है , मैं तो गुरु वाला हूँ। घरहीन नहीं। उन के इस वचन से ही मेरी पत्नी पागल हो गई है। आप कृपा करके हमें क्षमा करें और इसको अरोग कर दें नहीं तो मेरा घर बरबाद हो जाएगा।

जुलाहे की यह बात सुन कर गुरु जी ने कहा, श्री अमरदास जी बेघरों के लिए घर, निमाणिओं का माण हैं, निओटिओं की ओट हैं।

www.9009.co.in

निधरिओं की धिर हैं, निराश्रितों का आश्रय हैं आदि बारह वरदान देकर गुरु जी ने आप जी को गले के साथ लगा लिया और वचन किया कि अब आप मेरा ही रूप हो गए हो। तत्पश्चात् कृपा दृष्टि करके जुलाही की तरफ देख कर उसको अरोग कर दिया और वे दोनों नमस्कार करके गुरु जी के गुन गाते हुए घर को चले गए।

श्री अमरदास जी को वरदान

तत्पश्चात् गुरु जी ने आप जी के सिर से ग्यारह सालों के ऊपर नीचे बांधे हुए अंगोछों की गट्ठड़ी उतार कर और सिक्खों को आज्ञा की इन को अच्छी तरह स्नान करवा कर नए कपड़े पहनाओ। आज से यह हमारा रूप ही हैं। हमारे बाद गुरु बाबे जी की गद्दी पर यही सुशोभित होंगे।

श्री अमरदास जी का गोईंदवाल चले जाना

इस बात को अभी थोड़े ही दिन हुए थे कि एक गोंदे क्षत्रि ने गुरु जी के पास आ कर प्रार्थना की, कि सच्चे पातशाह ! मेरा गाँव व्यास नदी के किनारे है, जिस को भूत प्रेत बसने नहीं देते, आप कृपा करके वहाँ चरण डाल कर मेरा नगर बसाओ। वहाँ आप जी के निवास के लिए मैं सुन्दर मकान बनवा दूँगा, और भी हर प्रकार की सेवा करता रहूंगा। गोंदे की प्रार्थना सुन कर गुरु जी ने पहले अपने बड़े सुपुत्र दासु जी को फिर छोटे सुपुत्र दातु जी को कहा कि इस के साथ चले जाओ और वहाँ ही निवास करना। मगर जब दोनों सुपुत्रों ने न कर दी तो फिर गुरु जी ने श्री अमरदास जी को कहा कि इस गोंदे के साथ आप जाओ और इस की सहायता करों। गुरु जी की आज्ञा मान कर आप जी झट-पट तैयार हो गए। तब गुरु जी ने अपने हाथ की एक छड़ी उसे दी और कहा कि जब

इस छड़ी को आप गाँव की हद में जाकर हवा में ऊँची हिलाओगे तो इस को दूर से ही देख कर भूत प्रेत गाँव छोड़ कर भाग जाएँगे। इस तरह जब छड़ी लेकर श्री अमरदास जी गोंदे के साथ गए तो आप जी के हाथ में छड़ी हिलती हुई देख कर सब भूत प्रेत नगर खाली करके भाग गए।

गोईंदवाल का निर्माण

जब भूत प्रेतों से नगर स्थान साफ हो गया तो गोंदे ने बहुत से राज मजदूर लगा कर गुरु जी के निवास के लिए मकान तैयार करवा दिए। तत्पश्चात् आप जी के दर्शन करके खडूर आए जो आप जी से सारी कथा सुन कर गुरु जी बहुत खुश हुए और कहा कि पुरुषा ! हमारा वचन मान कर अपने सारे परिवार को बासरके से गोईंदवाल ही ले आओ। गुरु जी का हुक्म मान कर आप जी सारे परिवार को बासरके से संवत् १६०३ में गोईंदवाल ले आए और अपने नए मकानों में निवास किया।

श्री गुरु अंगद साहिब जी ने गोईंदवाल जाना

एक दिन प्रेम वश गुरु अंगद देव जी गोईंदवाल को देखने के लिए और श्री अमरदास जी से मिलने के लिए गोईंदवाल चले गए। वहाँ आप जी के निवास स्थान को देख कर गुरु जी बड़े प्रसन्न हुए। तद्उपरान्त गुरु जी आप को व्यास नदी के किनारे ले गए और बैठ कर कहा कि जगत् को नश्वर जान कर झूठा समझना और इसका आशय रूप आदि अंतः प्रकाश हो रहा है उसको अपना रूप समझो। उस सत् चित आनंद ब्रह्म को आत्मा रूप जानकर अपनी वृत्ति को उस में लगाओ। ऐसे गुरु जी ने आप जी को ब्रह्म ज्ञान का प्रकाश देकर अपने समान ही कर दिया। वहाँ से

www.9009.co.in

उठ कर जब गुरु जी खडूर को वापिस आए तो श्री (गुरु) अमरदास जी गोईंदवाल की हद तक छोड़ने गए और यहाँ नमस्कार करके गोईंदवाल वापिस आ गए।

श्री अमरदास जी को गुरु गद्दी

श्री गुरु अंगद साहिब जी ने अपने शरीर त्यागने का समय नज़दीक देख कर सब संगत को प्रगट कर दिया कि अब हम अपना शरीर त्यागना चाहते हैं। आप जी के यह वचन आस-पास के सारे गाँव में फैल गए जिसको सुन कर बहुत सिक्ख संगत गुरु जी के अन्तिम दर्शन करने के लिए खडूर पहुँच गई। उपरान्त गुरु जी ने एक सेवादार को भेज कर श्री अमरदास जी को भी खडूर में बुला लिया।

जब श्री (गुरु) अमरदास जी आ गए तो गुरु जी ने सेवादारों को आज्ञा की इनको स्नान कराओ और नए वस्त्र पहना कर हमारे पास ले आओ। इनके साथ हमारे दोनों सुपुत्रों और संगत को भी बुला लाओ। इस तरह जब दीवान सज गया जो गुरु जी ने श्री अमरदास जी को सम्बोधित करके कहा-हे प्यारे पुरुष श्री अमरदास जी! हमें अकाल पुरुष का बुलावा आ गया है, हम ने अपना शरीर त्याग कर गुरु बाबा जी के चरणों में जल्दी ही जा बिराजना है। आप ने गुरु बाबा नानक साहिब जी की चलाई हुई मर्यादा को कायिम रखना। यह वचन कह कर आप जी ने चेत्र सुदी ४ संवत् १६०८ वाले दिन पाँच पैसे और नारियल श्री अमरदास जी के आगे रख कर माथा टेक दिया और बाबा बुड्ढा जी की आज्ञा अनुसार आप जी के मस्तक पर गुरु गद्दी का तिलक लगा दिया। तदउपरान्त गुरु जी ने तीन परिक्रमा कीं और आप जी को अपने सिंघासन पर सुशोभित करके पहले आप ने नमस्कार

www.9009.co.in

किया और फिर सिक्खों और दोनों साहिबज़ादों को कहा कि सभी बारी-बारी उठ कर इनको माथा टेको। अब यह मेरा रूप हैं, मेरे और इनमें कोई भेद नहीं है। गुरु जी का वचन मान कर सारी संगत ने माथा टेक दिया मगर गुरु जी के दोनों सुपुत्रों दासू और दातू जी ने माथा न टेका कि हमें अपने एक सेवक को माथा टेकना बन नहीं आता।

श्री गुरु अंगद देव जी ने ज्योति-ज्योत समाना

गुरु जी ने संगत प्रति वचन किया-सिक्ख संगत जी ! अब हम अपना शरीर त्याग कर बैकुण्ठ को जा रहे हैं। हमारे पश्चात् आप सब ने सत्यनाम वाहिगुरु का जाप और कीर्तन करना। रोना और शोकनहीं करना, लंगर जारी रखना। हमारे शरीर का संस्कार उस स्थान पर करना जहाँ जुलाहे के खूँटे से ठुकरा कर श्री अमरदास जी गिर पड़े थे। यह वचन कह कर आप जी सफेद चादर ऊपर ले कर कुश आसण पर लेट गए और पंच भूतक शरीर को त्याग कर बैकुण्ठ को सिधार गए।

तदउपरान्त सारी संगत ने कीर्तन करके एक सुन्दर विमान तैयार किया और गुरु जी के शरीर को ब्यास नदी के जल में स्नान करवा कर ऊपर सुन्दर रेश्मी कपड़ा डाल कर विमान में रखा। फिर गुरु जी के बताए हुए स्थान पर भाई बुड्ढा आदि परम सिक्खों ने आप जी के शरीर को चंदन चिता रख कर अरदास की और आप जी के बड़े सुपुत्र दासू जी से अग्नी लगवा कर संस्कार कर दिया।

दसवें दिन श्री गुरु अमरदास जी ने बहुत रसद इक्ट्ठी करके कढ़ाह प्रसाद की देग तैयार कराई और सब संगत को पंगत में बैठा कर खुले गफ़्फ़े बँटवाये। इस समय जो वस्त्र और माया श्री

गुरु अमरदास जी को संगत ने भेंट की वह आप जी ने सारी बाबा दासू जी और दातू जी गुरु साहिब जी के दोनों पुत्रों को दे दी और आप संगत के साथ गोईंदवाल चले गए।

श्री गुरु अंगद देव जी ४७ साल ११ महीने और तीन दिन की कुल आयु भोग कर चेत सुदी चौथ संवत् १६०८ को चार घड़ी दिन चढ़े खडूर साहिब ज्योति-ज्योत समाए।

इस आयु में आप जी ने १२ साल ८ महीने और ६ दिन की गुरुगद्दी की।

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

श्री गुरु अमरदास जी की कथा

श्री गुरु अमरदास जी तेज भाज भल्ले क्षत्रि के घर माता सुलखणी जी के उदर से वैशाख सुदी १४ संवत् १५३६ को गाँव बासरके प्रगणा झबाल में पैदा हुए।

आप जी की शादी श्री मनसा देवी सनखत्रे गाँव के निवासी देवी चंद बहिल क्षत्रि की पुत्री के साथ ११ माघ संवत् १५५८ को हुई। आप जी के घर दो साहिबज़ादे बाबा मोहण जी और बाबा मोहरी जी तथा दो पुत्रियाँ बीबी दानी जी और बीबी भानी जी ने जन्म लिया। जब आप जी श्री गुरु अंगद साहिब जी की सेवा में उपस्थित हुए तो आप जी की आयु ६१ वर्ष की थी।

श्री गुरु अंगद देव जी का अंतिम संस्कार करके आप जी गोईंदवाल आ गए और अपने चौबारे में एकांत बैठ गए। जब आप जी को इस तरह एकांत बैठे कई दिन बीत गए तो आप जी के दर्शन अभिलाषी बहुत से सिक्ख चौबारे के बाहर आकर इक्ट्ठे हुए। फिर सभी ने मिल कर बाबा बुड्ढा जी के द्वारा गुरु जी के निजी सेवक बलू को गुरु जी के पास अंदर भेजा कि बाहर सात दिन से संगत बैठी हुई है, आप बाहर आ कर सब को दर्शन देकर संतप्त हृदयों को शाँत करो। इस तरह बलू की जबानी संगत की बेनती प्रवान करके गुरु जी बाहर आ गए और आसन पर बैठ कर सब को दर्शन देकर उनकी मनेच्छा पूरी की।

www.9009.co.in

गुरु जी का नित्य कर्म

श्री गुरु अमरदास जी सवा पहर रात रहते उठ कर स्नान करते थे। स्नान करके आप जी एकाग्रचित होकर निज आनंद में लीन हो जाते थे। दिन निकले समाधि से उठ कर दीवान में आ बैठते थे। दीवान में रबाबी कीर्तन करते थे। कीर्तन के भोग के उपरान्त देश-प्रदेश से आए सिक्ख उपस्थित होते थे और सत्यनाम का उपदेश लेकर मनोकामनाएं पूरी करके आनंदमय होते थे। दोपहर के समय सारी संगत के साथ पंगत में बैठ कर अमृतमय भोजन खाते और आप गेहुँ का दलीआ खाते थे। खाना आदि खा कर आप जी विश्राम करते थे, और फिर दिन के चौथे पहर दीवान में बैठ कर पण्डित केशोदास से पुराणों की और गुरेतिहास की कथा सुनते थे। कथा उपरान्त रबाबियों का कीर्तन होता था और फिर दीवान की समाप्ति की जाती थी। उपरान्त फिर आप जी कुछ थोड़ा सा भोजन खा कर रात विश्राम करने के लिए चले जाते थे।

आप जी सदा ही सफेद वस्त्र पहनते थे। अपने पास कोई फालतू वस्त्र नहीं रखते थे। लंगर में भी सदा नया ही अन्नादि आता था। रात को सोते समय जो लंगर बच जाता था, वह गाँव के आवारा पशुओं को तथा ब्यास नदी में जल जंतुओ के लिए डाल देते थे। पानी के घड़े और गागरें भी खाली करके उल्टी कर देते थे। नए सूर्य नया अन्न और नया ही पानी प्रयुक्त किया जाता था। जो कोई श्रद्धालु आप जी के दर्शन को बाहर से आता था, जिस समय तक वह पहले लंगर में से प्रसाद न खा लेता उस को दर्शन नहीं देते थे। यह सभी नियम आप जी ने अपनी आयु प्रयंत निभाए।

www.9009.co.in

गुरु जी ने सावण मल्ल को हरीपुर भेजना

एक दिन बलू आदि सिक्खों ने प्रार्थना की, सच्चे पातशाह ! दूर-दूर से हिंदू मुसलमान आदि अनेक जातियों के लोग दर्शन करने के लिए आते हैं, मगर उन के रहने के लिए कोई खुला स्थान नहीं है, इस लिए कोई खुला मकान बनाना चाहिए। यह प्रार्थना सुनकर गुरु जी ने बाबा बुड्ढा जी आदि वृद्ध सिक्खों के साथ सलाह करके अपने भतीजे सावण मल्ल को कहा कि आप अपने साथ पाँच सिक्ख लेकर रियासत हरीपुर के राजे के पास जाओ और वहाँ से मकानों के लिए लकड़ी के गट्ठे बांध कर ब्यास नदी के मार्ग से भेजने का प्रबंध करो। सावण मल्ल ने कहा-महाराज ! पहाड़ी लोग मुर्तिपूजक हैं, वह गुरु पूजक नहीं हैं। इस लिए लकड़ी खरीदने के लिए बहुत धन चाहिए। गुरु जी ने कहा सब शक्तियाँ आप के अधीन होंगी, तुम जिस तरह चाहोगे उनका प्रयोग करके राजे को गुरु घर का प्रेमी बना लेना फिर वह आप ही गुरु घर के लिए जिस वस्तु की जरूरत होगी, तुझे दे देगा। यह बात कह कर गुरु जी ने सावण मल्ल को अपने हाथ का एक रुमाल दे दिया और कहा कि इस रुमाल को हाथ में पकड़ कर जो कुछ चाहोगे वह हो जाएगा। आपकी प्रत्येक इच्छा यह रुमाल पूरी करेगा। रुमाल लेकर सावण मल्ल अपने साथ पाँच सिक्ख लेकर हरीपुर को चल पड़ा। जब हरीपुर पहुँचा तो देवनेत ही उस दिन इकादशी का व्रत होने के कारण राजे की तरफ से आज्ञा थी कि कोई अन्न को हाथ न लगाए। परन्तु सावण मल्ल ने साधारण की तरह प्रसाद तैयार करके साथियों सहित आप खाया और कुछ आने वालों को दे दिया। इस बात की राजे को खबर हुई तो उस ने भाई 'सावण मल्ल को बुला कर पूछा कि आप ने आज

www.9009.co.in

इकादशी के दिन अन्न क्यों खाया है व्रत क्यों नहीं रखा ? तब सावण मल्ल ने कहा कि गुरु जी का लंगर सदा ही चलता रहता है क्योंकि गुरु घर इस तरह के भ्रमों में विश्वास नहीं रखता। यह उत्तर सुन कर राजे के गुरु एक बैरागी साधु ने कहा, यह आज्ञा नहीं मानते, इनको कैद कर देना चाहिए। अपने गुरु के कहने के अनुसार राजे ने सावण मल्ल को कैद कर दिया।

दूसरे दिन ही राजे के लड़के को हैजा हो गया और वह मर गया। राजे के महलों में रोना पीटना शुरु हो गया। राजे के मंत्री ने कहा, महाराज ! आप ने जो गुरु के निर्दोष सिक्खों को कैद में डाल दिया है, यह उन्हीं के निरादर का फल है कि राजकुमार की मृत्यु हो गई है। उनको कैद से निकाल कर उन से क्षमा मांगो। राजे ने अपने मंत्री को भेज कर क्षमा मांगी और उन्हें कैद से छोड़ दिया। तब सावण मल्ल ने कहा, अगर राजा गुरु का सिक्ख बन जाए तो मैं उसके लड़के को जिंदा कर दूँगा। जब राजे को बात बताई गई तो उसने कहा, यदि मेरा लड़का जिंदा हो जाए तो मैं और मेरा परिवार सभी गुरु जी के सिक्ख बन जाएँगे। उस गुरु के सिक्खों को जल्दी से जल्दी महलों में बुला कर ले आओ। जब वज़ीर ने आदमी भेज कर सावण मल्ल को महलों में बुला कर राजे को यह बात बताई तो सावण मल्ल ने राजे को कहा कि आप सभी चुप हो कर बैठ कर सत्यनाम का स्मरण करो और रोना पीटना बंद कर दो। उपरान्त सावण मल्ल ने मृत लड़के के पास जाकर जपुजी साहिब का पाठ करके जब गुरु जी के रुमाल का कोना धो कर लड़के के मूँह में डाला और रुमाल पकड़ कर उस के सिर के ऊपर घुमा कर सत्यनाम कहा, तो लड़का उठ कर बैठ गया। इस बात को देख कर राजा और रानी सावण मल्ल जी के चरणों पर गिर पड़े। महलों में खुशियों की लहर दौड़ गई। राजे ने सावण

www.9009.co.in

मल्ल जी को बहुत धन और वस्त्र भेंट किये और फिर आप सत्यनाम का उपदेश लेकर गुरु घर का सेवक बन गया।

तत्पश्चात् सारी रियासत के लोग गुरु घर के सिक्ख बन गए। जब दो चार दिन खुशियों में व्यतीत हो गए तो एक दिन राजे ने सावण मल्ल को यहाँ आने का कारण पूछा। सावण मल्ल ने कहा, महाराज ! व्यास नदी के किनारे एक गोईंदवाल नगर है, वहाँ गुरु नानक जी की गद्दी पर तीसरी ज्योति बैठने वाले गुरु अमरदास जी निवास करते हैं, उन्हीं के दर्शन को बहुत सिक्ख सेवक आते हैं। उन्हीं के आराम के लिए गुरु जी वहाँ मकान बनवा रहे है, जिन के लिए बहुत सी लकड़ी की जरूरत है। राजे ने उसी समय ही अपने आदमियों को हुक्म दे दिया कि मकानों में काम आने वाली दियार आदि लकड़ी काट कर उन के बेड़े बांध कर व्यास में तैरा दो। इस तरह जल्दी ही बहुत लकड़ी गोईदवाल पहुँचने लगी और लोग अपने-अपने मकान और दूकानें बनाने लगे।

सावण मल्ल को अहंकार हो जाना

जब लकड़ी की जरूरत पूरी हो गई तो गुरु जी ने सावण मल्ल को गोईंदवाल वापिस बुला भेजा, मगर सावण मल्ल ने सोचा कि अगर मैं चला गया, तो गुरु जी मुझ से अपना रुमाल ले लेंगे तो फिर मेरी कोई मान्यता नहीं रहेगी। मेरी सारी शक्ति चली जाएगी। अच्छा तो यही है कि मैं गोईदवाल न ही जाऊँ। यह विचार कर के जब सावण मल्ल ने गुरु जी की आज्ञा का पालन न किया, तो गुरु जी ने उस की सारी शक्ति वापिस खींच ली। शक्ति के चले जाने के कारण सावण मल्ल बहुत पछताया और गुरु जी से अपनी भूल चुकाने के लिए गोईंदवाल जाने के लिए तैयार हो कर उसने राजे को कहा कि अपने परिवार समेत गोईंदवाल चल कर

गुरु जी के दर्शन करके अपना जन्म सफल कर लो। गुरु जी अपने सेवकों की मनोकामनाएँ पूरी कर देते हैं।

राजे ने गुरु जी के दर्शन करने आना

सावण मल्ल़ की प्रेरणा के साथ राजा और रानी भी गुरु जी के दर्शन करने के लिए गोईंदवाल आ गए। पहले सावण मल्ल़ आप अकेला ही गुरु जी के पास हाजिर हुआ और माथा टेक कर कहा कि महाराज! हरीपुर का राजा अपनी रानी सहित आप जी के दर्शन करने आया है। गुरु जी ने वचन किया कि राजा पहले लंगर से प्रसाद खा कर फिर हमारे पास आए, अगर उसकी रानियाँ भी आना चाहें तो पहले वे सफेद वस्त्र पहन कर आएँ। रंगदार वस्त्र पहन कर कोई न आए न ही कोई मूँह ढक कर आए। जब राजा इसी तरह गुरु जी की आज्ञा के अनुसार प्रसाद खा कर और रानियों ने सफेद वस्त्र पहन कर गुरु जी के पास उपस्थित हुए तो एक रानी ने गुरु जी के पास सिक्ख बैठे हुए देख कर घुँघट निकाल लिया। गुरु जी ने उस को देख कर कहा कि यह पागल किस लिए आई है, क्या इस को हमारे दर्शन करने अच्छे नहीं लगते थे? आप जी के इस स्वाभाविक वचन के साथ वह रानी उस समय ही सूझ-बूझ भूल कर चीखें मारती हुई बाहर को भाग गई। इस बात को देख कर राजा बड़ा चिंतित हुआ। उसको गुरु जी के वचनों पर बहुत श्रद्धा हो गई। राजा गुरु जी के दर्शन करके वापिस अपने घर चला गया। गुरु जी ने सावण मल्ल़ की श्रद्धा और प्रेम को देख कर उसको फिर वर शक्ति प्रदान की और कहा कि आप हरीपुर जाकर गुरु सिक्खी का प्रचार करो। फिर कभी मन में इस शक्ति का अहंकार न करना। राजे की रानी पागल हो गई।

रानी की शादी गुरु जी ने अपने एक सिक्ख सचन के साथ कर दी, जो लंगर के लिए लकड़ियाँ लाता था और अपनी कृपा दृष्टि के साथ रानी का रोग भी दूर कर दिया।

बाबा दातू जी का विरोध

श्री गुरु अंगद साहिब जी के दो सुपुत्र थे, बड़े दासू जी और छोटे दातू जी। जब श्री अमरदास जी की महिमा दूर-दूर तक होने लगी तो दातू जी बहुत ईर्ष्या करके गुरुगद्दी संभालने के लिए गोईदवाल चले गए। गुरु साहिब जी संगत में अपनी गद्दी पर सुशोभित थे। दातू जी ने आते ही बड़े गुस्से से गुरु जी की पीठ में एक ज़ोर की लात मारी जिस से गुरु जी गद्दी से गिर पड़े। दातू जी अभी कुछ और करने के लिए सोच री रहे थे कि गुरु जी दातू जी का पैर पकड़ कर दबाने लगे और कहने लगे कि मेरा वृद्ध शरीर होने के कारण कठोर है, आप जी के कोमल चरण को चोट लगी होगी। आप मेरे गुरुदेव के लड़के हैं। मुझे उठ कर आप जी का आदर करना चाहिए था। मुझ से भूल हो गई है। मैंने उठ कर आप जी का आदर नहीं किया । आप मुझे क्षमा करें। यह कह कर गुरु जी अपने निवास स्थान पर आ गए और दातू जी गद्दी पर बैठ गए। दूसरे दिन जब कोई सिक्ख दातू जी के पास भेंट लेकर माथा टेकने न गया तो संध्या समय उदास होकर गुरु जी के घर का कीमती सामान और चढ़ावा इक्ट्ठी हुई माया सब कुछ खच्चर पर लाद कर खडूर को चल पड़ा। रास्ते में रात के समय यह सब कुछ चोरों ने लूट लिया और दातू जी सेवकों के साथ खाली हाथ ही खडूर पहूँच कर बहुत पछताए। इस के अतिरिक्त एक बात और हुई कि जो टाँग दातू जी ने गुरु जी को मारी थी उस में काफी दर्द होना शुरु हो गया।

गुरु जी ने बासरके जा कर गुप्त होना

इधर गुरु जी इस दुविधा से बचने के लिए अकेले ही उठ कर चल पड़े और बासरके पहुँच गए। गाँव से बाहर एक कच्चे कमरे में बैठ कर कमरे से बाहर द्वार पर लिख दिया कि द्वार को जो खोलेगा वह लोक-प्रलोक दोनों से ही वंचित हो जाएगा। हम उस की सहायता नहीं करेंगे। तत्पश्चात् जब दिन निकला तो गुरु जी को न देख कर लोगों में शोर मच गया। संगत ने इक्ट्ठे होकर बाबा बुड्ढा जी को प्रार्थना की कि गुरु जी को ढूँढ कर वापिस लाना चाहिए । बाबा जी ने कहा कि गुरु जी की घोड़ी पर काठी डाल कर छोड़ दो और उस के पीछे-पीछे चल पड़ो, जहाँ गुरु जी होंगे घोड़ी वहाँ ही जाकर खड़ी होगी। जब संगत ने इस तरह किया तो घोड़ी बासरके पहुँच कर उस कमरे के पास जा खड़ी हुई जिस में गुरु साहिब जी समाधि लगा कर बैठे हुए थे। भाई बुड्ढा जी ने जब उस कमरे के दरवाज़े पर गुरु जी की आज्ञा लिखी हुई पढ़ी तो संगत को कहा कि हमें दरवाज़ा नहीं खोलना चाहिए, दरवाज़ा खोलने से गुरु जी के हुक्म की उलंघना होगी इस लिए कमरे की पीछे से दीवार को फाड़ कर अंदर जाना ठीक है। अतः संगत ने शीघ्र ही गुरु जी के दर्शन करने के लिए दीवार पीछे से फाड़ दी और अंदर जाकर गुरु जी के चरणों पर जा माथा टेका। आप जी की आज्ञा का पालन करते हुए सिक्खों का दीवार फाड़ कर अंदर चले जाना देख कर गुरु जी बहुत खुश हुए और वचन किया कि इस सन्न अर्थात् छेद के रास्ते जो पुरुष श्रद्धा प्रेम से इस कमरे का दर्शन करेगा उस की चौरासी कट जाएगी।

तद्उपरान्त संगत की प्रार्थना सुन कर गुरु जी संगत के साथ गोईंदवाल आ गए। इस से सारे गोईंदवाल में खुशी की लहर दौड़ गई।

शेखों को उन के किये हुए फल

मुगल बादशाह के समय दिल्ली और लाहौर के रास्ते में व्यास नदी से पार होने के लिए गोईंदवाल का पत्तन प्रसिद्ध था। शाही सेना के ठहरने के लिए बड़ी-बड़ी सराएँ बनी हुई थीं। इन सराओं में आने-जाने के कारण सदा ही बहुत रौनक लगी रहती थी। इन रौनक के कारण व्यापार पेशा कुछ शोखों के यहाँ घर बसते थे। इन के लड़के गुरु के सिक्खों से सदा ही नोक-झोक लगाये रखते थे। सिखों के पानी के घड़े गुलेलें मार कर तोड देते थे और सिक्ख स्त्रियों को बुरा-भला बोलते रहते थे। जब सिक्खों ने गुरु जी को यह सारी बात बताई तो आप जी ने कहा कर्त्ता पुरुष इनको आप ही बन्द करेगा। आप शान्ति बनाये रखें। कुछ दिन ठहर कर यहाँ संयासी साधुओं का एक डेरा आकर उतरा। जब वह कूएँ पर पानी लेने गए तो शेखों के के लड़कों ने उनके घड़े तोड़ दिए। तब सन्यासियों ने शेखों के लड़कों की खूब पिटाई की। उनकी गत अच्छी बनाई। इस घटना के कुछ दिन के बाद पठान सैनिकों का दल दिल्ली से लाहौर को जाता हुआ यहाँ आ उतरा। उस रात बड़ा तूफान आया। जिस से डेरे में उथल-पथल मच गई और पठानों की एक खच्चर शेखों के लड़कों ने घेर ली और अपने अन्दर बाँध ली। सुबह जब पठानों ने एक खच्चर को गुम पाया, तो उन्होंने उस की भाल करके एक शेख के घर बंधी हुई पकड़ ली और शेखों को चोरी के इलज़ाम में बहुत मारा और उनके घर लूट लिए। जब यह बात गुरु जी को बताई गई, तो आप ने वचन किया कि जो निर्वैर पुरुष से सीना ज़ोरी करता है वह, आप ही दुख पाता है।

डल्ले गाँव के सिक्ख और सुलतानपुर का भाई महेशा

भाई पारो, लालो खान छुरा, दीपा, मल्लूशाही और किदारी आदि सिक्ख डल्ले के गुरु घर के बहुत प्रेमी हुए हैं, जिन का गुरु जी ने उद्धार किया।

इन सिक्खों से गुरु जी की महिमा सुन कर एक महेशा नाम का व्यक्ति सुलतानपुर के रहने वाला बहुत सम्मानित धनी पुरुष गुरु जी के दर्शन करने के लिए गोईंदवाल आया। गुरु जी को माथा टेक कर उन के सामने बैठ गया और बार-बार प्रेम के साथ नमस्कार करने लगा। उस का प्रेम देख कर गुरु जी ने पूछा कि आप किस काम के लिए आए हो। आपका नगर कौन सा है? महेशा ने हाथ जोड़ कर कहा महाराज! मैं सुलतानपुर से आप जी की महिमा सुन कर आप जी का सिक्ख बनने के लिए आया हूँ। गुरु जी ने कहा यदि तुम सिक्ख बन जाओगे तो तेरा सारा धन चला जाएगा और तू कंगाल होकर बहुत पछताएगा। महेशा ने कहा- सच्चे पातशाह मैंने अपना तन, मन और धन सब कुछ आप जी ऊपर वार दिया है, अगर मेरा सब कुछ चला भी जाएगा तो मुझे कोई अफसोस नहीं होगा। मुझे केवल आप जी का प्रेम ही चाहिए। महेशा का दृढ़ निश्चय देख कर गुरु जी ने उस के माथे पर हाथ रख कर 'सत्यनाम' का उपदेश दे दिया। उपदेश लेकर महेशा बड़ा प्रसंन होकर घर को चला गया। घर जाकर उस का सारा धन आदि थोड़े समय में समाप्त हो गया। भले ही गरीब हो गया, मगर उस ने उस की कोई प्रवाह न की और अपने गुरु प्रेम के निश्चय पर दृढ़ रहा। कुछ समय के उपरान्त भाई महेशा जब फिर गुरु जी के पास दर्शन करने आया तो गुरु जी ने यह अनुभव करके कि इस ने कसौटी को पूरी तरह से सहन कर लिया है, और

www.9009.co.in

इस के निश्चय में कोई अन्तर नहीं पड़ा तो आप जी ने प्रसंन हो कर कहा-भाई महेशा ! आप का लोक-प्रलोक सफल हो गया है, तुझे धन की कोई कमी नहीं रहेगी, आप का घर भर जाएगा। यह वरदान ले कर महेशा अपने घर आ गया और थोड़े दिनों में ही धनाढ्य हो गया। सिक्ख मार्ग पर चल कर महेशा आप तर गया और उस ने अनेकों को भी तार दिया।

तेईए ज्वर की कथा

गोईदवाल एक माई का लड़का तेईए ज्वर के साथ मर गया। उस का रोना पीटना और कुरलाहट सुन कर गुरु जी ने उसके लड़के को जिन्दा कर दिया और तेईए ज्वर को पकड़ कर एक लोहे के पिंजरे में कैद कर दिया। पिंजरे में ही उसको चनों की एक नमकीन रोटी और प्याला पानी का पीने के लिए देते थे। तेईआ इस तरह बहुत दुखी हुआ। एक दिन भाई लालो डल्ले गाँव वाला जब गुरु जी के दर्शन करने आया, तो तेईए ने उस के आगे प्रार्थना की कि मुझे इस कैद से छुड़ाओ। जब भाई लालो ने गुरु जी के पास प्रार्थना की कि इस को छोड़ दो, तो गुरु जी ने कहा कि यह लोगों का खून पीता है और बहुत तंग करता है, इस लिए इस जालम को छोड़ने के लिए हम तैयार नहीं हैं। भाई लालो ने कहा, इस को मेरे साथ भेज दो, मैं इस को कोई ऐसा काम नहीं करने दूँगा। गुरु जी ने भाई लालो की प्रार्थना स्वीकार करके तेईए को उस के हवाले कर दिया। जब भाई लालो उस को ले कर अपने घर डल्ले गाँव को चला तो रास्ते में तेईए ने कहा, मुझे भूख लगी है थोड़ा समय मुझे छुट्टी दे दो। जब भाई लालो ने उस की प्रार्थना सुन कर उसे छोड़ दिया तो वह जल्दी ही एक धोबी को, जो नदी किनारे कपड़े धो रहा था, इसको जा कर चढ़ गया और

उसका खून पीने लगा। धोबी बेचारा बे-सुध होकर हाए-हाए करके धरती पर लेटने लगा। भाई लालो ने तेईए की यह करनी देख कर उसको कहा चल मैं तुझे गुरु जी के पास छोड़ आता हूँ, तुम बहुत जालिम हो, मुझे भी दुखी कर दोगो। तब तेईए ने कहा- मेरी इस भूल को क्षमा कर दो, आगे से मैं आप की आज्ञा में ही रहूँगा और यदि कोई आप का नाम लेकर मेरी यह कथा सुनाएगा, तो मैं उस को छोड़ जाऊँगा। उस दिन से तेईए ज्वर वाले को जो कोई यह कथा सुना कर मीठी रोटी बाँटता है तेईआ उस को छोड़ जाता है।

भाई जग्गा निहाल हुआ

एक दिन भाई जग्गा गुरु जी के दर्शन करने आया। वह गुरु के सिक्खों को देख कर बहुत खुश हुआ और प्रार्थना की सच्चे पातशाह जी ! मुझे एक दिन एक जोगी मिला था, मैंने उसको जब अपने कल्याण का साधन पूछा तो उस ने कहा कि पहले घर बाहर, स्त्री-पुत्र आदि जो सब बन्धन रूप हैं इन का त्याग करो फिर मुझ से उपदेश लेना। मगर उस के बताए हुए अनुसार मैं किसी वस्तु का भी त्याग नहीं कर सका। अब आप कृपा करके बताओ कि मुझे मुक्ति किस तरह मिल सकती है? उस की श्रद्धा और प्रेम को देख कर गुरु जी ने कहा यदि घर बाहर, स्त्री पुत्र छोड़ने से ही मुक्ति मिल सकती हो, तो फिर शाहरों और नगरों में आ कर साधु घर-घर क्यों मांगते फिरें ? गुरुमुख गृहस्थ में ही भक्ति स्मरण में अपना जीवन व्यतीत कर के मुक्ति पा लेता है। गृहस्थ धर्म सब से अच्छा है,कयोंकि आप कमा कर खाता है और साधु सन्तों को अन्न वस्त्र देता है। जो साधु माँग कर गृहस्थियों से खाता है, वह अपने जप-तप की कमाई में कमी डाल कर लेता है और अन्न वस्त्र आदि की सेवा करने वाला गृहस्थी उस की कमाई से हिस्सा ले लेता है। हे भाई जग्गा ! शरीर के साथ सन्तों की सेवा और मन से हरि की

भक्ति करो। इस तरह शीघ्र ही कल्याण प्राप्त हो जाएगा। गुरु जी इस उपदेश को ह्रदय में धारण करके भाई जग्गा गुरु जी की संगत की सेवा में लग कर सौभाग्यशाली हो गया।

भाई खानू , मईआ और गोबिंद

गुरु जी के पास उपस्थित हुए। इन्हों ने प्रार्थना की कि हमें भक्ति का उपदेश दो, जिस से हमारा कल्याण हो जाए। गुरु जी ने कहा- भाई भक्ति तीन प्रकार की है— नवधा, प्रेमा और परा। यथा—

१. नवधा भक्ति —

(उ) गुरु जी के वचनों को श्रद्धासहित सुन कर ह्रदय में बसाना। (उ) कथा कीर्तन के द्वारा परमात्मा के गुण गायन करना। (इ) सत्यनाम का स्मरण श्वास-श्वास करना। (स) परमात्मा तथा गुरु के चरणों का धयान रखना अथवा संतों के चरण धो कर चरणामृत लेना। (ह) पवित्र भोजन करना और गुरु निमित देना। (क) गुरु स्थान पर जा कर नमस्कार करनी और परिक्रमा करनी। धूप, दीप और फूल माला चढ़ाना। (ख) परमेश्वर को मालिक और आप को सेवक जानना। (ग) अपने मन को स्थिर रखना। प्रभु के हुक्म को अच्छा संयम कर मानना। (घ) पदार्थों की ममता छोड़ देनी और सब कुछ प्रभु का जानना। इस नवधा भक्ति का एक गुण धारण कर लेने से भी उद्धार हो जाता है। मगर यदि यह सभी गुण धारण कर ले तो निः संदेह कल्याण हो जाता है।

२. प्रेमा भक्ति—

जिस तरह वृक्ष का फल पहले हरा होता है, उस का स्वाद भी कड़वा होता है, फिर यह फल खट्टा हो जाता है फिर वृक्ष से रस लेकर रसीला हो जात है मीठा बन जाता है। इस तरह ही प्रेमा

www.9009.co.in

भक्ति वाले पुरुष का पहले रोने को जी करता है उसको अपने प्रभु प्रियतम के दर्शन की खीच पड़ती है। वह यह समझ कर कि मित्र से बिछड़ कर दुख पा रहा है और गद-गद हो जाता है। कभी परमेश्वर के गुण गाता है और कभी चुप धारण कर लेता है। इस हालत में ही इस के मुख का रंग सांवला हो जाता है, जैसे जैसे प्रेम बढ़ता जाता है तैसे-तैसे खाना थोड़ा होता जाता है, रात-दिन प्रेम में मस्त रहता है। मुँह का रंग पीला हो जाता है। जब सत्यसंग ज्यादा हो जाता है तो पूर्ण प्रभु को ही सब जगह देखता है। इस दशा में उसके मुख का रंग लाल हो जाता है, और शान्ति रूप मिठास उस में आ जाती है। मन ज्ञानमय हो जाता है।

३. परा भक्ति—

उच्च अवस्था में पहुँच कर परा भक्ति उत्पन्न हो जाती है, तो पुरुष सति चित् आनंद ब्रह्मम स्वरूप हो जाता है। यही कल्याण का स्वरूप है। इस प्रकार खानू , मईआ और गोबिंद तीनों ही आनंदावस्था भक्ति को प्राप्त हुए।

डल्ले गाँव के सिक्खों को उपदेश

एक बार गुरु जी को डल्ले गाँव के सिक्ख बड़े प्रेमसहित गाँव में ले गए। पृथी मल्ल आप जी के दर्शन करने के लिए आए और कहने लगे हमारी एक जाति है, हमें कोई उपदेश, जो कल्याण का साधन हो, दीजिए। गुरु जी ने कहा, जब शरीर मृत हो जाता है, तो आगे कोई जाति साथ नहीं जाती, जाति का अहंभाव सब झूठ है। जिस ने नाम-स्मरण किया हो, साधु-संगत की सेवा की हो, उस का ही आदर दरगाह में होता है। गुरु जी के यह वचन सुन कर दोनों ही चुप हो गए।

फिर एक भाई मल्ल गुरु जी के पास आया और उस ने कहा, महाराज ! मुझे कोई उपदेश दीजिए, जिस के साथ मेरे मन का क्लेष मिट जाए और मन को शान्ति मिले। गुरु जी ने कहा—अहंकार का त्याग करो और श्रद्धा के साथ संतों की अन्न-वस्त्र से सेवा और सत्यनाम का स्मरण करो। मन को शन्ति मिलेगी।

तद्उपरान्त एक उगरसैन, एक दीपा, रामू गौरी गुरु जी के पास आए और प्रार्थना की कि हमें कोई उपदेश दीजिए। गुरु जी ने कहा प्रातः काल उठ कर स्नान किया करो, गुरु की बाणी प्रेम और श्रद्धासहित पढ़ा और सुना करो। दिन में चार घड़ियों के लिए मन को परमात्मा के स्मरण में जोड़ा करो। इस प्रकार किया करोगे, तो लोक-प्रलोक में आपके साथ गुरु होगा। तुम्हारे सभी काम गुरु संवारेगा।

फिर और चार सिक्ख गोपी, रामु महिता, मोहन मल और अमरू गुरु जी के पास दर्शन करने आए। प्रार्थना की कि महाराज! हमें वह उपदेश दो जिस से हमारा उद्धार हो जाए। गुरु जी ने कहा— हउमैं बंधन रूप होकर सब को भ्रष्ट किये हुए है। जिस से परमेश्वर की याद भूल जाती है इस लिए इस को त्याग कर गुरु उपदेश में मन को जोड़ो। धीरे-धीरे अपने ध्यान को अपने आत्मा की और मोड़ो। किसी से ईर्ष्या द्वेष न करो। दया और सहनशीलता धारण करो। आपका उद्धार हो जाएगा।

उपरांत गंगू, सहारू और भारू ने गुरु जी से उपदेश लेने के लिए प्रार्थना की। गुरु जी ने कहा, अपनी नेक कमाई करो और बाँट कर खाओ। सब से मीठा बोलो किसी को कड़वा न बोलो। अतिथि को पहले भोजन खिला कर फिर आप खाओ। यह भोजन महाँ पवित्र होता है। सत्यनाम का स्मरण सदा ही मन में करते रहो। आपको परम पद की प्राप्ति होगी।

इन के बाद खान छुरा बेगा पासी नंद सूदना झंडा और पूरे आदि कुछ सिक्खों ने आप जी के दर्शन करके पूछा ! महाराज ! मुक्ति किस प्रकार मिल सकती है? गुरु जी ने वचन किया कि यह कलियुग का समय है। पहले जुगों में यज्ञादि करके देवताओं को प्रसन्न किया जाता था। अब सिक्खों को संतों महात्माओं को भोजन देने से यज्ञ के बराबर ही फल होगा। प्रेमा भक्ति का आश्रय लेकर वाहिगुरु नाम को हृदय में बसाओगे तो गृहस्थ के सुखों में बैठे रहना भी ऐसा ही होगा जिस प्रकार कि वन में तप करना होता है।

फिर मलिआरू और सवारू दो छीपों ने प्रार्थना की कि महाराज ! हमें उपदेश बखशो जिस से हमारा उद्धार हो जाए। गुरु जी ने कहा, सिक्खों की विशेष सेवा करो, उन को कपड़े सी कर प्रेम से पहनाओ। मैले होने पर धो कर साफ करो। गुरुसिक्खों और साधु-सन्तों के कपड़े साफ करने से आपका मन साफ़ हो जाएगा। बुराइयों की मैल निकल जाएगी। आपका गुरु से मेल हो जाएगा। सत्यसंगत करके श्रद्धा से सेवा और नाम का स्मरण हर रोज किया करो।

गुरु जी के पास एक पांधा बूला हाजिर हुआ और उनके दर्शन करके प्रार्थना की कि महाराज ! मुझे ब्राह्मण जान कर मुझ से कोई भी सेवा नहीं करवाता। मेरा कल्याण किस प्रकार होगा। मुझे उपाय बताओ। गुरु जी ने वचन किया, तुम गुरूवाणी का पाठ किया करो और प्रेम से कथा करके सत्यसंगत को सुनाया करो। गुरूवाणी लिख कर सिक्खों को दिया करो अगर कोई प्रेम से कुछ दे तो उस को संतोख से स्वीकार करके ले लो। अगर कोई कुछ भी न दे तो उस से कुछ भी न मांगा करो। तुम्हारी यही सेवा फलिभूत होकर तुझे ज्ञान का प्रकाश देगी।

एक दिन डल्ले सिक्ख निवासी सिक्खों को जब पता चला कि गुरु जी वापिस गोईंदवाल को जाने को तैयार हैं, तो वे सभी मिल कर गुरु जी के दर्शन करने आए। गुरु जी ने सब को सम्बोधित करके कहा—भाई ! आप गुरुपुर्व, अमावस्या, संक्रान्ति, दीपावली, वैशाखी और दुसहिरा आदि शुभ दिनों के समय जोड़ मेले करके कीर्तन किया करो और उत्साह से कढ़ाह प्रसाद करके गुरु निमित बाँट दिया करो। गरीब सिक्ख अगर नंगा हो तो उस को वस्त्र दिया करो भूखा हो, तो उसको रोटी दिया करो। अगर गरीब सिक्ख का कोई काम अटक जाए तो इक्ट्ठे होकर सहायता करके उस का काम संवार दिया करो। आपको देख कर आपके पुत्र, पौत्र भी इस शुभ रीति को धारण करके अपना आगामी जीवन सँवार लेंगे।

श्री जेठा जी ने गोईंदवाल आना

श्री गुरु रामदास जी, जिन का पहला नाम जेठा जी था, लाहौर से संगत के साथ गोईंदवाल श्री गुरु अमरदास जी के दर्शन करने आए। संगत चाहे दर्शन करके लाहौर चली गई मगर आप जी लंगर की सेवा बड़े प्रेम के साथ रात दिन एक करके करने लगे। जो कोई काम कहता, उसको शीघ्र ही गुरु जी की आज्ञा समझ कर बड़े प्रेम के साथ अच्छी तरह करते। इस तरह निष्काम सेवा में उन का कुछ समय व्यतीत हो गया।

बीबी भानी जी के साथ शादी

जब आप जी की निष्काम सेवा को मेवा लगने का समय आया, तब एक दिन बीबी भानी की माता जी ने गुरु जी को कहा, बीबी भानी युवति हो गई है, इस लिए कोई युवक अच्छा सा वर ढूँढना चाहिए। देवनेत उस समय श्री जेठा जी कार सेवा में मग्न वहाँ से

जा रहे थे। माता जी ने इन्हों की तरफ इशारा करके गुरु जी को कहा—लड़का इस लड़के के समान और ऐसा ही चाहिए। तब गुरु जी ने सेवादार को कहा कि इस लड़के को बुला कर लाओ। जब सेवादार श्री जेठा जी को बुला लाया तो गुरु जी ने इन की जाति-पाति और नाम-ठाम पूछ कर बीबी भानी की माता को कहा कि इस लड़के जैसा तो यही लड़का योग्य है। उपरान्त गुरु जी ने श्री जेठा जी के साथ बीबी भानी की सगाई कर दी, और फिर शुभ समय विचार कर शादी कर दी। शादी के उपरान्त भी श्री जेठा जी पहले की तरह ही गुरु जी की सेवा में लगे रहे।

बाउली का निर्माण करना

गुरु साहिब जी ने एक दिन भाई पारो को कहा कि संगत के स्नान आदि के लिए यहाँ हम एक बाउली बनानी चाहते हैं। इस लिए संगत की तरफ़ 'हुकमनामे' भेज दो कि इस आने वाली कार्तिक पूर्णिमा से पहले पहले यहाँ पहुँच जाएँ, पूर्णिमा वाले दिन बाउली की खुदवाई आरम्भ कर दी जाएगी। आज्ञा के अनुसार भाई पारो ने दूर-दूर की सब संगत को 'हुकमनामे' भेज दिए और नियत दिन पर संगत गोईंदवाल इकट्ठी हूई। सब ने यथा शक्ति भेंट करके गुरु जी की खुशियां प्राप्त कीं। पूर्णिमा वाले दिन श्री गुरु जी ने गुरु नानक साहिब और गुरु अंगद साहिब जी की आराधना करके भाई बुड्ढा साहिब जी से टक लगवा कर बाउली की कार सेवा आरम्भ कर दी। कुछ संगत मिट्टी खोद कर टोकरियाँ भर-भर कर, कुछ टोकरियाँ उठा-उठा कर नदी की तरफ फैंकते जाते।

काबल की एक पतिव्रता माई

बाउली की कार सेवा संगत बड़े प्रेम के साथ कर रही थी। सेवा में भाग लेने के लिए सिक्ख बड़े उत्साह के साथ दूर-दूर से आने लगे। इस तरह ही काबल में एक प्रेमी सिक्ख की पतिव्रता स्त्री को पता लगा, तो वह अपनी पतिव्रता शक्ति के बल पर काबल से रोज सुबह आ कर कार सेवा करती और सध्या समय फिर काबल पहुँच जाती। कुछ सिक्खों ने देखा कि यह माई सेवा करती हुई कभी-कभी हाथ के साथ संकेत कर देती है। जब कुछ दिन इस तरह ही व्यतीत हो गये तो एक दिन सिक्खों ने गुरु जी को कहा— महाराज ! एक माई रोज सुबह आ कर संगत के साथ मिल कर कार सेवा करती रहती है और रात के समय सभी के देखते-देखते ही लुप्त हो जाती है, एक और बात भी यह माई करती है कि कार सेवा करती-करती अपना हाथ फैला कर फिर पीछे कर लेती है और ऐसे लगता है कि जैसे यह किसी चीज़ को हिला रही है। हमें समझ नहीं आता कि यह माई कौन है ? सिक्खों की बात सुन कर गुरु जी ने माई को बुला कर पूछा कि तुम कहाँ से आती हो? और काम करती-करती हाथ से किस चीज़ को हिलाती हो! माई ने बताया कि महाराज ! मैं सुबह काबल से आती हूँ और कार-सेवा करके शाम को घर चली जाती हूँ। गुरु जी ने कहा— यह शक्ति तुम कहाँ से लाई हो। माई ने कहा महाराज— यह शक्ति मैंने अपने पतिव्रता धर्म से प्राप्त की है। इस के बल से ही मैं काबल से आती हूँ।। और वापिस चली जाती हूँ। सुबह आते समय मैं अपने छोटे बच्चे को पंघूड़े में सुला आती हूँ और फिर यहाँ हाथ मार कर पंघूड़े को हिलाती रहती हूँ जिस से यह सोया रहता है और खेलता ही रहता है। माई से यह सुन कर सिक्खों ने

माई को धन्य माना और गुरु जी ने खुश होकर पति-पत्नी का लोक-परलोक संवार दिया।

माणक चन्द जीवड़ा का प्रसंग

बाउली की खुदवाई जब पानी तक पहुँच गई तो आगे पत्थरों की कठोरता आ गई। इस कठोरता को माणक चन्द पथरीए क्षत्रि ने जब बहुत मेहनत से तोड़ दिया, तो कठोरता के टूटने से नीचे से एक दम ही पानी बहुत ज़ोर से ऊपर उठा जिस से माणक चन्द उस में डूब गया—सिक्ख उस मृत शरीर को पानी से निकाल कर गुरु जी के पास ले आए। सतिगुरु जी ने वचन किया कि अगर यह माणिक है तो मरे गा नहीं फिर आप जी ने अपना दाया पैर माणिक चन्द के माथे पर लगा कर कहा उठ माणिक सतिनाम कहा। इस वचन से माणिक चन्द इस तरह उठ कर बैठ गया जिस तरह कि वह सोया हुआ उठा हो। उस दिन से गुरु जी ने उस का नाम जीवड़ा रख दिया। वैरोवाल में इस वंश के जीऊड़ बावे प्रसिद्ध हैं।

बाउली स्नान का महातम

जब बाउली तैयार हो गई तो गुरु जी ने इस की चौरासी पौड़ियाँ गिन कर वचन किया कि जो नर-नारी इन चौरासी पौड़ियों पर बाउली में ८४ बार स्नान करके जपुजी साहिब के चौरासी पाठ करेगा, उसकी जन्म-मरण की चौरासी कट जाएगी जब सिक्खों ने गुरु जी के यह वचन सुने, तो बड़े उत्साह से बाउली में स्नान करके हर एक पउड़ी पर जपुजी साहिब के पाठ करके गुरु जी की खुशियाँ प्राप्त कीं। गुरु जी के इन वचनों की पालना करके सिक्ख नर-नारी आज तक बड़े प्रेम और श्रद्धासहित स्नान करके अपना जन्म मरण सफल करते हैं।

www.9009.co.in

वैसाखी का मेला करना

एक दिन भाई पारो ने प्रार्थना की कि महाराज ! दूर-दूर से संगत आप जी के दर्शन करने आगे पीछे होकर अलग-अलग समय पर आती-जाती हैं जिस कारण यह सारी संगत का एक दूसरे से मेल-मिलाप और जान-पहिचान नहीं होती। इस कारण संगत के इकट्ठ के लिए एक दिन नियत करके सब को आमन्त्रण भेजने चाहिएँ। इस से संगत एक दूसरे से प्रेम भावना और सिक्खी सम्बन्ध भी बढ़ेगा। गुरु जी ने कहा यह तेरा विचार ठीक है। सब संगत को पत्र लिख दो कि वैसाखी वाले दिन यहाँ आओ। उन की आज्ञा के अनुसार 'हुकमनामे' लिखे गए, जिन को पढ़ कर असंख्य दूर-दूर की संगत गोईंदवाल आ गई। अटूट लंगर बिना जाति-पाति के भ्रम के पंगतों में बैठा कर संगत को बंटने लगा। उनका आपिस में मेल-मिलाप करके संगत में बड़ा उत्साह और प्रेम प्यार बढ़ा उस समय से गोईंदवाल वैसाखी का मेला लगता आ रहा है।

गुरु जी का तीर्थ यात्रा को जाना

शान्ति के पुण्ज श्री गुरु अमरदास जी जिन के दर्शन ही तीर्थ हैं, उन्होंने तीर्थ यात्रा करने की इच्छा की। सिक्ख संगत को साथ लेकर आप जी चल पड़े और छोटी-छोटी मन्जिलें तह करके पहोए सरस्वती नदी के किनारे चले गए। यहाँ जब संगत ने इस तीर्थ का महात्म्य पूछा तो आप जी ने बताया कि यहाँ कुरक्षेत्र की धरती पर विश्वामित्र आदि बहुत ऋषियों ने अठतालीस कोसों में बैठ कर तप किए थे। जब बहुत ऋषियों की भीड़ के कारण उन के बैठने के लिए जगह न रही, तो उन्होंने सरस्वती नदी की अराधना करके कहा कि हे देवी ! हमें बैठने के लिए जगह दो। तब सरस्वती नदी दो कोस पीछे हट गई और ऋषियों को बैठ कर तप करने के लिए

जगह मिल गई। फिर आप जी ने एक मंकठ ऋषि की बात सुनाई कि उसने यहाँ पहोए से तीन कोस दूर सरस्वती नदी के किनारे बैठ कर बड़ा कठिन तप किया था। एक दिन किसी तरह उसकी अंगुली को चीर आ गया। उस से लहु की जगह हरे पत्ते के पानी की तरह पानी निकला। इस को देख कर मुनी खुशी से नाचने लगा। उस के साथ ही उस के तप के प्रभाव कारण सब लौभिक जीव नाचने लगे। तब देवताओं ने शिवा से प्रार्थना की कि मंकठ ऋषि को नाचने से हटाओ संसारी लोग बड़े दुखी हैं। देवताओं की प्रार्थना स्वीकार करके शिवजी ने अपना भेस बदल कर ऋषि को पूछा कि आप किस कारण नाच रहे हैं ? मंकठ ने कहा कि मैंने इतना कठिन तप किया है कि मेरे शरीर में लहू की जगह पानी रह गया है इस खुशी से मैं नाच रहा हूँ। तब शिव जी ने अपनी अंगुली चीर कर उस में से राख निकाल कर दिखाई और कहा कि देख मेरे शरीर में पानी भी नहीं रहा, शरीर राख हो गया है। मुझे फिर भी कोई खुशी नहीं हुई और तुम पानी देख कर ही नाचने लग गए हो। यह बात सुन कर वह ऋषि बैठ कर और तप करने लग गया और संसार के जीवों को शान्ति मिली।

यहाँ से चल कर गुरु जी ने थानेसर जा डेरा किया। यहाँ बैठ कर आप जी ने संगत को बताया कि कौरवों पाण्डवों के महाभारत युद्ध के समय श्री कृष्ण जी ने अर्जुन को कर्म योगी बनने का उपदेश दिया था। जिस के फलस्वरूप गीता बनी। यह स्थान जोतीसर तीर्थ के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ गुरु जी के सत्यसंग में सारे मतों के योगी संन्यासी और पण्डित वैरागी आदि बहतु आए। इन में पण्डितों और योगियों ने पूछा—महाराज ! गुरु नानक जी ने जो अपनी वाणी उच्चारण की है, उस का क्या कारण है ? जब कि वेदों पुराणों में पहले ही सब कुछ लिखा हुआ है। यह आपकी नई

रचना का क्या लाभ है? उस के उत्तर में गुरु जी ने यह शब्द उच्चारण किया—

गउड़ी बैरागणि महला ३ ।।

जैसी धरती ऊपर मेघुला बरसतु है किआ धरती मधे पाणी
नाही।। जैसे धरती मधे पाणी परगासिआ बिनु पगा वरसत
फिराही।। १।। बाबा तूं ऐसे भरमु चुकाही।। जो किछु
करतु है सोई कोई है रे तैसे जाइ समाही ।। १ ।। रहाउ।।

(स्री गुरू ग्रंथ साहिबः पृ० १३३)

भाव— जिस धरती पर बरसात पड़ती हो क्या उस धरती में आगे पानी नहीं है। जिस तरह धरती में पानी प्रगट है, (जो निरंतर ही सब को प्राप्त होता है) परन्तु फिर भी वर्षा का पानी उस पर बरसता रहता है। इस प्रकार हे भाई ! तुम अपना भ्रम मिटा दो। वेदों पुराणों के होते भी यह गुरु नानक जी की वाणी मंगलकारी और लाभदायक है। जो कुछ वेदों पुराणों की वाणी करती है, वही कुछ यह गुरु वाणी करने योग्य है और वैसे ही जैसे वर्षा का पानी धरती के पानी में ही समाता है यह वाणी भी उन वेदों पुराणों और 'धेइ'-परमात्मा में जा ही मिलती है।

अर्थात्— वेदों पुराणों की वाणी हर एक प्राणी की समझ में नहीं है, फिर इस के पढ़ने का अधिकार भी सब को एक बराबर नहीं है, परन्तु यह गुरुवाणी हर एक की समझ में आ जाती है और इस के पढ़ने सुनने का हर ऊँच-नीच को अधिकार भी है।

आप जी के यह वचन सुन कर सब के भ्रम निवृत्त हो गए और गुरु जी को नमस्कार करके उन्हों ने उन की श्लाघा की।

तीन दिन यहाँ विश्राम करके गुरु जी यहाँ से चल कर यमुना नदी के घाट पर जा ठहरे। जब यहाँ सिक्खों ने यमुना नदी का प्रसंग पूछा तो आप जी ने कथन किया—यह यमुना विश्वक्रमा की

www.9009.co.in

दोहत्री सूर्य की पुत्री और कृष्ण की स्त्री हुई है। इस कारण यह पवित्र मानी गई है। आप स्नान करो और सत्यनाम का जाप करो। जब गुरु जी यमुना पार करने लगे तो कर लेने वाले ने गुरु जी की बहुत ज्यादा महिमा सुनी तो उन्होंने किसी भी सिक्ख से कर न माँगा। उस दिन और भी सब लोग गुरु जी का नाम लेकर मुफ्त ही यमुना से पार हो गए। कर लेने वाले अपनी खाली तिजोरियाँ देख कर बहुत हैरान हुए कि आज हमारे साथ यह क्या अनहोनी बात हुई है। यमुना से पार गुरु जी के साथ बहुत संगत जुड़ गई और आप जी ने यहाँ से चल कर गंगा के किनारे एक खुली जगह कनखल जा डेरा किया। रोज कीर्तन सतसंग उपदेश और अटूट लंगर का प्रवाह जारी हो गया। आप की महिमा सुन कर हरिद्वार के आस-पास रहने वाले ऋषि-मुनी, संत-महात्मा पण्डित और श्रद्धालु दर्शन के लिए आते और अनेक प्रकार के प्रश्न-उत्तर करके प्रसन्नसापूर्वक गुरु जी की महिमा करते। इस तरह ही कुछ दिन सत्यनाम के उपदेश द्वारा असंख्य श्रद्धालूओं को आनंदमंगल करके आप जी वापिस गोईंदवाल आ गए। कनखल के स्थान पर आप की याद में एक गुरुद्वारा बना हुआ है। इस यात्रा का प्रसंग श्री गुरु रामदास जी ने एक शब्द में निरूपित किया है—

तुखारी महला ४ ।।

नावणु पुरबु अभीचु गुर सतिगुर दरसु भइआ ।।

... ...

हरि आपि करतै पुरबु कीआ सतिगुरू कुलखेति नावणि गइआ।।

... ...

मारगि पंथि चले गुर सतिगुर संगि सिखा ।। अनदिनु
भगति बणी खिनु खिनु निमख विखा।। ... ...
प्रथम आए कुलखेति गुर सतिगुर पुरबु होआ।। खबरि भई
संसारि आए त्रैलोआ।। ... ...

दुतीआ जमुन गए गुरि हरि हरि जपनु कीआ।। ४।। जागाती
मिले दे भेट गुर पिछै लंघाइि दीआ।। सभ छुटी सतिगुरू पिछै
जिनि हरि हरि नामु धिआइिआ।।

... ...

त्रितीआ आए सुरसरी तह कउतकु चलतु भइिआ।। सभ मोही
देखि दरसनु गुर संत किनै आढु न दामु लइिआ।। आढु दामु
किछु पइिआ न बोलक जागातीआ मोहण मुंदणि पई।। ...
मिलि आए नगर महाजना गुर सतिगुर ओट गही।। ... ...
कीरतन पुराण नित पुंन होवहि गुर बचनि नानकि हरि भगति
लही।। मिलि आए नगर महाजना गुर सतिगुर ओट गही।।
६।।४ ।।१०।।

(स्री गुरू ग्रंथ साहिबः पृ० ११६६-६७)

पद्‌म रेखा बताने वाले पण्डित को वरदान

हरिद्वार से बीसवीं तीर्थ यात्रा से वापिस के समय गुरु जी के पाँव में पदम रेखा देख कर जिस पण्डित दुर्गा प्रसाद ने कहा था कि आप जी के शीष पर छत्र झूलेगा, जब उस ने सुना कि आप जी गुरुगद्दी पर आसीन हुए हैं, तो शीघ्र ही अपना मुँह मांगा वरदान लेने के लिए गुरु जी के पास आया। उस ने गुरु जी को अपना वरदान पूरा करने के लिए प्रार्थना की। गुरु जी ने कहा हम अपना दिया हुआ वचन पूरा करेंगे। तुमने जो माँगना है माँग लो । पण्डित ने खुश होकर कहा, महाराज ! अगर मैं। संसारी सुख स्त्री, पुत्र और धन माँगूगा तो प्रलोक में जाकर नर्को के दुख भोगूँगा और अगद प्रलोक का सुख माँग लूँगा तो यहाँ संसार में गरीबी के दिन काट कर दुखी रहूँगा। इस लिए आप दोनों लोकों (लोक-प्रलोक) के सुख वरदान मुझे दो, आप समर्थ हैं। उस कर बुद्धिमता पर खुश होकर गुरु जी ने हँस कर वचन किया—अच्छा पण्डित जी ! आप को दोनों लोकों का सुख प्राप्त होगा। यहाँ हर प्रकार के

सांसारिक सुख भोगोगे और आगे प्रलोक में बैकुण्ठ धाम में तुम्हारा निवास होगा। इस प्रकार लोक-प्रलोक के सुखों का वर लेकर पण्डित खुशी-खुशी गुरु जी की महिमा का गायन करता हुआ घर को चला गया।

बाउली का शुभोद्घाटन करना और लोभी तपा

जब बाउली तैयार हो गई तो इसका शुभोद्घाटन करने के लिए सब संतों-महंतों, बाह्मणों और गृहस्थियों को भोजन खिलाने के लिए आमंत्ररण दिए गए। सब ने गुरु जी से आमन्त्रण स्वीकार कर लिए परन्तु एक गुरु घर के ईर्ष्यालु मरवाहे क्षत्रियों के पुरोहित एक तपे ने तीन बार कहने पर भी आमंत्रण न स्वीकार किया। उस का पाखण्ड प्रगट करने के लिए गुरु जी ने भोजन खाने वालों को एक-एक मोहर दक्षिणा देने की आज्ञा कर दी। मोहर के लालच से तपे ने अपने पुत्र को चोरी दीवार फंदवा कर लंगर की पंक्ति में बैठा दिया। इस का यह कृत देख कर गाँव के लोग हँसने लगे कि लोभ में आकर तपे ने सह बुरा काम किया है। इस वार्ता प्रथाए गुरु रामदास जी ने गुरुगद्दी पर बैठ कर यह शब्द उच्चारण किया—

> तपा न होवै अंद्रहु लोभी नित माइआ नो फिरै जजमालिआ।। अगो दे सदिआ तै दी भिखिआ लए नाही पिछो दे पछुताइकै आणि तपै पुतु विचि बहालिआ।। पंच लोक सभि हसण लगे तपा लोभि लहरि है गालिआ।। जिथै थोडा धनु वेखै तिथै तपा भिटै नाही धनि बहुतै डिठै तपै धरमु हारिआ।। भाई ऐह तपा न होवी बगुला है बहि साध जना वीचारिआ।। सत पुरख की तपा निंदा करै संसारै की उसतती विचि होवै एतु दोखे तपा दयि मारिआ।। महा पुरखां की निंदा का वेखु जि तपे नो फलु लगा सभु गइिआ तपे का घालिआ।। बाहरि बहै पंचा विचि

तपा सदाए।। अंदरि बहै तपा पाप कमाए।। हरि अंदरला
पापु पंचा नो उघा करि वेखालिआ।। धरम राइ जम
कंकरा नो आखि छडिआ एसु तपे नो तिथै खड़ि पाइअहु
जिथै महा महां हतिआरिआ।। फिरि एसु तपे दै मुहि कोई
लगहु नाही एहु सतिगुरि है फिटकारिआ।। हरि कै दरि
वरतिआ सु नानक आखि सुणाइआ।। सो बूझै जु दयि
सवारिआ।। १।। (स्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ० ३१५-१६)

मथो मुरारी

एक कोहड़ी प्रेमा क्षत्रि जिस का कोई देखभाल करने वाला नहीं था। वह गुरु जी की महिमा सुन कर गोईंदवाल आ गया और गुरु जी के निवास स्थान से कुछ दूर बैठ कर 'मैं गया कछोटा लभा' जी 'मैं गया कछोटा लभा' की रट लगाने लगा। जब इस को इस तरह ही कुछ दिन बीत गए तो कुछ सिक्खों ने गुरु जी को इस की बात सुनाई और पूछा महाराज ! वह क्या कहता रहता है—'मैं गया कछोटा लभा' जी 'मैं गया कछोटा लभा' गुरु जी ने कहा जो कुछ वह कहता है, उस का भाव यह है कि मेरा शरीर रूपी कपड़ा जो कुष्ट रोग से चला गया था। वह अब फिर मुझे मिल गया है। इस बात पर उस की पूर्ण श्रद्धा अनुभव करके गुरु जी ने सिक्खों को आज्ञा दी कि इस कुष्ट व्यक्ति को हमारे स्नान किए हुए पानी के गड्डे में स्नान करवा कर नए मजीठ रंग के कपड़े में लपेट कर हमारे पास ले आओ। जब इस तरह गुरु जी की आज्ञा के अनुसार प्रेम को सिक्ख तैयार करके गुरु जी के पास ले आए तो गुरु जी ने उसका मुँह कपड़े से बाहर निकाल कर उस पर कृपा दृष्टि से देख कर उस को अरोग कर दिया। उसका शरीर स्वस्थ हो गया गुरु जी ने उस का नाम मुरारी रख दिया। फिर गुरु जी ने एक दिन जब अपने सिक्खों को कहा कि जो कोई

www.9009.co.in

सिक्ख इस को अपनी वर योग्य कन्या विवाह देगा उस पर हमारी बहुत प्रसन्नता होगी। तब गुरु जी की खुशी लेने के लिए शीहै उपल क्षत्रि ने अपनी मथो नामक पुत्री का इस से विवाह कर दिया। जब शीहै की स्त्री ने इस बात का विरोध किया तो गुरु जी ने वचन किया कि तेरी लड़की का नाम मथा है और इस पुरुष का नाम हमने मुरारी रखा है। जो पुरुष मथो मुरारी का नाम लेगा उस के सब काम सिद्ध हो जाया करेंगे। इस वरदान से मथो की माता प्रसन्न हो गई। मथो मुरारी को गुरु जी ने सत्यनाम स्मरण का उपदेश देकर उसका लोक प्रलोक संवार दिया।

गोंदे के पुत्र की ईर्ष्या

जितनी देर गोंदा आप जीवित रहा तब तक उस के पुत्र चुप रहे, परन्तु गोंदे की मृत्यु के पश्चात् उस के पुत्र ने गुरु जी को कहा कि हमें गाँव की सरदारी के निमित्त अपने चढ़ावे में से कुछ हिस्सा दिया करो गुरु जी ने कहा कि तुम लंगर में से भोजन खा लिया करो, परन्तु गोंदे का पुत्र इस बात में अपना निरादर समझ कर गुस्से से उठ कर चला गया। घर जाकर उस ने उस समय के रिवाज़ के अनुसार मैल के साथ अपना काला हो गया नीला गोदड़ा अपने नौकर को पहना दिया और उस को साथ लेकर बादशाह के पास विनय के लिए दिल्ली चला गया। जब उसने बादशाह की कचैहरी में जा कर विनय की कि गुरु जी मेरे गांव में रहते हैं। उन को लोग बहुत धन भेंट करते हैं परन्तु मुझे वह गाँव की सरदारी का कुछ किराया नहीं देते। बादशाह सलामत! मेरा न्याय किया जाए। उस की प्रार्थना सुन कर अकबर बादशाह ने जब अपने अहिलकारों से पूछा तो उसको पता चला कि यह नगर जो कभी आबाद नहीं था, इस के बाप गोंदे ने गुरु जी को वहाँ

बसाया और उन की ही कृपा से यह नगर बसा है। गोंदे ने जब तक वह जीवित रहा गुरु जी से कभी कुछ नहीं माँगा था। अब गुरु जी से कुछ लेने का इस का तो कोई भी हक नहीं है। जब यह बात बादशाह ने सुनी तो उस ने गोंदे के पुत्र को धक्के मार कर कचैहरी से बाहर निकाल दिया। धक्के खा कर गोंदे का पुत्र घर आकर कचैहरी लज्जापूर्वक अंदर पड़कर ही मर गया। श्री गुरु रामदास जी ने इस वार्ता को गुरुगद्दी पर बैठ कर इस शब्द के द्वारा उल्लिखित किया है—

शलोक म० ४।।

मलू जूई भरिआ नीला काला खिधोलडा तिनि वेमुखि वोमुखै नो पाइआ।। पासि न देई कोई बहणि जगत महि गूह पड़ि सगवी मलू लाइ मनमुखु आइिआ।। पराई जो निदा चुगली नो वेमुख करिकै भेजिआ ओथै भी मुहु काला दुहा वेमुखा दा कराइिआ।। तड़ सुनिआ सभत जगत विचि भाई वेमुख सणै नफरै पउली पउदी फावा होइि कै उठि घरि आइिआ।। अगै संगती कुड़मी वेमुख रलणा न मिलै ता वहुटी भतीजी फिरि आणि घरि पाइिआ।। हलतु पलतु दोवै गए नित भुखा कूके तिहाइिआ।। धनु धनु सुआमी करता पुरखु है जिनि निआउ सचु बहि आपि कराइिआ।। जो निंदा करै सतिगुर पुरे की सो साचै मारि पचाइिआ।। ऐहु अखरू तिनि आखिआ जिनि जगतु उपाइिआ।। १।। (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ० ३०६)

एक माई का पुत्र जीवित किया

गोईंदवाल में एक विधवा माई का पुत्र ज्वर से मर गया वह रात के समय ऊँची-ऊँची रोने पीटने लगी। उसका विरलाप सुन कर गुरु जी ने माई के घर जाकर जब अपने चरण बच्चे के माथे

www.9009.co.in

पर धरे, तो बच्चा उठ कर बैठ गया। गुरु जी ने अपने सेवक बलू को कहा कि मरे हुए को जिन्दा करना ईश्वर के हुक्म के विरुद्ध है। इस कारण आगे से जब तक हमारा शरीर रहेगा तब तक कोई बच्चा माता-पिता के सामने नहीं मरेगा। यह वचन करके गुरु जी अपने आसन पर आ सुशोभित हुए।

अकबर बादशाह ने लंगर के लिए झबाल प्रगणा देना

अकबर बादशाह ने दिल्ली से लाहौर को जाते हुए जब व्यास नदी के गोईंदवाल के पतन पर डेरा किया तो गुरु जी की महिमा सुन कर गुरु जी के दर्शन करने के लिए आप जी के डेरे गया। गुरु जी के दर्शन करके बड़ा प्रसन्न हुआ और लंगर के लिए झबाल प्रगणे के कुछ गाँव जागीर में लिख कर पटा दे गया जो आज कल बीड बाबा बुड्ढा जी के नाम से प्रसिद्ध है। इस पटे की पाँच सौ विघा ज़मीन की आमदनी बाबा बुड्ढा जी गुरु के लंगर में भेज देते थे।

लंगड़े की टाँग ठीक करनी

गोईंदवाल से तीन कोस गाँव तलवंडी के रहने वाला एक लंगड़ा क्षत्रि सिक्ख गुरु जी के भोजन के लिए बड़ी श्रद्धा के साथ रोज़ ही दही लाता था। एक दिन गाँव के चौधरी ने रास्ते में उसकी लकड़ी की वैसाखी छीन ली और हँसी के साथ कहा कि जिस गुरु जी लिए रोज़ ही इतना दुखी होकर दही ले जाता है वह तेरी टाँग को ठीक क्यों नहीं कर देता। उस ने कहा गुरु जी बेप्रवाह हैं, अगर चाहें तो एक क्षण में सब कुछ कर देते हैं अगर न चाहें तो फिर कुछ भी नहीं करते। उन की अपनी इच्छा है कि मेरी टाँग को ठीक कर दें या न ! मैंने आप उन को कुछ नहीं कहना। यह बात करके उस चौधरी से लकड़ी ले कर जल्दी-जल्दी चल

www.9009.co.in

कर गुरु जी के पास जिस समय पहुँचा तो आगे आप जी भोजन का थाल रख कर उस प्रेमी की प्रतीक्षा में बैठे हुए थे। इतने को वह दही लेकर पहुँच गया। और दही ले कर गुरु जी ने भोजन खाया। भोजन खा कर गुरु जी ने उस को पूछा, आज आप इतनी देरी से क्यों आए हो? तब उस ने बताया कि चौधरी ने मेरे साथ हँसी करके मेरी लकड़ी की बैसाखी छीन ली थी और कहा था कि अगर तेरा गुरु समर्थ है, तो वह तेरी टाँग को क्यों नहीं ठीक कर देता? उसकी बात सुन कर गुरु जी ने कहा, तू शाह हुसैन के पास चला जा और उसको कहना कि गुरु जी ने मुझे आपके पास मेरी टाँग ठीक करने के लिए भेजा है। उसने गुरु जी का वचन मान कर व्यास नदी के किनारे शाह हुसैन के पास जा कर उसको बताया कि मुझे आप के पास गुरु जी ने इस लिए भेजा है कि आप मेरी लंगड़ी टाँग को ठीक कर दें तो शाह हुसैन एक मोटा डंडा मारने के लिए उठा लाया और झिड़क कर कहा कि दौड़ जा नहीं तो दूसरी टाँग को भी लंगड़ा कर दूंगा। जब सिक्ख डंडे की मार से डरता हुआ जल्दी से उठ कर दौड़ने लगा तो उसकी टाँग बिल्कुल ठीक हो गई। तब वह पीछे मुड़ कर शाह हुसैन के चरणों पर गिर पड़ा और धन्य करने लगा। शाह हुसैन ने कहा कि करने वाले तो गुरु जी आप ही हैं मगर बदनामी मुझे देते हैं। मेरी तरफ से गुरु जी को नमस्कार करनी।

श्री गुरु अमरदास जी ने ज्योति-ज्योत समाना

अपने अंतिम समय को अनुभव करके श्री गुरु अमरदास जी ने गुरु गद्दी का तिलक श्री (गुरु) रामदास जी को दे कर सब संगत को आप जी ने उन के चरणी लगाया और उपरान्त अपने सब

परिवार और सिक्खों को हुक्म मानने का उपदेश दिया जो बाबा सुन्दर जी बाबा नंद जी के पौत्र ने इस प्रकार वर्णन करके श्री गुरु अर्जन देव जी को सुनाया—

रामकली सदु

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

जगि दाता सोइि भगति वछलु तिहु लोइि जीउ।। गुर सबदि समावए अवरु न जाणै कोइि जीउ।। अवरो न जाणहि सबदि गुर के एकु नामु धिआवहे।। परसादि नानक गुरू अंगद परम पदवी पावहे।। आइिआ हकारा चलणवारा हरि राम नामि समाइिआ।। जगि अमरु अटलु अतोलु ठाकरु भगति ते हरि पाइिआ।। १।। हरि भाणा गुर भाइिआ गुरु जावै हरि प्रभ पासि जीउ।। सतिगुरु करे हरि पहि बेनती मेरी पैज रखहु अरदासि जीउ।। पैज राखहु हरि जनह केरी हरि देहु नामु निरंजनो।। अंति चलदिआ होइि बेली जमदूत कालु निखंजनों।। सतिगुर की बेनती पाई हरि प्रभि सुनी अरदासि जीउ।। हरि धारि किरपा सतिगुरु मिलाइिआ धनु धनु कहै साबासि जीउ।। २।। मेरे सिक्ख सुणहु पुत भाईहो मेरै हरि भाणा आउ मै पासि जीउ।। हरि भाणा गुरु भाइिआ मेरा हरि प्रभु करे साबासि जीउ।। भगतु सतिगुरु पुरखु सोई जिसु हरि प्रभ भाणा भावए।। आनंद अनहद वजहि वाजे हरि आपि गलि मेलावए।। तुसी पुत भाई परवारु मेरा मनि वेखहु करि निरजासि जीउ।। धुरि लिखिआ परवाणा फिरै नाही गुरु जाइि हरि प्रभ पासि जीउ।। ३।। सतिगुरि भाणै आपणै बहि परवारु सदाइिआ।। मत मै पिछै कोई रोवसी सो मै मुलि न भाइिआ।। मितु पैझे मितु बिगसै जिसु मित की पैज भावए।। तुसी वीचारि देखहु पुत भाई हरि सतिगुरु पैनावए।। सतिगुरु परतखि होदै बहि राजु आपि

टिकाइआ।। सभि सिक्ख बंधत पुत भाई रामदास पैरी पाइआ।। ४।। अंते सतिगुरु बोलिआ मै पिछै कीरतनु करिअहु निरबाणु जीउ।। केसो गोपाल पंडित सदिअहु हरि हरि कथा पड़हि पुराणु जीउ।। हरि कथा पड़ीऐ हरिनामु सुणीऐ बैबाणु हरि रंगु गुर भावए।। पिंडु पतलि किरिआ दीवा फुल हरि सरि पावए।। हरि भइआ सतिगुरु बोलिआ हरि मिलिआ पुरखु सुजाणु जीउ।। रामदास सोढी तिलकु दीआ गुर सबदु सचु नीसाणु जीउ।। ५।। सतिगुरु पुरखु जि बोलिआ गुरसिखा मंनि लई रजाइ जीउ।। मोहरी पुतु सनमुखु होइआ रामदासै पैरी पाइ जीउ।। सभ पवै पैरी सतिगुरू केरी जिथै गुरू आपु रखिआ।। कोई करि बखीली निवै नाही फिरि सतिगुरु आणि निवाइआ।। हरि गुरहि भाणा दीई वडिआई धुरि लिखिआ लेखु रजाइ जीउ।। कहै सुन्दरु सुणहु संतहु सभु जगतु पैरी पाइ जीउ।। ६।। १।।

(स्री गुरू ग्रंथ साहिब, पृ० ९२३-२४)

इस प्रकार सब को धैर्य और हुक्म मानने के वचन करके गुरु जी ने भाद्रव सुदी पूर्णिमा संवत् १६३१ को अपने प्रलोक गमन की तैयारी कर ली। संगत को शब्द कीर्तन और वाहिगुरु का स्मरण करने के लिए आज्ञा करके गुरु जी आप कुश के आसन पर सफेद चादर तान कर लेट गए और शरीर त्याग कर अकाल पुरुष के चरणों में जा पहुँचे।

आप २२ साल पाँच महीने और ग्यारह दिन गुरु गद्दी पर आसीन रहे और ६५ साल ३ महीने और तेईस दिन इस जगत् में शरीर करके सुशोभित रहे।

❖❖❖

www.9009.co.in

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

श्री गुरु रामदास जी

चौथी पातिशाही

श्री (गुरु) रामदास जी जिन का पहला प्यार का नाम जेठा जी था। श्री हरिदास मल जी सोढी क्षत्रि के घर माता दया कौर जी की पवित्र कोख से कार्तिक वदी २ (२३असूज) संवत् १५६१ को बाज़ार चूना मण्डी लाहौर में पैदा हुए।

पहली अवस्था

बाल्य अवस्था में ही माता दया कौर जी का देहान्त हो गया और जब आप सात साल के हो गए तो आपके पिता श्री हरिदास जी भी प्रलोक सिधार गए। आप को अनाथ अवस्था में ही आप की नानी अपने पास बासरके गाँव में ले गई। बासरके आप के ननिहाल थे। यहाँ आ कर आप को नानी ने अन्य क्षत्रि बालकों की तरह व्यस्त करने के लिए 'घुंगणियाँ' (उबले हुए चने) बेचने के लिए छाबड़ी लगा दी।

श्री जेठा (रामदास) जी ने गोईंदवाल जाना

श्री गुरु अमरदास जी गाँव बासरके के निवासी थे जो श्री गुरु अंगद साहिब जी से गुरु सेवा प्राप्त करके गोंदे मरवाहे की प्रार्थना के अनुसार उसका नगर गोईंदवाल बसाने के लिए गोईंदवाल ही आ बसे थे। श्री जेठा जी (गुरु रामदास) अपनी नानी के पास बासरके रहते थे और गुरु अमरदास जी इन्हें और इनकी बूढ़ी

बासरके रहते थे और गुरु अमरदास जी इन्हें और इनकी बूढ़ी नानी को बड़ी अच्छी तरह जानते थे। जब श्री गुरु अगंद साहिब जी की आज्ञा के अनुसार आप अपने परिवार और सम्बन्धियों को अपने पास गोईंदवाल ही ले आए तो श्री जेठा जी भी अपनी नानी के साथ ही गुरु अमरदास जी की प्रेरणा से गोईंदवाल आ गए। गोईंदवाल आ कर श्री जेठा जी घुंगणियों की छाबड़ी लगाते और तद्उपरान्त अपने काम से मुक्त होकर गुरु के लंगर आदि की सेवा में अपना जीवन व्यतीत करते थे।

श्री रामदास जी की शादी

जब श्री गुरु अमरदास जी चेत्र सुदी ४ संवत् १६०८ में गुरु गद्दी पर आसीन हो गए, तो आप श्री जेठा का और भी ज्यादा ध्यान रखने लगे। अंतः आप जी की सहनशीलता और आज्ञाकारी तथा नम्रता को ध्यान में रख कर गुरु जी ने अपनी छोटी बीबी भानी की शादी २२ फाल्गुन संवत् १६१० को आप जी के साथ कर दी। श्री (गुरु) रामदास जी के घर तीन पुत्र पैदा हुए—

१. श्री बाबा प्रिथी चन्द जी संवत् १६१४ में।
२. श्री बाबा महां देव जी संवत् १६१७ में।
३. श्री (गुरु) अर्जन देव जी वैशाख १६२० मे।

श्री (गुरु) रामदास जी ने सेवा करनी

विवाह के उपरान्त भी श्री (गुरु) रामदास जी अपना अतिथियों वाला सम्मान छोड़ कर पहले की तरह ही गुरु घर के लंगर और संगत की सेवा में लगे रहे।

लाहौर के क्षत्रि सोढियों का क्रोद्ध

श्री गुरु अमरदास जी ने संवत् १६१६ में बाउली का निर्माण आरंभ किया। इसकी कार सेवा में बहुत सिक्ख सेवक और राज़

www.9009.co.in

मज़दूर काम पर लग गए। इन्हीं के साथ श्री (गुरु) रामदास जी भी टोकरी उठा कर मिट्टी ढोते रहते। इन दिनों हरिद्वार कुम्भ के मेले पर जाती हुई लाहौर की संगत गोईंदवाल के पत्तन पर आकर ठहरी। इस संगत में श्री जेठा जी की जात बरादरी के सोढी क्षत्रि भी थे। उन्हों ने जब श्री जेठा जी को टोकरी उठाते देखा तो वह बड़े क्रोद्ध से गुरु जी के पास गए और कुछ कुड़माचारी का अहंकार और कुछ जेठा जी की बुरी हालत को देख कर गुस्से में भरे हुए बिना किसी सतिकार के गुरु जी को आप ने कहा—आप यह अच्छा काम नहीं कर रहे। जवाई से मज़दूरों वाला काम कराते हो, ऊँची कुल का बालक अथवा बरादरी के बौहड़ वाला है। आप ने इसे इस निकृष्ट काम पर लाया हुआ है। हमें शरीक क्या कहेंगे? इस प्रकार इन की बातें सुन कर श्री जेठा जी ने हाथ जोड़ कर गुरु जी को कहा, महाराज ! यह आप जी की महिमा से अनभिज्ञ नहीं है। इस कारण बिना सोचे समझे ही बढ़-चढ़ कर बोल रहे हैं। इस कारण इन के वचनों का बुरा न मानें, इन पर कृपा दृष्टि ही रखनी । श्री जेठा जी की यह प्रार्थना सुन कर गुरु जी ने अनुभव किया कि जेठा जी के मन में हमारे प्रति कितना प्रेम और श्रद्धा है। लोकाचारी लोकराज की इन को कोई परवाह नहीं है। यह हमारी प्रेमा भक्ति के रंग में रंगे हुए नम्रता पुरुष हैं।

फिर गुरु जी ने लाहौर निवासी मुखियों को कहा कि श्री जेठा जी के सिर पर मिट्टी की टोकरी नहीं है, जगत् का छत्र है। यह आप की कुल को उजागर करने वाला होगा। गुरु जी के ऐसे वचन श्री जेठा जी के सम्मान में सुन कर आप के शरीक चुप कर गए और लंगर छक कर हरिद्वार को चले गए।

क्षत्रि ब्राह्मणों की अकबर के पास शिकायत

श्री गुरु अमरदास जी ने जब बाउली के शुभोद्घाटन के समय जातीय भेद मिटा कर चहुंवर्ण क्षत्रि, ब्राह्मण, शूद्र और वैश को एक पंक्ति में बैठा कर भोजन बाँटा तो इस बात की चर्चा घर-घर और गाँव-गाँव में होने लगी कि गुरु जी ने पुरातन मर्यादा तोड़ कर शंकर वर्ण का मार्ग अपना लिया है। इन को अगर अब ही इस निषेध धर्म से न रोका गया तो क्षत्रि धर्म मिट जाएगा और ब्राह्मणों को मानने वाला कोई नहीं रहेगा। पितृ और देव पूजा भी छूट जाएगी, इस तरह इन्हों ने परामर्श करके बातशाह अकबर के पास फर्याद करने के लिए अपने कुछ मुखियों को लाहौर भेजा। अकबर उन दिनों दिल्ली से लाहौर आया हुआ था। इन्हों ने बातशाह के दरबार में हाजिर होकर उसको अपनी सभी बातें बता कर प्रार्थना की कि गुरु जी को शीघ्र ही शाही हुक्म भेज कर इन अमर्यादित कारवाइयों से रोका जाए। अतः गुरु जी की इन बातों का निर्णय करने के लिए अकबर ने गुरु जी को लाहौर बुला भेजा।

श्री रामदास जी ने लाहौर जाना

अकबर बादशाह का बुलावा पत्र (प्रवाना) पढ़ कर गुरु अमरदास जी ने बाबा बुड्ढा जी आदि बुद्धिमान सिक्खों के साथ सलाह आदि करके श्री रामदास जी को लाहौर जाने के लिए कहा। जब श्री रामदास जी ने कहा कि महाराज ! मैंने कोई शास्त्र आदि ग्रन्थ नहीं पढ़ा। शिकायत कर्त्ताओं के प्रश्नों का उत्तर किस तरह दूँगा? गुरु जी ने कहा जब कोई प्रश्न करे, तो उसका उत्तर देने के लिए हमारा ध्यान करके अपने दाएँ बाजू की तरफ देखना, तुझे सब वेद शास्त्रों का ज्ञान हो जाएगा और प्रश्नों का उत्तर देने में कोई कठिनाई पेश नहीं आएगी।

गुरु जी का हुक्म मान कर श्री रामदास जी लाहौर चले गए और दूसरे दिन ही कचैहरी में पहुँच गए। बादशाह ने प्रश्न कर्त्ताओं को जब बुला कर कहा, तुम्हें गुरु जी के विरुद्ध कोई शिकायत है तो उन्हों ने अपनी सारी बात ऊँच-नीच और साझी संगत-पंगत की गायित्री आदि मन्त्र का त्याग बताकर हिंदू धर्म को एक बहुत भारी खतरा बताया। जब श्री रामदास जी ने उन के हर प्रश्न का उत्तर दे कर बादशाह की तसल्ली करा दी तो फिर शिकायत कर्त्ताओं ने कहा अगर यह ठीक कहते हैं तो गायित्री मन्त्र पढ़ कर मुझे बताएँ। अगर इन को गायित्री मंत्र भी याद नहीं है, तो फिर यह अपने क्षत्रि धर्म में पक्के किस तरह हो सकते हैं। तब श्री (गुरु) रामदास जी ने गायित्री का पाठ और उस के अर्थ करके बड़ी सुन्दर धुन और मीठी रसना के साथ सुनाए। जिस को सुन कर शिकायत कर्त्ता चुप के चुप रह गए। आप बादशाह को नमस्कार करके कचैहरी से निकल गए। उपरान्त बादशाह ने श्री (गुरु) रामदास जी को सिरोपाउ दे कर बड़े आदर के साथ विदा किया और कहा कि मैं यहाँ से वापिस दिल्ली को जाता हुआ गोईंदवाल ठहर कर गुरु जी के दर्शन करूँगा।

बीबी भानी जी की सेवा और वरदान

बीबी भानी जी अपने गुरु साहिब जी की बहुत सेवा करती थी। प्रतिदिन प्रातः काल उठ कर गर्म पानी के साथ गुरु पिता जी को स्नान कराती थी और फिर गुरवाणी का पाठ करके गुरु के लंगर की सेवा करती रहती थी। एक दिन बीबी जी ने यह देखा कि जिस चौकी पर गुरु जी स्नान कर रहे हैं उसका एक पावा टूट गया है। उस पावे के नीचे बीबी जी ने अपना एक हाथ दे दिया कि चौकी के एक तरफ गिरने से गुरु जी के बृद्ध शरीर को चोट न लग जाए। पावे के नीचे हाथ देने से बीबी जी के हाथ में पावे का कील

लग गया और खून बहने लगा। जब गुरु जी स्नान करके उठे तो आप जी ने देखा कि बीबी जी के हाथ से खून बह रहा है, तब आप जी ने बीबी जी को इस का कारण पूछा तो बीबी जी ने सारी बात बता दी। बीबी जी से सारी बात सुन कर गुरु जी ने प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया और कहा कि संसार में आपका वंश बहुत बढ़ेगा, जिस की सारा संसार पूजा करेगा।

इस वर प्रथाए भाई संन्तोख सिंह जी लिखते हैं—

चौपई ।।

सोढि बंस कहु बड बडिआई ।। तै करि भगति भले अब पाई ।। ४२ ।।
तीनो काल बिखै तुझ जैसी ।। होई, न है, होवेगी न ऐसी ।।
पिता गुरु, जग गुरु होइ कंता ।। पुत्र गुरु होइ पोत्र महंता ।।
किआ अब कहैं तोर बडिआई ।। जिस के सम को हवै न सकाई ।।
अति प्रसन्न श्री अमर क्रिपाल ।। इति आदिक बर दीए बिसाल ।। ४ ।।

(रास १ अंसू ६५)

गुरुगद्दी के लिए परीक्षा

श्री गुरु अमरदास जी की दो सुपुत्रियाँ थीं। बड़ी बीबी दानी और छोटी बीबी भानी। बीबी दानी श्री रामा जी से और बीबी भानी जी श्री जेठा (रामदास) जी से विवाहित हुई। बाउली की कार सेवा में दोनों ही संगत के साथ मिलकर बढ़-चढ़ कर सेवा करते थे। जिस के लिए गुरु साहिब जी दोनों पर ही बड़े खुश थे। इस कारण दोनों में से एक को गुरुगद्दी के योग्य निर्णीत करने के लिए गुरु जी ने एक बड़ी साधारण सी परीक्षा सोची। एक दिन सन्धया समय गुरु जी ने बाउली के पास खड़े होकर रामा को कहा कि तुम एक तरफ एक चबूतरा बनाओ जिस पर बैठ कर हम बाउली की कार सेवा देखते रहें फिर बाउली के दूसरी ओर जाकर इसी प्रकार ही श्री जेठा (रामदास) जी को एक चबूतरा तैयार करने के

www.9009.co.in

लिए आज्ञा दी। दूसरे दिन दोनों श्री रामा और जेठा जी अपनी-अपनी ईंटों-गारे से चबूतरे बनाने लग गए। सारा दिन काम करते जब दोनों ने चबूतरे तैयार करा लिए तो सन्ध्या के समय आकर गुरु जी ने पहले रामे का चबूतरा देख कर कहा कि यह ठीक नहीं बना। रामे ने कहा-महाराज! मैं आपके बताए अनुसार यह ठीक ही बनाया है। परन्तु गुरु जी ने उस को चबूतरा बनाने के लिए आज्ञा दी। फिर गुरु जी ने दूसरी ओर श्री रामदास जी का चबूतरा देखकर कहा, तुम हमारी बात नहीं समझे।

इस को तोड़ कर फिर बनाओ। गुरु जी की आज्ञा सुनकर श्री रामदास जी ने अपना चबूतरा चुप चाप उसी समय ही तोड़ दिया और हाथ जोड़ कर कहा—महाराज ! मैं थोड़ी बुद्धि करके आप की बात समझ नहीं सका, मुझे फिर समझा दो। गुरु जी ने छड़ी के साथ लकीर खींच कर कहा कि इस तरह का चबूतरा बनाओ। दूसरे दिन फिर जब दोनों ने सुबह से शाम तक लग कर चबूतरा तैयार कर लिए, तो सन्धया के समय फिर पहले रामे का फिर श्री रामदास जी का चबूतरा देख कर गुरु जी ने कहा यह ठीक नहीं हैं, इन्हें गिरा दो और कल फिर बनाओ। रामे ने कहा मेरा चबूतरा बहुत अच्छा बना हुआ हैं मैं इस को गिराना नहीं चाहता। तब गुरु जी ने अपने एक सेवक से चबूतरा गिरवा दिया और रामे को कहा कि कल ध्यानपूर्वक बनाना। मगर रामदास जी ने अपना चबूतरा चुप चाप ही गिरा दिया और कहा कि मुझे क्षमा कीजिए, मैं भूल गया हूँ , आप जी की आज्ञा के अनुसार चबूतरा ठीक नहीं बना सका। गुरु जी फिर दोनों को समझा कर चले गए कि चबूतरे इस तरह के बनाना।

तीसरे दिन जब फिर दोनों ने चबूतरे तैयार कर लिए तो गुरु जी ने फिर रामे का चबूतरा देख कर कहा तुम ने फिर भी उस

तरह का चबूतरा नहीं बनाया जिस तरह का हम ने कहा था। इसको गिरा दो, परन्तु उस ने कहा, मुझ से और अच्छा नहीं बन सकता। आपको अपनी बात याद नहीं रहती, फिर मेरा क्या कसूर हैं? आप और किसी से बनवा लो। रामे का यह उत्तर सुन कर गुरु जी चुप करके श्री रामदास जी के पास चले गए। चबूतरा देखकर कहने लगे यह चबूतरा तुम ने फिर भी ठीक नहीं बनाया, आप हमारे समझाने पर भी नहीं समझे। श्री रामदास जी ने हाथ जोड़ कर कहा—महाराज! मैं अल्पबुद्धि वाला हूँ, आप जी की कृपा के बगैर मुझे समझ नहीं आ सकती। आप का यह उत्तर सुन कर गुरु जी बहुत प्रसन्न हुए और कहा कि रामदास की सेवा मुझे बहुत पसंद हैं। यह कभी अहं नहीं करते और सेवा में ही आनंद लेते हैं।

झबाल प्रगणे की जागीर

जब अकबर बादशाह ने लाहौर से वापिस दिल्ली को जाते हुए गोईंदवाल पड़ाव किया, तो वह यह देख कर खुश हुआ कि गुरु जी का अटूट लंगर किसी जात-पात और भेदभाव के बगैर चलता हैं। जिस में ऊँच-नीच सब एक पंक्ति में बैठ कर भोजन खाते हैं। गुरु जी की इस सांझीवालता पर प्रसन्न होकर अकबर ने गुरु के लंगर के लिए झबाल के बारह गाँवों की जागीर का पटा लिख दिया। जो श्री गुरु अमरदास जी ने अपनी सुपुत्री बीबी भानी जी और श्री (गुरु) रामदास जी की सेवा पर प्रसन्न होकर उन को दे दिया और इस का मामला इक्ट्ठा करने के लिए भाई बुड्ढा जी को सौंप दिया। बाबा जी उस जागीर में खेती-बाड़ी करके उसकी आमदनी गुरु के लंगर में भेज देते थे। इस जागीर का क्षेत्र बीड़ बाबा बुड्ढा जी के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

www.9009.co.in

गुरु चक्क की नींव रखनी

कुछ समय के पश्चात् एक दिन श्री गुरु अमरदास जी ने श्री (गुरु) जी को अपने पास बिठा कर कहा—हैं सुपुत्र ! अब आप रामदास परिवार वाले हो गए हो, इस लिए हम चाहते हैं कि आप अपनी जागीर में मकान तैयार करके निवास वहाँ करो। फिर गुरु जी ने बुड्ढा जी आदि पाँच बुद्धिमान सिक्खों को आप जी के साथ जाने के लिए तैयार करके समझाया कि जहाँ रामतीर्थ को जाते हुए श्री गुरु नानक देव जी ने संवत् १५५८ में वृक्षों के झुण्ड के नीचे दोपहर काटी थी और वचन किया था कि यहाँ भोग मोक्ष का प्रवाह चलेगा। उसके आस पास खुला स्थान देख कर गाँव की नींव रख कर मकान तैयार करा देना। तद्उपरान्त उस की उत्तर दिशा की तरफ एक सरोवर भी खुदवाना। यहाँ से हर एक जीव मात्र को पीने, प्रयोग करने के लिए पानी मिल सके, परन्तु बाबा बुड्ढा जी अपने दूसरे साथियों सहित श्री (गुरु) रामदास जी को साथ लेजा कर झबाल आकर अपनी जागीर के मुखी को श्री अमरदास जी की आज्ञा बताई और साथ चलकर गाँव की नींव रखने के लिए बताया। इन मुखियों के साथ गुमटाला, तुंग, सुलतान विंड और गिलवाली के मुखियों को बुलाकर पाँच आषाढ़ (वदी १२) संवत् १६२७ विक्रमी को सुलतान विंड की हद में, यहाँ पर गुरु साहिब की बतायी हुई जगह थी। गुरु साहिब का नाम लेकर अरदास करके गाँव की नींव रख दी और गाँव का नाम 'गुरु का चक्क' रखा। जो गुरु जी ने अपने निवास के लिए मकान बनवाए थे वह अब 'गुरु के महिल' करके प्रसिद्ध हैं।

संतोखसर ताल की नींव रखनी

तद्उपरान्त इस नींव वाले स्थान से गुरु जी के हुक्म के अनुसार उत्तर दिशा तीन चार खेत की दूरी पर एक टाहली के

www.9009.co.in

वृक्ष की निशानी के पास एक सरोवर की नींव का टप लगाया। गुरु के महिलों के मकान तैयार करके फिर आप (श्री गुरु रामदास) जी ने सरोवर की खुदवाई आरम्भ कर दी।

कुछ समय के पश्चात् श्री जेठा (गुरु रामदास) जी के बड़े सुपुत्र बाबा प्रिथीचंद जी ने गुरु चक्क की ज़मीन में कूआं लगवा कर जमीन आबाद कर दी जिस से गुरु के लंगर के लिए बहुत अन्न प्राप्त होने लग गया।

श्री (गुरु) रामदास जी का गोईंदवाल जाना

गुरु के महिलों का निर्माण करके और सरोवर की खुदवाई को आरम्भ करके आप सतिगुरु जी के दर्शन करने के लिए गोईंदवाल चले गए और जब सतिगुरु जी को अपने किए काम का परिचय बताया तो उसको सुन कर सतिगुरु जी बहुत प्रसन्न हुए।

गोईंदवाल ठहर कर आप फिर गुरु के लंगर की सेवा में पहले की तरह लग गए। बीबी भानी जी अपने पिता गुरु जी की सेवा बड़े प्यार और श्रद्धा के साथ करने लग गए। इन दोनों की निष्काम और श्रद्धा-युक्त सेवा को देख कर सतिगुरु जी ने सोचा कि श्री रामदास जी को गुरु गद्दी देने का समय अब आ गया हैं।

अमृत तीर्थ की पुरातन कथा

एक दिन सतिगुरु जी ने श्री रामदास जी को अपने पास बैठा कर बताया कि सतियुग में एक समय अयोध्या के पहले राजे इक्षवाकु ने इस स्थान (जहां अब भजनों का स्थान हैं) पर एक बहुत भारी यज्ञ किया था। जिस में ब्रह्मा, विष्णु और शिवा जी आदि से लेकर इन्द्र और अन्य मण्डलों के सब देवते, ऋषि मुनी आदि आए। जब यज्ञ सम्पूर्ण हो गया तो राजे का प्रेम और श्रद्धा को देख कर सब बहुत ही प्रसन्न हुए।

www.9009.co.in

इस प्रसंनता से प्रभावित हो कर विष्णु ने राजे इक्षवाकु को वर माँगने के लिए कहा। तब राजे इक्षवाकु ने हाथ जोड कर प्रार्थना की महाराज ! अगर आप दयालु हुए हो तो मुझे यह वरदान दो कि इस हवनकुण्ड के स्थान पर एक ऐसा तीर्थ हो,जो संसार के जीवों के पापों का नाश करके उनका कल्याण करने वाला हो। फिर आप का निवास इस हवनकुण्ड के चारों तरफ जैसे आप अब बैठे हैं, सदा ही रहैं। राजे की प्रार्थना को सुन कर विष्णु ने कहा— हैं राजन ! यह वर आप ने संसारी जीवों के भले के लिए माँगा हैं, हम आप पर बहुत जी प्रसन्न हैं। यहाँ कलियुग में एक बहुत भारी तीर्थ प्रकट होगा जो अनन्त जीवों के पापों को नाश करने वाला होगा। मेरी ज्योति शक्ति सदा ही यहाँ आवास करेगी।

यह प्रसंग बता कर सतिगुरु जी ने कहा कि अब आपके हाथों इस के शीघ्र ही प्रगट होने का समय आ गया हैं।

आयु और गुरु गद्दी का वरदान

एक दिन जब गुरु जी अपने अन्तर्ध्यान स्मरण से उठे तो आप जी ने बीबी भानी जी को कहा—पुत्री ! श्री रामदास जी की आयु पूरी हो चूकी है। हम आप दोनों की सेवा पर बहुत प्रसन्न हैं, इस लिए हम अपनी बाकी रहती आयु श्री रामदास जी को दे कर बैकुण्ड धाम को चले जाते हैं। तत्पश्चात् श्री रामदास जी को कहा कि आपकी निष्काम प्रेमा भक्ति ने मुझे वश में कर लिया है। अब आप और मुझ में कोई भेद नहीं है। हमारी बाकी आयु छः वर्ष ग्यारह महीने और अठारह दिन आप हमारे आसन पर बैठ कर गुरु घर की मर्यादा को चलाना। यह वचन करके गुरु जी ने पाँच पैसे और नारियल श्री रामदास जी के आगे रख कर गुरु नानक जी की गुरु गद्दी की तीन परिक्रमा करके माथा टेक दिया। तद्उपरान्त

www.9009.co.in

अपने दोनों सुपुत्रों बाबा मोहन जी और मोहरी जी को बुला कर सारी संगत के सामने कहा कि आज से गुरु नानक जी की गद्दी के यह मालिक हैं। इन्हीं को माथा टेको। गुरु जी की आज्ञा को मान कर मोहरी जी ने माथा टेक दिया, मगर मोहन जी ने जो फ़क्कड़ स्वभाव के थे, कहा कि गुरु गद्दी पर हमारा हक हैं और यह कह कर माथा न टेका। तत्पश्चात् सारी संगत ने भेंट अर्पण करके बारी-बारी उठ कर श्री गुरु रामदास जी को गुरु मान कर माथा टेक दिया।

बीबी भानी जी को वरदान

तद्‌उपरान्त सतिगुरु जी ने अपनी सुपुत्री बीबी भानी जी को कहा—बेटा ! हम आप पर बहुत प्रसन्न हैं, अब जो कुछ आपकी इच्छा हैं सो माँग लो। पिता जी को प्रसन्न देख कर बीबी जी ने कहा—पिता जी ! आप ने मुझे सब कुछ दिया हैं और मैं संतुष्ट हूँ। अगर कुछ और अधिक कृपा करनी चाहते हो तो यह कृपा करो कि गुरु गद्दी जो आप ने मेरे पति को वरदान दी हैं, यह मेरे घर में ही रहैं, बाहर न जाए। बीबी जी की यह बात सुन कर गुरु जी ने कहा—पुत्री यह सेवक की दात हैं, आप ने चलते पानी को बाँध लगाया हैं जिस का फल दुख होता हैं। गुरु गद्दी तेरे घर में ही रहैंगी परन्तु इस में दुख और क्लेष बने रहेंगें।

तद्‌उपरान्त सारे परिवार-सिक्खों, पुत्रों, भाईयों को गुरु जी के पास बुला धैर्य और हुक्म मानने का उपदेश देकर आप कुश के आसन पर चादर तान कर लेट गए और पाँच तत्वों शरीर को त्याग कर भाद्रव सुदी पूर्णिमा संवत् १६३१ को ज्योति-ज्योत समा गए।

नोट—यहाँ तक का प्रसंग श्री गुरु अमरदास जी के समय में हुआ था।

श्री गुरु राम दास जी का वैराग्य

सतिगुरु जी का प्रलोक गमन सुन कर सब दूर नज़दीक के सिक्ख सेवक शोक प्रगट करने के लिए गोइंदवाल आकर जब श्री गुरु रामदास जी को गुरु करके माथा टेकते तो बाबा मोहन जी और मेहरी जी ईर्ष्या कारण इस को अच्छा न समझते थे। उन की मन की भावना को कि किसी का दिल दुखाना अच्छा न समझते थे। आप एकांत एक कमरे में बैठ गए। एकांत में बैठ कर आप ने सतिगुरु जी के वियोग में वैराग्य और प्रेममय सात शब्द उच्चारण किए जो श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के पृष्ठ ९४ पर विद्यमान हैं। प्रत्येक शब्द की पहली पंकित यह हैं—

माझ महला ४ चउपदे घरू १।।

१. हरि हरि नामु मै हरि मनि भाइिआ।।
वडभागी हरि नामु धिआइिआ।।

२. मधुसूदन मेरे मन तन प्राना।।
हउ हरि बिनु दूजा अवरू न जाना।।

३. हरि गुण पड़ीए हरि गुण गुणीए।।
हरि हरि नामु कथा नित सुणीए।।

४. हरि जन संत मिलहु मेरे भाई।।
मेरा हरि प्रभु दसहु मै भुख लगाई।।

५. हरि गुरु गिआनु हरि रसु हरि पाइिआ।।
मनु हरि रंगि राता हरि रसु पीआइिआ।।

६. हउ गुण गोविंद हरि नामु धिआई।।
मिलि संगति मनि नामु वसाई।।

७. आवहु भैणे तुसी मिलहु पिआरीआं।।
जो मेरा प्रीतमु दसे तिसकै हउ वारीआं।।

आप की जीवन कथा में लिखा हैं कि जब आप यह वैराग्यमयी शब्द पढ़ा करते थे, तो आप के नेत्रों से जल धारा बह निकलती थी। जिस लिए प्रेमी गुरु सिक्ख चाँदी की कटोरियाँ आप जी के नेत्रों के नीचे रख दिया करते थे, कि आप जी के वस्त्र अथवा पहरावा गीला न हो जाए। यथा—

हउ रहि न सका बिनु देखे प्रीतमा, मै नीरु वहैं वहि चलै जीउ।।

(पहला शब्द पृष्ठ ८४)

अत जब इस तरह वैराग्यमयी और नीर बहाने वाली दशा में कुछ समय व्यतीत हो गया, तो आप के दर्शन के बिना संगत में बहुत निराशा फैल गई। संगत की यह दशा देख कर बाबा बुड्ढा जी और बाबा मोहरी जी ने आप जी के पास जाकर प्रार्थना की कि संगत बहुत उदास हैं, आप बाहर आ कर संगत को दर्शन दे कर निहाल करो। तब आप जी ने बाहर आकर संगत को दर्शन दिए और उन के मन शाँत किए।

गुरु के चक्क आना

कुछ समय गोईंदवाल व्यतीत करके श्री गुरु रामदास जी बाबा मोहण जी और मोहरी जी की सलाह से गुरु के चक्क आ गए। गुरु चक्क आ कर आप दीवान सजा कर संगत को नामदान का उपदेश दे के उन की मनोकामना पूरी करके उन्हें आनन्दित किया करते और बाकी का समय गुरु के चक्क के निर्माणकार्य और उन की तैयारी में व्यतीत किया करते।

सिद्धों से चर्चा

एक बार सिद्ध योगियों का समूह देशाटन करता हुआ गुरु जी के दर्शन करने के लिए गुरु के चक्क आया। आदेश-आदेश करके

www.9009.co.in

गुरु जी के पास बैठ गया। आप जी की शक्ति की परीक्षा करने के लिए पूछा कि योग के बिना किसी का मन स्थिर नहीं हो सकता और मन स्थिर हुए बिना आत्मा का ज्ञान प्राप्त ही नहीं हो सकता। आत्म-ज्ञान के बिना मुक्ति की पदवी नहीं मिलती। परन्तु आप अथवा आप के सिक्ख जो योग मार्ग को धारण नहीं करते उनको मुक्ति किस तरह प्राप्त हो सकती हैं? वह कभी मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकते।

सिद्धों की यह दलील सुन कर गुरु जी ने कहा— हमारे मत में एक चित्त होकर सत्यनाम का स्मरण करना ही योग हैं। आपके मत अनुसार जो योग हैं वह बहुत कठिन हैं। इस से शरीर को रोग लग जाते हैं। शरीर नकारा हो जाता है, परन्तु अगर सिद्धि प्राप्त भी हो जाए, तो फिर मन त्र्द्धियों-सिद्धियों में फंस कर जगत् वासना में भ्रमरण करने लग जाता है। परन्तु हमारे सिक्ख सत्यनाम के स्मरण द्वारा आत्म ज्ञान प्राप्त करके उस के रंग में रंगे रहते हैं और सारे जगत् को आनन्द रूप जानते हैं। हाथों से किंगरी और मुँह से बाँसुरी बजानी निष्फल हैं अगर मन भांति-भाति के खेलों में खेल रहा है। हे योगी जनो ! इस मन को हरि प्रभु के रंग में रंगना करो, जो सदा ही एक सार व्यापक हो रहा है।

इस प्रथाए आप जी ने यह शब्द उच्चारण किया—

आसा महला ४ घरु ६ ।।

हथि करि तंतु वजावे जोगी थोथर बाजै बेन।। गुरमति हरि गुण बोलहु जोगी इहु मनूआ हरि रंगि भेन।। १।। जोगी हरि देहु मती उपदेसु।। जुगु जुगु हरि हरि एको वरतै तिसु आगै हम आदेसु।। १।। रहाउ।। गावहि राग भाति बहु बोलहि इहु मनूआ खेलै खेल।। जोवहि कूप सिंचन कउ बसुधा उठि बैल गए चरि बेल।। २।। काइआ नगर महि करम हरि बोवहु हरि

www.9009.co.in

जामै हरिआ खेतु।। मनूआ असथिरु बैलु मनु जोवहु हरि
सिंचहु गुरमति जेतु।। ३।। जोगी जंगम स्रिसटि सभ तुमरी
जो देहु मति तितु चेल।। जन नानक के प्रभ अंतरजामी हरि
लावहु मनूआ पेल।। ४।। ६।। ६२।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ० ३६८)

एक तपस्वी का भ्रम निवृत्त करना

श्री गुरु रामदास जी सदा ही प्रभु प्रेम में मग्न रहते थे और असंख्य सिकख आप जी से नामदान का उपदेश लेकर सिक्खी धारण करके गुरु-गुरु जपते थे। गुरु सिक्खी की यह रीति म्देख कर एक ईर्ष्यालु तपस्वी आप जी के पास आया।

गुरु जी ने उस को सतिकार से अपने पास बैठा कर पूछा कि आओ तपस्वी जी, किस तरह आए हो ? तपस्वी ने कहा मैंने सारे मतों के संत-भक्तों को देखा है। तीर्थ की यात्रा करते हुए भी बहुत लोग देखे हैं, परन्तु आपके सिक्खों जैसा मैंने कोई अभिमानी नहीं देखा। क्योंकि यह और किसी मत के साधु-संत को नहीं मानते और न ही यह वेद-शास्त्रों की शुभ रीति को ग्रहण करते हैं। यह केवल आपको और आपकी बाणी को ही मानते और पूजते हैं। फिर वेद बाणी का त्याग करके इन का उद्धार किस तरह होगा?

गुरु जी ने पूछा— तपस्वी जी! तीर्थ स्नान और वेद बाणी के पाठ का क्या फल होता है। तपस्वी ने कहा, तीर्थ स्नान का फल बहुत बड़ा है। इस से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं और अंतिम समय स्वर्ग की प्राप्ति होती है । वेदों के पाठ से आत्म ज्ञान की प्राप्ति होती है। गुरु जी ने कहा— तपस्वी जी! हमारे सिक्ख सतिसंगत की सेवा करके जो सुख प्राप्त करते हैं, वह आप को प्राप्त नहीं होता। आप ने तत की पहचान नहीं की, तीर्थ आदि के स्नान और

वेद पाठ के झूठे अभिमानों में आप ने सारी आयु गंवा ली है। यह झूठा अभिमान पूरे गुरु के मिलने से ही दूर होता है। तपस्वी ने कहा, जब तीर्थ स्नान की महिमा को ही सब ऋषि-मुनिओं ने उत्तम माना है तो फिर आप इस को तुच्छ और साधु संगत की महिमा को बड़ी किस तरह कहते हो ?

इस प्रथाए गुरु रामदास जी ने इस शब्द का उच्चारण किया—

मलारु महला ४।।

गंगा जमुना गोदावरी सरसुती ते करहि उदमु धूरि साधू की ताई।। किलविख मैलु भरे परे हमरै विचि हमरी मैलु साधू की धूरि गवाई।। १।। तीरथि अठसठि मजनु नाई।। सति संगति की धूरि परी उडि नेत्री सभ दुरमति मैलु गवाई।। १।। रहाउ।। जा हरनवी तपै भागीरथि आणी केदारु थापिओ महसाई।। कांसी क्रिसनु चरावत् गाऊ मिलि हरि जन सोभा पाई।। २।। जितने तीरथ देवी थापे सभि तितने लोचहि धूरि साधू की ताई।। हरि का संतु मिलै गुर साधू लै तिसकी धूरि मुखि लाई।।३।। जितनी सृसटि तुमरी मेरे सुआमी सभ तितनी लोचै धूरि साधू की ताई।। नानक लिलाटि होवै जिसु लिखिआ तिसु साधू धूरि दे हरि पारि लंघाई ।।४।।२।।

(स्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ० १२६३)

इस शब्द के भावार्थ समझ कर तपस्वी ने कहा मेरा सौभाग्य है जो मैंने आप जी के वचन सुने हैं, मेरा भ्रम दूर हो गया है। तद्उपरान्त गुरु जी के वचनों पर श्रद्धा धारण करके तपस्वी ने सिक्खी धारण कर ली और सदा सतिसंगत करता रहा।

सिक्खों को सेवा का उपदेश

एक दिन जब सतिसंग दीवान की समाप्ति हो गई, तो सिक्खों ने कहा—महाराज ! हमें कोई उपदेश दो, जिस से कि हमारा जन्म सफल हो जाए। गुरु जी ने कहा—अगर कोई अन्तिम समय अपनी

www.9009.co.in

गति चाहता है तो उसको चाहिए कि अहंशून्य होकर तन मन से संगत की सेवा करे। कलियुग में सतसंगत और सेवा का बहुत महत्व है। जप तप आदि और अन्य नेम धर्म करने का समय नहीं है। सेवा करना ही उत्तम कर्म है, सेवा के बिना भक्ति और भक्ति के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं होता। इस लिए सेवा सब शुभ कर्मो का मूल है। यथाशक्ति भोजन तैयार करके सतिकार से सिक्ख संगत को खिलाना, जल पिलाना, पंखा फेरना, सिक्ख संगत के विश्राम के लिए सुन्दर मन्दिर बनाना और निरहंकार होकर श्रद्धा और प्रेम से उनकी सेवा करना ही मानव मात्र के कल्याणकारी है।

गुरु के सिक्ख संत हंसों के समान हैं, जो इन की सेवा करता है उस को सब फल प्राप्त होता है। यह उपदेश सुन कर सिक्ख तन मन से सेवा करने लगे।

पिंगले और रजनी का प्रसंग

(अमृत तीर्थ प्रगट होना)

पट्टी नगर के दुनीचंद क्षत्रि की पाँच बेटियाँ थीं। सब से छोटी सतिसंग और प्रभु पर भरोसा रखने वाली थी । एक दिन जब दुनीचंद ने अपनी इन बेटियाँ को पूछा कि आप किस का दीया हुआ खाती और पहनती हो, तो रजनी के बिना सब ने यही कहा कि पिता जी हम आपका दीया ही खाती और पहनती हैं। परन्तु रजनी ने कहा कि पिता जी ! आपको भी, मुझे भी और सब किसी को परमात्मा ही देता है, और कोई किसी को कुछ देने वाला नहीं है। दुनीचंद ने कहा, मैं देखूँगा परमात्मा तुझे किस तरह देता है। कुछ दिन ठहर कर दुनीचंद ने रजनी को एक कुष्ट पिंगले के साथ विवाह दिया।

रजनी ने परमेश्वर का हुक्म मान कर पिंगले को पति परमेश्वर का रूप समझकर एक टोकरे में डालकर सिर पर उठा लिया और गाँव-गाँव माँग कर अपना और अपने पति का पेट पालने लगी। इस तरह ही माँगती हुई गुरु के चक्क आ गई और दुख भंजनी बेरी के नीचे एक कच्चे सरोवर के पास अपने पति का टोकरा रख कर गुरु के लंगर में से भोजन (रोटी) लेने चली गई। बाद में पिंगले ने देखा कि उस के पास जो पानी का कच्चा सरोवर है, उस में नहा कर कौए सफेद हो गए हैं। यह चमत्कार देख कर पिंगला टोकरे में से निकल कर रींगते-रींगते उस पानी में चला गया और लेटने लगा। अच्छी तरह लेटने के उपरान्त उसने देखा कि उसका शरीर सुन्दर और अरोग हो गया है। वह उठ कर टोकरे के पास आ बैठा।

इतनी देर को जब उसकी पत्नी रजनी भी आ गई, तो उस ने वहाँ एक अरोग और सुन्दर पुरुष को बैठे देख उसे पूछा कि तुम कौन हो ? मेरा पति कहाँ है ? उस पुरुष ने कहा मैं ही तुम्हारा पिंगला पति हूँ और कोई दूसरा पुरुष नहीं हूँ। मैं इस पानी 'जो बडा शक्तिशाली है' में नहा कर अरोग हुआ हूँ। फिर उस ने कौओं के सफेद होने की बात बताई और कहा कि मैंने कौओं को देख कर ही इस जल में नहाया और अरोग हो गया हूँ।

परन्तु रजनी को जब फिर भी विश्वास न हुआ, तो वह दोनों ही गुरु जी के पास गुरु के महल में चले गए। गुरु जी ने पिंगले की सारी बात सुन कर कहा—यही तेरा पति है। तुम भ्रम न करो। यह तेरे विश्वास, पतिव्रत्ता और तीर्थ यात्रा की शक्ति करके अरोग हो गया है। यह तेरे पतिव्रत्त का फल है। गुरु साहिब जी के वचनों पर विश्वास करके वह दोनों पति-पत्नी और सेवकों के साथ मिलकर गुरु की सेवा में लग गए।

गुरु जी का अपने सम्बन्धियों की प्रार्थना को स्वीकार करके लाहौर जाना

इस चमत्कार को देख कर जब गुरु जी को विश्वास हो गया कि यही वह स्थान है, जिस के विषय में गुरु अमरदास जी ने समझाया था कि यहाँ अमृत सरोवर तीर्थ प्रगट होगा तो आप जी ने ५ आषाढ़ संवत् १६३४ को इसकी खुदाई ज़ोर-शोर से आरम्भ करा दी। इधर जब दुनीचंद को अपने पिंगले जवाई के अरोग होने की खबर मिली, तो वह बड़े सत्कार से उन को अपने घर पट्टी नगर में ले गया।

यह बात जब लाहौर की सिक्ख संगत ने सुनी कि गुरु जी जो सरोवर तैयार करा रहें हैं वह बड़ा शक्तिवान है। जिसके जल में से काले कौए नहा कर सफेद हंसों के समान हो जाते हैं। तब वह भी 'गुरू के चक्क' दर्शन करने आए। कुछ दिन कार-सेवा और गुरु जी के दर्शन करके जब वह वापिस जाने लगे तो गुरु जी के ताए के पुत्र सहारी मल ने प्रार्थना की कि महाराज ! आप कृपा करके एक बार ज़रूर लाहौर चल कर अपने वंश और सम्बन्धियों को दर्शन दे कर प्रसन्न करो। इन का प्रेम और श्रद्धा देख कर गुरु जी ने लाहौर जाना स्वीकार कर लिया। लाहौर आ कर गुरु जी ने अपना चूने मण्डी वाला घर तोड़ कर वहाँ धर्मशाला बनवा दी और संगतों के स्नान पानी के लिए उस में एक कूआं भी लगवा दिया। आप जी के उपदेशों के प्रभाव के कारण बहुत श्रद्धालुओं ने आप जी की सिक्खी धारण कर ली। इस तरह धर्मशाला में संगत की मर्यादा तोड़ कर और धर्मशाला की सेवा कुछ सिक्खों को सौंप कर आप वापिस गुरु के चक्क आ गए। वहाँ आ कर गुरु जी अपना सारा समय भक्ति, कथा-कीर्तन और संगत को उपदेश देने में व्यतीत करते थे। आप उन को हाथ नहीं लगाते थे सब की देखभाल सेवादार ही करते थे।

www.9009.co.in

भाई हिंदाल को वरदान

भाई हिंदाल गुरु के लंगर में बड़े प्रेम से आटा मांडने की सेवा करता था। एक दिन गुरु जी लंगर में अचानक ही आए तो भाई हिंदाल जो उस समय आटा माण्ड रहा था, गुरु जी को देख कर शीघ्र ही उठ कर आटे से भरे हुए अपने हाथ अपनी पीठ पीछे कर लिए और शीश गुरु जी के चरणों पर रख दिया। गुरु जी उस की माथा टेकने की इस रीति को देख कर बड़े ही खुश हुए और वरदान निमित्त एक अंगोछा उसको दिया। जब भाई हिंदाल ने अंगोछा लेकर सतिकार से अपने सिर पर रखा तो उसको तीनों लोकों की सूझ हो गई और ऋद्धियों-सिद्धियों की प्राप्त हो गई।

फिर उस की प्रेमा-भक्ति पर प्रसन्न होकर गुरु जी ने वचन किया कि अब तुम घर जाकर आप नाम जपना और औरों को जपा कर सिक्खी मार्ग को प्रचलित करना। गुरु जी का वचन मान कर हिंदाल अपने गाँव जंडियाला चला गया। और नाम का स्मरण करता और औरों को कराता हुआ परमगति को प्राप्त हो गया। इस इलाके के लोग इसको गुरु करके मानने और पूजने लग गए। जिस लिए इसका गाँव जंडियाला (गुरु का जंडियाला) प्रसिद्ध हो गया। जंडियाला नगर में भाई हिंदाल की समाधि बनी हुई है। बाद में इसकी संतान के व्यक्ति गुरु घर के और गुरुसिखों के बड़े विरोधी और निंदक हो गए।

भाई गुरदास जी को आगरे भेजना

एक दिन जब भाई गुरदास जी गुरु के दर्शन करने आए तो आप ने कहा कि तुम आगरे चले जाओ और उस प्रदेश में गुरु नानक साहिब जी के सिक्ख सिद्धातों का प्रचार करो। गुरु जी का वचन मान कर भाई जी आगरे चले गए और उन्हों ने वहाँ सिक्खी का प्रचार करके अनेक प्राणियों को सिक्खी धारण कराई।

बाबा स्री चन्द जी ने आना

एक बार गुरु नानक साहिब जी के बड़े सुपुत्र बाबा स्री चन्द जी श्री गुरु रामदास जी की महिमा सुन कर अपने गोदड़िए के कँधे पर चक्क गुरु आ गए। जब गुरु जी ने बाबा जी का आना सुना तो आप जी उठ कर बाबा जी को आगे होकर मिले और चरणों पर नमस्कार करके सतिकार से अपने साथ लाकर प्रसाद पानी की सेवा बड़े प्रेम से की। बाबा जी ने पूछा कि रामदास जी ! आप ने दाढ़ी इतनी लम्बी कयों बढ़ाई हुई है ? तब गुरु जी ने अपनी दाढ़ी हाथ में पकड़ कर कहा कि यह आप जी के चरण साफ़ करने के लिए बढ़ाई है। गुरु जी की इस नम्रता को देख् कर बाबा जी ने बड़े खुश होकर वचन किया कि इन गुणों के कारण ही आपने यह उच्च पदवी पाई है। गुरु जी ने बाबा जी को आदर सहित एक घोड़ा और पाँच सौ रुपए दर्शन भेंट करके माथा टेका। बाबा जी ने खुश होकर आप जी को कई वरदान दिए कि यहाँ जो श्रृद्धा से आएगा उसको मनवांछित फल प्राप्त होगा। नाम कीर्तन का सदा प्रवाह चलता रहैंगा और लक्ष्मी अटूट आएगी इत्यादि शुभ वरदान देकर बाबा जी वापिस करतारपुर रावी नदी के किनारे चले गए।

सिक्ख की रहनी का उपदेश

एक दिन गुरु जी के दीवान में बहुत सिक्ख संगत बैठ कर गुरु जी का उपदेश सुन रही थी। गुरु जी ने कहा-हे प्यारे सिक्खो ! यह मानव जन्म दुर्लभ है। मन के सारे विकारें को दूर करके गुरु उपदेश के द्वारा हरि नाम का स्मरण करके इस अमूल्य जन्म को सफल करना चाहिए। गुरुसिक्खों को अपने जीवन को इस प्रकार ढालना चाहिए, जिस की अभिव्यक्ति आप ने इस शब्द के द्वारा की—

www.9009.co.in

वार गउड़ी सलोक ४ ।।

गुरु सतिगुरु का जो सिखु अखाए सु भलके उठि हरि नामु धिआवै ।।
उदमु करे भलके प्रभाती इस्नान करे अमृतसरि न ावै ।।
उपदेसि गुरु हरि हरि जपु जापै सभि किलविख पाप दोख लहि जावै ।।
फिरि चड़ै दिवसु गुरबाणी गावै बहदिआ उठदिआ हरिनामु धिआवै ।।
जो सासि गिरासि धिआए मेरा हरि हरि सो गुरसिखु गुरू मनि भावै ।।
जिसनो दइआलु होवै मेरा सुआमी तिसु गुरुसिक्ख गुरू उपदेसु सुणावै ।।
जनु नानकु धूड़ि मंगै तिसु गुरसिक्ख की जो आपि जपै अवरह नामु जपावै ।। २ ।।

(श्री गुरू ग्रंथ साहिब, पृ० ३०५)

गुरु जी का यह पावन उपदेश सुन कर जिन के दो उत्तम भाग थे वह इसको धारण करके परमगति को प्राप्त हुए।

श्री गुरु अर्जन देव जी को लाहौर भेजना

श्री गुरु रामदास जी के ताए के पुत्र सहारी मल़ ने हाज़िर होकर प्रार्थना की कि मेरे पुत्र का विवाह है और आप इस समय लाहौर चल कर हमें सम्मानित करो। गुरु जी ने कहा, भाई साहिब! हमारे आने से आपको हमारे दर्शन के लिए आई संगत के जल पानी की बहुत कठिनाई होगी। इस कारण आप हमारे एक लड़के को ले जाओ।

सहारी मल़ की सहमति लेकर गुरु जी ने अपने बड़े लड़के बाबा पृथी चन्द जी को लाहौर जाने के लिए कहा। परन्तु पृथी चन्द जी ने कहा- पिता जी ! अगर मैं चला गया तो बाहर से आई संगत की देख-भाल और उन की ओर से आई भेंट की देख-भाल कौन करेगा? यह उत्तर सुन कर गुरु जी ने बाबा महादेव जी को कहा कि इस विवाह के समय आप लाहौर चले जाओ। महादेव जी ने कहा-पिता जी ! मैं किसी को जानता नहीं और न ही कहीं जानना चाहता हूँ।

इन दोनों के उत्तर सुन कर फिर गुरु जी ने श्री (गुरु) अर्जन देव जी को कहा कि बेटा ! तुम लाहौर विवाह पर चले जाओ और जब विवाह का समागम समाप्त हो जाए तो वहाँ अपनी धर्मशाला में निवास करके संगत को सतिनाम का उपदेश देना ओर जब हम बुला भेजेंगे तब ही तुम वापिस आना। नहीं तो लाहौर ही रहना अपने पिता जी की यह आज्ञा सुन कर आप जी ने हाथ जोड़ कर कहा ! पिता जी जो आप की आज्ञा, मुझे स्वीकार है। फिर आप जी अपनी माता भानी जी से लाहौर जाने के लिए आज्ञा लेने गए। माता जी ने आप का प्यार सहित माथा चूमा और कहा बेटा ! तुमने सदा ही अपने पिता जी आज्ञा का पालन करना। इसी में ही अपना भला समझना। इस प्रकार माता जी से उपदेश और आशीर्वाद लेकर आप ने माता जी के चरणों में माथा टेका और सहारी मल्ल के साथ लाहौर को विदा हो गए।

भाई आदम को पुत्र का वरदान

मालवे देश का एक सिधू जाट भाई आदम गाँव बिंजू जिला फिरोज़पुर का रहने वाला बहुत देर पीरों फ़कीरों की सेवा करता रहा, परन्तु उस की मुराद कहीं पूरी न हुई। उस के घर में पुत्र पैदा नहीं हुआ । एक दिन उस को गुरु का एक सिक्ख मिला। आदम ने उसकी प्रेम सहित पानी की सेवा की और प्रार्थना की कि भाई जी, मेरे घर पुत्र की सन्तान नहीं हैं। आप गुरु जी के आगे अरदास करो कि मेरे घर पुत्र पैदा हो। उस गुरु के सिक्ख ने अरदास करके फिर आदम को कहा कि इस समय गुरु नानक की गद्दी पर गुरु रामदास जी सुशोभित हैं तुम उन के पास गुरु के चक्क में चले जाओ। वह तुम्हारी मदद करने को पूरी तरह समर्थ हैं। उन के पास तुम्हारी मुराद पूरी हो जाएगी।

सिक्ख के वचनों पर भरोसा करके भाई आदम अपनी पत्नी को साथ लेकर गुरु के चक्क आ गया। सेवा में मेवा ध्यान रख कर

www.9009.co.in

भाई आदम जंगल से रोज़ दो गट्ठड़ी लकड़ी की लाकर एक गट्ठड़ी गुरु के लंगर में दे देता और एक अपने घर जमा करता जाता। इस तरह ही जब कुछ समय निकल गया तो एक दिन सर्दी के मौसम में बहुत वर्षा के कारण सूखी लकड़ी कहीं हाथ न आने के कारण सर्दी से संगत बहुत दुखी हो गई । तब भाई आदम ने गुरु जी की खुशी लेने के लिए अच्छा समय समझ कर अपने घर जाकर रखी हुई सूखी लकड़ियाँ सब जरूरत-मंदों के घर बाँट दीं। सर्दी से ठिठरे हुए लोग सूखी लकड़ियाँ जला कर खुश हो गए और भाई आदम की इस मिल-बाँट कर प्रयोग करने वाली प्रवृत्ति को देख कर उस की श्लाघा करने लगे। संगत की प्रसन्ता का गुरु जी को पता चला तो आप जी ने भाई आदम को बुला कर कहा-भाई सिक्खा! गुरु नानक जी की संगत की तेरे ऊपर खुशी हुई है। तुम अपने मन का मनोरथ बताओ, जो तेरा पूरा किया जाए परन्तु भाई आदम ने मनोरथ बताने से कुछ संकोच करके कहा, महाराज ! मुझे दर्शन दो, यही मेरा मनोरथ है। तीन बार जब गुरु जी ने वरदान माँगने के लिए कहा और भाई आदम ने तीन बार ही 'दर्शन दो' माँगा। तब उसके संकोच भरे मन की आन्तरिक तह को जानने वाले अन्तर्यामी जी ने कहा-भाई तुम कल अपनी पत्नी को साथ लेकर आना और फिर जिस मनोरथ के लिए आप गुरु के लंगर और संगत की सेवा करते रहे हो, वह आकर बताना। आपका मनोरथ गुरु नानक जी पूरा करेंगे। इस उपरान्त भाई आदम ने अपने डेरे में जाकर सारी बात अपनी पत्नी को बताई और दूसरे दिन उस को साथ लेकर गुरु जी के पास हाज़िर हुआ। गुरु जी ने वचन किया कि भाई आज आप अपना मनोरथ निःसंकोच बताओ। तब आदम की पत्नी ने हाथ जोड़कर कहा महाराज ! हमें पुत्र की दात प्रदान करो। हम संतानहीन हैं, यही मनोरथ मन में रख कर हम आप जी के दरबार में आए हैं।

गुरु जी ने अंतर्ध्यान होकर वचन किया कि आपकी श्रद्धा भक्ति और निष्काम सेवा पर हम बहुत खुश हैं। गुरु नानक साहिब जी की कृपा से आपके घर एक बड़ा प्रतापी लड़का होगा। उसका नाम आप भगतू रखना। अब आप अपने घर चले जाओ और सतिनाम का स्मरण करते हुए अपनी कृत करके आनंद प्राप्त करो।

आज्ञा के अनुसार भाई आदम जी अपने गाँव बिंजू चला गया और सतिनाम का स्मरण करके अपनी कृत करने लगा। समय पाकर इनके घर लड़का पैदा हुआ जिस का नाम इन्होंने गुरु जी की आज्ञा के अनुसार भगतू रखा। भाई भगतू जी बड़े नामरसिक और करनी वाले प्रतापी पुरुष हुए हैं। इन का देहान्त संवत् १७०८ में श्री गुरु हरिराए जी के समय करतारपुर में हुआ। कैथल के राजा लाल सिंह और ऊधम सिंह भाई भगतू की ही संतान थे। महाँ कवि भाई संतोख सिंह जी ने इन्हें अपने पास रख कर नानक प्रकाश और सूरज प्रकाश ग्रन्थ लिखवाए थे।

महानंद, बिधी चंद, जापा मईया और नईया खुल्लर

गुरु साहिब जी के हजूर दोनों समय कथा-कीर्तन और उपदेश के दीवान लगते थे। हर प्रकार के सिक्ख अपनी मनोकामना लेकर दर्शन करने तथा उपदेश लेने आते थे।

एक दिन भाई महानंद और बिधी चंद ने प्रार्थना की कि पातशाह ! हम आप जी की शरण आए हैं, हमें उपदेश दो, जिस से हमारे जन्म-मरण के बंधन कट जाएँ। गुरु जी ने कहा-भाई आप अपना आप पहचान लोगे तो तुम्हारा जन्म मरण कट जाएगा। यह शरीर जो नश्वर झूठा है, यह आप नहीं हैं। आप वह हैं जो कभी मरता नहीं और न ही मारा जा सकता है। आप चेतन स्वरूप हैं। यह बात निश्चय करके चेतन स्वरूप को पहचानो। उन्हों ने कहा महाराज ! हमें अपने इस चेतन स्वरूप का किस तरह ज्ञान अथवा

www.9009.co.in

पहचान हो सकती है? गुरु जी ने कहा-श्रद्धा और प्रेम के साथ सतिसंगत किया करो, गुरु सिक्खों की सेवा किया करो, कथा कीर्तन सुना करो। गुरूबाणी पढ़ा और सुना करो। दुख-सुख में स्थिर रहा करो। इस तरह करोगे तो आप को अपने चेतन स्वरूप की पहचान हो जाएगी।

फिर एक दिन धरमदास, डूगरदास, दीपा, जेठा, संसारु, बूला तीर्थ ने प्रार्थना की कि महाराज ! हमारा उद्धार किस तरह होगा? गुरु जी ने कहा-पहले अपने मन का अहंकार दूर करो और निम्रता धारण करो। ईर्ष्या और निंदा का त्याग करो, सतिसंग में जा कर कथा-कीर्तन प्रेम सहित सुना करो। अतिथि को भोजन खिलाओ और विश्राम कराओ। इस के साथ आप का लोक परलोक सुधर जाएगा।

फिर एक दिन जापा मईया और नईया खुल्लर ने दीवान् में हाज़िर होकर प्रार्थना की कि महाराज ! हमें कोई ऐसा उपदेश दो जिस को धारण करके हम गृहस्त में रहते हुए ही अपन उद्धार कर लें। गुरु जी ने कहा भाई ! जिस तरह रात-दिन आप घर के काम करते रहते हुए उन के साथ सुनते समय उस के साथ प्यार करो। उस को बार -बार विचार न करो कि इस में गुरु जी हमें क्या आज्ञा करते हैं और हमें क्या करना चाहिए। मन को बुराइयों की तरफ से मोड़ो और बाणी का विचार करो। काम-काज करते हुए तथा हर समय सतिनाम वाहिगुरु का स्मरण उठते-बैठते निरंतर किया करो। इस से अहंकार का दीर्घ रोग मिट जाएगा। शरीर से काम, क्रोध आदि को दूर करो और ह्रदय प्रभु नाम रूप में लगा कर रखो। इस उपदेश को धारण कर लो तो आप को मुक्ति पद प्राप्त हो जाएगा।

श्री (गुरु) अर्जन देव जी ने लाहौर से पत्र लिखने

आप को लाहौर गए लगभग दो वर्ष हो गए थे, मगर आप को गुरु पिता जी की तरफ से कोई बुलावा न आया। तब आप ने अपने प्रेम भरे हृदय की तड़प को प्रगट करने के लिए गुरु पिता जी को चिट्ठी लिखी :

राग माझ : महला ५ चउपदे घरू १।।

१. मेरा मनु लोचै गुर दरसन ताई।। बिलप करे चात्रिक की निआई।। त्रिखा न उतरै सांति न आवै बिनु दरसन संत पिआरे जीउ।। १ ।। हउ घोली जीउ घोलि घुमाई गुर दरसन संत पिआरे जीउ।। १।। रहाउ।।

जब इस चिट्ठी का कोई उत्तर न आया तो आप ने दूसरी चिट्ठी लिखी :

२. तेरा मुखु सुहावा जीउ सहज धुनि बाणी।। चिरु होआ देखे सारिंग पाणी।। धंनु सु देसु जहा तूं वसिआ मेरे सजण मीत मुरारे जीउ।। २।। हउ घोली हउ घोल घुमाई गुरु सजण मीत मुरारे जीउ।। १।। रहाउ।।

जब इस दूसरी चिट्ठी का उत्तर न आया तो फिर आप जी ने तीसरी चिट्ठी लिखी :

३. एक घड़ी न मिलते ता कलियुगु होता।। हुणि कदि मिलीए प्रिअ तुधु भगवंता।। मोहि रैणि न विहावै नीद न आवै बिनु देखे गुर दरबारे जीउ।। ३।। हउ घोली जीउ घोलि घुमाई तिसु सचे गुर दरबारे जीउ।। १।। रहाउ।।

जब गुरु पिता जी ने यह चिट्ठी लिखी, तो इस में उनकी वेदना स्पष्ट रूप में अनुभव हो रही थी, गुरु जी ने जब यह चिट्ठीयाँ पढ़ी तो आप ने बाबा बुड्ढा को लाहौर भेज कर आप जी को गुरु के चक्क बुला लिया। गुरु के चक्क आ कर आप जी ने गुरु पिता जी के चरणों पर माथा टेका और मिलाप की खुशी में चौथा पद उच्चारण किया -

www.9009.co.in

४. भागु होआ गुरि संतु मिलाइआ।। प्रभु अबिनासी घर महि पाइआ।। सेव करी पलु चसा न विछुड़ा जन नानक दास तुमारे जीउ।। ४।। हउ घोली जीउ घोलि घुमाई जन नानक दास तुमारे जीउ।। रहाउ।। १।। ८।। (पृ० ९६-९७)

श्री (गुरु) अर्जन देव जी को गुरुगद्दी

गुरु पिता प्रथाए यह अति श्रद्धा और प्रेम प्रगट करने वाली यह मीठी बाणी सुन कर गुरु जी बहुत खुश हुए और आप जी को हर प्रकार गुरुगद्दी के योग्य समझ कर भाई बुड्ढा जी और भाई गुरदास आदि मुख्य सिक्खों से विचार करके आप ने भाद्रव सुदी एकम संवत् १६३९ को सब संगत के सामने पाँच पैसे और नारियल आप जी के आगे रख कर तीन परिक्रमा करके गुरु नानक जी की गद्दी को माथा टेक दिया। फिर सब सिक्ख संगत को कहा कि आज से श्री अर्जन देव जी गुरुगद्दी के मालिक हैं। इन को आप हमारा ही रूप समझना और सदा इन की आज्ञा में रहना।

बाबा पृथी चंद जी का झगड़ा

यह कारवाई देख कर पृथी चंद जी ने कहा- कि गुरुगद्दी पर मेरा बड़े पुत्र होने के नाते अधिकार है। आप ने अन्याय करके इसे श्री अर्जन जी को दे दिया है। और भी कई क्रोध के वचन कहे जिन्हें सुन कर श्री गुरु रामदास जी ने पृथी चंद जी को समझाया कि पिता के साथ पुत्र को झगड़ना नहीं चाहिए। इस प्रथाए गुरु जी ने यह शब्द उच्चारण किया —

सारंग मः ४।।

काहैं पूत झगड़त हउ संगि बाप। जिनके जणे बडीरे तुम हउ तिन सिउ झगरत पाप ।। १।। रहाउ।। जिसु धन का तुम गरबु करत हउ सो धनु किसहि न आप।। खिनु महि छोडि जाइ बिखिआ रसु तउ लागे पछुताप

www.9009.co.in

।। १।। जो तुम्हारे प्रभ होते सुआमी हरि तिन के
जापहु जाप।। उपदेसु करत नानक जन तुम कउ जउ
सुनहु तउ जाइ संताप ।। २।। १।। ७।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ० १२००)

जब इस तरह समझाने से भी बाबा पृथी चंद जी का क्रोध्र शांत न हुआ तो गुरु जी ने फिर एक और शब्द के द्वारा समझाया कि जिस के कर्मों में अकालपुरुष से ही लिखा हुआ हो, उस को ही भाग्यशाली वस्तु प्राप्त होती है। पहले गुरु साहिबान के समय यह वस्तु किसी ने बलपूर्वक प्राप्त नहीं की। सतिनाम का स्मरण करके मन को शाँत करना चाहिए। ईर्ष्या करने से कुछ हाथ नहीं आता। इस प्रथाए गुरु रामदास जी के द्वारा उच्चारण किया हुआ शब्द निम्नलिखित है—

सूही महला ४।।

तिन्ही अंतरि हरि आराधिआ जिन कउ धुरि लिखिआ लिखतु
लिलारा।। तिन की बखीली कोई किआ करे जिन का अंगु
करे मेरा हरि करतारा।। १।। हरि हरि धिआइ मन मेरे मन
धिआइ हरि जनम जनम के सभि दूख निवारणहारा ।। १।।
रहाउ।। धुरि भगत जना कउ बखसिआ हरि अम्रित भगति
भंडारा।। मूरखु होवै सु उन की रीस करे तिसु हलति पलति
मुहु कारा ।। २।। से भगत से सेवका जिना हरिनामु
पिआरा।। तिन की सेवा ते हरि पाइिऐ सिरि निंदक कै पवै
छारा।। ३।। जिसु घरि विरती सोई जाणे जगत गुर नानक
पूछि करहु बीचारा।। चहु पीड़ी आदि जुगादि बखीली किनै
न पाइिओ हरि सेवक भाई निसतारा।। ४।। १।। ८।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ० ७३३)

गुरु जी ने गोईंदवाल चले जाना

बाबा पृथी चंद जी का तीक्षण विरोध और झगड़ा देख कर गुरु जी ने बाबा बुड्ढा जी आदि बुद्धिमान सिक्खों को कहा कि हमारा

www.9009.co.in

अंत समय आ गया है, इस लिए हम गोईंदवाल जा कर अपना शरीर शन्ति से त्यागना चाहते हैं। दूसरे दिन प्रातःकाल ही गुरु जी श्री अर्जन देव जी और बीबी भानी जी सहित कुछ सिक्ख सेवकों को लेकर गोईंदवाल पहुँच गए। दूसरे दिन सुबह दीवान सजा कर गुरु जी ने संगत को वचन किया कि हमारा अंतिम समय आ गया हैं। हमारे पश्चात् आप सब ने श्री अर्जन देव जी को हमारा ही रूप समझ कर गुरु मानना। हम ने गुरु गद्दी इन्हें दे दी है।

बैकुंठ गमन

तद्उपरान्त सब परिवार और सिक्ख सेवकों को यथास्थान धैर्यव वाहिगुरु के हुक्म में रहने की आज्ञा देकर भाद्व सुदी तीज संवत् १६३९ को आप शरीर त्याग कर परम ज्योति में विलीन हो गए। इस प्रथाए अपने सवैइयों में हरबंस भट्ट ने कहा है—

देवपुरी महि गयउ आपि परमेस्वर भायउ ।।
हरि सिंघासणु दीअउ सिरी गुरु तह बैठायउ ।।

काटे सु पाप तिनु नरहु के गुरु रामदास जिनु पाइियउ।।
छत्रु सिंघासनु पिरथमी गुरु अरजन कउ दे आइियउ।। २।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिबः पृ० १४०९)

कुल आयु और गुरुगद्दी का समय

श्री गुरु रामदास जी कुल ४६ साल ७ दिन शरीर करके संसार में रहे। आप जी ६ साल ११ महीने १८ दिन गुरुगद्दी पर सुशोभित रहे।

कथा श्री गुरु रामदास जी समाप्त ।।

www.9009.co.in

१ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

श्री गुरु अर्जन देव जी पाँचवी पातिशाही

रामदासि गुरु जगत तारन कउ गुरु जोति सु अर्जन माहि धरी।।

अवतार धारण करना

श्री गुरु अर्जन देव जी ने १८ वैशाख ७ संवत् १६२० को श्री गुरु रामदास जी के घर बीबी भानी जी की पवित्र कोख से गोईंदवाल अपने ननिहाल घर में अवतार धारण किया।

दोहिता-बाणी का बोहिथा

आप जी अपने ननिहाल घर गोईंदवाल ही पोषित और जवान हुए। इतिहास में लिखा है कि एक दिन जब आप बालक के रूप में अपने नाना जी श्री गुरु अमरदास जी के पास खेल रहे थे तो आप गुरु नाना जी के पलंघ को पकड़ कर खड़े हो गए। जब बीबी भानी जी उन को पकड़ कर पीछे हटाने लगे, तो गुरु जी ने अपनी सुपुत्री को कहा बीबी ! यह अब ही गद्दी लेना चाहता है, मगर गद्दी इस को समय डालकर अपने पिता जी से मिलेगी। तद्उपरान्त गुरु जी ने दोनों हाथों से पकड़ कर आप को प्यार के साथ ऊपर उठाया और आप जी का भारी शरीर देख कर वचन किया कि जगत् में यह भारी गुरु प्रक्ट होगा। बाणी का जहाज तैयार करेगा, जिस पर चढ़ कर अनेक प्रेमियों का उद्धार होगा। इस प्रथाए आप जी का वरदान वचन प्रसिद्ध है—

"दोहिता बाणी का बोहिथा ।।"

www.9009.co.in

पिता गुरु जी से यह वचन सुन कर बीबी जी ने बालक अर्जन जी को उठा कर पिता जी के चरणों पर माथा टेका फिर प्रसन्नता से बालकको अपनी गोदी में लेकर बैठ गई।

इस तरह बालक श्री अर्जन देव जी ननिहाल घर अपने मामों श्री मोहण जी और मोहरी जी के घर में बच्चों के साथ खेलते और विद्या ग्रहण करते रहे।

श्री अर्जन देव जी की शादी

जब आप की उमर १६ वर्ष की हो गई, तो २३ आषाढ़ संवत् १६३६ को आप जी की शादी तहिसील फिलौर के मऊ नामक गाँव के निवासी श्री कृष्ण चंद जी की सुपुत्री श्री गंगा जी के साथ हो गई। आप जी की शादी के स्थान पर एक बहुत ही सुन्दर गुरद्वारा बना हुआ है। इस गाँव में कुछ पानी की कमी के कारण आप जी का लगवाया हुआ एक कूआं भी आज तक उपलब्ध है।

गुरुगद्दी का तिलक

श्री गुरु रामदास जी ने श्री अर्जन देव जी को हर तरह से गुरुगद्दी के योग्य समझ कर भाद्रव सुदी एकम (असूज २) संवत् १६३९ बिक्रमी मुताबक पहली सितम्बर सन् १५९१ को गोईंदवाल जाकर गुरुपद का तिलक दे दिया और आप भाद्रव सुदी तीज को पाँच तत्त्व शरीर को त्याग कर अपने आत्मिक स्वरूप में विलीन हो गए।

हरबंस भट्ट अपने सवैये में लिखता है —

हरिबंस जगति जसु संचर्यउ सु कवणु कहै स्री गुरु मुयउ
।। १।। देव पुरी महि गयउ आपि परमेसुर भायउ ।। हरि
सिंघासणु दीअउ सिरी गुरु तह बैठायउ।।

(स्री गुरु ग्रथ साहिब, पृ० १४०९)

बाबा पृथी चंद का विरोध और श्री गुरु अर्जन साहिब जी का धैर्य

गुरु जी की तेहरवीं वाले दिन जब सभी सम्बन्धी इकट्ठे होकर श्री अर्जन देव जी को पगड़ी बांधने लगे, तो प्रिथी चंद जी ने कहा कि पगड़ी बांधने का मेरा हक्क है, मैं बड़ा लड़का हूँ, उस समय बाबा बुड्ढा जी बुद्धिमान सिक्खों और बाबा मोहरी जी आदि सम्बन्धियों ने श्री गुरु रामदास जी की आज्ञा के अनुसार पगड़ी श्री गुरु अर्जन देव जी को बंधवानी चाही, परन्तु आप जी ने झगड़े में न पड़ने के लिए पगड़ी पकड़ कर प्रिथी चंद जी को दे दी और कहा कि आप बड़े भाई हो, पगड़ी आप ही बाँधों, मैं दास हूँ।

प्रिथी चंद जी ने कोध करके अमृतसर आना

तद्उपरान्त जब सिक्ख संगत ने श्री गुरु अर्जन देव जी को गुरु मान कर भेंट अर्पण की और माथा टेका, तो इसे प्रिथीचंद जी अपना अपमान समझ कर क्रोध से उठ कर अमृतसर आ गया।

प्रिथीचंद जी का सुलही खां को मिलना

इन दिनों जहांगीर बादशाह का उमराव सुलही खां दिल्ली से लाहौर को जा रहा था। प्रिथीचंद जी उस को बड़े चाव से आगे होकर मिले और बताया कि इस समय श्री गुरु नानक देव जी की ग़द्दी पर मैं आसीन हूँ। आप मुल्क के बादशाह हैं। हमें आपिस में मेल-मिलाप रखना चाहिए। इस बात से सुलही खां ने प्रिथीचंद जी को एक घोड़ा चांदी के ज़ेवरों से सजाया हुआ और कुछ नकद भेंट देकर बहुत सम्मानित किया। यह मेल-मिलाप करके सुलही खां आगे लाहौर को चला गया और प्रिथीचंद खुशी-खुशी डेरे गुरु के चक्क आ गया।

www.9009.co.in

श्री गुरु अर्जन देव जी अपने मामे मोहण जी और मोहरी जी से आज्ञा लेकर गोईंदवाल से गुरु के चक्क आ गए।

भाई गुरदास जी का आगरे से आना

उधर जब भाई गुरदास जी ने आगरे में सुना कि श्री गुरु रामदास जी ज्योति-ज्योत समा गए हैं तो वह आगरे से अपने साथ कुछ सिक्खों को लेकर अमृतसर को चल पड़े। जब आप जी व्यास नदी के किनारे पहुँचे तो व्यास नदी का पानी बहुत चढ़ा हुआ देख कर उस ने विचार किया कि इस समय जब यहाँ से पार होने का कोई साधन नहीं है, तो गुरु जी का यह वचन है कि—

गुरु का वचन बसै जीअ नाले।। जलि नही डूबै
तसकरु नहीं लेवै भाहि न साकै जाले ।। १ ।। रहाउ ।।

इस वचन के सहारे हमें पार हो जाना चाहिए। तद्उपरान्त भाई जी संगत सहित सतिनाम का जाप करते हुए नदी से पार होकर गोईंदवाल आ गए।

गोईंदवाल सब से मिल कर परिवार का कुशलमंगल पूछ कर भाई जी तीसरे दिन गुरु के चक्क श्री गुरु अर्जन देव जी के पास आ गए। गुरु जी का दीवान लगा हुआ था। पहले भाई जी ने आप जी को नमस्कार किया और फिर सारी संगत ने, जो भाई जी के साथ आगरे से आई हुई थी ने गुरु जी को माथा टेका। गुरु जी ने सब को यथायोग्य आदरसहित अपने पास दीवान में बैठा कर भाई जी से कुशलमंगल पूछा और भाई जी ने गुरु रामदास जी के विछड़ने का बहुत दुख प्रक्ट किया।

गुरु का लंगर और नमकीन रोटियाँ

तद्उपरान्त जब भोजन करने का समय हुआ, तो लांगरी सिक्ख थाल में चने की दाल नमकीन चने के आटे की दो-दो

www.9009.co.in

रोटियाँ रख कर गुरु जी और भाई गुरदास जी के लिए ले आया। भोजन करके भाई जी ने पूछा, महाराज ! गुरु के लंगर में इस तरह का नमकीन अन्न मिला है। इस का क्या कारण है ?

गुरु जी ने कहा इस का कारण अपनी बहिन (माता भानी) जी से पूछ लो। जब भाई जी ने लंगर में जाकर बीबी जी को पूछा कि बहिन जी गुरु के लंगर में चने की दाल और आटे की रोटी मिलती है इस का क्या कारण है ?

बीबी जी ने बताया कि प्रिथीचंद जी और महादेव जी संगत को प्रेरित करके उन से सारी कार भेंट लेकर सम्भाल लेते हैं। गुरु के लंगर में कुछ नहीं देते, जिस कारण लंगर की यह दशा है।

भाई गुरदास जी ने संगत को प्रेरित करना

यह बात बीबी जी से सुन कर भाई जी ने विचार किया कि उद्यम (उत्साह) के बिना कुछ नहीं बन सकता। इस सम्बन्ध में हमें ही कुछ उद्यम करना चाहिए। यह विचार करके एक दिन भाई जी अपने साथ पाँच सात सिक्खों को गुरु के चक्क से तीन चार कोस पश्चिम दिशा, जिस रास्ते काबल कंधार और पोठोहार आदि इलाकों की संगत गुरु जी के दर्शन करने आती थी, जा बैठे। एक चबूतरा बना कर उस पर एक चादर बिछा कर मोरपंख रख कर बैठ गए। जब काबल कंधार की कुछ संगत आई, तो उन्हों ने पूछा यह स्थान किस का है ? भाई जी ने बड़े प्रेम से बताया कि इस समय गुरु गद्दी पर श्री गुरु रामदास जी के छोटे सुपुत्र श्री अर्जन देव जी सुशोभित हैं। इन को ही गुरु जी ज्योति-ज्योत समाते समय गुरुगद्दी पर बैठा गए हैं। परन्तु उन के बड़े भाई अपने आप को गुरु बता कर सिक्ख संगत की सारी कार भेंट ले लेते हैं, और गुरु के लंगर के लिए कुछ नहीं देते। जिस कारण गुरु का लंगर

www.9009.co.in

मस्ताना रहता है और बाहर से आई संगत को बहुत कष्ट होता है। यहाँ दी हुई आपकी कार-भेंट श्री गुरु अर्जन देव जी को अर्पण होगी। जिस से गुरु का लंगर चलेगा और आपकी मनोकामनाएँ पूरी होंगी। इस प्रकार भाई जी की प्रेरणा से गुरु जी की कार-भेंट गुरु के लंगर में आने लगी। जिस से लंगर में पहले गुरु घर के लंगर की मर्यादा के अनुसार खीर कढ़ाह आदि अटूट बँटने लगा।

बाबा प्रिथीचंद का भाई गुरदास के प्रति क्रोध

जब इस प्रकार भाई गुरदास जी सिक्ख संगत को प्रेरित करके उन की भेंट श्री गुरु अर्जन देव जी के पास ले आए, तो प्रिथी चंद जी ने भाई जी को 'गुरु मारिआ' आदि कड़वे वचन कह कर बुरा भला भी कहा। भाई जी ने प्रिथी चंद जी को कहा कि अगर मैं अपने लोभ लालच के लिए अयोग्य बात करता हूँ, तब मुझे आपके वचनों से कष्ट होगा। परन्तु अगर मैं सार्थक काम कर रहा हूँ, तो फिर आपका कहना व्यर्थ जाए, और मुझे कोई दुख क्लेष न हो।

श्री प्रिथीचंद जी और महादेव जी को गुज़ारा मिलना

तद्उपरान्त संगत की ओर से सारी कार-भेंट जब गुरु जी के पास जाने लगी, तो प्रिथीचंद जी और श्री महादेव जी ने कहा कि इस कार-भेंट में से हमें अपने गुज़ारे के लिए हिस्सा मिलना चाहिए। तब श्री गुरु अर्जन देव जी ने श्री प्रिथीचंद जी को 'गुरु के बाज़ार' की दूकानों का किराया और बाज़ार की आढ़त की आमदनी दे दी और श्री महादेव जी को चौक पासियाँ की दूकानों की आढ़त की आमदनी गुज़ारे के लिए कह दी। इस प्रकार कार-भेंट सारी गुरु जी के पास आने लगी, जिस से गुरु का लंगर और गुरु घर के और खर्च का निर्वाह होने लगा और तीनों भाई मिल-जुल कर 'रामदास पुर' में रहने लगे।

www.9009.co.in

मिहरवान का जन्म

कुछ समय के बाद बाबा प्रिथी चंद जी के घर लड़के ने जन्म लिया, जिस का नाम मिहरवान रखा गया। इस से श्री गुरु अर्जन देव जी बहुत प्यार करते थे और सुन्दर-सुन्दर कपड़े और गहने बनवा कर देते थे। अपने लड़के के साथ गुरु जी के इस प्यार से प्रभावित होकर बाबा प्रिथीचंद जी बहुत खुश हुए और अपने घर बातें करते थे कि अब मेहरबान ही श्री गुरु अर्जन देव जी के बाद गुरुगद्दी पर बैठेगा और गुरुगद्दी हमारे घर ही आ जाएगी।

गुरु तीर्थ की सेवा सब से उत्तम सेवा

एक दिन श्री गुरु अर्जन देव जी ने दीवान में संगत के साथ वचन किए कि शुभ काम करने इस तरह से अच्छे हैं परन्तु सब से उत्तम कूँआ लगवाना है, जहाँ हर एक प्राणी को पानी प्राप्त करके सुख मिलता है। कूएँ से ऊपर पुष्प सरोवर बनवाना है, जहाँ पशु, पक्षी और मनुष्य मात्र को सुख मिलता है। इस से भी ऊपर अच्छा काम तीर्थ स्थान और सरोवर रच कर उस के चारों ओर सीड़ियाँ तैयार कर देनी होती हैं। जिन सीड़ियाँ पर बैठ कर पुरुष मात्र स्नान और दान करते हैं और महा आन्नद प्राप्त करते हैं।

राजा मण्डी ने अमृतसर आना

इस के पश्चात् दुख भंजनी बेरी जिस के पास कच्चे तलाब में से नहा कर कौए सफेद हो गए थे और कुष्ट का रोग दूर हो गया था। वहाँ श्री गुरु रामदास जी ने सरोवर की रचना के लिए बहुत खुदाई करवाई थी। उस ओर संकेत करके आप जी ने वचन किया कि तीर्थ में से तीर्थ गुरु जी का रचा हुआ है जिस का महात्मय सब से बड़ा है। गुरुओं में से गुरु नानक जी हुए हैं, जिन की गद्दी पर हमारे पिता जी सुशोभित हैं। एक बार गुरु पिता जी ने वचन किया

था कि यह एक पुरातन तीर्थ है। जहाँ परमेश्वर ने आ कर निवास किया था और कहा था कि इस स्थान पर अन्य सभी देवताओं का निवास होगा और संगत लगा करेगी। इस तीर्थ के बराबर और कोई तीर्थ नहीं होगा। इस तीर्थ की सेवा हमारी होगी। इस कारण कोई सिक्ख उद्यम (उत्साह) करके पहाड़ी राजाओं के पास जाए और इस काम के लिए धन ला कर गुरु पिता जी की आज्ञा के अनुसार इस की सेवा कराए। जो सिक्ख सरोवर को तैयार करने में उद्यम (उत्साह) करेंगे, गुरु जी सदा ही उन के सहायक होंगे और उन का लोक परलोक सुधर जाएगा।

गुरु तीर्थ की महिमा

गुरु जी के वचन सुन कर कलिआने ने कहा महाराज! मेरे सिर पर अपना हाथ रखना मैं आपके भरोसे अपना काम करके आऊँगा। गुरु जी ने उसकी पीठ थापी और आशीर्वाद लेकर भाई कल्याणा मण्डी शहर पहुंच गया। कुछ दिन जब व्यतीत हो गए, तो भाई कल्याणे ने राजा से मिल कर उस को गुरु घर की महिमा बताई और गुरु जी के वचन बताए।

भाई कल्याणा

गुरु जी की महिमा सुन कर राजा भाई कल्याणे के साथ गुरु जी के दर्शन करने के लिए अमृतसर (रामदास पुर) आया। उस समय के दीवान में एक सिक्ख दक्षिणा ओंकार का पाठ कर रहा था। जब राजा ने पाठ करते सिक्ख से यह तुक सुनी कि 'लेख न मिटई हे सखी जो लिखिआ करतारि' तब राजा के मन में भ्रम उत्पन्न हो गया कि अगर परमेश्वर का लिखा हुआ लेख मिट ही नहीं सकता, तो फिर गुरु जी के दर्शन करने का क्या लाभ है ?

मण्डी के इस राजा का नाम हरी सैण था। जव दीवान की समाप्ती हुई, तो इस ने पूछा, महाराज ! इस तुक का -'लेख न मिटई हे सखी जो लिखिआ करतारि'- क्या मतलव है ? अगर लिखा मिट नहीं सकता, तो फिर आपके दर्शन करने का क्या लाभ है। गुरु जी ने कहा तुझे इस बात का खुद ही दो तीन दिन में पता चल जाएगा।

गुरु जी का यह वचन सुन कर राजा अपने डेरे पर चला गया और जब वह रात को सोया, तो उसने देखा कि उस ने मर कर एक चण्डाल के घर में जन्म लिया है। जवान होकर उस का विवाह हो गया। बच्चे पैदा हुए और वह गृहस्थी हो गया। समय के साथ उस की मौत हो गई।

इस स्वपनवार्ता के उपरान्त उस की नींद खुल गई। वह अपने स्वप्न को याद करके बड़ा हैरान और व्याकुल हुआ। दूसरे दिन राजा जब अपने मनोरंजन के लिस शिकार खेलने गया, तो उसने एक हरिण के पीछे घोड़ा दौड़ाया। हरिण दूर निकल गया और राजा कुछ देर आराम करने के लिए एक गाँव के नज़दीक एक वृक्ष के नीचे बैठ गया। वहाँ बैठा देख कर एक आदमी ने उस के सुपनाई घर जा बताया कि आपका आदमी बाहर वृक्ष कि नीचे बैठा है। उस ने बहुत सुन्दर राजाओं वाले कपड़े पहने हुए हैं और अपने पास एक बहुत सुन्दर घोड़ा बांधा हुआ है ।

यह बात सुनते ही उस का सारा स्वप्न परिवार और भी ओस-पड़ोस जिस ने सुना, उस के पास दौड़ कर आ गए। पुत्री, पुत्र, स्त्री राजा को पकड़ कर घर ले जाने के लिए बलपूर्वक यत्न करने लगे। उसकी एक अकेले की कोई पेश न गई । वह बहुत घबरा गया और अत्यन्त दुखी होकर अपने अन्दर ही अन्दर गुरु

www.9009.co.in

जी के आगे अरदास करने लगा कि महाराज! मुझे इस फाही से छुड़ाओ। मैं आपकी शरण आया हूँ और मुझे जो विपत्ति पड़ गई है, मुझे इस से बचाओ आदि बहुत प्रार्थना की, तो अन्तर्यामी सतिगुरु जी जो राजा का यह कौतुक रचनहार थे, शीघ्र ही अपने सिक्ख सेवकों के साथ वहाँ आ गए।

जब गुरु जी ने उन चण्डाल लोगों को पूछा कि आप ने इस को क्यों पकड़ा हुआ है? तब उन्होंने बताया कि हम इस के पुत्री-पुत्र हैं। यह हमारा बाप है। जो दो दिन पहले मर गया था। इस को हम लोग कबर में दबा कर आए थे। वहाँ से वह निकल कर सुन्दर कपड़े पहन कर यहाँ आ बैठा है और घर नहीं जाता। उन की बात सुनकर गुरु जी ने कहा कि यह आपका बाप नहीं है। आप अपने बाप की कबर खोद कर देख लो।

जब उन्होंने कबर खोद कर देखी, तो उस में अपने मुर्दा बाप की लाश को वैसे का वैसा पड़ा हुआ देखा। उन को यकीन हो गया कि यह हमारा बाप नहीं है। हमें इस की हमारे बाप से शक्ल सूरत मिलती देख कर गल्ती लग गई।

इस प्रकार राजा को जब मुक्ति मिल गई, तो डेरे आकर गुरु जी ने उसको कहा कि राजन! गुरु जी की शरण आने का यह लाभ हुआ है कि यहाँ मर कर जो तुमने चण्डाल योनि भोगनी थी, वह स्वप्न में ही तुमने भोग ली है। करतार का लिखा हुआ लेख भी न मिटा और सतिसंग में आने के कारण वह भोगा भी स्वप्न में ही गया। इस प्रकार दोनों ही बातें ठीक हो गई।

यह वचन सुन कर राजा ने गुरु जी के चरणों पर माथा टेका और गुरु घर का पक्का सेवक बन कर अमृत सरोवर की धन से बहुत सेवा की।

www.9009.co.in

संतोखसर की सेवा

श्री गुरु अर्जन देव जी ने अपने गुरु पिता जी के वचन याद करके कि हमारी सेवा इन तीर्थो की सेवा है, अमृत सरोवर की सेवा के पश्चात् संतोखसर तीर्थ की सेवा आरम्भ करने का विचार बनाया। इस सरोवर को पहले श्री गुरु रामदास जी ने आरम्भ कराया था। इस के खोदे हुए गड्ढे में वर्षा का पानी इकट्ठा हो गया था और चारों ओर बेरियों और वृक्षों के झुण्ड थे।

सेवा का यह विचार पक्का करके गुरु अर्जन देव जी कुछ प्रमुख सिक्खों को साथ लेकर इस के किनारे एक टाहली के नीचे आ बैठे। बहुत मज़दूरों और सिक्ख सेवकों को सरोवर को खोदने के लिए लगा दिया। उत्साह और प्रेम से दिन प्रति दिन खुदवाई हो रही थी। एक दिन मिट्टी के नीचे से एक गोलाकार मठ सा निकला, जिस में एक योगी समाधि लगा कर बैठा हुआ था। गुरु जी ने उस को मक्खन मिला कर केसर कस्तूरी की मालिश उस के सिर पैरों पर करा कर उस की समाधि खुलवाई, तो उस योगी ने बाबा बुड्ढा जी, जो गुरु जी के साथ उस के सामने खड़े थे, पूछा कि बताओ यह कौन सा युग है और आप कौन हैं। बाबा जी ने बताया कि यह कलियुग का समय है और श्री गुरु नानक देव जी की गद्दी पर पाँचवे गुरु अर्जन देव जी उस के पास खड़े हैं। यह बात सुन कर योगी ने कहा मेरा तप पूर्ण हो गया है। मेरे गुरु का मुझे वचन हुआ था कि जब कलियुग का समय आएगा और तुम गुरु अवतार के दर्शन करोगे, तब तेरा कल्याण होगा। अतः आज वह समय आ गया हं। मेरे मन को शांति मिल गई है। यह वचन करके योगी ने हाथ जोड़ कर गुरु जी को नमस्कार किया और अपना शरीर त्याग कर परमपद को प्राप्त हो गया।

www.9009.co.in

-तद्उपरान्त सरोवर की कार सेवा बड़े उत्साह से होती रही और फाल्गुण संवत् १६४५ में सम्पूर्ण करके इस को जल से भर दिया गया। सिक्ख संगत को इस में स्नान कर के शान्ति प्राप्त होने लगी। जिस टाहली के नीचे बैठ कर गुरु जी सरोवर की कार सेवा कराते थे, वहाँ पर आज गुरुद्वारा टाहली साहिब विद्यमान है।

गुरु जी के प्रसिद्ध प्रेमी सिक्खों की वार्ता

१. भाई मंझ (गुरु का बोहिथा)

भाई मंझ जिला जालन्धर का रहने वाला पीर नगाहे का उपासक था। सिक्खों से गुरु का यश सुन कंर यह एक बार अमृतसर आया। कुछ दिन गुरु जी की कथा उपदेश सुन कर इस ने प्रार्थना की कि महाराज ! मुझे भी अपनी सिक्खी बख्शाो । गुरु जी ने कहा, भाई सिक्खी बहुत कठिन है। तुम एक मुसलमान पीर का उपासक होकर सिक्खी कमा नहीं सकोगे। सिक्खी को धारण करना और कमाना बहुत कठिन है। भाई मंझ ने कहा आप वरदान दो, तो सिक्खी कमानी कठिन न होगी। आप कृपा करके सिक्खी का वरदान दो।

उस की श्रद्धा प्रेम को देख कर गुरु जी ने उस को सिक्खी की रहितमर्यादा बता कर उपदेश दिया कि अपने घर जा कर पीर खाना गिरा कर सिक्ख संगत की सेवा और सतिनाम का स्मरण किया करो। इस से अन्त समय आनन्द स्वरूप परमात्मा में विलीन हो जाओगे।

भाई मंझ यह उपदेश लेकर घर चला गया। उस ने पीरखाना गिरा कर सिक्ख संगत की सेवा और सतिनाम का स्मरण करना शुरु कर दिया। कुछ समय के बाद सिक्खी की रंगत प्राप्त करके

भाई मंझ फिर गुरु जी के पास अमृतसर आ गया। दिन-रात गुरु के लंगर और संगत की सेवा में जुट गया। वह लंगर के लिए जंगल से लकड़ी की गठड़ी लानी और संगत के बर्तन साफ करने और जल पानी की सेवा करता।

जब इस बात का गुरु जी को पता चला कि भाई मंझ कूएँ में गिरा हुआ गुरु-गुरु जप रहा है, तो आप उसी क्षण ही नंगे पाँव उधर चल पड़े। पीछे सिक्ख भी रस्से और गुरु जी का जोड़ा और घोड़ा ले कर दौड़ पड़े। वहाँ आ कर जब गुरु जी ने रस्से लटका कर भाई मंझ को कहा कि इस को पकड़ कर ऊपर आ जाओ, तो भाई मंझ ने कहा पहले गुरु के लंगर की लकड़ी की गठड़ी निकाल लो। मैं पीछे निकलूँगा। उस की श्रद्धा के अनुसार पहले लकड़ी की गठड़ी बाहर निकाल ली गई और फिर भाई मंझ आप रस्सा पकड़ कर बाहर निकला।

जब भाई मंझ कूएँ में से बाहर निकला, तो गुरु जी ने खुश होकर कहा, मंझ हम तेरी प्रेम भावना पर बहुत खुश हैं और जो माँगना है माँग लो। तेरा तप सार्थक पड़ गया है। मंझ ने हाथ जोड़ कर प्रार्थना की कि पातशाह ! मुझे सिक्खी बख्शो।

भाई मंझ की यह श्रद्धा पूर्ण प्रार्थना सुन कर गुरु जी ने अति प्रसन्न होकर उस को अपनी बाहों में लेकर कहा—

मंझ पिआरा, गुरु को, गुरु मंझ पिआरा।।
मंझ गुरु का बोहिथा, जग लंघणहारा।।

आप जी के पवित्र शरीर के साथ लगने के कारण मंझ को ऋद्धियों-सिद्धियों की प्राप्ति हो गई। गुरु जी से इस तरह वरदान प्राप्त करके, गुरु जी की आज्ञा से, भाई मंझ अपने परिवार में अपने घर चला गया और सिक्खी का प्रचार करता हुआ मोक्ष को प्राप्त हो गया।

www.9009.co.in

२. भाई बोहड़ू

एक दिन गोईदवाल गुरु जी के दीवान में एक बोहड़ू नाम का सुनार आया। गुरु जी को माथा टेक कर आप जी के सामने ही खड़ा रहा। गुरु जी ने पूछा, तुम क्या काम धंधा करते हो? उस ने कहा महाराज ! मैं सुनार का काम करके जीविका कमाता हूँ। गुरु जी ने कहा, कृत चाहे कोई भी हो, परन्तु धर्म-कर्म की कमाई होनी चाहिए। दस अंगुलियों की कमाई में जो प्रभु निमित्त कुछ दान पुण्य करता है, उस का मन निर्मल हो जाता है। नहीं तो बुरे कर्मो का फल अन्त को बुरा ही भोगना पड़ेगा और कोई साथी नहीं बनेगा। तुम अपने वंशगत् के काम को ईमानदानी से किया करो। बेईमानी को त्याग कर सुनार नेक कमाई में से भूखे प्यासे को अन्न जल दिया करो। तद्उपरान्त दुख-सुख में प्रभु का हुक्म मानना और सदा निःहंकार और न्रम बने रहना चाहिए। यही तेरे भले की बात है। यह उपदेश लेकर बोहड़ू अपने घर जाकर नेक कमाई करके गुरु प्रेम में अपना जीवन व्यतीत करने लगा।

३. भाई बहिलो

भाई बहिलो गाँव फफड़े तहसील बरनाला का रहने वाला था। वह नगाहे वाले पीर सखी सरवर का चेला था। हर साल संघ लेकर यह नगाहे (धौंणक) जिला गुजरांवाला जाता था। सिक्खों की ओर से गुरु जी की महिमा वह सुनता रहता था, जिस कारण एक बार वह गुरु जी के दर्शन करने के लिए तैयार हुआ और मन में यह धारण किया कि अगर पीर अपनी शक्ति से मुझे गुरु जी के पास जाने से किसी तरह हटा लेंगे, तो मैं समझ लूँगा कि पीर शक्तिवान हैं। परन्तु बिना किसी रुकावट या मन के मुड़ने से मैं

अगर सतलुज नदी से पार निकल गया, तो यह सखी सरवर वाला सारा भेस मैं दरिया की भेंट कर दूँगा और गुरु जी की शरण में पहुँच जाऊँगा।

यह धारण कर के बहिलो घर से चल पड़ा और जब सतलुज नदी पर जा कर बेड़ी में बैठ कर पार होने लगा, तो नदी के बीच में जाकर उस ने विचार किया कि गुरु जी के पास जाने से उस को पीर ने कोई रुकावट नहीं डाली और न मन को ही कोई प्रेरणा दी है कि मैं गुरु जी के पास न जाऊँ। तब उस ने पीर का पहरावा खूँडी (छड़ी) और खलड़ी नदी में फेंक दी और गुरु जी के पास अमृतसर आ गया।

उस समय संवत् १६४३ में गुरु जी सरोवर की सीड़ियों की सेवा करवा रहे थे। बहिलो ने आप जी के चरणों पर माथा टेका और प्रार्थना की कि मुझे अपनी सेवा में लगा लो। मैं आप जी की शरण आया हूँ।

गुरु जी ने कहा- भाई सिक्खो ! श्रद्धा से ही सारे काम पूरे होते हैं। श्रद्धा ही भक्ति का मूल है। इस कारण सब से पहले श्रद्धा रखनी चाहिए। फिर सभी मन वाँछित फल प्राप्त होते हैं।

यह वचन सुन कर बहिलो के मन में गुरु घर के प्रति श्रद्धा आ गई और वह गुरु जी के ईंटों के भट्ठे की सेवा में लग गया। जब उस को पता लगा कि ईंटें पकाने के लिए विष्ट आदि गली सड़ी खाद गुणकारी है, तो उस ने सारे शहर से विष्ट आदि इकट्ठा करके भट्ठों के पास ढेर लगा दिया।

जब इस से ईंटें बहुत पकीं, तो गुरु जी भाई बहिलो की निष्काम सेवा से बहुत खुश हुए और वचन किया कि 'भाई बहिलो सब से पहिलो'।

www.9009.co.in

गुरु जी के इस प्रसन्नतापूर्वक वचनों से भाई बहिलो का मन शुद्ध कंचन के समान बहुत निर्मल और पवित्र हो गया। नाम की रंगत से इस को ऋद्धियों-सिद्धियों की प्राप्ति हो गई और ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति हो गई।

४. भाई बुधू

लाहौर के रहने वाला, भाई बुधू गुरु घर एक श्रद्धालु सिक्ख था। एक बार जब गुरु जी लाहौर गए, तो बुधू ने गुरु जी के कुछ सिक्खों को भोजन के लिए निमन्त्रण दिया । जब लंगर बँट चुका और सिक्ख संगत खा कर तृप्त हो गई, तो बाद में एक और सिक्ख जो गुरु जी के साथ पंगत में शामिल नहीं हो सका था भोजन खाने के लिए आया। उस को बुधू के आदमियों ने अन्दर न जाने दिया। उस ने बाहर खड़े होकर जब अन्दर यह अरदास सुनी कि बुधू ने संगत को भोजन खिला कर बहुत खुश किया है। इस का भट्टा पक्का निकले, तो इस सिक्ख ने जिस का नाम लखू था, ऊँची-ऊँची आवाज़ में कहा बुधू का भट्टा कच्चा रहे।

तद्उपरान्त दूसरे दिन जब बुधू ने भट्टे में से ईंटें निकाल कर देखीं, तो वे सब कच्ची थीं। यह देख कर बुधू बहुत घबराया और गुरु जी के पास हाज़िर होकर बताया कि महाराज ! मेरा भट्टा तो कच्चा ही निकला है आप ने वचन किया था कि पक्का निकलेगा इस का क्या कारण है? गुरु जी ने कहा किसी जरूरतमंद सिक्ख को उस दिन भोजन नहीं दिया होगा। बुधू ने कहा, महाराज! एक सिक्ख उस समय आया था जब संगत प्रसादि खा चुकी थी और अरदास हो रही थी। उसने कहा था बुधू का भट्टा कच्चा रहे और कुछ नहीं। गुरु जी ने कहा, गुरु के सिक्खों का वचन अट्टल रहता है। वह फिर नहीं सकता। आगे से कोई ऐसा काम न करना कि

www.9009.co.in

संघ के लिए लंगर तैयार करके किसी सिक्ख को जो भोजन की आशा करके आए, उस को भूखा लौटा देना। अब तुम गुरु घर की शरण आ गए हो। इस कारण चिंता न करो तुम्हारी कच्ची ईंटें पक्की हुई के मूल्य पर बिक ही जाएँगी। सिक्खों की सेवा करते रहना।

गुरु जी का वचन मान कर बुधू को धैर्य हुआ। तद्उपरान्त कारण ऐसा बना कि बहुत वर्षा होने के कारण कोई भट्ठा तैयार न हो सका और शाही ठेकेदारों ने शाही किले की नींव भरनी थी। इस कारण उन्होंने बुधू की कच्ची ईंटें भी पक्की के भाव खरीद लीं और नींव भर दी। इस प्रकार गुरु जी ने अपने सिक्ख भाई लखू की लज्जा भी रख ली और अपना वचन भी सफल कर दिया।

५. काबल वाली माई

एक माई रोज़ ही सुबह अमृत सरोवर की कार सेवा करने आती और कार सेवा करते समय कभी-कभी अपना हाथ ऊपर करके हिलोर दे देती। जब संध्या का समय होता, तो वह संगत में से लोप हो जाती थी।

जब कुछ दिन इस तरह ही कार सेवा होती कुछ सिक्खों ने देखी, तो उन्होंने गुरु जी को बताया कि महाराज ! एक माई सुबह कार सेवा में शामिल हो जाती है। कार सेवा करती हुई कभी-कभी हाथ ऊपर को मारती है और संध्या समय पता नहीं कहाँ लुप्त हो जाती है। यह बात गुरु जी ने माई को बुला कर जब पूछी तो माई ने कहा महाराज ! मैं रोज़ काबल से सुबह आते समय अपने छोटे बच्चे को पंघूड़े में सुला आती हूँ, और सारा दिन गुरु घर का दीदार करके संध्या समय अपने घर काबल चली जाती हूँ। जो मैं कार सेवा करते समय हाथ ऊपर को मारती हूँ, यह मैं अपने बच्चे

के पंघूड़े को हिलोर देती रहती हूँ कि वह सोया रहे जाग कर रोए न।

यह बात सुन कर गुरु जी ने सिक्खों की तसल्ली के लिए माई को पूछा कि इतनी दूर काबल से किस तरह आती और जाती हो? माई ने कहा मैं अपने पतिव्रत धर्म के बल के कारण क्षण में ही यहाँ आ जाती और क्षण में ही अन्तर्ध्यान होकर वापिस घर पहुँच जाती हूँ। गुरु जी ने सिक्खों को कहा कि पतिव्रत धर्म में बड़ी शक्ति है। जो चाहो कर सक्ते हो। यह कोई आश्चर्य नहीं हैं।

६. गंगा राम ब्राह्मण

बठिंडे का रहने वाला एक ब्राह्मण गंगा राम एक बार ऊंटों पर बाजरा लाद कर बेचने के लिए अमृतसर आ गया। उस समय गुरु जी संतोखसर की सेवा करवा रहे थे। गंगा राम ने देखा कि यहाँ हज़ारों मज़दूर काम कर रहे हैं। यहाँ उस का बाजरा बिक जाएगा। वह गुरु के लंगर में से भोजन खा कर बड़ा खुश हुआ। एक दिन उस ने लंगर में से अनाज की कुछ कमी को देख कर अपना पाँच सौ मन बाजरा तोल कर लंगर में डाल दिया।

इतनी देर में वैसाखी का मेला आ गया। मेले पर जो संगत गुरु जी के दर्शन करने आई उनकी ओर से बहुत भेंट गुरु जी को अर्पण हुई। जिस में अनाज वस्त्र और नकदी पैसे इक्ट्ठे हो गए। मेले की समाप्ति के उपरान्त गुरु जी ने आज्ञा की कि गंगा राम का हिसाब करके उस को बाजरे का मूल्य दे दिया जाये।

जब गंगा राम को बाजरे का मूल्य ले लेने को कहा गया, तो उस ने कहा महाराज ! मैं आप जी की सेवा करके अपना जन्म सफल करना चाहता हूँ। बाजरे का मूल्य मैंने नहीं लेना। यह मेरी सेवा स्वीकार की जाए। मुझे अपना सिक्ख स्वीकार करके नाम

दान दे दिया जाये। उस की श्रद्धा और प्रेम को देख कर गुरु जी ने उस को चरण पाहुल और सतिनाम का उपदेश दे कर अपनी सिक्खी बख्श दी। सिक्खी प्राप्त करके गंगा राम रात-दिन एक करके गुरु जी की सेवा में लग गया। गंगा राम को सेवा का मेवा मिल गया। उस को ऋद्धियों-सिद्धियों की प्राप्ति हो गई। तद्उपरान्त वह उपने गाँव चला गया और जो वचन मुँह से कहता, वही पूरा हो जाता।

७. भाई अजब और अजायिब

श्री अमृत सरोवर की सेवा के समय डरोली भाई के रहने वाले दो सिक्ख भाई अजब और अजायिब बड़े प्रेम से सेवा करते थे। इन्होंने और भी कई सिक्खों को प्रेरित करके गुरु घर की सेवा में लगा कर सिक्खी धारण कराई। बाहर से आई संगत से पैसा इक्ट्ठे करके भी गुरु जी की सेवा में दे देते थे।

इन दोनों की सेवा से प्रसन्न होकर गुरु जी ने इन को तहसील ज़ीरा के गाँव धर्म कोट की सिक्खी बख्शी और गुरमति का प्रचार करने के लिए आज्ञा दी। इस प्रकार इन्होंने अपना जीवन सफल करके बहुत यश प्राप्त किया।

पंडित गंगाराम के वरदान से मूलचंद का जन्म

पंडित गंगाराम जो सिद्धियाँ प्राप्त करके अपने गाँव रहता था। उसकी स्नान, पानी आदि की सेवा बठिंडे नगर का रहने वाला भाई सिधीचंद बड़े प्रेम से करता रहता था। एक दिन उस की सेवा पर खुश होकर गंगाराम ने सिधी चंद को कहा कि तुम किस मनोरथ के लिए सेवा करते हो? जो इच्छा है माँग लो। सिधी चंद ने कहा महाराज ! मुझे पुत्र का वरदान बख्शो। पंडित गंगा राम ने कहा कि

गुरु घर की कृपा से तेरे घर बड़ा भक्त पुत्र होगा, जो कि महान् गुरु, शक्तिवान और परोपकारी होगा। इस लड़के के सिर पर जन्म समय ही सफेद बालों की चोटी होगी।

यह वरदान लेकर सिधी चंद बहुत खुश हुआ। जब समय पाकर उस के घर ऐसा पुत्र पैदा हुआ, तो पंडित गंगा राम ने उस का नाम मूल चंद रखा। यह मूल चंद बड़ी करनी वाला हुआ, जिस को बड़े सिद्ध पुरुष भी मानते थे। पटियाले राज्य के सुनाम नगर में इस स्थान को लोग आज तक भी पूजते हैं।

हरिमंदर की उसारी

जब सरोवर की कार सेवा सम्पूर्ण हो गई, तो गुरु जी ने भाई बुड्ढा भाई गुरदास, भगतू बहिलो आदि से सलाह करके कढ़ाह प्रसाद की देग तैयार करके सरोवर के बीच हरिमंदर की नींव रखने के लिए भाई बुड्ढा जी से चार गुरु साहिब का नाम लेकर अरदास कराई और फिर अपने कर कमलों से एक ईंट पकड़ कर नींव रख कर कढ़ाह प्रसाद की देग बाँटने की आज्ञा दी। तद्उपरान्त सभी लोग बड़े उत्साह से सेवा में लग गए।

विष्णु भगवान मनुष्य का रूप धारण करके कार सेवा करने आया

जब असंख्य सिक्ख कार सेवा कर रहे थे, तो उस समय गुरु जी दुख भंजनी बेरी के नज़दीक अठसठ तीर्थ के स्थान पर बैठ कर देख रहे थे। एक दिन विष्णु भगवान जी देवताओं सहित मानव रूप धारण करके सेवा करने आये। कोई देवता मिट्टी की टोकरियाँ भरता व कोई उठा कर बाहर लेजा रहा था। विष्णु भगवान की टोकरी उस के सिर से एक बालिश्त भर ऊँची जाती

देख कर सिक्खों ने गुरु जी को बताया कि महाराज ! एक नए ही रंग रुप का मनुष्य है, जिसके सिर पर मिट्टी की टोकरी बालिश्त भर ऊंची रहती है। उस के साथी और वह आप बड़ी स्फूर्ति से दौड़-दौड़ कर कार सेवा कर रहे हैं।

गुरु जी ने सिक्खों से यह वार्ता सुन कर जब आप आ कर उन के दर्शन किए, तो आप जी ने विष्णु भगवान के प्रथाए यह शब्द उच्चारण किया—

सूही महला ५ ।।

संता के कारजि आपि खलोइिआ हरि कंमु करावणि आइिआ राम।।
धरति सुहावी तालु सुहावा विचि अंमृत जलु छाइिआ राम।।
अंमृत जलु छाइिआ पूरन साजु कराइिया सगल मनोरथ पूरे।।
जै जै कारु भइिआ जग अंतरि लाथे सगल विसूरे।।
पूरन पुरख अचुत अबिनासी जसु वेद पुराणी गाइिआ।।
अपना बिरदु रखिआ परमेसरि नानक नामु धिआइिआ।। १ ।।

(स्री गुरु ग्रंथ साहिबः पृ० ७८३)

अपनी यह महिमा सुन कर विष्णु भगवान जी ने अर्शीवाद दिया कि यह मेरा सब से श्रेष्ठ मन्दिर होगा। यहाँ सदा ही मेरे नाम का कीर्तन प्रवाह चलता रहेगा। इस प्रकार वरदान और वचन करके विष्णु जी अलोप हो गए।

तरनतारन सरोवर की रचना

रामदासपुर (अमृतसर) में गुरु जी के पास अनेक सिक्ख आगे पीछे आ कर अपने भ्रम निवृत्त करके और नाम का उपदेश लेकर अपना जन्म सफल करते थे।

एक दिन गुरु जी ने अपने ननिहाल परिवार को मिलने के लिए गोईंदवाल जाने की तैयारी की और अपने साथ भाई बुड्ढा जी आदि कुछ वृद्ध सिक्खों को ले लिया। रामदासपुर से चल कर

www.9009.co.in

आप जी अब वाले तरनतारन वाले स्थान पर एक वृक्ष के झुण्ड के नीचे एक पानी के कच्चे सरोवर के किनारे आराम करने बैठ गए।

गुरु जी की महिमा सुन कर वहाँ कुछ कुष्ट दर्शन करने के लिए गए। उन्होंने प्रार्थना की कि सच्चे पातशाह ! हम इस रोग से बड़े दुखी हैं। हम पर कृपा करो, जिस से हमारा यह रोग दूर हो जाए। उनकी श्रद्धापूर्वक प्रार्थना स्वीकार करके इस स्थान के आस-पास के गाँव पलासौर और खारा के प्रतिष्ठित लोगों को बुला कर गुरु जी ने कहा कि इस स्थान पर हम एक तीर्थ का निर्माण करना चाहते हैं, जिस में स्नान करने से कोहड़ियों का कुष्ट रोग दूर होगा। गुरु जी का यह वचन मान कर उन्होंन गाँव के लोगों को एक लाख सतावन हज़ार रुपए दे कर गुरु जी को ज़मीन सौंप दी। तदउपरान्त गुरु जी ने १७ वैशाख संवत् १३४७ को सरोवर की खुदाई आरम्भ कर दी। इस को सम्पूर्ण करके संवत् १६५३ में तरनतारन नगर बसाया। सरोवर को पक्का करने के लिए जब पक्की हुई ईंटों के भट्टे पकाए, तो नूरदीन के पुत्र अमीरुदीन ने गुरु जी के भट्टों से ईंटें उठवा कर अपनी सराये (जो गाँव नूरदीन बन रही थी और ईंटें कम हो गई थीं) को लगा लीं। उसकी जबरदस्ती देख कर गुरु जी ने वचन किया। जहाँ यह ईंटें लगेंगी उन की जड़ें उखाड़ कर यह यहाँ ही आ जाएँगी। यह काज हमारे सिक्ख करेंगे।

गुरु जी के यह वचन सरदार जसा सिंह रामगड़ीए ने संवत् १९२३ में पूरे किए, जब उसने नूरदीन सरां और उस के मकान को गिरा कर उन ईंटों से ही तरनतारन के सरोवर के दो तरफ पक्के किए। सरोवर और मन्दिर की बाकी सेवा महाराजा रणजीत सिंघ और कंवर नौ निहाल सिंघ ने करवाई। कंवर ने एक मुनारा भी सरोवर के किनारे बनवाया, जो आज तक कायिम हैं।

गुरु अर्जन देव जी का जारी किया हुआ यहाँ कुष्ट के रोगों का एक आश्रम भी है। गुरु जी का कथन हैं कि इस सरोवर में स्नान करके कुष्ट रोग ठीक हो जाया करेगा।

भाई हेमे के पास छापड़ी गाँव

अमीरुदीन की ज़बरदस्ती के कारण गुरु जी सरोवर की सेवा को छोड़ कर भाई हेमे के पास गाँव छापड़ी चले गए। भाई हेमे ने अपनी झोंपड़ी गाँव से बाहर डाली हुई थी, जिस पर खुश होकर गुरु जी ने यह शब्द उच्चारण किए—

राग सूही महला ५ घरु ४।।

भली सुहावी छापरी जा महि गुन गाए ।। कितही कामि न धउलहर जितु हरि बिसराए ।। रहाउ।। अनदु गरीबी साध संगि जितु प्रभु चिति आए।। जलि जाउ एहु बडपना माइिआ लपटाए।। १।। पीसनु पीसि ओढि कामरी सुखु मनु संतोखाए।। ऐसो राजु न कितै काजि जितु नह त्रिपताए।। २।। नगन फिरत रंगि एक कै ओहु सोभा पाए ।। पाट पटंबर बिरथिआ जहि रचि लोभाए।। ३।। सभु किछु तुमरै हाथि प्रभ आपि करै कराए।। सासि सासि सिमरत रहा नानक दानु पाए।। ४।। (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ० ७४५)

यहाँ से चल कर गुरु जी सरहाली गाँव चले गए और कुछ दिन नाम बाणी का उपदेश देते रहे। यहाँ गुरद्वारा चुब्बा साहिब बना हुआ है।

चोला भोजन

सरहाली से गुरु जी भैणी गाँव की संगत के उद्धार के लिए वहाँ गए। इस गाँव की एक श्रद्धालु माई गुरु जी को प्रतिदिन चूरी खिलाती, जिस पर प्रसन्न होकर गुरु जी ने वचन किया कि यह

www.9009.co.in

गाँव जहाँ घी चीनी का सानिग्ध भोजन रोज़ ही मिलता है। भैणी नहीं चोला है। इस प्रथाए गुरु जी ने शब्द उच्चारण किया—

धनासरी महला ५ ।।

बारि जाउ गुरु अपुने......
सीतल सांति महा सुखु पाइआ संत संगि रहिओ ओल्हा।।
हरि धनु संचनु हरिनामु भाजनु इहु नानक कीनो चोल्हा।। ४।।

(स्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ० ७७२-७३)

आप जी के इन वचनों के कारण गाँव का नाम भैणी से बदलकर 'चोला साहिब' प्रसिद्ध हो गया। गुरु जी ने यहाँ बहुत दिन निवास किया, जिस की याद में यहाँ एक सुन्दर गुरद्वारा बना हुआ है। गाँव के अन्दर माता जी का एक स्थान है।

डल्ले गाँव

चोले गाँव से चल कर गुरु जी गोईंदवाल से होते हुए व्यास नदी को पार करके डल्ले गाँव चले गए। गुरु जी इस गाँव ही ठहरे हुए थे कि जालन्धर का सूबा सयैद अजीम खां जो इन गाँवों के दौरे पर चढ़ा हुआ था, उस ने जब गुरु जी की महिमा सुनी कि आप की हिंदू मुस्लमानों को बराबर उपदेश देते हैं, तो वह दर्शन करने के लिए डल्ले गाँव आया। आप जी के दर्शन और उपदेश के कारण बहुत प्रभावित होकर सूबे ने प्रार्थना की कि महाराज ! आपके मत में हिन्दू मज़हब अच्छा है या मुसलमान? इस के उत्तर में गुरु जी ने यह शब्द उच्चारण किया—

रामकली महला ५ ।।

कारन करन करीम।। सरब प्रतिपाल रहीम।। अलह अलख
अपार।। खुदि खुदाई वड बेसुमार।। १।। ओनमो भगवत
गुसाई।। खालकु रवि रहिआ सरब ठाई ।। रहाउ।।

जगंनाथ जगजीवन माधो।। भउ भंजन रिद माहि अराधो।।
रिखीकेस गोपाल गोविंद।। पूरन सरबत्र मुकंद।। २।।
मिहरवान मउला तूही एक।। पीर पैकांबर सेख।। दिला का
मालुक करे हाकु।। कुरान कतेब ते पाकु।। ३।। नाराइण
नरहर दइिआल ।। रमत राम घट घट आधार।।
बासुदेव वसत सभ ठाई ।। लीला किछु लखी न जाई।।
४।। मिहर दइिआ करि करनैहार।। भगति बंदगी देहि
सिरजणहार।। कहु नानक गुरि खोए भरम।। ऐको अलहु
पारब्रहम।। ५।। (स्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ० ८९६-९७)

गुरु जी ने बताया कि राम रहीम अलह नारायण आदि सब नाम एक सृजनकर्त्ता के हैं। सब हिन्दू-मुसलमानों में एक वही सृजनकर्त्ता है। इन में कोई फ़र्क नहीं है। सब मज़हब और नाम अच्छे हैं।

करतारपुर नगर की नींव रखनी

यह सरब सांझा उपदेश सुन कर सूबे ने प्रार्थना की कि महाराज ! आप अपना निवास सदा के लिए ही दोआबे में कर लो। मैं आप जी को निवास के लिए जालन्धर शहर के नज़दीक जगह दे देता हूँ। यह बात करके सूबा गुरु जी को अपने साथ ही ले गया और उस ने एक जगह दिखाई, जिसे गुरु जी ने पसन्द करके २१ मघहर संवत् १६५१ को एक बड़ी मोटी लम्बी टाहली का थम्मा तैयार करवा कर उस को गाँव के प्रारम्भ के रूप में गाड़ लिया। यह मोहड़ी रूप थम्म बाद में थम्म साहिब करके बड़ा प्रसिद्ध हो गया। नगर का नाम गुरु जी ने करतारपुर रखा। बाद में संवत् १६५७ में गुरु जी ने यहाँ माता गंगा जी के नाम से एक कूँआँ लगवाया, जिस का नाम गंगासर प्रसिद्ध है।

www.9009.co.in

वडाली निवास
(श्री गुरु हरिगोविंद जी ने अवतार धारण करना)

करतारपुर की नींव रख कर और कुछ घरों के निर्माण का काम आरम्भ करके गुरु जी वापिस अमृतसर आ गए और दूर-दूर से दर्शन अभिलाषी आ कर अपनी मनोकामनाएं पूरी करके आनन्दित होते थे।

बाबा बुड्ढा जी के वचनों के कारण जब माता गंगा जी गर्भवती हो गए, तो घर में बाबा पृथीचंद के नित्य के विरोध के कारण समय को विचार कर गुरु जी ने अमृतसर से पश्चिम दिशा वडाली गाँव जा कर निवास किया। जब बालक का जन्म २१ आषाढ़ संवत् १६५२ को हुआ, तो दाई ने बालक के विषय में कहा कि आपको वधाई हो। आपके घर पुत्र ने जन्म लिया है। श्री गुरु अर्जन देव जी ने वधाई की खबर सुन कर अकाल पुरुष का धन्यवाद किया तथा इस शब्द का उच्चारण किया—

आसा महला ५ ।।

सतिगुरु साचै दीआ भेजि।। चिरु जीवनु उपजिआ संजोगि।।
उदरै माहि आइि कीआ निवासु।। माता कै मनि बहुतु बिगासु ।। १।।
जंमिआ पूतु भगतु गोविंद का।। प्रगटिआ सभ महि लिखिआ धुर का।।
रहाउ।। दसी मासी हुकमि बालक जन्मु लीआ मिटिआ सोगु महा अनंदु
थीआ।। गुरबाणी सखी अनंदु गावै।। साचे साहिब कै मनि भावै।।
२।। वधी वेलि बहु पीड़ी चाली।। धरम कला हरि बंधि बहाली।।
मन चिंदिआ सतिगुरू दिवाइिआ।। भए अचिंत एक लिव लाइिआ।।
३।। जिउ बालकु पिता ऊपरि करे बहु माणु ।। बुलाइिआ बोलै गुर
कै भाणि।। गुझी छंनी नाही बात।। गुरु नानकु तुठा कीनी दाति।।
४।।७।।१०१।। (श्री गुरु ग्रंथ साहिबः पृ० ३९६)

www.9009.co.in

छः हरटा कूआँ लगवाना

साहिबज़ादे के जन्म की खुशी में सतिगुरु जी ने वडाली गाँव के पास उत्तर दिशा में एक बड़ा कुआँ लगवाया, जिस पर छहरटा (टिंड़ों की छः माहलें) चल सकती थीं। गुरु जी ने छहरटे कूएँ को वरदान दिया कि जिस स्त्री के घर सन्तान न होती हो अथवा जिस की सन्तान मर जाती हो, वह स्त्री अगर नियम से बारह पंचमी इस के पानी से स्नान करे और वह नीचे लिखे दो शब्दों के ४१ पाठ करे तो उस की सन्तान चिरंजीवी होगी।

पहला शब्द— 'सतिगुरु साचै दीआ भेजि।।' जो ऊपर दिया गया है और दूसरा यह है—

बिलावलु महला ५।।

सगल अनंदु कीआ परमेसरि अपणा बिरदु सम्हारिआ।।
साध जना होए क्रिपाला बिगसे सभि परवारिआ।। १।।
कारजु सतिगुरि आपि सवारिआ।। वडी आरजा हरि गोबिंद
की सुख मंगल कलियाण बीचारिआ।। १।। रहाउ।। वण
त्रिण त्रिभवण हरिआ होए सगले जीअ साधारिआ।। मन
इछे नानक फल पाए पूरन इछ पुजारिआ।। २।। ५।। २३।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ० ८०६-०७)

गुरु जी का पुनः अमृतसर आ जाना

जब साहिबज़ादा श्री हरिगोबिंद जी दो साल के हो गए, तो समय को अपने अनुकूल विचार कर गुरु जी परिवारसहित अपने घर अमृतसर आ गए। घर में प्रवेश करके गुरु जी ने यह शब्द उच्चारण किया—

धनासरी महला ५।।

जिनि तुम भेजे तिनहि बुलाए सुख सहज सेती घरि
आउ।। अनंद मंगल गुन गाउ सहज धुनि निहचल राजु

www.9009.co.in

कमाउ।। १।। तुम घरि आवहु मेरे मीत।। तुमरे दोखी हरि आपि निवारे अपदा भई बितीत।। रहाउ।। प्रगट कीने प्रभ करनैहारे नासन भाजन थाके।। घरि मंगल वाजहि नित वाजे अपुनै खसमि निवाजे।। २।। असथिर रहहु डोलहु मत कबहू गुर कै बचनि अधारि।। जैजै कारु सगल भूमंडल मुख ऊजल दरबार।। ३।। जिन के जीअ तिनै ही फेरे आपे भइआ सहाई।। अचरजु कीआ करनैहारे नानक सच वडिआइ।। ४।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ० ६७८)

श्री हरिगोबिंद जी को सीतला निकलनी

कुछ समय के पश्चात् एक दिन श्री हरिगोबिंद जी को बुखार हुआ, जिस से सीतला निकल आई। सारे शरीर और चेहरे पर छाले ही छाले हो गए, जिस से माता जी और सिक्ख सेवकों को बहुत चिंता हो गई। गुरु जी ने सब को कहा कि बालक का रक्षक गुरु नानक आप है, चिंता न करो बालक स्वस्थ हो जाएगा।

जब कुछ दिनों के पश्चात् सीतला का प्रकोप धीमा पड़ गया और बालक ने आँखें खोलीं, तो गुरु जी ने परमात्मा के धन्यवाद के रूप में शब्द का उच्चारण किया—

राग गउड़ी महला ५।।

नेत्र प्रगास कीआ गुरदेव।। भरम गए पूरन भई सेव ।। १।। रहाउ।। सीतला ने राखिआ बिहारी।। पारब्रहम प्रभ किरपा धारी।। १।। नानक नामु जपै सो जीवै।। साध संगि हरि अंमृतु पीवै।। २।। १०३।। १७२।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ० २००)

बाबा पृथीचंद जी ने हेहर गाँव में दुख निवारण सरोवर लगवाना

बाबा पृथीचंद जी को जब पता लगा कि सुलही खां दिल्ली से माझे देश का मामला (कर) वसूल करने के लिए हेहर गाँव, जो इन के ससुर का गाँव था, ठहरा हुआ है, तो इन्होंने वहाँ पहुँच कर सुलही खां की मदद से गाँव के पास ही दो फर्लांग पर उत्तर दिशा में एक सरोवर लगवाया और उस का नाम दुख निवारण रखा। सुलही खां ने हैहर गाँव की जागीर का इन को पटा लिख दिया और आवासी मकानों तथा सरोवर के लिए खर्च भी दिया।

ठाकर पूज पण्डित को उपदेश

श्री अमृत सरोवर की परिक्रमा में एक पण्डित पत्थर की मूर्ति (ठाकर) को आगे रख कर कथा किया करते था। एक दिन गुरु जी जब उस से स्वयंमेव ही आगे निकल गए, तो पण्डित ने अपने श्रोताओं को कहा कि गुरु जी मुझे तथा ठाकुर को नमस्कार किए बिनाँ ही चुप-चाप आगे निकल गए हैं। गद्दी पर बैठ कर यह अभिमानी हो गए हैं। इस तरह पण्डित को क्रुद्धित देख कर, गुरु जी ने उस को उपदेश के रूप में यह शब्द उच्चारण किया—

रामकली महला ५ ।।

मुख ते पड़ता टीका सहित।। हिरदै रामु नही पूरन रहत।।
उपदेसु करे करि लोक द्रिड़ावै।। अपना कहिआ आपि न कमावै।। १।।
पंडित बेदु वीचारि पंडित।। मन का क्रोधु निवारि पंडित।। १।।
रहाउ।। आगै राखिओ सालिगरामु ।। मानु कीनो हदसि बिसामु।।
तिलकु चरावै पाइि पाइि ।। लोकु पचारा अंधु कमाइि।। २।।
खटु करमा अरु आसणु धोती।। भागठि ग्रिहि पड़ै नित पोथी।।
माला फेरै मंगै बिभूत।। इिह बिधि कोंइि न तरिओ मीत।। ३।।

सो पंडितु गुर सबदु कमाइि।। त्रै गुण की ओसु उतरी माइि।।
चतुर बेद पूरन हरि नाइि।। नानक तिसकी सरणी पाइि।।४।।
(स्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ० ८८७-८८)

गुरु जी का यह सद उपदेश सुन कर पण्डित ने कहा महाराज! संस्कृत में लिखी हुई वाणी को पढ़ कर हर कोई ब्रह्म विद्या को पढ़ लेता है। परन्तु यह वाणी जो आप ने भाषा में लिखी हुई है इस का क्या लाभ है ? गुरु जी ने कहा पण्डित जी ! भाषा संस्कृत का एक जरूरी अंग है, जिस को हर कोई समझ कर अपना जीवन सुधार लेता है। संस्कृत को भाषा की बहुत ज़रूरत है परन्तु भाषा को संस्कृत की ज़रूरत नहीं है।

यह विचार सुन कर पण्डित ने कहा महाराज ! मुझे भी अपना सिक्ख बना लो। आप जी के सच्चे वचनों का मुझ कर बहुत प्रभाव पड़ा है। गुरु जी ने वचन किया कि लिव लगा कर सतिनाम का स्मरण किया करो, तुम्हारा कल्याण हो जाएगा।

शहर के बाणियों की प्रार्थना

एक दिन गुरु बाज़ार के दूकानदार मिल कर गुरु जी के पास आए और प्रार्थना की कि महाराज ! आप जी ने बड़ी कृपा करके हमें बसाया है और काम-काज पर लगाया है। पर यहाँ न कोई ग्राहक आता है और न ही कोई वणिज ही होता है। हमें गुजरान करनी बहुत कठिन हो रही है। गुरु जी ने वचन किया :

भाई ! आप नित्य सुबह दरबार साहिब आकर माथा टेक कर फिर अपनी दूकानें खोल कर व्यवहार किया करो। आपको कोई कमी नहीं आएगी। आपका काम-काज बहुत चल पड़ेगा।

www.9009.co.in

बीबी भानी जी का परलोक गमन

श्री गुरु अर्जन देव जी की माता बीबी भानी जी संवत् १६५५ में गोईंदवाल परलोक गमन कर गए। गुरु जी ने माता जी की याद में बड़ा भारी यज्ञ किया।

गुरु जी का लाहौर जाना

संवत् १६५६ बिक्रमी में गुरु जी को लाहौर की संगत बड़े प्रेम से लाहौर ले गई। डब्बी बाज़ार में भाई करम चंद धर्म की धर्मशाला में आप जी का स्वागत किया गया। शहर के स्त्री पुरुष दर्शन करने के लिए बड़ी श्रद्धासहित आने लगे। रोज़ गुरु जी के हजूर शब्द कीर्तन कथा उपदेश होता और आठों पहर सतिसंग होता रहता। कभी-कभी गुरु जी चूना मण्डी दीवान खाने (जहाँ आप ने सोढ़ी सहारी मल के पुत्र के विवाह पर आकर कुछ महीने ठहर कर संगत को निहाल किया था) चले जाते थे । डब्बी बाज़ार के निवासियों को पानी की तंगी करके आप जी ने यहाँ एक बाउली तैयार करवा दी।

यहाँ ठहरते समय आप जी के पास भक्त छजू कान्हा, शाह हुसैन, पीलू और भीलो वालीआ शेख सुलेमान आदि अनेक श्रद्धालु सतिसंग करने आए।

संमन और मूसन का प्रेम

संमन और मूसन पिता पुत्र गाँव शाहबाजपुर के रहने वाले लाहौर शहर में अपनी आजीविका के लिए मजदूरी करते थे।

एक दिन उन्होंने भी संगत की देखा-देखी गुरु जी को संगत समेत भोजन के लिए प्रार्थना की। परन्तु जब इन्होंने देखा कि संगत के लिए पूरी रसद खरीदने के लिए उन के पास पैसे नहीं है और प्रबन्ध भी नहीं हो सकता, तो इन्होंने रात को एक शाहूकार

www.9009.co.in

के कोठे की छत फाड़ कर छेद कर लिया। इस छेद में मूसन नीचे उतर कर अपनी ज़रूरत की चीज़ें घी, शक्कर और आटा आदि अपने बाप को ऊपर पकड़ाता गया। सब चीजें ऊपर पकड़ा कर जब मूसन ऊपर निकलने लगा, तो घर वालों की नींद खुल गई और उन्होंने नीचे मूसन की टाँगें पकड़ लीं। तब मूसन ने कहा पिता जी ! आप मेरा सिर काट कर ले जाएँ, अगर आप इस प्रकार न करोगे तो लोग मुझे सिर से पहचान लेंगे और कहेंगे, गुरु के सिक्ख चोर हैं। गुरु जी के नाम को धब्बा लगाना अच्छा नहीं होगा। यह सलाह मान कर समन अपने पुत्र मूसन का सिर काट कर घर ले गया।

उधर जब शाहूकार ने बिना सिर के मुर्दा देखा, तो वह यह सोच कर कि यह कत्ल मेरे जुमे लग जाएगा, दौड़ा दौड़ा संमन के पास गया और कहा किमैं तुम्हें बहुत पैसे दूँगा, मेरे घर से एक मुर्दे की मृतदेह उठवा कर ऐसी जगह फैंक आओ, जहाँ इसे कोई न देख सके।

संमन शीघ्र ही शाहूकार के घर से अपने बेटे मूसन की मृतदेह उठा लाया और उस को अपने घर के पीछे वाले कमरे में उस का सिर जोड़ कर ऊपर कपड़ा डाल कर रख दिया। तद्उपरान्त उसी समय वापिस जा कर शाहुकार से अपनी ज़रूरत के अनुसार पैसे ले लिए और दिन निकले उन पैसों की रसद लेकर गुरु जी और संगत के लिए हलवाई बुला कर लंगर तैयार करवा लिया। गुरु जी संगतसहित आ गए। पंगतें लग गई। सब को भोजन परोस दिया गया, तो गुरु जी ने संमन को पूछा कि मूसन कहाँ हैं। वह संगत की सेवा में शामिल क्यों नहीं हुआ ? जब संमन ने कोई उत्तर न दिया, तो उस को चुप देख कर गुरु जी ने मूसन को आवाज़ दी कि आ कर संगत की सेवा करे। गुरु जी की आवाज़ सुन कर

www.9009.co.in

मूसन हाज़िर हो गया और गुरु जी के चरणों पर माथा टेक हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया।

इन बाप बेटों की परम श्रद्धापूर्वक करनी को देख कर गुरु जी संमन को सम्बोधित करके बोले :-

चउबोले महला ५ ।।

संमन जउ इस परेम की दमकिहु होती साट।।
रावन हुते सु रंक नहि जिनि सिर दीने काट।। १ ।।

(स्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ० १३६३)

अर्थात- हे **संमन सिक्ख** ! जो प्रेम तुमने दिखलाया है, अगर इस के (साट) बदलाव (दमकिहु) पैसों के साथ हो सकता होता, तो फिर लंकापति रावण कंगाल नहीं था जिसने अपने इष्ट शिवजी को अपना सिर ग्यारह बार काट कर प्रेम भेंट किया था। प्रेम तन और मन मांगता है, धन नहीं मांगता।

यह वचन करके गुरु जी ने दोनों बाप बेटों को शाबाश दे कर निहाल कर दिया व सिक्खों की घाल सार्थक हुई।

ननकाणे साहिब के दर्शन

श्री गुरु नानक साहिब जी के जन्म स्थान के दर्शन करने के लिए गुरु जी लाहौर से ननकाणा साहिब गए। बड़े प्रेम और श्रद्धासहित दर्शन करके गुरु जी वापिस रावी नदी के किनारे गाँव मदर आ गए। इस गाँव में एक आदमी को हजीरें थीं। वह कुछ दिन गुरु जी के पैरों का जूता पकड़ कर हजीरों पर लगाता रहा। इस तरह श्रद्धा से जोड़ा लगाने के कारण उस की हजीरें ठीक हो गईं। जब गुरु जी यहाँ से चलने लगे, तो एक सिक्ख ने गुरु जी से प्रार्थना करके वह जूता अपने पास ही रख लिया और गुरु जी को नया जूता पहना दिया। पाकिस्तान बनने से पहले यह जूता गाँव

www.9009.co.in

मदर उसी सिक्ख की संतान के पास था, जिस से अनेकों हजीरों के रोगी ठीक होते थे।

मदर से गुरु जी जंगर गाँव आए। संगत ने बहुत सेवा की। जंगर गाँव से चल कर चूनीयां के नज़दीक के रास्ते बहिड़वाल आए। इस गाँव का एक खारा कूआं गुरु जी ने मीठा किया। यहाँ से चल कर रास्ते में अनेक लोगों को नामदान का उपदेश देते हुए गुरु जी वापिस अमृतसर आ गए।

सहिंसरे गाँव गुरु की रोड़

एक दिन गाँव सहिंसरे की संगत गुरु जी को प्रार्थना करके बड़े प्रेम से अपने गाँव ले गई। गुरु जी कई दिन वहाँ टिके रहे। इस याद में वहाँ एक गुरुद्वारा बना हुआ है। पहले यह स्थान गुरु की रोड़ के नाम से भी प्रसिद्ध था।

डेरा बाबा नानक से गाँव बारठ बाबा श्री चंद जी के पास

सहिंसरे से चल कर गुरु जी गुरु नानक साहिब जी के अन्तिम निवास स्थान के दर्शन करने के लिए डेहरा बाबा नानक गए और यहाँ से आगे गाँव बारठ बाबा श्री चंद जी के पास जा विराजे।

गुरु जी ने बाबा जी को सुखमणी साहिब की पहली १६ अष्टपदियाँ जो गुरु जी ने रची हुई थी, पढ़ कर सुनाई। इन को सुन कर बाबा जी अति प्रसन्न हुए और वचन किया कि पुरुष के आठों पहर के २४००० श्वास सफल करने के लिए २४ अष्टपदियों पूर्ण कर दो। गुरु जी ने कहा कि आगे आप ही रचना करने की कृपा करो। तब बाबा जी ने गुरु नानक साहिब जी का उच्चारण किया हुआ श्लोक-'आदि सच्चु जुगादि सचु।। है भि सचु

नानक होसी भी सचु।।' पढ़कर कहा कि आगे आप ही रच लो। तब गुरु जी ने इस से आगे आठ अष्टपदियाँ उच्चारण करके बाबा जी को सुनाई, और जिस पर आप बहुत प्रसन्न हुए।

सुखमनी साहिब की महिमा

जहाँगीर बादशाह का एक एतबारी अहिलकार, जिस को शाहजहान बादशाह ने सन् १६२८ में लाहौर का गवर्नर नियुक्त किया था। इस का जलोधर रोग एक सिक्ख के द्वारा सुखमनी साहिब का पाठ सुन कर दूर हो गया था। इस के प्रभाव के कारण वज़ीर खां गुरु घर का बहुत श्रद्धालु बन गया और तन मन से गुरु घर की सेवा करने लगा।

बाबा मोहन जी से पोथियाँ लेनी

एक दिन गुरु साहिबान की रची हुई वाणी को और स्वार्थियों की वाणी से अलग रखने के लिए श्री गुरु अर्जन देव जी ने विचार किया कि चारों गुरु साहिबान की वाणी की दो पोथियों जो बाबा मोहन जी के पास गोइंदवाल में हैं। पहले वह मँगवानी चाहिए, फिर और जहाँ कहीं गुरु साहिबान की रचना पड़ी हो, एकत्र करके एक संची तैयार करनी चाहिए, जिस के पढ़ने-सुनने से प्राणी मात्र का कल्याण हो।

यह विचार करके गुरु जी ने पहले भाई गुरदास जी को और फिर बाबा बुड्ढा जी को गोइंदवाल भेजा, परन्तु बाबा मोहन जी ने किसी को भी पोथियाँ न दीं। तद्उपरान्त गुरु साहिब जी आप पोथियाँ लेने के लिए गए और बाबा मोहन जी के चोबारे के नीचे गली में बैठ कर गउड़ी राग में नीचे लिखे चार शब्द, उच्चारण करके पढ़े—

(इन शब्दों की केवल पहली तुक ही दी गई है)

www.9009.co.in

गउड़ी महला ५ ।।

१. मोहन तेरे ऊचे मन्दिर महल अपारा ।।
मोहन तेरे सोहनि दुआर जीउ संत धरमसाला ।।
२. मोहन तेरे वचन अनूप चाल निराली ।।
मोहन तूं मानहि एकु जी अवर सभ राली ।।
३. मोहन तुधु सतसंगति धिआवै दरस धिआना ।।
मोहन जमु नेड़ि न आवै तुधु जपहि निदाना ।।
४. मोहन तूं सुफलु फलिआ सणु परवारे ।।
मोहन पुत्र मीत भाई कूटंब सभि तारे ।। बिनवंति नानक टेक राखी जितु लगि तरिआ संसारे ।। ४ ।। २ ।।

(स्री गुरू ग्रथ साहिब, पृ० २४८)

इन की मीठी श्रद्धा और प्रेम से भीगी हुई ध्वनि को सुन कर बाबा जी ने प्रसन्न होकर पोथियाँ दे दीं।

इस प्रकार नम्रत्ता से पोथियों लेकर गुरु जी उन को एक पालकी में रख कर उनको सिक्खों के कंधों पर उठवा लिया और संखों तथा नर-नारी की जय-जयकार के उद्घोष करते हुए अमृतसर को चल पड़े। पालकी के पीछे गुरु जी आप चौर करते हुए नंगे पाँव आए। इस तरह धीरे-धीरे चल कर खडूर साहिब के रास्ते गुरु अंगद साहिब के देहुरे के दर्शन करके अमृतसर पहुँच गए। अमृतसर आकर गुरु जी ने पोथियों वाली पालकी को दुखभंजनी बेरी के अठसठ तीर्थ के स्थान पर सुशोभित करके कीर्तन आरम्भ कर दिया।

दूसरे दिन भाई गुरदास आदि बुद्धिमान सिक्खों की सलाह से शहर से बाहर एक एकांत जगह देख कर वहीं तम्बू कनातें लगवा दीं और पालकी में रख कर पोथियों को वहीं पर ले गए। यह पवित्र स्थान रामसर के नाम से प्रसिद्ध है। उस समय यहाँ वृक्षों के झुण्ड में एक छोटी सी वर्षा के पानी की छपड़ी (तालाब) थी।

तम्बू में भाई गुरदास जी के साथ बैठ कर गुरु जी ने पहले इन पोथियों की वाणी को पढ़ा और फिर सिक्खों के पास, जो लिखी हुई या जबानी प्राप्त हुई थी, उसको विचारा और शुद्ध किया। इस प्रकार सारी एकत्रित की गई बाणी को गुरु जी ने तरतीबवार करके रागों, महलों आदि शब्दों में लिखवाया। प्रत्येक शब्द वाणी के अन्त पर 'नानक' नाम की छाप लगाई। अलग-अलग गुरुओं की वाणी की पहचान के लिए गुरु नानक जी की वाणी के साथ महला १ (पहला); गुरु अंगद देव जी की वाणी के साथ महला २, (दूसरा); गुरु अमरदास जी की वाणी के साथ महला ३ (तीसरा), गुरु रामदास जी की रचना के साथ महला ४ (चौथा) और अपनी वाणी के साथ महला ५ (पाँचवां) संकेत किया।

भक्तों की वाणी के साथ उन भक्तों के नाम लिखने निर्णीत किए। इस प्रकार सारी वाणी लिखवा कर अन्त में मुंदावणी लिख कर भोग की मोहर लगा दी। बाद में और वाणी लिखने का विचार करके इस पोथी (संची) में कई जगह कुछ पृष्ठ भी खाली छोड़ दिए।

खारी बीड़

सारी वाणी को लिख कर गुरु जी ने भाई बंनों को लाहौर इस पोथी साहिब की जिल्द बनाने के लिए भेजा। बंनों जी ने प्रेम वश रास्ते में ही इसकी एक औरप्रतिलिपि तैयार कर ली, जिस में भाई बन्नों ने कुछ और शब्द और हकीकत राह मुकाम और सिआही की विधि आदि भी लिख दी, जिस कारण इस प्रतिलिपि को देख कर गुरु जी ने इस को 'खारी बीड़' का नाम दे दिया।

तद्उपरान्त इस पोथी साहिब को भाद्रव सुदी एकम संवत् १६६१ बिक्रमी को बड़ी धूम-धाम से हरिमन्दिर साहिब में स्थापित करके भाई बुड्ढा जी को इस का ग्रन्थी नियुक्त किया।

www.9009.co.in

बाद में इस में जब श्री गोबिंद सिंह जी ने नोवें सतिगुरु तेग बहादर जी की बाणी चढ़ा कर अपने ज्योति-ज्योत समाते समय गुरुत्व का तिलक देकर इसको गुरु पदवी दे दी, तो उस दिन से सिक्ख पंथ के गुरु, 'स्री गुरू ग्रन्थ साहिब' हो गए, जो युग-युग अट्टल और अमर हैं।

सत्ता बलवण्ड और भाई लधा परोपकारी

श्री गुरु अर्जन देव जी के दरबार में दो डूम सत्ता और बलवण्ड कीर्तन करते थे। एक दिन इन डूमों ने अपनी बहिन के विवाह के लिए गुरु जी से आर्थिक सहायता माँगी। गुरु जी ने कहा प्रातः कालीन के कीर्तन की जो भेंट आए वह सारी रख लेना। देवनेत उस दिन बहुत थोड़ी भेंट आई, जिस को लेने से इन डूमों ने इंकार कर दिया। उन्होंने गुस्से होकर गुरु जी के दरबार में कीर्तन करना ही छोड़ दिया। गुरु जी ने सिक्खों को उनके पास भेजा कि आ कर कीर्तन करो, परन्तु उन्होंने साफ़ इंकार कर दिया। तब गुरु जी ने कहा कि इन्हें अंहकार हो गया है। अतः इन को हमारा कोई सिक्ख मुँह न लगाए और जो इन की सिफारिश करेगा उस का मुँह काला करके और गधों पर बैठा कर पेश किया जाएगा।

कुछ समय के पश्चात् जब यह भूख से बहुत दुखी हो गए, तो इन्होंने सिक्खों से कहा कि हमें क्षमा करा दो, परन्तु किसी ने भी उन की बात न मानी तो वह तंग आ कर लाहौर भाई लधा जी के पास गए। अपनी सारी व्यथा बता कर इन को प्रार्थना की कि आप ही हम पर दया करके हमें गुरु जी से क्षमा दिला दो। जब उन पर तरस खा कर भाई लधा जी ने गुरु जी के हुक्म की पालना करने के लिए अपना मुँह काला कर लिया और गधे पर चढ़ कर उन के साथ गुरु जी के पास आ गए। गुरु जी के पास होकर जब भाई लधा ने प्रार्थना की कि हे सच्चे पातशाह ! इन को क्षमा कर दो,

यह बड़े दुखी होकर क्षमा माँगते हैं, तो गुरु जी ने कहा जिस मुँह से इन्होंने गुरु घर की निंदा की थी उस से ही अब स्तुति करेंगे तब इन्हें क्षमा किया जाएगा।

गुरु जी के वचन सुन कर सत्ते और बलवण्ड ने गुरु जी के सम्मुख खड़े होकर राग रामकली में एक वार के द्वारा पाँचों श्री गुरु साहिबान की स्तुति का गायन किया, जिसको सुन कर गुरु जी प्रसन्न हो गए और इनको अपने दरबार में कीर्तन करने की आज्ञा दे दी।

'सिरी गुरू ग्रन्थ साहिब जी' के पृष्ठ ८६६ पर यह "रामकली की वार राइ बलवण्ड तथा सत्ते डूमि आखी।।" के नाम से दर्ज है।

बाबा महादेव जी का परलोक गमन

श्री गुरु अर्जन देव जी के बड़े भाई बाबा महादेव जी संवत् १६६२ विक्रमी को गोईंदवाल ज्योति-ज्योत समाए। बाबा जी आत्म ज्ञान के कारण ब्रह्म ज्ञान की अवस्था को पहुँचे हुए थे। इन्होंने अपना परलोक गमन का समय कुछ दिन पहले ही गुरु अर्जन देव जी को बता दिया था।

भक्त, कान्हा, पीलो, छज्जू और शाह हुसैन

सत्ता बलवण्ड को क्षमा करा कर जब भाई लधा लाहौर गया, जो उस से गुरु साहिब जी की बहुत महिमा सुन कर लाहौर के रहने वाले यह चार भक्त गुरु जी के पास अमृतसर आए। इन्होंने प्रार्थना की कि जिस प्रकार आप ने और भक्तों की वाणी अपने ग्रन्थ में दर्ज की है, हमारी भी दर्ज करो। फिर उन्होंने अपनी वाणी बारी-बारी गुरु जी को सुनाई। पहले कान्हा बोला—

ओही रे मै ओही रे।। जाकउ बेद पुरान सभि गावै, खोजति
खोज न कोई रे।। जांको नारद सारद सेवे, सेवे देवी देवा

रे।। ब्रहमा बिसन महेस अनधहि सब करदे जाकी सेवा रे।।
कहि कान्हा उस सरूप है, अपरंपर अलख अभेवा रे।। १।।

भक्त कान्हा से उस की यह बाणी सुन कर गुरु जी ने कहा कि हमारा मत भक्ति और दास्य वाला है, परन्तु आप अपने आप को उस का ही रूप बताते हो, जो हमारे सिद्धान्त के अनुकूल नहीं है। इस कारण हम इस को ग्रन्थ साहिब में लिखवा नहीं सकते। दूसरा भक्त पीलो बोला—

पीलो असां नालों से भले जंमदिआं जु मूए।।
उन्हां चिकड़ पाव न बोड़िआ न आलूद भए।।

पीलो का यह शब्द सुन कर गुरु जी ने कहा हमारे मत के अनुसार गृहस्थ जीवन प्रधान है, परन्तु आप ने इस की निंदा की है। इस कारण यह भी हमारे ग्रन्थ में लिखने योग्य नहीं है। फिर छजू भक्त बोला—

कागद संदी पूतरी तऊ न त्रिआ निहार।।
यौ ही मार लिजावही जथा बलोचनि धार ।। १।।

गुरु जी ने कहा- गुरु नानक साहिब जी का वचन है कि 'सो क्यों मंदा आखीअहि जितु जंमहि राजान।।' जिस से सारे ऋषि मुनी और पीर पैगंबर जन्म लेते हैं। उसकी निंदा करना ठीक नहीं है। इस कारण आपका विचार भी हमारे सिद्धान्त के अनुकूल न होने कारण ग्रन्थ में नहीं लिखा जा सकता।

उपरान्त शाह हुसैन ने कहा—

चुप वे अड़िआ चुप वे अड़िआ।। बोलन दी नहीं
जाइ वे अड़िआ ।। सजना बोलण दी जाइ नाही।।
अंदर बाहर हिका सांई।। किसनूं आख सुनाई।। इको
दिलबर सभि घट रविआ दूजी नहीं कदाई।। कहै हुसैन
फकीर निमाणा सतिगुरु तो बल जाई।। १।।

यह बाणी सुन कर गुरु जी ने कहा भक्त जो ! बोलने के बिना परमात्मा की भक्ति भाव और सेवा नहीं हो सकती, परन्तु आप ने कहा है कि चुप रहो, बोलने की ज़रूरत नहीं है। यह भी हमारे सिद्धान्त के विरुद्ध है, क्योंकि हमारा मत भक्ति भाव और सेवा का है। यह उत्तर सुन कर सारे भक्त चुप हो गए और नमस्कार करके अपने स्थानों को चले गए।

झूठ का त्याग और उपदेश

इस प्रकार और भी अनेक श्रद्धालु भ्रम निवृत्त करने और उपदेश लेने के लिए गुरु जी के पास आए, जिन में से कुछ प्रसिद्ध इस प्रकार है—

एक दिन भाई पुरीआ और चूहड़ पट्टी से गुरु जी के दर्शन करने आए। उन्हों ने यथाशक्ति भेंट रख कर गुरु जी को माथा टेका और प्रार्थना की कि महाराज ! हम अपने गाँव के चौधरी हैं और हमें बहुत झूठ बोलना पड़ता है, हम इस का त्याग किस प्रकार करें ? गुरु जी ने कहा अपने नगर एक धर्मशाला बनवाओ। दो समय संगत किया करो और रोज़ के रोज़ बोला हुआ सारा झूठ सन्ध्या के समय दीवान में संगत को सुना दिया करो। जब इन्होंने गुरु जी के उपदेश के अनुरूप कुछ दिन इसी प्रकार ही किया, तो वह बड़ी लज्जा अनुभव करने लगे। जिस कारण वे कम से कम झूठ बोलने का यत्न करने लगे। इस प्रकार करते-करते अन्ततः उन के झूठ बोलने की आदत बिल्कुल ही जाती रही और वह सच्च बोलने के आदी हो गए।

भाई पैड़ा, मोखा (पुन दान और सुख प्राप्ति)

एक दिन इन दो सिक्खों ने हाज़िर होकर प्रार्थना की कि गुरु जी ! हम सदा ही दुखी रहते हैं। हमें सुख किस प्रकार मिल सकता

www.9009.co.in

है ? गुरु जी बोले- भाई ! अरोग शरीर, सुशील स्त्री, आज्ञाकारी पुत्र और धन-धान्य के सुख पिछले जन्म में किए दान पुण्य के फलस्वरूप ही मिलते हैं। गृहस्थी का बड़ा धर्म दान पुण्य करना और नेक कमाई ही होती है। इस लिए आप नेक कमाई पुण्य दान और सतिसंग किया करो। आपको सुखों की प्राप्ति होगी।

बाला, कुष्णा को मन शान्ति का उपदेश

बाला और कुष्णा पण्डित बहुत सुन्दर कथा करके लोगों को खुश किया करते थे। एक दिन इन्होंने गुरु दरबार में हाज़िर होकर प्रार्थना की- महाराज ! हमारे मन को शान्ति किस प्रकार प्राप्त होगी कोई उपाय बताओ। गुरु जी ने कहा अगर आप मन की शान्ति चाहते हो, तो जैसे लोगों को समझाने को कहते हो, उसी प्रकार आप उस कथनी पर भी अमल किया करो। परमेश्वर को सापेक्ष जान कर उसे सदा याद रखा करो। अगर धन इक्ट्ठा करने के लिए कथा की जाए, तो मन को शान्ति नहीं हो सकती और मन को लालसा लगी रहती है। इस लिए निष्काम होकर कथा किया करो, आपके मन को शान्ति मिल जाएगी।

संमुख और बेमुख, समुन्दे को उपदेश

एक दिन गुरु जी को समुन्दे ने प्रार्थना की कि महाराज ! सनमुख कौन होता है और बेमुख कौन ? गुरु जी ने वचन किया, भाई सनमुख वह है जो सदा अपने मालक की आज्ञा में रहे। जैसे परमेश्वर ने पुरुष को नाम जपने और स्नान करने के लिए जगत में भेजा है जो पुरुष इस आज्ञा के पालन में शारीरिक शुद्धता के लिए स्नान करना मन की शुद्धि के लिए नाम जपना और शारीरिक अरोगता के लिए नंगे भूखे को यथाशक्ति दान करता है, वह संमुख है। ऐसा पूरुष सदा सुखी रहता है। बेमुख वह पुरुष

है, जो सदा माया के व्यवहार में ही लगा रहता है। अपने मालिक प्रभु की ओर ध्यान नहीं देता। ऐसा पुरुष सदा दुखी रहता है।

गुरमुख और मनमुख

एक दिन गुरु जी के पास तीन प्राणी कुला, भुला और भागीरथ मिल कर आए और प्रार्थना की कि हमें मौत से बहुत डर लगता है। हमें जन्म-मरण के दुख से बचाओ। गुरु जी ने कहा, भाई आप गुरमुख बनकर मनमुखों वाले कर्म करने छोड़ दो। उन्होंने कहा महाराज ! हमें गुरमुख और मनमुख का निर्णय करके समझाओ कि गुरमुख और मनमुख के क्या लक्षण होते हैं।

तब गुरु जी ने कहा कि गुरमुख के लक्षण इस प्रकार होते हैं कि वह गुरु के वचनों को याद रखता है, जो उस पर नेकी करे उसकी नेकी को याद रखता है। सब की भलाई सोचता और चाहता है। किसी के काम में विघ्न नहीं डालता। खोटे कर्मों का त्याग और नेक कर्मों को ग्रहण करता है। गुरु के उपदेश को ग्रहण करके अपने आत्मस्वरूप को जानने वाला और अनेक में एक को देखने वाला होता है।

मनमुख के लक्षण इस प्रकार होते हैं—

जो नेकी करे, उस की बुराई करनी। कभी किसी का भला न सोचना। अपनी इच्छा से काम करने। किसी का भला होता देख कर दुखी होना। सब से ईर्ष्या करनी। सब के बुरे में अपना भला समझना। कथा कीर्तन में ध्यान न देना। गुरु उपदेश ध्यान से न सुनना। पुण्य और स्नान से परहेज़ करना। उपजीविका के लिए झूठ बोलना।

यह निर्णय सुन कर इन्होंने गुरमुख के लक्षण ग्रहण करने का प्रण कर लिया और गुरु जी को माथा टेक कर अपने काम-काज में जा लगे।

www.9009.co.in

ब्रह्म का आदि अंत

एक दिन गुरु जी के पास गंगू, नाऊ, सहिगला, रामा, धरमा और उदा पाँच सिक्ख मिल कर आए प्रार्थना की कि महाराज ! वेदों कतेबों, अवतारों और ऋषियों मुनिओं ने ब्रह्म को अनन्त (अंतरहित) कथन किया है, किसी ने उस का अन्त नहीं पाया, परन्तु गुरु नानक देव जी उस सच्चिदानंद ब्रह्म का अवतार हुए हैं, वह तो उस ब्रह्म का अन्त जानते ही होंगे ? क्योंकि अपने आप को हर कोई जानता है। गुरु जी ने कहा भाई अगर ब्रह्म का कोई आदि अंत होता तो उस को उच्चारण करके गुरु नानक जी बताते। वेदों में जो पारब्रह्म के श्वास कथन किए जाते हैं और विष्णु भगवान जो ब्रह्म का सगुण स्वरूप हैं, उन्होंने भी केवल इतना ही कथन किया है कि ब्रह्म अनन्त है। जिस का कभी भी अन्त नहीं हुआ, उसका आदि भी नहीं हो सकता। जिस कारण आदि अन्त रहित होने के कारण उसको अनन्त ही कहना बनता है।

आप ब्रह्म को आकाश की तरह एक रस सर्वव्यापक जानो। सब जगत् को उस का रूप समझो और उस से प्रेम करो। इस में ही आपका कल्याण है।

'करे कराए आपे प्रभु' और 'जैसा बीजै (बोए) सो (काटे) लुणे'

एक दिन गुरु जी के पास चड्ढे जाति के दट्टू , भानू, निहालू और तीरथा आए और प्रार्थना की कि महाराज ! आप जी के वचनों की हमें समझ नहीं आती एक जगह आप जी ने लिखा है—

'करे कराए आपि प्रभु, सभु किछु तिसही हाथ।'

दूसरी जगह आप जी ने लिखा है—

जैतसरी महला ५ वार सलोका नालि

'जैसा बीजै सो लुणै करम इहु खेत।।'

गुरु जी ने कहा भाई ! जिस प्रकार रोगी को उस का रोग देख कर बुद्धिमान वैद दवाई देता है। इसी तरह ही सिक्ख की रहणी-बहणी और जीवन-व्यवहार को देख कर उसको उपदेश दिया जाता है, जैसे कि जो दुनियादारी के कामों में लगा हुआ कर्म करता है, उस को अच्छे कर्मो की प्रेरणा के लिए 'जैसा बीजै सो लुणै' का अधिकारी समझ कर यह उपदेश दिया जाता है, परन्तु जो कुछ विचारशील होकर परमेश्वर की भक्ति करता है उस को 'करे कराए आपि प्रभू' का उपदेश दिया जाता है ऐसा न हो कि कहीं उसको अपनी करनी का गर्व न हो जाए। अतः गुरु उपदेश सिक्ख की अध्यात्मिक अवस्था को ध्यान में रख कर दिया जाता है। इस में सिक्ख को भ्रम नहीं करना चाहिए। उस को अपनी मानसिक अवस्था के अनुसार उपदेश ग्रहण कर लेना चाहिए।

मन की शान्ति का साधन

एक दिन सुलतानपुर के निवासी कालू , चाऊ, गोइंद, घीऊ, मूला, धारो, हेमा, छजू, निहाला, रामू , तुलसा, सांई, दित्ता, आकुल, दामोदर, भागमल, भाना, बुधू छींबा, भिखा और टोडा भाट्ट मिल कर गुरु अर्जन देव जी के पास आए और प्रार्थना की कि महाराज ! हम रोज प्रातः काल उठ कर स्नान करके गुरबाणी का पाठ करने के उपरान्त अपनी कृत करते हैं। मन को सदा संयम में रखते हैं, परन्तु हमारे मन को सदा कले ही लगी रहती है। कृपा करके हमें ऐसा उपदेश दो, जिस से मन शांत रहे और कले समाप्त हो।

गुरु जी ने कहा जब तक मन से रजो गुण और तमो गुण का त्याग न किया जाए मन को शान्ति नहीं मिल सकती। सिक्खों ने

www.9009.co.in

पूछा कि माहाराज ! इन गुणों की परीक्षा किस प्रकार की जाए ? गुरु जी ने कहा—हिंसा (जीव हत्या) और क्रोध तमो गुण के गुण हैं। लोभ और अभिमान यह रजो गुण के गुण हैं।

रात का बासी, खट्टा और चटपटा भोजन खाना। बहुत अधिक सोना, झूठ बोलना, पराई निंदा करनी, गंदा रहना, बुरी संगत करनी यह सब तमो गुण की निशानियाँ हैं। अपना बड़प्पन चाहना, भड़कीले वस्त्र पहनने, माँस का सेवन करना आदि यह रजो गुण की निशानियाँ हैं। उज्ज्वल सफेद वस्त्र पहनने, स्नान आदि में नियमित होना, चावल दाल आदि स्वच्छ भोजन खाना, थोड़ा सोना और थोड़ा खाना। यह शान्ति के गुणों की निशानी हैं, और सुनो! जो एक मन होकर कथा कीर्तन को सुने, वह पुरुष शान्ति के गुण वाला होता है। जिस का कभी मन टिके और कभी न टिके उस को राजसी गुण वाला समझो। परन्तु जिस का मन कभी टिके ही न, शब्द वाणी की समझ भी कोई न आए, तो उस को तामसी गुण वाला जानना चाहिए।

इन शान्ति गुणों वाले लक्षणों को अगर आप ग्रहण कर लोगे, तो आपके मन को शान्ति प्राप्त होगी।

चंदू लाल की लड़की का रिश्ता लौटाना

जहांगीर बादशाह के दीवान चंदूलाल ने अपनी लड़की के लिए कोई योग्य लड़का देखने के लिए पुरोहितों को कहा। पुरोहित पता करते कराते जब अमृतसर आ गए, तो उन्होंने गुरु घर का बहुत प्रभाव देख कर साहिबज़ादा श्री हरिगोबिंद साहिब को योग्य और सुन्दर देख कर चंदू की लड़की का रिश्ता साहिबज़ादे को देना गुरु जी को कह दिया और फिर जब यह बात दिल्ली जाकर चंदू लाल को बताई, तो उस ने अहंकार से कहा । आप चौबारे की ईंट मोरी को लगा आए हो। अब शगन ले जाओ और दे आओ।

यह बात जब दिल्ली के सिक्खों ने सुनी कि चंदू आप ऊँचा चौबारा बना है और गुरु जी को मोरी के सामान नीचे कहा है, तो उन्होंने शग्न लेकर जाने वाले पुरोहितों से पहले ही एक सिक्ख गुरु जी के पास अमृतसर भेज कर प्रार्थना की कि इस अहंकारी की लड़की का रिश्ता न लिया जाए। इस ने गुरु घर को मोरी और अपने आप को चौबारा कहा है।

तद्उपरान्त जब चंदू लाल के आदमी शग्न लेकर आए, तो गुरु जी ने रिश्ता लेने से इंकार कर दिया कि हमने उस अहंकारी से माथा नहीं लगाना । उस ने गुरु घर को मोरी कह कर अपमान किया है। पुरोहित शग्न ले कर वापिस दिल्ली चले गए। उन्होंने सारी बात चंदू को जा बतलाई।

नारायण दास डल्ले निवासी ने लड़की का रिश्ता करना

यह सारी बात दिल्ली से रिश्ता आने वाली और लौटाने वाली जब सारी संगत के सामने हुई, तो उस समय संगत में से ही डल्ले निवासी नारायण दास ने खड़े होकर प्रार्थना की कि महाराज ! साहिबज़ादे के लिए मैं अपनी लड़की का रिश्ता देता हूँ। आप स्वीकार करो। मैं गरीब आदमी हूँ।

गुरु जी ने उस की प्रार्थना स्वीकार करके उसी समय शग्न ले लिया और दिन नियत करके बड़ी धूम-धाम से १२ भाद्रव संवत् १६६१ बिक्रमी को विवाह कर दिया।

सुलही खां ने चढ़ कर आना

जिस समय पुरोहितों ने दिल्ली जाकर चंदू लाल को बताया कि गुरु जी ने रिश्ता लौटा दिया है, तो उसे बहुत क्रोध आया। गुस्से

में लाल पीला होकर उस ने कहा कि मैं इस का बदला लेकर ही रहूँगा। तद्उपरान्त उस ने सुलही खां अपने नायिब को भेजा कि गुरु जी को अमृतसर से निकाल कर गुरुगद्दी उन के बड़े भाई प्रिथीचंद को दे आओ। इसका पता जब अमृतसर के सिक्खों को लगा, तो उन्होंने गुरु जी के पास जा कर प्रार्थना की कि महाराज ! चंदू लाल का भेजा हुआ सुलही खां चढ़कर आ रहा है। इस को या कोई चिट्ठी लिख कर या दो बुद्धिमान सिक्ख भेज कर अथवा कोई और उपाय करके इस से मेल कर लेना चाहिए। अगर मेल नहीं करना, तो अमृतसर छोड़ कर किसी और स्थान पर चले जाना चाहिए। सिक्खों की यह चिंताजनक बात सुन कर गुरु जी ने कहा कि सतिगुरु रामदास जी पर निश्चय रखो। डरो नहीं, सुलही खां यहाँ तक पहुँच नहीं सकेगा।

सुलही खाँ की मौत

सुलही खाँ दिल्ली से चढ़ाई करके आता हुआ रास्ते में प्रिथीचंद के पास उस के गाँव कोठा गुरु डेरा करके ठहर गया। प्रिथी चंद जी ने उसकी बहुत सेवा की। दूसरे दिन अपने नए घर और गाँव की रचना दिखा कर जब सुलही खां को उस के डेरे छोड़ने गया तो रास्ते में प्रिथीचंद सुलही खां को भट्ठा दिखाने के लिए ठहर गया। घोड़े पर चढ़ा हुआ सुलही खां जब भट्ठे के पास खड़ा होकर भट्ठा देख रहा था, तो उस का घोड़ा डर कर भट्ठे पर चढ़ गया। भट्ठा आग से तपा हुआ था, जिस से सुलही खां घोड़े सहित जल कर राख हो गया।

जब इस घटना की खबर श्री गुरु अर्जन देव को हुई, तो आप ने परमेश्वर का धन्यवाद इस शब्द के द्वारा उच्चारण किया।

बिलावलु महला ५।।
सुलही ते नारायण राखु।। सुलही का हाथु कही ना पहुचै
सुलही होइ मूआ नापाकु।। १।। रहाउ।। काढि कुठारु
खसमि सिरि काटिआ खिन महि होइ गइआ है खाकु।।
मंदा चितवत चितवत पचिआ जिनि रचिआ तिनि धाकु।।
१।। पुत्र मीत धनु किछु न रहि ओसु छोडि गइआ सब
भाई साकु।। कहु नानक तिसु प्रभ बलिहारी जिनि जन का
कीनो पूरन वाकु।। २।। (स्री गुरु ग्रंथ साहिबः पृ० ८२५)

मुसलमान क्योंकि आग में मुर्दे को जलाना नापाक (अपवित्र) समझते हैं। इस लिए गुरु जी ने यहाँ 'होई मूआ नापाक।।' शब्द प्रयुक्त किये हैं।

खुसरो ने गुरु जी को मिलना

अपने पुत्र खुसरो से किसी बात से नाराज हो जहाँगीर बादशाह ने सारे देश में हुक्म दे दिया कि खुसरो से कोई भी मेल-मिलाप न करे और न ही कोई इसको किसी प्रकार की सहायता दे। इस कारण खुसरो दिल्ली से दौड़ कर काबल को जाता हुआ जब व्यास नदी का पतन गोईंदवाल से निकल कर तरनतारन आया, तो उस को पता चला कि यहाँ गुरु नानक जी की गद्दी वाले गुरु ठहरे हुए हैं। गुरु जी के दर्शन करने के लिए खुसरा ने डेरा करके गुरु जी को अपनी सारी बात बताई और अपने बचाव के लिए आर्शीवाद माँगा। तद्उपरान्त एक रात यहाँ व्यतीत करके लाहौर को चला गया। इस का पता जब जहांगीर को लगा कि गुरु ने बागी पुत्र को आर्शीवाद दिया है, तो उस ने इस अवज्ञा का उत्तर लेने के लिए गुरु जी को लाहौर बुला भेजा।

गुरु जी ने लाहौर जाना

बादशाह का संदेश पढ़ कर गुरु जी ने अपना अंत समय आया समझ कर अपने दस ग्यारह साल के सुपुत्र श्री हरिगोबिंद जी को गुरुत्व दे दिया और भाई बुड्ढा जी भाई गुरदास जी आदि बुद्धिमान सिक्खों को घर बाहर का काम सौंप दिया। इस प्रकार सारी देख-रेख को सौंप कर और संगत को धैर्य दे कर गुरु जी अपने साथ पाँच सिक्खों भाई जेठा, भाई पैड़ा, भाई बिधीआ, लंगाहा, और पिराणा को साथ लेकर लाहौर पहुँच गए और एक सिक्ख जिस का नाम सधु था उसके घर जा ठहरे।

जहाँगीर का हुक्म

दूसरे दिन जब अपने पाँच सिक्खों सहित गुरु जी जहाँगीर के दरबार में गए, तो उस ने कहा आप ने मेरे बागी पुत्र को अपने पास रख कर रसद और आर्शीवाद दिया है। इस कारण आप को दो लाख रुपए जुर्माना किया जाता है अगर जुर्माना नहीं दोगे, तो आपको शाही दण्ड भुगतना पड़ेगा।

चंदू की कैद में

जहाँगीर ने जब गुरु जी को यह दो लाख जुर्माने वाली बात कही, तो गुरु जी को चुप देख कर चंदू ने कहा, जहांपनाह ! मैं इन को अपने घर ले जाता हूँ और आपकी ओर से समझाऊँगा कि यह जुर्माना दे दें और आगे से अपने पास किसी चोर डकैत को न रखें। यह बात कह कर चंदू गुरु जी को अपने साथ ले गया कि अपने महलों में जाकर गुरु जी और पाँच सिक्ख साथियों को ड्योढि में और गुरु जी को ड्यिोढि के अन्दर कैद कर लिया।

समय पाकर चंदू ने गुरु जी को अकेले बुला कर कहा कि अगर अब भी अपने लड़के के लिए मेरी लड़की का रिश्ता ले लो

www.9009.co.in

और अपने ग्रन्थ में मुहम्मद साहिब की स्तुति लिख दो, तो मैं बादशाह से जुर्माना माफ करवा दूँगा और आगे से कोई पूछताछ भी नहीं होगी।

गुरु जी ने कहा—दीवान साहिब ! रिश्ते की बाबत जो हमारे सिक्खों ने फैसला किया है, हम उस पर पाबन्ध है। हमारे सिक्खों को आपका रिश्ता स्वीकार नहीं है। दूसरी बात आप ने मुहम्मद साहिब की स्तुति लिखने के लिए कही है यह भी हमारे वश की बात नहीं है। हम किसी की खुशी के लिए इस में अलग कोई बात नहीं लिख सकते। प्राणी मात्र के उपदेश के लिए हमें करतार से जो प्रेरणा मिलती है, इस में हम वही लिख सकते हैं।

यह उत्तर सुनकर चंदू क्रोध से उठ कर जाता हुआ अपने सिपाही को हुक्म दे गया कि इन को किसी आदमी से मिलने न देना और न ही कुछ खाने-पीने को देना।

गुरु जी को कष्ट देने

१. पानी की उबलती हुई देग में बैठाना

दूसरे दिन फिर गुरु जी ने जब चंदू की दोनों बातों को मानने से इन्कार कर दिया, तो उसने पानी की एक देग गर्म करा कर उस में गुरु जी को बैठा दिया। गुरु जी को पानी की उबलती देग में बैठा हुआ देख कर भाई जेठा आदि गुरु जी के साथी सिक्खों में हाहाकर मच गई और जब वह गुरु जी को देग में से निकालने को आगे हुए, तो सिपाहियों ने उन को बहुत मारा। सिक्खों पर अत्याचार होता देख कर गुरु जी ने उन को कहा, परमेश्वर का हुक्म मान कर शाँत रहो। हमारे शरीर त्यागने का अब समय आ गया है।

www.9009.co.in

२. गर्म रेत शरीर पर डालना

जब गुरु जी चंदू की फिर भी कोई बात न माने, तो उसने गुरु जी के शरीर पर गर्म रेत डलवाई। परन्तु गुरु जी शान्ति के पुण्ज अडोल बैठे—'तेरा भाणा मीठा लागे' हरि नाम पदार्थ नानक मांगै' पढ़ते रहे। देखने और सुनने वाले त्राहि-त्राहि करते थे। परन्तु वश किसी का कोई नहीं था। गुरु जी का शरीर छालों से फूल कर बहुत भयानक रूप धारण कर गया। इन अत्याचारों की सारे शहर में दूर-दूर तक चर्चा होने लगी।

३. गर्म लोह पर बैठाना

तीसरे दिन फिर जब गुरु जी ने चंदू की कोई बात न मानी, तो उस ने लोह गर्म करवा कर गुरु जी को उस पर बैठा दिया। गुरु जी इतने पीड़ाग्रस्त शरीर से गर्म लोह पर प्रभु में लिव जोड़ कर अडोल बैठे रहे। लोग हाहाकार कर उठे।

साईं मीयाँ मीर का आना

यह खबर जब साईं मीयाँ मीर जी ने सुनी, तो वह तत्काल गुरु जी के पास आए और आप जी के शरीर को इतने कष्ट में देख कर कहा महाराज यह क्या खेल हो रहा है। किसी के कुछ वश नहीं है। मीयाँ मीर ने कहा अगर हुक्म करो, तो मैं जहाँगीर को कह कर इन दुष्टों को सज़ा दिलाऊँ, परन्तु गुरु जी ने कहा, इन को जो कुछ यह चाहते हैं करने दो, हमें अपने मालिक प्रभु का हुक्म मीठा करके मानना चाहिए। गुरु जी से शान्ति और अडोलता के वचन सुन कर मीयाँ मीर को आश्चर्य हुआ। वह नमस्कार कर के चले गए।

चंदू की पुत्रवधू की श्रद्धा

इतने सख्त कष्ट सहन करके जब गुरु जी अडोल रहे, तो चंदू ने अपने आदमियों से सलाह की कि इन के धर्म को नष्ट करने के

लिए सुबह इन्हें मरी हुई गाए के कच्चे चमड़े में सिलवा दो। जैसे-जैसे चमड़ा सूखेगा वैसे-वैसे इन के शरीर को कष्ट होगा और इन का हिन्दू-धर्म भी नष्ट हो जाएगा। चंदू की यह सलाह उस की पुत्रवधू जो गुरु घर के किसी श्रद्धालु की लड़की थी, ने जब सुनी, तो वह मन में बहुत दुखी हुई और आधी रात का समय देख कर उठ कर गुरु जी के बंदीगृह के पास आई। पहरेदार सिपाहियों को कुछ लालच देकर गुरु जी के पास पहुँच कर उन के चरणों पर माथा टेका और प्रार्थना की महाराज! मेरे पापी ससुर ने आप जी को सुबह गाए के कच्चे चमड़े में सिलवाने का हुक्म दे दिया है। आप जी के शरीर को कष्ट सुन कर मैं बहुत दुखी हूँ। मेरा कोई वश नहीं चलता।आप अन्तर्यामी घट-घट को जानने वाले हैं। जिस तरह हो अपने धर्म को नष्ट होने से बचा लो। गुरु जी ने कहा बेटी! तुम चिंता न करो। अपने घर जाकर आराम करो, हमें कोई कष्ट नहीं है।

गुरु जी ने शरीर त्यागना

जब दिन निकला तो चंदू ने फिर गुरु जी के पास आकर अपनी बात मनाने के लिए कहा, परन्तु जब फिर गुरु जी ने उस की बात न मानी, तो उस ने कहा आज आपको मृत गाए के कच्चे चमड़े में सिलवा दिया जाएगा। उसकी बात को सुन कर गुरु जी ने कहा—पहले हम रावी नदी में स्नान करना चाहते हैं, फिर जो आपकी इच्छा हो कर लेना। गुरु जी की यह बात सुन कर चंदू बहुत खुश हुआ कि इन के छालों से सड़े हुए शरीर को जब नदी का ठण्डा पानी लगेगा, तो यह और भी दुखी होंगे। अच्छा है इन को स्नान की आज्ञा दे दी जाए।

यह सोच विचार करके चंदू ने अपने सिपाहियों को कहा कि जाओ आज इन को रावी में स्नान करा लाओ। तब गुरु जी अपने

पाँच साथी सिक्खों को साथ लेकर सिपाहियों सहित रावी पर आ गए, तो गुरु जी ने नदी के किनारे बैठ कर चादर ओड़कर 'जपुजी साहिब' का पाठ करके भाई लंगाह आदि सिक्खों को कहा कि अब हमारी प्रलोक गमन की तैयारी है। आप ने श्री हरिगोबिंद जी को धैर्य देना और कहना कि शोक नहीं करना, करतार का हुक्म मानना। हमारे शरीर को जल प्रवाह ही करना, संस्कार न करना।

तद्उपरान्त गुरु जी रावी में प्रवेश करके अपना शरीर त्याग कर सचखण्ड जा बिराजे। उस दिन ज्येष्ठ सुदी चौथ संवत् १५५३ बिकमी थी। गुरु जी के ज्योति-ज्योति समाने का सारे शहर में बड़ा शोक मनाया गया। गुरु जी के शरीर त्यागने के स्थान पर गुरुद्वारा ढेरा साहिब लाहौर शाही किले के पास विद्यमान है।

अमृतसर पहुँच कर सिक्खों ने साका बताना

भाई जेठा आदि पाँच सिक्खों ने गुरु साहिब जी को शहीदी की खबर जिस समय अमृतसर आ कर माता जी और सिक्ख संगत को बताई, तो सब को बड़ा शोक हुआ। अफसोस प्रगट करने के लिए रिश्तेदार और सिक्ख अमृतसर आ गए।

बाबा बुड्ढा जी ने सब को धैर्य देने के लिए कहा—कि आप गुरु जी की वाणी का स्मरण करो। गुरु जी लोक भलाई और परोपकार के अनन्त काम करके अपने वेकुण्ठ धाम को गए हैं। उन के लिए शोक करना उचित नहीं है। शोक उनके लिए करना उचित होता है, जो अपनी सारी उमर जगत् के भोग विलास में लगा कर सतिसंग और नाम-स्मरण के बिना ही व्यतीत कर जाते हैं। इस तरह भाई बुड्ढा जी ने सब को समझा कर धैर्य दिया और शांत करके बैठाया।

www.9009.co.in

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

श्री गुरु हरिगोबिंद जी-छेवीं पातिशाही

पंज पिआले पंज पीर छठम पीर बैठा गुर भारी।।
अर्जन काइआ पलटिकै मूरति हरि गोबिंद सवारी।।
(वार १।। ४८ भाई गुरदास जी)

अवतार

श्री गुरु हरिगोबिंद जी का अवतार २१ आषाढ़ १६५२ बिक्रमी को रविवार श्री गुरु अर्जन देव जी के घर माता गंगा जी की पवित्र कोख से वडाली गाँव में हुआ।

श्री गुरु अर्जन देव जी ने बालक के जन्म के समय इस शब्द का उचारण किया—

सोरठि महला ५ ।।

परमेसरि दिता बंना।। दुख रोग का डेरा भंना।।
अनद करहि नर नारी।। हरि हरि प्रभि किरपा धारी।। १।।
संतहु सुखु होआ सभ थाई।। पारब्रहमु पूरन परमेसरु रवि
रहिआ सभनी जाई।। रहाउ ।। धुर की बाणी आई।। तिनि
सगली चिंत मिटाई।। दइआल पुरख मिहरवाना।।
हरि नानक साचु वखाना।। २।। १३।। ७७।।
(स्री गुरू ग्रंथ साहिब, पृ० ६२८)

श्री गुरु हरिगोबिंद जी ने गुरुगद्दी पर बैठ कर प्रण करना

श्री गुरु अर्जन देव जी लाहौर जाने से पहले ही इन को ज्येष्ठ १४ संवत् १६६३ को गुरुगद्दी सौंप गए थे। परन्तु श्री गुरु अर्जन

www.9009.co.in

देव जी की रस्म क्रिया वाले दिन आप जी को पगड़ी बँधाई गई और आप जी गुरुगद्दी पर सुशोभित हुए।

गुरु घर की मर्यादा के अनुसार सेली टोपी की जगह आप जी ने सिर पर जिगा कलगी और मीरी-पीरी की दो तलवारे धारण कीं। आप जी ने कहा अब सेली टोपी पहनने का समय नहीं है। शान्ति के पुण्ज हमारे पिता जी के साथ इस अत्याचारी राजा के अधिकारियों ने जो कुछ किया है उस का बदला और धर्म की रक्षा-शस्त्र के बिना नहीं की जा सकती। इस जगह पर बैठ कर जहाँ आप जी गुरुगद्दी पर सुशोभित हुए, वहाँ आप जी ने आषाढ़ सुदी १० संवत् १६६३ विक्रमी को अकाल बुग्गे की नींव रखी।

गुरु जी के विवाह

आप जी के तीन विवाह हुए। पहले १२ भाद्रव संवत् १६६१ में डल्ले गाँव भाई नारायण दास क्षत्रि की सुपुत्री श्री दमोदरी जी से।

श्री दमोदरी जी के उदर से बीबी वीरो बाबा गुरदित्ता जी और अणी राए जी ने जन्म लिया।

दूसरा विवाह आप बकाला निवासी हरीचंद की सुपुत्री नानकी जी से ८ वैशाख संवत् १६७० में हुआ। इन के उदर से श्री गुरु तेग बहादर जी ने अवतार लिया।

तीसरा विवाह आप जी का मंडिआली निवासी दया राम जी मरवाह की सुपुत्री महांदेवी से ११ श्रावण संवत् १६७२ में हुआ। इन के उदर से बाबा सूरज मल जी और अटल राए जी पैदा हुए।

घोड़े और शस्त्रों की भेंट स्वीकार करनी

अकाल बुग्गे की तैयारी आरम्भ करके गुरु हरिगोबिंद जी ने सब मसंदों और सिक्खों को हुक्मनामे लिखवा दिये कि जो सिक्ख

www.9009.co.in

हमारे लिए घोड़े और शस्त्र भेंट लेकर आएगा, उस पर गुरु की बहुत खुशी होगी।

इस उपरान्त गुरु जी ने आप भी घोड़े और शस्त्र खरीद कर कुछ शूरवीर नौकर रखने आरम्भ कर दिए। उधर गुरु जी के हुक्मनामे पढ़ कर सिक्ख और मसंद गुरु जी के लिए बहुत तेज़ घोड़े और शस्त्र भेंट लेकर आने लगे। इस तरह थोड़े समय में ही गुरु जी के पास बहुत घोड़े व शस्त्र इक्ट्ठे हो गए।

युद्ध अभ्यास और प्रसंग सुनने

अपने सिक्खों को युद्ध के लिए तैयार करने के लिए गुरु जी ने एक ढाडी अबदुल को नौकर रख लिया। दूसरे पहर के दीवान में वह शूरवीरों की शूरवीरता की वारें सुनाते। वारें और घोड़ सवारी का अभ्यास कराने के लिए रोज़ ही जंगल में शिकार खेलने के लिए ले जाते। इस प्रकार योद्धाओं का युद्ध अभ्यास बढ़ता गया और सेना भी बढ़ती गई।

गुरु जी का नित्य कर्म

सुबह उठ कर स्नान करके अपने आत्म स्वरूप से लिव जोड़ कर बैठना। फिर समाधि से उठ कर हरिमन्दिर साहिब के दर्शन करके अकाल बुण्गे आकर बैठ जाना। धार्मिक दीवान बुलवा कर कीर्तन होता और दर्शनार्थियों आए को धर्म उपदेश देते।

तद्उपरान्त भोजन खा कर विश्राम करते और तीसरे पहर दीवान सजा कर पुरातन शूरवीरों की वारें ढाढियों से सुनते और फिर शस्त्र विद्या का अभ्यास कराने के लिए योद्धाओं को शिकार खेलने ले जाते। संध्या के समय सोदर के पाठ उपरान्त दीवान की समाप्ति करके अपने महलों में जा कर निवास करते।

चंदू ने चिट्ठी लिखनी

गुरु जी का यश सुन कर चंदू ने आप को चिट्ठी भेजी कि आप अब स्वतन्त्र हैं। इस कारण शत्रुता भाव को त्याग कर मेरी लड़की का रिश्ता स्वीकार कर लो। इस मेल-मिलाप से हम दोनों ही सुखी हो जाएँगे। परन्तु गुरु जी ने उसकी यह बात स्वीकार करने से इंकार कर दिया और लिखा कि अपने पिता के कातलों से हमारा मेल नहीं हो सकता।

चंदू ने जहाँगीर को भढ़काना

चंदू ने जब गुरु जी का यह उत्तर पढ़ा तो उस को बहुत क्रोध आया। परन्तु अपना कोई वश न चलता देख कर उस ने जहाँगीर को कहा, जहाँपनाह ! गुरु अर्जन देव की गद्दी पर जो उन का पुत्र बैठा है, उस ने फौज रख ली है, बैठने के लिए तख्त रचा लिया है। बादशाह की तरह कलगी लगाता है और शस्त्र पहनता है। अपने आदमियों को जंग के अभ्यास कराने के लिए शिकार खेलता है। अगर इस को अभी से ही सम्भाला न गया, तो किसी दिन आपके विरुद्ध ही उठ खड़ा होगा।

जहाँगीर ने गुरु जी को दिल्ली बुलाना

चंदू के ज़ोर देने पर जहाँगीर ने अपने उच्च अहिलकार वजीर खां और किंचित बेग को अमृतसर भेजा कि गुरु जी को अपने साथ दिल्ली ले आओ। अमृतसर पहुँच कर वजीर खां ने प्रार्थना की कि आप जी को बादशाह ने बुलाया है, हमारे साथ चलो।

गुरु जी ने अपनी माता जी और बाबा बुड्ढा आदि से सलाह करके दिल्ली जाने की तैयारी कर ली और अमृतसर का काम आप जी ने बाबा बुड्ढा जी, भाई गुरदास, बहलो आदि को सौंप दिया।

www.9009.co.in

दिल्ली मंजनूं टिले डेरा और जहाँगीर से भेंट

वजीर खाँ और किंचित बेग से अपने कुछ सेवादारों शूरवीर भाई बिधीचंद, जेठा, पैढ़ा मोखा, त्रिलोकचंद, लालू, बालू आदि को लेकर गुरु जी घोड़ सवार होकर दिल्ली को चल पड़े। दिल्ली पहुँच कर वज़ीर खां ने आप जी का डेरा शहर से बाहर यमुना नदी के किनारे मजनू टिले पर लगवा दिया और बादशाह को इस बात की खबर दे दी। जब कुछ दिन बीत गए, तो वज़ीर खां ने बादशाह से पूछ कर गुरु जी को प्रार्थना की कि बादशाह आप जी को याद करता है। सुबह के दीवान की समाप्ति के उपरान्त गुरु जी अपने साथ भाई जेठा आदि पाँच सिक्खों को लेकर बादशाह के पास किले में आ गए। बादशाह ने एक सुन्दर चौकी पर आसन बिछा कर उन्हें अपने पास बैठा लिया और पूछा कि पीर जी ! हमारे देश में हिंदू और मुस्लमान दो बड़े धर्म हैं। दोनों धर्म अलग-अलग ही कर्म करते हैं। हिन्दू राम कहते हैं और मुसलमान अल्लाह। दोनों ही अपने-अपने मत को अच्छा कहते हैं। इन दोनों में अच्छा मत कौन सा है? गुरु जी ने कहा—बादशाह ! मत वही अच्छा है जो नेक कर्म कराता है। बन्दगी कराता है और किसी दूसरे को दुखी नहीं करता। दरगाह में प्रभुता उसको मिलती है, जो सदा नेकी की राह पर चलता है।

आप जी के यह वचन सुन कर बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ और उस ने एक हज़ार रुपए भेंट करके माथा टेका। गुरु जी ने यह रुपए वहाँ ही माँगने वालों को बाँट दिए और अपने डेरे आ गए।

गुरु जी ने शेर मारना

एक दिन बादशाह अपने साथ गुरु जी को शिकार खेलने के लिए ले गया। एक घने जंगल में जाकर एक शेर निकला। सारे शिकारी उस की गर्ज सुन कर पीछे हट गए। तब बादशाह ने

अपने मीर शिकारियों को कहा कि आगे होकर जो इसे मारेगा उसको मैं बड़ा अनाम दूँगा। परन्तु शेर की गर्ज से डरता कोई योद्धा आगे न बढ़ा। फिर बादशाह ने जब गुरु जी को प्रार्थना की, तो गुरु जी घोड़े से उतर कर ढाल तलवार लेकर शेर के सामने जा खड़े हुए और उसको ललकारा। ललकार सुन कर शेर गर्ज कर गुरु जी पर झपटा। आप जी ने बायें हाथ से शेर के आगे ढाल कर दी और दायें हाथ की तलवार से शेर का पेट चाक कर दिया। बादशाह गुरु जी का बल सत्ता देख कर बहुत खुश हुआ और बड़ी प्रशंसा करता हुआ किले के अन्दर चला गया। गुरु जी अपने डेरे मजनूं टिले आ गए।

गुरु जी ने आगरे जाना

जहाँगीर बादशाह गुरु जी पर बहुत खुश थे। वह आप जी को अपने साथ ही रखना चाहते थे। एक बार जब वह आगरे जाने लगे, तो प्रार्थना करके गुरु जी को भी अपने साथ ही ले गए। रास्ते में जब बादशाह डेरा करके विश्राम करता था, तो गुरु जी भी अपना डेरा कुछ दूर करके ठहर जाते थे।

एक घसियारे ने सच्चे पातशह के दर्शन करने

एक दिन एक घसियारा गुरु जी का यश सुनकर दर्शन करने आया और गल्ती से बादशाह के तम्बू में चला गया। बादशाह के आगे एक टका रख कर माथा टेक कर कहने लगा कि सच्चे पातशाह ! मेरी अन्तिम समय सहायता करके मुझे यमदूतों से बचा लेना। आप दीन दुनियाँ के मालिक हैं। उसकी यह प्रार्थना सुन कर बादशाह ने कहा कि मैं इस दुनियाँ का मालिक हूँ। दुनियाँ का जो पदार्थ माँगना हो माँग लो, परन्तु मैं अन्त समय परलोक की सहायता नहीं कर सकता। परलोक की सहायता करने वाले का

ड़ेरा उधर लगा हुआ है। उन के पास जाओ। यह बात सुनकर घसियारे ने अपना टका उठा लिया और गुरु जी के तम्बू में जा कर उन के आगे एक टका रख कर कहा कि सच्चे पातशाह! मेरा जन्म मरण काट दो। आज मेरा सौभाग्य है, जो आप जी के दर्शन हो गए। घसियारे की श्रद्धा और प्रेम को देख कर गुरु जी ने उस को सतिनाम का उपदेश देकर उस की मनोकामना पूर्ण करके उसको निहाल कर दिया।

एक सिक्ख लड़की को दर्शन देने

आगरे शहर में एक सिक्ख लड़की जो असिक्ख के घर विवाहित थी, जब उस ने गुरु जी का आगरे आना सुना, तो वह और गुरसिक्खों की तरह गुरु जी के डेरे जाकर दर्शन करना चाहती थी परन्तु उस का पति उस को गुरु दरबार में जाने की आज्ञा नहीं देता था। वह स्त्री रोज़ गुरु जी का ध्यान करके अरदास किया करती थी कि सच्चे पातशाह ! मुझे अपना दर्शन देकर मेरा जन्म सफल करो। अन्तर्यामी गुरु जी स्त्री की अरदास को सुन कर एक दिन शिकार के समय घोड़ सवार होकर उस के द्वार पर जा खड़े हुए और आवाज़ दी कि बीबी जिनका दर्शन करने के लिए रोज़ अरदास करती हो वे आ गए हैं, दर्शन कर लो। यह आवाज़ सुन कर बीबी दौड़ी आई। उस ने गुरु जी के चरणों में सिर रख कर माथा टेका। गुरु जी ने बीबी को आशीश दी और उस के मन की भावना पूरी करके उस को निहाल किया।

गुरु जी का ग्वालियर के किले में प्रवेश

बादशाह के साथ गुरु जी का मेल-मिलाप देख कर चंदू बहुत तंग था और किसी समय की ताड़ में था कि इस मेल-मिलाप को किसी तरह विघ्न पड़ जाए। एक दिन जहाँगीर को बुखार हो गया,

तो चंदू ने एक ज्योतिषि को बुला कर पाँच सौ रुपए दे कर सिखाया कि तुम बादशाह को कहो कि आपको घोर विपत्ति आई है जिस कारण बड़ा कष्ट होने की सम्भावना है। इसका उपाए जल्दी करना चाहिए। जब ज्योतिषि ने यह बात बताई, तो उस ने पूछा कि इस का क्या उपाय करना चाहिए? तब ज्योतिषि ने, जैसे चंदू ने उस को समझाया कि जो परमात्मा का नाम लेने वाला प्रभु का प्यारा और लोगों में माननीय पूज्य हो, वह अगर चालीस दिन ग्वालियर के किले में एकांत बैठ कर आपके निमित्त माला फेरे और प्रार्थना करे, तो यह कष्ट दूर हो सकता है। ज्योतिषि की बात सुनकर बादशाह ने अपने अहिलकारों को कहा कि इन गुणों वाले किसी आदमी को ढूँढ कर जल्द लाओ। इस समय चंदू जो और अहिलकारों के साथ बादशाह के पास बैठा था, झट बोला कि जहांपनाह ! श्री गुरु हरिगोबिंद जी इस काम के लिए बहुत योग्य हैं। उन को अगर प्रार्थना करके ग्वालियर के किले में भेज दिया जाए, जो उन की प्रार्थना शक्ति से आप जी का कष्ट अवश्य ही टल जाएगा।

बादशाह जो सहमा बैठा था। झट ही यह बात मान गया और गुरु जी को बुलाकर अपनी घोर विपत्ति की बात बता कर प्रार्थना की कि आप मेरी भलाई के लिए एक चालीसा ग्वालियर के किले में काटो। गुरु जी जो भविष्य की वार्ता को जानते थे, इस बात को स्वीकार करके अपने पाँच सिक्खों को साथ लेकर ग्वालियर के किले में प्रवेश कर गए। ज्ञानी ज्ञान सिंह जी ने यह दिन ११ वैसाख संवत् १६७४ का लिखा है। जहाँगीर ने किले के दारोगे हरिदास को लिखा कि गुरु जी मेरे लिए किले में चालीसा काटने आ रहे हैं। इन को किसी प्रकार की कोई भी तकलीफ न होने देना। इन के हुक्म का पालन करना और इन्हें खुश रखना।

किले में कैद बावन राजे

बादशाह की आज्ञा के अनुसार गुरु जी को हर प्रकार की सहूलत प्रतिदिन ही मिलने लगी। गुरु जी रुपए की रसद मंगवा 'कढ़ाह प्रसाद' और पदार्थ तैयार करवा कर उन राजपूत बावन बंदी राजाओं को खिला देते, जो बादशाह के हुक्म से इस किले में कैद किए हुए थे और आप भाई पैड़ा, बिधीचंद, पिराणा और जेठा की कृत कमाई का तैयार किया हुआ भोजन छकते। गुरु जी के पाँच सिक्ख साथियों में से एक गुरु जी के पास रहता था और बाकी चार किले से बाहर निकल कर मेहनत मज़दूरी करके जो पैसा कमाते थे, उस की रसद ले आते थे। उस का भोजन तैयार करके गुरु जी को खिलाते और आप खाते थे।

गुरु जी के ग्वालियर के किले में जाने की जब अमृतसर में माता गंगा जी और सिक्खों को खबर हुई, तो माता जी ने भाई बुड्ढा जी और भाई गुरदास जी को ग्वालियर गुरु जी की खबर लेने को भेजा। इस प्रकार जब सिक्खों को गुरु जी का ग्वालियर के किले में जाने का पता लगा, तो सिक्ख हज़ारों की गिनती में दर्शन करने आ जाते। किले के दरवाज़े को माथा टेक कर बैठ जाते शब्द पढ़ते और कढ़ाह प्रसाद करवा कर शब्द पढ़ते हुए वापिस चले जाते।

बाबा बुड्ढा जी और गुरदास जी सहित हज़ारों सिक्ख मिल कर गुरु जी के दर्शन करने आए। गुरु जी ने सब को धैर्य दिया और माता जी को एक चिट्ठी लिख भेजी कि आप जी ने कोई चिंता नहीं करनी। हम जल्द ही आप के पास आ जाएँगे।

जहाँगीर को रात स्वप्न में डर लगना

जब चालीस दिनों से बहुत ऊपर हो गए, तो सिक्खों को बहुत चिंता हुई कि बादशाह ने गुरु जी को बाहर क्यों नहीं बुलाया।

उधर बादशाह को भ्रम हो गया और वह रात को डर-डर कर उठने लगा। दुबिस्तान मज़ाहब ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि हज़ारों सिक्ख जो रोज़ गुरु जी के दर्शन करने आते थे और अन्य जो घर बैठे ही गुरु जी के दर्शन को तरस रहे थे उन की आह और दुराशीश से बादशाह को भ्रम हो गया और उस को भयानक शेर आदि की शकलें रात के समय दिखाई देने लगीं। जिन पर वह भयभीत होकर डर-डर कर उठने लगा। एक दिन बादशाह ने पीर ज़लाल दीन को इस का कारण पूछा तो पीर ने कहा कि तुम ने किसी प्रभु के प्यारे को दुख दिया है, जिस का फल तुझे यह मिल रहा है। तद्उपरान्त पीर मीयाँ मीर जी ने भी दिल्ली जाकर बादशाह से उसको इस रोग का यह ही कारण बताया। मीयाँ मीर जी ने चंदू की वह सारी बात सुनाई, जिस कारण और जिस तरह उस ने श्री गुरु हरिगोबिंद जी के पिता श्री गुरु अर्जन देव जी को कष्ट देकर शहीद किया, उन के सुपुत्र को अब तुम चंदू के कहने पर कैद किया हुआ है, इस का फल अशुभ है और तुझे परेशानी हो रही है।

यह भी लिखा है कि भाई जेठा अपने सिद्धियों के बल के कारण रात को शेर बन कर बादशाह को डराता रहता है, परन्तु जब इस बात का गुरु जी को पता चला, तो आप जी ने भाई जेठे को इस काम से रोकदिया।

गुरु जी का
कैदी राजाओं सहित किले से बाहर आना

जब मीयाँ मीर जी ने बादशाह को इस तरह समझाया, तो उस ने वज़ीर खां को ग्वालियर से गुरु जी को लाने के लिए भेजा। परन्तु गुरु जी ने किले में से निकलने से हन्कार कर दिया और

कहा कि जब तक यह बावन राजे जो किले में बहुत समय से कैद हैं, को न छोड़ा गया, तब तक हम भी अन्दर ही रहेंगे। यह बात वजीर खां ने जब बादशाह को जा कर बताई, तो जहाँगीर ने कहा कि जितने राजे गुरु जी का पलड़ा पकड़ कर निकल आएँ, उन को छोड़ दिया जाए बाकी अन्दर कैद ही रहेंगे। जब वज़ीर खां ने गुरु जी को यह बात आकर बताई तो आप जी ने ५२ कलियां वाला जामा सिलवाकर पहन लिया और सब राजाओं को एक एक पलड़ा पकड़ा कर बाहर ले आए। इस परोपकार के धारण गुरु जी का नाम 'बंदी छोड़' प्रसिद्ध हो गया।

तद्उपरान्त गुरु जी को वज़ीर खां बड़े सतिकार से दिल्ली ले गया। बादशाह जहाँगीर ने गुरु जी से माफी माँगी और योग्य भेंट देकर उन्हें सम्मानित भी किया। राजाओं ने जहाँगीर का धन्यवाद किया और आज्ञा लेकर अपने-अपने राज्यों को चले गए।

चंदू को जहाँगीर ने गुरु जी के हवाले करना

एक दिन जहाँगीर ने गुरु जी के हाथ में कपूरों और मोतियों का एक स्मरणा (माला) देख कर कहा कि इस में से एक मनका मुझे बख्शो। मैं इसे अपनी माला का मेरू बना कर आपकी निशानी के तौर पर रखूँगा। गुरु जी ने कहा कि पातशाह ! इस से भी सुन्दर और कीमती १०८० मनकों की माला, जो हमारे पिता जी के पास होती थी, वह चंदू ने उस समय उन से ले ली थी जब उस ने उन को अपनी हवेली में कैद करके रखा था, वह माला आप चंदू से मँगवा लो। जहाँगीर ने उसी समय अपना एक आदमी चंदू को बुलवाने के लिए भेज दिया। जब चंदू आ गया, तो बादशाह ने कहा, हमें वह माला चाहिए, जो तुम ने गुरु अर्जन देव जी से लाहौर में ली थी। यह आज्ञा सुन कर चंदू ने कहा, जहाँपनाह !

मैंने कोई माला गुरु जी से नहीं ली थी और न ही मेरे पास कोई माला अब है। फिर गुरु जी के कहने पर ही बादशाह ने उस के घर अपने आदमी भेज कर तलाशी ली, तो माला निकल आई।

चंदू के इस झूठ के कारण जहाँगीर को बहुत क्रोध आया और उस ने गुरु जी को कहा कि यह आपका अपराधी है, जिस ने आपके निर्दोष पिता को घोर कष्ट दे कर शहीद किया है। इस को पकड़ो, जो जी आए सज़ा दो।

बादशाह की आज्ञा सुन कर भाई जेठा आदि सिक्खों ने चंदू को पकड़ कर उस के हाथ पैर बाँध कर अपने डेरे मजनूं टिले ले आए। तद्उपरान्त बादशाह ने चंदू के पुत्र और स्त्री को भी पकड़ कर गुरु जी के पास मजनूं टिले भेज दिया कि इन को भी चंदू के साथ ही मनेच्छित सज़ा दी जाये, परन्तु गुरु जी ने कहा कि इन का कोई दोष नहीं है। इन को छोड़ दो। अतः वह दोनों मां बेटा गुरु जी की महिमा करते हुए घर को चले गए।

जहाँगीर के संग गुरु जी का अमृतसर आना

इस वार्ता के उपरान्त जब गुरु जी ने अमृतसर जाने की अपनी सलाह जहाँगीर को बताई, तो उस ने कहा कि मैं भी कश्मीर जा रहा हूँ। आप ने भी मेरे साथ ही पंजाब को जाना। दो चार दिनों में जहाँगीर तैयारी करके अपने अमले फैले और बेगमों के परिवार सहित दिल्ली से चल पड़ा। गुरु जी भी उस के डेरे से कुछ दूर पीछे-पीछे अपने सिक्ख सेवकों सहित चल पड़े। इस तरह चल कर गोईंदवाल के पत्तन से निकल कर अमृतसर आकर बादशाह ने अपना डेरा गुमटाले गाँव पर एक बड़ी खुली जगह में कर लिया और गुरु जी अपने घर महलों पर आ गए। गुरु जी के अमृतसर आ जाने की नगर निवासियों और सिक्ख परिवार ने बहुत खुशी

www.9009.co.in

मनाई। घर-घर में दीपमाला की गई और बाजे बजाए गए। माता गंगा जी ने गुरु जी के सिर पर वारने करके गरीबों को बहुत धन बाँटा। दरबार साहिब हाज़िर होकर माता जी ने गुरु जी को माथा टिकाया और कढ़ाह प्रसाद की देग बाँटी।

गुरु जी का लाहौर जाना और चंदू की मौत

कुछ दिन अमृतसर डेरा रख कर जहाँगीर लाहौर को चल पड़ा और अपने दो अहिलकार वज़ीर खां और किंचित बेग को कहा, तुम दो चार दिन ठहर कर गुरु जी को अपने साथ लाहौर ले आना। अमृतसर कुछ दिन विश्राम करके और सिक्ख संगत को निहाल करके गुरु जी लाहौर को जाने के लिए तैयार हो गए। अपने साथ गुरु जी ने कुछ सिक्ख योद्धाओं को लिया और चंदू को भी कैद करके साथ ही ले गए। रास्ते में एक रात डेरा करके दूसरे दिन आप जी लाहौर पहुँच गए और मुजंग गाँव के पास डेरा कर लिया। बाद में सिक्खों ने इस स्थान पर गुरद्वारा बनाया जो गुरद्वारा छेवीं पातशाही मुजंग के नाम से जाना जाता है। लाहौर की संगत आप जी के दर्शन करने के लिए कढ़ाह प्रसाद और भेंट लेकर आई। इस समय गुरु घर द्रोही चंदू को पकड़ा हुआ देख कर सभी को बहुत खुशी हुई। तद्उपरान्त संगत ने चंदू को पकड़ कर सारे शहर के बाज़ारों में उस का मुँह काला कर के घुमाया। सभ ने उस पर थूका। जब चंदू उस भरभूंजे की भट्ठी से निकलने लगा जिस से रेत गर्म कराकर चंदू गुरु जी पर डलवाता था। उसने गुस्से से चंदू के सिर पर रेत वाला करछा मारा और कहा कि दुष्ट तुम मुझ से ज़बरदस्ती पाप कराता था। अब मैं तुझे नहीं छोड़ूँगा। इस चोट से चंदू ने तड़प-तड़प कर वहीं पर प्राण त्याग गया।

जहाँगीर ने कश्मीर जाना

लाहौर में गुरु जी के रोज़ दीवान लगते और दर्शन करके संगत नामदान का उपदेश लेकर निहाल होती। इस तरह लाहौर (मुजंग) में गुरद्वारे नित्य नई संगत भेंट लेकर आती और मनोकामनाएँ पूरी करके अपना जन्म सफल करती।

कुछ दिन लाहौर आराम करके जहाँगीर ने कश्मीर जाने की तैयारी करके गुरु जी से पास प्रार्थना की कि मैं कश्मीर को जा रहा हूँ। आप जी मेरे पीछे मेरे पुत्र शाहजहाँ को मेरे समान ही दया की ही नज़र से देखना। उधर शाहजहाँ को जहाँगीर ने कहा कि गुरु जी पीर भी हैं और बड़े योद्धे भी हैं, तुम इन के साथ सदा ही नम्रता और सतिकार से पेश आना। जहाँगीर इस तरह दोनों ओर से मेल-मिलाप से रहना कह कर आप अपना लश्कर ले कर कश्मीर को चल पड़ा।

सोढी मेहरवान और चंदू के पुत्र का मेल

चंदू के मरने का अफसोस सुनकर बाबा प्रिथीचंद का पुत्र मेहरवान चंदू के पुत्र करमचंद के पास लाहौर अफसोस करने आया और उसको कहा कि शाहजहाँ को मिल कर हमें कुछ कहना चाहिए। गुरुगद्दी पर मेरा हक है। मैं गुरु रामदास जी के बड़े पुत्र बाबा प्रिथीचंद जी का पुत्र हूँ और श्री हरिगोबिंद जी गुरु रामदास जी के छोटे पुत्र श्री गुरु अर्जन देव जी के पुत्र हैं।

यह सलाह करके जब इन दानों ने शाहजहाँ को मिल कर अपनी बात बताई, तो उस ने कहा जब पिता जी (जहाँगीर) वापिस कश्मीर से आएँगे तो आपकी बात उन को बता कर उन से सिफारिश करूँगा।

गुरु जी ने मेहरवान को मिलना

जब इस बात का पता श्री गुरु हरिगोबिंद जी को लगा कि मेहरवान जी चंदू के पुत्र को साथ लेकर हमारे खिलाफ शाहजहाँ को मिले हैं, तो गुरु जी भाई पैड़ा, पिराणा, भाई जेठा आदि कुछ व्योवृद्ध सिक्खों को साथ लेकर मेहरवान के पास चले गए। बड़ा भाई समझ कर नमस्कार करके पास बैठ कर कहा कि भाई साहिब! हमारी आपिस की नाराज़गी करके जगत में निंदा होती हैं। इस कारण हमें प्रेम प्यार से रहना चाहिए। आप को जिस चीज़ की ज़रूरत हो वह ले लो और अपना घर बाहर सम्भालो। मेहरवान ने कहा आपका हमारा मेल नहीं हो सकता। आप हमें बातों में ही रखना चाहते हैं। यह बातें सुन कर गुरु जी नमस्कार करके बड़े शांत चित्त से अपने डेरे आ गए।

जहाँगीर बादशाह का परलोक गमन

जहाँगीर जो कश्मीर की सैर करने गया था, वह कुछ महीनों के पश्चात् वहाँ बीमार होकर जब वापिस लौटा तो दमें की बीमारी से रास्ते में ही अक्तूबर सन् १६२७ (संवत् १६४८) में चल बसा। इस को शाहदरे लाहौर के पास दफनाया गया। जहाँ पर इस का एक मकबरा बना हुआ है। इस उपरान्त इस का पुत्र शाहजहाँ दिल्ली के तख्त पर बैठा।

काबल से सिक्ख ने घोड़ा लेकर आना

काबल के एक श्रद्धालु सिक्ख ने अपनी कमाई में से दसवंध इकट्ठा करके गुरु जी के लिए एक लाख रुपए का एक घोड़ा ईराक के सौदागर से खरीद लिया और काबल कंधार की संगत के साथ जब यह सिक्ख घोड़ा लेकर अटक दरिया से पार हुआ, तो

शाहजहाँ के एक उमराव ने जो शाहजहाँ के लिए अच्छे घोड़े खरीदा करता था, उस ने कहा यह घोड़ा बादशाह शाहजहाँ के लिए ही बना है। तुम इसकी कीमत ले लो। परन्तु सिक्ख ने कहा, यह घोड़ा मैंने तो गुरु जी के निमित्त खरीद कर उन की भेंट करने जा रहा हूँ। इस को किसी के पास बेच नहीं सकता।

परन्तु शाहजहाँ ने घोड़े के गुण सुन कर अपने सिपाही भेज कर सिक्ख से घोड़ा ज़बरदस्ती ले कर तबेले में बाँध लिया। यह बात जब सिक्ख ने गुरु जी के पास जाकर बड़े दुख से बताई, तो आप जी ने कहा, गुरु के सिक्खा ! तुम चिंता न करो, तुम्हारी भेंट हमें स्वीकार हो गई है। घोड़ा हमारे पास जल्दी आ जाएगा।

घोड़े का
बीमार होना और बादशाह ने काजी को देना

घोड़े को देख कर शाहजहाँ बहुत खुश हुआ और उस की सेवा और देखभाल के लिए सेवादार नियत कर दिए। परन्तु घोड़ा थोड़े दिनों में बीमार हो गया और उस ने चारा खाना और पानी पीना छोड़ दिया। एक पाँव ज़मीन से उठा लिया और लंगड़ा होकर चलने लगा। तब शाहजहाँ के सलोत्री ने घोड़े को देख कर सलाह दी कि इस घोड़े को जल्द इस तबेले से निकाल देना चाहिए। नहीं तो इस की मुँह खुर की छूत वाली बीमारी से दूसरे घोड़ों के बीमार हो जाने का डर है। बादशाह ने घोड़ों के इलाज करने के लिए सलोत्री की सलाह मान कर यह घोड़ा अपने काजी रुस्तम खां को दे दिया। घोड़ा लेकर काजी बहुत खुश हुआ और उस का इलाज करने लगा। एक दिन भाई सुजान ने, जो यह घोड़ा काबल से लाए थे, गुरु जी को बताया कि महाराज ! अब वह घोड़ा मैंने काजी के पास देखा है और कुछ बीमार भी लगता है। तब गुरु जी

ने काजी को बुला कर सारी बात उस से पूछ कर कहा कि अगर तुम इसको बेचना चाहो तो हम से इसका दस हज़ार रुपया ले लो। हम इलाज करके इसे स्वस्थ कर लेंगे। काजी ने घोड़े का मूल्य दस हज़ार मान कर घोड़ा गुरु जी को दे दिया। गुरु जी ने घोड़े का इलाज अपने सलोत्रीए से करवाया। जिस से घोड़ा स्वस्थ होकर घास दाना भी खाने लगा और लंगड़ी टाँग भी ज़मीन पर लगा ली। भाई सुजान को अपना घोड़ा स्वस्थ देख कर बहुत खुशी हुई। गुरु जी ने उस पर सुनहरी पालना डलवा कर जब सवारी की तो भाई सुजान ने कहा, गुरु जी ! अब मेरा मनोरथ पूरा हो गया है। आप जी ने मेरी भावना पूरी कर दी है।

गुरु जी बोले— भाई सुजान ! तुम निहाल हो गए हो तेरा प्रेम और श्रद्धा धन्य हैं। इस तरह भाई सुजान अपनी मनोकामना पूरी करके अपने देश काबल चला गया।

काजी ने घोड़े का मूल्य मांगना

कुछ समय के उपरान्त काजी को पता चला कि घोड़ा स्वस्थ हो गया है, तो उस ने एक दिन गुरु जी से अपने घोड़े का मूल्य माँगा। गुरु जी ने कहा—हम तुझे अमृतसर जाकर पैसे देंगे। काजी ने कहा कि अगर पैसे नहीं हैं तो मेरा घोड़ा वापिस कर दो। कुछ दिन ठहर कर जब फिर काजी पैसे लेने आया, तो बाबा बुड्ढा जी ने कहा कि गुरु जी इस समय विश्राम कर रहे हैं, आपने फिर किसी दिन आना। काजी ने कहा, गुरु घर के तुम ही कार्यकर्ता हो मैं तुझ से पैसे लेकर ही जाऊँगा, अगर नहीं दोगे तो मैं शाहजहाँ से बात करके तेरा दामाद बन कर तुझ से पैसे ले लूँगा। तब भाई बुड्ढा जी ने कहा, अगर गुरु जी ही तुम्हारे दामाद बन जाएँगे, तो फिर तुम उन से पैसे किस तरह लोगे?

बाद में भाई बुड्ढा जी की बात सुन कर गुरु जी ने कहा कि बाबा जी आप ने हमें काजी का दामाद बनना कह कर श्राप क्यों दे दिया है? बुड्ढा जी ने कहा कि महाराज ! मेरे वश में कुछ नहीं है। जैसे आप ने कहलाया, वैसे ही मैंने कहा है।

गुरु जी का साई मीयां मीर जी को मिलना

एक दिन जब गुरु जी अपने कुछ सिक्खों के साथ साई मीयां मीर जी के डेरे से निकलने लगे, तो साई जी ने गुरु जी को बड़े सतिकार से अपने डेरे ले जाकर अपने आसन पर बैठाया और उन्हें अल्लाह का नूर कहा। जब गुरु जी कुछ समय बैठ कर चलने लगे तो मीयां मीर जी ने फिर सिजदा करके आप जी को विदा किया।

कौलां ने गुरु जी की शरण आना

इस समय काजी रुस्तम खां की लड़की कौलां भी साई जी के पास और श्रद्धालुयों के साथ एक ओर बैठी गुरु जी के दर्शन कर रही थी। जब गुरु जी वहाँ से चले गए, तो कौलां ने मीर जी को पूछा कि आप जी ने इन को अल्लाह का नूर किस तरह कहा है? पीर जी ने कहा कि बेटी ! यह वली अल्ला गुरु नानक जी की गद्दी नशीन हैं और इन का निवास स्थान अमृतसर हैं। यह बहुत शक्ति के मालिक हैं। इस प्रकार की महिमा सुन कर कौलां को गुरु घर पर बहुत श्रद्धा हो गई।

दूसरे जुमे वाले दिन जब फिर कौलां मीयां मीर जी के दर्शन करने आई, तो उस समय एक सिक्ख एक ओर बैठ कर बड़ी मीठी आवाज़ में सुखमनी साहिब का पाठ कर रहा था उसको पीर ने बुला कर पूछा कि यह किस की वाणी है? सिक्ख ने कहा यह

श्री अर्जन देव जी की रची हुई वाणी है। तब पीर ने सारे सुखमनी साहिब का पाठ बड़ी श्रद्धा से सुन कर गुरु घर की बहुत स्तुति की।

इसके साथ गुरवाणी का पाठ और गुरु घर की महिमा सुन कर कौलां को गुरु घर पर बहुत श्रद्धा हो गई। कौलां की गुरु घर पर श्रद्धा देख कर कौलां का पिता काजी और उस की माँ उस से नाराज होते। परन्तु कौलां कहे कि पीरों फ़कीरों के दर्शन करने से रोकना गुनाह होता है। एक दिन काजी ने कौलां को बहुत मारा और उसे जान से मार देने की धमकी भी दी।

इस प्रकार दुखी होकर एक रात कौलां ने अपनी एक दासी को गुरु जी के पास भेज कर प्रार्थना की कि जैसे भी हो मैं आपकी शरण में रहना चाहती हूँ। क्योंकि यहाँ मेरे पिता जी मुझे जान से मार देने की भी धमकी देते हैं और मुझे डर है कि किसी समय यह मुझे मार न दें।

गुरु जी ने इसके उत्तर में दासी को कहा कि कल आधी रात के समय कौलां को कहना कि जब हमारे घोड़े के पैरों की आवाज़ सुने तो तत्काल हमारे पास आ जाए। यह वचन करके गुरु जी ने बाबा बुड्ढा जी आदि सिक्खों को पहले ही अमृतसर भेज दिया और आप ढाढी से अकेले ही बैठकर वारें सुनते रहे।

तद्उपरान्त जब आधी रात बीत गई, तो गुरु जी घोड़ सवार हो कर काजी के घर के पास गए। कौलां जो पहले ही तैयार होकर प्रतीक्षा कर रही थी वह जल्द ही गुरु जी के पास आ गई। गुरु जी ने उस को अपने पीछे घोड़े पर बैठा लिया। घोड़े को तेज़ दौड़ा कर भाई जेठा आदि सिक्खों को रास्ते में जा मिले। इस तरह रात ही रात चल कर गुरु जी गुरुसर सतलानी के मकाम पर

पहुँच गए। वहाँ विश्राम और स्नान करके कौलां को एक डोले में बैठा कर अमृतसर पहुँच गए।

जब इस बात का माता जी को पता चला, तो वे बहुत नाराज़ हुए और कहा कि यह आप ने अनुचित बात की है, अपनी ऊँची कुल और बड़ों का विचार नहीं किया।

माता जी के यह वचन सुन कर गुरु जी चुप रहे और कौलां को अपने महलों से दूर जल्दी ही एक अलग मकान तैयार करा कर वहाँ निवास करवा दिया। यह निवास स्थान कौलसर सरोवर की दक्षिण दिशा-भाई कौलां का स्थान प्रसिद्ध है।

काजी ने घोड़े का मूल्य लेने अमृतसर आना

दूसरे दिन काजी को पता चला कि गुरु जी यहाँ से चले गए हैं, तो वह यह विचार करके कि अगर मैं अमुतसर शीघ्र न पहुँचा, तो गुरु जी वहाँ से आगे जंगल (मालवे) देश को चले जाएँगे और वहाँ मेरा जाना कठिन हो जाएँगा। इस लिए वह शीघ्र ही अमृतसर आ गया।

काजी ने गुरु जी को मिलकर प्रार्थना की कि मेरी धनराशि मुझे जल्द ही दे दो। मैंने वापिस जाना है।

काजी की बात सुन कर गुरु जी ने कहा कि आप रात ठहरो और दिन को हम आपको हुंडी लिख देंगे। आप लाहौर में जाकर अपनी धनराशि वसूल कर लेना।

काजी और कौलां का मिलाप

काजी को अभी तक यह पता नहीं चला था कि उस की लड़की कौलां भी गुरु जी के साथ अमृतसर आ गई है। इस लिए वह रात ठहरना खुशी से मान गया। गुरु जी ने उस की रोटी तैयार करने

www.9009.co.in

के लिए कौलां को संदेश भेजा। कौला ने बड़े प्रेम से रोटी तैयार करके अपने पिता और उसके नौकर को अपनी दासी के हाथ परोस कर भेज दी। जब काजी ने खुश होकर खाना खा लिया तो कौलां ने सामने आकर सलाम किया। कौलां को यहाँ देख कर काजी गुस्से से कौलां को गाली निकालने लगा और उठ कर बाहर निकल गया। वह घोड़े पर सवार होकर अपने नौकर सहित वापिस लाहौर को जाता हुआ सिक्खों से बोल गया कि अब मैं शाही सेना लेकर आऊँगा।

काजी और शाहजहाँ में हुई बात से वज़ीर खाँ ने गुरु जी को सूचित करना

काजी ने लाहौर जाकर शाहजहाँ को अपनी सारी बात बताई कि गुरु जी ने मेरे घोड़े का मूल्य भी नहीं दिया और मेरी लड़की को अगवाह कर के अमृतसर ले गया है। आप सेना भेज कर गुरु जी को पकड़ कर यहाँ मंगवाओ और उसको इस अपराध का सख्त दण्ड दो। काजी की सारी बात सुन कर बादशाह ने कहा, लड़की जो काफ़र हो गई है उसका ख्याल छोड़ देना ही अच्छा है। तुम चुप करके घर बैठो यह उत्तर सुन कर काजी चुप करके घर को चला गया। यह सारी बात लिख कर वज़ीर खाँ ने गुरु जी को भेज दी और लिखा कि आप निश्चिंत होकर टिके रहें। बादशाह ने काजी की सारी बात सुनकर शाही सेना को भेजना स्वीकार नहीं किया।

गुरु जी का दूसरा विवाह

अमृतसर निवास रख करके गुरु जी योद्धे, घोड़े और शस्त्रों को एकत्रित करके नित्य ही युद्ध का अभ्यास करते रहते। अनेक

प्रकार के शस्त्रों के प्रहार और घोड़े के कारनामे देख कर गुरु जी बड़े खुश होते और योद्धाओं के उत्साह के लिए उन को पुरस्कृत भी करते। देश प्रदेश से संगत की बहुत भीड़ लगी रहती। अकाल तख्त पर शाम को दीवान लगते और ढाढियों से योद्धाओं के प्रसंग आप सुनते और अपने योद्धाओं को सुनाते।

एक दिन बकाला निवासी भाई हरी चंद ने माता गंगा जी से सलाह करके अपनी लड़की नानकी जी का रिश्ता गुरु जी के साथ करके ८ वैशाख संवत् १६७० का दिन नियत कर दिया। उपरान्त नियत दिन बड़ी सज धज से गुरु जी की बारात बकाले पहुँची और जब गुरु जी डोली लेकर घर आए, तो माता जी ने बड़ी खुशी मनाई। दान पुण्य किए और रिश्तेदारों को योग्य सिरोपा देकर विदा किया।

नानक मते जाने की तैयारी

कुछ समय के पश्चात् एक दिन गुरु जी को एक सिक्ख ने, जो नानक मते से आया था, बताया कि महाराज ! गुरु स्थान नानक मते का सिद्ध लोग घोर अनादर कर रहे हैं। आप कृपा करके जल्दी वहाँ पहुँच कर सतिसंग नानक साहिब जी की यादगार को नष्ट होने से बचाओ।

सिक्ख की प्रार्थना सुन कर गुरु जी ने बाबा बुड्ढा जी आदि शिरोमणी सिक्खों से कहा कि हम नानक मते जा कर गुरु साहिब की यादगारें पीपल और मीठा रीठा सिद्धों से बचाना चाहते हैं। अगर न गए, तो सिद्ध योगी इसे मिटा देंगे। आप सारे परिवार को भाई साईदास के पास डरोली भाई ले जाओ। वे वहीं ठहरेंगे।

फिर गुरु जी आप अपने साथ योद्धाओं और शस्त्र ले कर करतारपुर आ गए। शस्त्र और योद्धे आप जी ने करतारपुर ही टिका दिए और आप दो चार दिन ठहर कर इनका पूरा हिसाब

www.9009.co.in

करके अपने साथ २०-२५ घोड़ सवार ले कर नानक मते की ओर चल पड़े।

पैंदे खां को नौकर रखना

करतारपुर ठहरते समय आसपास की बहुत संगत आप जी की महिमा सुन कर दर्शन करने आई। इस समय करतारपुर के नज़दीक एक गाँव बड़े मीर के पठान भी गुरु जी के दर्शन करने आए। इन्होंने प्रार्थना की कि महाराज ! हमें भी अपनी सेना में नौकर रख लो। तब गुरु जी ने उन में से एक नौजवान १६ साल के लड़के पैंदे खां का डील-डोल अच्छा देख कर ग्यारह रुपए महीने पर नौकर रख लिया और इस को और योद्धाओं के पास करतारपुर ही छोड़ कर आप नानक मते को चले गए।

नानक मते भाई अलमस्त के पास

रास्ते में अनेक प्राणियों का उद्धार करते हुए गुरु जी नानक मते पहुँच गए। भाई अलमस्त से सारी बात सुनी। योगियों से पीपल के जलाए जाने की बात सुन कर गुरु जी ने स्नान करके शस्त्र-वस्त्र सजाए और पीपल के पास दीवान सजा कर सोदर की चौकी पढ़ कर अरदास की। तद्उपरान्त निर्मल जल मंगवा कर उस में केसर और चंदन घिसवा कर मिलाया और सतिनाम कह कर उस जले हुए पीपल पर, जो सिद्धों ने ईर्ष्या करके, गुरु घर की निशानी मिटाने के लिए जला दिया था, छिड़का। दूसरे दिन पीपल में से हरी-हरी शाखाएँ और पत्ते निकले देख कर सब ने गुरु जी की जय-जयकार की और खुशियाँ मनाई। इस पीपल पर आज तक केसर के निशान और चंदन के सफेद निशान प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं।

www.9009.co.in

योगियों ने गोरख नाथ को बताना

गुरु जी का इस तरह से शस्त्रधारी होकर आना और पीपल को हरा भरा करना देख कर नानक मते के योगी दौड़ कर गोरख नाथ के पास चले गए और उसको बताया कि पहले जिस स्थान का नाम आप जी के प्रताप के कारण गोरखमता था, परन्तु फिर जब आप जी से वहाँ चर्चा करके श्री नानक जी ने विजय प्राप्त कर ली थी, तो उस का नाम 'नानक मता' प्रसिद्ध हो गया। वहाँ एक सिक्ख दीये झाड़ की सेवा के लिए टिक गया है। हमने उस को वहाँ से चले जाने को कहा, परन्तु उसने जब हमारा कहना न माना, तो हम ने उस पीपल को आग लगा कर जला दिया, जिसके नीचे बैठ कर इन के गुरु ने आपके साथ चर्चा की थी और जिस को यह अपने गुरु की यादगार समझ कर मानते थे। हमारी इस कारवाई को देख कर वहाँ के सेवादार सिक्ख ने अपने गुरु को पंजाब देश से बुला लिया, जिस ने आ कर अपनी शक्ति से उस जले हुए पीपल को फिर हरा-भरा कर दिया है। गुरु शस्त्रधारी और जीव घाती है। उस के साथ और भी जीव हत्या करने वाले आदमी हैं, जो हर रोज़ ही जंगल में से जानवर मार कर लाते हैं और पका कर खाते हैं।

अपने चेले से योद्धाओं की सारी बात सुन कर गोरख नाथ ने कहा कि गुरु नानक जी की गद्दी से झगड़ा नहीं करना चाहिए। मेल रखना ही उचित है। गोरख नाथ की बात को सुन कर भर्थरी नाथ, झंगर नाथ आदि सिद्ध बोले कि अब यहाँ गुरु नानक जी नहीं हैं। हम अपना स्थान गुरु जी से ज़रूर छुड़वाएँगे। इन की बात सुन कर गोरख नाथ ने कहा, अगर यह बात है तो जाओ आज ही जा कर अपना स्थान ले लो। इस से आप का बहुत यश होगा।

योगियों ने गुरु जी को करामातें दिखाना और पराजित होकर दौड़ जाना

गोरख नाथ का यह वचन सुन कर योगी गोरख नाथ को आदेश देते हुए चल कर गुरु जी के पास नानक मते आ गए। गुरु जी के पास बैठ कर झंगर नाथ ने कहा कि आप जैसे गृहस्थियों का हमारे साथ, जिन्होंने संसार के सभ पदार्थों को त्याग दिया है, झगड़ा करना अच्छा नहीं है। इस कारण हमारे इस पुराने स्थान गोरख मते को आप छोड़ कर चले जाओ। गुरु जी ने हँस कर कहा कि आपका मन ममता में फँसा हुआ है। किसी स्थान अथवा पदार्थ में अपनत्व रखना योगियों का काम नहीं है। आप अपने आप को त्यागी कहते हुए भी ममता में फंसे हुए हैं।

गुरु जी के यह वचन सुन कर योगी अपनी अजमत दिखाने के लिए आकाश में उड़ कर पत्थरों की वर्षा और आग की चिंगारियाँ उड़ाने लगे। मिट्टी कंकरों की ज़ोरदार आँधी चल पड़ी। बड़े-बड़े भयानक रूप धारण करके मुँह से मार लो मार लो की आवाज़ें करके सिक्खों को डराने लगे। फिर साथ ही साथ शेरों और साँपों के भयानक रूप धारण करके और फुंकारे मारने लगे। इन कौतुकों से सिक्खों को हैरान होते देख कर गुरु जी ने कहा आप चुप करके तमाशा देखते रहो। इन की सारी शक्ति अभी नष्ट हो जाएगी।

गुरु जी ने यह वचन करके जब ऊपर नज़र करके सिद्धों को देखा, तो जहां भी कोई सिद्ध जिस भी आकार में था, वहाँ ही उस को आग जलाने लगी। इस अग्नि से व्याकुल होकर सिद्ध दौड़ कर गोरख नाथ के पास चले गए और रख लो रख लो की दुहाई देकर उस की शरण पड़ गए। गोरख ने कहा आपको मैंने पहले ही

www.9009.co.in

समझाया था कि गुरु नानक की गद्दी से झगड़ा करना अच्छा नहीं है। परन्तु आप ने मेरी बात न मानी, तो अब मान गँवा कर दौड़े आए हो। इस तरह गोरख नाथ ने उन को बहुत लज्जित किया।

गुरु जी का वापिस पंजाब आना

सिद्धों को नानक मते से निकाल कर गुरु जी ने पंजाब को लौटने की तैयारी कर ली। चलने से पहले गुरु जी ने इलाके के सिक्खों को बुला कर कहा कि यहाँ विघ्न डालने वाले योगी अब गुरु स्थान का अपमान नहीं करेंगे। यह 'नानक मता' अब अटल रहेगा। इस को कोई नहीं मिटा सकेगा। इस प्रकार सब कुछ ठीक करके और भाई अलमस्त को धैर्य देकर गुरु जी नानक मते से चल कर सुरसती नदी पर आ गए। यहाँ स्नान और कुछ विश्राम करके यमुना नदी को पार करके थानेसर आ गए। थानेसर आप जी ने गुरु नानक देव जी तथा गुरु अमरदास जी की धर्मशाला में डेरा किया। कुछ दिन यहाँ डेरा करके श्रद्धालु संगत को नामदान का उपदेश दे कर आप वहाँ से चल कर डरोली अपने परिवार के पास पहुँच गए। आपके दर्शन करके और योगियों पर विजय प्राप्त करने के सारे हाल परिवार तथा सिक्खों को सुनाए। उन के परिवार को बहुत खुशी हुई।

श्री गुरदित्ता जी का जन्म

डरोली निवास के समय माता दामोदरी जी की कोख से कार्तिक की पूर्णिमा आधी रात को संवत् १६७० में गुरु जी के घर साहिबज़ादे ने जन्म लिया। सारे परिवार और सिक्ख सेवकों में बहुत खुशियाँ मनाई गई। सवा महीने के बाद गुरु जी ने इस बालक का नाम गुरदित्ता रखा।

वैशाखी का मेला करना

चैत्र महीने के व्यतीत होते ही जब वैशाखी आई, तो गुरु जी के दर्शन करने के लिए चारों दिशाओं से सिक्ख सेवक उमड़-घुमड़ कर बहूमूल्य भेंट लेकर आए। एक बहुत बड़े पँडाल के नीचे गुरु जी का दीवान सजा। वैसाखी वाला सारा दिन संगत भेंट हाज़िर करके गुरु जी के दर्शन उपदेश के द्वारा मनोकामना पूर्ण करके कृतार्थ होती रही। डरोली से यह रौनक देख कर जब कुछ सिक्खों ने अमृतसर आ कर बाबा बुड्ढा जी और भाई गुरदास जी को गुरु जी की कुशलता बताई तो सारी संगत की प्रार्थना स्वीकार करके बाबा बुड्ढा जी ने गुरु जी को एक सिक्ख के हाथ चिट्ठी भेजी कि आप अमृतसर आ कर संगत को दर्शन दो। संगत बहुत उत्सुक है। इसका उत्तर गुरु जी ने यह दिया कि हम जल्द ही अमृतसर आ रहे हैं। परन्तु जब तक हम अमृतसर नहीं आ जाते, तब तक आप सब मिल कर प्रेम से गुरशब्द पढ़ा करो, जो दोनों लोकों में सिक्ख की रक्षा करने वाले है।

अमृतसर शब्द चौकी नियत करनी

जब गुरु जी की चिट्ठी आई, तो सब संगत ने बहुत खुशी मनाई। बाबा बुड्ढा जी ने गुरु जी के हुक्म की पालना करने के लिए संध्या समय संगत को साथ ले कर अमृत सरोवर के चारों ओर बड़े प्रेम से चार घड़ी रात गई, तक शब्द वाणी पढ़नी और फिर समाप्ति के बाद अरदास करनी कि 'सच्चे पातशाह मिहरवान गुरु जी' यहाँ आ कर संगत को दर्शन दो। संगत आप जी के दर्शन के लिए उत्सुक है। बाबा जी इस तरह ही रोज़ नियमसहित चौकी चढ़ा कर समाप्ति पर गुरु जी के आगे दर्शन देने की अरदास करते।

www.9009.co.in

गुरु जी ने अमृतसर आना

सिक्खों के मन की श्रद्धा और उत्कट प्रेम को अनुभव करके गुरु जी डरोली से तैयारी करके अमृतसर को चल पड़े। रास्ते में गाँवों की संगत को दर्शन उपदेश द्वारा निहाल करते हुए रुकते-रुकते तरनतारन पहुँच गए और एक दिन यहाँ पर विश्राम करके अमृतसर को आए। अमृतसर की संगत आप जी के स्वागत के लिए आई और शब्द कीर्तन करते हुए आप को 'हरि मन्दिर साहिब' ले आए। गुरु जी ने साहिबज़ादा गुरदित्ता जी को माथा टिकाया और कढ़ाह प्रसाद की देग बँटवाई। इस समय सिक्ख संगत ने बहुत खुशी मनाई।

नानक मते जाते समय गुरु जी ने जो अपना सैनिक शस्त्र आदि सामान और योद्धे करतारपुर भेज दिए थे। वह भी वापिस अमृतसर मँगवा लिए और पैंदे खां भी अमृतसर आ गया।

सिक्खों के प्रति उपदेश

अमृतसर गुरु जी के दो समय सुबह शाम दीवान सजते और सिक्खों की मनोकामनाएँ पूरी करते। आसपास के सिक्ख सेवक भेंट ले कर आप जी के दर्शन करने आते और उपदेश लेकर अपना जीवन सफल करते। एक दिन आप जी के एक प्रेमी सिक्ख दरगाही भंडारीए ने प्रार्थना की कि महाराज ! कोई सिक्ख गुरवाणी के सम्बन्ध में चर्चा कर के आपिस में लड़ते-झगड़ते अपनी-अपनी बात पर डटे रहते हैं, इस का उपाय बताओ। जिस से आपिस में सिक्ख झगड़ा न करें।

गुरु जी ने कहा चर्चा चाहे चार प्रकार की होती है, परन्तु गुरु सिक्खों के ग्रहण करने योग्य दो प्रकार की चर्चा होती है—

www.9009.co.in

१. वेद चर्चा—प्रेम भाव से उत्तर प्रश्न करके एक दूसरे की तसल्ली करनी।

२. हेत चर्चा—ईर्ष्या रहित होकर प्रेम भाव से खंडन-मंडन करके एक दूसरे की तसल्ली करनी।

सिक्खों के त्यागने योग्य दो प्रकार की चर्चा है—

१. जलप चर्चा—अपनी बात की पुष्टि के लिए दूसरे की बात को रद्द करके झगड़ा करना।

२. वितंड चर्चा—दूसरे का पक्ष खंडन करने के लिए छल कपट और झूठ का सहारा लेकर अपने पक्ष को सिद्ध करने का यत्न करना।

गुरु के सिक्ख को किसी का मन नहीं दुखाना चाहिए। सब के मन में खुशी पैदा करनी चाहिए।

एक दिन गुरु जी के पास एक सिक्ख जिसका नाम जमाल था आया, उसने माथा टेक कर प्रार्थना की कि महाराज ! मुझे अपना सिक्ख बना लो और उपदेश बख्शो जिस से सुख की प्राप्ति हो। गुरु जी ने कहा तुम गुरवाणी पढ़ कर उस पर विचार किया करो और प्रेम से इसे मन में धारण करके उस पर अमल किया करो। तुझे सुख प्राप्त होगा और तुम्हारा कल्याण हो जाएगा।

हमारा शरीर पाँच तत्त्वों से बना हुआ है। कोई कमी नहीं है, सब एक समान है। चेतन भी सब में एक समान भेद रहता है। फिर ज़माल ने कहा कि महाराज! अगर सब में एक ही चेतन है, तो फिर एक के खाने से सारे तृप्त क्यों नहीं हो जाते? और एक को ज्ञान हो जाने से सभ को ज्ञान क्यों नहीं हो जाता? गुरु जी ने कहा कि जितने भी कर्म (घड़े) और मठ (कोठे) देखते हो सभ में एक ही आकाश दिखता है। परन्तु जब किसी एक घड़े में कोई और चीज़

डाल दी जाती है उस में आकाश दिखना बंद हो जाता है और दूसरों में ज्यों का त्यों दिखता रहता है। फिर देखो आकाश रूपी अंधेरा सब कोठों और स्थानों में होता है। परन्तु जिस कोष्ठ अथवा स्थान में दीपक जलाया जाए प्रकाश उस में ही होता है, दूसरों में अंधेरा ही रहता है। इसी तरह एक दो भोजन खाने से चेतना को तृप्ति नहीं हो सकती और एक को ज्ञान होने के कारण दूसरों को ज्ञान नहीं हो सकता। जिस तरह तारों का प्रतिबिंब (परछायां) सारे जल में भासता है, परन्तु होता सभ से न्यारा है, इसी तरह ही निर्णय ब्रह्म सब में होता हुआ न्यारा है। जो इस बात को समझ लेता है वह बुद्धिमान है। यह वचन सुन कर जमाल ने सिक्खी धारण कर ली और प्रेम से सिक्खी की कमाई करने लगा।

इसी प्रकार एक दिन गुरु जी के पास कुको, वधावध और अनंता आए। प्रार्थना की कि महाराज ! गुरु नानक जी ने कढ़ाह प्रसाद को ही प्रसाद क्यों अंगीकार किया है और किसी मिठाई या भोजन को स्वीकार क्यों नहीं किया? गुरु जी ने कहा कि जिस तरह अवतारों में गुरु अवतार उत्तम हैं, वैसे ही भोजनों में कढ़ाह प्रसाद उत्तम है और सतिनाम का उपदेश सारे उपदेशों से श्रेष्ठ है।

एक दिन गुरु जी को निवला और निहाल ने पूछा—महाराज! हमारा उद्धार किस तरह हो? हमें उपदेश दो। गुरु जी ने कहा जिस तरह सब लकड़ियों में आग होती है, परन्तु यत्न के बिना प्रगट नहीं होती, फिर जैसे दूध में घी होता है, परन्तु दूध को बिलोने के बिना उस में से घी हाथ नहीं आता। इसी तरह सतिगुरु जी के शब्द उपदेश को मन में न वसाया जाए, तब तक आत्मज्ञान की प्राप्ति नहीं होती। गुरु जी के यह वचन सुन कर दोनों ने गुरु जी के उपदेश को मन में धारण कर लिया।

इस तरह और भी असंख्य सिक्ख गुरु जी के पास दर्शन करने आते और गुरु जी से सतिनाम की महिमा, धर्म की कमाई की महत्ता, सतिसंग करना और जप, तप, तीर्थ आदि के सम्बन्ध में उपदेश ग्रहण करके अपना जीवन सफल बनाते।

गुरु जी ने कशमीर जाना

श्री गुरु अर्जन देव जी ने सोढी माधोदास को सिक्खी के प्रचार के लिए कशमीर भेजा था। अतः उस ने बहुत प्रचार करके सिक्खी का प्रचार किया और एक धर्मशाला बनवा कर कथा कीर्तन और सतिसंग की मर्यादा चलाई।

एक सेवादार ब्रह्म जो बहुत श्रद्धालु सिक्ख हो गया था। वह सतिसंगत की सेवा बहुत प्रेम से करता था। अपने पुत्र को गुरु घर का इतना श्रद्धालु देख कर सेवादार की माता भी गुरु घर की प्रेमिका बन गई।

एक दिन माता ने सेवादार को कहा कि मुझे गुरु जी के दर्शन करने की बहुत उत्सुकता है, परन्तु गुरु जी बहुत दूर पंजाब देश रहते हैं, वहाँ मेरा जाना वृद्ध अवस्था करके कठिन है। सेवादार ने कहा कि माता जी ! आप यहाँ अपने हृदय में गुरु जी की याद और ध्यान रखो। वे कभी न कभी यहाँ आ कर दर्शन देंगे। अपने प्रेमियों का प्रेम जरूर पुरा करते हैं। सेवादार की बात सुन कर माता ने उसी दिन से सूत्र कातना आरम्भ कर दिया और प्रण धारण कर लिया कि इस का जामा तैयार करके गुरु जी के लिए रखूँगी और जब गुरु जी मेरी इच्छा पूरी करने के लिए दर्शन देने आएँगे तो यह जामा मैं उन की भेंट करके खुशी प्राप्त करूँगी।

इस प्रण के अनुसार माता ने जामा तैयार करके रात दिन गुरु जी की अराधना करने लगी। माता की श्रद्धा पूर्वक यह अराधना

की भावना एक दिन गुरु जी को पहुँच गई। तब गुरु जी ने बाबा बुड्ढा जी को कहा कि हम एक माता का प्रेम जो रात-दिन हमारी प्रतीक्षा कर रही है, पूरा करने के लिए कशमीर जा रहे हैं।

तत्पश्चात् गुरु जी अपने साथ सेवकों का एक जत्था लेकर अमृतसर से चल कर लाहौर से चपराहड़ (सिआलकोट) जा डेरा किया। यहाँ गुरु जी की यादगारें कायिम हैं। एक पानी का झरना जिसे आप ने नेज़ा मार कर जारी किया था और एक टाहली का वृक्ष है, जिस के नीचे बैठ कर आप जी ने विश्राम किया था। यहाँ से चल कर गुरु जी एक समतल पहाड़ी इलाके में गए, तो वहाँ आप को भाई कटूशाह गुरु घर के एक प्रेमी सिक्ख ने अपने पास रख कर, बड़े प्रेम से सेवा की।

माई भाग भरी को निहाल करना

कटू शाह से चल कर गुरु जी श्री नगर शहर से बाहर हरी पर्वत किले काठी दरवाज़े पास घोड़े पर चढ़े चढ़ाए ही सेवादास दो बूहे जा पहुँचे। सेवादास गुरु जी को घोड़े से उतार कर अपने घर अन्दर ले गया और सुन्दर पलंघ पर सुशोभित करके अपनी माता को बताया कि आप ने जिन के लिए जामा तैयार करके रखा है, आ गए हैं। अब उठ कर दर्शन करो।

माई ने गुरु जी के चरणों पर शीश झुका कर माथा टेका और कहा आज मेरा सौभाग्य है आपके दर्शन किए हैं। गुरु जी ने कहा माई जो तुमने हमारे लिए वस्त्र तैयार किए हुए है, वह जल्द लाओ। हम उन को पहनने के लिए आए हैं। माई ने अपना सौभाग्य समझ कर जामा ला कर गुरु जी को पहनाया और प्रेम के साथ सेवा की। गुरु जी ने माई की श्रद्धा और प्रेम पर खुश होकर अपना चरणामृत देकर नदरनिहाल कर दिया।

www.9009.co.in

माई भाग भरी ने सब संगत को बताया कि मेरी प्रतिक्षा पूरी करने के लिए ही गुरु जी ने यहाँ आकर दर्शन दिये है। अब मुझे और कोई इच्छा नहीं हें। तद्परान्त माई गुरु जी के सामने ही बैठ कर आप जी के स्वरूप का दर्शन करकेशरीर त्याग कर परलोक गमन कर गई।

कटूशाह की अभेदता

इस समय ही पहाड़ी संगत गुरु जी के लिए पहाड़ी मेवे और शहद लेकर गुरु जी के दर्शन करने आई। रास्ते में वह कटूशाह के पास ठहरे। कटूशाह ने एक सिक्ख से थोड़ा सा शहद खाने के लिए माँगा, परन्तु सिक्ख ने कहा, यह शहद मैं गुरु जी के निमित्त लाया हूँ। जब तकइस को गुरु जी ग्रहण न कर लेगे, तब तक और किसी को नहीं दिया जा सकता। तद्परान्त जब उस सिक्ख ने गुरु जी के पास जा कर शहद वाले बर्तन का मुँह खोल कर गुरु जी के आगे रखा, तो शहद कीड़ों से भरा हुआ था और उस में से बहुत बदबू आ रही थी। यह देख कर सिक्ख बड़ा हैरान हुआ और गुरु जी ने उस की यह दशा देख कर हँस कर कहा, तुमसे हमारे श्रद्धालु सिक्ख कटूशाह ने शहद माँगा था, परन्तु तुमने उस को नहीं दिया। जिस की अप्रसन्नता के कारण इस में कीड़े पड़ गये हैं। इस को कटूशाह के पास वापिस ले जाओ और जितना वह खाने के लिए मांगे उस को दे देना। जब वह प्रसंन हो जाएगा और तेरा शहद शुद्ध हो जाएगा।

उस सिक्ख ने गुरु जी का हुक्म मान कर कटूशाह के पास जा कर उस से क्षमा माँगी और शहद का बर्तन आगे रख कर प्रार्थना की कि आप इस में से पहले अपना हिस्सा ले लो। फिर गुरु जी इस को स्वीकार करेंगे। कटूशाह ने कहा, गुरु जी अपने सिक्खों

का मान रखते हैं। सर्वनियंता वे आप ही हैं। यह वचन करके कटूशाह ने बर्तन में से शहद लेकर अपने हाथ से खाया और कहा कि यह बहुत ही अच्छा शहद गुरु जी के खाने के योग्य है। इस को गुरु जी के पास ले जाओ। कटूशाह के इस स्वाभाविक वचन से शहद शुद्ध और सुगंधि वाला हो गया है।

गुरु जी ने सिक्खों को सम्बोधित करके कहा, मेरे और गुरुमुख सिक्खों में कोई भेद नहीं है। जो कोई चीज़ मेरे सिक्ख को श्रद्धा से देता है, वह मुझे ही पहुँचती है और जो माँगने पर गुरु जी के सिक्ख को चीज़ नहीं देता, उस में निश्चय ही विघ्न पड़ता है।

वापिस पंजाब आना

श्री नगर की सिक्ख सेवक संगत को निहाल करके गुरु जी वापिस पंजाब को चल पड़े। पहला डेरा आप जी ने बाराँमूले किया। इस स्थान पर ही अदिती और कष्यप ऋषि के घर बावन अवतार बैदा हुए थे। कष्यप ऋषि ने ही यह देश बसाया था, जिस के नाम पर इसका नाम कशमीर प्रसिद्ध हुआ।

गुरु जी का आना सुन कर बाराँमूले के सारे सिक्ख गुरु जी के दर्शन करने आए। आप जी ने कुछ दिन यहाँ डेरा करके गुरुमत का उपदेश दे कर सिक्खी मार्ग दृढ़ कराया। बाराँमूले से गुरु जी दरिया ज़ेहलम के साथ-साथ चल कर पंजे साहिब को आते हुए रास्ते में उड़ी मुज़फ़राबाद आदि स्थानों की संगत को दर्शन दीदारे बख्शते हुए पंजा साहिब पहुँचे। पंजा साहिब के दर्शन करके गुजरात के रास्ते वज़ीराबाद से हाफिज़ाबाद आए।

जपुजी के भाव अर्थ

हाफिज़ाबाद गुरु घर का एक प्रेमी सिक्ख करमचंद रहता था, उसने प्रार्थना की कि सच्चे पातशाह ! मुझे अपने मुखारबिंद से

जपुजी साहिब के अर्थ सुना कर कृतार्थ करो। गुरु जी ने कहा जपुजी साहिब के अर्थ बहुत महान् है। इस की पहली छः पउड़ियाँ मंगलाचरण की हैं। सातवीं में वैराग्य उच्चारण किया है। उपरान्त चार पउड़ियों में श्रवरण करने का और मुँह में मनन के महात्तम को ब्रह्म ज्ञान बताया है। सोहलवीं पउड़ी में सिद्धि आसन कथन करके–'तूं सदा सलामति निरकार' तुक में ततमसी (सो परमात्मा तूँ है) का उच्चारण किया है।

असंख्य की सतरहवीं पउड़ी में सतो गुणी पुरुषों का वर्णन है। अठारवीं में तमोगुणी पुरुषों का और उनीसवीं में सतोगुणी और तमोगुणी दोनों का वर्णन है। इस में जीव और ईश्वर की एकता दर्शाई गई है, क्योंकि दोनों में सत् चित आनन्द समा रहा है।

जो भी पुरुष नियमसहित प्रातःकाल स्नान करके 'जपुजी साहिब' को विचार से पढ़ता है। अन्त समय उस के गुरु जी सहायक होते हैं। गुरु जी से यह वचन सुन कर संगत बहुत प्रसन्न हुई। करमचंद को गुरु जी ने कहा कि यहाँ पर धर्मशाला बनवा कर गुरुसिक्खी का प्रचार किया करो।

ननकाना साहिब के दर्शन

करमचंद को निहाल करके हाफिज़ाबाद से गुरु जी गुरु नानक देव जी के जन्म स्थान के दर्शन करने के लिए ननकाना साहिब (तब तलवंडी) पहुँचे। यहाँ आप जी ने गुरु जी के सारे यादगारी स्थान जन्म स्थान, किआरा साहिब,(जहाँ उन्हों ने जट्ट की खेती हरी की) माल जी साहिब (जहाँ साँप ने छाया की) पट्टी साहिब (जहाँ पांधे से पढ़ने गए) बाल लीला, जहाँ छोटी उमर में बच्चों से खेलते रहे और तम्बू साहिब जहाँ (सच्चा सौदा करके चूहड़काने से आ कर वण के वृक्ष के नीचे सुशोभित हुए) के दर्शन करके प्रसाद बाँट कर खुशी मनाई।

श्री गुरु नानक जी के चाचे लालू का पौत्र और राए बुलार के पौत्र आप जी को बड़े उत्साह और प्रेम से मिले। हर प्रकार की सेवा करके इन्होंने गुरु जी की खुशी प्राप्त की।

मदर में गुरु अर्जन देव जी के जूते के दर्शन

ननकाना साहिब से चल कर गुरु जी मदर गाँव आए। यहाँ एक सिक्ख किदारे के पास श्री गुरु अर्जन साहिब जी के पैर का जूता था, जिसको स्पर्श मात्र से किदारे के गले की हज़ीरें स्वस्थ हो गई थीं। गुरु जी ने अपने पिता गुरु जी के उस जोड़े के दर्शन करके नमस्कार किया और वचन किया कि जब तक इस जूते का सतिकार रखोगे, तब तक इस में गुरु जी के वाक्य की शक्ति बनी रहेगी और हज़ीरों का रोग दूर होता रहेगा।

गुरु जी का तीसरा विवाह

मदरा से चल कर गुरु जी गाँव मटू आए। इस गाँव के नज़दीक मंडिआली गाँव के निवासी भाई दया राम मरवाहा क्षत्रि और उस की स्त्री भागण ने अपनी कन्या मरवाही का रिश्ता गुरु जी के साथ करके तीसरे दिन विवाह की मर्यादा भी पूरी कर दी। मंडिआली गाँव से विवाह की मर्यादा लेकर गुरु जी जब डोली ले कर चले, तो रास्ते में भाई लंगाह से मिल कर बताया कि लाहौर का काज़ी आप जी की धर्मशाला गिराने लगा था, परन्तु वज़ीर खाँ ने गिराने नहीं दिया। गुरु जी ने कहा धर्मशाला परमेश्वर का स्थान है, जो मूर्ख उस का बुरा चितवेगा, उस की अपनी जड़ उखड़ जाएँगी। तुम चिंता न करो, वहाँ जा कर धर्मशाला में बैठ कर आए गए की भोजन और जल से सेवा किया करो।

www.9009.co.in

अमृतसर पहुँचना और साहिबज़ादों के जन्म

मंडिआली से चल कर गुरु जी ने रावी नदी को पार किया और एक रात दिन लाहौर विश्राम करके अमृतसर आ गए।

अकाल बुंगे गुरु जी के दोनों वक्त सुबह शाम दीवान लगते। सुबह के दीवान में रबाबी 'आसा की वार' का कीर्तन करते और समाप्ति पर सिक्ख सेवक भेंट ले कर उपस्थित होते, दर्शन करते और उपदेश लेते। संध्या के समय ढाढियों से शूरवीरों के प्रसंग सुनते। जब इस तरह ही कुछ महीने बीत गए, तो माता दमोदरी जी के उदर से ११ सावन संवत् १६७२ को लड़की पैदा हुई, जिस का नाम वीरो प्रसिद्ध हुआ।

समय के साथ माता मरवाही जी के उदर से आषाढ़ संवत् १६७४ को साहिबज़ादे ने जन्म लिया। परिवार में बड़ी खुशी मनाई गई। साहिबज़ादे का नाम गुरु ज़ी ने सूरजमल रखा।

तद्उपरान्त माघ १६७५ को माता दमोदरी जी की कोख से साहिबज़ादा अणि राए जी ने जन्म लिया।

श्री गुरदित्ता जी की मँगनी

दीवाली के मेले पर देश-प्रदेश से बहुत सिक्ख सेवक गुरु जी के दर्शन करने आए। अनेक प्रकार की भेंट कपड़ा आदि पदार्थों के अम्बार लग गए। गुरु जी का अटूट लंगर बाँटा गया। उपस्थित संगत को गुरु जी की ओर से यथायोग्य सिरोपा भेंट दिए गए। इस समय ही बटाला नगर के रामा खत्री ने श्री गुरदित्ता जी को अपनी सात साल की लड़की का रिश्ता कर दिया।

बीबी वीरो की मँगनी

एक दिन गुरु जी के दीवान में मलेपुर गाँव का रहने वाला भाई धर्मचंद खोसला क्षत्रि अपने पुत्र साधु राम के साथ बैठा था। गुरु

www.9009.co.in

जी के उपदेश भरपूर वचन सुन रहा था। दीवान की समाप्ति के उपरान्त गुरु जी ने माता जी और भाई बुड्ढा जी आदि गुरुसिक्खों से सलाह करके धर्मचंद के पुत्र साधु राम से बीबी वीरो की मँगनी कर दी।

श्री अट्टल राए जी का जन्म

अकाल तख्त पर गुरु जी के दो समय दीवान सजते थे और संगत उन की मनोकामनाओं के अनुसार चार पदार्थों—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के वरदान से निहाल करते। पिछले पहर शस्त्र विद्या का अभ्यास और शारीरिक खेल करवा कर योद्धाओं के उत्साह के लिए उन को ईनाम देते और कभी-कभी शूरवीरों के युद्ध विद्या के खेल देखने के लिए शिकार खेलने दूर-दूर तक जंगल में चले जाया करते।

इस तरह गुरु जी के पास नित्य नई सिक्ख संगत आती। इस लिए ही अमृतसर शहर में रौनक लगी रहती। इन दिनों ही माता महाँदेवी (मरवाही) जी के उदर से कार्तिक की पूर्णिमा संवत् १६७६ को साहिबज़ादे ने जन्म लिया। गुरु जी ने इस का नाम अट्टल राए रखा।

श्री गुरु तेग बहादर जी का जन्म

तद्उपरान्त गुरु जी अपने नियम अनुसार सुबह शाम दीवान लगा कर दर्शन अभिलाषियों को दर्शन उपदेश दे कर कृतार्थ करते। योद्धाओं का शस्त्र विद्या और घोड़ सवारी का अभ्यास और शिकार खेलना देख कर योद्धाओं को ईनाम देकर खुश होते।

५ वैशाख संवत् १६७८ विक्रमी को माता नानकी जी के उदर से साहिबज़ादे ने जन्म लिया। जिस का नाम सवा एक महीने के बाद गुरु जी ने देग मल (तेग बहादर) रखा।

www.9009.co.in

कौलसर सरोवर की रचना

एक दिन जब माई कौलां साहिबज़ादे के जन्म की माता जी को वधाई देने गई, तो साहिबज़ादे को देख कर बड़ी खुश हुई। दूसरे बड़े साहिबज़ादों को खेलते देख कर उस के मन में भी इच्छा पैदा हो गई कि उस के घर भी लड़का और संसार में उस का नाम रह जाए। दूसरे दिन कौलां ने प्रार्थना की कि महाराज ! अगर मैं विवाहित होती, तो मेरी गोद में पुत्र खेलता। मैं भी पुत्र वाली कहलाती और संसार में मेरा भी नाम रह जाता।

गुरु जी ने हँस कर वचन किया। तुझे हम वह पुत्र देते हैं, जिस से आपका नाम संसार में सदा कायिम रहे। इस उपरान्त गुरु जी ने भाई बुड्ढा जी को आज्ञा दी कि कौलां के मकान के पास एक सरोवर तैयार करवाओ और उस का नाम कौलां के नाम कर कौलसर रखना। तद्उपरान्त वचन किया कि जो पुरुष पहले इस में स्नान करके फिर अमृत सरोवर में स्नान करेगा। उस के तन और मन की मैल दूर हो जाएगी। इस तरह कौलसर संवत् १६८४ में तैयार हुआ, जिस की रचना को देख कर और गुरु जी के वरदान रूपी वचनों को सुन कर माता कौलां बहुत खुश हुई।

गुरु जी ने
बकाले जा कर मेहरे की भावना पूरी करनी

एक दिन बकाले गाँव के भाई मेहरे ने प्रार्थना की कि पातशाह! मैंने अपना नया मकान बनवाया है, मेरी श्रद्धा है कि उस मकान में पहले आप जी के चरण डलवा कर फिर निवास करूँ। आप कृपा करके मेरा घर पवित्र करो। साथ ही भाई मेहरे ने माता गंगा जी के आगे भी अपनी यह श्रद्धा को प्रक्ट करके प्रार्थना की कि आप गुरु जी को लेकर जल्दी ही बकाले आ कर मेरा गृह पवित्र करें।

www.9009.co.in

माता जी ने कहा थोड़े दिन तक गुरु जी को साथ लेकर बकाले आऊँगी।

माता गंगा जी ने शरीर त्यागना

कुछ दिनों के उपरान्त माता जी ने गुरु जी को कहा—बेटा ! बकाले चल कर सिक्ख की भावना पूरी करनी चाहिए। माता जी का वचन मान कर गुरु जी सारे परिवार सहित तैयार होकर दूसरे दिन बकाले गए। भाई मेहरे ने अपने बने नए मकान में चरण डलवा कर खुशी मनाई और कढ़ाह प्रसाद की देग बनवाई।

बकाले पहुँच कर जब कुछ दिन बीत गए तो माता गंगा जी ने कहा कि बेटा ! अब हमारे परलोक गमन का समय आ गया है। कीर्तन कराओ और ज़रूरतमंदों को अन्न वस्त्र दान करो। माता जी की आज्ञा के अनुसार गुरु जी ने सब कुछ किया और संध्या समय सोदर के पाठ उपरान्त माता जी आसन लगा कर बैठ गए और सतिनाम का जाप करते हुए आषाढ़ संवत् १६८५ को शरीर त्याग कर अपने स्वामी गुरु अर्जन देव जी के चरणों में बिराजे।

अमृतसर आ कर गुरु जी ने अपनी माता के निमित्त अखण्ड पाठ रखाया और सब रिश्तेदारों को चिट्ठीयाँ लिख दी। सब सम्बन्धी और सिक्ख सेवक तेरहवीं वाले दिन अमृतसर आ गए और मर्यादा के अनुसार रस्म पूरी करके वापिस घरों को चले गए।

बिबेकसर की रचना

एक दिन कुछ सिक्खों ने भाई गुरदास जी को कहा भाई जी! जहाँ कहीं भी गुरु साहिब की निंदा हो रही है, लोग कहते हैं कि इनके बड़े गुरुओं की मर्यादा के उल्ट शिकार खेलना, युद्ध अभ्यास आदि काम करने आरम्भ कर दिए हैं और सतिसंगत की ओर बहुत थोड़ा समय देते हैं। फिर घर में मुसिलम स्त्री रखी हुई थी। पैंदे

खाँ आदि मुसलमानों से मित्रता है और भी कई बातें करते हैं, जो सिक्ख मर्यादा के प्रतिकूल है। आप हमारी ओर से बाबा बुड्ढा जी के पास चल कर प्रार्थना करो कि वह गुरु जी को समझाएँ कि इन कामों को त्याग दें और बड़े गुरुओं की मर्यादा को ग्रहण करें।

जब यह वार्ता भाई गुरदास जी ने बाबा बुड्ढा जी को सिक्खों की ओर से बताई तो बाबा जी ने कहा आप चिंता न करो, गुरु जी समर्थ हैं वह कर्म करते हुए भी निःकर्मी हैं।

बाबा जी की बात सुन कर संगत ने कहा कि बाबा जी ! आपका कहना तो ठीक है, परन्तु जब हम गुरु जी की निंदा सुनते हैं, तो हमारे मन अशांत हो जाते हैं। हम निंदा होती देख नहीं सकते।

संगत को प्रार्थना करके जब बाबा बुड्ढा जी अमृतसर आए, तो आप जी को पता चला कि गुरु जी शिकार पर गए हुए हैं। तब बाबा जी भी संगत को साथ लेकर गुरु जी का रास्ता रोक कर बैठ गए। जिधर से गुरु जी ने शिकार खेल कर वापिस आना था।

जब गुरु जी वापिस आए, तो सब ने खड़े होकर गुरु जी को नमस्कार किया और फिर बैठ कर बाबा जी ने संगत की गुरु जी को सारी बात सुनाई और प्रार्थना की कि सिक्ख सेवक आप की निंदा सुन कर सहन नहीं कर सकते। निंदकों से लड़ते झगड़ते रहते हैं। इस लिए आप कृपा करके कौलां का त्याग कर दो। भाई जेठा और बिधीचंद आदि सिक्खों ने भी बाबा जी की प्रौढ़ता की और प्रार्थना स्वीकार करने को कहा।

सब की सलाह देख कर गुरु जी ने कहा कि बाबा जी ! आप जी के वचनों से ही कौलां आई थी और आप जी के वचनों से ही इसको त्यागने का विचार हुआ था। परन्तु इसकी आयु अब केवल पंद्रह दिन ही बाकी है। तब इसका त्याग अपने आप ही हो

जाएगा। गुरु जी के वचन सुन कर संगत बड़ी खुश हुई। तद्‌उपरान्त बाबा जी ने प्रार्थना की कि महाराज ! यहाँ यह स्थान और सत्य-असत्य का विचार हुआ है। इस कारण यहाँ बिबेकसर की रचना करो, जिस में स्नान करके दोषियों के दोष मिट जाया करें।

बाबा जी को सत्य वचन बोल कर गुरु जी ने अरदास करके सरोवर की खुदवाई का टप लगा दिया और वचन किया कि यहाँ बिबेकी सिक्ख निवास किया करेंगे। इस की रचना संवत् १६८५ बिक्रमी में करने का गुरु जी ने वचन किया।

बीबी वीरो के विवाह की मिठाई को तुर्क लूटेंगे, गुरु जी का श्राप

बीबी वीरों का विवाह गुरु जी ने २६ ज्येष्ठ संवत् १६८५ बिक्रमी को नियत करके बहुत सारी मिठाई बारातियों के लिए तैयार करवाई। विवाह के नज़दीक एक दिन पश्चिम देश की बहुत संगत आ गई। उस समय लंगर का समय नहीं था। गुरु जी ने सेवादार को कहा कि जो मिठाई विवाह के लिए तैयार है, वह संगत को भोजन प्रथाए खिलाओ। परन्तु जब सेवादार ने माता जी से आई संगत को खिलाने के लिए मिठाई माँगी, तो माता जी ने कहा कि यह मिठाई शगन की है। पहले बारातियों को बाँट कर फिर किसी और को दी जा सकती है। जब सेवादार ने गुरु जी को माता जी की यह बात बताई, तो गुरु जी ने कहा अच्छा ! अब इस को तुर्क ही खाएँगे। यह वचन सुन कर माता दामोदरी जी बहुत पछताए। गुरु जी का वचन सत्य हुआ यह मिठाई तुर्कों ने ही खाई, जिस का कारण इस तरह बना।

गुरु जी के शिकारियों ने बादशाह का बाज पकड़ना

एक दिन गुरु जी लाहौर दिशा की ओर दूर तक शिकार खेलते चले गए। उधर बादशाह शाहजहाँ भी शिकार पर चढ़ा हुआ था और उस ने डेरा तम्बुओं कनातों में अटारी लगाया हुआ था। उस दिन वह शिकार पर चढ़ कर अमृतसर की ओर आ गया। बादशाह के शिकारियों ने एक सुरखाब के पीछे अपना बाज छोड़ा। उधर से गुरु जी के शिकारियों ने भी अपना बाज छोड़ दिया। गुरु जी का बाज सुरखाब को पकड़ कर नीचे आ गया, तो उस के साथ बादशाह का बाज भी आ गया। गुरु जी के शिकारियों ने दोनों बाज पकड़ कर बाँध लिए। बादशाह का सफेद बाज देख कर गुरु जी बड़े खुश हुए।

जब बादशाह का बाज वापिस न गया, तो उस के शिकारियों ने उस की भाल करके देखा कि उन का बाज गुरु जी के पास है, परन्तु उन्होंने जब गुरु जी से बाज माँगा, तो आप जी ने कहा, यह अब हमारी शरण में आ गया है। यह हम किसी को नहीं दे सकते। यह हमारे पास ही रहेगा।

जब गुरु जी की इस बात का शाहजहाँ को पता चला, तो उस ने अपने अहिलकार मुखलिस खां को सात हज़ार सैनिक दे कर भेजा कि गुरु जी को बाज सहित पकड़ कर मेरे पास ले आओ। मुखलिस खां जब तैयारी करने लगा, तो गुरु जी को लाहौरी सिक्खों ने इस तैयारी और शाही आज्ञा की खबर दे दी।

लोहगढ़ का किला निर्माण संवत् १६८५

यह खबर सुन कर गुरु जी ने शाही सेना की रोक के लिए शहर से लाहौर की दिशा में एक ऊँचे टीले पर एक ही दिन रात में ही बहुत सारे आदमी लगा कर एक मज़बूत घेरा बना दिया। इस

www.9009.co.in

कच्ची गढ़ी के अन्दर शस्त्र और बारूद दे कर पाँच सौ योद्धे बैठा दिए। गुरु जी ने इस का नाम किला लोहगढ़ रखा।

पहला युद्ध मुखलिस खां से

दूसरे दिन संध्या के समय तुर्क सेना ने शहर पर हमला कर दिया। सिक्ख योद्धाओं ने डट कर मुकाबला किया, परन्तु तुर्क सेना ज्यादा और अच्छे शस्त्रों सहित होने के कारण सिक्खों को अपनी कुछ कमज़ोरी लगी, तो गुरु जी ने अपने कुछ योद्धाओं से कहा कि महलों में से सारे परिवार को निकाल कर रामसर की ओर चलो, तब सिक्खों का जल्द ही महलों में जा कर सारे परिवार को रामसर ले गये और गुरु जी भी जत्था ले कर वहाँ पहुँच गए।

उपरान्त तुर्क सेना ने शहर में प्रवेश करके गुरु जी के घर लूट लिए और वह मिठाई भी लूट कर खा गए, जो बीबी के विवाह के लिए तैयार की गई थी। गुरु जी ने वचन किया था कि इस को तुर्क खाएँगे। यह सिक्खों को नहीं दी, तो इसे तुर्क खाएँगे। रामसर से गुरु जी ने योद्धाओं के एक जत्थे को साथ ले कर अपने सारे परिवार को झबाल भेज दिया। निश्चिंत होकर तुर्क सेना का मुकाबला करते हुए युद्ध लोहगढ़ के किले से गुरु के महल और रामसर से होता हुआ रातों-रात तरन तारन के रास्ते चब्बे गाँव की सीमा में पहुँच गया। इस समय तक मुखलिस खां के कुछ आदमी मर चुके थे और कुछ जान बचा कर इधर-उधर भाग गए थे। केवल एक हज़ार के लगभग ही योद्धे उस के पास रह गए थे।

यहाँ दोनों ओर से डट कर मुकाबला हुआ, जिस में मुखलिस खां बहुत सारे सैनिकों सहित मारा गया और उस के बाकी के आदमी मैदान छोड़ कर भाग गए। मैदान खाली देख कर गुरु जी ने अपने शहीद योद्धाओं को इकट्ठा करके उन का संस्कार कर

दिया और तुर्क सेना के मुर्दों को गड्ढे में दबा दिया। इस स्थान पर जहाँ युद्ध हुआ था, गुरुद्वारा 'संगराणा साहिब' कायिम है। शहीदों की याद में यहाँ वैसाख की पूर्णिमा को हर साल मेला लगता है।

झबाल गाँव में
बीबी वीरो का विवाह करके गोईंदवाल चले जाना

मुखलिस खां से युद्ध तीन दिनों में ही फतह हो गया। गुरु जी झबाल अपने परिवार के पास पहुँच गए। भाई धर्म चंद अपने पुत्र साधु की बारात लेकर बीबी वीरो को विवाहने आया था, वह भी एक दिन पहले ही गुरु जी के संदेश के अनुसार झबाल पहुँच चुका था। गुरु जी ने २६ ज्येष्ठ वाले दिन १६८५ बिक्रमी को बीबी का विवाह साधु राम से सम्पन्न किया। तद्उपरान्त उस दिन ही आप बाकी परिवार व सिक्खों के जत्थे को साथ लेकर तरनतारन के रास्ते गोईंदवाल पहुँच गए।

शाहजहाँ को
मुखलिस खां और फ़ौज के मरने की खबर

यह खबर जब शाहजहाँ को हुई कि उस का सेनापति मुखलिस खां बहुत सारी फ़ौज के साथ गुरु जी के हाथों मारा गया है, तो उस ने अपने सारे वज़ीरों अमीरों से सलाह की कि अब एक शक्तिशाली फौज भेजी जाये, जो गुरु को पकड़ कर ले आए या युद्ध में उसे मार आए। परन्तु जब जल्द ही बादशाह को उस के आदमियों से पता चला कि गुरु जी अमृतसर छोड़ कर किसी और तरफ को चले गए हैं, तो फिर उन का पीछा करना ठीक नहीं। फिर किसी दिन उनकी शाही सेना से टक्कर लेने का बदला लिया जाएगा।

करतारपुर निवास और माता कौलां का परलोक गमन

जैसे कि पीछे बताया गया है कि गुरु जी बीबी का विवाह करके गोईंदवाल आ गए थे। यहाँ दो दिन विश्राम करके सारे परिवार को यहाँ ही छोड़ कर आप अपने सिक्ख जत्थे के साथ करतारपुर आ गए।

माता कौलां जो कुछ समय पहले ही गुरु जी ने करतारपुर को भेजी हुई थी, वह सदा ही गुरु चरणों में ध्यान लगाए रखती थी। एक दिन गुरु जी ने यह अनुभव किया कि कौलां का अन्तिम समय आ गया है। उसको कहा कि अब तेरा जीवन केवल चार घड़ी बाकी रह गया है। यह शरीर मिथ्य है और आत्मा ही केवल अविनाशी है। तुम अपने आत्म स्वरूप में वृत्ति (चित्त) को जोड़ लो, तेरा जन्म-मरण कट जाएगा। माता कौलां गूरु जी के वचनों के अनुसार अपनी वृत्ति को जोड़ कर बैठ गई और शरीर त्याग कर सच्चखण्ड सिधार गई।

गुरु जी ने करतारपुर से चलना

करतारपुर निवास के समय गुरु जी ने पैदें खाँ का विवाह एक पठान लड़की से करा दिया। रहने के लिए उस को मकान बनवा दिया और आज्ञा की कि अब तुम घर पर ही रहा करो। जब हमें ज़रूरत होगी तुम्हें बुला लिया करेंगे। तुम अब घर के सुख भोगो। एक महीने के निवास उपरान्त वर्षा ऋतु के कारण वर्षा बहुत हो रही थी। गड्ढे आदि वर्षा के पानी से भर कर जल-थल हो गए। यह सुहावना मौसम देख कर गुरु जी ने व्यास नदी के किनारे रुहेले गाँव के पास एक ऊँचा लम्बा टीले देख कर दरिया के दायें हाथ डेरा डाल लिया।

भगवान दास घेरड़ की मौत

रूहेले गाँव का भगवान दास घेरड़ इस टीले के स्थान की मालिकी रखता था। उस ने जब देखा कि गुरु जी ने अपने शस्त्रधारी योद्धाओं से मेरी इस जगह पर आ कर कब्जा कर लिया है, तो उस को शंका हो गई कि यह मेरी जगह़ ही न सम्भाल ले। पहले बादशाह से भी इस का झगड़ा चल रहा था।

फिर घेरड़ ने गुरु जी को आ कर कहा कि यह जगह मेरी है, आप यहाँ से डेरा उठा लो। गुरु जी ने कहा हम कुछ दिनों के लिए आए हैं। अगर हमने पक्का डेरा करना होगा, तो आप को इस ज़गह का मूल्य दे देंगे। घेरड़ ने कहा कि मैंने इस का मूल्य नहीं लेना। आप कृपा करके यहाँ से डेरा उठा लो।

जब घेरड़ यह बात करके चला गया तो गुरु जी ने अपने सिक्खों को कहा कि हमें यह जगह बहुत पसंद है। इस लिए हम यहाँ नगर बसाना चाहते हैं। यह सलाह करके गुरु जी ने नज़दीक के गाँवों से बहुत सारे कारीगर और मज़दूर मँगवाकर अरदास करके एक किले का निर्माण आरम्भ कर दिया।

युद्ध गाँव रुहेला संवत् १६८७

भगवान दास घेरड़ के पुत्र रत्न चंद को जब अपने पिता की इस तरह सिक्खों के हाथों मौत का पता चला, तो उस ने जालन्धर के सूबे अबदुल खां के पास सारी बात बता कर प्रार्थना की कि गुरु जी को पकड़ कर मेरे पिता की मौत का बदला दिलाया जाए।

अबदुल खां ने सारी बात सुन कर अपने साथ पाँच हज़ार घोड़ सवार और चार हज़ार पैदल फौज लेकर रत्न चंद और कर्म चंद के साथ रुहेले गाँव गुरु जी पर चढ़ाई कर दी।

दुश्मन की चढ़ाई देख कर गुरु जी ने भी अपने योद्धाओं को मुकाबला करने के लिए तैयारी का हुक्म दे दिया। सूबे ने अपनी फौज को नदी के पार करके युद्ध का बिगल बजाया। गुरु जी के योद्धे भी सामने हो गए और दोनों ओर से गोली, बन्दूकें और तलवारों, तीरों से एक पहर भयानक युद्ध होता रहा, जिस में सूबे के सेनापति सलार मुहम्मद खां, बैरम खां और कई और सैनिक मारे गए। सूबा अबदुल खां, रत्न चंद घेरड़ और कर्म चंद भी तीसरे दिन के युद्ध में गुरु जी के हाथों मारे गए। इधर से भाई कल्याणा, भाई नानो आदि सिक्ख शूरवीर शहीद हो गए।

दूसरे दिन गुरु जी ने एक गहरा गड्ढा खुदवा कर उस में सूबा अबदुल खाँ और उस के साथियों की मृत देहों को दबवा दिया। उस पर मिट्टी डलवा कर एक ऊँचा चबूतरा बैठने के लिए तैयार करवाया। अपने शहीद सिक्खों की मृत देहों का गुरु जी ने संस्कार करवा कर भस्म व्यास नदी में बहा दी। इस तरह गुरु जी की इस दूसरे युद्ध में भारी जीत हुई।

गुरु जी ने शहर बसाना

दूसरे दिन इस चबूतरे पर जिस का नाम गुरु जी ने दमदमा रख दिया था, दीवान सजा कर समाप्ति के उपरान्त गुरु जी ने रुहेले गाँव एक सुन्दर शहर तैयार करने की सलाह करके निर्माण कार्य आरम्भ कर दिया। घेरड़ गाँव में रत्न चंद का घर गिरवा कर वहाँ गुरु जी ने मसजिद बनवा दी, जो आज तक कायिम है।

इस युद्ध में शूरवीरों के बहुत से घोड़े मर जाने के कारण गुरु जी ने अच्छे से अच्छे घोड़े खरीद कर योद्धाओं को दिए। एक भाई सभागा सिक्ख गुरु जी के लिए घोड़े ले कर आया। इन में से एक घोड़ा गुरु जी ने अपनी सवारी के लिए रख लिया और एक भाई

बिधीचंद, एक बाबा गुरदित्ता जी व एक पैंदे खां को दे दिया और एक तबेले में भेज दिया।

शुद्ध जपुजी साहिब के पाठ का महात्म्य तथा भाई गोपाल

एक दिन जब दमदमे के ऊपर दीवान की समाप्ति हो गई, तो गुरु जी ने सिक्खों को कहा कि जो सिक्ख हमें जपुजी साहिब का मात्रासहित शुद्ध पाठ करके सुनाएगा, हम उस को मन वांछित पदार्थ देंगे। तब भाई गोपाल ने कहा कि महाराज ! अगर आज्ञा हो तो पाठ सुनाता हूँ। तब गुरु जी ने उस को सामने एक अच्छे आसन पर बैठा कर पाठ सुनाने के लिए कहा। गोपाल ने चौकड़ी मार कर आसन पर बैठ कर एक ऊँकार सतिनाम से पाठ आरम्भ कर दिया और बड़े प्रेम से मात्रासहित शुद्ध पाठ करता रहा। संगत बड़े प्रेम से पास बैठ कर सुनती रही। गुरु जी शुद्ध पाठ सुन कर इतने खुश हुए कि आप जी ने भाई गोपाल को गुरुगद्दी देने का विचार बना लिया। परन्तु भाई गोपाल जब 'पवन गुरु' शलोक पढ़ कर समाप्ति करने लगा, तो उसे अनुभव हुआ कि अगर गुरु जी मुझे वह पाँचवा घोड़ा, जो उन्होंने तबेले में बाँध लिया था, सोने की जीन समेत ही दे दें, तो मुझे बड़ी खुशी होगी।

जब समाप्ति हो गई, तो गुरु जी ने कहा, भाई गोपाल तुम ने एक तुच्छ चीज़ के लिए इच्छा धारण की है। इस कारण तुम अपना मनेच्छित घोड़ा ले कर मन की खुशी पूरी कर लो। हम तो तेरा शुद्ध पाठ सुन कर तुझे गुरुगद्दी देने को तैयार हो गए थे। गुरु जी ने वचन किया कि शुद्ध गुरुवाणी पढ़ने का बहुत महत्व है। आप शुद्ध वाणी पढ़ने का यत्न किया करो।

www.9009.co.in

नए नगर का नाम श्री हरिगोबिंदपुर रखना

गुरु जी का सूबा जालन्धर से युद्ध और व्यास नदी के किनारे नया नगर बसाने की खबर जब बाबा बुड्ढा जी को अमृतसर हुई, तो आप जी भाई गुरदास जी आदि सिक्खों को साथ लेकर गुरु जी के पास गए। सारा नगर बनता देख कर बाबा जी ने कहा इस का नाम गुरु जी के नाम पर 'श्री गुरु हरिगोबिंदपुर' रखना ही उपयुक्त होगा। जिसे गुरु जी ने स्वीकार कर लिया और यही नाम प्रसिद्ध हो गया। कुछ दिन गुरु जी के पास निवास करके बाबा बुड्ढा जी की आज्ञा लेकर अपने गाँव रमदास जाने लगे, तो आप जी ने प्रार्थना की कि बादशाह ! मेरी यह प्रार्थना है कि अन्त समय मुझे आप के दर्शन हो जाएँ। गुरु जी ने कहा कि बाबा जी आप की इच्छा पूरी हो जाएगी।

बाबा बुड्ढा जी का परलोक गमन

गुरु जी के पास से जाकर दो महीने के बाद बाबा बुड्ढा जी कों संदेश आ गया कि मेरा अन्त समय आ गया है। आप जी आ कर दर्शन दो। संदेश मिलते ही गुरु जी अपने साथ घोड़ सवारों का एक जत्था ले कर गाँव रमदास बाबा जी के पास पहुँच गए। गुरु जी के दर्शन करके बाबा जी बड़े खुश हुए और कहा कि मेरे पुत्र भाने का बाजू आप जी के हाथ में है। आप जी ने इस पर कृपा दृष्टि रखनी। तद्उपरान्त तीसरे दिन बाबा जी ने गुरु जी को नमस्कार किया और चादर ताण कर लेट गए। रबाबियों ने कीर्तन आरम्भ कर दिया, जिस की धुन में गुरु जी का ध्यान करते हुए बाबा जी शरीर त्याग कर परम ज्योत में लीन हो गए। गुरु जी ने बाबा जी के मृत शरीर का अपने हाथों संस्कार किया और तद्उपरान्त सतारहवीं वाले दिन भाई भाने को पगड़ी बंधवा कर

www.9009.co.in

बाबा बुड्ढा जी की जगह गद्दी पर बैठा दिया। गुरु जी यहाँ से वापिस हरिगोबिंदपुर चले गए। बाबा जी का देहान्त १४ माघ संवत् १६८८ को हुआ।

गुरु जी ने करतारपुर के दर्शन करने

एक दिन श्री हरिगोबिंद पुर से शिकार खेलते हुए गुरु जी भाई भाने के पास रमदास आ गए। दो दिन विश्राम करके गुरु जी भाई भाने को साथ लेकर श्री गुरु नानक देव जी के स्थान करतारपुर दर्शन करने रावी से पार चले गए। वहाँ गुरु स्थान पर कढ़ाह प्रसाद की देग भेंट करके आप जी ने सब को बाँटी। फिर गुरु जी ने रावी से इस ओर आ कर गुरु नानक साहिब जी के देहुरे (डेहरा बाबा नानक) के दर्शन किए। बाबा लखमी दास जी के सुपुत्र धर्म चंद जी ने आप जी की बहुत सेवा की। जाते समय गुरु जी ने देहुरे की भेंट एक हज़ार रुपए दे कर अरदास कराई। तद्उपरान्त गुरु जी भाई भाने के साथ रमदास आ गए और कुछ दिन विश्राम करके वापिस हरिगोबिंदपुर पहुँच गए।

अमृतसर दीवाली का मेला

गुरु जी श्री हरिगोबिंदपुर आ कर अपने योद्धाओं को युद्ध का अभ्यास और दो समय दीवान लगा सिक्ख सेवकों को दर्शन उपदेश दे कर निहाल करते और योद्धाओं के युद्ध निमित्त व्यास नदी के किनारे शिकार करके अनेक जानवरों की मुक्ति करते।

इस प्रकार कौतक करते हुए जब दीवाली का समय नज़दीक आ गया तो भाई बिधी चंद की प्रार्थना स्वीकार करके गुरु जी दीवाली का मेला मनाने के लिए अमृतसर आ गए। शहर के सब लोग आप जी के दर्शन करने आए और खुशियाँ प्राप्त करके निहाल हो गए। तद्उपरान्त गुरु जी ने एक सिक्ख को गोईदवाल

भेज कर माता जी और साहिबज़ादे को गोईदवाल से मँगवा लिया। उधर से पैंदे खां भी अपने गाँव से आ गया।

दीवाली के मेले पर बहुत सिक्ख संगत दूर-दूर से आई और पाँच छः दिन बड़ी धूमधाम लगी रही।

माई देसां को पुत्रों को वरदान

एक दिन गुरु जी के पास माई देसां पट्टी की रहने वाली ने आकर प्रार्थना की कि महाराज ! मेरे घर पुत्र की संतान नहीं है। आप कृपा करके मुझे एक पुत्र का वरदान दो। गुरु जी ने अन्तर्ध्यान हो कर देखा और कहा कि माई तेरे भाग में पुत्र नहीं है। माई निराश होकर बैठ गई। भाई गुरदास जी ने माई को इस तरह निराश हो कर जब कारण पूछा तो माई ने बताया कि मैंने गुरु जी के पास पुत्र का वरदान लेने के लिए प्रार्थना की थी, परन्तु उन्होंने कहा कि तुम्हारे भाग्य में पुत्र नहीं लिखा।

भाई जी ने माई को कहा कि अब जब तुझे फिर गुरु जी को मिलने का समय मिले, तो उन से फिर पुत्र का वरदान माँगना। अगर गुरु जी फिर यही कहें कि तुम्हारे भाग्य में पुत्र नहीं लिखा। उन्हें कहना कि महाराज ! यहाँ वहाँ आप ही लिखने वाले हैं। अगर पहले नहीं लिखा, तो अब यहाँ ही लिख दो आप समर्थ हैं।

दूसरे दिन जब गुरु जी घोड़े पर सवार हो कर शिकार को जाने लगे तो माई देसां ने जल्दी से आगे हो कर कहा कि महाराज! कृपा करके मुझे एक पुत्र का वरदान बख्श कर मेरी आशा पूरी करो। जब गुरु जी ने कहा कि माई तेरे भाग्य में पुत्र नहीं लिखा, तो माई देसां ने कलम दवात गुरु जी के आगे रख कर कहा कि सच्चे पातशाह ! अगर आप जी ने वहाँ नहीं लिखा, तो अब यहाँ ही कृपा करके लिख दो, क्योंकि वहाँ यहाँ आप ही भाग्य विधाता हो।

माई की यह युक्ति की बात सुन कर गुरु जी ने हँस कर कहा माई तेरे घर पुत्र होगा। देसां ने यह वचन सुन कर गुरु जी के आगे कलम दवात करके कहा महाराज ! यह वचन मेरे हाथ पर लिख दो ताकि मेरे मन को शाँति हो। जब गुरु जी कलम पकड़ कर माई के दायें हाथ पर एक लिखने लगे, तो नीचे से घोड़े के पैर हिलने से एक की जगह सात अंक लिखा गया। गुरु जी ने हँस कर कहा माई तुम एक लेने आई थी, परन्तु स्वाभाविक ही सात लिखे गए हैं। अब तुम्हारे घर सात पुत्र ही होंगे। माई देसो गुरु जी की महिमा का यशगान करती हुई खुशी-खुशी अपने घर पट्टी आ गई।

श्री अट्टल राए जी की महिमा

श्री अट्टल राए जी श्री गुरु हरिगोबिंद जी के घर माता मरवाही के उदय से पैदा हुए थे। आप जी बड़े होनहार और उदारचित थे। एक दिन आप जी अपने हम उमर बच्चों के साथ खेल रहे थे, जब संध्या हो गई, तो सारे बच्चे अपने घरों को चले गए। रात के समय इन के साथी एक लड़के मोहन को सांप ने काट लिया। उस की मौत हो गई। उस दिन खेल की बारी मोहन के सिर रह गई थी।

दूसरे दिन सुबह अटल राए जी को पता चला कि मोहन साँप के डसने से मर गया है, तब आप जी उसी समय दूसरे बच्चों को साथ ले कर मोहन के घर चले गए और मोहन के गले में अपनी छड़ी डाल कर कहा, मोहन उठ कर हमारी बारी दो। साँप डसने का बहाना न करो। बाबा जी ने इस वचन से मोहन उठ कर बैठ गया और साथ चल पड़ा।

यह खबर सुन कर श्री गुरु हरिगोबिंद जी कुछ समय के लिए चुप हो गए और जब अटल राए जी खेल कर आए, तो गुरु जी ने कहा बेटा ! एक म्यान में दो तलवारें नहीं समा सकतीं। आप ने मरे

हुए बालक को जिंदा करने वाला जो काम किया है वह अच्छा नहीं किया। अब अच्छा यही है कि इस जगत् में या तुम रहो या हम रहेंगे। पिता गुरु जी के यह वचन सुन कर श्री अटल राए जी को नमस्कार करके कौलसर के पास छड़ी को सिर के नीचे रख कर चादर ताण कर लेट गए और शरीर त्याग कर बैकुण्ठ धाम को चले गए। असूज वदी १० संवत् १७८५ को यह कौतुक हुआ।

आप जी के शरीर त्यागने की खबर जब श्री गुरु जी को हुई, तो आप जी का परिवार और सिक्ख सेवकों सहित वहाँ पहुँच गए और चंदन की चिता तैयार करके श्री अटल राए जी के शरीर का संस्कार वहीं पर जहाँ आप ने शरीर त्यागा था, कर दिया। तद्उपरान्त गुरु जी ने कहा कि हे पुत्र ! तू जिसने हमारे वचनों का सतिकार करके शरीर, त्याग दिया। तुम्हारा सभी लोग मान करेंगे। तेरा मन्दिर इस नगरी में सब से ऊँचा बनेगा। इस नगरी का तू सूबेदार कहलाएगा। नंगे भूखों को तेरे दर से रोटी मिलेगी। उपरान्त गुरु जी ने सब को हुक्म में रहने के वचने करके धैर्य दिया।

भाई गुरदास का घोड़े खरीदने काबल जाना

एक दिन गुरु जी के दीवान में गुरु सिक्खी के सम्बंध में भाई गुरदास जी ने अपनी वारों में से एक तुक 'जे गुर सांग वरतदा सिक्ख सिदक न हारे' पढ़ कर कहा कि सिक्ख वही पक्का सिक्ख है, जो गुरु के हुक्म में दृढ़ व भरोसा रखे, मन को डोलने न दे।

जब इस बात की खबर गुरु जी को मिली तो आप जी ने कहा कि भाई जी को अपने ऊपर अहंकार हो गया है। जो सब बुराइयों का मूल है। इस को दूर करना चाहिए।

भाई जी के निश्चय को परखने के लिए, गुरु जी ने एक दिन भाई जी को कहा कि आप हमारे लिए काबल से अच्छे घोड़े खरीद

कर लाओ। जितने पैसे चाहिएँ ले जाओ। हुक्म के अनुसार भाई गुरदास खचरों पर रुपयों की खुरजियाँ लाद कर अपनी हिफाज़त के लिए सिक्ख योद्धे साथ लेकर काबल के घोड़े खरीदने चल पड़ा। कुछ दिनों के उपरान्त पिशावर से निकल कर काबल की घोड़ मण्डी में से भाई जी ने कुछ अच्छे घोड़े देख कर उनका मूल्य खरा कर लिया। घोड़ों के सौदागरों को रुपया देने के लिए अपने तम्बू में जा कर खुरजियाँ खोलीं, तो भाई जी को ठीकरियां ही नज़र आईं। यह देख कर भाई जी बहुत घबराए कि अब यहाँ से छुटकारा कैसे होगा? पराए देश में आ कर फंस गया हूँ । यहाँ कौन छुड़ाएगा? इस तरह की सोचें सोच कर भाई जी वह रुपयों की खुरजियाँ जो उन को ठीकरियां नज़र आ रही थीं। वही पर छोड़कर उस तम्बू में अपना भेष बदल कर पीछे से निकल कर जंगलों, पहाड़ों के रास्ते वहाँ से निकल पड़ा।

कुछ समय प्रतीक्षा करके जब तम्बू के अन्दर जाकर भाई जी के साथी सिक्खों ने देखा कि रुपयों की खुरजियाँ खुली पड़ी हैं। पीछे से तम्बू फटा हुआ है और भाई जी वहाँ नज़दीक में कहीं नज़र नहीं आते, तो उन्हों ने रुपया गिनकर सौदागर को घोड़ों का मूल्य दे दिया और आप भाई जी की देख भाल करके घोड़ों को लेकर अमृतसर आ कर सारी वार्ता गुरु जी को बताई।

गुरु जी सर्वज्ञ थे, सब कुछ समझ गए कि भाई जी कसौटी सह नहीं सके और हिम्मत हार कर दौड़ गए हैं, परन्तु भाई जेठा, बिधी चंद आदि सिक्ख सारे ही बड़े हैरान हुए कि भाई जी ने यह क्या किया?

भाई जी ने काशी पहुँच जाना

काबल से दौड़ कर भाई जी भेस बदल कर काशी पहुँच कर सिक्खों की एक धर्मशाला में जा ठहरे। वहाँ भाई जी कथा करने लगे और आप जी की विद्वत्ता की महिमा बहुत फैल गई। काशी का राजा भी उन की विद्वत्ता से प्रभावित हो कर आप जी का सिक्ख बन गया।

काशी के पण्डित भी आप जी से चर्चा करके बड़े प्रभावित हो कर गुरु घर के श्रद्धालु बन गए और भाई जी की महिमा बहुत बढ़ गई। इतनी महिमा और सतिकार के होते हुए भी भाई जी रात-दिन अराधना और प्रार्थना करते रहते कि हे सतिगुरु ! मुझे क्षमा करो। मुझे अपने पास बुला लो।

गुरु जी ने भाई गुरदास को बुलाना

भाई गुरदास जी की अरदास और आराधना के कारण अंतर्यामी गुरु जी ने काशी के राजा को एक सिक्ख के हाथ चिट्ठी भेजी कि आपके शहर में हमारा एक चोर गुरदास रहता है। उस की मुश्कें बाँध कर आप शीघ्र ही हमारे पास भेज दो। गुरु की आप पर खुशी होगी।

काशी का राजा यह पत्र पढ़ कर बड़ा हैरान हुआ कि यहाँ कौन गुरदास गुरु का चोर है? कथा वाचक गुरदास तो बड़ा विद्वान और महापुरुष है। उस प्रथाए चोर को शब्द नहीं प्रयोग किया जा सकता। अपने इस भ्रम को निवृत्त करने के लिए राजा ने भाई गुरदास को जब चिट्ठी दिखा कर पूछा कि यह गुरदास कौन है? तो भाई जी ने कहा राजा जी ! मैं ही गुरु का चोर गुरदास हूँ और कोई गुरदास नहीं है।

फिर भाई गुरदास जी ने अपनी सारी वार्ता सुनाई कि वह किस तरह काबल से दौड़कर गुरु जी से चोरी यहाँ आया हुआ है। यह

www.9009.co.in

सारी बात सुन कर जब राजा को यकीन हो गया कि ठीक यहीं गुरदास है, जिस को गुरु जी ने अपना चोर लिखा है, तो भाई जी ने प्रार्थना की कि आप मेरी मुश्कें बाँध कर गुरु जी की आज्ञा के अनुसार सिक्खों को पकड़ा दो।

राजा ने मुश्कें बाँध कर भाई जी को सिक्खों को दे दिया। सिक्खों ने आप की मुश्कें वहीं खोल दीं। अमृतसर आ कर फिर मुश्कें बाँध कर गुरु जी के सम्मुख कर दिया।

गुरु जी के सम्मुख हो कर भाई जी जब नमस्कार करके हाथ जोड़ कर खड़े हो गए, तो गुरु जी ने हँस कर पूछा भाई जी ! आप ने जो कहा था कि 'अगर गुर सांग वरतदा सिक्ख न हारे' कि यह ठीक है? भाई जी ने हाथ जोड़ कर कहा कि महाराज ! 'अगर गुर भरमाए सांग कर क्या सिक्ख विचारा।'

यह उत्तर सुन कर गुरु जी बहुत खुश हुए और मुश्कें खोल कर भाई जी को सतिकार से अपने पास बिठा लिया। काशी में भाई जी ने गुरु घर की सिक्खी बहुत फैलाई थी। इस कारण गुरु जी बहुत खुश हुए।

सूबा जालन्धर के पुत्र वली खाँ ने गुरु जी के विरुद्ध शाहजहाँ के पास शिकायत करनी

जब शाहजहाँ लाहौर से दिल्ली को जाता हुआ जालन्धर ठहरा, तो अबदुल खाँ सूबा जालन्धर के पुत्र वली खाँ ने बादशाह के पास हाज़िर होकर कहा कि हिन्दुओं के पीर श्री हरिगोबिंद (गुरु) ने रुहेले नगर के चौधरी घेरड़ की ज़मीन पर ज़बरदस्ती कब्ज़ा कर लिया था। जब घेरड़ ने जगह खाली करने के लिए कहा, तो गुरु के आदमियों ने घेरड़ को मार कर नदी में फेंक दिया। घेरड़ के पुत्र ने जब मेरे बाप के पास आ कर शिकायत की,

तो मेरे बाप ने गुरु जी को समझाने के लिए जो आदमी भेजे गुरु के सिक्खों ने उन को भी मार कर भगा दिया। फिर मेरा बाप दस हज़ार फौज लेकर आप गया, परन्तु गुरु ने उन का डट कर मुकाबला करके मेरे बाप सहित हमारी विशाल सेना को मार कर रुहेले गाँव पर कब्जा कर लिया है। वहाँ अपना नया नगर बनाना आरम्भ कर दिया है।

यह बात सुन कर बादशाह ने बड़े गुस्से से कहा, पहले हमारे बाज के झगड़े के कारण गुरु ने हमारी सात हज़ार सेना और उस का सेनापति मुखलिस खां को मार दिया था। अब दस हज़ार जवान सूबे अबदुल खाँ सहित यहाँ मार दिए हैं। इस का अभी प्रबन्ध करना ठीक रहेगा। बीस हज़ार योद्धे ले जाओ और इस को पकड़ कर मेरे पास लाओ।

बादशाह का हुक्म सुन कर वज़ीर खां ने कहा कि जहांपनाँ ! इस में गुरु का कोई दोष नहीं है। असल बात यह है कि गुरु जी वर्षा के दिनों में चौमासा काटने के लिए यहाँ व्यास नदी के किनारे एक ऊँचा टिल्ला देख कर ठहर गए थे। इस समय रुहेले गाँव के मुसलमानों ने आप जी के पास प्रार्थना की कि इस गाँव में हिन्दू उन को मसजिद नहीं बनाने देते। जिस कारण वह अपने धार्मिक फर्ज निमाज़ आदिक पूरे नहीं कर सकते। गुरु जी क्योंकि सब हिन्दू मुसलमानों के सांझे थे, इस कारण उन्होंने मुसलमानों की तकलीफ को दूर करने के लिए रुहेले गाँव में एक मसजिद के बन जाने के कारण गाँव के चौधरी घेरड़ ने गुरु जी को आ कर बहुत बुरा भला कहा। सिक्खों ने घेरड़ को बहुत समझाया कि वह गुरु जी को कोई अप शब्द न कहे, परन्तु जब घेरड़ अपनी बात से न हटा, तो सिक्खों ने उसको मारा और वह इस मार से ही मर गया। इस वार्ता के उपरान्त घेरड़ का पुत्र चंदू के पुत्र को साथ ले कर

अबदुल खाँ के पास फरियादी हुआ। इन दोनों के ज़ोर देने के कारण सूबा बिना सोचे समझे ही फौज लेकर गुरु जी पर आ चढ़ा। अपना बचाव करने के लिए गुरु जी को भी मुकाबला करना पड़ा। इस आमने-सामने के मुकाबले में सूबा और उस का पुत्र दस हज़ार सेनासहित वहाँ मारा गया।

अब अगर आप वह मसजिद, जो गुरु जी ने मुसलमानों के लिए बनवाई थी गिरा देना चाहते हो, तो गुरु पर चढ़ाई करवा दो। यह आप की इच्छा है। वज़ीर खाँ की यह बात सुन कर बादशाह का गुस्सा ठंडा हो गया और उसने वली खाँ को कहा कि गुरु ने खुदा का घर मसजिद बनवाई थी, जिस को गिराने के लिए तेरा बाप चल पड़ा था। यह तुम्हारा झगड़ा गुरु जी से अल्ग है। आप ने व्यर्थ ही इतनी फौज मरवा दी। बादशाह का यह उत्तर सुन कर वली खाँ चुप कर के कचैहरी में से निकल गया।

बाबा स्री चंद जी से मेल

कुछ समय के बाद गुरु जी अपने परिवार सहित कुछ सैनिकों को साथ लेकर पहाड़ों की सैर करने व शिकार खेलने के लिए चल पड़े। बाबा श्री चंद जी भी उधर निवास रखते थे। एक दिन गुरु जी बाबा जी के दर्शन करने के लिए उनके डेरे चले गए। बाबा जी ने पूछा आपके कितने पुत्र हैं। गुरु जी ने कहा चार हमारे हाज़िर हैं और पाँचवें अटल राए जी प्रलोक सिधार गए हैं। बाबा जी ने कहा इनमें से एक पुत्र अपना हमें दे दीजिए। गुरु जी के पास उस समय स्री गुरदित्ता जी बैठे थे। आप ने उसको ही बाबा जी को अर्पण करके चरणों में डाल दिया और कहा आज से यह आप का पुत्र है। बाबा स्री चंद जी ने कहा आप धन्य हैं, जिनके बीच इतनी नम्रता है। इस नम्रता करके ही आप हमारे घर से सब

कुछ पहले से ही लिया हुआ है। अब हमारे पास केवल एक टोपी (चिंता का चिन्ह) ही बाकी है। वह भी तुम ले लो। यह वचन करके बाबा जी ने अपने सिर से टोपी उतार कर श्री गुरदित्ता जी के सिर पर रख दी और उसे अपनी गद्दी का वारिस बना दिया। इस दिन से सिक्ख संगत श्री गुरदित्ता जी को 'बाबा गुरदित्ता' जी कहने लगी। उदासी पंथ इन से ही आगे चला है।

साई बुडन शाह की वार्ता और कीरतपुर का वसाना

बाबा स्री चंद जी के द्वार से चल कर गुरु जी ने श्री गुरदित्ता जी से प्रार्थना की कि बुडन शाह फ़कीर व्यास नदी से पार एक पहाड़ी के ऊपर बहुत समय से जब कि श्री गुरु नानक देव जी उसके पास गए थे, तुम्हारा इंतजार कर रहा है। आप उसके पास जा कर उसकी इच्छा पूरी कीजिए और फिर कोई अच्छी जगह देख कर वहाँ अपने निवास के लिए एक गाँव बनाना।

तब श्री गुरदित्ता जी ने पूछा, महाराज ! साई बुडन शाह इतने लम्बे समय से वहाँ बैठा मेरी प्रतीक्षा कर रहा है? गुरु जी ने बताया कि एक समय जब श्री गुरु नानक देव जी साईं जी के पास गए, तो उस के पास बहुत बकरियां थीं। इन बकरियों की रखवाली एक शेर करता था। साईं जी ने बकरियों का दूध धोकर गुरु जी को पेश किया और पूछा कि संत जी ! आपका नाम क्या है? तब भाई मरदाने ने बताया, यह श्री गुरु नानक देव जी हैं। जिस को यह उपदेश देना चाहे उस के पास आप ही पहुँच जाते हैं। बुडन शाह ने गुरु जी को नमस्कार करके कहा, संत जी ! आप ने मुझे दर्शन दे कर निहाल कर दिया है। इस से मुझे अपने तप का फल मिल गया है। गुरु जी ने कहा सांई जी ! अपने शरीर का अहंकार त्याग कर एक मन हो कर सतिनाम का स्मरण करो। यही मुक्ति का साधन है। गुरु जी के इस वचन से बुडन शाह की समाधि लग

गई। जब दो पहर बीत गए, तो भाई बाले ने बुडन शाह को जगाया। बुडन शाह ने गुरु जी को नमस्कार करके कहा, यह आपकी कृपा से ही मेरा मन टिका हुआ है। मुझे सदा अपने साथ ही रखो। गुरु जी ने वचन किया कि सांई जी ! जब हमारा छठ्म रूप आएगा तब तुम्हारा शरीर छूटेगा। बुडन शाह ने पूछा—सन्त जी ! मुझे आप के छठ्म स्वरूप धारण का किस तरह पता चलेगा। गुरु जी ने बताया कि हमारे छठे जामे का एक सुपुत्र जब आपके पास आ कर दूध माँगेगा, तो आप समझ लेना कि हमारा छठा रूप प्रक्ट हो गया है।

यह वार्तालाप करके गुरु जी वहाँ से आगे चले गए और बुडन शाह छठे स्वरूप का ध्यान करके गुरु गुरु जपने लगा।

इतनी वार्ता बता कर गुरु जी ने कहा कि आप पहले जाकर साई जी को मिल कर फिर उन की सलाह से अपना एक नगर भी बसाना।

गुरु जी की आज्ञा के अनुसार जिस समय स्री गुरदित्ता जी साई बुडन शाह के पास गए, उस समय साईं जी अपने आत्म ध्यान में लीन थे। श्री गुरदित्ता जी ने आवाज़ दे कर कहा साईं जी ! उठ कर हमारा दूध दो। मुझे बहुत भूख-प्यास लगी है।

यह आवाज़ सुन कर बुडन शाह ने उठ कर पहले साहिबज़ादे को नमस्कार किया और फिर बकरियों के दूध का कटोरा भर कर दिया। तद्उपरान्त प्रार्थना की कि मैं गुरु जी के पहले स्वरूप के दर्शन करना चाहता हूँ। तब श्री गुरदित्ता जी ने श्री गुरु नानक देव जी के स्वरूप में बुडन शाह को दर्शन दिए, जिस को देख कर बुडन शाह ने नमस्कार करके सौभाग्य समझा।

फिर श्रीं गुरदित्ता जी ने कहा साईं जी हम यहाँ अपना स्वरूप एक नगर बसाना चाहते हैं। आप कृपा करके हमें वह जगह बताओ,

जो नगर के लिए अच्छी है। तब साईं जी ने कहा इस पहाड़ी के नीचे जगह अच्छी है, यहाँ नगर बसा लो।

साईं जी के संकेत से श्री गुरदित्ता जी ने संवत् १६८३ में पहाड़ के नीचे एक खुली जगह देख कर नगर की नींव रख दी और निर्माण कार्य आरम्भ कर दिया। थोड़े समय में ही अपने लिए मकान तैयार करवा कर श्री गुरदित्ता जी ने अपनी पत्नी श्रीमति नती और सुपुत्र धीरमल सहित वहाँ निवास कर लिया। नगर का नाम श्री गुरदित्ता जी ने 'कीरतपुर' रखा।

वडाली में सूर का उद्धार करना

बाबा गुरदित्ता जी को गुरु जी बुडन शाह की ओर भेज कर आप वापिस अमृतसर आ गए। अकाल तख्त पर आप जी रोज़ दीवान लगा कर बाहर आई संगत को अपने दर्शन उपदेश दे कर निहाल करते और अपने योद्धाओं को युद्ध अभ्यास करवाने के लिए शिकार खेलने ले जाते। बहुत जंगली जानवरों का शिकार करके अपने योद्धाओं को खिलाते।

एक दिन गुरु जी शिकार खेलते हुए अपने जन्म स्थान के दर्शन करने गये। सिक्खों ने नमस्कार की और बैठ कर गुरु जी की बातें बड़े प्यार से सुनी। जब थोड़ा सा दिन रह गया और गुरु जी वहाँ से चलने लगे, तो एक किसान ने आकर प्रार्थना की कि एक बड़ा भयानक सूर हमारी खेती बर्बाद करता रहता है। आप उस का शिकार करके हमारा यह दुख दूर करो। किसान की बात सुन कर गुरु जी अपने योद्धाओं सहित उस के साथ चल पड़े। आगे सूर एक झाड़ी में बैठा हुआ था। वह आदमियों का शोर सुन कर भबक मार कर उठ भागा। गुरु जी ने पैंदे खां को ललकारा कि सूर जाने न पाए। पैंदे खाँ ने सूर के पीछे अपना घोड़ा भगा कर उस को गोली मार कर घायल कर दिया। घायल सूर ने भाग

कर पैंदे खाँ के घोड़े पर वार किया और उस को हुड्ड मार कर ज़ख्मी कर दिया। गुरु जी ने अपने घोड़े आगे करके उस के तलवार से एक ही भरपूर वार से दो खण्ड कर दिये।

शरीर त्याग कर सूर की आत्मा गुरु जी के सामने खड़ी हो गई। भाई भाने ने उसको पूछा तुम कौन हो? सूर की आत्मा ने कहा मैं श्री गुरु अर्जन देव जी का एक सिक्ख था, गुरु जी ने मुझे माता गंगा जी से बाबा बुड्ढा जी के पास वरदान लेने भेजा था, तब भाई बुड्ढा जी ने सहज स्वभाव ही वचन कर दिया कि गुरु को 'किधरों की भाजड़ पई है'। तब मुझे बहुत गुस्सा आया, मैं अपने मुँह में गुनगुनाने लगा, तब मेरी ओर देख कर भाई बुड्ढा जी बोले कि सूर की तरह क्यों घूर रहे हो? बाबा जी के वचन सुन कर मैं बाबा जी के पाँव पड़ गया और प्रार्थना की कि मेरा उद्धार कब होगा? इस पर बाबा जी ने नम्र होकर कहा कि जब श्री गुरु अर्जन देव जी के सुपुत्र शिकार करते हुए तुम्हें मारेंगे तब तुम्हारा कल्याण होगा। जब इतनी बात बता कर सूर की आत्मा अलोप हो गई, तो भाई भाना और कई सिक्ख बड़े हैरान हुए। गुरु जी ने गड्ढा खोद कर सूर के शरीर को उस में दबा दिया और यादगार वहाँ दमदमा (एक चबूतरा) बनवा दिया। यहाँ अब गुरुद्वारा बना हुआ है। जो वडाली गाँव से पश्चिम की दिशा में आधा मील तक दूर है। इसका नाम दमदमा करके मशहूर है।

गुरु स्थानों की यात्रा

अमृतसर से एक दिन गुरु जी वडाली से बीड़ बाबा बुड्ढा जी गए। भीड़ का प्रबन्ध देख कर आप जी ने वहाँ बाबा जी की यादगार द्वारा भाई भाने को कह कर मंजी (चबूतरा) बनाया। बाद में तरनतारन जा कर भाद्रव महीने की अमावस्या प्रचलित की। फिर गुरु जी चोल्हे साहिब गुरु अर्जन देव जी के स्थान के दर्शन

करके संगत को गाँव चोल्हे का प्रसंग बताया कि इस का नाम गुरु जी ने चोल्हा क्यों रखा था। यहाँ से चल कर गाँव पठेविंड गुरु नानक जी के डेरे के दर्शन करने गए। यह गाँव बाबे कालू चंद जी का खानदानी गाँव था। एक बार सुलतानपुर से तलवंडी को जाते हुए गुरु जी यहाँ आए थे। परन्तु उनके शरीक भाइयों ने इनको गाँव में नहीं बैठने दिया था। जिस कारण आप जी ने गाँव से बाहर जा कर आराम किया।

जब गाँव वाले बेदियों ने गुरु जी को गाँव में बैठने न दिया, तो गुरु जी ने वचन किया कि जिस गाँव का तुम मान करते हो उसका निशान तक मिट जाएगा। इसका सर्वनाश हो जाएगा।

कुछ समय के बाद गाँव में वैर विरोध के कारण लोग गाँव छोड़ कर भाग गए। बाद में और लोगों ने गाँव को तोड़ कर ढेर कर दिया। गुरु जी ने इस जगह को नमस्कार किया और कहा यहाँ गुरु नानक देव जी के चरण पड़े थे।

इस उपरान्त गुरु जी उस स्थान के दर्शन करने चले गए जहाँ भाई हेमे की झोपड़ी में श्री गुरु अर्जन देव जी ने एक रात विश्राम किया था और प्रसन्नता पूर्वक यह शब्द उच्चारण किया था।

राग सूही महला ५ घरु ४ ।।

भली सुहावी छापरी जा महि गुन गाए।। कितही कामि न
धउलहर जितु हरि बिसराए।। १।। रहाउ।। अनदु गरीबी
साध संगि जितु प्रभ चिति आए।। जलि जाउ एहू बडपना
माइआ लपटाए।। १।। पीसनु पीसि ओढि कामरी सुखु मनु
संतोखाए ऐसो राजु न कितै काजि जित नह त्रिपताए।। २।।
नगन फिरत रंगि एक कै ओहु सोभा पाए।। पाट पटंबर
बिरथिआ जिह रचि लोभाए।। ३।। सभु किछु तुमरै हाथि प्रभ
आपि करे कराए।। सासि सासि सिमरत रहा नानक दानु
पाए।। ४।। १।। (सिरी गुरु ग्रंथ साहिबः पृ० ७४५)

www.9009.co.in

भाई गुरदास जी का स्वर्ग सिधारना (गुरु जी गोईंदवाल)

भाई हेमे की छापरी स्थान के दर्शन करके श्री गुरु हरिगोबिंद जी गोईंदवाल पहुँच गए। भाई गुरदास जी ने गुरु जी के पास आ कर कहा, महाराज ! मेरा अंतिम समय नज़दीक आ गया है, मेरी परलोक गमन की तैयारी है। आप जी ने मेरे शरीर का दाह करके भस्म ब्यास नदी में बहा देनी, मेरी समाधि अथवा यादगार न बनाना। गुरु जी ने कहा तुम्हारी इच्छा के अनुसार ही किया जाएगा। इसके बाद भाई जी अपनी वृत्ति जोड़ कर बैठ गए और शरीर त्याग कर सचखण्ड जा बिराजे। गुरु जी ने मृतक शरीर को अपने हाथों से भेंट करके संस्कार किया और आप ज़रूरी संस्कार करवा कर अमृतसर आ गए।

बाबा गुरदित्ता के घर साहिबज़ादे का जन्म

बाबा गुरदित्ता जी जो कीर्तपुर निवास रखते थे, उन के घर श्रीमती नती के उदर से संवत् १६८६ माघ सुदी त्रोदशी को साहिबज़ादे ने जन्म लिया। जिस का नाम आप जी ने हरि राए रखा। यह खबर अपने पौत्र के जन्म की जब श्री गुरु हरिगोबिंद जी को अमृतसर पहुँची, तो आप जी ने हरिमन्दिर साहिब कढ़ाह प्रसाद की देग भेंट करके साहिबज़ादे की दीर्घ आयु की अरदास करवाई।

डरोली भाई सांई दास के पास जाना

भाई साईंदास ने डरौली से गुरु जी को अमृतसर पत्र भेजा कि आप यहाँ वसोए के मेले पर ज़रूर आ कर दर्शन दो। सब सिक्ख सेवक दर्शन करने के लिए प्रतीक्षा कर रहे है।

इस चिट्ठी के अनुसार गुरु जी ने श्री दमोदरी के साथ सलाह करके सारे परिवार और योद्धाओं सहित डरोली जाने की तैयारी कर ली। हरिमन्दिर साहिब की सेवा सम्भाल के लिए आप जी ने कुछ मसंदों को नियत कर दिया और नगरवासियों को धैर्य देकर आप अपना सब सैनिक और घरेलु सामान ले कर अपने सांढू साईं दास के पास तीन हज़ार शस्त्रधारी योद्धाओं सहित डरोली पहुँच गए।

भाई साध और उसकी स्त्री को सिक्खी दान

डरोली के नज़दीक ही एक गाँव में बड़े घर के रहने वाला तरखान सिक्ख भाई अकाल गुरु घर का बड़ा श्रद्धालु था। इस की कन्या तुकलाणी गाँव के रहने वाले साधे के पुत्र साधु से विवाहित थी। साधु सखी परिवार का चेला था और बीबी एक गुरसिक्ख की लड़की होने के कारण इन के पास सुखी नहीं थी। एक दिन इस बीबी ने श्री गुरु हरिगोबिंद जी के दीवान में आ कर बताया कि मैं सखी सरवरीया के घर विवाहित हूँ। जो गुरु घर को बिल्कुल नहीं मानते। इस कारण मैं और मेरे माता-पिता बहुत दुखी हैं। गुरु जी ने बीबी जी को धैर्य दिया कि पुत्री तुम चिंता न करो। तेरा पति गुरु घर का पक्का सिक्ख बन जाएगा। यह वचन करके गुरु जी ने अपने दाएँ हाथ से बीबी के माथे पर सतिनाम कह कर कलम फेर कर बीबी का भाग्य बदल दिया।

अपनी स्त्री के पीछे आ कर जब भाई साधु ने गुरु जी के दर्शन किए तो उसी समय उस के मन को शान्ति मिल गई। उसने जब गुरु जी के चरणों पर माथा टेका, तो गुरु जी ने कहा खुश रहो। सतिनाम का जाप करो। आप ने तुर्कों का जूठा खाना और सरवरीए तुर्क की मनत छोड़ कर गुरु घर की सिक्खी धारण कर ली। आप दोनों के खोटे लेख मिटा कर उत्तम लेख लिख दिए हैं।

साधु ने गुरु जी की आज्ञा मान कर अपने घर सखीसर्वर का स्थान गिरा दिया और गुरु घर का पक्का सिक्ख बन गया। समय पाकर साधु के घर एक बड़ा सुन्दर लड़का पैदा हुआ, जिस का नाम गुरु जी ने उस का सुन्दर रूप होने के कारण रूपा रखा।

भाई साधु और रूपे का प्रेम गुरु जी ने जल पीना

एक दिन ज्येष्ठ महीने में भाई साधु और रूपा दोनों बाप बेटा जंगल में लकड़ी काटने गए और अपने पीने के लिए पानी का मटका भर कर अपने साथ ले गए। मटके को एक जंड के वृक्ष के साथ लटका कर आप लकड़ी काटने लग गए, शीर्षस्थ दोपहर के समय दोनों को बहुत प्यास लगी, तो पानी पीने के लिए जंड के नीचे आए। भाई रूपा जब मटका पकड़ कर अपने पिता साधु को पानी पिलाने लगा तो मटके को बहुत ठंडा देख कर वहाँ ही जंड के साथ लटका कर उस ने अपने पिता को कहा कि पिता जी ! यह ठंडा जल गुरु जी के पीने योग्य है। पहले गुरु जी को पिला कर फिर हमको पीना चाहिए। गर्मी के दिन और लकड़ियां चीरने की सख्त कार करके वह प्यास के साथ बहुत व्याकुल हुए भी जंड के नीचे बैठ कर गुरु जी की अराधना करने लगे कि हे सतिगुरु ! यह शीतल जल इस समय की अति गर्मी की ऋतु में आप जी के पीने योग्य है। पहले आप आ कर इस शीतल जल को पी लीजिए, फिर हम पीयेंगे।

इस समय गुरु जी पिता और पुत्र से तीस कोस दूर दोपहर के समय डरौली में विश्राम कर रहे थे। इतनी श्रद्धापूर्वक अराधना उनकी गुरु जी को जिस समय पहुँची आप जी तुरन्त उठ कर बैठ गए और सेवादार को कहा हमारी सवारी के लिए हमारा घोड़ा जल्द लाओ। सेवादार घोड़ा ले आया। गुरु जी घोड़े पर सवार हो

कर तीस कोस का रास्ता क्षणों में ही तह करके जंड के नीचे दोनों पिता-पुत्र प्यास के साथ व्याकुल हो कर लेटे हुए थे, वहाँ पहुँच गए और कहा आप कौन है? हमको बहुत प्यास लगी है, तुरन्त हमको पानी पिलाओ।

यह आवाज़ सुनकर साधु ने रूपे को कहा—उठो पुत्र ! गुरु जी आ गए हैं। पानी पिलाओ। दोनों पिता-पुत्र ने उठ कर गुरु जी के चरणों में माथा टेका और घोड़े से उतर कर अपनी चादर बिछा कर बैठा दिया और बड़े प्रेम के साथ पत्रों के डोने बना कर गुरु जी को ठंडा जल पिलाया। फिर गुरु जी की आज्ञा पा कर उस ने आप जल पिया और अपनी प्यास बुझाई।

उनकी यह श्रद्धा और प्रेम पर गुरु जी ने प्रसन्न होकर कहा अब आप अपना तरखान का काम छोड़ कर गुरु की देग बटवाया करो। ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ आपके अधीन रहेंगी। भाई साधु ने प्रार्थना की कि महाराज! हमको सिक्खी दान बख्शो जिस से हमारा जन्म-मरण कट सके। आप हमारे सहायक एवं रक्षक बनें। तब हम नित्य ही गुरु की देग करेंगे। गुरु जी ने कहा आप अपना एक नया गाँव बसा लें, आपका वंश बहुत बढ़ेगा।

रूप चंद को गुरु जी ने अपना एक वस्त्र और शस्त्र तेग दी, जो उसने बड़ी श्रद्धा के साथ अपने सिर पर रख लिए और प्रार्थना की कि महाराज ! मैं इनकी पूजा किया करूँगा। इनको मैं धारण नहीं कर सकता। गुरु ने वचन किया, अगर तुम हमारी बख्शी हुई तेग धारण नहीं करोगे, तो तुम्हारी रसना ही तेग होगी। जो वचन करोगे, वह सच्चा होगा।

यह वरदान दे कर गुरु जी वहाँ से घोड़े पर सवार हो कर एक कोस दूर आ गए और एक अच्छी जगह देख कर डेरा करके भाई

रूपचंद को कहा कि आप इस जगह अपना नगर बसा लेना। बाद में गुरु जी ने रात का विश्राम करके दूसरे दिन गाँव की मोहड़ी गाड़ी और गाँव का नाम रूपनगर रख दिया। यहाँ आप ने अपने घर बनवा कर गुरु की देग का लंगर चला दिया। भाई रूपे के गाँव रियासत नाभा में बड़ा मशहूर नगर है। यहाँ आज तक गुरु का लंगर नित्य चलता रहता है।

माता दामोदरी जी का गुरपुरी सिधारना

(सन् १६८८ बिक्रमी)

गुरु जी के डरौली में निवास के समय अनेक सिक्ख संगत आप जी के दर्शन करने आती थी और नाम दान का उपदेश ले कर अपनी मनोकामना पूरी करके गुरु घर की महिमा करती थी। इस समय बाबा गुरदित्ता जी भी अपने परिवारसहित कीर्तपुर से गुरु पिता जी के दर्शन करने आए। वैसाखी का मेला बहुत लगा। संगत अनन्त भेंट ले कर गुरु जी के पास हाज़िर हुई। तद्उपरान्त जब सावन का महीना आया, तो एक दिन माता दमोदरी जी ने गुरु जी के पास प्रार्थना की कि महाराज ! अब मेरा अन्त समय आ गया है, मैं शरीर त्यागने लगी हूँ। मुझ से अगर अनजाने में कोई गल्ती हो गई हो, तो उसे क्षमा कर देना। गुरु जी ने कहा—सतिनाम का जाप करो। अपनी वृत्ति को प्रभु ज्योति में लगा कर परमगति को प्राप्त हो।

माता जी स्नान करके कुशा के आसन पर लेट गए और गुरु चरणों का ध्यान करके शरीर त्याग कर गुरपुरी में जा बिराजे। शरीर का संस्कार करके गुरु जी ने बाबक रबाबी से कीर्तन करवाया और कढ़ाह प्रसाद की देग बाँट कर डेरे आ गए। तेरहवें पर गुरु जी ने बाबा गुरदित्ता जी को पगड़ी बँधवाई और अटूट लंगर बँटवाया।

www.9009.co.in

बीबी रामो, भाई साईं दास और उसके पिता नारायण दास का परलोक गमन

इस के पश्चात् थोड़े दिनों में ही गुरु जी की साली बीबी रामो, उस का पति भाई साईंदास और ससुर नारायण दास आगे पीछे स्वर्ग सिधार गए।

परिवार को गुरु जी ने करतारपुर भेज देना

कुछ दिनों के उपरान्त गुरु जी ने बाबा गुरदित्ता को उन के परिवार और माता नानकी और मरवाही जी सहित घर का सामान बैलगाड़ियों पर लदवा कर करतारपुर भेज दिया और इन के साथ गुरु जी ने सिरी गुरु ग्रन्थ साहिब जी की बीड़ भी भेज दी, जो फिर सदा के लिए करतारपुर ही रही। आप गुरु जी बीबी रामो आदि के अंतिम संस्कार करने के लिए पीछे ठहर गए।

गुरु जी ने भाई रूपे को मंझी बख्शानी

सारे परिवार और सामान को करतारपुर भेज कर गुरु जी ने भाई बिधी चन्द को कहा—साईं दास और बीबी रामो परलोक सिधार गए हैं। यहाँ सूनापन छा गया है, उदासी छा गई है। अब हमारा यहाँ रहने को मन नहीं करता। इस लिए कल प्रातःकाल चलने की तैयारी कर लो।

भाई साधु और रूपे ने अपने नए गाँव रूपेके में एक बहुत बड़ी सुन्दर धर्मशाला बनवाई थी। जिस में सब से पहले गुरु जी के चरण डलवाना चाहते थे। अपने परम प्रेमियों के मन की इस भावना को पूरी करने के लिए गुरु जी तैयार हो कर भाई रूपे के यहाँ पहुँच गए। उनकी श्रद्धा और प्रेम को देख कर गुरु जी ने भाई रूपे को मंझी वरदान में दी और वर दिया कि तेरे घर सात पुत्र होंगे, जो गुरु घर के अनन्य सिक्ख होंगे और इस इलाके में आपकी बहुत मान्यता होगी।

www.9009.co.in

कांगड़ निवासी जोधशाह ने दर्शन को आना

इस बात का जब जोधशाह को पता चला कि गुरु जी भाई रूपे के यहाँ आए हुए हैं, तो वह अपनी स्त्री, भाई और कुछ योद्धाओं को साथ ले कर गुरु जी के दर्शन करने आया। गुरु जी को नमस्कार करके राजी खुशी पूछ कर फिर युद्धों की बातें सुन कर जोधशाह ने कहा महाराज ! अगर मैं भी आप के साथ अमृतसर और रुहेले गाँव के युद्धों में शामिल होता, तो मैं भी शत्रु के साथ दो हाथ करके आप जी को दिखाता। गुरु जी ने कहा, जब फिर कोई ऐसा समय बनेगा, तो तुझे खबर करेंगे, तुमने हमारी सहायता के लिए आ जाना।

गुरु जी के पास दर्शन करने वालों की भीड़ लगी रहती। कई प्रकार के शस्त्र घोड़े और अन्न वस्त्र नकद भेंट ले कर सिक्ख संगत हाज़िर होती और गुरु की खुशी प्राप्त करके निहाल होती।

लाहौर के सूबे ने काबल के सिक्खों से गुरु जी के लिए लाए दो घोड़े छीन लिए

गाँव रूपेके में एक दिन जब गुरु जी का दीवान सजा हुआ था, तो काबल की संगत के साथ गुरु जी के दो मसंद भाई तारा चंद और बख्त मल ने आ कर प्रार्थना की कि सच्चे पातशाह आप जी की कार भेंट इकट्ठी कर के हम आप जी के लिए दो बहुत बढ़िया घोड़े खरीद कर काबल से संगत के साथ आ रहे थे, तो लाहौर के सूबे ने वह दोनों घोड़े ज़बरदस्ती छीन लिए और शाही तबेले में बाँध लिए हैं। इस बात का हमें बड़ा दुःख है। हम बड़े प्रेम के साथ सेवा करके इन घोड़ों को आप जी की सवारी के लिए लाए थे। गुरु जी ने धैर्य दिया और वचन दिया कि तुम्हारे मन की इच्छा पूरी हो जाएगी, आप की तरफ से हमको घोड़े पहुँच गए हैं।

भाई बिधी चंद ने एक घोड़ा ले आना

बाद में विचार करके गुरु जी ने भाई बिधी चंद को कहा कि इन प्रेमियों के मन की इच्छा को पूरा करने के लिए जैसे तैसे करके इन घोड़ों को तुम हमारे पास लाओ। यह काम तेरे ही करने योग्य है। बिधी चंद ने कहा महाराज! जैसे आज्ञा करो मैं हाज़िर हूँ। बिधी चंद गुरु जी से खुशियाँ ले कर लाहौर को चल पड़ा और लाहौर पहुँच कर भाई जीऊने एक सिक्ख के घर ठहर गया।

दूसरे दिन भाई बिधी चंद बड़े अच्छे नर्म हरे-हरे घास की गठड़ी खोद कर किले के द्वार के आगे आ बैठा। शाही घोड़ों के तबेले का दारोगा सोंधे खाँ घास की गठड़ी का मूल्य करके भाई बिधी चंद से उठवा कर घोड़ों के तबेले में ले गया और कहा कि यह घास इन घोड़ों के आगे डाल दो। भाई बिधी चंद ने घास को बहुत अच्छी तरह घोड़ों के आगे डाल दिया और फिर आप ने घोड़ों को अपने कपड़े से ही मुँह और पैरों तक बड़ी अच्छी तरह साफ कर दिया।

इस सफाई से घोड़े भी बहूत खुश हो कर घास खाने लगे और दारोगा भी बहुत खुश हुआ कि इस ने पातशाही घोड़ों से बहुत प्रेम प्यार दर्शाया है। इस प्रसन्नता केकारण सौंधें खाँ ने बिधी चंद को कहा कि तुम रोज़ ही एक गठड़ी अच्छे घास की इन घोड़ों के लिए ले आया करो और रात भी घोड़ों के पास ही रहा करो। पैसे तुम्हें महीने की तनखाह के हिसाब से मिल जाया करेंगे।

इस फैसले के अनुसार बिधी चंद को घोड़ों के तबेले के पास रहने को जगह मिल गई और वह रोज़ ही एक गठड़ी घास की लाकर घोड़ों की मालिश और सफाई करके, बड़े प्रेम से खिलाता। सौंधे खाँ दारोगा बिधी चंद पर बड़ा खुश रहता।

इस तरह भाई बिधी चंद ने कुछ दिनों में सब कुछ देख-भाल कर एक घोड़ा ले कर बाहर निकलने की योजना बना ली। एक दिन भाई बिधी चंद ने अपने सारे साथी नौकरों और पहरेदारों को कबाब के साथ बहुत शराब पिला कर बेहोश कर दिया और आप घोड़े पर सवार हो कर किले की पिछली दीवार से उसको रावी दरिया में जो किले के साथ ही बहता था, छलांग मरवा दी। दरिया से घोड़े को पार करके, भाई बिधी चंद यह तुक—'गुर मेरे साथ सदा है नाले।। सिमर-सिमर तिसु सदा समाले।।' पढ़ता हुआ जंगल देश में गुरु जी के पास भाई रूपेके गाँव पहुँच गया। घोड़े को देख कर भाई बखत मल मसंद ने बताया कि महाराज ! इस घोड़े का नाम 'दिलबाग' है। गुरु जी ने बिधी चंद पर खुश हो कर उस को शाबाश दी और घोड़े की देख-भाल के लिए भाई जेठे को नियत कर दिया।

भाई बिधी चंद ने दूसरा घोड़ा लाना

सुबह जब सौंदे खाँ को पता चला कि दिलबाग घोड़ा तबेले में नहीं है, तो उस ने यह बात बादशाह को बताई। बादशाह ने अपने खोजियों को घोड़ा ढूँढने के लिए हुक्म दे दिया। खोजी घोड़े को खोजने लगे।

इधर भाई बिधी चंद दूसरा घोड़ा लाने के लिए गुरु जी से शाबाश ले कर लाहौर को चल पड़ा। गुरु जी आप भाई जोध की श्रद्धा और प्रेम को देख कर उसके गाँव कांगड़ा चले गए। भाई बिधी चंद भाई रूपेके गाँव से चल कर तीसरे दिन लाहौर पहुँच गया और एक धर्मशाला में जा डेरा किया। वहाँ भाई बिधी चंद ने शाही ढिंडोरा सुना कि जो भी कोई बादशाह के घोड़े का पता बतायेगा उसको मुँह माँगा ईनाम दिया जायेगा।

यह ढिंडोरा सुन कर बिधी चंद ने एक सिक्ख भाई बहोड़ू के द्वारा एक लम्बा चोला तैयार करवा कर गले में डाल लिया और हाथ में ज्योतिष बताने के लिए संगली पकड़ ली। अपने सिर के केश खोल कर पीछे पीठ के ऊपर फैंक दिये। दाहड़ी दो तरफ करके खोल दी। इस तरह दिल्लीवाल के ज्योतिषि बन कर किले के सामने जा बैठा और संगली फैंक कर ज्योतिषियों की तरह बातें करने लगा। जब इस बात का दारोगे सौंधे खाँ को पता लगा कि कोई ज्योतिषी आया है, तो उसने ज्योतिषी को बुला कर कहा कि अगर तुम बादशाह के घोड़े का पता बता दोगे कि कहाँ है और किसने चुराया है तो तुमको मुँह माँगा ईनाम दिया जायेगा। ज्योतिषी ने कहा मैं खुदा के हुक्म के साथ पूरा-पूरा पता बताऊँगा, परन्तु पहले मुझे वह जगह देखनी पड़ेगी जहाँ से घोड़ा चुराया गया है।

यह बात सुन कर सौंधे खाँ ज्योतिषि को किले में ले गया और तबेले वाली जगह जहाँ घोड़ा बँधा हुआ था, दिखलाई। ज्योतिषि ने वहाँ बैठ कर अपनी संगली दो तीन बार ज़मीन पर हिलाई और फिर आकाश की ओर देख कर कहा कि जिस ने घोड़ा लिया है और जिस के पास अब घोड़ा है वह सब कुछ बताऊँगा। अगर रात के समय सारे दरवाज़ों को ताले लगा दिये जाएँ और किले के आगे पहरा खड़ा हो जाए। सारे नौकर उस रात की तरह ही अपने-अपने स्थानों पर सो जाएँ, फिर मैं दूसरे घोड़े से सुधि ले कर आपको सब कुछ सुबह बता दूँगा। ज्योतिषि की इस बात पर भरोसा करके रात के समय उस तरह ही किया गया।

जब एक पहर रात बीत गई, तो बिधी चंद दूसरे घोड़े गुलबाग पर सुनहरी जीन डाल कर उसे तबेले से बाहर ले आया और उस पर सवार हो कर ऊँची आवाज़ में कहा कि पहले घोड़े का पता यह

है। वह इस समय जंगल देश के भाई रूपेके गाँव में श्री गुरु हरिगोबिंद जी के पास है। उस को वह घसियारा ही ले गया था, जो आप ने कसेरा नौकर रखा था।

यह दूसरा घोड़ा भी वह घसियारा कसेरा ही ज्योतिषि बन कर उस पहले घोड़े के पास गाँव रूपेके गुरु जी के पास ही ले चला है। इस के पश्चात् भाई बिधी चंद ने घोड़े को चाबक मार कर पहले की तरह ही किले की दीवार कुदवा कर दरिया में फैंक दिया और दरिया पार करके रास्ते में यह शब्द झूम-झूम कर पढ़ता हुआ गुरु जी के पास पहुँच गया—

आसा महला ५ ।।

अपुने सेवक की आपे राखै आपे नामु जपावै।। जह जह काज किरति सेवक की तहा तहा उठि धावै।। १।। सेवक कउ निकटी होइि दिखावै।। जो जो कहै ठाकुर पहि सेवकु ततकाल होइि आवै।। १।। रहाऊ।। तिसु सेवक कै हउ बलिहारी जो अपने प्रभ भावै।। तिस की सोइि सुनी मनु हरिआ तिसु नानक परसणि आवै।। २।। ७।। १२९।।

रूपेके गाँव पहुँच कर जब भाई बिधी चंद को पता चला कि गुरु जी कांगड़ चले गए हैं, तो बिधी चंद घोड़ा ले कर गुरु जी के पास कांगड़ पहुँच गया।

गुरु जी बिधी चंद को घोड़े सहित देख कर बहुत खुश हुए और शाबाश देकर वचन किया 'भाई बिधी चंद हम तुम पर बहुत खुश हैं, तुम निहाल हुए हो।'

जंग की तैयारी

भाई बिधी चंद ने गुरु जी को घोड़ा लाने का सारा समाचार बता कर कहा कि शाहजहाँ अब जल्दी ही फौज ले कर आप आएगा और या किसी अपने बड़े सेनापति को भेजेगा। आप उनके टकराव के लिए तैयारी कर लो। यह बात सुन कर गुरु जी ने जोध

शाह के साथ सलाह करके कांगड़ से चार पाँच कोस दूर नथाने गाँव की एक पानी की (कच्चा सरोवर) ढाब के पास अपने हज़ार शूरवीरों के साथ डेरा डाल लिया और बादशाही फौज का इंतजार करने लगे। तम्बू कनातें लगा कर ढाब के चारों तरफ शूरवीर नियुक्त हो गए।

बादशाही फौज की चढ़ाई

जब भाई बिधी चंद बादशाह को गुरु जी की सारी जगह टिकाने का बता आया, तो बादशाह को गुरु जी पर बहुत गुस्सा आया। उसने अपने वज़ीरों को कहा कि पहले इस हिन्दुओं के गुरु ने हमारा बाज पकड़ लिया और लड़ाई करके हमारे बहुत सारे सैनिक और सेनापति मार दिए। फिर इसने रुहेले गाँव की तबाही करके सूबा जालन्धर की फौज का सर्वनाश कर दिया। लाहौर से काजी की लड़की निकाल ले गया फिर काजी से घोड़ा खरीदकर उस के पैसे भी मार लिए। अब यह हमारे दो घोड़े भी बड़ी चालाकी से अपने चोरों के द्वारा ले गया है। अगर इसका कोई पक्का उपाय न किया गया, तो बादशाही दबदबा देश पर नहीं रहेगा।

बादशाह की यह बात सुन कर जब सब ने उस से अपनी सहमति प्रक्ट कर दी, तो बादशाह ने अपने सेनापति ललाबेग को पैंतीस हज़ार योद्धे दे कर गुरु जी को जिंदा पकड़ कर लाने का हुक्म दे कर भेज दिया।

ललाबेग की फौजों की चढ़ाई का जब गुरु जी को पता चला, तो आप जी ने भी अपने सैनिकों को तैयार करके मोरचों पर बैठा दिया।

ललाबेग लाहौर से चल कर पाँचवें दिन तिरोदशी को रूपेके गाँव से गुरु जी का पता करके अपने साथ लगभग सौ सवार ले

कर नथाने की ढाब गुरु जी को पकड़ने के लिए आया। आगे से सिक्ख शूरवीरों ने वैरी जत्थे को दूर से आता देख कर धड़ा-धड़ बंदूकें छोड़ दी। गोलियों की बौशाड़ से ललाबेग के कुछ शूरवीर घायल हो कर ज़मीन पर गिर पड़े और बाकी पीछे हट गए।

इस झड़प के बाद जब रात का अन्धेरा हो गया, तो गुरु जी ने अपने योद्धाओं को कहा कि इस समय दुश्मन की थकी हुई और इस जगह की अनभिज्ञ फौज को पराजय देने का यही समय है। शक्तिसंचित धावा बोलो और तबाही कर दो।

गुरु जी का हुक्म सुन कर जोध राए और मलक जाती ने अपने योद्धाओं को ललकार कर रात के अंधेरे में दुश्मन सेना पर आक्रमण कर दिया। मशालें बुझ गई। घटा टोप अंधेरा हो गया। मारोमार की आवाज़ें और घायलों की चीखों से कुरलाहट मच गई। किसी को कुछ सुनाई न देता था और आपाधापी में बहुत खून खराबा हुआ।

दूसरे दिन सवेरे ही ललाबेग ने कमरबेग की अगवाई में सात हज़ार योद्धाओं के साथ गुरु जी के ऊपर दावा बोल दिया। सर्दी की ऋतु के कारण दुश्मन सिपाही सर्दी के साथ ठिठुरे हुए जब आगे बढ़े, तो जोध शाह ने अपने भाई सलेम शाह को पाँच योद्धे दे कर दुश्मन का सामना करने के लिए भेजा। आमने-सामने दोनों तरफ से शस्त्र गोलियों और तीरों की वर्षा होने लगी। मृतकों और घायलों के ढेर लग गए। धरती रक्तरंजित हो गई। इस घमासान के युद्ध में शाही फौज अपनी बहुत सी सेना मरवा कर पीछे हट गई। यह नुकसान देख कर ललाबेग बहुत घबराया। कमरबेग ने ललाबेग को कहा हमको ठंडी हवा और सर्दी कुछ नहीं करने देती। सवेरे का समय हमको उल्टा ही पड़ा है। सर्दी बहुत है।

फिर तीसरी बार आठ हज़ार जवान ले कर भीखन खाँ और गुल खाँ ने गुरु जी पर हमला किया। सलेम शाह ने आगे से एक बार ही पाँच सौ बंदूकों का वार करके असंख्य तीरों की वर्षा की फिर दोंनों ओर से तलवारों, नेज़ों की आमने-सामने लड़ाई हुई। दो घड़ियाँ बहुत मार-काट होती रही। जिस में दुश्मन सेना के कुछ आदमी मारे गए और बहुत से घायल हो गए। अपनी फौज की तबाही को देख कर ललाबेग ने काँप कर कहा—या अल्लाह ! यह क्या बन रहा है? हज़ारों सिपाही मर गए हैं। हज़ारों ही घायल पड़े हुए हैं। शीत कोई पेश नहीं जाने देती।

इस तरह पशेमान हो कर ललाबेग के पुत्रों ने अपने साथ दस हज़ार शूरवीरों को ले कर गुरु जी पर चौथी बार दावा बोल दिया। इन के टकराव के लिए गुरु जी ने भाई बिधीचंद को एक हज़ार शूरवीर दे कर आगे रोकने के लिए तथा जोध शाह तथा मलिक जाति को दुश्मन के पीछे से घेरा डालने का लिए कहा। इस तरह दुश्मन सेना को आगे और पीछे घेरा डाल कर गोलियों और तीरों की वर्षा करके सिक्ख शूरवीरों ने उथल-पुथल मचा दी और दुश्मन सेना को मार गिराया।

युद्ध की इस स्थिति को देख कर गुरु जी आप युद्ध-भूमि में आ कर तीरों की वर्षा करने लगे, जिस से सैंकड़ों दुश्मन धरती पर गिर पड़े। अली-अली और अकाल-अकाल के जयघोष से आकाश गूँज उठा। इस घमसान युद्ध में दुश्मन सेना के दस हज़ार सैनिक भी मारे गए। कुछ मर गए और कुछ घायल हो गए।

अपनी फौज का बहुत नुकसान देख कर ललाबेग को बहुत गुस्सा आया। उस ने अपने सरदारों को कहा कि यहाँ हमें रात के समय लड़ाई नहीं करनी चाहिए, क्योंकि हम इस क्षेत्र से परिचित नहीं हैं। जिस कारण सिक्ख हमारा बहुत नुकसान कर देते हैं।

www.9009.co.in

कल दिन चढ़े आप अपने जवानों की अगवाई करके देखूँगा। जब दिन चढ़ा तो ललाबेग ने नगारे की खोट मरवा कर आक्रमण कर दिया। जब ललाबेग मैदान में आया, तो हसन खाँ ने तीर का निशाना मार कर ललाबेग की सिर से पगड़ी गिरा दी। अपनी पगड़ी तीर से गिरी देख कर ललाबेग बहुत घबराया और अपने सिपाहियों को आज्ञा देकर एक दम गोलियों की बौछाड़ करा दी।

एक और जरनैल काबलबेग ने गुरु जी से आमने-सामने हो कर युद्ध किया और कुछ वार करके अन्ततः गुरु जी की तलवार के वार से उसका सिर अलग हो गया और धरती पर जा गिरा।

फिर कमरबेग आप आगे होकर जोध राए से लड़ा और जोध राए के नेज़े के प्रहार से उल्टा होकर ज़मीन पर गिर कर सदा के लिए सो गया। शाही सेना के सिपाहियों ने जोध राए को घायल किया और उसका घोड़ा गोलियाँ मार कर गिरा दिया। जोध राए को गुरु जी ने एक और घोड़े पर चढ़ा कर डेरे भेज दिया। दो बड़े योद्धाओं की मौत के बाद ललाबेग के दोनों पुत्र कासिम बेग और शमस बेग गुस्सा खा कर आगे बढ़े। गुरु जी ने इनका सामना करने के लिए बिधीचंद और मलिक जाती को भेजा। भाई बिधीचंद की तलवार के वार के साथ कासिम बेग दो टुकड़े हो कर धरती पर गिर पड़ा। फिर ललाबेग अपने पुत्र की मौत को देखकर गुस्से के साथ आप आगे बढ़ा इसका सामना भाई जेठा जी ने बहुत बहादुरी के साथ किया, परन्तु बहुत से दुश्मनों के घेरे में आ कर भाई जेठा शहीदी प्राप्त कर गया। यहाँ मलिक जाती ने आपना दाव देख कर शमसबेग पर एक ऐसा तलवार का वार किया कि शमसबेग की गर्दन कट गई और अपने ही घोड़े पर लटकता हुआ वह मर गया।

ललाबेग की मौत पर गुरु जी की जीत

अपने दोनों पुत्रों और सेनापतियों की मौत को देख कर ललाबेग अपने योद्धे लेकर योद्धाओं पर टूट पड़ा। उधर से गुरु जी भी अपना घोड़ा छोड़ कर ललाबेग के सामने चले गए और एक दूसरे के ऊपर दोनों ओर से प्रहार होने लगे। ललाबेग का घोड़ा घायल हो कर गिर पड़ा, तो ललाबेग पैदल हो गया। उसे पैदल देख कर गुरु जी भी घोड़े से उतर कर पैदल होकर उस के साथ वार पर वार करने लगे। दोनों ओर के सैनिक अपनी-अपनी जगह पर खड़े हो कर हार जीत के निर्णाय का इंतजार करने लगे। एक दूसरे पर वार पर वार होते रहे, परन्तु अंत में गुरु जी के एक भरपूर हमले से ललाबेग कंधे से पसली तक दो टुकड़े हो गया और उसकी मृत देह धरती पर तड़पने लगी। यह देख कर सिक्खों ने फतह के जैकारे लगाए और जीत के बाजे बजने लगे। शाही लश्कर की फौजों के हौसले टूट गए और पीछे भाग निकले। सिक्खों ने उन के पीछे चढ़कर बहुत मार-काट की।

शहीदों की सम्भाल

जब शाही सेना हार कर दौड़ गई, तो गुरु जी ने अपने आदमियों को कहा कि पहले अपने घायलों की मरहम पट्टी करके फिर शहीदों को एक जगह इकट्ठे करके एक बड़ा अंगीठा तैयार करो और सब का बड़े सत्कार से संस्कार करो। जोध राए ने कहा महाराज ! अपने एक हज़ार योद्धे शहीद हुए है। उधर शाही सेना के मृतकों की संख्या करनी बहुत कठिन है। जो पैंतीस हज़ार से भी अधिक ही मर गए हैं। हज़ारों ही घायल होकर छिप गए हैं और बाकी अपनी जानें लेकर जंगल में जा छिपे हैं। मुसलमान घायलों की गुरु जी ने मरहम पट्टी करवाई और मृतकों को इक्ट्ठा करवा

कर एक बड़ा गड्ढा खुदवा दिया। तद्उपरन्त युद्ध के मैदान में गिरे हुए अपने शस्त्र इकट्ठा करवा कर उन की सम्भाल करवाई और दुश्मनों के मृतकों को वही दफ़ना दिया। डेरे आ कर लंगर तैयार करवा कर खाया और जीत की खुशी में कढ़ाह प्रसाद बँटवाया।

मराज सिक्ख को श्राद्ध देना

दूसरे दिन जब गुरु जी दीवान सजा कर बैठे, तो आप जी ने मराज को बुला कर कहा कि युद्ध के मैदान में से जो तुम कमर बेग सेनापति की बहुत सुन्दर और कीमती तलवार लाये हो, उस को भी उस गड्ढे में ही दबा दो, जहाँ दुश्मन के और शस्त्र दबाए हैं। दुश्मन की किसी चीज़ को भी अपने पास रखना ठीक नहीं है।

मराज ने कहा— महाराज ! मेरे पास कोई तलवार नहीं है। गुरु जी ने बचन किया तुमने लोभ वश झूठ बोला है। यह तलवार जब तक रहेगी तब तक तेरी कुल में चलती ही रहेगी। आपिस में मार-काट रहेगी। तो सुना है कि गुरु जी का यह वचन आज तक सत्य सिद्ध हो रहा है।

* हसन खाँ को काबल का सूबा बनाने का वचन

दूसरे दिन जब दीवान की समाप्ति हो गई, तो हसन खाँ ने प्रार्थना की कि महाराज ! मुझे क्या हुक्म है? गुरु जी ने कहा कि तुम अब ललाबेग की जगह काबल के सूबेदार का पद सम्भालो। इस समय तुम अपने साथ युद्ध में से बचे हुए शाही फौज के

* हसन खाँ को ललाबेग ने गुरु जी की जंगी तैयारी का भेद लेने के लिए भेजा था, परन्तु जब सिक्खों ने पकड़ कर उसको गुरु जी के पास पेश किया, तो उसने सच्च बता दिया कि मुझे ललाबेग ने सूह लेने के लिए भेजा है। उस के सच कहने से गुरु जी प्रसन्न हो गए और वचन किया कि ललाबेग को युद्ध में मार कर तुझे काबल का राज्य देंगे।

www.9009.co.in

सैनिक और घोड़े ले कर बादशाह के पास चले जाओ। वह तुझसे युद्ध की सारी वार्ता को सुन कर प्रसन्न हो जायेगा और तुमको काबल का सूबा नियुक्त कर देगा।

गुरु जी का वचन मान कर हसन खाँ शाही सेना के कुछ जख्मी और कुछ और थके मांदे आदमी ले कर लाहौर पहुँच गया और बादशाह को बताया कि ललाबेग ने बिना सोचे समझे ही थकी मांदी फौज के साथ गुरु जी पर हमला कर दिया था। मैंने उसको बहुत समझाया और सेनापतियों ने भी कहा कि इस हालत में भूखे प्यासे जवानों के द्वारा युद्ध नहीं हो सकेगा, परन्तु उसने किसी की एक न मानी और आधी रात के समय ही आक्रमण कर दिया। उस समय इतनी सर्दी थी कि हमने पहले कभी नहीं देखी। हमारे सिपाहियों के हाथों में हथियार गिर गिर जाते थे। उधर गुरु जी के सिक्ख अंगीठे जला कर अग्नि ताप रहे थे, वह एक दम टूट कर हमारे ऊपर पड़ गए और उन्हों ने हमारे बहुत से जवान और घोड़े मार दिए। दिन चढ़ने तक हमारे तीसरे हिस्से के जवान बिन मारे ही शीत के साथ मर गए। तीन दिन इस तरह ही युद्ध होता रहा, जिस में गुरु जी के केवल बारह सौ जवान मरे, और शाही सेना के ललाबेग के नीति हीन होने के कारण पैंतीस हज़ार में से दो तिहाई मारे गए और कुछ घायल और नकारा हो गए। केवल एक सौ सवार ही सेना में सही सलामत बचा कर मैं अपने साथ आया हूँ।

हसन खाँ से सारी बात सुन कर बादशाह ने हसन खाँ को नीति निपुण जान कर अपने वज़ीरों को कहा कि यह ललाबेग की जगह काबल का सूबा बनाने योग्य है। वज़ीरों की सलाह ले कर बादशाह ने हसन खाँ को सिरोपा दे कर काबल का सूबा नियुक्त करके भेज दिया। इस तरह गुरु जी के वचन पूरे हुए।

जोध राए के पास कांगड़ गाँव

नथाने युद्ध स्थान की ढाब के पास गुरु जी ने आठ दिन डेरा रख कर अपने घायल योद्धाओं की मरहम पट्टी और शहीदों की अन्तयेष्ठि की। इस के उपरान्त जोध राए और और सलेम शाह की प्रार्थना को स्वीकार करके आप जी कांगड़ आ गए। जिस ढाब पर डेरा करके गुरु जी ने युद्ध किया था, उस का नाम 'गुरु सर' रख कर वचन किया कि यह एक पवित्र तीर्थ है, इस में जो भी स्त्री, पुरुष श्रद्धा से स्नान करेगा उस की मनोकामना पूरी होगी।

कालू नाथ का प्रसंग

नथाने गाँव के पास ही एक कालू नाथ रहता था, जो अपने डेरे में गाय रखता था। एक दिन जब उस ने सुना कि गुरु जी ढाब पर उतरे हुए हैं, तो वह अपनी गाय का दूध दो घड़े भर कर लाया। एक घड़ा उस ने अपने सिर पर उठा लिया और एक अपने साथ एक बच्चे के सिर पर रख कर गुरु जी के सम्मुख हाज़िर हुआ। गुरु जी ने उसकी श्रद्धा व प्रेम पर खुश हो कर कहा कि तुम ने नाम की कमाई की है, लोग तुझे मानते हैं। इस लिए आज से तेरा नाम 'कालू' नहीं कालू नाथ हुआ है। कालू ने कहा नहीं महाराज ! मैं यह बड़पन के योग्य नहीं हूँ, मुझे अपना दास ही समझे, मैं नाथ नहीं हूँ। गुरु जी ने और बहुत प्रसन्न हो कर वचन किया कि तुम जगत् में नाथ ही प्रसिद्ध होगे।

कालू नाथ के साथ जो बच्चा दूध उठा कर आया था, उसे गुरु जी ने प्रसन्नता के साथ देख कर घड़े में से एक चुल्लू भर दूध दिया, जिस को पी कर लड़के के कपाट खुल गए, उस को दिव्य दृष्टि प्राप्त हो गई। जब इस बात का कालू नाथ को पता चला, तो उसके सिर पर हाथ रख कर उस ने उस की सारी शक्ति खींच ली।

जब इस बात का गुरु जी को पता चला, तो आप ने नाथ के द्वारा उस की गड़वी माँग ली कि यह हमको दे दो। परन्तु नाथ ने कहा महाराज ! यह गड़वी मुझे बहुत प्यारी है। मैं इसको सदा ही अपने पास रखना चाहता हूँ। गुरु जी ने कहा हम ने तुझे नाथों का नाथ बनाया था, परन्तु तुझे बहुत ममता हो गई है, जिस लिए तुम वह नहीं रहे। तुम शक्तिहीन ही रहोगे। गुरु जी के इन वचनों करके कालू नाथ एक साधारण व्यक्ति ही रह गया। कालू नाथ का स्थान नथाने प्रसिद्ध है।

एक अजगर साँप का उद्धार

कांगड़ गाँव से जोधपुर के साथ एक दिन गुरु जी अपने योद्धे लेकर जब शिकार खेलने गए, तो रास्ते में गुरु जी घोड़े से उतर कर एक वृक्ष के नीचे खड़े हो गए। उस समय झाड़ियों में एक अजगर सर्प निकल कर गुरु जी की तरफ आया, उसे देख कर उसको मारने के लिए सिक्ख भागे। गुरु जी ने कहा—इस को मारों नहीं हमारे पास आने दो। जब सिक्ख आगे से हट गए तो अजगर रपटता हुआ गुरु जी के पास पहुँच गया। गुरु जी ने अजगर के सिर पर अपने दाएँ पाँव का अंगूठा टिका दिया। गुरु जी के ऐसा करने से अजगर का सारा शरीर फूट पड़ा और वह तत्काल ही मर गया। उस के फूटे हुए शरीर में से छोटे-छोटे बहुत से कीड़े उबल-उबल कर निकलने लगे। गुरु जी ने कहा कि देखो भाई सिक्खो ! पहले जन्म में यह अजगर एक बड़ा महन्त था। लोग इस की बहुत पूजा मान्यता करते थे और बहुत पदार्थ इस की भेंट करते थे। यह जितने इस के शरीर में आप कीड़े देखते हो, यह सब इस के चेले थे। यह इन से धन पदार्थ लेकर खाता रहता था, परन्तु इन की भलाई के लिए कोई भजन स्मरण नहीं करता था

और न ही इन चेलों के जीवन के सुधार के लिए कोई नेक उपदेश देता था। अपने खाने-पीने और अहंकार में ही जीवन-व्यतीत करता था। जब यह मरा, तो इस को यह योनि मिली और इस के वह चेले जिन को यह ठग-ठग कर खाता था और जिन्होंने कोई भजन स्मरण नहीं किया वे कीड़े बन कर इन को चिपट कर इसे काट-काट कर खा रहे हैं। संसार में न तो इस का अपना उद्धार हुआ और न ही इस ने अपने शिष्यों का उद्धार ही किया।

अतः जो पुरुष अपने प्रभुत्व के लिए बहुत शिष्य बना कर पूजा का धन-धान्य खाते हैं उन की यह गति होती है। अब हमारी शरण में आने के कारण इसकी यह गति हो गई है। पूजा का धन-धान्य खाने से पुरुष को अनेक रोग लग जाते हैं। इसी लिए अपनी नेक कमाई करके खाना सदा सुखदाई होता है।

जोधराए और सलेमशाह को वरदान तथा कांगड़ से कूच

जब कुछ दिन निवास करके गुरु जी कांगड़ से तैयार हुए तो जोधराए की स्त्री ने हाथ जोड़ कर नम्रतासहित गुरु जी से पूछा कि महाराज ! आप फिर हमें कब दर्शन देंगे? गुरु जी ने तब वचन किया, हम जब दशम चोला धारण करेंगे तब आपके घर में आएँगे और आपकी संतान को निहाल करेंगे। तुम्हारे वंश में बहत सुख रहेगा और आप राज्य सुख भोगोगे।

दूसरे दिन गुरु जी ने कांगड़ से तैयारी करके नगारा बजवा दिया। भाई जोध राए, सलेम शाह, भाई साधु रूपा और नगर के अन्य लोगों ने गुरु जी को बड़े आदरसहित विदा किया।

गुरु जी अपने सिक्ख सैनिकों सहित यहाँ से चल कर पहिगाँव गुजरवाल जिला लुधियाना पहुँचे। गाँव के चौधरी ने आप जी की

www.9009.co.in

बड़ी सेवा की। परन्तु जब भाई बिधी चन्द ने उस के द्वारा गुरु जी के लिए बाज माँगा, तो उसने अपना बाज देने से इन्कार कर दिया। बाद में जब बाज बिमार हो कर मरने को हुआ, तो वे बाज को गुरु जी के पास ले आए और कहा महाराज ! आप समर्थ हो मेरी भूल बख्शो और बाज को सम्भाल लो। अब यह आप ही का है। गुरु जी ने हँस कर बाज पर हाथ फेर कर कहा कितुम ने डोरी क्यों खाई है? जिस तरह खाई है उसी तरह ही इस को बाहर निकाल दो।

गुरु जी के वचन के साथ बाज ने डोरी तुरंत ही उगल दी और अपने पंख झाड़ कर सावधान हो कर बैठ गया। यह अद्‌भुत चमत्कार देख कर चौधरी ने बड़ी श्रद्धा और प्रेम के साथ गुरु जी की सिक्खी धारण कर ली और उनकी बहुत सेवा की।

करतारपुर निवास

दूसरे दिन गुरु जी ने गुजरवाल से चल कर बेड़ियों के द्वारा सतलुज नदी को पार करके सब सेना को पार किया और मलाह को पाँच सौ रुपये ईनाम दिये। दूसरे दिन जब करतारपुर के नज़दीक पहुँचे, तो बाबा गुरदित्ता जी ने प्रमुख सिक्खों के साथ आगे हो कर गाँव से बाहर आप जी का स्वागत किया। युद्ध में गुरु जी की हुई जीत का हाल सुन कर सब ने खुशी मनाई और कढ़ाह प्रसाद की देग बाँटी।

दीवाली का मेला

करतारपुर निवास करते हुए गुरु जी को छः महीने बीत गए। दीपमाला का मेला आ गया। दूर-दूर से बहुत सिक्ख संगत गुरु जी के दर्शन करने आई। बहुत रौनक लगी। गुरु जी के दो समय दीवान सजते व अटूट लंगर बँटता। ढाके, बंगाल और दक्षिण,

पश्चिम की सिक्ख संगत आप जी के लिए बहुत कीमती और बहुमूल्य वस्तुएँ घोड़े, शस्त्र और वस्त्र आदि ले कर हाज़िर होती। जो सिक्ख दूर रास्ता होने के कारण गुरु जी के पास पहुँच न सकते, वे अपने घर ही कढ़ाह प्रसाद की देग करके गुरु जी के आगे अपनी मनोकामना पूरी होने की अरदास करके बाँट देते।

वैसाखी का मेला

तद्परान्त वैसाखी का मेला नज़दीक आ गया। चारों ओर से संगत गुरु जी के दर्शन करने आई और बहुत मूल्यवान वस्तुएँ लाकर भेंट कीं। वैसाख महीने की सक्रान्ति वाले दिन करतारपुर के निकट संगत ने तम्बुओं, कनातों में डेरे लगा लिए। संगत को खुले दर्शन दीदार देने के लिए गुरु जी एक बड़े खुले मैदान में तम्बू कनातों में सुशोभित हो गए। संगत ने हाज़िर होकर नकदी, वस्त्र, अनाज आदि भेंट करके माथा टेका और मेवड़ा अरदास करता कि सिक्ख की मनोकामना पूरी हो।

इस समय बदखशां का एक धनाढ्य सौदागर आया, उस ने अपनी दसवंध की धनराशि में से गुरु जी के लिए एक बढ़िया तेज़ दौड़ाक घोड़ा, एक सुन्दर कीमती पौशाक, सफेद बाज, एक दोधारा फौलादी खंडा, जरी से जड़ी हुई एक कलगी और एक बहुत सुन्दर ढाल, दूसरे देशों से खरीद कर गुरु जी को अर्पण की। गुरु जी ने खुश होकर उसे पूछा कि तुम किस देश से आए हो और तुम्हारी कौन सी कामना है? सौदागर ने बताया कि वह बदखशां देश का रहने वाला है और देश-विदेश से चीज़ों का व्यापार करता है। इस व्यापार के लाभ की कमाई का दसवंध निकाल कर वह अलग इकट्ठा करता रहता है और जब कोई काम उसका अटक जाता है, तो वह उस की सफलता के लिए गुरु के आगे कोई मनौत मान लेता था। यह सारा धन इकट्ठा कर के वह

आप जी के लिए यह चीजें देश-विदेश से खरीद कर लाया है। गुरु जी ने सौदागर की सारी बात सुन कर बहुत खुशी प्रकट करके उसकी मनोकामना पूर्ण की।

पैंदे खाँ को वरदान

जब सौदागर गुरु जी की प्रसन्नता और ख़ुशियाँ ले कर चला गया, तो गुरु जी ने सफेद बाज श्री गुरदित्ता जी को दे दिया और घोड़ा खड्ग और पौशाक पैंदे खाँ को वरदान देकर कहा जब भी तुमने हमारे पास आना हो, तो यह खड्ग और पौशाक पहन कर इस घोड़े पर सवार हो कर आया करो।

पैंदे खाँ इन चीज़ों को ले कर खुश हुआ और इस ख़ुशी के साथ ही उसको अहंकार हो गया कि गुरु जी ने मेरी बहादुरी करके मुझे यह चीज़ें वरदान में दी हैं। मेरे बराबर और किसी को नहीं समझते।

पैंदे खाँ के दामाद ने गुरु जी का बाज पकड़ लेना

गुरु जी के द्वारा दी गई चीजों को लेकर जब पैंदे खाँ घर पहुँचा, तो उसके दामाद असमान खाँ ने यह तीनों चीजें घोड़ा, खड्ग और पौशाक ज़बरदस्ती सम्भाल लीं। बाद में एक दिन श्री गुरदित्ता जी सफेद बाज लेकर शिकार खेलने गये और छोहे मीर गाँव के पास एक सुरखाब के पीछे उसको छोड़ा, बाज भूल कर असमान खाँ की तरफ चला गया। वह इसे पकड़ कर घर ले आया। पैंदे खाँ ने उसको कहा कि यह श्री गुरदित्ता जी का बाज हमको नहीं रखना चाहिए, मैं इसको गुरु जी के हवाले कर आऊँगा, परन्तु असमान खाँ ने कहा, खाँ जी ! तुम चुप करके बैठ जाओ, हम गुरु जी को बाज नहीं देंगे। अगर गुरु हमको बहुत ही तंग करेगा, तो मैं यह बाज शाहजहाँ को भेंट कर दूँगा।

पैंदे खाँ की बेईमानी

उधर गुरु जी के मीर शिकारी भी बाज ढूँढते हुए इधर आ गए और उन्होंने पैंदे खाँ को पूछा कि गुरु जी का सफेद बाज इधर तो नहीं आया ? पैंदे खाँ ने अपनी स्त्री और दामाद के डर से नहीं कह दिया कि इधर गुरु जी का कोई बाज नहीं आया।

मीर शिकारियों ने वापिस आ कर गुरु जी को बताया कि हमको बाज की ख़बर पैंदे खाँ के घर मिली है, परन्तु वह इन्कार कर गया कि मेरे घर गुरु जी का बाज नहीं है। गुरु जी ने उस समय ही अपना एक सेवक भेज कर पैंदे खाँ को बुला कर पूछा कि हमारे शिकारी कहते हैं कि हमारा बाज उड़ कर तेरे गाँव चला गया है। पैंदे खाँ ने कहा तुम्हारे आदमियों के सामने ही मैं सारे गाँव में ढोल पिटवा कर पूछा था, परन्तु किसी के घर भी बाज नहीं मिला और मैं क्या कर सकता था? मुझे आपके चरणों की सौगन्ध है, मैं झूठ नहीं बोलता।

पैंदे खाँ के घर से गुरु जी ने बाज आदि चीज़ें मँगवा कर उसको अपने द्वारा निकाल देना

जब पैंदे खाँ झूठी सौगन्ध भी खा गया और कुछ तुनक के साथ भी गुरु जी के आगे बोला, तो गुरु जी ने भाई बिधीचंद को पीछे हटा कर कहा कि इस को हम यहाँ ही रोके रखते हैं। तुम अभी दुपहर के समय ही इस के घर जा कर बाज ले आओ। भाई बिधी चंद शीघ्र ही चला गया। पैंदे खाँ के घर छोहे मीर पहुँच गया। असमान खाँ उस समय अपने चौबारे में सोया हुआ था और बाज उस के पास एक अड्डे पर बँधा हुआ था। गुरु जी की बख्शी पौशाक और खड्ग एक खूँटी पर लटक रही थी। भाई बिधी चंद ने झटपट ही बाज सहित सब वस्तुओं को काबू कर लिया और

लाकर गुरु जी के पास हाज़िर कर दीं। गुरु जी ने पैंदे खाँ को वस्तुएँ दिखा कर पूछा कि अब यह बाज और पौशाक आदि कहाँ से आए हैं? तुम नमक हराम हो। तुझे धिक्कार है। अब तुम हमारे पास रहने के योग्य नहीं रहे। तुम यहाँ से चले जाओ।

पैंदे खाँ ने सूबा जालन्धर के पास जाना

गुरु जी के दरबार से अनादर करवा कर पैंदे खाँ जब घर आया, तो उस के दामाद असमान खाँ ने उस को बताया कि कोई चोर हमारे घर से बाज, पौशाक और तलवार चोरी करके ले गया है। पैंदे खाँ ने कहा, यह चीज़ें भाई बिधी चंद गुरु जी के पास ले गया है। जिस लिए गुरु जी ने मुझे अपमानित करके अपने दरबार में से निकाल दिया है। इस से हमारी इज्ज़त और रोज़ी दोनों गई हैं। इस के पश्चात् पैंदे खाँ ने अपने गाँव के सभी पठान भाइयों को बुला कर कहा कि गुरु जी ने मुझ पर झूठा लांछन लगा कर अपने दरबार में से निकाल दिया है। तुम सारे मेरे साथ मिल कर जालन्धर के सूबे कुतब खाँ के पास चलो और वहाँ सारी बात बता कर उस से सहायता ले कर गुरु जी का घर बाहर लूट लेंगे और गुरु को पकड़ कर बादशाह के हवाले करके बहुत बड़ा ईनाम लेंगे।

पैंदे खाँ की यह लूट की और बादशाह के द्वारा बहुत बड़ा ईनाम लेने की बात सुन कर सारे पठान पैंदे खाँ के साथ तैयार हो कर जालन्धर पहुँच गए। सूबे को मिल कर पैंदे खाँ ने कहा श्री गुरु हरिगोबिंद ने अपने पास बहुत से लुटेरे रखे हुए हैं। पहले उस ने बादशाह का बाज चुराया, फिर काजी की लड़की निकाल कर ले गया। फिर बादशाह के दो बहुमूल्य घोड़े चुराए और बागी हो कर शाही सेना से लड़ कर बहुत नुकसान किया। इन सब बातों को ध्यान में रख कर मैं इस को शाही अपराधी और बागी समझ

कर छोड़ आया हूँ। अगर आप मेरी मदद करो, तो इस को पकड़ कर बादशाह से मुँह माँगा ईनाम मिल जाएगा। मैं इन का बहुत नज़दीकी हूँ। मेरे सामने यह कुछ नहीं कर सकते।

पैंदे खाँ की बात सुन कर कुतब खाँ ने कहा, गुरु ने तुझ पर बहुत उपकार किए हैं, तुम्हारा पालन पोषण किया है, मुँह माँगा खाने पीने और पहनने को दिया। अब तुम उन को पकड़ कर बादशाह से ईनाम लेना चाहते हो। यह तुम्हारी नमक हरामी और दोज़ख में जाने की निशानी है। पैंदे खाँ ने कहा कि आप ने मुझे ही झूठा साबित करके मेरी आशाओं पर पानी फेर दिया है। अब मैं सीधा लाहौर जा कर सारी बात बादशाह को बताऊँगा। कुतब खाँ ने कहा कि मैं भी तेरे पीछे लाहौर जा कर बादशाह को सारी बात बताऊँगा।

पैंदे खाँ ने बादशाह से मिल कर सेना चढ़ानी

लाहौर आ कर पैंदे खाँ ने जब सारी बात गुरु जी के विरुद्ध बादशाह को भड़काने वाली बताई, तो कुतब खाँ ने उस की बड़ी ज़ोर से प्रौढ़ता की। इन के भुलावे में आ कर शाहजहाँ ने पेशावर के सूबे काले खाँ पठान को, जो मुखलिस खाँ का भाई था, पच्चीस हज़ार जवानों के साथ गुरु जी पर चढ़ाई करने का हुक्म दे दिया। इस के साथ जालन्धर के सूबे कुतब खाँ को भी मदद करने के लिए हिदायत कर दी।

काले खाँ सूबा पेशावर मित्र अनवर खाँ खोजा, कुतब खां सूबा जालन्धर, पैंदे खाँ और उसका दामाद असमान खाँ, यह पाँचों ही प्रमुख योद्धे पच्चास हज़ार शाही दल ले कर लाहौर से करतारपुर को नगारों ओर वाद्ययंत्रों के साथ अली-अली करते हुए गुरु जी को जिंदा पकड़ने या जान से मार देने के लिए चल पड़े।

अमृतसर से चल कर आप को व्यास दरिया पार करने में एक दिन लग गया। दरिया पार करके करतापुर से कुछ नज़दीक ही डेरा करके कुतब खाँ ने कहा पहले अनवर खाँ को भेदपूर्वक स्थिति में भेज कर पता कर लो कि गुरु जी के पास कितनी सेना है और युद्ध के लिए उनकी कितनी तैयारी है।

गुरु जी की तस्वीर उतारनी

एक दिन गुरु जी सफेद घोड़े पर सवार हो कर सफेद बाज पकड़ कर शिकार को चले। आप जी के सिर पर रेश्मी दसतार और हीरे जड़ित कलगी शोभा दे रही थी। जब आप जी गाँव से बाहर निकले, तो आगे आप जी को दो पिता-पुत्र मुसवरों ने मिल कर प्रार्थना की कि हम आप जी के इस रूप में ही आप की तस्वीर बनाना चाहते हैं। गुरु जी ने आज्ञा दे दी, तो उन्होंने गुरु जी के शरीर के सभी निशान ले लिए और घर आकर तस्वीर को पूरा रूप देकर तैयार करके भाई बिधी चंद को दे दीं। गुरु जी ने तस्वीर देख कर दोनों पिता-पुत्रों पर प्रसन्न हो कर बहुत ईनाम दिया। यह तस्वीर भाई बिधी चंद के डेरे सुर सिंह गाँव में सुशोभित है।

अनवर खाँ ने भेद लेने आना

गुरु जी को शाही लश्कर आने की खबर मिली

संध्या के समय जब गुरु जी शिकार से वापिस आए, तो एक सिक्ख ने आकर कहा कि आप जी पर शाही सेना ने चढ़ाई कर दी है और पैंदे खाँ भी उनके साथ ही है। गुरु जी ने कहा बाबा नानक भली करेंगे, जो गुरु घर पर चढ़ कर आएगा, वह नीचे ही गिर जायेगा।

www.9009.co.in

कुतब खाँ का भेजा हुआ अनवर खाँ गुरु जी का भेद लेने के लिए आया। वह दो मोहरे भेंट करने के लिए लाया। गुरु जी के पास आकर उसने एक मोहर छुपा ली और एक गुरु जी को भेंट कर दी। अनवर खाँ ने मन में सोचा कि अगर गुरु जी अन्तर्यामी होंगे, तो दूसरी मोहर भी माँग लेंगे। यह विचार करके जब उस ने गुरु जी को एक मोहर भेंट की, तो गुरु जी ने कहा, अनवर खाँ ! तुम दूसरी मोहर जो तुमने हमारी परीक्षार्थ कर रख ली थी, वह तेरे लिए ठीक नहीं है। अनवर खाँ ने दूसरी मोहर भी गुरु जी को भेंट करके क्षमा माँगी और एक तरफ हो कर बैठ गया।

कुछ समय के बाद गुरु जी के द्वार से जा कर अनवर खाँ ने काले खाँ को बताया कि गुरु जी को आपकी चढ़ाई का कोई पता नहीं है। उनके युद्ध की तैयारी भी कोई नहीं है। तुम रात को आक्रमण करके करतारपुर की ईंट से ईंट बजा कर गुरु जी को जीवित पकड़ लो। बाद में सब ने परामर्श दिया कि पैंदे खाँ को आगे लगा कर क्योंकि यह हर प्रकार से गुरु जी का भेदी है। पिछली रात मुँह अन्धेरे ही आक्रमण कर दो।

धीरमल ने पैदे खाँ को चिट्ठी लिखनी

इस समय ही पैदे खाँ को बाबा धीरमल के द्वारा एक आदमी के हाथ चिट्ठी आ गई, उस में लिखा था कि पैदे खाँ मैं तेरे पक्ष में हूँ, तुम्हारा जो अपमान मेरे बाबे गुरु ने किया है। मैं वह सहन नहीं कर सकता। तुम जल्दी आकर बातशाह के साथ मेरा मेल करवा दो। मैं सदा बादशाह हज़रत की भलाई चाहता हूँ। पैंदे खाँ के द्वारा यह चिट्ठी सुन कर काले खाँ ने कहा कि इसे लिखो कि जैसे हमारी जीत हो, हमें वह बात बताए और गुरु का पूरा भेद देता रहे।

काले खाँ ने आक्रमण की तैयारी करनी

जब आधी रात ढल गई, तो काले खाँ ने अपने सेनापतियों को करतारपुर पर हल्ला करने का हुक्म दे दिया। इस समय पच्चास हज़ार फौज काले खाँ की, दो हज़ार अनवर खाँ की, बारह हज़ार दुआबे से कुत्तब खाँ ने इकट्ठी की। सैंकड़ों लुटेरे आस-पास के गाँवों से आ मिले। शाही लश्कर मारो-मार करता हुआ करतारपुर पर आ चढ़ा। पैंदे खाँ ने काले खाँ को कहा कि मैं आगे जा कर गुरु के महलों के आगे खड़ा हो जाता हूँ। जब गुरु जी शोर सुन कर बाहर निकलेंगे, तो मैं उनको बाहों में जकड़ कर उठा कर आपके पास ले आऊँगा।

गुरु जी की तैयारी

जब अनवर खाँ गुरु दरबार में से उठ कर चला गया, तो आप जी ने योद्धाओं को सावधान कर के गोली सिक्का और शस्त्र आदि बाँट दिए और शहर की नाकाबंदी के लिए सिक्ख योद्धाओं को खड़ा कर दिया। घोड़े पर चढ़े सिक्ख योद्धे शहर से कोस भर आगे हो कर चक्कर लगाने लगे। जब शाही सेना आती हुई दिखाई दी, तो सब योद्धे टकराव के लिए तैयार हो गए।

गुरु जी ने भाई लखू मेहर चन्द और अमीआ को पाँच सौ शूरवीर दे कर दुश्मन को रोकने के लिए भेज दिया । नौ सौ शूरवीर चारों ओर नियत कर के बाकी अठारह सौ मलिक जाति के पास रहने दिए।

दोनों दलों का टकराव

काले खाँ ने युद्ध का बिगल बजा कर अपने लश्कर को हल्ले का हुक्म दे दिया जिस से एकदम गोलियाँ की बुछाड़ वर्षा की तरह

होने लगी, गुरु जी के योद्धाओं ने गोलियाँ और तीरों की वर्षा कर दी, दोनों ओर के जखमियों के खून से धरती लाल हो गई। शूरवीर धरती पर मछली की तरह तड़पने लगे। बाबा गुरदित्ता जी ने भी बहुत तीरों की वर्षा करके अनेक शाही सैनिकों को ज़मीन पर गिरा दिया।

भाई लखू और उसके साथियों ने जब कुछ देर मुकाबला किया तो काले खाँ ने अपने सैनिकों को ललकार कर कहा, हिम्मत से आगे बढ़ो और शहर को लूट कर कब्जा कर लो। परन्तु सिक्ख शूरवीरों ने उनके आगे ऐसी बुछाड़ की कि किसी को भी एक कदम आगे न बढ़ने दिया।

आगे इतना ज़बरदस्त टाकरा होते देख कर काले खाँ ने अपने साथियों को कहा, आगे कोई बढ़ी फौज लगती है जो इतनी देर तक मुकाबला कर रही है। अपने जख्मी और मरे हुए सैनिकों के ढेर लगे हुए देख कर काले खाँ बहुत हैरान हुआ और गुस्से से अपने सैनापतियाँ को कहा कि एक बार मिल कर हल्ला बोल दो। एक ओर अनवर खाँ, दूसरी ओर कुतब खाँ और तीसरी ओर मैं आप हल्ला बालूँगा। पैंदे खाँ पहाडी़ दिशा की ओर से लड़ेगा।

यह योजना बना बर चारों ओर से ही शाही लश्कर मारो-मार करता हुआ सिक्खों पर टूट पड़ा। इनको आगे से रोकने के लिए एक ओर मलिक जाति, दूसरी ओर मेहर चंद और अमीयाँ चंद, तीसरी ओर भाई बिधी चंद शत्रुओं के सामने हो गए। बड़ा भयानक युद्ध हुआ जिस में अनेक शूरवीर धरती पर गिर पड़े, धरती खून से लाल हो गई।

ऐसा भयानक युद्ध होता देख कर गूरु जी तैयार होकर आप युद्ध के मैदान में आ गए और तीरों की वर्षा करके बहुत से दुश्मनों को धरती पर फेंक दिया।

www.9009.co.in

इस घमसान में भाई बिधी चंद के एक तीर से अनवर खाँ घोड़े सहित नीचे गिर कर मर गया। अपने सरदार की मृत्यु देख कर उसके साथी मैदान छोड़ कर भाग गए। जब काले खाँ गुस्सा खा कर आगे बढ़ा, तो उसको भाई लखू ने तीर मार कर जख्मी कर दिया। काले खाँ के साथियों ने भाई लखू को घेरे में ले कर तलवारों से वार करके शहीद कर दिया।

भाई लखू की शहीदी देख कर गुरु जी और सिरी गुरदित्ता जी ने तीरों की बुछाड़ करके काले खाँ की तोबा-तोबा करा दी। दूसरी ओर सिरी सूरजमल जी और तेग बहादर जी ने भी सिक्ख योद्धाओं से आगे होकर शत्रु दल का तलवारों के साथ मुकाबला किया।

अपने सैनिकों का बहुत नुकसान होता देख कर कुतब खाँ ने अपनी सेना को पीछे कर लिया। काले खाँ ने पैंदे खाँ को कहा कि गुरु ने युद्ध में आप आ कर हमारे अनेक सैनिक मार दिये हैं और जख्मी कर दिये हैं, तू अपनी बहादरी किस समय दिखाएगा, दो पहर में हमारी आधी फौज मारी गई है अथवा जख्मी हो गई है। ऐसे ही दो पहर ओर बीत गए तो हमारा बहुत ही नुकसान हो जाएगा।

पैंदे खाँ, असमान खाँ, कुतब खाँ, काले खाँ की मृत्यु और गुरु जी की जीत

काले खाँ की गर्ज सुन कर पैंदे खाँ गुरु जी को अकेला देख कर उन के ऊपर गुस्से से टूट पड़ा और तलवार से वार कर दिया। गुरु जी ने जब इस वार को रोक लिया तो पैंदे खाँ ने दूसरा वार किया, परन्तु उसकी तलवार गुरु जी की ढाल पर लग कर टुकड़े-टुकड़े हो गई। फिर पैंदे खाँ ने घोड़े से उतर कर गुरु जी

के घोड़े को पकड़ लिया। इस समय गुरु जी ने उसके सिर पर ऐसे ज़ोर से ढाल मारी कि पैंदे खाँ चक्कर खा कर ज़मीन पर गिर गया। जब वह उठ कर गुरु जी की तरफ आया तो गुरु जी ने तलवार के एक भरपूर वार से उसको धरती पर गिरा दिया। पैंदे खाँ अपने अन्तिम समय यह बात कहता हुआ गुरु जी मेरे गुनाह बख्श दो और इस दुनिया को छोड़ कर चला गया।

पैंदे खाँ का दामाद असमान खाँ जब अपने ससुर की सहायता के लिए आगे आया, तो उसको बाबा गुरदित्ता जी ने आगे से रोक लिया और युद्ध करके पैंदे खाँ के साथ ही भगा दिया।

इन दोनों की जो युद्ध के मूल कारण थे, मौत देख कर काले खाँ और कुतब खाँ ने कहा कि अब हमें भी लड़ कर मर जाना चाहिए, हिम्मत करो, आगे जो खुदा करेगा, वही होगा। मृत्यु से डर कर हमारा जीना मौत से भी बुरा है।

ऐसे सलाह करके इन दोनों ने अपनी सेना के साथ गुरु जी के ऊपर हल्ला कर दिया। हल्ले को आगे रोकने के लिए बिधी चंद अपने साथियों से आगे हुआ, आमने-सामने शस्त्राँ के वार होने लगे, घमसान मच गया, मुर्दों के ऊपर मुर्दे गिर पड़े। कुतब खाँ गुस्से से गुरु जी के ऊपर तलवार का वार करने के लिए झपटा और दो तीन वार कर दिए। उसके वार को रोक कर गुरु जी ने एक ऐसा तलवार का भरपूर वार किया कि कुतब खाँ का सिर काट कर धरती पर गिरा दिया।

सूबा कुतब खाँ की मृत्यु देख कर काले खाँ ने गुस्से से गोलियाँ की वर्षा कर दी। आगे सिक्ख शूरवीरों ने मुकाबला किया। जब काले खाँ के आदमी एक पैर भी आगे न बढ़ सके तो काले खाँ घोड़ा छेड़ कर आप ही गुरु जी के सामने चला गया और गुरु जी ऊपर तीरों के वार करने लगा। एक तीर गुरु जी के माथे

पर लगा, जिस से आप जी के माथे से खून निकल आया। उधर गुरु जी के एक तीर से काले खाँ का जब घोड़ा गिर पड़ा तो काले खाँ ने खड़े हो कर गुरु जी को ललकारा कि यदि शूरवीर हो तो घोड़े से उतर कर युद्ध करो। गुरु जी घोड़े से उतर कर खड़े हो गए। काले खाँ ने गुरु जी के ऊपर तलवार के दो तीन वार किये। गुरु जी ने उसके वार को रोक कर एक ऐसा तलवार का वार किया कि काले खाँ के दो टुकडे हो कर धरती पर गिर गए। यह देख कर सिक्खों ने जैकारों की गूँज दी। शाही सेना मैदान छोड़ कर भाग गई। गुरु जी की जीत हुई और आप जी ने अपनी तलवार म्यान में डाल ली।

इस युद्ध में सात सौ सिक्ख शूरवीर शहीद हुए और अनेक शाही सेना के मुर्दों से बहुत बदबू फैल गई। कौअए, कुत्ते और गीदें सैंकडों की गिणती में मुर्दों का माँस खाने लगे। गुरु जी ने सिक्ख शहीदों के संसकार करा दिए और शाही सेना के मुर्दों को गढ़े में गिरा कर ऊपर से मिट्टी डाल दी।

गुरु जी ने कीरतपुर चले जाना

करतारपुर के आस-पास घोड़ो और सैनिकों की हज़ारों लाशों से जब बहुत बदबू फैल गई तो गुरु जी ने भाई बिधी चंद को कहा कि यहाँ बहुत बदबु फैल गई है, इस लिए तुम सब को यहाँ से जाने की तैयारी कराओ। आज्ञा अनुसार भाई बिधी चंद ने गुरु जी के महलों का सारा सामान गड्डों पर लाद कर और माता नानकी जी और मरवाही को परिवारसहित डोलियों और रथ्थों पर बैठा दिया। सिक्ख योद्धे और बाबक रबाबी आदि सब तैयार हो कर कई पैदल और कई घोड़ों, रथ्थों आदि पर सवार होकर चल पड़े। परन्तु धीरमल आनी माता सहित करतारपुर में ही रहे। और गुरु ग्रंथ

साहिब की बीड़ भी उसने अपने पास ही रख ली। रात के चौथे पहिर सारा संग कीरतपुर को चल पड़ा और दो घड़ी रहते सतलुज नदी से पार हो कर सूर्यास्त कीरतपुर पहुँच गए।

बुढण शाह के साथ मिलाप

दूसरे दिन गुरु जी साई बुढण शाह को मिलने गए। बुढण शाह समाधि में बैठा हुआ था। गुरु जी ने कहा, साई जी आँखे खोल कर देखो। बुढण शाह़ गुरु जी के दर्शन करके बहुत खुश हुआ और गुरु जी की महिमा करने लगा। तद्उपरान्त गुरु जी अपने डेरे आ गए और श्री गुरदित्ता जी बुढण शाह से ज्ञान गोष्ठि करने के लिए वहाँ पर बैठ गए।

बुढण शाह का प्रलोक गमन

बुढण शाह अपना अन्तिम समय अनुभव करके गुरु जी के दर्शन के लिए अराधना करने लगा। अंतर्यामी गुरु जी स्नान पानी करके बुढण शाह के पास पहुँच गए। बुढण शाह ने नमस्कार किया और कहा आप धन्य हैं, जिन्होंने अन्तिम समय दर्शन देकर मुझे कृतार्थ किया है। मेरा सौभाग्य है कि आप अन्तिम समय दर्शन दे रहे हैं।

तत्पश्चात् बुढण शाह गुरु जी को नमस्कार करके पृथ्वी पर आसन लगा कर लेट गया और इस पंच भूतक शरीर को त्याग कर परलोक गमन कर गया।

गुरु जी का दरबार

कीरतपुर में गुरु जी दीवान लगा कर सिक्ख संगत को नाम-दान का उपदेश और मनोकामना पूरी करके निहाल शरीर कभी-कभी जंगल में जा कर मृगों और पक्षियों

www.9009.co.in

करते। गुरु जी के दर्शन करने के लिए बहुत संगत काफी दूर-दूर से आती और मसंद भी बहुत धन लाकर भेंट करते। संगत के आने-जाने से गुरु दरबार में सदा ही मेला लगा रहता। कथा कीर्तन और गुरु दर्शन के साथ गुरु जी का बहुत भारी लंगर आठों पहर चलता रहता।

बाबा गुरदित्ता जी का गाए जीवित करना

एक दिन बाबा गुरदित्ता जी सुबह ही शिकार खेलने निकल पड़े। बाबा जी के एक शिकारी ने हरिण के भुलावे एक गाए को गोली मार कर मार दिया। गाए के मालिक पहाड़िए को जब पता चला, तो उस ने शिकारी को पकड़ कर कहा कि हम अपनी गाए ले कर ही इस को छोड़ेंगे। जब इस शोर का बाबा गुरदित्ता जी को पता चला, तो उन्होंने पहाड़िए को कहा कि इस ने गाए जानबूझ कर नहीं मारी। अचानक हरिण के भुलावे मर गई है। इस को छोड़ दो। मरी गाए जीवित नहीं हो सकती, परन्तु उस ने कहा आप गुरु जी के पुत्र कलावान हैं। आप इस गाए को जीवित करके अपने नौकर को छुड़वा लो। यह झगड़ा सुन कर बाबा जी ने विचार किया कि चाहे करामात दिखानी गुरु घर के विरुद्ध है, परन्तु इस समय हमारे नौकर का नाम किसी ने नहीं लेना। सब यही कहेंगे कि गुरु जी के पुत्र ने गाए को मार कर महा पाप किया है। इस से हमारा अपयश होगा। यह विचार करके बाबा जी ने नीम के वृक्ष की एक छड़ी पकड़ कर गाए को लगा कर कहा कि हे माता नींद त्याग कर पहले की तरह घास चारा खाओ। बाबा जी के इस वचन [illegible] उठ कर खड़ी हो गई और घास खाने लगी।

www.9009.co.in

तद्उपरान्त जब इस बात का गुरु जी को पता चला, तो आप जी ने श्री गुरदित्ता जी को कहा कि आप ने श्री अट्टल राए की तरह अयोग्य काम किया है। शाह बातशाहों सब ने मरना है, किस-किस को जीवित करोंगे। अगर ऐसे ही करना है, तो प्राण त्याग दो।

श्री गुरदित्ता जी का परलोक गमन

गुरु पिता जी के यह वचन सुन कर श्री गुरदित्ता जी ने कहा कि महाराज आप के हुक्म को मानना ही योग्य है। इस में ही हमारा भला है। तत्पश्चात् श्री गुरदित्ता जी ने गुरु पिता जी की तीन परिक्रमा करके उनके चरणों पर माथा टेका और चुप हो कर बाहर चले गए।

बाबा जी बुढण शाह के स्थान के नज़दीक पहाड़ी पर चले गए और अपने हाथ वाली नीम की छड़ी धरती पर गाढ़ कर आसन पर बैठ गए। अपनी वृत्ति (ध्यान) को एकाग्र करके बाबा जी योग अभ्यास के द्वारा अपने शरीर को त्याग कर गुरपुरी सचखंड जा बिराजे।

जब इस बात का गुरु जी को पता चला, तो आप जी सिक्ख सेवक के साथ पहाड़ी पर गए और देखा कि श्री गुरदित्ता जी शरीर त्याग गए हैं। आप ने सब को धैर्य दिया और चंदन की चिता तैयार करवा कर वही पर ही संस्कार कर दिया। नीम की छड़ी जो बाबा जी ने धरती में गाढ़ दी थी उस प्रथाए गुरु जी ने वचन किया कि यह बहुत बड़ा भारी नीम का वृक्ष होगा और जो कोई श्री गुरदित्ता जी के स्थान के दर्शन करेगा उसकी मनोकामना पूरी होगी। चैत्र सुदी १० संवत् १६९५ को श्री गुरदित्ता जी ने शरीर को त्याग दिया।

श्री हरि राए जी को दस्तार बंदी

बाबा गुरदित्ता जी की तेरहवें वाले दिन दस्तारबंदी के समय जब आप जी के बड़े सुपुत्र धीरमल जी करतारपुर से न आए, तो गुरु जी ने अपने सम्बन्धियों और भाई भाना आदि गुरसिक्खों से सलाह करके बाबा जी के छोटे सुपुत्र श्री हरि राए जी को हर प्रकार योग्य जान कर दस्तार बंदी करके गुरदित्ता जी का अधिकारी नियत कर दिया।

दीवाली का मेला

कीरतपुर गुरु जी के निवास के कारण बहुत सिक्ख सेवक आप जी के दर्शन करने आते। गुरु जी के दो समय दीवान सजते, कथा कीर्तन, उपदेश मानसिक भोजन और गुरु का अटूट लंगर बँटता। गुरु जी हरि राए को हर समय अपने पास ही रखते और उनके सिर पर पड़ने वाले दायित्व की तैयारी करवाते रहते थे।

दीवाली का मेला आ गया, जिसे संगत ने बड़ी धूमधाम से मनाया और यथायोग्य भेंट अर्पण करके गुरु जी की खुशीयाँ प्राप्त की।

जब दीवाली का मेला करके संगत चली गई, तो बाद में कुछ प्रमुख सिक्ख भाई जोधराए और बिधीचन्द आदि ही रह गये। गुरु जी ने सारा काम काज भाई बिधी चन्द जी को सौंप दिया, जिसे भाई बिधी चन्द ने बड़े प्रेम और श्रद्धा से पूरा किया।

श्री हरि राए जी का प्रण

एक दिन श्री हरिगोबिंद जी बाग की सैर करने अपने साथ श्री हरि राए जी को ले गए। श्री हरि राए जी गुरु जी के पीछे-पीछे जा रहे थे कि श्री हरि राए जी के जामे के साथ अटक कर कली का

फूल ज़मीन पर गिर गया। गुरु जी ने टूटा हुआ फूल देख कर कहा अगर जामा लम्बा पहनना हो, तो संभल कर चलना चाहिए। बे-प्रवाही करनी अच्छी नहीं होती। गुरु जी से यह बात सुन कर श्री हरि राए जी ने हाथ जोड़ कर क्षमा माँगी और आगे से जामा ऊँचा उठा कर रखने का प्रण कर लिया। यह प्रण आप जी ने अपनी आयु प्रयन्त निभाया।

बाबा आनन्द जी को कीरतपुर बुलाना

एक दिन गुरु जी ने भाई गढ़ीए को एक चिट्ठी बाबा आनन्द जी के नाम लिख कर गोईंदवाल भेजा कि आप जी कीरतपुर आ कर दर्शन दो।

गुरु जी की चिट्ठी पढ़ कर बाबा आनन्द जी पालकी में सवार हो कर भाई गढ़ीए और अपने सेवकों के साथ तैयार हो कर कीरतपुर को चल पड़े। बाबा जी जब कीरतपुर के नज़दीक पहुँचे, तो गुरु जी आप जी को बड़े आदर के साथ लेने गए। अपने घर ला कर गुरु जी ने बाबा जी का बड़ा सम्मान किया और सेवा करके प्रसन्नत्ता प्राप्त की। गुरु जी ने बाबा मोहन जी और मोहरी जी के परलोक गमन का बाबा आनन्द जी के साथ अफसोस किया और परस्पर प्रेम सत्कार के वचन करके कुछ दिनों के बाद आप जी को पालकी में बैठा कर भाई गढ़ीऐ के साथ और सिक्ख सेवक दे कर गोईंदवाल भेज दिया।

श्री गुरु हरि राय जी को गुरु गद्दी का विचार

बाबक रबाबी और मलिक जाति के परलोक सिधार जाने के कुछ समय उनरान्त गुरु जी ने अपने शरीर त्यागने का समय नज़दीक अनुभव करके श्री हरि राए जी को गुरुगद्दी देने का

विचार करके सब दूर-नज़दीक के सिक्ख सेवकों को कीरतपुर पहुँचने के लिए पत्र लिखे। गुरु जी के हुक्मनामे को पढ़ कर सब गुरुसिक्ख कीरतपुर पहुँच गए।

श्री धीरमल का कीरतपुर आना और गुरु बन कर बैठना

संगत का कीरतपुर एकत्र होना सुन कर धीरमल भी अपनी माँ नानकी के साथ कीरतपुर पहुँच गया। जब उसने देखा कि सारी भेंट गुरु जी को अर्पण हो रही है और हरि राय जी की तरफ गुरु जी का मुझ से ज्यादां ध्यान है, तो वह एक दिन गुरु जी के दीवान में पहुँचने से पहले ही सुन्दर जामा पहन कर और सिर के ऊपर कलगी लगा कर गुरु आसन पर बैठ गया। उसका विचार था कि गुरु जी के बड़े पुत्र श्री गुरदित्ता जी का बड़ा पुत्र होने के कारण गुरुगद्दी ऊपर बैठने का हक उसका ही है। हरि राय जी, जो उसके छोटे भाई हैं, उनका हक गद्दी पर बैठना नहीं बनता। इस लिए उसने विचार किया कि मसंद और सिक्ख सेवकों के ऊपर अपना प्रभाव डालने का यह अच्छा समय है।

धीरमल के इस तरह गुरु बन कर बैठने से उसके अपने मसंदों की प्रेरणा के साथ अनभिज्ञ सिक्ख आ कर गुरु को कार-भेंट अर्पण करने लगे और उसका अपना मेवढ़ा ही अरदास करने लगा। इस प्रकार धीरमल को सवा पहिर तक बहुत चढ़ावा चढ़ गया। तदउपरान्त दीवान की समाप्ति करके धीरमल सारा चढ़ावा ले कर अपने डेरे आ गया।

जब इस बात का पता गुरु जी को लगा कि धीरमल ने आज संगत से इस तरह बैठ कर पूजा करवाई है, तो आप जी ने इस

www.9009.co.in

बेनियमी को रोकने के लिए सेवादारों को कहा कि अगर धीरमल फिर गद्दी लगा कर इस तरह बैठे, तो उसको वहाँ से उठाकर कीरतपुर से बाहर निकाल दो। इस के पश्चात् जब तीसरे पहर धीरमल फिर सवेरे की तरह गद्दी लगा कर बैठ गया, तो गुरु जी के सेवादारों ने धीरमल और उसके मसंदों को वहाँ से उठा कर व उस की गद्दी उठा कर फैंक दी और सिक्ख सेवादारों ने कहा कि तुम गुरु जी के होते आप ही गुरु बन बैठे हो यह बहुत बेनियमी व अयोग्य बात है। हमें गुरु जी का हुक्म है कि आप जी को कदाचित इस तरह न करने दिया जाए। अच्छा यही है कि आप यहाँ से अभी चले जाओ। सेवादारों से इस तरह की कठोर बातें सुन कर धीरमल गुस्से से तैयार होकर करतारपुर को चला गया।

श्री हरि राय जी को गुरुगद्दी

होलियों की पूर्णिमा के बाद दूसरे दिन गुरु जी ने सेवादारों को आज्ञा दी कि दीवान वाले स्थान पर एक ऊँचा चबूतरा तैयार करके एक बड़े दीवान के लिए दरियाँ बिछा दो और ऊपर चन्दोए तान दो। तद्उपरान्त सब संगत को दीवान में बुला कर बैठा दो। आप जी की आज्ञा के अनुसार जब सब कुछ ठीक हो कर दीवान सज गया और गुरु जी अपने तीन साहिबज़ादें श्री सूरज मल जी, अणी राए जी और तेग बहादर जी और पोत्रे श्री हरि राय जी सहित आकर अपने सिंघासन के ऊपर सुशोभित हो गए, तो रबाबियों ने कीर्तन करना आरम्भ कर दिया और कढ़ाह प्रसाद की देग तैयार हो कर आ गई।

कीर्तन की समाप्ति के उपरान्त गुरु जी ने अपने आसन से उठ कर श्री हरि राय जी को अपनी जगह बैठा दिया और पाँच पैसे व नारियल आगे रख कर माथा टेका। जब इस बात का पता माता

मरवाही जी को लगा, तो आप जी ने गुरु जी से कहा कि मेरे पुत्र सूरजमल में क्या दोष है, जो आप ने उस को छोड़कर गुरुत्व पौत्र को दे दिया है।

सूरजमल के प्रति प्रसन्नत्ता

गुरु जी बोले कि चिन्ता न करो इन को कोई प्रवाह नहीं रहेगी। सब कुछ प्राप्त होगा। जब गुरु जी के इन वचनों से माता मरवाही जी की तस्सली न हुई, तो गुरु जी ने सूरजमल को बुला कर पूछा कि तुम गुरुगद्दी ले कर गुरु बनना चाहते हो? सूरजमल ने कहा महाराज ! मैं गुरु नहीं बनना चाहता, मैं गुरु घर की सिक्खी चाहता हूँ। सूरजमल की इस नम्रता वाली बात को सुन कर गुरु जी ने कहा कि सूरजमल ! तुमने सिक्खी माँग कर सब कुछ ले लिया है, तुमको शाबास है। तेरा वंश बहुत बढ़े फूलेगा और गुरुगद्दी भी प्राप्त हो जायेगी। जब यह बात सूरजमल ने अपनी माता को बताई, तो मरवाही जी गुरु जी के वचन सुन कर प्रसन्न हो गई और कहा कि इनके किये हुए वचन कभी व्यर्थ नहीं जाते।

माता नानकी जी का वरदान लेना

माता मरवाही जी के पुत्र सूरजमल के प्रति गुरु जी के यह वचन सुन कर श्री तेग बहादर जी की माता नानकी जी भी अपने मन में सोचने लगी कि मेरे पुत्र का क्या बनेगा? दूसरे दिन जब गुरु जी भोजन कर रहे थे, तो नानकी जी ने हाथ जोड़ कर प्रार्थना की कि महाराज ! मेरे पुत्र तेग बहादर की तरफ आप ने कोई ध्यान नहीं दिया। वह सन्त स्वरूप है। उन का निर्वाह किस तरह होगा ? वह कोई धंधा करना भी नहीं जानता। नानकी जी के यह विचार सुन कर गुरु जी ने कहा कि तेग बहादर जी को समय

अनुसार गुरुगद्दी भी प्राप्त हो जाएगी और उससे पहले यह गुरुत्व के बिना ही गुरु समान पूजे जाएँगे। इनका पुत्र बड़ा प्रतापी होगा। देश से ज़ालिम और जुल्म का नाश करेगा। अपना अलग पंथ चलाएगा। यह वचन सुन कर माता नानकी जी महाराज को माथा टेक कर अपने निवास स्थान को चली गई।

गुरु जी की स्वर्ग सिधारने जाने की तैयारी

गुरु जी ने अपने अन्तिम समय के लिए एक कमरा तैयार करवाया और उसका नाम पातालपुरी रखा। तद्‌उपरान्त अपनी दोनों महिलाओं माता मरवाही और नानकी जी, तीनों पुत्रों श्री सूरजमल जी, अणी राए जी और तेग बहादर जी और पौत्र श्री हरि राय जी को मसंदों व सिक्ख सेवकों को अपने पास बैठा कर वचन किया कि अब हमारी स्वर्ग सिधारने की तैयारी है। यह कोई नई बात नहीं है। संसार का प्रवाह नदी की तरह सदा चलता रहता है। यहाँ सब कुछ नाशवान तथा अस्थिर है। प्रभु का हुक्म मानना और उस पर चलना चाहिए। यही ज़रूरी है।

श्री हरि राय जी के प्रति वचन

फिर आप जी ने हरि राय जी को कहा कि तुम गुरु घर की रीति के अनुसार पिछली रात जाग कर शौच स्नान करके आत्मज्ञान को हृदय में धारण करके भक्ति मार्ग को ग्रहण करना। शोक को त्याग कर, धैर्य रखना और सिक्खों को उपदेश दे कर उन का जीवन सफल करना। अपने बाबा जी के वचन सुन कर श्री हरि राय जी ने कहा कि महाराज ! देश के तुर्क हमारे शत्रु हैं, उनके पास हकूमत है, उन के साथ किस तरह का व्यवहार करना चाहिए? गुरु जी ने कहा तुम कोई चिन्ता न करो, जो तुम्हारे ऊपर चढ़ कर आएगा, वह कोहरे के बादल की तरह उड़ जाएगा। तुम्हें

कोई हानि नहीं पहुँचा सकेगा। यह वचन सुन कर श्री हरि राय जी ने गुरु जी के चरणों में माथा टेक कर सुख शान्ति प्राप्त की।

सिक्खों और परिवार को आज्ञा

तद्‌उपरान्त गुरु जी ने भाई भाने (बाबा बुड्‌ढा जी के पुत्र) को आज्ञा की कि तुम ने अपने पुत्र को श्री हरि राय जी की सेवा में रहने देना। जोध राय को कहा कि तुम अपने घर कांगड़ चले जाना और सतिनाम का स्मरण करके सुख भोगना और गुरु का लंगर जारी रखना।

बीबी वीरो को धैर्य दिया और कहा तेरी सन्तान बड़ा यश पायेगी। तुम्हें सारे सुखों की प्राप्ति होगी।

बिधीचन्द के पुत्र लाल चन्द को कहा, तूमने अपने घर सुर सिंह चले जाना और फिर जब गुरु घर को ज़रूरत होगी, तन मन के साथ हाज़िर हो कर सेवा करनी। इस तरह बाबा सुन्दर और परमानन्द को भी अपने घर गोईंदवाल भेज दिया, फिर माता नानकी की तरफ देख कर कहा कि तुम अपने पुत्र श्री तेग बहादर को ले कर अपने मायके बकाले चले जाओ।

श्री सूरजमल जी को कहा कि तुम अपनी इच्छा के अनुसार श्री हरि राय जी के पास अथवा यहाँ तुम्हें सुख प्रतीत हो निवास कर लेना। तेरा वंश बहुत बढ़े फूलेगा। श्री अणी राय जी को आप ने कुछ न कहा, क्योंकि उन की वृत्ति ब्रह्म ज्ञान में टिकी हुई थी।

संगत के प्रति वचन

संगत और मसंदों को सम्बोधित करके आप जी ने वचन किया, आज से श्री हरि राय जी को तुम हमारा ही स्वरूप जानना और मानना। जो इनके विरुद्ध चलेगा, उसका लोक-परलोक बिगड़ेगा और वह यहाँ वहाँ दुख पायेगा। वाणी पढ़नी, सतिनाम का स्मरण

www.9009.co.in

करना और शोक किसी ने नहीं करना होगा। हम अपने निज धाम स्वर्ग को जा रहे हैं।

स्वर्ग की ओर ध्यान

इस तरह यथा-स्थान सब को धैर्य और आदेश देकर गुरु जी ने पातालपुरी नाम के कमरे में घी का दीया जला कर कुश और नर्म बिछौना करवाया और सारी संगत को फिर धैर्य और सांत्वना देकर भाई जोधराय और भाई भाने को कहा तुम हमारे इस कमरे का सात दिन पहरा रखना। तद्उपरान्त सातवें दिन इसका दरवाज़ा श्री हरि राय जी से खुलवाना। पहले कोई निकट आ कर विघ्न न डाले। यह वचन करके आप जी ने कमरे के अन्दर जाकर अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर लिया और कुश के आसन पर समाधि लगा कर बैठ गए। संगत बाहर बैठ कर अखण्ड कीर्तन करने लगी।

सातवें दिन सवा पहर दिन चढ़े श्री हरि राय जी ने अरदास करके दरवाज़ा खोला और गुरु जी के मृत शरीर को स्नान करा कर नवीन वस्त्र पहना कर एक सुन्दर विमान में रख कर चन्दन व घी चिता के पास ले गए और चिता में रख कर संस्कार कर दिया। तत्पश्चात् सब ने सतलुज नदी में स्नान किया और डेरे आकर कढ़ाह प्रसाद की देग तैयार करके बाँटी।

आप जी चेत्र सुदी पंचमी संमत् १७०१ विक्रमी को ज्योति-ज्योत समाए।

✧❖✧

www.9009.co.in

१ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

श्री गुरु हरि राय जी-सातवीं पातशाही

गुरु मंगल

दोहरा—कथा गुरु हरि राय की सुनो श्रोता सावधान।।
पावन पुन उपावनी गण पापन की हान।।

अवतार धारण करना

श्री बाबा गुरदित्ता जी के घर माता निहाल कौर जी की कोख से माघ सुदी १३ संवत् १६८१ विक्रमी को श्री हरि राय जी ने कीरतपुर के स्थान पर अवतार धारण किया।

श्री गुरु हरि राय जी का गुरु कर्त्तव्य

श्री हरि राय जी एक पहर रात रहती उठ कर शौच स्नान के उपरान्त आसन पर बैठ कर आनन्द स्वरूप परमात्मा में वलीन हो जाते थे। दीवान स्थान पर दीवान लग जाता था और शब्द कीर्तन होता रहता था। जब प्रभात हो जाती, तो आप वस्त्र पहन कर दीवान में बैठकर शब्द कीर्तन सुनते थे।

कीर्तन के उपरान्त आप संगत के प्रति उपदेश दे कर उनकी मनोकामना पूरी करके उन्हें निहाल करते थे। आप जी का लंगर वैष्णव होता था। जब प्रसाद तैयार हो ताजा था, तो संगत में बैठ कर प्रसाद खा कर सुन्दर पलंग के ऊपर आराम करने के लिए सुशोभित हो जाते थे। जब त्रिपहरा हो जाता, तो शस्त्र-अस्त्र पहन कर सिक्ख सेवकों के साथ शिकार पर चले जाते। शिकार पर

www.9009.co.in

किसी जानवर को मारने की आज्ञा किसी को नहीं थी, परन्तु जो जानवर पकड़ा जाये, उसको पकड़ कर उसका पौषण करते थे। शिकार केवल आप जी सिक्ख योद्धाओं का शस्त्र अभ्यास बनाये रखने के लिए ही जाते थे।

सिक्ख सेवक जो आप जी के दर्शन करने और मनोकामनाएँ पूर्ण करने के लिए आते थे, आप जी सतिनाम का स्मरण, भक्ति मार्ग को धारण करना व बुरे कर्मों का त्याग करने का उपदेश देते थे। बड़े सौभाग्यशाली थे, जो आप जी के इस उपदेश को धारण करके अपना जन्म सफल कर लेते थे।

संगत का दर्शनार्थ आना-जाना

आप जी के पास कीरतपुर ही आप जी के चाचा श्री सूरजमल जी रहते थे। सूरजमल की माता मरवाही जी का यहाँ ही देहान्त हुआ था।

सिक्ख संगत दर्शन करने के लिए चाहे आप जी के पास सदा ही आती रहती थी, परन्तु वैसाखी और दीवाली के समय अपनी-अपनी भेंट ले कर बहुत संगत आती थी।

भाई भगतू और भाई फेरू की वार्ता

भाई भगतू गुरु घर का बड़ा अनन्य सेवक था। जब श्री गुरु हरि राय जी गुरुगद्दी पर बैठे, तो कुछ समय के उपरान्त भगतू जी ने प्रार्थना की महाराज ! सेवा के बिना पुरुष की आयु निष्फल जाती है। इस लिए मुझे कोई सेवा दो। गुरु जी ने हँस कर वचन किया कि अब आप बहुत वृद्ध हो गए हो, अपने मनोरंजन के लिए कोई चरखा लो।

भगतू जी ने कहा, महाराज ! जिस तरह आप की इच्छा है कराओ, परन्तु मुझे सेवा ज़रूर बख्शो। गुरु जी ने प्रसन्न हो कर

कहा कि तुम गुरु के लंगर के लिए खेती करवाओ। गुरु जी का हुक्म मान कर भगतू जी ने कर्मचारी और बैल तैयार करवा कर धरती को जोत कर बीज बो दिया और उस की बहुत सम्भाल करने लगे।

एक दिन खेत में काम करने वाले श्रमकों ने कहा, भाई जी ! हमको रोटी घी के साथ अच्छी तरह से दो। हम उत्साह के साथ और ज्यादा काम करेंगे। अपने श्रमकों की बात सुन कर भाई जी ने जब इधर-उधर देखा, तो उन को एक फेरी वाला, जो गाँव में नमक, मिर्च, गुड़, घी आदि बेचता था, नज़र आया। उस को बुला कर कहा कि हमारे श्रमकों को, जितना यह रोटी के साथ खाने के लिए घी माँगें उतना दे दो। इस सारे घी का मूल्य तुम हमसे कल आ कर ले लेना। तब फेरी वाले ने सब श्रमकों को अपनी कुपी में से एकएक पली घी दे दिया, इस तरह श्रमक बहुत प्रसन्न हो गए।

फेरी वाले ने घर जा कर घी वाली कुपी, जिस में थोड़ा-सा घी बाकी बचा था खूँटी पर टाँग दी। सुबह उठ कर जब कुपी को तोल कर देखने लगा कि श्रमकों को कितना घी खिलाया गया है, जिसके पैसे भाई भगतू से लेने हैं, तो उसने देखा कि कुपी घी से लबालब भरी हुई है। यह कौतुक देख कर फेरी वाले ने भाई भगतू के पास जाकर उनके पैरों पर माथा टेका और प्रार्थना की कि महाराज ! मुझे अपना सिक्ख मान कर अपनी सेवा में लगा लो। उसकी यह श्रद्धा भरपूर प्रार्थना को सुन कर भाई भगतू जी उस को गुरु जी के पास ले आए। भाई भगतू को देखकर गुरु जी ने कहा आओ भाई भगतू परोपकारी साथ किस को ले आए हो? भगतू ने कहा, महाराज ! यह प्रेमी श्रद्धा धारण करके आया है, आप इस को चरणामृत देकर अपना सिक्ख बना लो और गुरमति का उपदेश देकर इसको निहाल करो।

तब गुरु जी ने फेरी वाले को पूछा तेरा नाम क्या है और काम क्या करते हो? उसने कहा महाराज ! मेरा नाम मेरे माता-पिता ने संगत रखा था और मैं नमक घी आदि चीज़ें वेचने के लिए गाँव में फेरी लगाने का काम करता हूँ। गुरु जी ने वचन किया कि तू फेरी फिरता ही हमारी शरण में आया है, इस लिए आज से तेरा नाम फेरू है। गुरु जी ने उसको अपना चरणामृत दे कर सिक्ख बना लिया और वचन किया कि अब तुम फेरी का काम छोड़ कर सतिनाम का स्मरण करो और देग चलाया करो, तुम्हें कभी कोई कमी नहीं आएगी।

भाई फैरू ने गुरु जी का वचन मान कर अपनी वृत्ति सतिनाम के स्मरण में लगा दी और तन-मन से देग की कार चलाने में लग गया। भाई फेरू जी के डेरे का नाम पिंड भाई फेरू तहसील चूनियां, लाहौर में प्रसिद्ध है। यहाँ पाकिस्तान बनने से पहले रात-दिन लंगर लगा रहता था। भाई फेरू जी का कुछ और प्रसंग श्री गुरु गोबिंद सिंह के मसंदों की सोध वार्ता में आएगा।

शाहजहाँ का गुरु जी से हरढ़ और लौंग लेना

दिल्ली के बादशाह शाहजहाँ के बड़े बेटे का नाम दारा शिकोह था। शाह जहाँ इस अपने बड़े पुत्र को ही तख्त व ताज देना चाहता था, परन्तु इसका तीसरा लड़का औरंगज़ेब इस अपने बड़े भाई के साथ ईर्ष्या रखता था, जिस के कारण औरंगज़ेब ने रसोइए की ओर से दारा शिकोह को शेर की मूंछ का बाल अथवा कोई जहरीली चीज़ खिला दी, जिस से दारा शिकोह बीमार हो गया। बादशाह ने बहुत इलाज कराया, परन्तु दारा शिकोह को किसी दवाई से आराम नहीं आया। तद्उपरान्त शाहजहाँ ने देश के सारे प्रसिद्ध हकीमों को बुलवा कर पूछा, तब उन्होंने दारा शिकोह की

बीमारी को देख कर बताया कि अगर एक लौंग जिस का वजन एक माशा हो और एक हरड़ जिस का वजन चौदह सिरसाही (दस तोले) हो, रगड़कर शहिज़ादे को दिए जाएँ, तब शेर का बाल अथवा कोई ऐसी जहरीली चीज़ बाहर निकल आएगी और शहिज़ादा स्वस्थ हो जाएगा।

यह दोनों चीज़ें हकीमों के बताए वज़न के अनुसार ढूँढ कर लाने के लिए बादशाह ने सारे देश में अपने आदमी भेज दिए, परन्तु यह चीज़ें कही से भी न मिली। बादशाह को चिन्तातुर देख कर वज़ीर खाँ ने बताया बादशाह सलामत! मुझे किसी सिक्ख के पास से पता चला है कि यह दोनों चीजें इस मात्रा की गुरु नानक जी की गद्दी के ऊपर इस समय बैठन वाले गुरु हरि राय जी के पास कीरतपुर हैं, अगर आप चाहें तो उन से मँगवा लें। बादशाह ने अपने दो अहिलकार गुरु जी के पास चिट्ठी देकर भेजे और प्रार्थना की कि अगर यह दोनों चीज़ें दे दो, तो आप जी की बड़ी कृपा होगी। बादशाह की चिट्ठी पढ़ कर गुरु जी ने अपने तोशेखाने में से हरड़ और लौंग मँगवा कर बादशाह के अहिलकारों को दे दीं। जब यह दोनों चीज़ें रगड़ कर शाही हकीमों ने दारा शिकोह को दी, तो वह थोड़े ही दिनों में स्वस्थ हो गया। बादशाह और उसके दरबारियों ने गुरु घर की बहुत महिमा की।

एक माई की श्रद्धा पूरी करनी

एक वृद्ध निर्धन माई की श्रद्धा थी कि गुरु जी उसके हाथ का तैयार किया हुआ भोजन खायें, तब वह सौभाग्यशाली होगी। यह सोच कर वह बहुत समय सोचती रही। उसने मेहनत मज़दूरी करके कुछ पैसे भी जोड़ लिए और इन पैसों का गुरु जी के भोजन के लिए रसद भी तैयार करके रख ली। फिर एक दिन उस ने स्नान करके रसोई को लेप दिया और गुरु जी के लिए भोजन

तैयार करने लगी तथा मन में आराधना करने लगी कि सच्चे पातशाह उसका श्रद्धा के साथ तैयार किया हुआ भोजन खा कर निर्धन की श्रद्धा पूरी करो। तद्उपरान्त दो रोटियाँ तैयार करके उनके ऊपर घी, चीनी डाल कर एक साफ कपड़े में लपेट कर गुरु दरबार की ओर चल पड़ी। रास्ते में विचार करती जा रही थी कि वह गुरु जी को इस तरह कपड़े में लपेटा हुआ भोजन किस तरह देगी।

उधर अन्तर्यामी गुरु जी ने माई की अन्तात्मा की प्रार्थना सुनी और उसकी श्रद्धा को अनुभव करके दीवान से उठ कर जल्दी-जल्दी घोड़ा तैयार करवा कर शिकार के बहाने उधर को चल पड़े, जिधर से माई गुरु-गुरु का जाप करती हुई आ रही थी। जब माई ने देखा कि गुरु जी कुछ सिक्खों के साथ घोड़े पर सवार हो कर आ रहे हैं, तो वह एक तरफ़ खड़ी हो गई। माई को एक तरफ़ खड़ी देख कर गुरु जी ने उस के पास घोड़ा खड़ा कर के कहा कि माई हमें बहुत भूख लगी है, हमें रोटी दो। यह वचन सुन कर माई ने कपड़े में लपेटी हुई रोटी दानों हाथों से गुरु जी के आगे कर दी। गुरु जी कपड़े में से रोटी निकाल कर उसी तरह हाथ के ऊपर रख कर खाने लगे और कहने लगे कि माई यह भोजन बहुत स्वाद है, हमें बहुत आनन्द आया है। गुरु जी के यह वचन सुन कर माई गदगद हो गई और प्रेम से उसकी आँख में आँसु आ गए।

भोजन करके गुरु जी ने माई को कपड़ा वापिस दे दिया और वचन किया कि माई तू निहाल हो गई है। तब माई को अन्दर-बाहर की सुधि हो गई। माई गुरु जी के चरणों में माथा टेक कर उन की स्तुति करती हुई अपने घर को चली आई।

www.9009.co.in

संगत को उपदेश

धर्म की कृत करनी, नाम जपना और लंगर लगाना

श्री गुरु हरि राय जी गुरु घर की मर्यादा के अनुसार दो वक्त सवेरे और शाम दीवान लगाकर नामदान का उपदेश देते और बाहर से आए दर्शन अभिलाषियों को उन की मनोकामना पूरी करके निहाल करते थे। अपने दादा गुरु जी की मर्यादा को कायिम रखने के लिए तीसरे पहर सिक्ख योद्धाओं को साथ लेकर शिकार खेल कर शस्त्र विद्या का अभ्यास कायिम रखना ही था। जानवरों को मारने का कोई प्रयोजन नहीं था। जिस लिए शिकारी को आप जी का हुक्म था कि किसी जानवर को मारना नहीं है। अगर जीवित पकड़ा जाए, उसको घर लाकर उस का पौषण करना है।

सिक्ख सेवकों को आप जी उपदेश देते थे कि तुम गुरु निमित लंगर करो, इस के साथ तुम्हारा कल्याण होगा।

दूसरा उपदेश गुरु जी अपने सिक्खों को यह देते कि अपना मन नीचा रखो और भक्ति करो, सदा परोपकार करना और किसी की निंदा चुगली या ईर्ष्या नहीं करनी। उठते-बैठते नाम स्मरण करना। धर्म की कमाई करके अपने परिवार का पालन करना और ज़रूरतमन्द गुरुसिक्ख की अन्न-वस्त्र के साथ सेवा करना। आप जी का वचन था कि जो सिक्ख इन वचनों पर चलेगा, उस के ऊपर हमारी बहुत प्रसन्नता होगी।

भक्त भगवान की वार्ता

एक भगवान गिर सन्यासी साधु ने जब गुरु जी की महिमा सुनी कि आप जी ईश्वर अवतार हैं, तो वह अपने मन में यह धारण करके गुरु जी के दर्शन करने आया कि अगर गुरु जी मुझे चतुर्भुज रूप में दर्शन देंगे, तब मैं इन्हें सच्चा ईश्वर का अवतार मानूँगा।

www.9009.co.in

यह संकल्प करके जब भगवान गिर गुरु जी के दरबार में आया, तो उसने देखा कि संगत बैठी है, कीर्तन हो रहा है और एक चतुर्भुज स्याम मूर्ति चक्कर गदा पद्मधारी सिंघासन के ऊपर सुशोभित हैं।

अपनी संकलपित मूर्ति के दर्शन करके भगवान् गिर चक्ति रह गये। उसे शरीर की कोई सुध न रही, पत्थर की मूर्ति बन कर कुछ समय खड़े रहे। तद्उपरान्त अपनी चेतना को कायिम करके उसने गुरु जी के चरणों में डन्डवत हो कर माथा टेका और जब उठ कर देखा, तो गुरु जी अपने गुरु स्वरूप में दर्शन दे रहे थे। भक्त भगवान यह कौतुक देख कर बड़े प्रवाभित हो कर कहने लगे किमहाराज ! मुझे अपना सिक्ख बना कर उपदेश बख्शो।

गुरु जी ने उसकी श्रद्धा भक्ति देख कर उसको चरणामृत दे कर सतिनाम का उपदेश दिया और वचन किया—'भक्त भगवान दर सहि परवान' यह उपदेश और वरदान ले कर भक्त भगवान ने सिक्खी का बहुत प्रचार किया। गुरु जी की आज्ञा के अनुसार भक्त भगवान जी बेदी वंश बाबा लखमी चंद जी के पौत्रे मेहर चन्द के दर्शन करने के लिए डेहरा बाबा नानकयात्रा करने जाते रहे।

गुरु जी का करतारपुर जाना

श्री गुरु हरि राय जी के बड़े भाई धीरमल जी करतारपुर रहते थे। आपकी माता नती जी ने दोनों भाइयों का मेल-मिलाप रखने के लिए एक दिन आप जी को प्रेमसहित करतारपुर ले आई। धीरमल जी भी आप जी को प्रेम और सत्कार के साथ मिले और एक सुन्दर मकान में डेरा करवा दिया। गुरुसिक्ख नर-नारी और गुरु घर के श्रद्धालु भेंट ले कर आप जी के दर्शन करने आए, कीरतपुर बसने का प्रसंग सुन कर बड़े प्रसन्न हुए।

भाई भगतू का दर्शन करने आना

करतारपुर आप जी के कुछ महीने बड़े आनन्दपूर्वक तथा प्रसन्नतासहित व्यतीत हुए। वैसाखी का दिन आ गया। जंगल प्रदेश मालवे की संगत जो आप जी के दर्शन करने करतारपुर आ रही थी। जब उन को पता चला कि गुरु जी इस समय कीरतपुर निवास रखे हुए हैं, तो वे भी कीरतपुर आ गई। इस संगत के साथ भाई भगतू जी भी गुरु जी के दर्शन करने आए।

भाई भगतू की वृद्ध अवस्था को देख कर गुरु जी ने हँस कर कहा, भाई भगतू जी ! कोई जवान स्त्री विवाह लो बुढ़ापा सुखमय निकल जाएगा। तद्उपरान्त दूसरी बार जब कुछ समय के पश्चात् फिर भाई भगतू जी गुरु जी के दर्शन करने आए, तो रास्ते में एक बारह साल की लड़की जो बाजरे के खेत की रखवाली कर रही थी उसको देख कर मन में विचार आया कि करतारपुर जाकर शरीर त्याग देना है। इस लिए अब गुरु जी के वचन को सफल कर जाना चाहिए। इस विचार के उपरान्त भाई भगतू ने लड़की को कहा कि तू मुझ से शादी कर ले। मैंने गुरु जी के वचन सफल करने हैं। जब लड़की ने कोई जवाब न दिया, तो भाई जी ने बाजरे के अनाज और खेत के जानवरों को सुना कर कहा तुम इस बात के गवाह रहना। मैंने अपना मन करके इस के साथ अपना विवाह कर लिया है।

यह बात करके भाई भगतू जी जब गुरु जी के पास आए, तो गुरु जी ने हँस कर कहा कि सुनाओ भाई जी ! विवाह करके वहीं छोड़ आए ? भाई जी ने कहा कि महाराज ! मैंने आप जी के वचन का पालना किया है, मेरा और कोई प्रयोजन नहीं है। गुरु जी ने वचन किया, वह लड़की अब अपनी सारी उमर जत-सत में ही व्यतीत करेगी और देवी समझ कर पूजी जाएगी।

www.9009.co.in

खोटा धन खाने से दुखों की प्राप्ति

अपना अन्त समय नज़दीक जान कर भाई जी करतारपुर ही गुरु जी के पास रहते थे कि आप जी को भयंकर पेचश लग गई। जिस से भाई जी को वृद्ध अवस्था में दुखी देख कर एक सिक्ख ने पूछा, भाई साहिब जी ! आप इतना दुख क्यों भोग रहे हो? भाई जी ने कहा कि जो सिक्ख अपनी छल-कपट की खोटी कमाई में से हमें कई प्रकार के खाद्य पदार्थ देते थे, उन सिक्खों के कल्याण करने के लिए हम वह लेखा यहीं पर खत्म कर रहे हैं, ताकि हमें आगे जा कर न देना पड़े।

थोड़े दिन बाद ही जब भाई जी शरीर त्याग गए, तब गुरु जी ने बड़े सतिकार के साथ आप जी का दाह संस्कार किया। तेरहवें वाले दिन भाई भगतू जी के पुत्र जीवन और गोरे को गुरु जी ने दस्तार बँधवाई।

भाई जीवन का एक ब्राह्मण पुत्र के लिए प्राण त्यागने

गुरु जी के करतारपुर निवास समय वहाँ के एक ब्राह्मण का इकलौता लड़का मर गया। लड़के के माता-पिता ने जब गुरु जी के पास आकर बहुत कुरलाहट करके कहा मि हमारे पुत्र को जीवित करो। नहीं तो हम भी यहीं तुम्हारे द्वार पर ही प्राण त्याग देंगे। तब गुरु जी ने कहा कि अगर कोई इस लड़के की जगह अपने प्राण दे दें, तब यह जीवित हो सकता है। गुरु जी का यह वचन सुन कर जब उस के माँ बाप प्राण देने के लिऐ तैयार न हुए, तो उन के कुरलाहट से बुरे हाल पर तरस करके भाई जीवन (भाई भगतू के पुत्र) ने यह सोच कर कि एक दिन तो मरना ज़रूर है। अगर यह लड़का जीवित हो जाए, तो जीवन सफल हो जाएगा। यह सोच कर भाई जीवन ने अपने डेरे जाकर कपड़ा बिछाया और ऊपर लेटकर

अपने प्राण त्याग दिए। जब इधर भाई जीवन ने प्राण त्यागे, तो उधर ब्राह्मण का पुत्र तत्काल जीवित हो गया। भाई जी का यह बलिदान देखकर सब ने उन्हें धन्य कहा। गुरु जी ने भाई जीवन का संस्कार भाई भगतू की शमशान भूमि के पास ही करवाया और वचन दिया कि जीवन का निवास गुरु नानक साहिब के चरणों में होगा।

तद्उपरान्त जब गुरु जी को पता चला कि भाई जीवन की स्त्री गर्भवती है, तो आप जी ने वचन दिया कि इसको लड़का पैदा होगा। जिस का वंश बहुत फेलेगा। इस तरह गुरु जी ने भाई जीवन की प्रशँसा करके और उसे वरदान देकर सब को धैर्य बँधवाया। इस समय जो गुरु जी को भेंट चढ़ी, उस का गुरु जी ने लंगर लगवा दिया और जो बाकी बचा वह धीरमल को दे दिया।

दारा शिकोह ने गुरु जी के दर्शन करने

यहाँ से गुरु जी माझे की संगत की प्रार्थना स्वीकार करके रास्ते में गाँव के लोगों को उपदेश द्वारा निहाल करते हुए गोईंदवाल आ गए। यहाँ आप जी को भल्ले साहिबज़ादे बाबा नन्द और सहसराम जी के परिवार ने बड़े सतिकार से डेरा करवाया और आप की सेवा सम्भाल की।

जब दारा शिकोह अपने भाई औरंगज़ेब से लड़ाई में हार खा कर मुलतान को जा रहा था, तो उसको व्यास नदी के पत्तन से पार हो कर पता चला कि इस समय गुरु जी भी गोईंदवाल आए हुए हैं, तो वह भेंट ले कर आप जी के दर्शन करने आया। गुरु जी को नमस्कार करके उसने अपनी व्यथा बड़े धैर्य के साथ सुनाई और अपने आप का कोई दुख प्रकट न किया। उस की इस हर्ष-शोक रहित दशा को देख कर गुरु जी ने पूछा—दारा शिकोह!

अब क्या चाहते हो? दारा शिकोह ने हाथ जोड़ कर कहा कि महाराज ! दिल्ली का तख्त, जो रात-दिन झगड़े लड़ाइयों का अखाड़ा और हर्ष-शोक का घर है, उसको मैं नहीं चाहता। मुझे आत्म ज्ञान का वरदान दो, जिस से मुझे सच्ची दरगाह का तख्त प्राप्त हो जाये।

दारा शिकोह की यह प्रार्थना सुन कर गुरु जी ने उस की तरफ जब कृपा दृष्टि से देखा, तो उसको आत्मज्ञान प्राप्त हो गया। यह अनुभव करके दारा शिकोह ने कहा कि महाराज ! आप जी ने मुझे यह अमूल्य दान दिया है। पाँच भूतक शरीर से मेरा अब कोई स्नेह नही रहा। इस तरह मनेच्छित पदार्थ ले कर दारा शिकोह लाहौर को चला गया और गुरु जी कुछ दिन गोईंदवाल विश्राम करके वापिस कीरतपुर चले गए। दारा शिकोह को पकड़ने के लिए औरंगज़ेब की फौज उस के पीछे लगी हुई थी और वर दर्रा बोलान से ईरान को जाते हुए पकड़ा गया और दिल्ली ले जाकर क़ाज़ियों से काफिर होने का फ़तवा ले कर ३० अगस्त सन् १६५९ को कत्ल करके हमाँयु के मकबरे के पास दफ़ना दिया गया।

औरंगज़ेब का गुरु जी को दिल्ली बुलाना और गुरु जी का राम राय को भेजना

दारा शिकोह का गुरु जी के पास गोईंदवाल ठहरना और ताज तख्त की गुरु जी से आशीश लेनी सुन कर औरंगज़ेब गुरु जी के विरुद्ध बहुत भड़का। उसने उसी समय बड़े गुस्से के साथ चिट्ठी लिख कर हलकारे के द्वारा भेजी कि जल्दी दिल्ली आओ। मैं आपको मिलना चाहता हूँ।

इस चिट्ठी के मिलने पर अपने प्रमुख सिक्खों से सलाह करके गुरु जी ने अपने बड़े लड़के राम राय जी को सभी शक्तियाँ दे कर

www.9009.co.in

कहा कि अपनी रसना से जो वचन करोगे, वह ज्यों का त्यों पूरा होगा। निडर होकर रहना, गुरु घर के वचनों के ऊपर सदा दृढ़ रहना। अपने धर्म से कभी नहीं डोलना।

इस तरह पिता जी की आज्ञा के अनुसार जब दिल्ली जाने के लिए राम राय जी के लिए रथ तैयार किया गया, तो आप जी ने पिता गुरु जी के वचनों को परखने के लिए घोड़ों के बिना ही रथ खड़ा देख कर उस में बैठ कर कहा कि चल भई चलने से पहले गुरु पिता जी की परिक्रमा कर ले। राम राय जी के इन वचनों के साथ ही रथ चल पड़ा और गुरु जी की परिक्रमा करके अपने टिकाने आ खड़ा हुआ। इस तरह राम राय जी को यकीन हो गया कि पिता गुरु जी के वचनों में पूरी शक्ति है।

तद्उपरान्त रथ को घोड़े जोत कर राम राय जी कुछ दिनों में अपने सिक्ख सेवकों के साथ दिल्ली पहुँच गए। बादशाह ने राम राय जी का डेरा मजनू के टीले लगवा कर शाही खजाने से भोजन और आवास की आज्ञा दे दी।

तद्उपरान्त औरंगज़ेब रोज़ ही आप जी को अपने दरबार बुला कर कोई न कोई नई से नई करामात दिखाने के लिए कहता और बहुत प्रसन्न होता। बेशक श्री राम राय जी ने अनेक ही करामात बादशाह को दिखाई, परन्तु उन में से केवल १२ प्रसिद्ध हैं। इन का व्योरा सूरज प्रताप ग्रन्थ में भाई संतोख सिंह जी ने विस्तारपूर्वक दिया है। इन करामातों को देखने से औरंगज़ेब बाबा राम राय जी का बहुत सतिकार और आदर करने लगे। इस तरह बाबा जी के साथ बादशाह का बहुत प्रेम देख कर काज़ी आदि बहुत ईर्ष्या करने लगे कि इन के आने से हमारा आदर कम हो गया है। एक दिन इन काज़ियों ने सलाह करके बादशाह को कहा

www.9009.co.in

कि जहांपनाँ! इन के बड़े गुरु नानक जी ने अपनी वाणी में इस्लाम धर्म का खण्डन करके लिखा है—

मिटी मुसलमान की पेड़ै पई घुमियार।। घड़ी भांड़ै ईटां
किया जलदी करे पुकार।। जल जल रोये बपुड़ी झढ़ झढ़
पवे अंगार।। नानक जाने करते कारनू किआ सो जान
करतारू।। २।।

तो इन से पूछा जाए कि मिट्टी मुसलमान की क्यों कर जलती और रोती है? इस के पश्चात् जब राम राय जी बादशाह के दरबार में रोज़ के नियम अनुसार आ कर अपने आसन पर बैठ गए, तो बादशाह ने यह सवाल कर दिया कि आप जी के बड़े गुरु नानक जी ने जो यह लिखा है कि मुसलमान की मिट्टी जलती एवं तपती है और तप-तप कर रोती है इस का क्या मतलब है?

बादशाह से यह बात सुन कर राम राय जी ने सोचा कि अगर मैं इस को सच्ची बात बता दूँ, तो यह इन की शराह के विरुद्ध होने के कारण बादशाह मुझ से नाराज़ हो जाएगा। जिस से मेरी सारी इज़्ज़त जाती रहेगी। सब बनी बनाई मिट्टी में मिल जाएगी। इस समय इन को टाल देना ही ठीक है। यह विचार करके राम राय ने कहा कि 'बादशाह सलामत ! गुरु नानक साहिब जी ने मिट्टी बेईमान की कही है मुसलमान की नहीं कही, बेईमान सब मज़हब में होते हैं आगे जाकर बेईमान दोज़ख की आग में सड़ते हैं। इस बात से बादशाह और उमराव काज़ी सब खुश हो गए कि यह बात ठीक है। बेईमान सभी मज़हब में होते हैं और दोज़ख की आग में जलाए जाते हैं।

गुरु जी का राम राय जी को त्यागना

जब यह बात दिल्ली के दरबारी सिक्खों ने सुनी, तो उन्होंने तत्काल ही सारी वार्ता लिख कर एक सिक्ख के हाथ गुरु जी के पास कीरतपुर भेज दी। गुरु जी यह चिट्ठी पढ़ कर कि राम राय जी ने गुरु नानक साहिब जी की वाणी की तुक ''मिट्टी मुस्लमान की'' को गल्त बता कर ''मिट्टी बेईमान की'' को ठीक बताया है। तो गुरु जी ने वचन किया कि राम राय ने बादशाह की खुशामद करके गुरु नानक साहिब जी की वाणी को गल्त बता कर बदल दिया है। इस लिए राम राय अब हमारे माथे न लगे, फिर जो सिक्ख उसको मानेगा, वह हमारा सिक्ख नहीं होगा। इस बात का जब राम राय को पता चला कि गुरु पिता जी ने उसको त्याग दिया है, तो वह अपनी भूल बख्शवाने के लिए गुरु जी के पास कीरतपुर आया। परन्तु गुरु जी ने कहा कि तुमने तुर्क की झूठी खुशामद की है, हम तेरा मुँह देखना नहीं चाहते। तू जहाँ से आया है वही चला जा।

यह उत्तर सुन कर राम राय जी वापिस दिल्ली चले गए और बादशाह को जा कर बताया कि मेरे पिता जी ने मुझे तुम्हारे पास रहने के कारण त्याग दिया है। इस लिए आप मेरी सहायता करो। बादशाह ने कहा जिस जगह चाहो मैं तुम्हें रहने के लिए घर-बाहर तैयार करवा देता हूँ। करामाती होने के कारण राम राय जी ने पहाड़ों में एक जगह पसन्द करके बताई जहाँ औरंगज़ेब ने उसे रहने के लिए बहुत सुन्दर मकान बनवा दिया और गुजारे के लिए जागीर दे दी। यह स्थान पहाड़ों में होने के कारण राम राय जी का 'देहरादुन' प्रसिद्ध शहर है।

www.9009.co.in

गुरु जी ने जंगल प्रदेश को जाना

जंगल प्रदेश मालवे की संगत की प्रर्थाना को स्वीकार करके गुरु जी कीरतपुर से चल कर करतारपुर के रास्ते मालवे प्रदेश को गए। मालवे के सिक्खों ने गुरु जी की बहुत सेवा की। जिस जगह भी गुरु जी गए वही पर बहुत भारी दीवान लग जाता। कथा कीर्तन से नर-नारी की भीड़ हो जाती। एक गाँव के सिक्ख आ कर प्रेम से गुरु जी को अपने गाँव ले जाते और फिर दूसरे गाँव।

इस प्रकार ही जब आप जी भाई रूपेके और कांगड़ आदि गाँवों में ही विचरते हुए सिक्खों की मनोकामनाएँ पूरी करते हुए मराज गाँव आए,तो मराजकों ने आप जी की बहुत सेवा की। यह मराजक लोग 'सिरकी बंद' का काम करते थे। मराज गाँव के दूसरे निवासी कौड़ थे। वे इन मराजकों को अच्छा नहीं समझते थे और उन की औरतों को कूएँ पर पानी भरने के लिए आई को मज़ाक करते रहते थे। इस लिए मराजके कौड़ियों से बहुत तंग और दुखी थे। उन्होंने इक्ट्ठे होकर गुरु जी के पास प्रार्थना की कि हमारी सहायता करो। गुरु जी ने मराजकियों से कहा कि आप आज ही अपना परिवार और घर का सामान ले कर यहाँ से निकल जाओ और जहाँ रात पड़ जाए, वहाँ ही निवास करके अपने रहने के लिए घर बना लेना। विघ्न पड़े, तो गुरु नानक साहिब जी ठीक करेंगे।

गुरु जी का वचन मान कर मराजके अपने परिवारसहित घर का सामान ले कर वहाँ से निकल पड़े और जाते-जाते जब संध्या पड़ गई तो खुली जगह देख कर डेरा करके बैठ गए। इस ज़मीन के मालक चौधरी जैत को जब यहाँ इन के निवास करने की खबर हूई, तो उस ने इन को यहाँ से चले जाने के लिए कहा। परन्तु

मराजकों के मुखी काले ने कहा, हम यहाँ गुरु जी के हुक्म से गुजारा करने आए हैं। आपकी ज़मीन लेने नहीं आए। परन्तु जैत ने उन को कहा कि आप यहाँ से अभी अपना आवास उठा कर कूच कर जाओ, किन्तु जब काले वहाँ से उठने को तैयार न हुआ, तो जैत ने काले पर बरछी से वार कर दिया। जिस के उत्तर में काले ने अपनी तलवार का एक ऐसा वार किया कि जैत को कंधे के नीचे से कमर तक घाव हो गया। इस प्रकार जैत की मौत से मराजकों का दबदबा बैठ गया। वे निश्चिंत हो कर वहाँ घर बना कर बसने लगे।

काले के भतीजों को वरदान देना

एक दिन काला अपने यतीम भतीजों लोहीआ और संदली को साथ ले कर गुरु जी के पास आया। पहले काले ने स्वयं गुरु जी के चरणों में माथा टेका और फिर अपने मासूम भतीजों को कहा कि गुरु जी को माथा टेको। परन्तु बच्चे वहाँ ही खड़े-खड़े अपने पेट बजाने लग गए। गुरु जी ने काले को पूछा कि कालेआ ! यह क्या कहते हैं। काले ने कहा महाराज, इनका पिता मेरा भाई मर गया है। यह यतीम पेट से भूखे आप जी से रोटी माँगते हैं। गुरु जी ने खुश हो कर कहा, कालेआ यह अनेक औरों को रोटी देंगे। यह बड़े सौभाग्यशाली होंगे।

यह वरदान ले कर जब काले ने खुशी से अपने घर आ कर अपनी स्त्री को बताया, तो उस ने कहा कि भतीजों के लिए राज्य का वरदान ले कर आ गया है। तेरे अपने बच्चे इन की प्रजा हो कर बसेंगे। तुमने इन का क्या सोचा है।

अपनी स्त्री से यह बात सुन कर काला अपने बच्चों को भी गुरु जी के पास ले गया और वहाँ जा कर प्रार्थना की कि महाराज इन

www.9009.co.in

बच्चों की माँ ने जब यह बात सुनी कि आप ने मेरे भतीजों को राज्य का वरदान दिया है, तो उस ने कहा कि मेरे पुत्र इन की अधीनता में रहेंगे और प्रजा बन कर रहेंगे। इस लिए इन को भी राज्य का वरदान बख्शो। गुरु जी ने कहा कि तुम्हारे पुत्र भी स्वतन्त्र हो कर अपनी खेती करेंगे और किसी का हाला नहीं भरेंगे।

यह वरदान ले कर काले ने खुशी-खुशी घर आ कर अपनी पत्नी को बताया, तो उस को भी शान्ति हो गई। गुरु के वरदान से काले के भतीजों की संतान नाभे और पटियाले के राजे हुए और उस के अपने पुत्रों की संतान बिना किसी को हाला देने के अपनी खेती करती।

भाई भगतू के पुत्र गौरे की वार्ता

गुरु जी का आना सुन कर भाई भगतू के पुत्र गौरे ने, जो इस समय बठिंडे का राजा था, एक अच्छा घोड़ा और पाँच सौ रुपया गुरु जी की भेंट करके माथा टेका। इस समय गुरु जी ने भाई गौरे को पूछा कि जिस लड़की से भाई भगतू जी, अपनी मृत्यू से पहले वचन के द्वारा ही अपना विवाह कर गए थे, उसका क्या हाल है ? भाई गौरे ने कहा किमहाराज ! वह हमारी धर्म की माता खुश है।

भाई गौरे की यह बात सुन कर गुरु जी के चौरी बरदार भाई जस्से ने हँसी में कहा, वह स्त्री तो अभी जवान है। आप उस का मेरे साथ विवाह कर दो। यह बात सुन कर भाई गौरे को बहुत गुस्सा आया और उस ने कुछ दिनों पश्चात् अपने आदमियों से उसे गोली मार कर मरवा दिया।

जब इस बात का गुरु जी को पता चला, तो आप ने गौरे को बहुत श्राप दिए और कहा कि यह हमें मुँह न दिखाए और न कोई इस की हमारे पास सिफारिश करे। गुरु जी की नाराज़गी का जब

गौरे को पता चला, तो उस ने गुरु जी की नाराज़गी से डर कर प्रण लिया कि जब तक गुरु जी को खुश करके मैं यह श्राप न बख्शवा लूँगा तब तक मैं घर नहीं जाऊँगा।

यह निश्चय करके गौरा अपनी सेनासहित गुरु जी के पीछे लग गया और रात-दिन भूल बख्शवाने के लिए अपने मन में आराधना करने लगा। जब गुरु जी कीरतपुर वापिस चले गए, तो गौरा भी कीरतपुर से बाहर आवास करके छः महीने बैठा रहा।

एक दिन जब गुरु जी अपने परिवारसहित कीरतपुर से सतलुज नदी के साथ-साथ चले आ रहे थे। गुरु जी घोड़े पर सवार थे, पीछे आपके डोलियों में कुछ योद्धा भी साथ थे। सब से पीछे गौरा अपने तीन सौ शूरवीरों के साथ चल पड़ा।

उधर से अचानक ही लाहौर से एक नवाब कुछ सवार ले कर दिल्ली को जा रहा था, उसने सतलुज नदी पार करते समय जब डोले पर सामान जाता देख कर पूछा यह कौन जा रहा है, तो एक सिक्ख ने बताया कि यह गुरु हरि राए जी के घर डोलियों पर सामान जा रहा है। मुस्लिम उमराव ने अपने आदमियों को कहा कि यह सब कुछ लूट लो, कोई चीज़ आगे न जाए।

इस घटना के समय गुरु साहिब जी तो बहुत आगे जा रहे थे, परन्तु गौरा जो पीछे-पीछे आ रहा था, उसने जब देखा कि तुर्क सेना के आदमी गुरु का सामान लूटने के लिए आगे आए हैं। वह अपने योद्धाओं को ले कर उन पर टूट पड़ा और सब को मार कर भगा दिया। गुरु जी का सामान सही सलामत ले आया। इस सारी बात का जब गुरु जी को पता चला, तो आप ने भाई गौरे को बुला कर उस पर बहुत ख़ुशी प्रकट की और उस की भूल को बख्श कर आज्ञा दी कि अब तुम अपनी राजधानी बठिंडे जा कर अपने राज्य का सुख भोगो। गुरु घर की तुम पर बहुत ख़ुशी है।

www.9009.co.in

सिक्खी का जहाज़ फूटना

एक दिन गुरु जी कुछ सिक्खों से बाबा गुरदित्ता जी के समाने वाले स्थान के दर्शन करने के लिए पहाड़ी पर गए। वहाँ काफी समय खड़े हो कर एक ओर देखते रहे। जब बहुत समय बीत गया, तो सिक्खों ने पूछा कि महाराज! आप इधर क्या देख रहे हो ? तब आप ने कहा भाई श्री गुरु नानक देव जी ने जो जहाज़ इस संसार के उद्धार के लिए तैयार किया था। वह भंवर में पड़ कर टुकड़े-टुकड़े हो गया है, उस में जो सिक्ख सवार थे, वे कोई भवंडर में पड़ कर डूबता और बहता जा रहा है और कोई किनारे लग रहा है। सबको आपा-धापी पड़ी है। हम इस जहाज़ की दयनीय दशा को देख रहे हैं।

जब सिक्खों ने इस बात को और स्पष्ट करने के लिए प्रार्थना की, तो आप ने बताया कि सिक्ख सेवक धन के लालच में पड़ कर सिक्खी का मार्ग भूल गए हैं। कच्चे गुरुओं के पीछे लग कर पार-उतारा किस प्रकार हो सकता है ? इस तरह सिक्खी का जहाज़ टूट-फूट गया है।

फिर सिक्खों ने प्रार्थना की कि महाराज ! यह जहाज़ कभी जुड़ भी जाएगा कि नहीं। महाराज ने कहा कि जब हम दसवां जामा धारण करके दुष्टों पाखंडियों का नाश करेंगे और नया पंथ चलायेंगे। यह जहाज़ जुड़ जाएगा। इस पर चढ़ कर असंख्य वाहिगुरु की भक्ति वाले सिक्ख बहुसंख्या में पार उतरेंगे।

श्री हरि कृष्ण जी को गुरगद्दी

कीरतपुर में गुरु जी के दो समय दीवान लगते थे। हज़ारों नर-नारी अपने उद्धार और मनोकामनाएँ पूरी करने के लिए नित्य दर्शन करने आते और गुरु का वरदान प्राप्त करते।

एक दिन अपना अन्तिम समय नज़दीक आया अनुभव करके आप ने देश-प्रदेश के सारे मसंदों को हुक्मनामे भेज दिए कि अपनी संगत के मुखियों को साथ ले कर शीघ्र ही कीरतपुर पहुँच जाओ। इस तरह जब सब सिक्ख सेवक और सोढ़ी, बेदी भल्ले, त्रिहण, गुरु, अंश और संत-महंत सभी वहाँ पहुँचे और आप जी ने दीवान लगा कर सब को बताया कि अपना अन्तिम समय समझ कर गुरुगद्दी का तिलक अपने छोटे सुपुत्र श्री हरि कृष्ण जी को देने का निर्णय किया है।

तद्उपरान्त गुरु जी ने श्री हरि कृष्ण जी को सामने बैठा कर उन की तीन परिक्रमा कीं और पाँच पैसे और नारियल आगे रख कर नमस्कार कर दिया और वचन किया कि आज से हमने इन को गुरुगद्दी दे दी है। आप ने इन को हमारा रूप ही समझ कर मानना और इनकी आज्ञा में रहना। गुरु जी का यह हुक्म सुन कर सारी संगत ने भेंट अर्पण की और नमस्कार कर के श्री हरि कृष्ण जी को गुरु स्वीकार कर लिया।

श्री गुरु हरि राय का ज्योति-ज्योत समाना

दूसरे दिन कार्तिक वदी ९ संवत् १,७१८ विक्रमी को गुरु जी अपने आसन पर चौंकड़ी मार कर बैठ गए और अपने श्रद्धानन्द स्वरूप में वृत्ति जोड़ कर शरीर को त्याग कर सचखंड़ में जा बिराजे। आप जी के पंच तत्त्व के शरीर को चंदन की चिता तैयार कर के गुरु हरिगोबिंद जी के द्वारा निर्मित पतालपुरी के स्थान के पास अग्निभेंट कर दिया गया।

प्रसंग श्री गुरु हरि राय जी समाप्त।।

www.9009.co.in

१ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

श्री गुरु हरि कृष्ण जी-आठवीं पातिशाही

मंगल अष्ट गुरु जी ।।

हरि किषण भयो अषटम ब्रलबीरा।। जिन पहुँच देहली तजिओ सरीरा।।
बाल रूप धरिओ स्वांग रचाइि।। तब सहिजे तन को छोड सिधाइि।।
इिउ मुगलन सीस परी बहु छारा।। वै खुद पति सों पहुचे दरबारा।।
(पउड़ी २३।। वार ४१।। भाई गुरदास दूजा।।)

अवतार धारण करना

श्री (गुरु) हरि कृष्ण जी ने श्री गुरु हरि राय जी के घर माता कृष्ण कौर जी की कोख से सावण वदी १० बुधवार संवत् १७१३ विक्रमी को कीरतपुर नगर में अवतार धारण किया।

राम राय जी ने क्रोध करना

गुरु जी के ज्योति-ज्योत समाने से तेरहवें दिन के पश्चात् श्री हरि कृष्ण जी को सब संगत ने गुरुगद्दी के आसन पर बैठा कर दस्तार बंदी की। सब सिक्ख सेवकों ने आप को गुरु मान कर भेंट अर्पण की।

इस बात की जब इन के बड़े भाई राम राय जी को ख़बर हुई, तो उसने बड़ा क्रोध करके बाहर मसंदों को पत्र लिखवा दिये कि गुरु की कार भेंट इकट्ठी करके सब मुझे भेजा करो, जो नहीं भेजेगा उस को पछताना पड़ेगा।

राम राए ने यही न किया बल्कि उस ने गुस्से में आ कर दिल्ली जा कर औरंगज़ेब को कहा कि मेरे पिता जी ने मेरे साथ बहुत अन्याय किया है। गुरुगद्दी पर बैठने का मेरा हक था, परन्तु मुझे

छोड़ कर मेरे छोटे भाई को जिसकी उमर केवल पाँच साल की है, उस को गुरुगद्दी पर बैठा दिया है। आप उस को दिल्ली बुला कर कहो कि गुरु बनकर सिक्खों से कार भेंट न ले और अपने आप को गुरु न कहलाए।

औरगज़ेब ने राजा जै सिंह के द्वारा गुरु जी को दिल्ली बुलवाना

राम राय जी के बहुत कुछ कहने के कारण बादशाह ने मज़बूर हो कर राजा जै सिंह सवाई को कहा कि आप अपना कोई विशेष आदमी भेज कर गुरु जी को दिल्ली मँगवा लो। बादशाह का हुक्म मान कर राजा जै सिंह सवाई ने अपने मंत्री को चिट्ठी दे कर गुरु जी को बड़े सत्कार सहित दिल्ली लाने के लिए कीरतपुर भेजा।

गुरु जी का दिल्ली आना

राजा जै सिंह की चिट्ठी पढ़ कर और मंत्री की ज़बानी सुन कर गुरु जी ने अपनी माता जी और बुद्धिमान सिक्खों से विचार करके दिल्ली जाने की तैयारी कर ली और अपने साथ अपनी माता और सिक्ख सेवकों को लेकर दिल्ली को चल पड़े।

अनपढ़ पुरुष से गीता के अर्थ कराने

कीरतपुर से दिल्ली को जाते हुए गुरु जी अम्बाले से आगे एक गाँव पंजोखरे ठहर गए। इस गाँव के एक पण्डित ने आप जी को कहा कि आप इस छोटी उमर में ही ईश्वर अवतार और गुरु कहलाते हो, अगर आप में ईश्वर अवतार की शक्ति है, तो मुझे आप गीता के अर्थ करके सुनाओ। पण्डित की यह तर्कमय बात सुन कर गुरु जी ने कहा।

पण्डित जी ! अगर आप ने गीता के अर्थ सुनने हैं, तो आप किसी आदमी को अपने गाँव में से ले आओ, उस से गीता के अर्थ हम आपको सुनवा देंगे। गुरु जी की यह बात सुन कर पण्डित जी

www.9009.co.in

एक अनपढ़ झीवर को ले आए। गुरु जी ने उस झीवर को हाथ मुँह धुलवा कर एक आसन पर बैठा दिया और अपने हाथ की छड़ी उस के सिर पर रख कर कहा कि पण्डित जी को गीता के अर्थ करके सुनाओ। गुरु जी की कृपा से झीवर ने गीता पढ़ कर उस के शास्त्र अनुसार अर्थ करके पण्डित को सुनाए। गुरु जी की यह प्रत्यक्ष शक्ति देख कर पण्डित ने गुरु जी को प्रणाम किया और क्षमा माँगी। इस स्थान पर यादगार के तौर पर एक सुन्दर गुरुद्वारा बना हुआ है।

दिल्ली जा कर रोगियों के रोग दूर करना

पंजोखरे से चल कर स्थान-स्थान संगत को दर्शन और खुशी प्रदान करते हुए, गुरु जी का राजा जै सिंह ने निवास अपने बंगले में करवा दिया और आप जी के दिल्ली पहुँचने की खबर बादशाह को दे दी।

उस समय दिल्ली शहर में हैज़े की बीमारी से बहुत लोग बीमार थे। गुरु जी का आना सुन कर बहुत रोगी आप जी के पास आने लगे। गुरु जी जिस रोगी को अपने चरणों का चरणामृत देते थे, वह जल्द स्वस्थ हो जाता था। इस प्रकार जब आप की महिमा को सुनकर बहुत रोगी आप जी के पास आने लगे, तो आप जी ने एक कुण्ड बनवाया जिस में अमृत समय के स्मरण से उठ कर अपने चरणों की छोह का पानी उस में भर देते थे। इस कुण्ड में आए हुए रोगियों को सेवादार आठों पहर चरणामृत देते रहते थे, जिस से बहुत रोगी स्वस्थ होकर गुरु जी की कीर्ति करते और भेंट अर्पण करते थे। इस वार्ता को सुन कर, श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने अरदास में यह शब्द रखे थे—'श्री हरि कृष्ण जी धिआईऐ जिस डिठै सभ दुख जाइ।।'

www.9009.co.in

बादशाह का शहिज़ादे को गुरु जी के पास भेजना

राजा जै सिंह ने जब बादशाह को बताया कि गुरु जी ने मेरे बंगले में आ कर निवास किया है तो उसने दूसरे दिन अपने शहिजादे को राजा जै सिंह से भेंट देकर गुरु जी के पास भेजा। शहिज़ादे ने बादशाह की ओर से गुरु जी को भेंट अर्पण करके माथा टेका और प्रार्थना की कि बादशाह आप जी के दर्शन करना चाहता है। गुरु जी ने कहा हमारा प्रण है कि हम किसी बादशाह के माथे नहीं लगेंगे। शहिज़ादा गुरु जी से बातचीत करके बहुत प्रभावित हुआ और उस ने यहीं बात बादशाह को जा कर बताई कि गुरु जी उमर में चाहे बच्चे हैं, परन्तु उन की सूझ-बूझ वृद्धों वाली है।

जै सिंह की रानी ने गुरु जी की परख करनी

जब राजा जै सिंह की रानी ने सुना कि बाल गुरु जी पूर्ण शक्तिवान हैं, तो उसने आप जी को भोजन खिलाने के लिए महलों में बुलाया। आप जी को शक्तिवान परखने के लिए रानी अपनी सेविकाओं की तरह कपड़े पहन कर उन में ही बैठ गई। अंतर्यामी बाल गुरु जी अपनी माता जी सहित जब राजा के महलों में गए। तब सभी रानियाँ आदि सेविकाएँ आप जी के चरणों पर माथा टेक कर बैठ गईं। गुरु जी अपने हाथ की छड़ी बारी-बारी हर एक के सिर पर रख कर कहते यह भी रानी नहीं, यह भी रानी नहीं। परन्तु जब असली रानी की बारी आई, तो उसके सिर पर छड़ी रख कर कहा कि यह रानी है। यह सुन कर रानी गद-गद हो गई और बड़े प्यार के साथ उन्हें अपनी गोदी में बैठा लिया और आप के चरण पकड़ कर श्रद्धा से शीश निवाया। राजा और रानी ने बड़े प्रेम से आप जी को भोजन खिलाया। जवाहरात की थाली भेंट करके गुरु जी की खुशी प्राप्त की।

www.9009.co.in

गुरु जी को सीतला

रानियों से वापिस आ कर कुछ समय के पश्चात् गुरु जी को बुखार हो गया, जिस से सिक्खों और माता जी को चिंता हो गई। इस बुखार के साथ दूसरे दिन ही गुरु जी को सीतला निकल आई। जब एक दो दिन ईलाज करने से बीमारी को कोई फर्क न पड़ा, तो इस को छूत की बीमारी समझ कर राजा जै सिंह के बंगले से आप जी को यमुना नदी के किनारे तिलेखरी में तम्बू कनातें लगवा कर भेज दिया।

ज्योति-ज्योत समाना

यहाँ यमुना नदी के किनारे गुरु जी को दो दिन और दो रातें बहुत कष्ट रहा, जिस से आप जी की हालित बहुत खराब हो गई। सिक्खों ने प्रार्थना करके पूछा कि महाराज! संगत के लिए क्या आज्ञा है, किस के ज़िमे लगा चले हो। घर-घर गुरु बन बैठेंगे। इस लिए संगत का बाजू किसे पकड़ाओगे। कृपा करके बता दो।

इस के उत्तर में गुरु जी ने अपने मसंद भाई गुरबखश से एक ओर पाँच पैसे मँगवा कर थाल में रख कर उन को माथा टेक कर कहा कि "बाबा बसहि जि गराम बकाले।। बनि गुर संगति सकल समाले।।" यह बचन करके आप जी कुश के आसन पर चादर तान कर लेट गए और शरीर त्याग कर स्वर्ग सिधारे। श्री गुरु हरि कृष्ण जी पाँच साल दो महीने की उमर में गुरुगद्दी पर बैठ कर दो साल पाँच महीने गुरुत्व करके चेत्र सुदी चौदस १७२१ विक्रमी को ज्योति-ज्योत समाए।

www.9009.co.in

१ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

श्री गुरु तेग बहादर जी-नवम् पातशाही

गुरु मंगल

दोहरा ।। हिंदू धरम तरु मूल को राखयो धरनि मझार।।
तेग बहादुर सतिगुरू त्रिण समान तन डारि।। १।।

अवतार

श्री गुरु तेग बहादर जी श्री गुरु हरिगोबिंद जी के घर माता नानकी जी की पवित्र कोख से रविवार वैसाख वदी पंचमी संवत् १६७८ विक्रमी को अमृतसर में अवतरित हुए।

विवाह तथा संतान

आप जी का विवाह श्री लाल चन्द सुभिखी क्षत्रि की सुपुत्री श्री गुजरी जी से १५ असूज (वदी ५) संवत् १६८९ विक्रमी को करतार पुर में हुआ।

आप जी के गृह में माता गुजरी जी की पवित्र कोख से पटने शहर में पोष सुदी सप्तमी रविवार असूज संवत् १७२३ विक्रमी को सवा पहर रात रहती श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अवतार धारण किया।

गुरु गद्दी की प्राप्ति

श्री गुरु हरिकृष्ण जी ने दिल्ली में ज्योति-ज्योत समाने से पहले पाँच पैसे तथा नारियल थाली में रखकर उसको माथा टेक कर वचन किया था कि गुरु बाबा बकाले।

www.9009.co.in

पहली जीवन अवस्था

जब श्री गुरु हरि गोबिंद जी ने गुरुगद्दी अपने छोटे पौत्र श्री हरि राय जी को दे दी तथा आप ने ज्योति-ज्योत समाने का निर्णय कर लिया, तो माता नानकी जी ने आप जी को हाथ जोड़ कर प्रार्थना की कि महाराज ! मेरे पुत्र श्री तेग बहादर की ओर आप ने कोई ध्यान नहीं दिया, वह संत स्वरूप है। उनका निर्वाह किस तरह होगा? अपनी सुपत्नी की यह दीन विनय सुन कर गुरुजी ने वचन किया। इस समय तुम अपने पुत्र श्री तेग बहादर जी को लेकर अपने मायके बकाले गाँव चले जाओ। समय पर इन्हें को गुरुगद्दी भी प्राप्त हो जाएगी।

गुरु जी का वचन मानकर माता नानकी जी श्री गुरु तेग बहादर जी को लेकर मायके घर गाँव बकाले आ गई। वहाँ आकर श्री गुरु तेग बहादर जी अलग घर में बैठकर भजन स्मरण करते रहते और किसी भी काम काज की ओर कोई ध्यान न देते। इस तरह ही नाम-स्मरण की तप साधना में आप जी ने २१-२२ साल व्यतीत किये।

जब श्री गुरु हरि कृष्ण जी के गुरु बाबा बकाले को गुरुगद्दी दे दी का वचन सारे सिक्ख सेवकों में प्रकट हो गया, तो आप जी कोष्ठ में समाधि लगाकर छुपकर बैठ गये। जब पंद्रह दिन के पश्चात् आप जी की समाधि खुली, तो माता जी ने कहा कि बेटा ! आप संगत में प्रकट होकर दर्शन दो तथा उन की मनोकामना पूरी करो। गुरुजी ने माता जी को इसका कोई उत्तर न दिया तथा अपनी लिव में ही लीन रहे। परन्तु दूसरी तरफ धीरमल जी गुरुगद्दी लगाकर बकाले आकर बैठ गये कि बकाले वाला बाबा गुरु मैं ही हूँ। धीरमल ने अपने मसंद भी इस बात का प्रचार करने के लिए जगह-जगह नियत कर दिये। इन को देखकर और सोढ भी

यहाँ आकर डेरा लगा कर बैठ गये। यह आपाधापी देखकर श्रद्धालु सिक्ख विसमित से होने लगे।

आप जी ने गुरु प्रकट होना

मखन शाह लुभाणा गाँव टांडा जिला जेहलम के रहने वाला देश-विदेश में व्यापार का काम करता था। एक बार जब वह किसी विदेश से जहाज़ का माल लाद कर समुद्र के रास्ते देश को आ रहा था, तो समुद्र में तूफान आने के कारण जहाज़ एक रेतीली जिल्हण में फँस गया। जब जहाज़ को वहाँ से निकालने की मखन शाह की कोई पेश न गई, तो उस ने बेबस होकर गुरु जी का ध्यान करके हाथ जोड़कर अरदास जी कि सच्चे पातशाह मैं गुरु घर का सेवक हूँ। मेरी सहायता करो, मरो जहाज़ जिल्हण में से निकालकर पार लगा दो। मैं पाँच सौ मोहरें आप जी को भेंट करूँगा।

मखन शाह की प्रार्थना जब अन्तर्यामी गुरु ने सुनी, तो आप ने अपना कंधा देकर मखन शाह का डूबता हुआ जहाज़ पार लगाया तथा अपने सेवक की अरदास कबूल की।

जहाज़ पार लगाकर मखन शाह ने सारा माल बेच लिया, तो वह मनौत देने के लिए पंजाब आया। पंजाब आकर उसको पता लगा कि इस समय गुरु जी बकाले में निवास करते हैं। किसको मनौत की पाँच सौ मोहरें भेंट करूँ। तब उसने यह विचार किया कि जो अपनी मनौत की पाँच सौ मोहरें माँग लेगा, वही सच्चा गुरु होगा। उसने हर एक गद्दी लगाकर बैठे गुरु के आगे दो-दो मोहरें रखकर माथा टेका, परन्तु जब किसी ने भी मनौत की पाँच सौ मोहरें न माँगीं, तो फिर वह सच्चे गुरु की भाल में पूछता-पूछता श्री गुरु तेग बहादर जी के पास पहुँच गया। आप जी कोष्ठ में बैठे थे, मखन शाह ने माता जी से पूछकर कोष्ठ में जाकर जब दो मोहरें

रख कर आप जी को माथा टेका, तो आप जी ने हँसकर कहा कि मखन शाह ! तू पाँच सौ मोहरें गुरु घर की मनौत मान कर अब दो मोहरें ही देता है, तुम्हें गुरु घर की पूरी मनौत देनी चाहिए।

गुरु जी का यह वचन सुनकर मखन शाह को यकीन आ गया कि यही बकाले वाले सच्चे गुरु हैं। उसने पाँच सौ मोहरें गुरु जी को भेंट कर दीं तथा खुशी से कोठे पर चढ़कर ऊँची-ऊँची कपड़ा फेर कर कहा "गुरू लाधो रे, गुरू लाधो रे।"

इस तरह जब सब को पता लग गया कि बकाले वाले बाबा गुरु-श्री गुरु तेग बहादर जी हैं, तो संगत उमड़ घुमड़ कर आप जी के दर्शन करने के लिए आने लगी। मखन शाह ने सब को अपनी वार्ता सुनाई कि उस ने इन्हें किस तरह परख कर सच्चा गुरु माना है। यह वार्ता सुनकर श्रृद्धालु सिक्ख सेवकों ने गुरु जी के आगे भेंट रखकर माथा टेका।

गुरु जी का गद्दी लगाकर बैठना, धीरमल के आदमियों ने चढ़ावा उठा कर ले जाना

दूसरे दिन माता जी तथा भाई गढ़ीये से सलाह करके मखन शाह ने चाँनी का चंदोआ तथा नीचे दरियाँ बिछाकर गुरु जी के दीवान के लिए तैयारी करके, गुरु जी को गद्दी लगवाकर बैठा दिया। गुरु जी का दीवान में प्रकट होकर बैठना सुनकर सिक्ख सेवक उमड़-घुमड़ कर दर्शन करने आये तथा सब ने यथायोग्य भेंट अर्पण करके गुरु जी को माथा टेका।

इस तरह संगत की आवाजाई तथा गुरु जी को भेंट अर्पण होती देखकर धीरमल ने अपने शीहें मसंद से आदमी भेजकर गुरु जी का सारा चढ़ावा जो संगत ने भेंट अर्पण किया था, उठवा लिया। इस समय शीहें मसंद ने गुरु जी को मारने के लिए आप जी पर गोली भी चलाई, जो खाली गई और गुरु जी बच गये।

www.9009.co.in

मखन शाह का सब कुछ वापिस ले आना परन्तु गुरु जी का वापिस करवा देना

जब यह वार्ता धीरमल के आदमियों ने की, तो मखन शाह अपने आदमी साथ लेकर धीरमल के डेरे से सब कुछ लौटा लाया। इसके साथ ही मखन शाह सिरी गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ भी धीरमल के डेरे से ले आया। परन्तु जब इस बात का गुरु जी को पता चला, तो आप जी ने सब कुछ जो धीरमल के आदमी लूट कर ले गये थे अैर धीरमल का सामान भी जो मखन शाह के आदमी ले आये थे। गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ के अतिरिक्त धीरमल को वापिस करवा दिया।

इस तरह अपना अनादर होता देख कर धीरमल जी अपना सामान उठवा कर करतारपुर चले गये।

गुरु जी ने अमृतसर दर्शन करने आना

एक दिन मखन शाह ने प्रार्थना की कि मैं अमृतसर के दर्शन करना चाहता हूँ, आप भी कृपा करके मेरे साथ ही चलो। दर्शन, स्नान करके वापिस आ जायेंगे। मखन शाह का प्रेम देख कर माता जी की सलाह से गुरु जी माघ महीने संवत् १७२१ को अमृतसर के दर्शन करने आये।

गुरु साहिब जी का अमृतसर आना सुन कर दरबार साहिब के पुजारियों ने सोचा कि यह गुरु बन कर मखनशाह की सहायता से हमारे अधिकार से हरिमन्दिर का कबजा लेने आये हैं। इस लिए वह हरिमन्दिर साहिब के दरवाज़े बंद करके आप इधर-उधर हो गये। गुरु जी ने पुजारियों की यह करवाई देख कर मखन शाह को कहा कि हमारा यहाँ आना इन्होंने अच्छा नहीं समझा। इस लिए हम और अधिक समय यहाँ ठहरना नहीं चाहते।

www.9009.co.in

यह बात कह कर गुरु जी परिक्रमा से बाहर बेरी के नीचे आकर बैठ गये। यह स्थान गुरद्वारा थड़ा साहिब करके प्रसिद्ध है। थड़ा साहिब से उठकर गुरु जी शहार से बाहर यहाँ आज कल माल मण्डी लगती है, सुशोभित हो गए। इस स्थान पर गुरद्वारा दमदमा साहिब है।

कुछ समय यहाँ मखन शाह की प्रतीक्षा करके आप जी ने यहाँ से चल कर वल्ले गाँव से बाहर पीपल के नीचे आवास किया। यहाँ से आप जी को एक माई जिसका नाम हरिया था, बड़े प्रेम से अपने घर ले गई तथा अपने कोठे में पलंग पर गुरु जी को विश्राम करवाया, उन्हें भोजन कराया तथा सेवा की। एक रात गुरु जी ने यहाँ आराम किया। अमृतसर निवासी संगत को जब पता चला कि गुरु जी पुजारियों के अपमानजनक व्यवहार करके वापिस चले गये हैं, तो आप जी से क्षमा मांगने के लिए, यहाँ आ गई। आप जी की इस याद में यहाँ गुरद्वारा कोठा साहिब सुशोभित है। यहाँ हर साल माघ की पूर्णिमा को बड़ा भारी मेला लगता है।

मखनशाह भी श्री हरिमन्दिर साहिब के दर्शन करके कढाड़ प्रसाद की देग भेंट करके गुरु साहिब जी के पास वल्ले गाँव ही आ मिला। इसके साथ ही कुछ पुजारियों ने वल्ले जा कर गुरु जी से क्षमा माँगी और कहा कि महाराज ! हम गुरु घर के सेवादार हैं, तुम मालिक हो। इन मसंद पुजारियों की बात को सुनकर गुरु जी ने वचन किया—

"नहि मसंद तुम अमृतसरीऐ।। तृष्णा अग्नि ते अंदर सड़ीऐ।।"

(सूरज प्रकाश ग्रंथ रास ११ अंसू २२)

इस का फल समय आने पर तुम आप भोगोगे। गुरु जी के यह वचन सुन कर मसंद तथा पुजारी पश्चाताप करते हुए वापिस लौट गये। दूसरे दिन आप मखनशाह के साथ बकाले गाँव पहुँच गये।

गुरु जी ने बकाले से चलना

एक दो दिन विश्राम करके आप जी ने बकाले से कीरतपुर जाने के लिए तैयारी कर ली। समान गाड़ियों में लाध कर माता नानकी जी और अपने महल श्री गुजरी जी को रथ में बैठा कर जब व्यास नदी के किनारे पहुँचे, तो आप जी को पता चला कि सिरी गुरू ग्रथ साहिब की बीड़, जो मखनशाह धीरमल के डेरे से ले आया था, वह भी माता जी के साथ ही पालकी में रख कर ले आये थे। गुरु जी ने कहा कि हम ने धीरमल की कोई चीज़ नहीं रखनी, तब सिक्खों ने बहुत कहा कि महाराज यह गुरुगद्दी की अमानत है। इसको आप पास ही रखो, तब आप ने कहा कि इससे धीरमल की आजीविका बनी हुई है। हम किसी की आजीविका नहीं मारना चाहते। इसको धीरमल के पास ही पहुँचा दो।

सिरी गुरू ग्रंथ साहिब को व्यास नदी में रखना

जब कोई भी सिक्ख धीरमल के पास सिरी ग्रंथ साहिब को ले जाकर देने के लिए तैयार न हुआ, तो गुरु जी ने इसे रुमालों में बाँध कर पलंघ पर रख कर नदी के गहरे पानी में एक तरफ करके रख दिया तथा एक सेवक के द्वारा धीरमल को संदेश भेज दिया कि हम सिरी ग्रंथ साहिब पलंघ सहित व्यास नदी में एक ठिकाने पर रख चले हैं, तुम अपना आदमी भेज कर ले जाओ।

यह संदेश लेकर धीरमल उस सिकख से ठिकाना पूछ कर नदी से बीड़ निकाल कर ले गया तथा अपने घर शीश महल में रखकर कढ़ाह प्रसाद की देग करवा कर बँटवाई तथा इस खुशी में रात को दीपमाला भी की। यह बीड़ आज तक शीशमहल में करतारपुर सुशोभित है। हर संक्रान्ति वाले दिन संगत को इसके दर्शन करवाये जाते हैं।

गुरु जी का कीरतपुर जाना

बकाले गाँव से चल कर गुरु जी कीरतपुर आ गये। इस समय यहाँ गुरु जी के बड़े भाई सूरज मल भी रहते थे। श्री गुरु हरि कृष्ण जी की माता कृष्ण कौर भी यहाँ ही रहती थीं।

कीरतपुर से आगे जाकर डेरा करना

बाबा सूरज मल चाहता था कि माता कृष्ण कौर गुरुगद्दी उसके पौत्र को दें तथा सिक्ख संगत को हुक्मनामे भेज दें कि गुरु यह हैं। परन्तु माता कृष्ण कौर जी ने जब बाबा सूरजमल की यह बात न मानी, तो गुरुगद्दी का सारा सामान शस्त्र-वस्त्र, जो श्री गुरु हरि कृष्ण जी ज्योति-ज्योत समाने समय छोड़ गये थे, श्री गुरु तेग बहादर जी को सौंप दिये। इस पर तो बाबा सूरजमल का परिवार उनके साथ कुछ ईर्ष्या करने लगा। इन का दुर्व्यवहार देख कर गुरु जी अपनी माता नानकी जी तथा सुपत्नी श्री गुजरी सहित अपने श्रद्धालु सिक्खों को साथ लेकर कीरतपुर से पाँच छः कोस आगे चले गये। वहाँ एक सुन्दर खुला स्थान देख कर मखनशाह और अपने सिक्खों की सलाह के साथ डेरा लगा लिया। कीरतपुर से होते हुये माता कृष्ण कौर जी से सारी बात पूछ कर कि अपने ज्योति-ज्योत समाते समय श्री गुरु हरि कृष्ण साहिब जी ने गुरुगद्दी पर श्री गुरु तेग बहादर जी को टिकाया है। आप जी के श्रद्धालु सिक्ख भी आप जी के पीछे-पीछे यहाँ आनंदपुर की भूमि पर गुरु जी के पास पहुँच गये और इन्हीं के साथ भाई झण्डा जी तथा गुरदित्ता जी पिता पुत्र बाबा बुड्ढा जी के वंश से भी आ गए।

इन्हों ने पिछली चली आ रही गुरु घर की मर्यादा के अनुसार गुरु जी को गुरुगद्दी का तिलक लगा कर दस्तारबंदी करवाई। जैसे-जैसे गुरुघर के श्रद्धालुयों को आप जी के यहाँ निवास का

पता लगा, वैसे-वैसे ही वे भेंट ले कर दर्शन करने के लिए हाज़िर होने लगे। संगत की आवाजाई को आप जी के पास देख कर धीरमल जी बहुत ईर्ष्या करते, परन्तु इन का कोई वश न चलता।

आनंदपुर की नींव रखनी

यहाँ गुरु जी ने डेरा किया था, वह गाँव माखोवाल की ज़मीन राजा बिलासपुर की मलकीयत थी। कुछ दिन यहाँ निवास करके जब गुरु जी ने देखा कि यहाँ किसी शरीक भाई की छेड़छाड़ का कोई डर नहीं है, तो आप जी ने अपने प्रमुख सिक्खों को बिलासपुर के राजे भीमचंद के पास भेजा कि हमको अपने निवास के लिए यहाँ ज़मीन मूल्य दे दो। राजे ने गुरु जी की यह बात मान ली तथा कुछ रक्म ले कर ज़मीन का पट्टा गुरु जी के नाम लिख दिया। तत्पश्चात् गुरु जी के निवास के लिए कमरे तैयार करवाये तथा श्रमकों को भी अपना काम-काज करने के लिए वहाँ आवास कराया।

ईर्ष्या से निकल कर यहाँ आनन्दमय वातावरण देखकर गुरु जी ने अपने इस निवास स्थान का नाम आनन्दपुर रखा। हर रोज़ शब्द कीर्तन, सतिनाम का उपदेश तथा गुरु का खुला लंगर चलता देखकर यह आनन्दपुर नाम सबने पसंद किया। इस नगर की नींव गुरु जी ने २६ असूज संवत् १७२१ विक्रमी को रखी।

इस स्थान के पास ही राक्षस बुद्धि वाला एक डाकू रहता था, जो माखो दैत्य करके प्रसिद्ध था। इसके हाथों यहाँ के तथा आसपास के लोग बहुत दुखी थे। इसने गुरु जी का प्रभाव तथा सिक्ख संगत का नाम वाणी का प्रवाह चलता देखा, तो वह इलाका छोड़ गया।

www.9009.co.in

एक पीर का भ्रम निवृत्त करना

एक दिन रोपड़ के रहने वाला एक पीर अपने मुरीदों से कार भेंट लेता हुआ आनंदपुर आया। गुरु जी के दरबार की महिमा, संगत का आना-जाना तथा लंगर चलता देख कर वह बड़ा प्रभावित हुआ। उसने एक सिक्ख को पूछा, यह किस गद्दी का गुरु है? सिक्ख ने कहा यहाँ इस समय गुरु नानक साहिब जी की गद्दी पर नवम् जगह श्री गुरु तेग बहादर जी हैं। पीर ने कहा बाबा नानक तो बड़ा बली पुरुष हुआ है, यदि यह उन्हीं की गद्दी पर है, तो इन में भी शक्ति होनी चाहिए। सिक्ख ने कहा गुरु जी पूर्ण शक्ति के मालिक तथा वैराग्य के पुंज हैं।

पीर ने कहा गृहस्थी है कि फ़कीर ? सिक्ख ने कहा गुरु जी गृहस्थी हैं। गुरु नानक साहिब भी गृहस्थ थे। पीर ने कहा वैराग्यमय गुरु पीर हो कर फिर यह गृहस्थ का आडम्बर क्यों?

तत्पश्चात् पीर ने गुरु जी के दर्शन करके जब यही सवाल पूछा, तो गुरु जी ने कहा कि साईं लोगो ! गृहस्थ सब धर्मों से ऊँचा है। जो सारे पीरों-फ़कीरों, ऋषि-मुनियों को पैदा करता है। फिर सब की गुजरान का आधार रहता है, जो पुरुष गृहस्थ धर्म में पूरे उतरते हैं, उन्हें अन्तिम समय मुक्ति प्राप्त होती है। गृहस्थ का धंर्म है, अतिथि की सेवा करनी तथा अपनी नेक कमाई में से पुण्य दान करना ऐसा गृहस्थी परमसुख प्राप्त करता है।

गुरु जी से यह बात सुन कर पीर ने गुरु जी को नमस्कार किया तथा कहा कि मुझे अब इस बात की समझ आ गई है कि गृहस्थ धर्म पुरुष का मुख्य उद्देश्य है। इसको बुरा समझना एक बड़ी भूल है।

www.9009.co.in

तीर्थ यात्रा के लिए जाना

गुरु जी भले ही सब ईर्ष्यालुओं से दूर जा टिके थे, परन्तु फिर भी धीरमल तथा रामराय जी गुरुगद्दी की प्राप्ति के लिए दिल्ली के हाकमों से विचारविमर्श करते रहते थे। जब गुरु जी को इस बात का पता लगा कि इन गुरुगद्दी के लोभियों के मन से अभी ईर्ष्या की आग नहीं बुझी, तो आप जी ने तीर्थ यात्रा करने का विचार बना लिया।

आप ने विचार किया कि इस यात्रा से एक तो तीर्थों का स्नान तथा गुरु घर का प्रचार करने का अवसर मिल जायेगा, दूसरे इन शरीकों से दूर चले जाने से यह सुख प्रतीत करेंगे। इस लिए कुछ समय के लिए यहाँ से चले जाना ही अच्छा है।

यह विचार माता जी, मामा कृपाल जी तथा और सिक्खों के साथ करके आप जी ने पीछे के काम-काज के लिए भाग मल आदि सिक्खों को सौंप करके प्रस्थान की तैयारी कर ली। माता नानकी जी, श्री महिल गुजरी जी, इन्हीं का भाई कृपाल चंद जी तथा कुछ और श्रद्धालु सिक्खों को साथ ले कर आनंदपुर से दो कोस पर जा डेरा किया। यहाँ रात विश्राम करके आगे चल पड़े तथा रोपड़ नगर पार करके मूलोवाल जा कर विश्राम किया।

खारा कूआँ मीठा करना

गाँव मूलोवाल आप जी की मईया व गोदे ने काफी सेवा की। महाराज ने अपने पीने के लिए पानी मँगवाया, तो वह बहुत खारा था। आप ने पूछा यहाँ कोई कूआँ मीठे पानी का नहीं है? तब मईए ने कहा कि महाराज ! मीठे पानी का कूआँ गाँव से बहुत दूर है, यदि हुक्म करो, तो वहाँ से पानी लाऊँ। आप ने वचन किया जाओ वाहिगुरु कहकर यहाँ से ही हमारे पीने के लिए जल ले आओ।

www.9009.co.in

यही मीठा हो जाएगा। गुरु जी का वचन मान कर गोंदा जब पानी लाया, तो उसको पीकर आप जी ने कहा यह जल बहुत ठंडा तथा मीठा है। आज से यह कूआँ गुरु का कहावेगा। जब लोगों को पता लगा कि गुरु जी के वचनों से खारे कूएँ का पानी मीठा हो गया है, तो सब संगत श्रद्धा से भेंट लेकर आप के दर्शन को आई। यहाँ आप ने दो दिन विश्राम किया तथा मईए के प्रेम तथा श्रद्धा पर खुश होकर उस को गाँव का चौधरी बना दिया।

सेक्खों गाँव का चौधरी तिलोका

मूलोवाल से चल कर गुरु जी ने सेक्खों गाँव से बाहर वृक्षों की छाया के नीचे जल के किनारे जा डेरा किया। इसका चौधरी तिलोका एक बैरागी का चेला था। उसने अपने गुरु को पूछा कि मैं इन के दर्शन करने जाऊँ कि न? बैरागी ने सोचा कि गुरु जी की बड़ी महिमा है, यदि उनके पास गया, तो फिर ऐसा न हो कि उन्हीं का सिक्ख बन जाए। फिर इस को देख कर मेरे और चेले भी मुझे छोड़ जाएँगे। इस लिए इस को उन के पास नहीं जाने दिया जाये। यह विचार करके बैरागी ने कहा कि दूसरे मत वालों को मिलना ठीक नहीं है, तुम उन को मिलने न जाओ।

दूसरे दिन कुछ आदमी गुरु जी के पास बैठे थे कि अचानक एक दिन चौधरी तिलोका जवंदा भी उधर चला गया, परन्तु गुरु जी को बैठे देख कर पीछे लौट गया। आपने पूछा यह कौन था, जो हमको देखकर तुरन्त पीछे लौट गया है। गाँव वालों ने बताया कि महाराज, यह जवंदा चौधरी तिलोका था। यह बाईस गाँव का सरदार है। आप ने उसको बहुत अहंकारी देखकर वचन किया न कोई बाईस तथा न कोई तेईस ही रहेगा। न यह सरदार रहेगा और न इस के पास सरदारी ही रहेगी। सो समय के साथ गुरु जी का वचन सत्य हुआ तिलोके चौधरी का सब चौधरपन जाता रहा।

www.9009.co.in

हडियाए नगर, बुखार रोग दूर किया

सेखें से चल कर गुरु जी हडियाए नगर से बाहर बरगद के वृक्ष के नीचे आ ठहरे। उस समय उस गाँव का एक बीमार आदमी लेटा हुआ था। बुखार के साथ उसकी हडियाँ टूट रही थीं। गुरु जी ने पूछा इसको घर क्यों नहीं ले जाते? उसके घर वालों ने कहा कि महाराज ! गाँव में बुखार का बड़ा ज़ोर है, कोई विरला ही बचा है। बहुत लोग मर भी गए हैं।

वहाँ पास ही पानी का एक जौहड़ था। गुरु जी ने कहा इसे इस में स्नान करा दो। बुखार अभी उतर जाएगा। गुरु जी का वचन मानकर उन्हों ने जब उसे उठा कर जौहड़ में स्नान कराया, तो उसका बुखार शीघ्र ही उतर गया। बीमार आदमी स्वस्थ होकर बैठ गया। जब इस बात का गाँव के अन्य लोगों को पता लगा, तो वे सारे बीमारों को साथ ले कर गुरु जी की शरण आ गए और बीमारों को जौहड़ में स्नान करा कर स्वस्थ कर दिया। यह कौतुक देख कर सारे लोग भेंट ले कर गुरु जी के दर्शन करने आए और सतिनाम का उपदेश ले कर सिक्ख बन गए।

गुरु जी ने यहाँ एक धर्मशाला और लंगर चलाने का हुक्म देकर आगे चले गए। इस जौहड़ को संगत ने पक्का सरोवर करा दिया, जिसका नाम 'गुरुसर' प्रसिद्ध है। संगत ने इसके पास ही गुरु जी की आज्ञा के अनुसार धर्मशाला तैयार करा दी।

गाँव ढिलवां गाए दान और यज्ञ करना

हडिआए से चल कर गुरु जी दो कोस पर गाँव सोहीवाल और कैल से ढिलवां आ गए। ढिलवां आ कर आप जी ने अच्छा स्थान देख कर डेरा कर लिया। दूसरे दिन एक पर्व (कत्तक की पूनिया) थी। आप जी ने इसे शुभ दिन विचार करके इकोत्र सौ गाए

www.9009.co.in

मँगवाई और एक तपस्वी जो गऊएँ पालता था, उसे दान कर दीं। जिस समय गुरु जी ने गाए दान संकल्प करके चुली छोड़ी, तो तपस्वी का रंग काला हो गया। तब तपस्वी ने प्रार्थना की महाराज! मेरा यह कष्ट दूर करो मैं कुरूप हो गया हूँ। तब गुरु जी ने उस के सिर के ऊपर हाथ रख कर उस का काला रंग पहले की तरह साधारण कर दिया। तद्उपरान्त गुरु जी ने बड़ा भारी यज्ञ किया, जिस में सब को कढ़ाह, पूरी और अनेक प्रकार के भोजन कराये और बाह्मणों को दान दिया।

गुरु जी का प्रताप देखकर तपस्वी का सिक्खी धारण कर लेना

गाँव भंदेर और अलीशेर के लोगों का भोलापन

ढिलवां से चल कर गुरु जी भंदेर गाँव आए, परन्तु यहाँ अधिकाँश लोगों ने देखकर गुरु जी ने अलग गाँव अलीशेर जा डेरा किया। बाद में जब भंदेर के लोगों को पता लगा कि गुरु जी हडियाए गाँव में बुखार की बीमारी दूर करके आए हैं, तो वह भी सारे सलाह करके गुरु जी के दर्शन करने के लिए तैयार हो गए। भेंट देने के लिए इन्हों ने एक-एक टका इकट्‌ठा करके एक थैली भर ली और साथ ही एक रोड़ी गुड़ की ले कर अलीशेर गाँव की ओर प्रस्थान किया। रास्ते में इनको आगे गुरु जी की ओर आता हुआ एक सिक्ख मिला। इन्हों ने उस को पूछा कि गुरु जी किस भेंट पर प्रसन्न होकर दर्शन देते हैं? सिक्ख ने कहा कि गुरु जी सदा ही प्रसन्न हो कर दर्शन देते है। अर्थात् कोई भेंट कुछ दे तथा भले ही कुछ न दे, गुरु जी अपनी ओर से हर एक को प्रसाद देते हैं।

www.9009.co.in

ऐसा सुनकर यह लोग बड़े ख़ुश हुए और यह परामर्श किया कि यदि गुरु जी भेंट के बिना ही प्रसन्न होकर दर्शन दे दें, तो फिर गुड़ की रोड़ी भेंट करने का क्या लाभ? यह सलाह करके इन्हों ने गुड़ की रोड़ी आपिस में बाँट कर खा ली और पैसों की थैली एक गड्ढे में दबा दी कि गुरु जी से वापिस आते हुए ले जायेंगे।

तत्पश्चात् अपनी-अपनी माँगें—कोई दूध, कोई पुत्र, कोई धन और कोई स्त्री, पुत्र का सुख माँगने लगा। गुरु जी ने वचन किया कि भाई ! यह गुरु नानक जी का घर है। जैसी श्रद्धा के साथ आता है, वैसी ही उसे मुराद मिलती है। यह उत्तर सुन कर वह माथा टेक कर चले गए।

गाँव अलीशेरवासियों ने भी जब सलाह की कि गुरु जी को भेंट क्या देनी चाहिए, तो एक ने कहा भंदेरां के लोग गुरु जी के पास आए हुए हैं, उन्हें पूछ लो कि उन्हों ने क्या भेंट दी है। जब भंदेर निवासियों से मिलकर पूछा, तो उन्हों ने कहा कि हम गुरु जी को कुछ भी भेंट नहीं किया। गुरु जी ने हमें ख़ुश हो कर दर्शन और प्रसाद दिया है।

यह बात सुन कर अलीशेर वाले भी खुश हो गए और खाली हाथ ही जा कर गुरु जी को नम्रतासहित माथे टेकने लगे और गुरु जी से प्रसाद ले कर खाली ही बिना कोई मुराद पूरी किये घरों को चले गए।

खीवा कलां के मनमुख लोग

अलीशेर से गुरु जी जोगे गाँव गए। यहाँ के लोग जब गुरु जी के दर्शन करने के लिए आए, तो आप जी ने भूपालां गाँव जा कर डेरा लगाया और वहाँ रात व्यतीत करके खीवा कलां जा ठहरे। इस गाँव का एक किसान सिंघा गुरु जी के रोज़ दर्शन करने आता

और दो तीन घड़ी बैठा रहता। एक दिन जब वह माथा टेक कर झटपट ही उठकर चला गया, तो गुरु जी ने पूछा आज क्यों जल्दी उठ चले हो? सिंघा ने कहा गुरु जी आज एक व्यक्ति के घर सगाई है। वहाँ सब को गुड़ मिलना है, मैं वहाँ अपना हिस्सा लेने के लिए जा रहा हूँ। गुरु जी ने वचन किया कि तुम धैर्य सहित बैठे रहो तुम्हें घर बैठे ही दो बाँटने आ जाया करेंगे। गुरु जी का वचन मान कर सिंघा वही बैठा रहा।

उधर जिस के घर सगाई थी, उसे जब पता लगा कि सिंघा गुरु जी के पास बैठा है, तो गाँव के चौधरी ने कहा कि साधु संत के पास जाना ठीक है। आगे से तुम्हें उसे दो बाँटने वाले दिया करो, यदि वे आप लेने न आये, तो उस के दे आया करो। उस दिन से सिंघा को दो बाँटने वाले मिलने लगे।

सिंघा के बिना इस गाँव का और कोई भी आदमी गुरु जी के दर्शन करने नहीं आया।

भिखीविंड गाँव का देसू सरदार

खीवा कलां से चल कर गुरु जी एक दो स्थानों पर डेरा करके सिक्ख संगत को निहाल करते हुए भिखीविंड आ गए। यहाँ एक चाहल गोत का देसू सरदार रहता था। यह सरवर का शिष्य था। एक दिन कुछ सिक्खों की प्रेरणा करके वह गुरु जी के दर्शन करने आया, तो सरवर की खूण्डी गले में डाली हुई थी तथा उसका वेश भी सरवरियों वाला धारण किया हुआ था। गुरु जी ने पूछा देसू सरदार यह क्या भेस धारण किया है? देसू ने कहा कि महाराज ! मैं सुलतान सरवर का शिष्य हूँ, जिसकी कृपा से दूध, पुत्र, धन, दौलत सब कुछ प्राप्त होता है। गुरु जी ने कहा कि तुर्क का सेवक बन कर अपना जन्म वृथा न गँवाओ। यह भेस छोड़ दो,

सिक्खी का वेश धारण करो। देसू ने कहा कि 'महाराज ! आप जी के दर्शन करके मेरा मन प्रेरित हो गया है। आप कृपा करके मुझे अपना सिक्ख बना लो, परन्तु मेरी सरदारी इसी तरह ही बनी रहे और मेरे परिवार में सुख बना रहे।

गुरु जी ने वचन किया कि सखी सरवर की मंनत और वेश त्याग कर तुम एक धर्मशाला बनवाओ। सतिसंग किया करो, लंगर चलाना, सतिनाम का जाप और गुरु नानक देव जी के चरणों का ध्यान धरना, तेरी सरदारी भी बनी रहेगी और घर में सुख भी रहेगा।

गुरु जी का वचन मान कर देसू ने उसी समय सखी सरवर की खूण्डी गले में से निकाल दी और सरवरी वेश त्याग दिया। गुरु जी ने प्रसंन हो कर उसे पाँच तीर दिये और कहा कि इन्हें अपने पास रखो। सारे शूरवीर तेरे पास हाज़िर रहेंगे। कोई दुश्मन तेरे आगे नहीं टिकेगा।

यह वरदान लेकर देसू ने खुश हो कर गुरु जी की हर प्रकार की सेवा बड़े प्रेम से की। यहाँ गुरु जी दस दिन टिके रहे। देसू सरदार को देख कर गाँव के कई लोगों ने भी गुरुसिक्खी धारण कर ली।

तद्उपरान्त देसू ने अपनी स्त्री के कहने पर गुरु जी के दिये हुए पाँच तीर तोड़ कर फैंक दिये और सरवर पीर के चिह्न खूण्डी आदि को फिर से गले में डाल लिये। इस बात का जब गुरु जी को पता लगा, तो आप जी ने वचन किया कि हम ने उसे पाँच पीरों की छाप वाले पाँच तीर दिये थे, उसने वे अपनी स्त्री के कहने पर तोड़ कर मूर्खता की है। उसने अपना वंश नाश कर लिया है। कुछ समय के पश्चात् गुरु जी के वचन सत्य हुए और देसू की सारी कुल का नाश हो गया।

सूलीसर, एक चोर की वार्ता

मौड़ गाँव से चल कर गुरु जी ने सूलीसर आ कर आवास किया। रात के समय जब गुरु जी के सब साथी सो गये, तो दो चोर जिन में एक हिन्दू और एक मुसलमान था, गुरु जी के घोड़े खोलने के लिए आए। परन्तु गुरु जी का प्रभाव देख कर मुसलमान चोर आप जी को नमस्कार करके घर को चला गया। परन्तु हिन्दू चोर समय देख कर घोड़ा चुरा कर ले गया। जब पहरेदार ने गुरु जी को यह बात बताई कि कोई चोर घोड़ा ले गया है, तो आप जी ने वचन किया कि जिसने यह कर्म किया है, वह इसका फल पाएगा। जब सुबह हुई, दिन निकला, तो सिक्ख जो घोड़े के निशान के पीछे लगे हुए थे। घोड़े सहित चोर को पकड़ कर गुरु जी के पास ले आए।

गुरु जी ने चोर को कहा, तुम सारे संसार को लूट कर खाते फिरते हो, फ़कीरों को भी नही छोड़ते। संतों, साधुओं, फ़कीरों की चोरी करनी महा पाप है। इसकी सज़ा तो तुम्हें सूली मिलनी चाहिए है, परन्तु हम यह काम नहीं करना चाहते । यह कह कर गुरु जी ने चोर को छोड़ दिया।

चोर ने कहा कि महाराज ! जो सज़ा का अधिकारी आप जी ने मुझे वचन किया है। वह ज़रूर हो कर रहेगा। अब मैं अपना मरना ही अच्छा समझता हूँ। यह कह कर चोर एक जंड के वृक्ष पर चढ़ गया और उस ने एक टाहनी के सिरे पर पेट के बल लेट कर अपने बल के साथ ही दबा कर जीवन नाश कर दिया। इस स्थान का नाम अलीसूर प्रसिद्ध है।

धमधान गाँव-दूध लहू के समान

सूलीसर से चल कर गुरु जी बर गाँव और यहाँ के लोगों का व्यवहार अच्छा न देख कर गुरु जी गुरने गाँव आ गए। तीन दिन

www.9009.co.in

यहाँ ठहर कर आप जी मकरोड़ गाँव से होते हुए धमधान गाँव आ गए। आप जी के दर्शन करने के लिऐ बहुत लोग आए। एक जट्ट ने दूध का भरा हुआ मटका गुरु जी के आगे रख कर माथा टेका। गुरु जी ने दूध को देख कर कहा यह दूध लहू के समान है, इसको ले जाओ। यह हमारे काम का नहीं है। जट्ट ने कहा कि महाराज ! मैं अपनी भैंस का दूध बड़े प्रेम के साथ आप जी के पीने के लिए धोकर लाया हूँ। मेरी भैंस का बच्चा मर गया है। उसे मैंने मूड़ा दे कर सारा दूध धो कर आप के लिए लाया हूँ। उसकी बात को सुन कर गुरु जी बोले कि बांगर के लोग बड़े कठोर हैं, जो बुज्जे दे कर ज़ोर के साथ भैंस, गाय को चो लेते हैं। इस तरह का चोया हुआ दूध पशु के लहू समान होता है, जो आदमी के पीने योग्य नहीं होता। यह वचन करके गुरु जी ने दूध वापिस कर दिया।

यहाँ बहुत दिन गुरु जी ने टिक कर दर्शन अभिलाषियों की मनोकामनाएँ पूरी की और उन्हें खुशी बख्शते रहे।

धमधान के एक लोभी जिमींदार

इस नगर का एक और जिमींदार गुरु जी की बड़े प्रेम के साथ सेवा करता था। उसकी सेवा पर प्रसन्न हो कर गुरु जी का जितना धन संगत की ओर से भेंट का इकट्ठा होता था, सारा ही उसको दे दिया और वचन किया कि इस धन के साथ नगर में कूआँ लगवाओ और उसके पास ही धर्मशाला भी बनवाओ। पास ही फलदार वृक्षों का बाग लगवाओ। यदि इस धन के लालच करके इसे अन्य प्रकार से खर्च करेगा, तो सब कुछ निष्फल हो जाऐगा।

जब गुरु जी आगे चले गए, तो जिमींदार ने लोभ करके इस धन का कूआँ अपनी खेती में लगवाने की सलाह कर ली। उसने कारीगरों को बुला कर जब कूएँ का पाड़ खोद कर उस में चक्क

उतारा, तो वह वहाँ ही ठहर गया। बहुत ज़ोर लगाने पर भी चक्क नीचे न उतरा। इस कूएँ की खुडल आज तक जिमींदार के खेत में उजाड़ है। इस तरह गुरु जी के वचनों की उलंघना करके जिमींदार ने यह सारा धन निष्फल ही गँवा लिया।

कुरुक्षेत्र में सुरस्ती तीर्थ

धमधान से चल कर गुरु जी कुरुक्षेत्र में सुरस्ती तीर्थ के किनारे जा ठहरे। गुरु जी ने वहाँ के निवासियों को पूछा यहाँ कोई गुरु घर का सिक्ख भी रहता है कि नहीं? एक आदमी ने बताया कि महाराज ! यहाँ एक बढ़ई सिक्ख रहता है। जब उस सिक्ख को पता लगा, तो वह आप गुरु जी को मिलने आया। बड़े सतिकार के साथ चरणों पर माथा टेका और प्रेम सहित उन्हें अपने घर ले गया। यथाशक्ति अन्न जल की सेवा करके गुरु जी की खुशी ली। गुरु जी रात वहाँ विश्राम करके प्रातः काल उठ कर सुरस्ती नदी में स्नान करके अपने निज स्वरूप का ध्यान धारण करके बैठ गए।

सूर्योदय के समय जब ब्राहमण लोग भी नदी पर आए, तो गुरु जी ने सब को दान दिया। वे दान ले कर गुरु जी की महिमा करते हुए घर को आ गए। गुरु जी ने इस बढ़ई सिक्ख के पास तीन दिन विश्राम किया।

कैथल डेरा

बढ़ई सिक्ख को साथ ले कर गुरु जी कैथल आए। कैथल यहाँ से आठ कोस था। कैथल में सिक्खों के तीन घर थे। दो बानीऐ के और एक बढ़ई का। बढ़ई सिक्ख गुरु जी को अपने जातीय भाई सिक्ख के घर ले गया। जब उसे पता लगा कि गुरु जी आप चल कर मेरे घर आए हैं, तो उस ने गुरु जी का डेरा करवा कर बड़ी श्रद्धसहित इनकी सेवा की।

तद्उपरान्त दो बानीए सिक्ख भी गुरु जी का आगमन सुन कर दर्शन करने आए और भेंट अर्पण करके गुरु जी की खुशी प्राप्त की।

बारने गाँव ज़िमींदार से तम्बाकु छुड़ाना

कुछ दिन कैथल विश्राम करके गुरु जी बारने गाँव आ गए। इस गाँव के बाहर ही आवास करके गुरु जी ने एक आदमी को पूछा, यहाँ कोई गुरु नानक जी का सिक्ख रहता है। उसने कहा कि महाराज ! यहाँ जिमींदार सिक्ख रहता है। गुरु जी ने कहा उसको बुला लाओ। वह आदमी जा कर जिमींदार सिक्ख को बुला लाया। जिमींदार ने आ कर गुरु जी के चरणों पर माथा टेका और प्रार्थना की कि आप मेरे घर चल कर विश्राम करो। मैं अपनी खेती की कूत (मिनती) करा आऊँ। गुरु जी ने वचन किया कि हमारे साथ घर चलो, तुम्हारी खेती का गुरु रखवाला है। तुम कूत कराने न जाओ। जिमींदार ने कहा कि महाराज ! आप घर चलो मैं शीघ्र ही काम करके आ जाता हूँ। यह बात कह कर वह चला गया। जब उसकी खेत की कूत (मिनती) हुई, तो वह जो पहले दो सौ विघा थी, अब वह एक सौ विघा हुई। उस के शरीकों ने कहा कूत करने वाला रिश्वत खा गया है। कूत दुबारा होनी चाहिए। जब खेती की दोबारा मिनती की गई, तो वह फिर सौ विघा ही हुई। इस बात से जिमींदार का गुरु जी पर विश्वास हो गया कि यह सब उनकी ही कृपा है। जिमींदार ने घर आ कर गुरु जी के चरणों पर माथा टेका और कूत की सारी बात बताई। गुरु जी को अपने घर डेरा करा कर बहुत सेवा की।

रात को विश्राम करके गुरु जी ने प्रातः काल उठ कर स्नान किया और जिमींदार को बुला कर वचन किया कि आज से तुम

तम्बाकू पीना छोड़ दो और सिक्ख संगत की सेवा किया करो। तुम्हारा परलोक सुधर जाएगा। तुम्हारा वंश जब तक हुक्के का त्याग करके खेती करेगा तब तक बहुत बढ़ेगा। परन्तु यदि हुक्का तम्बाकू पीना आरंभ कर देगा, तो कंगाल हो जाएगा, सारा धन जाता रहेगा। गुरु जी का वचन मान कर जिमींदार ने गुरु जी के चरणों पर नमस्कार किया और हुक्का पीना छोड़ दिया।

भाई संतोख सिंह जी लिखते हैं कि यह हम ने आँखों देखा है कि जब उसकी कुल का एक आदमी हुक्का पीने लग गया, तो वह अति गरीब हो गया।

थानेसर मेला-सूर्य ग्रहण

बारने गाँव से चल कर गुरु जी थानेसर आए। उन दिनों में ही सूर्य ग्रहण का मेला था और बहुत श्रद्धालु लोग एकत्र हो रहे थे। गुरु जी ने गाँव की उत्तर दिशा में आवास कर लिया। गुरु जी का आगमन सुन कर बहुत सिक्ख सेवक तथा अन्य संगत गुरु जी के दर्शन करने आई। कई वेशों के साधु संत भी गुरु जी के पास आए। गुरु जी ने सब के साथ प्रेमपूर्वक वचन किये। जिन्हें सुन कर कई श्रद्धालुयों के मन गुरु वचनों से तृप्त हो गए और कई ईर्ष्यालु ईर्ष्या अग्नि में ही जलते रह गए।

गुरु जी का दानी स्वभाव करके और गंभीर वचनों के द्वारा बहुत यश फैल गया। कई साधु संत आप जी के साथ रहने के लिए तैयार हो गए।

बनी बदरपुर

सूर्य ग्रहण के बाद दूसरे दिन गुरु जी यहाँ से चल कर ग्यारह कोस पर बनी बदरपुर नगर जा ठहरे। यहाँ गुरु जी के दर्शन करने के लिए बहुत संगत आई और उन्हों ने खाने-पीने की सेवा की।

दूसरे दिन किसी दूर प्रदेश की संगत गुरु जी के दर्शन करने आई। संगत ने गुरु जी को बहुत धन भेंट किया। गुरु जी ने सब को सिरोपा दिये। कई मसंद भी खबर सुन कर आ गए और उन्हों ने गुरु जी को धन की एक थैली, जो उन्हों ने संगत से लै कर इकट्ठा किया था, भेंट की। यह धन की भरी हुई थैली गुरु जी ने उस राहक को दे दी और वचन किया कि इस धन के साथ यहाँ एक कूआँ और कुछ छायादार वृक्ष लगवा दो। जो धन बाकी बच जाये, उसका लंगर लगाना और भूखे राही मुसाफिरों को रोटी-पानी देना। यदि इस तरह ही इस धन को खर्च करोगे, तो आपको बहुत सुख की प्राप्ति होगी। इस थैली (बदरा) लेने के कारण ही इस गाँव का नाम बनी बदरपुर प्रसिद्ध हो गया। जिमींदार ने जो कूआँ तथा वृक्ष लगवाए थे, वे आज तक स्थित हैं और इसके साथ गुरुद्वारा भी बना हुआ है।

सुढैल गाँव ब्राह्मणों को दान

यहाँ से चल कर गुरु जी ने सुढैल गाँव से बाहर वृक्ष के नीचे जा कर आवास किया। यहाँ रात का विश्राम करके दस कोस की मंज़िल तह करके यमुना नदी के किनारे जा ठहरे। यहाँ के घाट के ब्राह्मणों को गुरु जी ने दान दिया और एक बेड़ी मँगवा कर यमुना से पार हो गए। जहाँ से गुरु जी अपने जत्थे के साथ दिन प्रतिदिन छोटी-छोटी मंज़िलें तह करके सिक्ख संगत को दर्शन उपदेश के द्वारा निहाल करके अपनी तीर्थ यात्रा की मंज़िल पर चले जा रहे थे।

बड़ा मानक पुर संत मलूक दास का भ्रम दूर करना

इसी तरह ही चले जा रहे गुरु जी बड़े मानकपुर नगर के पास जा ठहरे। इस गाँव में एक वैष्णव संत मलूक दास रहता था। वह

www.9009.co.in

गुरु जी के दर्शन करना चाहता था, परन्तु वह मन में यह निश्चय धारण करके घर ही बैठा रहा कि यदि गुरु जी अन्तर्यामी हैं, तो मेरे मन की अवस्था जान कर मुझे आप ही बुला लेंगे और दर्शन दे कर निहाल करेंगे।

मलूक दास की प्रतिज्ञा जान कर अन्तर्यामी गुरु जी ने अपने एक सिक्ख को कहा कि मलूक दास के डेरे जा कर उसे पालकी में बैठा कर हमारे पास ले आओ। जब सिक्ख ने मलूक दास को जा कर बताया कि गुरु जी उसे याद कर रहे हैं। पालकी में बैठ जाओ, हम आप को ले चलते हैं। तो गुरु जी का यह हुक्म सुन कर मलूक दास बहुत प्रसन्न हुआ और पालकी में बैठ कर गुरु जी के पास पहुँच गया। पालकी में से उतर कर उस ने पहले गुरु जी के चरणों पर माथा टेका और फिर यह दोहरा उच्चारण किया—

मलूका पापी खेड को भगति न जानी तोहि।।
भगति लिखी थी और को प्रभू धोखा दे मोहि।। ४७।।

गुरु जी ने कहा—

सुनि मलूक हरि के भगति नहि राखो मन दरोहि।।
भगति लिखी थी अवर को करि किरपा दई तोहि।। ४९।।

गुरु जी के वचन सुन कर और दर्शन करके मलूक दास आनंदमय हो गया। उसने हाथ जोड़ कर प्रार्थना की कि आप मेरे डेरे चलो। मैं भी आप जी की सेवा करके जन्म सफल कर लूँ। उस की प्रार्थना स्वीकार करके गुरु जी उस के डेरे चले गए। मलूक दास ने भोजन तैयार करके थाल परोस कर गुरु जी के आगे रख कर विनय की कि महाराज ! पहले मैं पत्थर के ठाकरों को भोग लगाया करता हूँ। आज आप प्रत्यक्ष ठाकर मेरे पास बैठकर भोग लगा रहे हो। मेरा सौभाग्य है। मेरा सारा भ्रम दूर हो गया है। अब

मैं प्रत्यक्ष ठाकर की पूजा ही किया करूँगा, आप की कृपा से ठाकर पूजा बालकों का खेल समझता हूँ। मलूक दास के पास एक रात विश्राम और वार्तालाप करके गुरु जी दूसरे दिन प्रातः काल ही मलूक दास को खुशी देकर आगे की ओर चल पड़े।

पूर्व प्रदेश की संगत का प्रेम और श्रद्धा

पूर्व प्रदेश की संगत बहुत श्रद्धालु थी, परन्तु दूर का रास्ता होने के कारण उनको गुरु जी के दर्शन शीघ्र प्राप्त नहीं होते थे। अपने प्रदेश बैठे ही गुरु जी की अराधना करते रहते थे कि गुरु जी कृपा करके हमें अपना दर्शन दे कर हमारा जन्म सफल करें। हर एक सिक्ख ने गुरु जी के लिए कोई न कोई सुन्दर चीज़ भेंट करने के लिए तैयार करके रखी हुई थी।

जब जोड़ मेला होता था, तो हाथ जोड़ कर अरदास करते थे कि हे अन्तर्यामी ! सरबत संगत की भावना को जानने वाले गुरु जी अपने वृद्ध की लज्ञा रखो। जो चीज़ें हमने आप जी के निमित्त बनाई हुई हैं, उन को अंगीकार करके हमारी सेवा स्वीकार करो आदि। इन पूर्वी प्रदेशों की संगत का प्रेम-नेम और श्रद्धा जान कर गुरु जी ने तीर्थ यात्रा का बहाना बनाया और नगर शहरों की संगत का उद्धार करते हुए प्राग राज त्रिवेणी पहुँच गए।

प्राग राज निवास

गुरु जी का प्राग राज आना सुन कर असंख्य श्रद्धालु आप जी के दर्शन करने के लिए आने लगे। यथाशक्ति भेंट अर्पण करके और दर्शन परस कर अपना जन्म सफल करने लगे।

पहले सारा दिन गुरु जी त्रिवेणी स्नान करके संगत को दर्शन और ब्राह्मणों को दान देते रहे। बाद में संगत ने शहर में एक हवेली सुधार कर उस में आप जी का परिवार सहित निवास करा दिया।

यहाँ गुरु जी के दर्शन करके अपना जन्म सफल करने के लिए बहुत श्रद्धालु आने शुरु हो गये। सब कोई अपनी श्रद्धा और शक्ति के अनुसार भेंट अर्पण करके गुरु जी की खुशी प्राप्त करके आनंद प्राप्त करता। दूर-दूर से आई हुई संगत के लिए गुरु जी ने अटूट लंगर लगा दिया। सब कोई लंगर से भोजन खा कर तृप्त होता।

श्री दसमेश जी का गर्भ प्रवेश

प्राग राज के निवास समय एक दिन माता नानकी जी ने स्वाभाविक श्री गुरु जी को कहा कि बेटा ! आप जी के पिता जी ने एक बार मुझे वचन दिया था कि तेरे घर तलवार का धनी बड़ा प्रतापी शूरवीर पौत्र ईश्वर का अवतार होगा। मैं उनके वचनों को याद करके प्रतीक्षा कर रही हूँ कि आप के पुत्र का मुँह मैं कब देखूँगी। बेटा जी ! मेरी यह मुराद पूरी करो, जिस से मुझे सुख की प्राप्ति हो।

अपनी माता जी के यह मीठे वचन सुनकर गुरु जी ने वचन किया कि माता जी ! आप जी का मनोरथ पूरा करना अकाल पुरुष के हाथ में है। हमें भरोसा है कि वह आप के घर तेज़ प्रतापी ब्रह्मज्ञानी पौत्र देंगे।

गुरु जी के यह आशावादी वचन सुन कर माता जी बहुत प्रसन्न हुए। माता जी के मनोरथ को पूरा करने के लिए गुरु जी नित्य प्रति प्रातः काल त्रिवेणी स्नान करके अन्तर्ध्यान हो कर वृत्ति जोड़ कर बैठ जाते और पुत्र की प्रप्ति के लिए अकाल पुरुष की आराधना करते।

श्री गुरु जी की नित्य अराधना और याचना अकाल पुरुष के दरबार में स्वीकार हो गई। उसने हेंमकुन्ट के महा तपस्वी दुष्ट दमन को आप जी के घर माता गुजरी जी के गर्भ में जन्म लेने की

www.9009.co.in

आज्ञा की, जिसे स्वीकार करके श्री दुष्ट दमन (दसमेश) जी ने अपनी माता गुजरी जी के गर्भ में आकर प्रवेश किया।

श्री दसमेश जी अपनी जीवन कथा बिचित्र नाटक में लिखते हैं—

चौपई।।

मुर पित पूरब कीयसि पयाना ।। भांति भांति के तीरथि नाना।।
जब ही जात त्रिबेणी भए।। पुन्न दान दिन करत बितए।। १।।
तही प्रकास हमारा भयो।। पटना सहर बिखे भव लयो।। २।।

(दशम-ग्रंथः बिचित्र नाटक, ७वां अध्याय)

श्री गुरु जी का काशी जाना

गुरु जी लगभग छः महीने प्राग राज में निवास करके अगले प्रदेशों की संगत का उद्धार करने के लिए यहाँ से चल पड़े। मार्ग में श्रद्धालु प्राणियों को नाम दान का उपदेश देते हुए काशी पहुँच गए। आप जी का यहाँ पर आगमन सुन कर संगत दर्शन करने आई। एक दिन आप जी के पास काशी नगर के पंडित चर्चा करने के लिए आए। बातचीत के दौरान गुरु जी से अपने भ्रम निवृत्त करके पंडित बहुत प्रसप्न हुए और गुरु जी की महिमा करने लगे। यहाँ आप जी के पास संगत का आना-जाना करके भीड़ लगी रहती थी। आस-पास की संगत भेंट ले कर दर्शन करने आती और अपना जन्म सफल करके गुरु जी की महिमा का गायन करती।

जौनपुर की संगत के मुखी गुरबख्श को वरदान

आप जी की महिमा को सुनकर जौनपुर की संगत भी आप जी के दर्शन करने आई। इस संगत के मुखी भाई गुरबख्श ने सारी रात गुरु जी की उपस्थिति में कीर्तन किया। जिस से प्रसन्न हो कर गुरु जी ने भाई गुरबख्श को वचन दिया कि भाई गुरबख्श !

तुम्हारी यमों की फाँसी को तोड़ दिया है। तेरे घर जो पुत्र होगा, वह भक्ति भाव के साथ कीर्तन किया करेगा। संगत बड़े प्रेम के साथ सुना करेगी। इस तरह गुरु जी की खुशी प्राप्त करके भाई गुरबख्श अपनी संगत के साथ प्रसन्नतापूर्वक चला गया।

सासाराम नगर चाचे फग्गू का प्रेम

काशी से गुरु जी सासाराम शहर गुरु घर के एक मसंद सिक्ख फग्गू की चिरकाल की दर्शन करने की भावना को पूरा करने के लिए गए। भाई फग्गू ने एक मकान बनवा कर उस का दरवाज़ा बहुत बड़ा रखा हुआ था और उस के आगे एक खुला आँगन रखा हुआ था। जब लोगों ने उस से इसका कारण पूछा, तो उसने कहा कि यह घर मैंने गुरु जी के लिए बनवाया है कि जब आप जी घोड़े पर सवार हो कर आयेंगे, तो उन्हें बाहर न उतरना पड़े। वे घोड़े पर चढ़े-चढ़ाये ही मेरे घर के अंदर आ जायें।

फग्गू की इस श्रद्धा भावना को अनुभव कर के गुरु जी ने काशी से तैयार हो कर रास्ते में मिरजापुर के सिक्खों को दर्शन देकर 'करम नाशा' नदी को पार कर के फग्गू के घर जा प्रवेश किया। आप जी का इस तरह अचानक आना देख कर फग्गू बड़ा प्रसन्न हुआ। गुरु जी के चरणों पर माथा टेक कर आप जी को उस ने पलंघ पर बैठाया, जो उसने विशेषतः गुरु जी के विश्राम के लिए ही तैयार किया हुआ था। गुरु जी कुछ दिन यहाँ टिके रहे और फग्गू की श्रद्धा और प्रेम के साथ की हुई सेवा पर प्रसन्न हो कर उसे आप ने ब्रह्मम ज्ञान की शक्ति प्रदान करके निहाल किया। इस नगर के बाहर गुरु जी को एक बाग भी संगत ने भेंट किया, जो गुरु का बाग करके प्रसिद्ध है।

गया छेत्र-पिंड दान

सासाराम से चल कर गुरु जी गया आए। यहाँ आप जी ने अपना डेरा बामनी घाट पर किया। इस के पंडित ने आप जी को मिल कर एक जनेऊ भेंट किया और कहा कि अपने पित्रों के उद्धार के लिए इस नदी में स्नान करके पिंड भरवाओ।

पंडितों की प्रार्थना को सुन कर गुरु जी ने विचार किया कि यह माया के भूखे हैं। इन्हें माया के साथ बहुत प्यार है। यह विचार करके गुरु जी ने फलगू नदी में स्नान करके पंडितों को कहा कि तुम जितना धन चाहते हो, माँग लो। उन्हों ने कहा जी हमें सरबंस दान दो। उन की बात को सुन कर आप जी ने अपने पास एक चादर और एक अंगोछा हाथ साफ करने वाला रख लिया और बाकी जो कुछ पास था, सब उन्हें दे दिया। फिर पंडितों ने कहा गुरु जी हमें एक पत्र (हुक्मनामा) लिख दो, जिस करके आप की सारी सिक्खी हमें दान दिया करे।

गुरु जी ने हँस कर कहा कि पंडित जी इतना लोभ नहीं किया करते। जो कुछ प्राप्त हो, उसी से ही संतुष्ट रहना चाहिए। तद्उपरान्त एक रात यहाँ विश्राम करके गुरु जी परिवारसहित चल कर पटने शहर पहुँच गए।

पटने निवास

पटने शहर में एक जैता नामक गुरु घर का प्रेमी रहता था, जब उसने गुरु जी का आना सुना, तो वह गुरु जी को अपने घर बड़े प्रेम के साथ ले गया। भोजन आदि की सेवा करके उसने उन्हें सुन्दर स्थान पर विश्राम कराया। गुरु जी का आना सुन कर पटने की संगत उमड़-घुमड़ कर आप जी के दर्शन करने के लिए भेंट ले कर उपस्थित होने लगी।

इस देश के मसंद भी अपने साथ बहुत संगत और गुरु घर की कार सेवा इकट्ठी की हुई ले कर आप जी के दर्शन करने आई। संगत का प्रेम और प्रार्थना प्रवान स्वीकार गुरु जी ने अपना निवास यहाँ ही रखना स्वीकार कर लिया।

आप जी की माता नानकी जी, महिल गुजरी जी उनके भाई कृपाल चंद जी और सिक्ख सेवक बड़े आनंद सहित यहाँ रहने लगे।

सूरज प्रताप ग्रंथ की ग्यारहवीं रास समाप्त हुई।

रास बारहवीं आरंभ हुई
राजा राम सिंघ जै पूरीए का मिलाप

आसाम देश का राजा कुछ समय से दिल्ली दरबार से बागी हुआ बैठा था। यह देश जादू और मंत्र-तंत्रों के लिए ही प्रसिद्ध था। जो भी इस देश पर चढ़ाई करता था उसे ही नष्ट कर दिया जाता था। इसे जीत करके अपनी बात मनवाने के लिए औरंगज़ेब ने राजा राम सिंघ जैपुरीए को एक शक्तिशाली सैना दे कर भेजा। इस भारी सैना के साथ रुकते-रुकते जब राजा राम सिंघ ने पटने आकर डेरा किया, तो उसे पता लगा कि प्रसिद्ध करामाती रामराय जी के बाबा जी जो गुरु नानक साहिब जी की गद्दी पर सुशोभित हैं, यहाँ टिके हुए हैं। राजा बड़े आदरसहित भेंट लेकर गुरु जी को मिला और प्रार्थना की कि आप इस कार्य में मेरी सहायता करो। आप मेरे साथ चलो और मंत्र-तंत्रों के वार से मुझे बचा कर मेरी जीत कराओ। राजे की प्रार्थना को सुन कर गुरु जी ने उसे धैर्य दिया और उसके साथ जाना स्वीकार कर लिया।

www.9009.co.in

राजे के साथ कामरूप देश को जाना

राजे की प्रार्थना को स्वीकार करके गुरु जी ने अपनी माता नानकी जी, महिल गुजरी जी और इनके भाई कृपाल चंद जी के रहने का प्रबंध पटने शहर ही कर दिया और आप राजे के साथ उसकी सहायता के लिए चल पड़े।

राजा राम सिंघ के डेरे के साथ जाते हुए गुरु जी ने मंघेर शहर राज महल और मालदा शहरों में श्रद्धालु सिक्खों को दर्शन उपदेश दे कर निहाल किया।

आगे जब गुरु जी ढाके पहुँचे, तो यहाँ के मसंद बुलाकी दास की वृद्ध माता ने गुरु जी को एक पलंघ बिछौना और अपने हाथ के काते हुए सूत्र का एक जामा भेंट किया और बड़े प्रेमसहित भोजन आदि की सेवा भी की। यहाँ की संगत ने भी आप जी का बहुत आदरसहित भावभीना स्वागत किया।

ब्रह्मम पुत्र दरिया के किनारे दमदमा तैयार कराना

ढाके से चल कर राजा राम सिंघ के साथ गुरु जी ने आसाम के धूबरी शहर के पास ब्रह्मम पुत्र नदी के किनारे राजे के सैनकों से एक बहुत ऊँचा दमदमा तैयार करवा कर उस के ऊपर आवास किया। यह स्थान गुरुद्वारा दमदमा साहिब के नाम से प्रसिद्ध है। इस दमदमे से बहुत दूर-दूर चारों ओर दिखाई देता था।

★काम रूप के राजे का गुरु जी की शरण में आना

इस शाही लश्कर का और दमदमे की तैयारी का जब काम रूप के राजे को पता लगा, तो उसने राजा राम सिंघ पर जंत्र-मंत्रों के कई वार अपने जादूगरों से करवाए, परन्तु गुरु जी की कृपा से

★यह भूटान की सरहद के साथ लगता हुआ पूर्वी बंगाल का एक ज़िला है और इस के इलाके का नाम है, यहाँ कामाख्या देवी का एक स्थान है, जो जंत्रों-मंत्रों ते जादू टूनों का घर माना जाता है। इस का प्रधान नगर गोहाटी है।

वे सारे ही निष्फल गए। कामाख्या देवी के मंदिर के आगे भी बहुत विनय की, परन्तु यहाँ भी उसे कुछ सिद्धि प्राप्त न हुई। इस तरह जब अपनी कई महीनों के यत्नों की असफलता का राजा कामरूप को अपने दूतों से पता लगा कि इसका कारण श्री गुरु नानक साहिब जी की गद्दी वाले गुरु जी हैं, जो राजा राम सिंघ के साथ उस की सहायता के लिए आए हुए हैं, तो उसने और कोई यत्न न चलता देख कर प्रार्थना की कि जिस तरह आप आज्ञा करें मैं मानने के लिए तैयार हूँ। हमारी सन्धि करा दो। उसकी प्रार्थना को स्वीकार करके गुरु जी ने दोनों राजाओं की सन्धि करा दी। काम रूप के राजे ने आगे के लिए दिल्ली दरबार की बात मान ली और पिछला भूमि कर राजा राम सिंघ जैपुरीऐ को दे दिया और राजा राम सिंघ कई महीनों के बाद अपनी सेना ले कर वापिस हो गया।

आसाम के राजा राम राए को पुत्र का वरदान

गुरु जी की बहुत महिमा सुनकर आसाम देश का राजा अपनी रानी सहित गुरु जी की शरण में आया। भेंट आदि अर्पण करके उसने प्रार्थना की कि कि पातशाह ! मुझे पुत्र का वरदान दो जो हमारे राज्य का मालिक बने। हमारे घर कोई संतान नहीं है। राजे तथा रानी की श्रद्धा तथा प्रेम पर प्रसंन होकर गुरु जी ने वचन किया कि आपके घर एक धर्मात्मा तथा उदार चित्त पुत्र होगा।

यह वचन करके गुरु जी ने अपने हाथ की मोहर का एक निशान राजे के माथे पर लगा कर कहा कि यही निशान तुम्हारे घर होने वाले पुत्र के माथे पर होगा। तुमने समझ लेना कि यह गुरुघर की कृपा है। यह वर ले कर राजा राम राए तथा उसकी रानी बहुत प्रसंन हुए और गुरु जी का चरणामृत ले कर उन्हों ने सिक्खी धारण कर ली।

सूरज प्रकाश रास १२ अंस १२ तक समाप्त हुई।

www.9009.co.in

साहिबज़ादे के जन्म की खबर मिलनी

जब राजा राम सिंघ के साथ गुरु जी ढाके नगर में ठहरे हुए थे, तो आप जी को पटने से माता गुजरी जी के भेजे हुए एक सिक्ख ने आ कर बताया कि आप जी के घर साहिबज़ादे ने जन्म लिया है। इस सिक्ख के हाथ ही आप जी ने माता जी को चिट्‌ठी लिख कर भेजी कि गुरु नानक साहिब जी आप के अंग संग हैं, आप ने कोई चिंता नहीं करनी। हम इधर की संगत की मनोकामना पूरी करके शीघ्र ही आपके पास पहुँच जायेंगे।

सतिगुरु तेग बहादर जी का पटने वापिस आना

कुछ समय धूबरी ठहर कर आसाम के राजा को दिल्ली की बात मना कर सतिगुरु जी कलकत्ता जगन नाथ आदि शहरों तथा नगरों की संगत को दर्शन उपदेश देते हुए वापिस पटने पहुँच गए। साहिबज़ादे के दर्शन करके आप जी ने गरीबों व अनाथों को बहुत दान दिया।

कुछ थोड़ा समय पटने परिवार की देखभाल और प्रबंध करके आप जी पंजाब को अकेले ही कुछ सेवकों को साथ ले कर चल पड़े तथा अपने परिवार के सदस्यों को आज्ञा की कि आप सभी यहाँ ही ठहरें। हम आनंदपुर जा कर उचित समय देखकर तुम्हें बुला लेंगे। अतः कुछ समय के पश्चात् गुरु जी ने सारा परिवार आनंदपुर बुला लिया।

गुरु जी ने पटने से आनंदपुर आना

जब सतिगुरु जी आनंदपुर पहुँचे, तो घर-घर खुशी मनाई गई। आप जी का आना सुन कर दूर-दूर से संगत आप जी के दर्शन करने और साहिबज़ादे के जन्म की बधाई देने के लिए आने लगी। आनंदपुर खुशी का घर बन गया। सवेरे शाम के समय आप जी के

www.9009.co.in

दीवान सजते, शब्द कीर्तन तथा कथा उपदेश होते। इस तरह आनंदपुर में दिन रात आनंदमय वातावरण बना रहता।

औरंगज़ेब का ज़ोर जुल्म

औरंगज़ेब एक कट्टर मुसलमान था, जो अपनी राजनीतिक और धार्मिक उन्नत्ति के लिए जो भी अधिक से अधिक अत्याचार हिन्दूओं पर कर सकता था, वह कर रहा था। हिन्दू धर्म के लिए इस का राज्य एक जुल्म का राज्य था।

सब से पहले उस ने अपने बीमार पिता शाहजहाँ को आगरे के क़िले में कैद कर दिया। फ़िर तख्त पर बैठकर अपने तीनों भाइयों को कत्ल करके आप निश्चिंत हो कर मनमाने ढंग से राज्य करने लगा। इस तरह अपने पैर पक्के करके उसने हिन्दूओं पर बड़े भारी टैकस लगा दिये। कई प्रकार के लालच और भय दे कर हिन्दूओं को ज़बरी मुसलमान बनाने लगा। कोई भी हिन्दू राज्य प्रबंध में दखल नहीं दे सकता था। हिन्दूओं को मुसलमानों की तरह अच्छा खाने-पीने, पहनने आदि की भी कोई छूट नहीं थी। उसने हिन्दूओं के धार्मिक मेले, तीर्थों के पुर्व और धार्मिक रीति-रिवाज़ आज्ञा देकर बंद कर दिये थे। कोई भी हिन्दू मंदिरों में पाठ पूजा नहीं कर सकता था। हिन्दूओं के बड़े-बड़े प्रसिद्ध मंदिर मथुरा, काशी, आयोध्या, द्वारिका, सोमनाथ और प्रागराज आदि स्थानों को गिरा कर उन पर मस्जिदें बनवा दी थीं। हिन्दूओं की इस तरह बुरी हालित करके औरंगज़ेब ने अपने जरनैलों को आज्ञा जारी कर दी कि दीन इस्लाम की वृद्धि के लिए सब हिन्दूओं को ज़बरदस्ती अथवा लालच के साथ जिस तरह भी हो सके मुसलमान बनाओ। जरनैलों ने बादशाह के हुक्म के अनुसार अपना सारा ज़ोर लगा कर प्रत्येक हिन्दू को दीन इस्लाम में लाने का यत्न किया। बड़े-बड़े

संत भक्त तथा वे सारे लोग जो दीन इस्लाम में आना स्वीकार नहीं करते थे, उन्हें कत्ल कर दिया जाता था।

कश्मीरी पंडित गुरु जी की शरण

इस तरह ही औरंगज़ेब के हुक्म के अनुसार जब कश्मीर के जरनैल अफगन खां ने कश्मीर के पंडितों तथा हिन्दूओं को कहा कि आप मुसलमान हो जाओ। यदि मुसलमान नहीं बनोगे, तो तुम्हें क़त्ल कर दिया जायेगा। यह हुक्म सुन कर कश्मीरी पंडित बहुत भयभीत हो गये और अन्न-जल त्याग कर अमर नाथ के मंदिर के आगे जा कर अपने धर्म की रक्षा के लिए पाठ पूजा तथा प्रार्थनाएँ करने लगे। कुछ दिन के बाद उन्हें आकाशवाणी के द्वारा अनुभव हुआ कि इस समय आपके धर्म की रक्षा करने वाले श्री गुरु नानक साहिब जी की गद्दी पर श्री गुरु तेग बहादर जी सुशोभित है। आप उनके पास पंजाब प्रदेश जा कर अपनी व्यथा बताओ। वे आपकी सहायता करने में समर्थ है।

इस आकाशवाणी के अनुसार पंडित पूछते-पूछते श्री गुरु तेग बहादर जी के पास आनन्दपुर आ गए। अपनी सारी व्यथा बता कर प्रार्थना की कि महाराज ! हमारे धर्म को बचाओ। हम आप जी की शरण आए हैं।

साहिबज़ादे की धार्मिक दृढ़ता

उन की सारी बात को सुनकर गुरु जी कुछ सोच ही रहे थे कि साहिबज़ादा जी भी वहाँ आ गए। पिता जी को इस तरह सोच-विचार में देख कर आप जी ने पूछा पिता जी ! आप क्या सोच रहे हो? गुरु जी ने वचन किया कि बेटा ! इन पंडितों के धर्म

की रक्षा करने के लिए कोई ऐसा महापुरुष चाहिए, जो इस समय इनके धर्म की रक्षा के लिए अपना बलिदान दे सके।

पिता गुरु जी का यह वचन सुन कर आप जी ने स्वाभाविक ही कहा कि पिता जी ! इस समय आप से बड़ा और कौन महापुरुष है, जो इन के धर्म की रक्षा कर सकता है ? आप ही इस योग्य हो।

अपने होनहार नौं सालों के बालिक पुत्र से यह बात सुन कर गुरु जी बड़े प्रसन्न हुए और पंडितों को कहा कि आप सूबा अफगन खाँ को कह दो कि यदि हमारे आनन्दपुर वासी गुरु जी मुसलमान हो जायेंगे, तो हम भी मुसलमान होना मान जायेंगे।

यह उत्तर ले कर पंडितों ने सूबा अफगन खाँ को गुरु जी की बात बताई, तो सूबे ने उसी समय यह खबर लिख कर औरंगज़ेब को भेज दी कि कश्मीरी पंडितों तथा हिन्दूओं ने यह बात मान ली है कि यदि उन के गुरु तेग बाहदर जी, जो इस समय आनंदपुर रहते हैं, मुसलमान हो जायेंगे, तो हम भी सब उनके बाद मुसलमान हो जायेंगे।

गुरु जी को दिल्ली बुलाना

अपने सूबे की यह चिट्ठी पढ़ कर औरंगज़ेब ने काज़ी के साथ विचार करके एक विशेष दूत (अहिदीया) आनंदपुर भेजकर गुरु जी को दिल्ली बुला लिया।

गुरु जी ने संदेशवाहक को कहा कि तुम चलो हम आप ही बादशाह के पास पहुँच जायेंगे। संदेशवाहक को भेजकर गुरु जी ने घर बाहर का प्रबंध मामा कृपाल चंद को सौंप कर हर एक बात अपने साहिबज़ादे को समझा दी और आप पाँच सिक्खों सहित दिल्ली को चलने के लिए तैयार हो गए। मार्ग में आप जी धर्म उपदेश देते हुए अपने श्रद्धालुओं को दर्शन देते हुए आगरे पहुँच गए।

गुरु जी बंदी खाने में

आगरे पहुँच कर आप जी ने एक गडड़ीए के द्वारा कौतुक रच कर अपने आप को बंदी बना लिया। आगरे से आप जी दिल्ली पहुँचाए गए। औरंगज़ेब ने आप जी को बंदीखाने में बंद करके अपने काज़ी को गुरु जी के पास भेजा और प्रार्थना की कि आप मुसलमान हो जाओ। सारा देश आप का मुरीद हो जायेगा। सारे हिन्दू भी आप के पीछे मुसलमान हो जायेंगे। इस तरह सारे देश में जब एक मुसलमान धर्म हो जायेगा, तो धार्मिक लड़ाई-झगड़े मिट जायेंगे। लोग सुखी रहेंगे। गुरु जी ने वचन किया तुम सारे देश में एक धर्म करना चाहते हो परन्तु यदि परमात्मा चाहे तो दो धर्मों (हिन्दू, मुसलमान) के तीन हो जायेंगे। औरंगज़ेब ने कहा यह किस तरह हो सकता है? गुरु जी ने कहा इसका निर्णय करने के लिए एक मण मिर्च जला कर देखो। यदि राख में से एक मिर्च साबत निकली तो परमात्मा को एक मज़हब स्वीकार होगा। यदि दो मिर्चें साबत निकलीं, तो दो मज़हब रहेंगे। परन्तु यदि तीन मिर्चें साबत रह गईं, तो फिर समझ लेना कि इन से अलग तीसरा मज़हब और बनेगा।

इस तरह जब मिर्चों का ढेर जला कर औरंगज़ेब ने राख को बिखेर कर देखा, तो उस में तीन मिर्चें साबत निकलीं। यह निर्णय देख कर बादशाह बड़ा हैरान हुआ।

तद्उपरान्त जब गुरु जी किसी तरह भी मुसलमान होना न माने, तो बादशाह ने अपने काज़ी के द्वारा कहा कि यदि आप मुसलमान नहीं होना चाहते, तो कोई करामात दिखाओ। गुरु जी ने कहा करामात कहर का नाम है, जो हम नहीं करना चाहते। फिर औरंगज़ेब ने कहा, यदि आप ने दीन इस्लाम भी कबूल नहीं करना

और करामात भी नहीं दिखानी, तो फिर कत्ल होने के लिए तैयार हो जाओ। गुरु जी ने कहा तुम्हारी पहली दोनों बातें, मुसलमान होना और करामात दिखानी हमें स्वीकार नहीं, परन्तु तुम्हारी तीसरी बात कत्ल होना हमें स्वीकार है।

भाई मती दास तथा दिआले की शहीदी

इस समय गुरु जी के साथ पाँच सेवादार सिक्ख भी कैद थे। जब गुरु साहिब जी मुसलमान होना किसी तरह भी न माने, तो औरंगज़ेब ने आप जी को भयभीत करने के लिए आप जी के दो सेवादार भाई मतीदास तथा दिआले को घोर कष्ट दे कर शहीद करने का हुक्म दे दिया। काज़ी के फतवे के अनुसार भाई मतीदास को आरे से चिरवाया गया और भाई दिआले को पानी की उबलती हुई देग में डाल कर आलू की तरह उबाला गया। दोनों धर्मी सिक्खों ने अपने आप को हँस-हँस कर सम्मुख पेश किया। जपुजी साहिब का पाठ तथा वाहिगुरु उच्चारण करते हुए सचखंड जा बिराजे।

इन की हत्या करके बादशाह ने गुरु जी को संदेश भेजा कि यदि आप मुसलमान होना नहीं मानोगे, तो तुम्हारे साथ भी यही व्यवहार किया जायेगा। बाकी तीन सिक्ख भाई गुरदित्ता, भाई ऊदो तथा भाई चीमा, गुरु जी के पास रह गए।

गुरु जी ने अपना अन्तिम समय पास देख कर इनको वचन दिया कि तुम अपने घरों को चले जाओ। अब यहाँ रहने का कोई लाभ नहीं है। उन्होंने प्रार्थना की कि महाराज ! हमारे हाथ पैरों को बेड़ियाँ लगी हुई हैं। तथा द्वारों को ताले लगे हुए हैं। हम यहाँ से किस तरह निकल सकते हैं? गुरु जी ने वचन किया आप इस शब्द का 'काटी बेड़ी पगहु ते गुरकीनी बन्द खलास' का पाठ करो,

www.9009.co.in

आप की बेड़ियाँ टूट जाएँगी और दरवाज़ों के ताले खुल जाएँगे। तुम्हें कोई नहीं देखेगा।

गुरु जी का वचन मान कर जब भाई ऊदो और चीमा इस तरह आज़ाद होकर चले गए। बाद में भाई गुरदित्ता ही गुरु जी के अन्तिम समय तक पास रहे। गुरु जी ने अपनी मस्ती में यह श्लोक पढ़ा—

सलोक महला ९

"संग सखा सब तजि गए कोऊ न निबहिओ साथ।।
कहु नानक इिह बिपत मै टेक एक रघुनाथ।। ५५।।"

तद्उपरान्त गुरु जी ने अपनी माता जी तथा परिवार को धैर्य देने तथा प्रभु की आज्ञा को मानने के लिए श्लोक लिख कर भेजे—

गुन गोबिंद गाइिओ नही जनमु अकारथ कीन।।
कहु नानक हरि भजु मना जिहि बिधि जल कौ मीन।। १।।

यहाँ से आरम्भ करके अन्त में लिखा—

राम नामु उरि मै गहियो जाकै सम नही कोइि।।
जिह सिमरत संकट मिटै दरसु तुहारो होइि।। ५७।।

(सिरी गुरू ग्रंथ साहिब: पृ० १४२६-२९)

साहिबज़ादे को गुरुगद्दी देनी

इन श्लोकों के साथ ही गुरु जी ने पाँच पैसे तथा नारियल एक सिक्ख के हाथ आनंदपुर भेज कर गुरुगद्दी अपने सुपुत्र श्री गोबिंद राए जी को दे दी।

गुरु जी की शहीदी

अन्त में जब १३ माघ (सुदी ५) संवत् १७३२ विक्रमी का अभाग्यशाली दिन वीरवार आ गया, तो आप जी को चाँदनी चौक

कोतवाली के पास सूर्यास्त के समय बादशाह के हुक्म से जल्लाद ने तलवार के एक वार से शहीद कर दिया। इस निर्दय साके का वर्णन गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इस तरह किया—

तेग बहादर के चलत भयो जगत को शोक ।।
है है है सब जग भयो जै जै जै सुर लोक।। १६ ।।

(दशम-ग्रंथः बिचित्र नाटक ; ५ वां अध्याय)

शीश और धड़ की संभाल

इस अत्याचार के समय इतिहासकार लिखते हैं कि बहुत भयानक काली आँधी चली, जिसके अन्धकार में आप जी का पवित्र शीश भाई जैता (जीऊन सिंघ) अपने कपड़ों में लपेट कर जल्दी-जल्दी चल कर आनंदपुर ले आया। यहाँ आप जी के शीश को बड़े सतिकार, वैराग्य तथा शोकसहित अग्निभेंट किया गया। इस स्थान पर गुरुद्वारा 'शीश गंज' सुशोभित है।

तद्उपरान्त इस आँधी के गुबार में ही आप जी का पवित्र धड़ एक लुबाणा सिक्ख अपनी बैल गाड़ी के माल में छुपा कर ले गया और अपनी कुटीर में रख कर, उसे आग लगा कर वहाँ ही अग्निभेंट कर दिया। इस स्थान पर 'गुरुद्वारा रकाबगंज' सुशोभित है।

✧❖✧

www.9009.co.in

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी-दशम पातशाही

"वह प्रगटिओ मरद अगंमड़ा वरियाम अकेला।।
वाहु वाहु गोबिंद सिंघ आपे गुर चेला।। १७।।"
(भाई गुरदास दूजा)

अवतार

पोरव सुदी सप्तमी संवत् १७२३ विक्रमी को श्री गुरु तेग बहादर जी के घर माता गुजरी जी की पवित्र कोख से साहिबज़ादे का पटने शहर में अवतार हुआ—

मुर पित पूरब कीयसि पयाना।। भांति भांति के तीरथि नाना।। जब ही जात त्रिबेणी भए।। पुन दान निन करत बितए।। तही प्रकास हमारा भयो।। पटना सहर विखे भव लयो।।

(दशम-ग्रंथ: बिचित्र नाटक; ७ वां अध्याय)

गुरु जी को खबर भेजनी

श्री माता नानकी जी ने अपने पौत्र के जन्म की खबर देने के लिए एक विशेष आदमी को चिट्ठी दे कर अपने सुपुत्र श्री गुरु तेग बहादर जी के पास धूब्री शहर भेजा। गुरु जी ने चिट्ठी पढ़ कर जब राजा राम सिंघ को खुशी भरी ख़बर सुनाई, तो राजे ने अपने फौजी बाजे बजवाए। तोपों की सलामी दी तथा गरीबों को दान दिया। चिट्ठी ले कर आने वाले सिक्ख को गुरु जी ने बहुत धन दिया तथा खुशी प्रकट की। उस का लोक-परलोक संवार दिया।

www.9009.co.in

तद्उपरान्त गुरु जी ने माता जी को चिट्ठी लिखी कि माता जी ! इस समय हम कामरूप के पास धुब्री शहर पहुँच कर ठहरे हुए हैं। राजा राम सिंघ का काम संवार कर हम जल्दी वापिस आपके पास पटने आ जाएँगे। गुरु नानक साहिब आपके अंग-संग हैं। आप ने चिंता नहीं करनी। साहिबज़ादे का नाम "गोबिंद राए" रखना। यह आशीश भरी और धैर्यपूर्ण चिट्ठी पढ़ कर माता जी तथा अन्य परिवार के सदस्य बड़े प्रसन्न हुए।

जो भी कोई भिखारी या और प्रेमी माता जी को बधाई देने घर आता, माता जी उसको धन, वस्त्र और मिठाई आदि से प्रसन्न करके घर से भेजते। घर आने वाली औरतों के छाए परछाए से साहिबज़ादे की रक्षा के लिए माता जी अनेक प्रकार के बचाव करते रहते। जैसा कि दर्शन करने आई औरतों को साहिबज़ादे के दर्शन दूर से ही आप उठा कर करवा देते, किसी अपरिचित आदमी को घर के दरवाज़े तक न आने देते। क्योंकि बालक रूप कृष्ण भगवान् को कंस की भेजी पूतना दाई ने अपने स्तनों का विष लगा कर दूध पिला कर मारने का यत्न किया था। परन्तु कृष्ण जी आप परमेश्वर अवतार थे, वह बच गए थे तथा पूतना पापिन को मार दिया था। इसी तरह श्री गुरु हरिगोबिंद जी को बालक रूप में पखयारन दाए स्त्री ने अपने स्तनों को विष लगा कर तथा घर के एक रसोइए ने दही में ज़हर मिला कर मारने का यत्न किया था, परन्तु आप जी को गुरु अवतार होने के कारण कोई अनर्थ न पहुँचा। इन बातों को याद करके माता जी किसी को देखने-दिखाने के लिए साहिबज़ादे को नहीं देते थे।

पीर भीखन शाह ने दर्शन करने

पीर भीखन शाह गाँव कुड़ाम रियासत पटियाला के रहने वाला एक खुदा रसीदा साईंलोक अपने गाँव ठसके जिला करनाल में

ठहरा हुआ था। रविवार पोख सुदी सप्तमी को जिस समय साहिबज़ादे का पटने में जन्म हुआ, पीर अपने इष्ट की याद में बैठा हुआ था। उसको अकस्मात ही पूर्व दिशा से रोशनी दिखाई दी। जिस को देख कर उसने अनुभव किया कि इस दिशा में इस समय कोई महापुरुष पैदा हुआ है, जो ज़ोर-जुलम के अन्धेरे को दूर करेगा। पीर ने शीघ्र ही उठ कर पूर्व दिशा की तरफ मुँह करके प्रणाम किया। पीर के शिष्यों ने पूछा कि पीर जी ! मक्का काबा तो पश्चिम दिशा में हैं, तुमने पूर्व की तरफ़ प्रणाम क्यों किया है? पीर ने कहा, यह इस लिये कि इधर आज दीन दुनियाँ का वाली मानवीय शरीर धारण करके प्रकट हुआ है। अब मैं उनके नूरी दर्शन करने पटने जल्दी जाना चाहता हूँ।

तद्उपरान्त पीर भीखन शाह तैयारी करके अपने दो शिष्यों को साथ लेकर धीरे-धीरे पटने पहुँच गया। पीर जी ने देखा कि पटने का हर एक जीव तथा बनस्पति का पत्ता-पत्ता खुशियों से भरपूर व प्रसन्न है। पीर जी पूछताछ करके उस घर के आगे जहाँ साहिबज़ादे का जन्म हुआ था, पहुँच गए। घर के दरवाज़े के आगे पीर जी ने देखा कि सिक्ख संगत की भीड़ लगी हुई है और हर एक अपनी खुशी प्रकट करने के लिए उत्सुक हो रहा है।

पीर जी ने मामा कृपाल चंद जी को मिल कर प्रार्थना की कि हम बहुत दूर पंजाब प्रदेश से साहिबज़ादे के केवल दर्शन करने ही आए हैं। हमें दर्शन करा दो।

जब मामा कृपाल चंद ने माता नानकी जी को जा कर यह बात बताई कि एक मुसलमान फ़कीर अपने दो शिष्यों के साथ साहिबज़ादे के दर्शन करने पंजाब से आया है, तो माता जी ने मन में बहुत डर कर कहा कि बादशाह गुरु घर से विरोध रखता है। आगे श्री गुरु तेग बहादर जी को उसने दिल्ली बुलाया था, तो

उनको अपना वचन पूरा करने के लिए शीश देना पड़ा। यह पीर मुसलमान है, क्या पता किस बात के लिए यह आप आया है या इसको किसी विरोधी ने साहिबज़ादे को कोई नुकसान पहुँचाने के लिए ही भेजा है।

माता जी से विचार करके मामा कृपाल चंद ने बाहर आ कर पीर को कहा कि साईं जी ! जब तक इनके पिता जी इनके दर्शन न कर लें तब तक किसी गैर आदमी को इनके माथे लगाना ठीक नहीं है। तुम कुछ महीने ठहर कर फिर आ जाना तब तक इनके पिता जी भी आसाम से वापिस आ जाएँगे। अब तुम्हें जिस चीज़ की ज़रूरत हो ले लो। परन्तु पीर ने कहा मुझे इनके दर्शनों के बिना किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है। यह खुदा रूप हैं, मैं इनके दर्शन करके ही जाऊँगा।

परन्तु जब फिर भी माता जी ने इन्कार किया तो पीर खाना-पीना छोड़ कर दरवाज़े के आगे आसन लगा कर बैठ गया। जब तीन दिन इस तरह बीत गए, तो पीर का पक्का हठ देख कर माता जी ने कृपाल चंद को कहा कि पीर को साहिबज़ादे के दर्शन करवा दो। कृपाल चंद सुन्दर वस्त्रों में लपेट कर साहिबज़ादे को दोनों हाथों से उठा कर पीर के पास ले आया।

पीर भीखन शाह ने बालक रूप के दर्शन करके नमस्कार किया और फिर दो कुजियाँ, एक में दूध और एक में पानी डाल कर साहिबज़ादे के आगे रखीं। साहिबज़ादे ने अंगड़ाई ले कर अपनी बाहें लम्बी करके दानों कुजियाँ पर अपने दोनों हाथ रख दिए। यह देख कर पीर बड़ा प्रसन्न हुआ और उस ने प्रणाम करके नमस्कार किया।

जब यह कुजियों वाली बात पीर जी से पूछी गई, तो उसने वताया कि यह मैंने इनकी परीक्षा ली है कि यह हिन्दू धर्म का पक्ष

धारण करेंगे या मुसलमान का। परन्तु इन्होंने इशारा किया है कि इनके लिए दोनों धर्म एक जैसे हैं।

इस उपरान्त पीर बालक रूप गुरु जी की महिमा का गायन करता हुआ वापिस ठसके नगर को चल पड़ा।

गुरु जी की बाल्यावस्था

माता जी ने साहिबज़ादे के सोने और खेलने के लिए एक अति सुन्दर पंघूड़ा बनवाया, जिस में साहिबज़ादे को लिटा कर माता जी उसके पास बैठ कर लोरियाँ देती तथा पंघूड़े को हिला कर मन ही मन प्रसन्न होती।

आप जी के हाथों के कड़े पाँव के कड़े और कमर की तड़ागी के घुंघरू खनखनाते रहते थे। माता नानकी जी बालक गोबिंद राये को स्नान करा कर सुन्दर गहने कपड़े पहनाते और गडीरे से खेलता देख कर बहुत प्रसन्न होते।

गंगा के चरण छूने

एक दिन जब मामा कृपाल चंद आपको गोदी में ले कर अन्य बालकों के साथ गंगा नदी में नाव की सैर करा रहे थे, तो गंगा का पानी ऊपर ही ऊपर चढ़ता आए। माता जी तथा अन्य साथी बालक बहुत घबराए, परन्तु गंगा का पानी आप के चरण स्पर्श करके तत्काल ही नीचे अपने ठिकाने चला गया। यह कौतुक देख कर सभी साथियों ने आप को पूर्ण पुरुष जान कर नमस्कार किया।

पानी भरने वालियों के घड़े तोड़ने

गुरु जी के आँगन में एक कूआँ था, जिस का पानी अच्छा होने के कारण मुहल्ले की औरतें पानी के घड़े भरने वहाँ आती थीं।

www.9009.co.in

जब यह औरतें पानी से भरे हुए घड़े सिर पर उठा कर चलतीं, तो आप जी पीछे से गुलेल का निशाना मार कर उनके घड़े तोड़ देते थे। उन के रोज़ के उलाहनों को सुन कर जब माता जी आप को तोड़ते, तो आप हँस कर दौड़ जाते तथा बात को टाल देते। इस रोज़ के क्लेश से तंग आकर माता जी ने गुरु नानक साहिब जी का नाम लेकर प्रार्थना की कि महाराज ! इस कूएँ का पानी खारा हो जाए, जिस से न पानी भरने औरतें आएँ और न ही कोई उलाहनो का काम हो। अतः माता जी की प्रार्थना स्वीकार हो गई और कूएँ का पानी खारा हो गया। औरतें पानी भरने से हट गईं।

सोने का कड़ा गंगा नदी में फैंकना

एक दिन गंगा में नाव की सैर करते समय आप के एक हाथ से सोने का कड़ा दरिया में गिर गया। जब घर आए, तो माता जी ने पूछा कि पुत्र जी ! यह कड़ा कहाँ है? तब आप जी ने कहा, माता जी ! वह दरिया में गिर कर खो गया। माता जी ने कहा चल बता कहाँ गिरा है। आप माता जी को ले कर गंगा नदी के किनारे आ गए और दूसरे हाथ का कड़ा उतार कर पानी में फैंक कर कहा कि यहाँ गिरा था। आप की यह लापरवाही देख कर माता जी आप को ले कर घर आ गए।

घर आ कर साहिबज़ादा जी ने माता जी को बताया कि माता जी ! इन हाथों से ही अत्याचारियों का नाश करके गरीबों की रक्षा करनी है। इन के साथ ही अमृत तैयार करके साहसहीनों में शक्ति भर कर खालसा साजना है। यदि इन हाथों को माया के कड़ों ने जकड़ लिया, तो फिर यह काम जो अकाल पुरुष ने करने की हमें आज्ञा की है वह किस तरह पूरे होंगे? जुल्म को दूर करने के लिए

www.9009.co.in

इन हाथों को लोहे जैसे शक्तिशाली मज़बूत करने के लिए लोहे का कड़ा पहनना उचित है। अतः खालसा पंथ सजा कर आप ने सिक्खों को लोहे का कड़ा ही पहनने का हुक्म किया, जो जगत् प्रसिद्ध है।

गंगा नदी के जिस घाट पर आप जी खेलते तथा स्नान करते थे, उसका नाम गोबिंद घाट प्रसिद्ध है।

पंडित शिव दत्त को राम स्वरूप में दर्शन देना

पंडित शिव दत्त श्री राम चन्द्र जी का अन्नय भक्त था। वह रोज़ ही सुबह गंगा नदी के किनारे बैठ कर पाठ पूजा करता तथा राम मूर्ति के ध्यान में बैठ कर कई-कई घण्टे समाधि लगा कर बैठा रहता, परन्तु उसको अभी तक भगवान् राम के दर्शन नहीं हुए। लोगों की ओर से साहिबज़ादे के शक्तिशाली कौतुक की महिमा सुन कर एक दिन पंडित ने मन में कहा कि यदि यह पूर्ण अवतार हैं, तो मुझे श्री राम चन्द्र जी के रूप में दर्शन दें। फिर मैं इनकी ही पूजा करूँगा। जब पंडित ने मन में यह धारण कर लिया, तो कुछ दिन बाद, जब वह अपने नियम के अनुसार समाधि लगा कर बैठा हुआ था, तो अन्तर्यामी गुरु जी बालकों के साथ खेलते-खेलते पंडित शिव दत्त के आगे खड़े हो गए। समाधि में लीन पंडित को ऐसा लगा कि जैसे श्री राम चन्द्र जी उसके सामने साक्षात खड़े हैं। यह अनुभव करके उसने आँखें खोल कर देखा, तो उसके सामने श्री गुरु गोबिंद राए जी खड़े हँस रहे थे। पंडित ने अपने मन की भावना देख कर जल्दी ही अति श्रद्धासहित आपको नमस्कार करके अपना पूज्य मान लिया। यह वार्ता सारे शहर में फैल गई कि साहिबज़ादा जी ने पंडित शिव दत्त को राम स्वरूप हो कर दर्शन दिए हैं और वह आप का अन्नय भक्त बन गया।

www.9009.co.in

राजा फतह चंद मैणी की रानी का प्रसंग

एक दिन गुरु जी गंगा नदी के किनारे स्नान कर रहे थे कि आप के सुन्दर स्वरूप को देख कर राजा फतह चंद मैणी की रानी के मन में यह लालसा आई कि मेरे घर भी ऐसा सुन्दर पुत्र हो, तो मैं भाग्यशाली बन जाऊँ।

रानी मैणी के घर अन्य सब पदार्थ थे, परन्तु एक पुत्र की कमी थी। पंडित शिव दत्त की दर्शन परीक्षा वाली बात सुन कर यह दम्पति गुरु जी के पक्के श्रद्धालु हो गए तथा रात-दिन आप का चिंतन करते रहते। इन्होंने शिव दत्त के आगे भी हाथ जोड़े कि हमें गुरु जी से पुत्र का वरदान दिला दो। शिव दत्त ने कहा वह सब के दिल की जानते हैं, तुम घर बैठे ही प्रेम से उनको याद किया करो, वह प्रेम वश हो कर अपने आप ही तुम्हारे घर आ जाएँगे।

शिव दत्त की बात मान कर राजा और रानी रात-दिन आप जी आराधना करने लगे। लगातार आराधना करके जब इनकी इच्छा तीव्र हो गई तो गुरु जी बालकों के साथ खेलते-खेलते मैणी के घर चले गए। रानी आँखें मीचे आपको याद कर रही थी कि आप उसकी गोद में चुपके से बैठ गए और प्यार से माँ जी, माँ जी कहने लगे। यह प्यारी आवाज़ सुन कर जब रानी ने आँखें खोल कर देखा, तो साहिबज़ादे को अपनी गोद में बैठा देख कर बहुत प्रसन्न हुई। रानी को प्रसन्न देख कर आप ने कहा माता जी ! आपकी इच्छा थी कि आपके घर मेरे जैसा पुत्र पैदा हो। सो मेरे जैसा मैं ही हूँ। तुम मुझे ही अपना पुत्र समझो। यह बात सुन कर रानी ने आप को बहुत प्यार करके अपनी खुशी प्रकट की। तद्उपरान्त जब रानी ने आपको और साथी बालकों के लिए नौकर को बाज़ार से मिठाई लाने के लिए कहा, तो आप ने कहा

www.9009.co.in

माता जी ! हम खेलते आए हैं और हमें बहुत भूख लगी है, जो कुछ घर में तैयार है, हमें वही बाँट दो। आप जी का यह वचन सुन कर रानी मैणी ने चने की घुंघनियाँ, जो उस समय घर में तैयार थीं, सब बालकों को बाँट दीं। घुंघनियाँ खा कर आप बहुत प्रसन्न हुए तथा कहा माता जी ! हम जब भी आपके घर आएँ हमें घुंघनियाँ ही खिलाना। हमें यह बड़ी स्वाद लगी हैं। तद्उपरान्त जब भी आप बालकों के साथ रानी के घर जाते, रानी बड़े प्रेम प्यार से घुंघनियाँ तैयार करके खिलाती। यह परिपाटि आज तक इसी तरह ही चली आती है कि यहां 'मैणी संगत' गुरुद्वारे में संगत को घुंघनियों का प्रसाद ही बाँटा जाता है।

काज़ी रहीम खाँ करीम खाँ ने बाग अर्पण करना

आनंदपुर को जाते समय आप यादगार के तौर पर रानी को अपने पाँव के जूते अपनी तस्वीर और एक कटार दे गए थे। यह यादगारें आज तक गुरुद्वारा मैणी संगत में यात्रियों को दिखाई जाती हैं।

राजा फतह चंद ने अपना यह मकान गुरु जी को अर्पण कर दिया था, जो 'गुरुद्वारा मैणी संगत' करके प्रसिद्ध है।

जन्म स्थान पटना से दो मील पूर्व दिशा काज़ी रहीम खाँ करीम खाँ का एक सूखा हुआ बाग था। यह सूखा बाग गुरु तेग बहादर जी के इस में कुछ समय बैठने से हरा हो गया था, जिस कारण यह काज़ी गुरु घर केप्रति बहुत श्रद्धा रखते थे। इन्होंने जब साहिबज़ादे के दर्शन किए, तो आदरसहित यह बाग साहिबज़ादे को भेंट कर दिया। जो इस समय गुरुद्वारा जन्म स्थान की मलकीयत है और गुरु का बाग करके प्रसिद्ध है।

साहिबज़ादे का पंजाब आना

आनंदपुर पहुँचने के दो वर्ष बाद श्री गुरु तेग बहादर जी ने एक सिक्ख को पटने भेजा कि साहिबज़ादा जी को परिवारसहित आनंदपुर ले आओ। जब इस सिक्ख ने माता जी को पटने पहुँच कर गुरु जी के संदेश वाली चिट्ठी दी, तो इसे पढ़ कर सारा परिवार प्रसन्न हो गया।

साहिबज़ादे जी ने माता जी को कह कर पंजाब की तरफ जाने की जल्दी ही तैयारी कर ली। चलने की तैयारी सुन कर पटने की संगत बहुत उदास हो गई। साहिबज़ादा ने सब प्रेमियों को जगह-जगह धैर्य दिया और पटने की संगत की प्रेम भावना को देख कर उनको अपने बचपन का एक पालना, चार तीर, एक छोटी तलवार, एक खण्डा, एक कटार, एक अपना कंघा और चंदन की खड़ाव दीं, यह आप की यादगारें तख्त श्री पटने साहिब में सुशोभित हैं।

इस समय राजा फतह चंद मैणी को आप जी ने अपने पाँव के जूते अपनी तस्वीर और एक कटार दी, जो गुरुद्वारा मैणी संगत में रखे हुए हैं। राजा फतह चंद तथा उसकी रानी ने कहा अब हमें आपके दर्शन किस तरह होंगे? तब गुरु जी ने वचन किया कि जो घुंघनी प्रसाद तुम हमें प्रेम से खिलाते थे, वही हमारे पीछे जब तुम प्रेमसहित बालकों को खिलाओगे, तो उन बालकों में तुम्हें हमारा दर्शन हुआ करेगा ।

आप जी के इन वचनों को निश्चय मान कर रानी रोज़ ही बालकों को घर बुला कर घुंघनियाँ खिलाती और उन में गुरु जी का स्वरूप देख कर नमस्कार करके प्रसन्न होती।

इस प्रकार ही सब प्रेमियों को आप जी ने कहा कि जो प्रेमसहित संगत में आएगा, उसे हामरा दर्शन हुआ करेगा। पटने से

www.9009.co.in

पूरी तैयारी के बाद संगत को जगह-जगह धैर्य देकर आप जी ने पहला बड़ा पड़ाव तीसरे दिन काशी आ कर किया। यहाँ पंजाब से पटने को आते हुए श्री गुरु तेग बहादर जी कुछ समय ठहरे थे। इस स्थान के गुरद्वारे का नाम 'गुरुद्वारा बड़ी संगत' है, श्री गुरु तेग बहादर जी का चोला और साहिबज़ादा जी के पैरों का जूता यहाँ संगतों के दर्शन के लिए रखे हुए हैं। पोख सुदी सप्तमी को यहाँ बहुत बड़ा उत्सव मनाया जाता है।

लखनौर निवास करना

काशी की संगत को खुशी प्रदान करके आप जी प्राग राज आदि तीर्थों से होते हुए सत्य धर्म का उपदेश देते हुए पहले आयोध्या पहुँचे। आयोध्या के लोगों ने आप जी को श्री राम चन्द्र जी के वंश से होने के कारण आप का बहुत आदर किया व सेवा की और खुशी प्राप्त की। आयोध्या से चल कर आप हरिद्वार तथा माया पुरी आ गए। कुछ दिन यहाँ विश्राम करके सहारनपुर से यमुना नदी को पार करके अम्बाले के पास लखनौर गाँव अपने एक सिक्ख भाई जेठा जी के पास आ ठहरे।

यहाँ एक दिन गुरु जी बालकों के साथ खेल रहे थे कि पीर भीखन शाह पालकी में बैठ कर आगे जा रहा था। जब उस को पता लगा कि इन बालकों में साहिबज़ादा जी खेल रहे हैं, तो पीर जी ने पालकी से उतर कर आप को प्रणाम किया तथा दुआ माँगी। यह बात देख कर भीखन शाह के एक साथी पीर आरफ दीन ने कहा पीर जी तुम ने शरा के विरुद्ध एक हिन्दू को प्रणाम क्यों किया है? भीखन शाह ने कहा तुम नहीं जानते यह कौन हैं। जब सारे पीर पैगंबर दरगाह में जाते हैं, तो यह गुरु नानक साहिब की गद्दी वाले दरगाह के दरवाज़े में खड़े होते हैं। सब की बात सुन

कर उसको दरगाह में खुदा के हुक्म से प्रवेश करवाते हैं। यह जामा (रूप) धर्म के सुधार और ज़ोर-ज़ुल्म का नाश करने के लिए आया है। सब पीर पैगंबरों को इन से काम पड़ता है, मैंने इसी लिए इन को प्रणाम किया है।

आनंदपुर प्रवेश

लखनौर में जब कुछ समय बीत गया, तो श्री गुरु तेग बहादर जी ने आप जी को आनंदपुर बुला लिया। मामा कृपाल चंद, बड़ी माता नानकी जी और माता गुजरी जी के साथ आप आनंदपुर पहुँच गए। साहिबज़ादे का आना सुन कर सब संगत सिक्ख सेवक उमड़-घुमड़ कर आप जी के दर्शन करने के लिए आए। श्री गुरु तेग बहादर जी ने संगत के लिए बहुत लंगर लगा दिए। आनंदपुर में दीपमाला की गई और कढ़ाह प्रसाद की देग तैयार करके बाँटी गई। घर-घर खुशियाँ मनाई गईं। साहिबज़ादे का आना सुन कर दूर-पास की संगत बड़े प्रेम से भेंट ले कर दर्शन करने आती और आप जी का सुन्दर स्वरूप देख कर उन की श्लाघा करती। आनंदपुर प्रति दिन उत्सव लगा रहता।

साहिबज़ादे को भांति-भांति की शिक्षा मिलनी

पटने से पंजाब आनंदपुर साहिब बुला कर श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपने होनहार सुपुत्र गोबिंदराए जी को घोड़सवारी, तीर कमान, बन्दूक चलानी आदि कई प्रकार की शिक्षा सिखलाई का प्रबन्ध किया। बालकों के साथ बाहर खेलते समय मामा कृपाल जी को आप जी की निगरानी के लिए नियत कर दिया। स्नान पानी और वस्त्रों की सफाई के लिए माता जी की निगरानी में वृद्ध औरतों का प्रबन्ध कर दिया गया। इस तरह आप जी पिता गुरु जी के किए हुए प्रबन्ध के अनुसार सब कुछ शिक्षा लेते रहे।

www.9009.co.in

दशमेश जी इस प्रथाए अपनी आत्म कथा बचित्र नाटक में लिखते हैं—

मद्र देस हम को ले आए।। भांति भांति दाईयन दुलराऐ।।
कीनी अनिक भांति तन रछा।। दीनी भांति भांति की सिछा।।

(दशम-ग्रंथः बिचित्र नाटक; ७ वां अध्याय)

गुरगद्दी का तिलक लगना

औरंगज़ेब की कैद में श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपना अन्तिम समय पास जान कर पाँच पैसे तथा नारियल एक सिक्ख के हाथ आनंदपुर भेज कर गुरुगद्दी अपने साहिबज़ादे श्री गोबिंद राए जी को दे दीं, परन्तु गुरुगद्दी पर बैठने की पूरी मर्यादा, श्री गुरु तेग बहादर जी के अन्तिम संस्कार करने के उपरान्त १२ मघहर संवत् १२३२ को की गई। इस समय बाबा बुड्ढा जी से पांचवीं पीढ़ी उन के बड़े पोत्रे बाबा राम कुइर (बाबा गुरबख्श सिंघ) जी ने आप जी को गुरुगद्दी का तिलक लगा कर गुरु की मर्यादा अर्पण की। तद्उपरान्त संगत ने अपनी-अपनी भेंट अर्पण करके आप को नमस्कार किया।

शस्त्र विद्या का अभ्यास करना

आप जी ने गुरुगद्दी पर बैठ कर अपने बाबा श्री गुरु हरिगोबिंद जी की तरह मीरी-पीरी दोनों कामों को अपना लिया। अच्छे योद्धा शस्त्र तथा घोड़े अपने पास इकट्ठे करने शुरु कर दिये। बीबी वीरो के पाँच पुत्र बाबा सूरज मल जी के दो पौत्र तथा श्री गुरु हरिगोबिंद जी के पृरोहित का पुत्र दयानन्द आदि योद्धे सतिगुरु जी के पास आनंदपुर रहने लगे। सतिगुरु जी इन से मिल कर नित्य प्रति शस्त्र विद्या का और घोड़े की सवारी का अभ्यास करते

रहते। इसके साथ ही आप जी गुरु घर की मर्यादा के अनुसार सिक्ख सेवकों को सतिनाम के उपदेश द्वारा आनन्दित करते। बिचित्र नाटक में आप जी लिखते हैं—

राज साज हम पर जब आयो।। जथा शकत तव धरम चलायो।।
भांति भांति बन खेल शिकारा।। मारे रीछ रोझ झंखारा।। १।।

(दशम-ग्रंथः बिचित्र नाटक: ८ वां अध्याय)

विवाह

संवत् १७३४ की वैसाखी के समय जब देश-विदेश से सतिगुर जी के दर्शन के लिए संगत आई और लाहौर की संगत में एक सुभिखी क्षत्रि, जिस का नाम हरजस था, उन्होंने अपनी लड़की जीतो का रिश्ता गुरु जी के साथ कर दिया। विवाह का दिन आषाढ़ महीने में नियत करके गुरु जी ने देश के बिगड़े हुए हालात को भाँप रख कर आनंदपुर से ७-८ मील उत्तर दिशा पहाड़ में एक सुंदर शहर रच कर उस में सुभिखी के परिवार को निवास करवा दिया तथा २३ आषाढ़ संवत् १७३४ को अपने विवाह की मर्यादा को पूर्ण किया। आजकल यह स्थान 'गुरु का लाहौर' नाम से प्रसिद्ध है।

गुरु जी का नित्य कर्म

इस स्थान के पास ही पानी का एक चश्मा चल रहा है, जो गुरु जी ने घोड़े पर सवार ही पृथ्वी में नेज़ा मार कर निकाला था। इस चश्मे के साथ ही गुरु जी ने दो बार फिर नेज़े मार कर दो और चश्मे निकाले थे, जो आजकल गुरु की त्रिबैणी करके प्रसिद्ध हैं। प्रातः काल उठकर गुरु जी सौच स्नान करके अन्ध्र्यान हो कर बैठ जाते। दिन चढ़ने पर दीवान सजता, जिसकी समाप्ति के बाद

संगत को गुरुमत का उपदेश देते और शंके दूर करके उन्हें सुमार्ग पर लगाते। बाद में लंगर तैयार होते। सब प्रसाद खा कर अपने महिलों में जा कर आराम करते। पिछले पहर आप शस्त्र विद्या का अभ्यास आप करते और अपने योद्धाओं को भी करवाते। बाहर जंगल में जा कर निशाने बाजी करनी, घोड़े मोड़ने और तीर चलाने आदि। कारीगरों के द्वारा बड़े तीखे तीर, तलवारें और नेज़े, कटारें आदि तैयार करवाते रहते। कई सिक्ख गुरु की खुशी प्राप्त करने के लिए बढ़िया हथियार और अच्छे घोड़े ला कर आप जी को भेंट करते।

अपने योद्धाओं के साथ जंगल में जा कर शिकार खेलते, घोड़े दौड़ाते, तीर अंदाज़ी और बन्दूक की निशानेबाज़ी करते। ढाल तलवार का प्रयोग आदि आप जी का युद्ध अभ्यास का नित्य कर्म था। अपने योद्धाओं की शिकार चढ़ने की तैयारी के लिए आप जी ने एक बड़ा नगारा भी तैयार करवाया, जिस का नाम रणजीत नगारा रखा।

दुनी चंद मसंद काबल से बहुमूल्य चांदनी लाया

काबल में गुरु के घर का एक दुनीचंद नाम का एक मसंद रहता था। वह गुरु घर की दसवंध की धनराशि इकट्ठी करके एक बड़ी सुंदर पशमीने की चांदनी बनवा कर गुरु जी के लिए ले कर आनंदपुर हाज़िर हुआ। गुरु जी और सिक्ख संगत इनको देख कर बहुत प्रसन्न हुए।

आसाम के राजा की ओर से प्रासादी हाथी भेंट

आसाम के राजे राम गए के घर जो लड़का श्री गुरु तेग बहादुर जी के वरदान से हुआ था, उसने जवान हो कर जब अपनी

माता से मालूम किया कि वह गुरु जी के वरदान करके ही पैदा हुए थे, तब वह अपनी माता सहित कुछ बहुत कीमती अद्वितीय भेंट लेकर गुरु जी के दर्शन करने आया।

१. एक प्रासादी हाथी, जिसका कद छोटा था, माथे में रोटी जितना सफेद निशान, सूंड की नोक से लेकर पीठ के ऊपर की नोक तक सफेद लकीर अधिकांश शरीर का रंग काला था। यह हाथी बहुत अभ्यस्त था। जैसा कि गुरु जी के चरण धोने व सिर के ऊपर चौर करना आदि।

२. एक पंच कला शस्त्र, जिस में से कला दबाने से कटार, तमाचा, तलचार और नेजा पाँच शस्त्र बारी-बारी निकल आते थे।

३. एक चंदन की चौंकी जिस की कला दबाने से चार पुतलियाँ निकल कर खड़ी हो जाती थीं।

४. एक जाम कटोरा, जिस में पृथ्वी और काआश के रंगा-रंग स्वरूप दिखते थे।

५. मोतियों की एक माला, पाँच बहुमूल्य घोड़े साज सामान सहित, जड़ाऊ कंगन और बहुमूल्य वस्त्र।

राजे की इन अद्वितीय चीज़ों की भेंट को देखकर गुरु जी बहुत खुश हुए और उसे राज्य की खुशी बख्शी।

दूसरा विवाह

संवत् १७४१ की वैसाखी के मेले पर संगत गुरु के दर्शन को आई, तो लाहौर निवासी कुमरा क्षत्रि दुनी चंद ने अपनी सुपुत्री सुन्दरी का विवाह ७ वैसाख को गुरु जी के साथ कर दिया। इस माता जी की कोख से २३ माघ संवत् १७४३ को साहिबज़ादा अजीत सिंघ जी पाऊँटे साहिब पैदा हुए।

गुरु जी ने रणजीत नगारा बजाना और राजा भीम चंद का ईर्ष्या करनी

सतिगुरु जी ने जो रणजीत नगारा बनवाया था, उस को बजा कर गुरु जी शिकार चढ़ते थे तो उस की दूर-दूर तक गूँज पड़ती सुन कर राजा भीम चंद, जिस की रियासत बिलासपुर थी और गुरु जी अपने बसाए हुए नगर आनंदपुर में रहते थे। राजा भीम चंद गुरु जी से बहुत ईर्ष्या करता था। उस को डर था कि अपनी पूरी तैयारी करके गुरु जी मुझ पर हमला करके मेरी रियासत ही न छीन लें। उसने गुरु जी को दो चार बार इन्कार भी किया और एक दो बार झड़पें भी लीं, परन्तु गुरु जी न किसी से डरते थे और न किसी को नाजायज डराना धमकाना ही चाहते थे। इस कारण गुरु जी निर्भय होकर नगारा बजा कर शिकार चढ़ते और भांति-भांति के सैनिक खेल अपने जवानों से देखते।

दूसरी बात भीम चंद के विरोध की यह थी कि वह गुरु जी से बहुमूल्य चाँदनी तथा प्रासादी हाथी धोखे अथवा किसी बहाने लेना चाहता था, परन्तु गुरु जी ने उस की खोटी नीयत को समझ कर यह चीजें देने से इन्कार कर दिया।

बात ऐसे हुई कि राजा भीम चंद ने अपने वज़ीर को गुरु जी के पास भेजा कि मेरे लड़के की सगाई है। इस लिए आप अपना पासादी हाथी और चाँदनी कुछ दिनों के लिए दे दो। सगाई का काम करके यह दोनों चीज़ें वापिस भेज दी जायेंगी। परन्तु गुरु जी ने उसके दिल के खोटेपन को जान कर कहा कि यह चीज़ें हमें, हमारे एक श्रद्धालु सिक्ख ने प्रेम से दी थीं और प्रार्थना की थी कि इनको अपने पास ही रखना और किसी प्रेमी की मनेच्छा होती है, तो ऐसे ही किया जाता है।

इस लिए हम अपने प्रेमी सिक्ख की मनेच्छा के विरुद्ध यह चीज़ें किसी को नहीं दे सकते।

वकील (वज़ीर) ने जब यह बात भीम चंद को जा कर बताई, तो उसने बड़े क्रोध के साथ गुरु जी को चिट्ठी में लिखा कि अगर आप ने अपना हाथी और चाँदनी नहीं भेजनी, तो मेरे राज्य में से निकल जाओ। इन दोनों बातों में से मेरी कोई बात स्वीकार नहीं करनी, तो युद्ध के लिए तैयार हो जाओ। राजे के इस पत्र के उत्तर में गुरु जी ने लिखा कि आपकी दोनों बातें हमें अस्वीकार हैं। हम क्षत्रि हैं, युद्ध करना हमारा धर्म है। तुम युद्ध के लिए जल्दी आओ। गुरु जी का यह मुँह तोड़ उत्तर सुन कर भीम चंद दूसरे पहाड़ी राजाओं के साथ सलाह करके युद्ध की तैयारी करने लगा और इधर गुरु जी अपने बचाव के लिए योद्धाओं को तैयार करने लगे।

नाहन के राजे मेदनी प्रकाश का बुलावा

जब दोनों ओर से युद्ध की तैयारियाँ होने की खबर राजा मेदनी प्रकाश नाहन पति ने सुनी, तो उसने आपिस में इस दुर्घटना को रोकने के लिए गुरु जी को लिखा कि आप मेरे राज्य में चरण डाल कर मुझे खुशी प्रदान करो।

इसका एक कारण यह भी था कि मेदनी प्रकाश का अपने पड़ोसी राजा फतह शाह गड़वालिए के साथ कुछ देर से विरोध चल रहा था। उसने यह सोच कर कि गुरु जी आप जंग के बड़े योद्धे थे। उस के पास योद्धाओं की एक सेना भी थी। करामात में भी गुरु जी पूर्ण थे। अगर गुरु जी मेरे पास आ जाएँ, तो मुझे राजा फतहशाह का कोई डर नहीं रहेगा।

इन विचारों से नाहन के राजा ने गुरु जी के पास अपना वज़ीर भेज कर प्रार्थना की कि मेरे राज्य का पहाड़ी इलाका और यमुना

www.9009.co.in

नदी का किनारा बड़ा सुंदर और रमणीय है, अगर आप अपना निवास यहाँ ले आयें, तो मैं स्वयं को सौभायशाली समझूँगा।

गुरु जी का पाऊंटा नगर बसाना

अपने योद्धाओं के साथ विचार करके गुरु जी ने नाहन राजे की प्रार्थना स्वीकार करके तैयारी का हुक्म दे दिया और रणजीत नगारे की गूज से वैसाख संवत् १७४१ को अपने परिवार और योद्धाओं सहित नाहन प्रदेश को चल पड़े। आनंदपुर से चल कर आप जी ने पहला विश्राम कीरतपुर किया। फिर पड़ाव-पड़ाव चल कर ४-५ दिनों के बाद नाहन राज्य में पहुँच गए। आप जी के प्रवेश की जब राजा मेदनी प्रकाश को खबर हुई, तो उसने बड़े प्रेम सतिकार से एक सुंदर बाग में आप का डेरा करा दिया। दूसरे दिन राजे ने गुरु जी को साथ लेकर यमुना नदी के किनारे एक रमणीय स्थान दिखाया। जिस को गुरु जी ने पसंद करके अपना डेरा लगाने का हुक्म दे दिया। कुछ दिन तम्बुओं किनातों में विश्राम करके गुरु जी ने वहाँ एक किला बनाना आरम्भ कर दिया और राजा नाहन ने हर प्रकार की उन की सहायता करके इस को जल्दी ही पूरा करवा दिया। गुरु जी ने अपने इस निवास स्थान का नाम पाऊँटा रखा। यहाँ ठहर कर गुरु जी ने अच्छे घोड़े, शस्त्र और जवान भर्ती करके एक शक्तिशाली सेना तैयार कर ली। गुरु जी अपने योद्धाओं के साथ रोज़ शिकार को जाते और युद्ध विद्या का अभ्यास करते रहते।

पीर बुद्धु शाह का गुरु जी के पास आना

पीर बुद्धु शाह सढोरे का रहने वाला अपने पाँच सौ शिष्यों सहित गुरु जी की महिमा सुन कर आप जी के दर्शन करने पाऊँटे आया। गुरु जी के दर्शन और उन के साथ ज्ञान चर्चा करके बुद्धु

शाह ने कहा कि पातशाह ! मैंने आपके दर्शन करके अपना मन आपको भेंट कर दिया है। अब मैं और कहीं जाने के लायक नहीं रहा। तद्उपरान्त कई दिन गुरु जी के पास ठहर कर सतिसंग करता रहा। गुरु जी ने उस की श्रद्धा और प्रेम को देख कर उन के खाने-पीने और रिहायश का प्रबन्ध कर दिया।

नित्य कर्म

सुबह के दीवान के बाद गुरु जी अपने योद्धाओं से बाज आदि शिकारी जानवर ले कर पहाड़ी और जंगली इलाके में रणजीत नगारा बजाते हुए शिकार खेलने जाते। अन्य प्रकार के जानवर जैसे कि हरिण, रीछ, शेर आदि शिकार करके मारते। रणजीत नगारे की दूर-दूर तक गूँजें पड़तीं और इलाके में ख़बर हो जाती कि गुरु जी शिकार को चढ़े हुए हैं।

दोपहर को वापिस आ कर गुरु जी भोजन करके आराम करते, फिर दिन ढले उठ कर शौच-स्नान करके बाद दोपहर का दीवान सजा कर दर्शन अभिलाषी सिक्ख संगत को दर्शन उपदेश दे कर उन की मनोकामनाएँ पूर्ण करते।

राजा फतह शाह की मेदनी प्रकाश से सन्धि करवानी

गुरु जी की वीरता की महिमा को सुन कर राजा फतह शाह गड़वाल श्री नगर वाला एक दिन गुरु जी के दर्शन करने आया। राजा ने गुरु जी के दीवान में उपस्थित हो कर कुछ अच्छे शस्त्र-अस्त्र और घोड़े भेंट किए। गुरु जी का तेज-प्रताप देख कर राजा बहुत प्रभावित हुआ। गुरु जी ने राजा फतह शाह को समझाया कि आपको अपने पड़ोसी राजा मेदनी प्रकाश से वैर भाव नहीं रखना चाहिए। मिल कर रहना ही आप दानों के लिए

www.9009.co.in

सुखदायक है। तत्पश्चात् गुरु जी ने राजा मेदनी प्रकाश को बुलवा कर दोनों राजाओं की सन्धि करवा दी।

शेर मारना

दूसरे दिन गुरु जी दौनों राजाओं के साथ जंगल में शिकार खेलने गए। बहुत से जानवरों का शिकार करके जब आप जी वापिस आ रहे थे, तो एकपहाड़ निवासी ने आप जी को बताया कि गुरु जी ! यहाँ जंगल में एक बड़ा भयंकर शेर रहता है, जिस ने अनेक पशु मार दिये हैं। फिर गुरु जी को वह व्यक्ति एक घने जंगल में ले गया। गुरु जी ने शेर के ठिकाने को अपने योद्धाओं से घेरा डलवा लिया और आप कुछ योद्धाओं के साथ शेर की भाल करने लगे। शेर ने जब घोड़ों के सुमां और शिकारियों के हुंकारों की आवाज़ें सुनीं, तो वह गर्जता हुआ उठ खड़ा हुआ। गुरु जी ने अपने सारे और पहाड़ी राजाओं के योद्धाओं को ललकारा कि अगर कोई शूरवीर इस शेर को ढाल तलवार के साथ मारेगा, हम उसको मुँह माँगा ईनाम देंगे।

गुरु जी की ललकार सुन कर जब कोई योद्धा शेर को मारने के लिए आगे न हुआ, तो गुरु जी घोड़े से उतर कर और ढाल तलवार पकड़ कर आप शेर को ललकारते हुए उसके सामने हुए। जब शेर ने गर्ज कर आप जी के ऊपर छलाँग लगाई तब आप ने जल्द ही सिंह आसन उतार बाएँ हाथ के साथ शेर के आगे ढाल कर दी और दाएँ हाथ के साथ तलवार चला कर उसका पेट काट दिया। शेर धरती पर गिर गया, जिसको देख कर सब योद्धे और दोनों राजे प्रसन्नता के साथ गुरु जी की जय-जयकार करने लगे।

बाद में गुरु जी ने सब को बताया कि इस शेर का जन्म पाँडवों की कुल में हुआ था। कौरवों के साथ युद्ध के समय इस ने कई

www.9009.co.in

योद्धाओं को बल-छल के साथ मारा, जिस के कारण इस को कई तामसी योनियाँ भोग कर इस शेर की योनि मिली। अब हमारे हाथों मारे जाने के बाद इसका जन्म-मरण कट गया है। इस वार्ता को सुन कर समाज ने बड़ी हैरानी प्रक्ट की।

पीर बुद्धू शाह वापिस सढौरे को-सिक्ख सेवकों का आना-जाना

पीर बुद्धू शाह कुछ समय सतगुरु जी के दर्शन तथा उपदेश ले कर बहुत प्रसन्न हुआ तथा गुरु जी से आज्ञा ले कर अपने मुरीदों के साथ वापिस सढौरे को चला गया।

पाऊँटे साहिब गुरु जी के दर्शन उपदेश प्राप्त करने के लिए चारों ओर से सिक्ख सेवक शस्त्र, घोड़े तथा वस्त्र आदि भेंट ले कर आते तथा योद्धा आपकी सेना में भर्ती हो कर आप जी की खुशी प्राप्त करते। शिकार के बहाने जंगल में अनेक जानवरों का शिकार करके उनकी मुक्ति कर देते।

बुद्धूशाह ने पाँच सौ पठान नौकर रखवाने

नगर दामला ज़िला करनाल के कुछ पठान बादशाह औरंगज़ेब ने अपनी फौज में से निकाल दिए तथा पातशाही हुक्म जारी कर दिया कि इन्हें कोई नौकर न रखे। यह शाही कसूरवार हैं। अपने घर आ कर जब इन को पता चला कि गुरु साहिब जी अपनी सेना में जवानों को नौकर रख रहे हैं, तो यह पीर बुद्धूशाह को साथ लेकर गुरु जी के पास आए। पीर बुद्धूशाह की सिफ़ारश करके गुरु जी ने इनको अपनी सेना में नौकर रख लिया। इन में ४९६ पिआदे सिपाही तथा भीखम खाँ, काले खाँ, निजावत खाँ तथा हयात खाँ यह चार सरदार थे।

गुरु जी ने प्रत्येक सिपाही का एक रुपया तथा सरदार के पाँच रुपये रोज़ वेतन लगा दिया।

www.9009.co.in

बाबा राम राए जी से मेल

गुरु जी के प्रताप की दिन प्रति दिन महिमा सुन कर बाबा राम राए जी ने गुरु जी से भेंट करने के लिए अपने एक मसंद को, वस्त्र भूषण गुरु जी को भेंट करने के लिए दे कर पाऊँटे भेजा और प्रार्थना की कि मैं तुम्हें एकाँत जगह मिलना चाहता हूँ। मसंद से सारी बात सुन कर गुरु जी ने राम राए जी को कहा कि हम रविवार दूज थित को नाव में चढ़ कर सैर करेंगे। उस दिन तुम भी उसी घाट पर आ जाना। फिर दोनों नाव में बैठ कर मेल मिलाप कर लेंगे।

जब नियत किया हुआ दूज का दिन आया, तो बाबा राम राए जी अपने कुछ सिक्ख सेवकों के साथ गुरु जी को मिलने के लिए नियत स्थान पर यमुना के घाट पर आ गए। इधर गुरु जी भी अपने कुछ योद्धाओं को साथ ले कर वहाँ पहले ही पहुँच गए। इस समय गुरु जी के साथ दीवान नंद चंद, पुरोहित दया राम, मामा कृपाल चंद आदि गुरु जी के निकटवर्ती थे और बाबा राम राए जी के साथ गुरदास और तारा मसंद आदि सेवक थे। जब गुरु जी और राम राए जी नाव में बैठ कर नदी में गए, तो राम राए जी ने अपने मसंदों की बाबत गुरु जी को बताया कि वे कपटी हैं। सिक्खों से दसवंध का धन इकट्ठा करके उसका बहुत हिस्सा आप रख लेते हैं और थोड़ा हमें देते हैं। हमारी आज्ञा भी नहीं मानते अपनी मनमानी करते हैं। हम इन से बहुत दुखी हैं।

गुरु जी ने सारी बात सुन समझ कर राम राए जी को धैर्य और भरोसा दिया कि हम समय पर इन सब का सुधार करके आपका कष्ट दूर करेंगे। तुम कोई चिंता न करो। जब गुरु जी और बाबा राम राए जी वापिस किनारे पर आकर नाव से उतरे, तो गुरु जी के सिक्ख सेवकों ने दर्शन करके दोनों को नमस्कार किया। परन्तु

राम राए जी के मसंद सेवक आँखें मीच कर गुरु जी की तरफ पीठ करके खड़े रहे। यह देख कर गुरु जी ने कहा कि राम राए की संगत पैशाचिक है, जिस को हमारा दर्शन नहीं भाता।

जब राम राए जी गुरु जी से विदा हो कर चले गए, तो गुरु जी ने अपने सिक्खों को पूछा कि तुमने राम राए जी का क्या रूप समझ कर देखा और नमस्कार की थी। सिक्खों ने कहा कि महाराज ! हम ने उनको आपका रूप ही देख कर नमस्कार की थी। गुरु जी ने कहा कि गुरु के सिक्खों का ऐसा ही विश्वास होना चाहिए। उधर जब बाबा राम राए जी ने अपने सिक्खों से पूछा कि तुमने आँखें मीच कर गुरु जी की तरफ पीठ क्यों कर ली थी? उन्होंने कहा हम किसी दूसरे गुरु जी दर्शन नहीं करना चाहते। इस लिए हमने ऐसा व्यवहार किया था। यह सुन कर राम राए जी ने क्रोध से कहा तुम ठीक ही गुरु जी के वचनों के अनुसार पिशाच योनि के अधिकारी हो।

पुरातन ग्रंथों के अनुवाद और वाणी की रचना

पाऊँटे साहिब यमुना नदी के किनारे एक बड़ी सिला पर प्रातः काल बैठ कर गुरु जी एक पहिर सूर्योदय तक वाणी रचते थे। कृष्ण अवतार के प्रसंग का अनुवाद और चौबीस अवतारों की कथा यही पर ही आप जी ने लिखी, जिसका नाम आप जी ने बिचित्र नाटक रखा। इस के अतिरिक्त और भी कई रचनाएँ और ग्रंथों के अनुवाद यहाँ पर रह कर आप जी ने किए।

कपाल मोचन तीर्थ का मेला

एक बार शिकार खेलते हुए कार्तिक की पूर्णिमा का मेला देखने गुरु जी कपाल मोचन तीर्थ पर चले गए। इस मेले पर आप जी के दर्शन करने बहुत लोग भेंट लेकर हाज़िर होने लगे आए।

श्रद्धालुओं को गुरु जी सिरोपा के रूप में एक-एक पगड़ी देते थे। इस लिए अब पाँच सौ पगड़ी की ज़रूरत थी, परन्तु इस समय यहाँ इतनी पगड़ियाँ मिलनी असंभव थी। इस लिए गुरु जी ने कपाल मोचन सरोवर के चारों ओर पहरा लगवा दिया तथा हुक्म दिया कि जो भी पुरुष यहाँ शौच आदि करके इसकी पवित्रता भंग करेगा, उसकी पगड़ी उतार ली जाएगी तथा चेतावनी भी दी कि आगे से यहाँ शौच आदि करके इस सरोवर की पवित्रता को भंग ने करे। गुरु जी के इस हुक्म के अनुसार पहरेदार ने ७०० पगड़ी इकट्ठी कर ली। तीर्थ के श्रद्धालुओं ने गुरु जी के इस काम की बड़ी श्लाघा की कि आप ने सरोवर की पवित्रता कायिम रखने के लिए यह बहुत उत्तम काम किया है। गुरु जी ने इन पगड़ियों को धोबी से धुलवा कर सिक्खों को बाँट दीं।

इस तीर्थ पर महोदर ऋषि की टाँग से एक दैत्य का सिर, जिसे रामचन्द्र जी ने काटा था, चिपका हुआ स्नान करने से उतर गया। कपाल नाम है सिर का तथा मोचन कहते हैं उतर जाना, इस लिए इस का नाम कपाल मोचन प्रसिद्ध है।

बाबा राम राए जी का स्वर्ग सिधारना तथा मसंदों का सुधार

एक दिन बाबा राम राए जी अपने कमरे के अन्दर समाधि लगा कर अपना शरीर छोड़ कर आप अपने सिक्खों का उद्धार करने के लिए दूर चले गए। जब इस तरह तीन दिन निकल गए, तो मसंदों ने माता पंजाब कौर की मर्जी के उल्ट आप जी के शरीर का संस्कार कर दिया।

इस के पश्चात् मसंद मनमानी करने लगे, जिस से दुखी हो कर माता जी ने गुरु जी को पाऊँटे साहिब चिट्ठी भेज कर अपनी

सहायता के लिए प्रार्थना की। गुरु जी ने माता जी को लिखा कि आप अपने सब मसंदों को चिट्ठी लिख कर एक दिन इकट्ठा कर लो। हम उस दिन आपके पास आकर मसंदों का सुधार कर देंगे। नियत समय पर जब सारे मसंद डेहरादून इकट्ठे हो गए, तो माता पंजाब कौर ने अपना आदमी भेज कर गुरु जी को पाऊँटे से बुला लिया।

गुरु जी ने डेहरादून पहुँच कर पूछ पड़ताल करके जो मसंद कसूरवार थे, उनको योग्य सजाएँ दीं। जो माता जी को तंग करते थे अथवा जिन्होंने राम राए जी के शरीर का संस्कार किया था। उनको तेल के गर्म कढ़ाहे में फैंक कर जला दिया। बहुत से मसंदों को अन्य योग्य सजाएँ दे कर माता जी की आज्ञा में रहने का प्रण लिया। इसी तरह माता जी को मसंदों के दुख से मुक्त करके गुरु जी पाऊँटा साहिब आ गए।

राजा फतह शाह को गुरु जी ने तंबोल भेजना तथा भीम चंद के कहने पर उसका तंबोल वापिस करना

राजा फतह शाह गड़वालीए की लड़की के विवाह पर गुरु जी ने दीवान नंद चंद और दयाराम के हाथ सवा लाख का तंबोल भेजा। उधर बिलासपुर से राजा भीमचंद जब अपने लड़के की बारात लेकर पाऊँटे से गुजरा, तो गुरु जी ने उसको केवल दूल्हे, एक वज़ीर के साथ पाँच सात आदमियों को अपने पास से जाने की आज्ञा दी। बाकी सारी बारात घूम कर दूसरे रास्ते यमुना की ओर से श्रीनगर पहुँची। इस बात का गुस्सा करके जब राजा भीम चंद को पता चला कि गुरु जी के आदमी तंबोल लेकर फतहशाह के घर आए हुए हैं, तो उसने फतहखाह को कह कर गुरु जी का तंबोल वापिस करवा दिया। जब दीवान नंद चंद आदि तंबोल ले

कर वापिस आने लगे, तो भीमचंद ने तंबोल छीनने के लिए अपने आदमी भेज दिए। राजे के सैनिकों ने दीवान नंद चंद तथा पुरोहित दयाराम आदि ५०० योद्धाओं को यमुना नदी के घाट पर आ घेरा। परन्तु इन के साथ अच्छी झड़प करके गुरु जी के योद्धा अपना सामान ले कर यमुना नदी पार हो कर गुरु जी के पास पहुँच गए।

भंगानी का युद्ध

इस झड़प में मार खा कर पहाड़ी राजे फतह शाह को आगे करके नगारे बजाते हुए बहुत सारी सेना लेकर गुरु जी से युद्ध करने पाऊँटे को चल पड़े। इस प्रथाए गुरु जी ने बिचित्र नाटक में लिखा है—

फतह शाह कोपा तब राजा।। लोह परा हम सो बिन काजा।।

(दशम-ग्रंथः बिचित्र नाटक; ८वां अध्याय)

पठान नौकरों की गद्दारी

गुरु जी ने इनका मुकाबला करने के लिए भंगानी के स्थान पर पाऊँटे से छः कोस दूर पूर्व दिशा यमुना नदी के किनारे जा कर मैदान संभाला। जब दोनों ओर से आमने-सामने होकर लड़ाई के बिगल बजने लगे, तो पाँच सौ पठान जो बुद्धूशाह ने नौकर रखवाए थे, उन में से चार सौ पहाड़ी सेना की बहुसंख्या से डर कर गुरु जी को छोड़ कर पहाड़ी सेना से जा मिले। एक सरदार काले खाँ और उसके सौ साथी गुरु जी का खाया नकम हलाल करने गुरु जी के पास रहे। परन्तु गुरु जी ने काले खाँ को खुशी से आप छुट्टी दे दी और वह अपने साथियों सहित अपने घर को चले गए।

जब पठानों की इस गद्दारी का बुद्धूशाह को पता चला, तो वह अपने सात सौ मुरीद और चार पुत्र ले कर गुरु जी के पास पाऊँटे

www.9009.co.in

साहिब पहुँच गया। युद्ध की तैयारी देख कर पाँच सौ उदासी साधु भी गुरु जी को छोड़ कर भाग गए। पीछे उनका महंत कृपाल दास ही अकेला गुरु जी के पास रह गया।

गुरु जी की ओर से यह योद्धा थे। बीबी वीरो के पाँच पुत्र, मामा कृपाल चंद, लाल चंद, दयाराम, दीवान नंदचंद, महंत कृपाल दास, बुद्धुशाह के चार पुत्र और सात सौ मुरीद। दोनों ओर से मारु ढोल बज रहे थे। शूरवीर उछल-उछल कर शस्त्र चला रहे थे। घमासान का युद्ध मच गया।

पहाड़ी सेना के राजा हरी चंद, निजाबत खां आदि योद्धा और बहुत सेना मारी गई, तो राजा फतहशाह और उसके साथी हार कर अपने बचे हुए साथियों को साथ लेकर मैदान से भाग गए। गुरु जी ने अपने योद्धा जीत मल और सँगो शाह आदि शहीदों की लाशें इकट्ठी करके संस्कार कर दिया और घायलों को डेरे ले जा कर उनकी मरहम पट्टी की।

बुद्धूशाह और योद्धाओं को वरदान

इस जीत की खुशी में गुरु जी ने योद्धाओं के उत्साह के लिए सब को यथायोग्य सिरोपा और बख्शीशें दीं। महन्त कृपाल दास जी को आप ने उसकी शूरवीरता पर प्रसन्न होकर अपनी आधी दस्तार दी। दयानन्द पुरोहित को अपनी ढाल बख्शी और एक पटा लिख कर दिया कि जो इस ढाल के दर्शन करेगा, वह मनेच्छित फल प्राप्त करेगा। अपनी फूफी बीबी वीरो के पुत्र जीतमल और सांगूशाह के शहीद होने का उनके भाइयों माहरी चन्द, गुलाब चन्द और गंगा राम को बड़े कीमती जेवर और दुशाले आदि सिरोपा के रूप में दिये। तद्उपरान्त और योद्धाओं को यथायोग्य बख्शीशें दे कर कायरों को अपने दल से निकाल दिया। आप जी बिचित्र नाटक में लिखते हैं—

www.9009.co.in

जो जो नर तह न भिरे दीने नगर निकार।।
जो तिह ठउर भले भिरे तिनै करी प्रतिपार।। ३७।।

इस तरह योद्धाओं में उत्साह बढ़ गया और उन्होंने गुरु जी को कहा कि महाराज यदि हुक्म हो, तो हम पहले श्रीनगर को लूट कर उसके राजा फतह शाह को पकड़ कर आपके चरणों में डाल दें और फिर बाईधार के राजाओं को जीत कर लाहौर और दिल्ली पर हमला करके लूट-लाट कर नष्ट कर दें। इन योद्धाओं के यह उत्साहजनक वचन सुन कर गुरु जी ने कहा कि अभी ऐसा समय नहीं है। कुछ समय धैर्य धारण करो। अकाल पुरुष की दया से तुम्हें सारी पृथ्वी का राज ले देंगे। तुम अपने गुरुमुख धर्म पर दृढ़ रहो। सतिगुरु जी के यह शाँतमय वचन सुन कर सिक्खों ने प्रार्थना की कि यदि इस समय और कुछ नहीं करना, तो अपने आस-पास के किलों को युद्ध से जीत कर काबू कर लें, तो फिर हमारे आगे कोई अटक नहीं सकेगा।

भंगानी युद्ध का व्योरा

नाहन राज्य में यमुना नदी के किनारे गुरु जी ने संवत् १७४२ में किला बना कर निवास किया। यहाँ राजा फतह चंद की अगवाई में पहाड़ी राजाओं से युद्ध आप जी ने भंगानी के मैदान में संवत् १७४६ विक्रमी महीना वैसाख में करके पहाड़ी राजाओं को बहुत बुरी हार दी। राजा फतहशाह श्रीनगर गढ़वाली, हरीचंद हंडूरीया, मधकरशाह ढडवालिया, गोपाल चंद गुलेरिया, भीमचंद कहलीया, केसरी चंद जसवालीया, कृपाल चंद कटोचीया, पहाड़ी राजे युद्ध में शामिल हुए। इन में राजा हरीचंद, कृपालचंद, गाजी चंद, राजपूत राजे तथा बहुत से इनके योद्धे तथा इनके साथ पठानों के सरदार निजाबत खां, हयात खां और भीखन खां भी बहुत सारे पठान सिपाहियों सहित शहीद हुए।

www.9009.co.in

गुरु साहिब की ओर से जीतमल, संगोशाह, कुछ सिक्ख शूरवीर, पीर बुद्धुशाह के दो पुत्र तथा मुसलमान मुरीद, शहीद हुए। युद्ध जीत कर गुरु जी ने अकाल पुरुष का धन्यवाद किया—

भई जीत मेरी।। क्रिपा काल केरी।। ३४।।

(दशम-ग्रंथः बिचित्र नाटक; ८ वां अध्याय)

गुरु जी का आनंदपुर वापिस आना

पहाड़ी राजाओं को कमर तोड़ हार दे कर गुरु जी ने आनंदपुर जाने की तैयारी की, क्योंकि सिक्ख योद्धे इस जीत की खुशी में आनंदपुर जाने के लिए उत्सुक थे। गुरु जी लिखते हैं—

दोहरा— जुध जीत आए जबै टिके न तिन पुर पाव।।
काहलूर मै बाधिओ आन अनंदपुर गांव।। ३६।।

(दशम-ग्रंथः बिचित्र नाटक; ८ वां अध्याय)

योद्धाओं की उत्सुकता को शांत करने के लिए गुरु जी ने जल्दी ही तैयारी करके आनंदपुर को जाने की तैयारी करली। चलते समय गुरु जी ने रणजीत नगारे पर दोहरी चोट लगा कर इलाके में गूँज डाल दी।

घायल सिक्खों की मरहम पट्टी करते करवाते गुरु जी अपने साथियों को लेकर धीरे-धीरे जा रहे थे। रात के समय किसी गाँव के पास खुले स्थान डेरा करके दूसरे दिन प्रातः काल वहाँ से चल पड़ते थे। राजा नाहन की प्रार्थना स्वीकार करके सढौरा पार करके लाहड़पुर गाँव में गुरु जी ने १२ दिन आवास रखा।

यहाँ से चल कर जब गुरु जी राएपुर गाँव पहुँचे, तो वहाँ की रानी ने आपकी बड़े प्रेम और श्रद्धा से भोजन आदि की सेवा की। रानी के पुत्र को गुरुजी ने केश रखवाए तथा अपनी एक ढाल तलवार उसे प्रदान की।

यहाँ से चल कर गुरु जी कीर्तपुर पहुँच गए। यहाँ आप जी ने बाबा सूरजमल के पौत्रों गुलाब राए और शाम सिंघ को खुशी बख्शी और दूसरे दिन यहाँ से चल कर आनंदपुर पहुँच गए। आप जी का आना सुन कर आनंदपुर के लोगों ने बहुत खुशी मनाई और दीप माला की। नवम् गुरु जी के देहुरे यहाँ आप के शीश का संस्कार किया गया था, दर्शन करके आपजी ने कढ़ाह प्रसाद बाँटा। तद्उपरान्त दोनों वक्त आपके दीवान सजते और हजारों श्रद्धालु नर-नारी भेंट लेकर आपके दर्शन करके खुशी प्राप्त करते तथा आनन्दित होते। इस तरह आनंदपुर में नित्यप्रति उत्सव लगा रहता तथा हर तरफ रौनक तथा आनन्द मंगल होने लगे।

गुरु जी ने किला बनवाना

दशम गुरु जी ने नीति को ध्यान में रख कर अपने नगर आनंदपुर पर अपने आपको पहाड़ी राजाओं से सुरक्षित रखने के लिए फौजी ढंग का एक बड़ा किला बनाने के लिए बहुत से कारीगर तथा सिक्ख संगत को हुक्म दे दिया। सिक्ख संगत ने बड़े उत्साह से काम करके किला कुछ महीनों में ही तैयार कर दिया। इस किले में अपने तथा सैनिकों के रहन-सहन के लिए सब सहूलतों का प्रबंध कर दिया गया। इस किले का नाम गुरु जी ने 'आनंदगढ़' रखा।

भीम चंद ने गुरु जी के पास वज़ीर भेजना

गुरु जी रोज़ नित्य नए आए हुए सिक्ख योद्धाओं को लेकर पहाड़ी जंगल में शिकार जाते। शिकार समय दुदुंभियों की आवाज़ तथा शिकारी सिक्खों का हल्ला सुन कर सज्जनों को खुशी होती तथा शत्रुओं की छाती जलती। गुरु जी की नित्य नई चढ़दी कला

तथा सिक्ख योद्धाओं के इकट्ठ की खबरें सुन कर राजा भीम चंद बड़ी चिंता में रहता। एक दिन उसने अपने वजीर को बुला कर कहा कि गुरु जी से लड़ाई करनी अच्छी नहीं है, परन्तु इनके रोज़-रोज़ के कर्त्तव्यों से हमारी प्रजा बड़ी भयभीत और दुखी हो गई है। इसका कोई उपाय हमें सोचना चाहिए। वजीर ने कहा, गुरु जी से झगड़ा करने में सुख नहीं है। इन से मेल करना ही अच्छा है। यह पीरों के पीर हैं।

वज़ीर की बात सुन कर राजा ने अपने एक वज़ीर को बहुत सी भेंट देकर गुरु जी के पास भेजा और प्रार्थना की कि आप जी के सेवक मेरे राज्य के गाँव में जा कर दाना चारा लेने के लिए लोगों को तंग करते हैं। आप मेरी पिछली गल्ती को क्षमा कर दो तथा आगे से मेल-मिलाप की नीति को धारण करते हुए अपने सिक्खों को समझा दो कि मेरी प्रजा के लोगों को तंग न करें।

गुरु जी ने कहा कि हे वज़ीर ! हम अपने सिक्खों के मनोरंजन के लिए शिकार को जाते हैं। हमें तुम्हारे राजे से कोई द्वेष नहीं। उसको कहो निश्चिंत हो कर अपने देश का राज्य करे तथा प्रजा को सुखी रखे। फिर वज़ीर ने कहा, महाराज ! राजा भीम चंद तुम्हें मिलना चाहता है, यदि आज्ञा दो, तो दर्शन के लिए उपस्थित हो जाए। गुरु जी ने कहा यदि वह अहंशून्य होकर मिलना चाहे तो हम कभी भी उसे मिलने को तैयार हैं।

भीम चंद का गुरु जी को मिलने आना

राजा भीमचंद अपने वज़ीर से सारी बात सुन कर बड़ा खुश हुआ और गुरु जी से मिलने के लिए अनेक प्रकार की भेंट लेकर अपने मन्त्री तथा सेनासहित बड़ी सज-धज से आनन्दपुर आ गया और दूसरे दिन समय लेकर गुरु जी के दरबार में उपस्थित हुआ।

www.9009.co.in

भेंट आगे रख कर गुरु जी को नमस्कार करके अपने स्थान पर बैठ कर परस्पर गुरु जी से बातें करके बहुत प्रभावित होकर आप की महिमा करने लगा। पिछली भूल की क्षमा माँग कर आगे से राजे ने गुरु जी के अनुसार रहने का प्रण किया। गुरु जी ने राजे को बड़ा कीमती सिरोपा दिया तथा राजा गुरु की खुशी प्राप्त करके अपनी रियास्त को चला गया। इस के बाद भी राजा भीम चंद गुरु जी को बड़े प्रेम से कई बार अच्छी-अच्छी भेंट भेज कर गुरु जी की खुशी प्राप्त करता रहा।

कवियों का सम्मान और बखशीशों

गुरु जी के पास ५२ कवि रहते थे, जो नित्य नई से नई कविता रच कर गुरु जी को सुनाते थे और गुरु जी उन पर प्रसन्न हो कर उन्हें यथायोग्य इनाम देते थे। इस लिए गुरु जी की प्रसिद्धि चारों ओर फैल गई कि गुरु जी आप भी चोटी के कवि हैं और कवियों के पारखु भी चोटी के हैं।

सतिगुरु जी के पास चार प्रकार के श्रद्धालुओं का आना-जाना करके भीड़ लगी रहती थी।

१. दर्शन अभिलाषी सिक्ख संगत।

२. कवि और गुणीजन।

३. प्राण न्यौछावर करने वाले योद्धे।

४. साधु संत महात्मा, वैरागी सन्यासी आदि आत्मा-परमात्मा के सम्बन्ध में वार्तालाप करने वाले।

जेब काटने वाले चोर को शिक्षा

इस तरह गुरु जी के दरबार में सदा एक मेला सा लगा रहता था। एक दिन चार सिक्खों ने गुरु जी के पास आ कर प्रार्थना की कि किसी ने उनकी जेब काट कर पैसे नकदी निकाल ली है।

www.9009.co.in

उनकी बात को सुन कर अपने-अपने सिक्खों को हुक्म दिया कि संगत की भीड़ में एक आदमी जिसने सिर पर लाल पगड़ी बांधी हुई है, कमर पर धोती, हाथ में माला तथा माथे पर चंदन का सफेद तिलक लगाया हुआ है, उसे पकड़ कर हमारे पास ले आओ।

सिक्खों ने निशानी के अनुसार ही एक आदमी के हाथ पैर बाँध कर गुरु जी के पास ले आए। जब गुरु जी ने उसकी तलाशी करवाई, तो उसके पास सारा ही चुराया हुआ चारों सिक्खों का धन निकल आया। तब गुरु जी ने उस जेब कतरे को कैद करके कुछ दिनों के बाद बुला कर कहा कि तूने जेब काटने के लिए हमारी आराधना करके प्रण किया था, मैं तीन जेबें काट कर फिर यह काम नहीं करूँगा। परन्तु तू ने अपने प्रण से फिर कर चौथी बार जेब क्यों काटी? इस लिए तुम्हें कैद की सजा दी जाती है। परन्तु यदि अब तुम यह प्रण हमारे सामने कर लो कि आगे से कोई ऐसा काम नही करोगे, तो तुम्हें छोड़ देते हैं। जब उसने गुरु जी से क्षमा माँग कर यह प्रण लिया, तो गुरु जी ने उसे बुला कर उपदेश देकर कैद से छोड दिया।

मीयाँ खाँ तथा अलफ खाँ की चढ़ाई

चौपई।।

बहुत काल इिह भांति बितायो।। मीआँ खान जंमू कह आयो।।
अलफ खान नादौन पठावा।। भीम चंद तन बैर बढावा।। १।।

(दशम-ग्रंथः बिचित्र नाटक; ९ वां अध्याय)

ऊपर दिए कथन के अनुसार जब बहुत समय सुख शांति से बीत गया, तो औरंगज़ेब का अहलकार मीयाँ खाँ पहाड़ी राजाओं से कर लेने आप जम्मू आया और अपने साथी अलफ खाँ को कुछ फौज देकर नादौन (कांगड़े की राजधानी) राजा कृपाल चंद से

www.9009.co.in

कर लेने भेज दिया। राजा कृपाल चंद ने अपना कर अलफ खाँ को देकर प्रार्थना की कि राजा भीम चंद कहलूरपति हम सब राजाओं से बड़ा है। यदि तुम उस से कर पहले वसूल कर लो, तो दूसरे बाईधार के सभी राजे अपने आप ही शाही कर देंगे। यदि राजा भीम चंद कर देने से इंकार करेगा तो हम आपकी मदद करेंगे। कृपाल चंद का कहना मान कर अलफ खाँ ने भीम चंद को संदेश भेजा कि सरकारी कर जल्दी लेकर मेरे पास आओ, नहीं तो मैं फौज के ज़ोर से वसूल करूँगा।

अलफ खाँ का संदेश सुन कर भीमचंद ने अपने पटवारी तथा दूसरे राजाओं को बुला कर सलाह की कि हमें अलफ खाँ को कर नहीं देना चाहिए। यदि युद्ध करना पड़े, तो युद्ध करना चाहिए तथा इस काम के लिए हमें गुरु जी से भी सहायता लेनी चाहिए। यह सलाह पक्की करके भीम चंद ने अपने एक मंत्री को तुरंत ही गुरु जी के पास भेज कर प्रार्थना की कि यदि हमें अलफ खाँ के साथ युद्ध करना पड़े, तो कृपा करके आप ने हमारी सहायता करनी। राजे की यह प्रार्थना स्वीकार करके गुरु जी ने मंत्री को कहा कि राजे को हमारी ओर से कहना कि कोई चिंता न करे हम उस के पास पहुँच जाएँगे। इस प्रथाए गुरु जी बिचित्र नाटक में लिखते हैं—

युद्ध काज न्रिप हमै बुलायो।। आपि तवन की ओर सिधायो।।

(दशम-ग्रंथः बिचित्र नाटक; ९ वां अध्याय)

युद्ध नादौण

(संवत् १७४७ का आरम्भ)

इस समय राजा भीमचंद के साथ उसके सहायक यह राजे थे– १. राजा राम सिंघ जसवालीया। २. प्रिथीचंद ढडवालीया। ३. सुखदेव जसरोटीया। गुरु जी इन का संदर्भ अपनी वाणी में इस तरह देते हैं।

www.9009.co.in

तहा राज सिंघ बली भीम चंद।। चढ़ियों राम सिंघ महा तेज वंद।।
सुखदेवगाजी जसारोट राजं।। चढ़े क्रोध कीने करे सरब काजं।। ३।।

इन राजाओं के साथ तथा इनकी सेनासहित राजा भीमचंद नादौण पहुँच गया, जहाँ राजा कृपाल चंद अलफ खाँ की सहायता के लिए एक पहाड़ी पर (काठ गढ़) लकड़ी के साथ एक पक्का 'वाडा' बना कर उस में फौज लेकर बैठा हुआ था। जब भीम चंद की फौज इस काठगाढ़ के सामने गई, तो दोनों ओर से मारो-मार करके शस्त्र-अस्त्र चलने लगे।

यथा— तिन कठगढ़ नवरस पर बांधो ।।
तीर तुफंग नरेसन सांधो ।। २ ।।
(दशम-ग्रंथः बिचित्र नाटक; ९ वां अध्याय)

परन्तु राजा कृपाल चंद ने काठगढ़ को तीरों, बंदूकों की बोछाड़ करके इन्हें पीछे हटा दिया। इतनी देर में पीछे गुरु जी भी भीमचंद की सहायता के लिए योद्धे ले कर पहुँच गए। गुरु जी के योद्धायों ने काठगढ़ के सामने से हल्लाबोल दिया। दोनों ओर से तीरों, गोलियों की वर्षा होने लगी। अनेक शूरवीर खूनोखून हो गए। इस समय हनूमान को मान कर राजा भीम चंद आप आगे होकर क्रोध से शत्रु सेना पर जा झपटा। गुरु जी इसका वर्णन करते हैं—

तबै भीम चंद कीयो कोप आपं।। हनूमान के मंत्र को मुख जापं।।
सबै बोल बोले हमै भी बुलायं।। तबै ढोअ कै कै सु नीके सिधायं।। ६।।
(दशम-ग्रंथः बिचित्र नाटक; ९ वां अध्याय)

भीम चंद ने आप काठगढ़ ऊपर हल्ला बोल दिया तो राजा कृपाल चंद अपने साथी राजा दियालचंद बिजड़वालिए तथा अपने योद्धाओं के साथ कृपानों से काठगढ़ से बाहर निकल कर दो-दो

www.9009.co.in

हाथ करने लगा। बड़े ज़ोर से दोनों ओर से शूरवीरों की झड़पे हुई, अनेक योद्धे युद्धभूमि में लेट गए। इस सख्त मुठ-भेड़ में कृपाल चंद के साथी राजा दियाल चंद सतिगुरु जी के हाथों बंदूक की गोली खा कर वृक्ष के टहने की तरह घोड़े से गिर कर दम तोड़ गए।

इस शूरवीर की मौत से कृपाल चंद के सैनिकों के हौसले टूटे हुए देख कर भीम चंद ने बंदूकों से तीरों के बाणे की झड़ी लगा दी। परन्तु जब कृपाल चंद और अलफ खां अभी भी युद्धभूमि में खड़े होकर लड़ते रहे तो गुरु जी ने बंदूक छोड़ कर तीर कमान पकड़ कर सात बाण दुश्मनों पर चलाए। इन बाणों से अनेक शूरवीर धरती पर गिर पड़े, तो धरती खून से रंग गई। शत्रु दल मैदान छोड़कर भाग गए तथा राजा भीमचंद की जय-जयकार हो गई। रात के अन्धेरे में अलफ खाँ अपनी जान बचा कर भाग गया।

आलसून गाँव के लोगों का सुधार

सतिगुरु जी इस युद्ध के बाद आठ दिन नदी के किनारे नादौन शहर रहे। तद्उपरान्त जब आप जी आनंदपुर वापिस आ रहे थे तो रास्ते में आलसून नाम के एक गाँव के लोगों ने गुरु जी को देख कर नमस्कार न किया और न ही कोई भेंट अर्पण की। देख कर हँसते और सिक्खों को मज़ाक आदि करते रहे। उनकी कुबुद्धि को देख कर गुरु जी ने दीवान नंद चंद को आज्ञा दी कि इन लोगों का सुधार करने के लिए इनके घर बाहर लूट लो। इस आज्ञा के बाद गाँव के जिस आदमी ने सिक्खों से क्षमा माँग ली, उसे छोड़ कर बाकी सब के घर बाहर लूट कर सिक्ख आनंदपुर आ गए।

www.9009.co.in

साहिबज़ादे का जन्म

आनंदपुर पहुँच कर सुबह शाम दीवान सजा कर गुरु जी देश-प्रदेश से आई संगत को दर्शन उपदेश दे कर आनन्दित करते। सुबह दीवान में कीर्तन, पाठ और उपदेश होते। शाम के समय ऐतिहासिक प्रसंग, शस्त्रास्त्र विद्या के अभ्यास के लिए जंगल में शिकार खेलने ले जाते। इस तरह धर्म और कर्म में गुरु जी सदा ही लगे रहते।

इन दिनों में ही युद्ध के बाद चैत्र सुदी सप्तमी मंगलवार संवत् १७४७ को माता जीतो जी की पवित्र कोख से साहिबज़ादे का जन्म हुआ। गुरु जी ने इन का नाम जुझार सिंघ रखा। क्योंकि यह नादौन युद्ध के समय गृह आए थे।

आनंदपुर के चोरों का सुधार

इस तरह शन्ति के कुछ साल बीत गए। गुरु जी के सिक्खों ने इलाके में से बहुत चोर डाकू पकड़ कर उनको सख्त सजाएँ दीं। जिस कारण कई लोग डर से शहर छोड़ कर ही भाग गए, परन्तु बाद में भूखे मरते फिर कई आनंदपुर वापिस आ गए। इस प्रथाए गुरु जी लिखते हैं—

बहुत बरख इहि भांति बिताए।। चुनि चुनि चोर सबै गहि घाए।।
केतक भाजि सहिर ते गए। भूख मरत फिरि आवत भए।। १।।

(दशम-ग्रंथः बिचित्र नाटक; १० वां अध्याय)

दिलावर खाँ की चढ़ाई तथा भांज

जब अफल खाँ ने हार खा कर अपना सारा हाल सूबा लाहौर को जा बताया, तो दिलावर खाँ ने गुरु जी से बदला लेने के लिए बड़े क्रोध से अपने पुत्र खानजादा को भेजा कि आनन्दपुर को नष्ट करके तथा पहाड़ी राजाओं से कर वसूल करके जल्दी वापिस आ

www.9009.co.in

जाना। खानजादा फौज लेकर सरसा नदी से पार ठहर गया और रात को हमला करने की तैयारी करने लगा। परन्तु सर्दी की ऋतु होने के कारण सैनिक समय पर हमला न कर सके। इधर जब गुरु जी को पता चला कि दुश्मन फौजें नदी के पार ठहर कर हम पर हमले की तैयारी कर रही हैं, तो आप ने अपने योद्धाओं को हुक्म दिया कि शत्रु को नदी को पार न करने दो। आगे जाकर शत्रु पर भरपूर हमला कर दो। इस आज्ञा के अनुसार जब सिक्ख योद्धे धौंसे व नंगारे बजाते हुए मारोमार करके शत्रु की तरफ चल पड़े, तो खानजादा और उसके सैनिक सिक्खों के नदी के पार किनारे को सुन कर भयभीत हो गए तथा बिना किसी मुकाबले के ही वहाँ से वापिस भाग गए। गुरु जी बिचित्र नाटक में लिखते हैं—

नराज छंद।। निलज्ज खान भजियो।। किनी न ससत्र सजियो।।
सु तिआग खेत को चले।। सु बीर बीरहां भले।। ७।।

(दशम-ग्रंथः बिचित्र नाटक; १० वां अध्याय)

वापिस भागते हुए खानजादे ने रास्ते में एकगाँव बरवा को लूट कर फौज को खाने को दिया।

हुसैनी युद्ध

भाग कर तब खानजादा ने लाहौर पहुँच कर अपनी बहादरी तथा बुद्धिमत्ता अपने पिता को भाग कर आ जाने में ही बताई, तो फिर हुसैन खाँ जरनैल ने गुरु जी केऊपर चढ़ाई करके जीत प्राप्त करने के लिए अपने आपको तैयार किया। वह दो हज़ार शस्त्रधारी सेना लेकर गुरु जी केऊपर चढ़ आया। गुरु जी लिखते हैं—

करियो जोरि सैनं हुसैनी पयानं।। प्रथम कूटि कै लूट लीनो अवानं।।
पुनर ढडवौं कीयो जीति जेरं।। करे बंदि कै राज पुत्रान चेरं।। २।।

(दशम-ग्रंथः बिचित्र नाटक; ११ वां अध्याय)

www.9009.co.in

अर्थात् हुसैनी ने बड़े ज़ोर से चढ़ाई करके पहले पहाड़ियों के घरों को लूटा और फिर राजे गड़वाल को अपने अधीन करके राज पुत्रों को कैदी बना लिया। हुसैनी कर ज़ोर देख कर सारे पहाड़ी राजे उसको नजराना लेकर मिल पड़े, परन्तु एक गुलेरीए राजा गोपालचंद की हुसैनी से अनबन ही रही। उसने हुसैनी को कर देने से न कर दी और अपने किले में ठन कर बैठ गया। हुसैनी ने गोपाल के किले को घेरा डाल दिया गोपाल ने अपना आदमी भेज कर गुरु जी से सहायता माँगी। गुरु जी ने भाई संगतीया सिंघ को सौ घोड़ सवार देकर गोपाल की राजा भीमचंद तथा हुसैनी से सुलाह करवाने के लिए उनको इकट्ठे बैठ कर बातचीत आरम्भ की, तब राजा भीम चंद तथा कृपाल चंद की बेईमानी से राजा गोपाल चंद को पकड़ कर कैद करना चाहा। जिस बात से गुस्सा खा कर संगतीया सिंघ की भीम चंद आदि राजाओं तथा हुसैनी से टक्कर हो गई। इस टक्कर में संगतीया सिंघ और उसके साथी योद्धे शहीद हो गए। उधर हुसैनी और राजा कृपाल चंद भी अपने बहुत से साथियों के साथ मारे गए। गूरु जी लिखते हैं—

जीत भई रण भयो उझारा।। सिंम्रित करि सभ घरो सिधारा।।
राखि लीयो हम को जगराई।। लोह घटा अन तै बरसाई।। ६९।।

(दशम-ग्रंथः बिचित्र नाटक; ११ वां अध्याय)

अर्थात् गोपाल की जीत हो गई। जंग बिगड़ गया। योद्धे जंग की बातों को याद करते हुए अपने घरों को चले गए। हमें वाहिगुरु ने हाथ दे कर रख लिया। शस्त्रों के बादलों की वर्षा और जगह ही हो गई अर्थात् जो हुसैनी हम पर फौज़ लेकर चढ़ा था, वह राजाओं की मुठ भेड़ में हम से दूर-दूर ही मर गया।

साहिबज़ादे का जन्म

माघ महीने के पिछले पक्ष में रविवार संवत् १७५३ को माता जीतो जी की पवित्र कोख से साहिबज़ादे ने जन्म लिया, जिसका नाम गुरु जी ने जोरावर सिंघ रखा। गुरु जी ने कहा अपने जोर से ही अकाल पुरुष ने हुसैनी का नाश किया है, इस के लिए यह सिंघ जोरावर है। इस समय हुसैनी वध और साहिबज़ादे के जन्म की सम्मिलित खुशियाँ मनाई गई।

ग्रंथों के अनुवाद व कवियों का सम्मान

सतिगुरु जी की वीर रस और साहित्यिक रुचि की महिमा को सुन कर आप जी के पास गुणीजन अपने साहित्यिक गुण दिखा कर धन की प्राप्ति के लिए और दूसरे आप जी के दर्शन करने तथा अपना जीवन सफल करने के लिए आते थे। अच्छे नौ काव्य रसज्ञ कवियों को आप जी मुँह माँगा धन देते थे और जो कोई नौकरी करना चाहे उसको नौकर रख लेते थे।

अपने योद्धाओं में वीर रस का भाव भरने के लिए आप जी ने अपने कवियों से महाभारत का अनुवाद करवाया। चंडी चरित्र जिस में दैत्यों और देवी के युद्धों का प्रसंग है, आप जी ने इस की भाषा में रचना करवाई। इस वाणी को पढ़ कर कायर भी बलवान योद्धे बन जाते हैं।

साधू समाज, तपस्वी बैरागी योगी और सन्यासी आदि भी आप जी के दर्शन करके अपने आप को सौभाग्यशाली समझते थे।

साहिबज़ादा फ़तह सिंघ का जन्म

बुधवार फाल्गुन महीने संवत् १७५५ में माता जीतो जी की पवित्र कोख से साहिबज़ादा जी ने जन्म लिया। जिस का नाम गुरु जी ने फ़तह सिंघ रखा।

www.9009.co.in

ब्राह्मणों की परीक्षा करनी

अच्छे श्रेष्ठ ब्राह्मणों का चुनाव करने के लिए गुरु जी ने दूर-दूर के क्षेत्रों से जैसे कि कश्मीर, मथुरा, प्रयाग, काशी आदि दक्षिण पूर्व दिशा से सारे पंडितों को आनन्दपुर आने के लिए अपने सिक्ख भेज कर बुलाया।

जब बहुत से पंडित इकट्ठे हो गए, तो गुरु जी ने उनके लिए एक ओर लंगर में खीर पूड़े तथा लड्डू आदि तैयार करवाए और दूसरी ओर मांसहारी भोजन तैयार करवाया। तद्उपरान्त गुरु जी ने सब को विदित्त कर दिया कि जो वैष्णव भोजन खीर पूड़े आदि खाएगा उसे पाँच रुपए दक्षिणा मिलेगी तथा जो माँस वाला भोजन खाएगा उसे पाँच मोहरें दक्षिणा मिलेगी। गुरु जी के यह वचन सुन कर बहुत से पंडित माँस खाने वाले लंगर में जा बैठे तथा बाकी थोड़े से ही वैष्णव भोजन खीर पूड़े वाले लंगर में रह गए। दोनों लंगरों में सब ने भोजन खा लिया, तो गुरु जी ने मांसाहारी ब्राह्मणों को सम्बोधित करके कहा कि तुमने लोभवश हो कर अपना ब्राह्मणी धर्म भ्रष्ट किया है। माँस खाना क्षत्रियों का धर्म है, ब्राह्मणों का नहीं। इस करके तुम्हें पाँच-पाँच मोहरों की जगह पाँच-पाँच रुपए दक्षिणा दी जाती है। तत्पश्चात् आप जी ने वैष्णवों को कहा तुमने लोभ वश हो कर अपना ब्राह्मण धर्म नहीं छोड़ा, जो लोक-परलोक में सहायक होता है। तुम्हें शाबाश है। उनको गुरु जी ने प्रसन्न हो कर पाँच-पाँच मोहरें दक्षिणा दी और बड़े सतिकार से उनका विश्राम करवाया।

जब कुछ दिन बीत गए, तो गुरु जी ने इन पंडितों को बड़े सतिकार से कहा कि हे बुद्धिमान पंडित जी ! हम चंडिका देवी को सिद्ध करना चाहते हैं। आप इसका हमें कोई उपाय बताओ। उन पंडितों में से एक ने बताया कि महाराज ! एक पंडित केशोदास

काशी में रहता है, यदि उसको बुला लो, तो वह पूरी विधि से मंत्रों का जाप करके तुम्हें देवी को सिद्ध करा देगा।

पंडित केशोदास का प्रसंग

पंडितों की बात सुन कर गुरु जी ने केशोदास को काशी से बुला कर कहा कि सब पंडितों ने आपकी स्तुति की है कि तुम देवी को सिद्ध करने की विधि भली-भान्ति जानते हो। यदि यह ठीक है, तो इस कार्य के लिए जिस चीज़ की ज़रूरत है वह हमें बताओ। हम सारी सामग्री तुम्हें दे देते हैं। देवी प्रकट करके हम हिन्दू-धर्म की रक्षा के लिए तुर्कों के जुल्म को मिटाना चाहते हैं।

पंडित केशोदास ने कहा कि गुरु जी ! देवी सिद्ध करना बहुत कठिन है। इस लिए बहुत समय, धन तथा कठिन साधनों की जरूरत है। गुरु जी ने कहा आपकी इच्छा के अनुसार हम सब कुछ पूरा करेंगे। आप कार्य आरम्भ करने की विधि तैयार करो।

हवन आरम्भ

केशोदास के कहे अनुसार जब गुरु जी ने हवन की सामग्री घी, सुगंधि आदि मंगवा दी, तो आनन्दपुर से ६ मील उत्तर दिशा में एक पहाड़ी पर केशोदास ने सारी तैयारी करवाकर वैसाख की पूर्णिमा संवत् १७५५ विक्रमी को पूरी सज-धज से हवनकुण्ड तैयार करके वेद-मंत्रों के पाठ से अग्नि प्रज्वलित कर दी। तद्उपरान्त गुरु जी ने सारा दिन हवन करते रहते और रात को विश्राम करते। जब इस तरह दस महीने बीत गए, तो गूरु जी ने पूछा पंडित जी ! अभी तक देवी प्रकट क्यों नहीं हुई,तो केशोदास ने कहा, महाराज! आप शिकार खेल कर जीव हत्या करते हो इस लिए देवी प्रकट होने में यह भारी विघ्न है। पंडित की बात सुन कर गुरु जी ने उस दिन जितने भी जंगली जानवर शिकार करके लाए

थे सब पर पानी का छींटा दे कर उन्हें प्राण दान देकर छोड़ दिया। बाद में जब फिर गुरु जी ने एक दिन पूछा, तो पंडितों ने कहा कि गुरु जी ! यदि किसी श्रेष्ठ पुरुष की बली दी जाए, तो देवी प्रकट हो जाएगी। गुरु जी ने कहा पंडित जी ! आपसे और कौन श्रेष्ठ पुरुष हो सकता है। तुम अपनी बली देने के लिए तैयार हो जाओ। यह बात सुन कर केशोदास वहाँ से अवसर देख कर भाग गया। जब बहुत समय तक केशोदास वापिस न आया, तो गुरु जी ने सारी समग्री एक बार ही हवनकुण्ड में डाल दी, जिस से आग की बहुत ऊँची लपटें निकलीं, जिन को देख कर लोगों ने समझा कि देवी प्रकट हो गई है। गुरु जी हवनकुण्ड के पास नंगी तलवार हाथ में पकड़ कर ऊँची करके खड़े हो गए और लोगों को बताया कि 'आह' शक्ति प्रकट हुई है। इस से ही हम ने जुल्म और अत्याचारियों का नाश करना है।

पाँच प्यारों का चुनाव करना

तत्पश्चात् गुरु जी सिक्ख सेवकों सहित वापिस आनन्दपुर आ गए और सब सिक्ख संगत को वैसाखी के मेले कर आनन्दपुर आने के लिए हुक्मनामे लिख दिए। आप जी के हुक्मनामे पढ़ कर असंख्य संगत देश-प्रदेश से आनन्दपुर पहुँच गई। दोनों समय सुबह शाम दीवान सजते और संगत गुरु जी के दर्शन करके और उपदेश सुन कर अपना जीवन सफल करती।

वैसाखी संवत् १७४६ वाले दिन एक बहुत बड़े पंडाल में गुरु जी का दीवान सजा। हज़ारों संगत पंडाल में बैठ कर गुरु जी के शुभ उपदेश सुनने के लिए एकत्र हो गई। संगत गुरु जी के मुखारबिंद की तरफ़ देख कर आप जी के अनुपम वचन सुन रही थी कि आप जी अपने दाएँ हाथ में एक चमकती हुई तलवार ले

www.9009.co.in

कर खड़े हो गए। ऊँची आवाज़ से कहा कोई एक सिक्ख हमें अपना शीश भेंट दे। आप जी के यह वचन दो तीन बार सुन कर भाई दया राम जी उठ कर खड़े हो गए ओर प्रार्थना की, गुरु जी मेरा शीश हाज़िर है। भेंट ले लो। गुरु जी ने उसको अपने पास बुला लिया और बाजू पकड़ कर एक तंबू में ले गए और कुछ देर के बाद रक्त से भीगी हुई तलवार तंबू से लेकर बाहर आ गए। फिर एक और सिक्ख के शीश की भेंट माँगी। इस बार भाई धर्म चंद उठ कर गुरु जी के पास शीश भेंट करने के लिए हाथ जोड़ कर हाजिर हो गया। गुरु जी इसे भी बाजू से पकड़ कर तम्बू में ले गए और कुछ देर के बाद खून से भीगी हुई तलवार ले कर बाहर आ गए फिर एक और सिक्ख के शीश की भेंट माँगने लगे। इस तरह तीसरी बार भाई मुहकम चंद जी चौथी वार भाई साहिबचंद जी आए पाँचवी बार भाई हिम्मत मल जी के शीश की भेंट ले कर आप जी ने तलवार को म्यान में डाल कर अपने सिंघासन पर बैठ गए और तम्बू में ही पाँच शीश भेंट करने वाले प्यारों को नई पोशाकें पहना कर अपने पास बैठा कर सब संगत को कहा कि यह पाँचों मेरा ही स्वरूप हैं और मैं इनका स्वरूप हूँ। यह पाँच मेरे प्यारे हैं।

अमृत तैयार करके छकाना

तीसरे पहर गुरु जी ने एक लोहे का बाटा मँगवा कर उस में सतलुज नदी का पानी डाल कर अपने आगे रख दिया। बाद में पाँच प्यारों को नवीन वस्त्र और शस्त्र सजा कर अपने सामने खड़े कर लिया। फिर अपने बाएँ हाथ से बाटे को पकड़ कर दाएँ हाथ से खण्डे को जल में घुमाते रहे और मुख से जपुजी साहिब आदि वाणियों का पाठ करते रहे। पाठ की समाप्ति के बाद अरदास करके पाँच प्यारों को बारी-बारी पहले अमृत के पाँच-पाँच घूँट

www.9009.co.in

पिलाए। फिर पाँच-पाँच बार हर एक की आँखों पर इस के छीटें मारे, पाँच-पाँच घूँट हर एक के केशों में डाले। हर बार बोल 'वाहिगुरु जी का खालसा वाहिगुरु जी की फतह' पहले आप कहते और पीछे-पीछे अमृत पीने वालो से कहलाते।

इस तरह अमृत पिला कर हर एक प्यारे को गुरु जी ने सिंघ पद प्रदान कर दिया। जैसा कि भाई दया राम, भाई दया सिंघ, भाई धर्म चंद, भाई धर्म सिंघ, भाई मुहकम चंद, भाई मुहकम सिंघ, भाई साहिबचंद, भाई साहिब सिंघ और भाई हिंमत मलजी भाई हिमत सिंघ जी हो गए।

शिक्षा

गुरु का अमृतधारी सिक्ख नड़ी मार (हुक्का तम्बाकू पीने वाले) कुड़ी मार (लड़की की हत्या करने वाले) मसंद (गुरु के नाम पर माया लेने वाले) मीणे(प्रिथि चंद को मानने वाले) धीर मलीए ते राम राए (धीरमल तथा राम राए को गुरु मानने वाले) से मेल मिलाप न करे।

अपनी कृत्त की कमाई करके उस में गुरु निमित्त दसवंध दें और बाँट कर खाएँ। एक अकाल पुरुष के बिना और किसी पीर-फ़कीर या देवी-देवते की पूजा न करें। मसाणों-कब्रों आदि में न पहुँचे। सदा शस्त्रधारी रहें।

पाँच ककार (केश, कंघा, कड़ा, करपान और कछ) की मर्यादा रखनी और इन पाँचों को सदा ही अपने शरीर पर धारण करना। जो सिक्ख, रहत-मर्यादा में पूरा रहेगा, वही मेरा सिक्ख होगा और मैं उसका रखवाला हूँगा। "वाहिगुरू" गुरमंत्र का जाप करना। यह सर्वशिरोमणी मंत्र है।

www.9009.co.in

चार कुरहतें

१. अपने शरीर के किसी अंग से केश या रोम काटने। २. कुठा माँस खाना। ३. तँबाकू पीना। ४. पर स्त्री तथा पर पुरुष का संग करना। इन चार कुरहतों से बचना। यदि इन में कोई कुरहत भूल से हो जाए, तो कढ़ाह प्रसाद करके सिरी गुरू ग्रंथ साहिब जी की हजूरी में संगत से क्षमा माँगनी।

गुरु जी ने आप अमृत छकना

इस तरह पाँच प्यारों को हर प्रकार की शिक्षा से तैयार करके गुरु जी ने उन से आप अमृत छका और अपने नाम के साथ भी 'सिंघ' पद लगा कर-श्री गुरु गोबिंद राए से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी कहलाये। जिस स्थान पर आप ने यह सारा कौतुक रचा, उसका नाम 'केशगढ़' रखा। जो इस समय तख्त केसगढ़ के नाम से आनंदपुर साहिब में सुशोभित है। इस सारे उत्साह भरपूर चरित्र को देख कर और भी हज़ारों सिक्ख खण्डे का अमृत छककर सिंघ सज गए। सब सिक्खों ने अमृत छक कर पाँच ककार की रहत धारण करके अपने नाम के साथ 'सिंघ' रख लिए।

गुरु जी ने यज्ञ करना तथा पंडित केशोदास ने रूष्ठ जाना

खालसा सजने की खुशी में गुरु जी ने एक महान यज्ञ करके अधिकारी लोगों को यथायोग्य धन और वस्त्र आदि दान दिये, परन्तु इस यज्ञ में ऊँच-नीच श्रेणी में बैठ कर खाना खाने से संकोच करने वाले पंडित केशोदास को गुरु जी ने न बुलाया। पंडित केशोदास ने इस बात का गुस्सा किया और गुरु जी को कहा कि तुमने मेरा बहुत अनादर किया है, मुझे नहीं बुलाया। गुरु जी ने इस प्रथाए केशोदास को संबोधित करके यह तीन सवैये उच्चारण किए—

www.9009.co.in

सवैया

जो कछु लेख लिखियो बिधना, सोऊ पाइयत, मिसरयू सोक निवारो।।
मेरे कछु अपराध नहीं गयो याद ते भूल न कोप चितारो।।
बागो निहाली पठे दिहों, अजि भलो तुमको निहचै जीअ धारो।।
छत्री सभै कृत बिप्रन के *इनहूं पै कटाछ कृपा कै निहारो।। १।।

युद्ध जिते इनही के प्रसादि इनही के प्रसादि सु दान करे।।
अघ ओघ टरे इनही के प्रसादि इनही की कृपा फुनि धाम भरे।।
इनहीं के प्रसादि सु बिद्या लई इनही की कृपा सभ शत्रू मरे।।
इनही की कृपा के सजे हम हैं नहि मोसो गरीब करोर परे।। २।।

सेव करी इनही की भावत अउर की सेव सुहात न जी को।।
दान दीयो इनही को भलो अर आन को दान न लागत नीको।।
आगै फलै इनही को दीयो, जग में यश, अउर दयो सब फीको।।
मो ग्रहि मै मन ते तन ते सिर लउ धन है सब ही इन ही को।। ३।।

गुरु जी से यह उत्तर सुन कर पंडित जी निराश हो गए।

यथा

दोहरा—चटपटाइि चित मै जरयो त्रिण जिउ क्रुधत होइि।।
खोज रोज के हेत लग दयो मिसर जू रोइि।। ४।।

राजा भीमचंद को सिक्खी धारण करने का उपदेश

इस तरह गुरु जी से खालसा पंथ सृजन और यज्ञ करने की महिमा सुन कर राजा भीमचंद बिलासपुरी और अन्य पहाड़ी राजे मिल कर गुरु जी के दर्शन करने के लिए आनंदपुर आए। इन राजाओं ने कहा तुम ने अपने सेवकों को 'पाहुल' दे कर केश रखने, कछहरा पहनना और शास्त्र धारण करने का उपदेश देकर एक कई रीति चला दी है। गुरु जी ने कहा तुम यदि 'पाहुल' लेकर सिक्खी धारण कर लो, तो आपका बहुत यश बढ़ेगा। राजाओं ने

*इन क्षत्रियों।

www.9009.co.in

कहा इस से हमारे अपने धर्म की लोकाचारी रीति नहीं रहेगी, जिस के अनुसार रहना हमारा पैतृक धर्म है।

गुरु जी ने कहा जो रूप केशों सहित परमेश्वर ने दिया है, उस को परमेश्वर का स्वरूप समझ कर सुरक्षित रखो। जनेउ की जगह दुष्टों का नाश करने के लिए तलवार धारण करो तथा धरती पर राज्य करो, कछहरा पहनो जो पूर्व रीति के अनुसार योद्धाओं का पहरावा है।

निश्चय ही हम इस तरह शूरवीरों का एक पंथ प्रकट करके चारों वर्ण जो इस समय तुर्कों के विरोधी हैं, उन्हें पृथ्वी पर राज्य करना है। राजाओं ने कहा यह बात हमारे मानने में नहीं आती कि गरीब और बलहीन लोगों को तुम पृथ्वी के राजे बना दोगे। गुरु जी ने कहा जिस तरह श्री रामचंद्र जी ने जंगल के बंदरों से महाबली रावण को उस की असंख्य सेनासहित नाश कर दिया था, इसी तरह हम इन गरीबों के सिर पर हाथ रख कर पाहुल के तेज़ से शस्त्रधारी करके तुर्क राज्य का नाश कर देंगे और यह खालसा धरती पर राज्य करेगा। ऐसी बातें सुन सुना कर राजे अपने डेरों को चले गए।

मंसदों से छुटकारा

इस समय देश-प्रदेश के सिक्खों से गुरु जी को मंसदों की बहुत शिकायतें मिलीं। सिक्खों ने बताया कि गुरु जी की कार भेंट लेते समय मंसद उनको बहुत तंग करते हैं तथा फिर कार भेंट भी गोलक में पूरी नहीं डालते। सिक्खों के घर जाकर बहुत अयोग्य बातें करते हैं तथा माँस शराब का सेवन करके अपमानजनक कार्य करते हैं।

गुरु जी ने सब बातों को विचार कर संगत को संबोधित करके कहा कि आज से कोई सिक्ख मंसदों को कार भेंट न दे। अपनी

www.9009.co.in

कार भेंट सिक्ख आप ही दीवाली, वैसाखी पर आ कर दिया करें और जो सिक्ख आप न आ सके वह किसी दूसरे विश्वासजनक गुरसिक्ख के हाथ गुरु जी की कार भेंट भेज दिया करे। गुरु जी के यह वचन सुन कर सारी सिक्ख संगत में खुशी की लहर दौड़ गई और मंसद निराश होकर बैठ गए।

गधे को शेर की पौशाक पहना कर सिक्खों को शिक्षा

एक दिन गुरु जी ने सिक्खों को शिक्षा देने के लिए शेर की खाल रात के समय एक गधे को पहना कर बाहर खेतों में छोड़ दिया। हरे खेत खा कर गधा (खोता) बहुत मस्त हो गया। एक दिन रात के समय अपने मालिक कुम्हार के घर आ कर खड़ा हो गया। कुछ देर बाद जब कुम्हार के गधे हींगे, तो वह भी बाहर से हींगने लगा। जब कुम्हार ने उसको देखा, तो उसने उस के ऊपर से शेर की खाल उतार कर दो चार डंडे पीठ पर मार कर दूसरे गधों के साथ बाँध दिया। यह बात सारे लोगों में फैल गई कि जिस को शेर समझ कर लोग डरते थे, वह कुम्हार का एक गधा था। जिस पर से खाल उतार कर कुम्हार ने उस पर छट लाद दी है।

यह बात सुन कर गुरु जी ने सिक्खों को बताया कि यह तुम्हें बाणा दृष्टांत के द्वारा समझाया है कि जिस तरह एक गधा शेर का बाणा धारण करके लोगों के खेत खाता रहा और उसे शेर समझ कर उसके पास कोई न गया। परन्तु जब वह अपने भाइयों से मिल कर अपनी भाषा बोला तो उसको कुम्हार ने डंडे मार कर आगे लगा लिया और पीठ पर छट लाद कर अन्य गंधों के साथ चला गया। इस तरह सिक्खी बाणा है, जो इसको धारण करके इस पर कायिम रहेगा, उस से सारे लोग भय खाएँगे। परन्तु जो सिक्खी बाणे पर असूलों को त्याग देगा, उस पर सब कोई अपने

हुक्म की छट लादेगा और खरी-खोटी बोली के डंडे मारेगा। यह दृष्टांत सुन कर सारे सिक्खों ने प्रण लिया कि वह कभी भी सिक्खी बाणे और असूलों का त्याग नहीं करेंगे।

सारा सिक्ख और आधा सिक्ख

तद्उपरान्त सतिगुरु जी ने सिक्खों को शस्त्र धारण करने के गुण बताते हुए कहा कि राज्य शस्त्रों के अधीन होता है। इस लिए तुम शस्त्रों को धारण करो और उन के चलाने का अभ्यास करो। जो पुरुष शस्त्र और केश का पक्का धारणकर्त्ता है, वह पूरन सिक्ख है, परन्तु जो केश ही रखता है और शस्त्र नहीं रखता, वह आधा सिक्ख है।

भाई नंद लाल की वार्ता

गजनी के हाकिम के मीर मुन्शी छजू राम के घर भाई नंद लाल जी का जन्म हुआ। जब यह बारह साल के हुए, तो इन के पिता ने इन्हें वैरागियों का शिष्य बना दिया। अठारह साल की आयु तक भाई नंद लाल जी फ़ारसी विद्या पढ़ कर फारसी के अच्छे कवि बन गए।

आप जी ने जब श्री गुरु गाबिंद सिंघ जी की महिमा सुनी कि आप कवियों के बड़े कदरदान हैं, तो आप आनंदपुर आ गए और सतिगुरु जी की हाजिरी भर कर दर्शन करके बड़े खुश हुए। बहुत समय आप जी के पास ठहर कर गुरु जी की उपमा में कविता लिख कर अपनी श्रद्धा के फूल भेंट करते रहे। भाई जी ने एक पुस्तक आप जी की महिमा में लिख कर उसका नाम 'बंदगी नामा' रखा। परन्तु गुरु जी ने उसे पढ़ कर वचन किया, यह 'बंदगी नामा' नहीं 'जिंदगी नामा' है। इसे पढ़ कर पुरुष की जिंदगी सुखमयी हो जाती है। इस तरह भाई नंद लाल जी ने जिनका उपनाम 'गोया' था और भी बहुत पुस्तकें लिख कर गुरु जी को भेंट कीं।

लंगर की परीक्षा

आनंदपूर में सिक्ख संगत ने अपने-अपने डेरों में लंगर लगाए हुए थे। जब गुरु जी ने इनकी शोभा सुनी कि गुरु की नगरी में आने वाला कोई भी रोटी से भूखा नहीं रहता, तो एक रात के समय गुरु जी आप एक गरीब सिक्ख का वेष धारण करके इन की परीक्षा लेने चल पड़े।

एक सिक्ख के डेरे में जाकर आप जी ने कहा हमें बहुत भूख लगी है, जल्दी भोजन दो। उसने कहा कुछ देर बैठ जाओ भोजन तैयार हो रहा है, मिल जाएगा। उससे हट कर आप जी दूसरे सिक्ख के डेरे चले गए तथा उस से भोजन माँगा, परन्तु उसने कहा दाल भाजी तैयार हो रही है, फिर आ कर भोजन छक लेना। फिर आप तीसरे, चौथे सिक्खों के डेरे भोजन लेने के लिए गए, तो एक ने काहा जी 'आनन्द साहिब' का पाठ तथा अरदास करके फिर लंगर बँटेगा, दूसरे ने कहा कि सारी संगत इक्ट्ठी हो जाए, तो पंक्ति लगा कर लंगर बाँटा जाएगा, आप बैठ जाओ। संगत इक्ट्ठी हो ले। तद्उपरान्त आप जी ने जब भाई नंद लाल जी के डेरे जा कर भोजन माँगा तो भाई जी ने जो कुछ तैयार था, गुरु जी के आगे ला कर रख दिया, गुरु जी छक कर बड़े प्रसन्न हुए और अपने महलों में आ गए।

दूसरे दिन जब फिर सिक्खों के लंगर की बातें चलीं, तो गुरु जी ने अपनी रात की सारी वार्ता सुना कर बताया कि हमें केवल भाई नंद लाल के लंगर से ही भोजन मिला है, बाकी सब ने कोई न कोई बात करके हमें लंगर नहीं छकाया। जो सिक्ख भूखे को शीघ्र ही भोजन देने का यत्न करता है, वही सिक्ख हमें प्यारा है। भूखे को रोटी-पानी देने के लिए कोई समय नहीं विचारना चाहिए। जिस अन्न के देने से प्राण बच जाते हैं, उसका पुण्य फल सारे

दानों से अधिक है। सतिगुरु जी की तरफ से अन्न दान महिमा सुन कर सब ने प्रण कर लिया कि आगे से किसी को भी भूखा नहीं भेजा जाएगा।

होला खेलना

इस तरह ही सिक्खों को दर्शन उपदेश देकर निहाल करते फाल्गुण का महीना आ गया। होले के दिन गुरु जी ने पहले दीवान लगवाया, जिस में रागियों ने कीर्तन किया और सब संगत होला खेलने और देखने के चाव करके बड़े उत्साह से दीवान में एकत्र हुए। दीवान की समाप्ति के उपरान्त गुरु जी ने होले का आरम्भ अपने हाथों से करके फिर संगत को हुक्म दिया कि सारे टोलियाँ बना कर होला खेलो। सिक्ख बड़े उत्साह से टोलियाँ बना कर सूखे रंग की मुट्ठी भर-भर कर एक दूसरे पर फैंकने लगे। यह दृश्य देखने वालों को ऐसा लगने लगा कि जैसे किसी बड़े युद्ध की लड़ाई हो रही हो और योद्धे घायल होकर खून से लथ पथ वैरी पर शस्त्रों के वार कर रहे हैं।

इस खेल की समाप्ति के बाद गुरु जी संगतसहित, श्री गुरु तेग बहादर जी के स्थान दमदमे साहिब पहुँच कर दीवान सजा कर बैठ गए।

सुथरे शाह की श्रद्धा

दीवान सजा ही था कि सुथरे शाह अपना सारा शरीर काला करके आ गया और गुरु साहिब के दीवान की परिक्रमा करने लगा। गुरु जी सुथरे को इस रूप में देख कर बड़े प्रसन्न हुए और अपने पास बुला कर पूछा कि तू ने यह भेष क्यों बनाया है? सुथरे ने हाथ जोड़ कर कहा महाराज ! इस समय आप संगतसहित बड़े शोभा पा रहे हो। इस लिए मैं अपना शरीर काला करके संगत के चारों ओर घूम रहा हूँ कि किसी पहाड़ीए की नज़र न लग जाए।

सुथरे शाह की यह दलील सुन कर गुरु जी ने सुथरे शाह पर बड़ी प्रसन्नता व्यक्त की और उसे मूँह माँगा पदार्थ दिया।

हिन्दू तथा तुर्कों ने ईर्ष्या करनी

खालसा जी की व्यवहार-व्यवस्था तथा चढ़दी कला को देख कर हिन्दू तथा तुर्क दोनों ही ईर्ष्या करने लगे कि यह सब से निराले ही रहते हैं। किसी की प्रवाह नहीं करते। इन्होंने नया ही रूप धारण कर लिया है, सिर पर केश तथा मुँह पर दाढ़ी मूछें रख कर शेर लगते हैं। शस्त्र पहनते और घोड़े की सवारी करते हैं। किसी का दबदबा नहीं मानते। रात दिन अपने गुरु का कलाम पढ़ते रहते हैं। जब इस बात का गुरु जी को पता चला, तो आप जी ने हँस कर फर्माया यह खालसा पंथ हिन्दू-तुर्कों दोनों की आँख में तिनके की तरहअटकता है। अब यह तिनका इन की आँखों में से निकल नहीं सकता। खालसा सदा सुरजीत रहेगा और अपने वैरियों को डंडे से काबू करेगा।

भंडों ने मसंदो की नकल करनी

एक दिन गुरु जी के दीवान के समय एक भंडों की एक टुकड़ी आई। उन्होंने प्रार्थना की कि महाराज ! यदि हुक्म करो, तो हम मसंदों की नकल करके तुम्हें दिखाएँ। जब गुरु जी ने आज्ञा दी, तो एक भंड ने मसंद का भेष धारण कर लिया। गले में बड़ा सा चोला डाल लिया, एक वैश्या को अपने साथ लेकर और घोड़ी पर चढ़ कर दो नौकरों सहित कार भेंट लेने एक सिक्ख के घर चला गया। सिक्ख ने अपनी बहु की नथुनी बेच कर मसंद की मर्जी के अनुसार जब माँस शराब भेंट की तो उसने वैश्या के साथ बैठ कर खाना खाया। बाद में जब सिक्ख ने एक रुपया माथा टेका, तो मसंद ने रुपया फैंक दिया और सिक्ख को गाली निकालता हुआ वैश्या को साथ ले कर डेरे पर चला गया।

www.9009.co.in

इस तरह की नकलें देख कर गुस्से से सतिगुरु जी के नेत्र लाल हो गए। सतिगुरु जी ने सब मसंदों को हुक्मनामे भेज कर आनंदपुर बुला लिया। हुक्मनामे पढ़ कर सारे मसंद गुरु जी के पास आ गए और जिन्होंने शरण ग्रहण करके माफी माँग ली तथा उनको गुरु जी ने माफ कर दिया। आगे से सिक्खों की कार भेंट लेने से सब को मना कर दिया।

भाई फेरू मसंद

जब गुरु जी को इस बात का पता चला कि नक्के प्रदेश का मसंद भाई फेरू आप जी के हुक्म के अनुसार उपस्थित नहीं हुआ, तो आप जी ने भाई फेरू को पकड़ कर लाने के लिए अपने ५ सिक्ख भेज दिए और कहा उस के हाथ पैर बाँध कर हमारे सम्मुख उपस्थित करो। सिक्खों ने जब भाई फेरू के डेरे में पहुँच कर गुरु जी का हुक्म उसे बताया, तो भाई जी ने कहा मैं सौभाग्यशाली हूँ, मुझे गुरु जी ने याद किया है। मैंने भूल की है जो मैं गुरु जी के पास पहले नहीं गया। मेरे हाथ-पैर बाँध कर गुरु जी के पास ले चलो। भाई फेरू के यह मीठे बचन सुन कर सिक्खों ने कहा तुम हमारे साथ चलो हम तुम्हें कष्ट देकर नहीं ले जाना चाहते। यह बात सुन कर भाई फेरू जी तैयार होकर सिक्खों के साथ चल पड़े। आनंदपुर के पास जा कर भाई जी ने गुरु जी के हुक्म के अनुसार अपने हाथ बँधवा लिए और गुरु जी के दरबार में उपस्थित हो गया। सिक्खों से सारी बात सुन कर गुरु जी ने कहा यह दूसरे मसंदों की तरह मन का खोटा नहीं है, यह गुरु जी का आश्रय लेकर लंगर चलाता है, इसे छोड़ दो। तद्उपरान्त गुरु जी ने भाई जी को कहा एक बार श्री गुरु हरि राए जी ने तुम्हें कहा था कि 'खीसा मेरा है, और हाथ तुम्हारा है वरतो और खर्चो।' अब

www.9009.co.in

आगे से जेबें भी आपकी और हाथ भी आपका ही होगा। भली-भांति देग चलाओ और संगत से मेल रखो। भाई फेरू जी ने हाथ जोड़कर कहा, गुरु जी जेब और हाथ दोनों आपके हैं। मेरा कोई दोष हो, तो मेरे मालिक बन कर मुझे उसकी सज़ा दो। खोटे या खरे हम सदा क्षमायोग्य आप केही हैं।

भाई दुनीचंद भाई सालो का पौत्र था, यह और भाई नंद चंद दोनों माझे के मसंद थे। सतिगुरु जी ने इनको भी आगे से सिक्खों से कार भेंट लेने से रोक दिया। तद्उपरान्त यह दोनों गुरु जी से दूर रह कर बुरी मौत मरे।

दुनी चंद गुरु जी का हुक्म मान कर पहाड़ियों के हाथी से लड़ने की जगह रात को चोरी किले की दीवार पार कर के टाँग तुड़वाकर अपने घर अमृतसर आ गया और रात को साँप के डस जाने से मर गया।

दुनी चंद और नंद चंद की वार्ता

भाई नंद चंद उदासी साधुओं का हाथ लिखा सिरी गुरू ग्रंथ साहिब गुरु जी के हस्ताक्षर करवाने के बहाने, चोरी लेकर करतार पुर बाबा धीरमल जी केपास ले आया। धीरमल ने अपने निकटवर्ती मसंदों को पूछा, इस को अपने पास रखना चाहिए कि नहीं। परन्तु उसके मसंदों ने कहा यह किसी कपट करके आपके पास आया है। यह गुरु गोबिंद सिंघ आपके शत्रु का बड़ा प्रशँसक है। आपकी जासूसी करने आया है। इसको मरवा देना ही अच्छा है। यह विचार मान कर धीरमल ने अपने आदमियों से नंद चंद को धोखे से मरवा दिया।सेवकों ने इसके मृतक शरीर का गाँव काले संडा जा कर संस्कार किया।

गाँव बजरूड़ निवासियों का सुधार

एक दिन गुरु जी के दर्शन को आई संगत ने बताया कि दरिया के पार गाँव बजरूड़ के लोगों ने उसका सब कुछ लूट लिया है। कई सिक्खों को उन्होंने जान से मार दिया है। संगत में इस घटना को सुन कर गुरु जी को बड़ा क्रोध आया और दूसरे दिन शिकार के बहाने रणजीत नगारा बजा कर बजरूड़ पर उन्हों ने चढ़ाई कर दी। दरिया पार करके सिक्खों ने बजरूड़ गाँव को घेरा डाल लिया। वहाँ के निवासी गुज्ञर तथा रंघड़ अपने हथियार लेकर एक छोटे से किले में मुकाबला करने बैठ गए। सिंघ समय देख कर किले के अन्दर चले गए और तलवारों से वैरियों की बहुत मार-काट की। अपना बुरा हाल देख कर गुज्ञरों और रंघड़ों ने गुरु जी से प्रार्थना की कि हमें बख्श दो। आगे से हम आपके सेवकों को कभी कुछ नहीं कहेंगे। उनकी प्रार्थना मान कर गुरु जी ने उन से शस्त्र छीन लिए। किला तोड़ दिया। घर बाहर लूट लिए और अपने शहीदों का संस्कार करके, घायलों को साथ लेकर आनंदपुर आ गए। यह खबरें सुन कर सिक्खों की सैन्यशक्ति की सारे इलाके में धूम मच गई। आगे से किसी गाँव वाले ने भी रास्ते में आती हुई संगत से कभी मनमानी न की।

मेले का फल

एक बार होले के उत्सव पर एकत्र हुई संगत में एक सिक्ख ने उठ कर प्रार्थना की कि महाराज ! संगत में दो सिक्ख स्त्रियाँ किसी पराये पुरुष के साथ चली गई हैं। गुरु जी ने फर्माया उत्सवों में दो प्रकार के पुरुष आते हैं—एक वे जो महापुरुषों के दर्शन करके उन्हीं के वचन सुन कर अपना जीवन सफल करते हैं तथा दूसरे वे जो पाप कर्म करके अपना अगला जीवन भी बिगाड़ लेते हैं। गुरु

घर आकर जैसा कोई कर्म करेगा, वैसा ही उसका फल पाएगा। जो पुरुष गुरु घर तथा तीर्थों पर जा कर मन में खोटे कर्म सोचेगा तथा शरीर करके दूसरों की चोरी करते हैं, उन को दोहरे पाप कर्म का फल मिलता है। इस लिए गुरु दरबार अथवा तीर्थ पर ज़ाकर अपने तन-मन को शुद्ध रखना चाहिये।

शुद्ध गुरुवाणी पढ़ने का महात्म्य

एक दिन एक सिक्ख गुरु जी की शरण में 'दखणी ओंकार' का पाठ कर रहा था। सतिगुरु जी उसकी मीठी तथा सुन्दर आवाज़ के साथ वाणी का पाठ बड़े प्रेम से सुन रहे थे। परन्तु जब उसने यह चरण—

करते की मिति करता जाणै के जाणै गुरू सूरा

पढ़ी तो आप जी ने एक सेवादार को कहा कि इसके मुँह के ऊपर एक थप्पड़ मारकर इसको दूर ले जाओ। जब यह बात हुई, तो संगत ने बड़े हैरान होकर प्रार्थना की कि सच्चे पातशाह ! इस सिक्ख से आप ने इस तरह क्यों किया है? यह तो बड़े प्रेम से गुरुवाणी पढ़ रहा था। गुरु जी ने कहा कि यह सिक्ख वाणी का पाठ गल्त कर रहा था। इस से यह व्यवहार इसी लिए किया गया है। यह पढ़ता था—"करते की मिति करता जाणै के जाणै गुरू सूरा"— जिसका गल्त अर्थ यह बनता है कि कर्त्ते की महिमा कर्त्ता ही जानता है, गुरु शूरवीर क्या जान सकता है। सवाल यह है यदि कर्त्ते की मिति को गुरु नहीं जान सकता, तो फिर उस गुरु ने सिक्खों को उपदेश क्या देना है? सो भाई सिक्खों! गुरु जी की वाणी के शुद्ध पाठ उच्चारण का बहुत बड़ा महात्म्य है। इसका शुद्ध पाठ किया करो इस चरण का शुद्ध पाठ यह हैं—"कै जानै गुरू सूरा"—जिसके अर्थ हैं, कर्त्ते की महिमा कर्त्ता आप जानता है या शूरवीर गुरु जानता है। आप जी के यह वचन सुन कर सारे सिक्खों ने शुद्ध पाठ करने का प्रण लिया।

www.9009.co.in

पाठ कीर्तन तथा कथा

एक दिन गुरु जी दीवान में सजे हुए थे कि एक सिक्ख ने प्रार्थना की कि महाराज! मैं सुखमनी साहिब का पाठ कर रहा था, केवल दो अष्टपदियां पढ़ने वाली बाकी थीं कि कीर्तनए ने आ कर कीर्तन आरम्भ कर दिया। मैंने बहुत कहा कि मुझे समाप्ति कर लेने दो, परन्तु इन्होंने मेरी एक न मानी व कीर्तन करते रहे। इन को तनखाह लगानी चाहिए। यह अपराधी (तनखाहीए) हैं। गुरु जी ने फर्माया भाई तुम धीरे पाठ करके संगत को भुजे हुए दाने चबा रहे थे। जिससे थोड़ी सी तृप्ति हो जाती है। कलियुग में कीर्तन तथा नाम-स्मरण ही पुरुष का उद्धार करने वाले हैं। जो शुद्ध मन से कीर्तिन करते तथा सुनते हैं, उन का जन्म-मरण कट जाता है। गुरु के शब्द की व्याख्या (कथा) करने वाला संगत को कढ़ाह पूड़ी देता है। ऐसा वक्ता तथा श्रोता दोनों ही शुभ गति को प्राप्त होते हैं। गुरु जी के मुख से गुरुवाणी के पाठ, कथा तथा कीर्तन का महात्म्य सुन कर सिक्ख संगत प्रसन्नता से कीर्तन सुनने लगी।

पाँच प्रकार की सिक्खी

एक दिन संगत ने प्रार्थना की कि महाराज सिक्खी कितने प्रकार की है। गुरु जी ने फर्माया सिक्खी पाँच प्रकार की है—

१. धंधे की— जो किसी धंधे के लिए मनोर्थी सिक्ख बन जाए।

२. देखादेखी की—जो अन्य सगे-सम्बन्धियों को देखकर सिक्ख बन जाए।

३. लालसा की— जो किसी लालच करके सिक्खी धारण करे।

४. संतोष की—जो अपने गुरु के ऊपर श्रद्धा भावना करके सिक्ख बने।

५. भावना की— जो दूसरे सिक्खों से प्यार तथा गुरु को सदा प्रेम से हृदय में याद रखता है।

www.9009.co.in

चरण पाहुल तथा खंडे के अमृत की शक्ति

पाँच प्रकार की सिक्खी का उल्लेख सुन कर सिखों ने प्रार्थना की कि महाराज ! हमें पाहुल तथा अमृत का उल्लेख बताओ। गुरु जी ने फर्माया भाई! तन्त्र-मन्त्र आदि कार्य की सिद्धि के लिए प्रसिद्ध हैं, परन्तु वाहिगुरु-मन्त्र जो चारों वर्णों को एक करने वाला है, इस से सभी सिद्ध हो जाते हैं। लोहे का शस्त्र (खंडा), जल तथा मिष्ठान्म से तैयार किया हुआ अमृत एक बड़ा तन्त्र है, जो स्त्री तथा पुरुष को बलवान बना देता है।

श्री गुरु नानक देव जी से ले कर अब तक गुरु घर में चरण पाहुल देन की मर्यादा थी, जिससे सिक्ख की गुरु चरणों से बहुत प्रीति होती है। चरण धोकर उस के ऊपर गुरु मन्त्र पढ़ कर सिक्ख को पिला देना तथा भजन करने का उपदेश देना, इस विधि से केवल मन्त्र के बल से सतो गुणी चरणामृत बनता है।

परन्तु जल तथा मिष्ठान्न लोहे के बाटे में डाल कर उसमें लोहे का खंडा घुमा कर अमृत तैयार किया जाता है, यह तंत्र है, जिससे बिजली की तरह एक ऐसी शक्ति पैदा होती है, जो अमृत पान करने वाले के अंदर वीर रस तथा धर्म की दृढ़ता भर देती है, इस अमृत को तैयार करते समय जो गुरुवाणी का पाठ एक मन हो कर सिंघ करते हैं, वह मन्त्र है। पाँच ककार जो धारण कराए जाते हैं, वह यन्त्र है।

इन तीनों तन्त्र, मन्त्र तथा यन्त्र के इकट्ठ में एक त्रिगुणी बलवान शक्ति पैदा हो जाती है। इस लिए खंडे का अमृत चरणामृत से कई प्रकार से बढ़कर शक्ति रखता है।

अगम्य वाक्य, भाई राम कौर के प्रति

भाई राम कौर जी जो आयु में गुरु जी से छः साल छोटे थी, उन्होंने एक दिन गुरु जी का इतिहास लिखवाते समय संगत को

बताया कि एक दिन गुरु जी ने खुश हो कर मुझे वचन दिया, हे बूड़े की बंश ! तेरी बड़ी लम्बी आयु होगी। तेरा घर जब उस पार परलोक में था, तब हमारा इस ओर में था। परन्तु जब हमारा परलोक में होगा, तब तेरा स्वर्ग में होगा। यह वाक्य तीन बार बोल कर आप जी ने एक ढाल तथा तलवार मुझे वरदान रूप में दीं।

आज्ञा मानने की व्याख्या

एक दिन गुरु जी दीवान की ओर आ रहे थे कि रास्ते में एक सिक्ख दीवार पर लेप कर रहा था। दीवार के ऊपर थोबा (लेप) मारते समय उस से गुरु जी के पाजामे के ऊपर चीकड़ के छींटे पड़ गए। गुरु जी ने अपने सेवकों से कहा कि इस लिपाई करने वाले को ज़ोर का एक थप्पड़ मारो। यह बात सुन कर कई सिक्खों ने दौड़ कर उसको थप्पड़ जा मारे। बहुत थप्पड़ों की मार से वह गरीब सिक्ख बेहोश हो गया। उसकी यह दशा देखकर गुरु जी ने अपने सेवकों को कहा मैंने एक सिक्ख को थप्पड़ मारने की आज्ञा दी थी, परन्तु आप सब ने ही इस गरीब को एक-एक थप्पड़ मार कर इसे बेहोश कर दिया है। सिक्खों ने कहा महाराज हम ने आप जी का हुक्म माना है। गुरु जी ने कहा कि यदि हमारा हुक्म मानते हो, तो इस सिक्ख को कोई अपनी लड़की का रिश्ता द`दो। गुरु जी का यह वचन सुन कर सब चुप हो गये। सब को चुप देखकर गुरु जी ने कहा, गुरु जी का हुक्म तब ही यर्थाथ है, यदि गुरु के सारे हुक्म माने जाये। परन्तु तुम से सिक्खी दूर है। आसान हुक्म मान लेते हो तथा कठिन समय चुप धारण कर लेते हो। गुरु जी के यह वाक्य सुन कर कंधार के एक सिक्ख अजैब सिंघ ने अपनी लड़की का रिश्ता उसी सिंघ को दे दिया तथा गुरु की अटूट खुशी प्राप्त की।

गुरु की देग वाहिगुरु की देग है

एक दिन सिक्खों के प्रति गुरु जी ने कहा कि जो गुरु की देग है, वह वाहिगुरु की देग है। इस गुरु की देग को जो श्रद्धा से नहीं खाता, वह गुरु का सिक्ख नहीं। आगे से तुम इस बात का ध्यान रखना कि जो हम ने मर्यादा बताई है, वह धारण करके प्रसाद तैयार किया करो। तद्उपरान्त अरदास करके वर्ण श्रम के भ्रम को त्याग कर प्रसाद बाँटा करो तथा प्रसाद खाने वाला 'तव प्रसाद' कह के खाया करे तथा तृप्त हो कर हाथ मुँह साफ करके चुले की अरदास करे।

सिक्खों की सेवा सिक्ख करे, सिक्ख को पंगत से न उठाये, जो एक बार पेट भर कर खा ले तथा फिर लोभ करे अथवा सिक्ख के घर बुरी नज़र से देखे, वह सिक्ख अवश्य ही नर्क में जायेगा।

सुनार सिक्ख नहीं

एक दिन गुरु जी के पास एक सुनार का लड़का सुघड़ सिंघ सरहंद के रहने वाला आया। वह बड़े प्रेम से गुरु जी को पंखा फेर रहा था। गुरु जी ने उस को पूछा कि सरहंद अभी आबाद है? उस ने हाथ जोड़ कर कहा, महाराज! आबाद करना तथा उजाड़ना आप जी के ही वश में है। गुरु जी ने कहा सरहंद के उजड़ने में थोड़ा ही समय रहता है। तुम यहाँ न रहो। गुरु जी का हुक्म मान कर वह लड़का गुरु जी के पास आनंदपुर आ गया।

एक दिन गुरु जी ने उसको कहा अपनी कृत किया करो। उसने कहा जी मैं सुनार का काम अच्छी तरह जानता हूँ। गुरु जी ने उसको एक सुन्दर जेवर घड़ने के लिए ग्यारह मोहरें दीं। जिन का उस ने जेवर घड़ कर गुरु जी को दे दिए। गुरु जी उसके ऊपर बड़े प्रसन्न हुए।

एक दिन फिर गुरु जी ने उसको बीस मोहरें कड़ों की जोड़ी घड़ने के लिए दीं। जब कड़े घड़े हुए गुरु जी ने तोले, तो वह सत्रह मोहरों का सोना पूरा हुआ। जब गुरु जी ने उसको पूछा, हे लड़के! तुम कहते थे, मैं सतिसंगी हूँ मुझ में कोई दोष नहीं है। परन्तु बताओ इससे ज्यादा क्या दोष हो सकता है ? मज़दूरी भी पूरी लेता रहा तथा सोना भी चोरी करता रहा। जब उसने कोई उत्तर न दिया, तो गुरु जी ने कहा सुनार सिक्ख नहीं तथा रेवड़ी प्रसाद नहीं हो सकती।

सिक्ख को उपदेश

एक दिन गुरु जी के दीवान में एक सिक्ख ने प्रार्थना की कि महाराज! मैं अनपढ़ हूँ। आप जी की शरण में आया हूँ। संसार दुखों का घर है। कोई वह रास्ता बताओ जिससे मेरा जन्म-मरण कट जाए। गुरु जी ने कहा तुम धन्य हो, जिसने संसार को दुखों का घर समझ लिया है। तुम पढ़ा करो, पढ़ने में अनेक गुण हैं। अनपढ़ पुरुष हृदय का अन्धा होता है, तुम गुरुमुखी पढ़कर गुरमत को ग्रहण कर लो, तेरा आवागमन कट जाएगा।

उसकी श्रद्धा तथा प्रेम को देख कर गुरु जी ने उसको अपने एक ग्रन्थी सिंघ के पास गुरुमुखी पढ़ने के लिए भेज दिया। ग्रन्थी सिंघ उसको बड़े प्रेम से पढ़ाता रहा।

जब आरम्भिक पढ़ाई करके उस ने पाँच ग्रन्थी पढ़नी आरम्भ की, तो अनंद साहिब की वाणी में जब उसको यह तुक—'अनंद भइिआ मेरी माए सतिगुरू मै पाइिआ।।' पढ़ी तो उसने उस से आगे पढ़ना बंद कर दिया। जब गुरु जी को पता लगा कि सिक्ख ने पढ़ना छोड़ दिया है, तो आप जी ने उसको बुला कर पूछा कि तुम ने पढ़ना क्यों छोड़ दिया है? सिक्ख ने कहा महाराज ! मैंने

यह तुक—'अनंद भइिआ मेरी माए सतिगुरू मै पाइिआ।।' पढ़कर आगे पढ़ना छोड़ दिया है। क्योंकि जब सिक्ख ने सतिगुरु को पा लिया तो, उसको आनंद की प्राप्ति हो गई। उससे ऊपर और कौन बात पढ़ने वाली बाकी है।

सिक्ख की यह श्रद्धा प्रेम की बात को सुनकर, गुरु जी ने प्रसन्न होकर कहा, सिक्ख! तुम आनन्दमय हो गये हो। आप जी के इन वचनों से सिक्ख को आत्मज्ञान की प्राप्ति हो गई।

नाम की महिमा का उपदेश

एक दिन दीवान में बैठे सिक्ख संगत से आप जी ने पूछा कि जिस समय भक्त कबीर जी हुए थे, उस समय देश का बादशाह कौन था? गुरु जी के वचन सुन कर किसी ने हमायूँ का नाम लिया, किसी ने पथोरा राऊ का तथा तीसरे, चौथे ने कुछ और नाम बताए। इस तरह जब सारे अलग-अलग बोलकर चुप हो गये, तो गुरु जी ने फर्माया देखो सिक्खो ! नाम का कितना प्रताप तथा महिमा है—जैसा कि जाति से कंगाल जुलाहा कबीर को उसकी स्त्री लोई, बेटी कमाली तथा बेटा कमाल को नाम जपने के कारण सब कोई ज्ञानी, चिंतक तथा गृहस्थी जानते थे, परन्तु देश के बादशाह के नाम को कोई नहीं जानता। इस लिए नाम धन बहुमूल्य है, जो पुरुष नाम जपते हैं, उनकी बराबरी कोई नहीं कर सकता। जो जगत् के धंधों में फँस कर नाम नहीं जपते, उनको खसारा ही रहता है।

जब भक्त कबीर जी नाम जप कर प्रसिद्ध हुए उस समय सिकन्दर लोधी का राज्य था। बादशाह ने ईर्ष्यालु काज़ियों तथा पंडितों की बात में आ कर कबीर के हाथ पैर बाँध कर मस्त हाथी के आगे डाल दिया, परन्तु हाथी कबीर जी को देख कर चीखें

मारता पीछे को दौड़ गया। फिर जंज़ीरों में जकड़ कर कबीर जी को गंगा नदी में फैंक दिया, परन्तु कबीर जी की जंज़ीरें टूट गई तथा कबीर जी मृगशाला के ऊपर चौकड़ी मार कर बैठ गये। देखो! कहाँ गरीब जुलाहा तथा कहा देश का बादशाह। इस लिए तुम सभी सिक्ख नाम का स्मरण करो तथा गुरु के प्यारे सिक्ख बनो। मन करके जो सदा नाम में लिव लगाता है तथा हाथों से तथा शरीर से सन्तों की सेवा करता है, वही मेरा प्यारा सिक्ख है। जो ऊँची करनी करके मन को नीचा रखे, शरीर की हँगता को त्याग कर ब्रह्महंगता को दृढ़ करे व अनेक में एक को देखने वाला हो, वहीं ब्रह्मज्ञान को प्राप्त करता है।

गुरु जी ने सिक्खों का छल प्रकट करना

एक वैसाखी के मेले के दूसरे दिन गुरु जी ने फर्माया कि इस साल यह उत्सव पाँच दिन लगा रहेगा—कोई भी पुरुष उत्सव छोड़कर घर न जाये। इसके उल्ट मालवे के कुछ सिक्खों ने घरों को जल्दी जाने के लिए एक योजना बनाई। एक सिक्ख को उन्होंने मुर्दा बना कर तख्ते के ऊपर डाल दिया तथा बाकी उसके साथ उसकी अर्थी को उठा कर चल पड़े। जब गुरु साहिब जी को इस बात का पता चला, तो उनके पूछने से सिक्खों ने कहा कि महाराज ! एक हमारा साथी 'हुक्म सत्य' हो गया है, उस के संस्कार के लिए अर्थी जा रही है। गुरु जी ने कहा इस अर्थी को हमारे पास ले आओ, हम उस सिक्ख को देखना चाहते हैं। सिक्खों ने अर्थी गुरु जी के पास रख दी। गुरु जी ने एक सिक्ख को कहा आग की एक चिंगारी लाओ। जब सिक्ख चिंगारी ले आया, तो गुरु जी ने हुक्म दिया कि इसको मुर्दे के नीचे रख दो, जब सिक्ख ने चिंगारी नीचे रख दी तो बनावटी मुर्दा सिक्ख आग के ताप से

www.9009.co.in

तड़प कर कफ़न फाड़कर दौड़ गया। यह कौतुक देख कर सारी सिक्ख संगत हैरान हो गई तथा इस पाखण्ड को करने वाले लज्जित हो गए। गुरु जी से क्षमा माँगकर अपनी भूल मनवाई। गुरु जी ने फर्माया गुरु घर में भरोसा रखो तथा गुरु घर आ कर सतिसंगत किया करो। सतिनाम का स्मरण किया करो।

भाई नंद सिंघ को उपदेश

(वैरागी तथा गृहस्थी का धर्म)

एक बार वैसाख की संक्रान्ति को संगत दूर-दूर से गुरु जी के दर्शन करने के लिए आनंदपुर आई। सतिगुरु जी का दीवान भरपूर रूप से सज रहा था। संगत आ कर गुरु जी के चरणों में माथा टेक कर भेंट अर्पण करके गुरु जी के दर्शन करती थी। दीवान की समाप्ति पर एक सिक्ख तथा सिक्ख-स्त्री ने अपने जवान लड़के को ले कर गुरु जी के पास उपस्थित होकर प्रार्थना की कि महाराज ! हमारा यह लड़का ऐसी मस्ती में रहता है कि अपनी स्त्री से भी बोलचाल नहीं रखता। इसकी आयु इस समय केवल १८ साल की है।

गुरु जी ने लड़के को पूछा तुम घर पर उदास क्यों रहते हो? लड़के ने जिस का नाम नंद सिंघ था कहा गुरु जी ! मुझे अनंद साहिब की तुक पढ़ कर वैराग्य हो गया है, तुक यह है—

> ''ए मन पिआरिआ तू सदा सचु समाले।। एहु कुटंबु तू जि
> देखदा चलै नाही तेरै नाले।। साथि तेरै चलै नाही तिसु
> नालि किउ चितु लाईए।। ऐसा कंमु मूले न कीचै जितु
> अंति पछोताईए।। ११।।''

मैंने इस से यह समझा है कि यह सारे संबंधी झूठे हैं, किसी ने भी अन्तिम समय सहायक नहीं होना। इन से मोह करना ठीक नहीं है। इस लिए मुझे खाना-पीना कुछ अच्छा नहीं लगता। गुरु जी ने

www.9009.co.in

उस को वृक्त वैरागी तथा गृहस्थी के धर्म समझाये तथा कहा कि इन दोनों में से जिसका तुम पूरी तरह निर्वाह कर सकते हो, उस को धारण कर लो। गृहस्थी का धर्म है कि घर आए अतिथि को प्रेम से भोजन तथा विश्राम कराना तथा धर्म के कर्म करना। परन्तु यदि धर्म की कमाई तथा अतिथि की सेवा नहीं कर सकते हो, तो फिर वैराग्य धारण कर लो।

वैरागी का धर्म है कि लोभ लालच तथा तृष्णा का ऐसा त्याग करना कि उसको कोई भी सांसारिक चीज़ इस मार्ग से हटा न सके। परन्तु जो वैराग्य धारण कर के फिर सांसारिक धंधों में लगा रहता है, उस जैसा और कोई दुरभाग्यशाली नहीं होता। इन दोनों धर्मों के प्रथाए कबीर जी कहते हैं—

कबीर जउ ग्रिहु करहि त धरमु करु नाही त करु बैरागु।।
बैरागी बंधनु करै ताको बडो अभागु।। २४३।।

(सिरी गुरु ग्रंथ साहिब, पृ० १३७७)

कबीर भक्त जी बड़े भक्त हुए हैं, जिन्होने गृहस्थ मार्ग को सिद्ध करके दिखा दिया तथा गृहस्थ में वैराग्य भी चोटी का कर के बता दिया।

गुरु जी के पास से यह निर्णय सुन कर भाई नंद सिंघ ने हाथ जोड़ कर कहा कि महाराज ! अब मैं तुम्हारा वचन मान कर गृहस्थ धारण करना ही ठीक समझता हूँ। तद्उपरान्त भाई नंद सिंघ ने अपनी स्त्री सहित गुरु जी के पास रह कर साध संगत की सेवा में लग कर अपना जीवन सफल कर लिया।

माता जी ने ब्रह्म ज्ञानी के दर्शन करने

एक दिन माता गुजरी जी ने सुखमनी साहिब के पाठ के समय जब पाठ पढ़ा कि—"जैसा सुवरनु तैसी उसु माटी।। तैसा अमृत

www.9009.co.in

तैसी बिखु खाटी।।" तो आप ने गुरु जी को कहा कि यदि आज कल भी ऐसा कोई महापुरुष है, तो उसके मुझे दर्शन करवाओ। गुरु जी ने कहा माता जी ऐसे उत्तम पुरुष के दर्शन तुम को कल हो जाएगे, तुमने उन के लिए प्रसाद तैयार करना। वह तुम्हारे पास आ कर ही प्रसाद खायेंगे। माता जी ने दूसरे दिन बड़े प्रेम से प्रसाद की तैयारी करके पूछा कि लाल जी ! प्रसाद तैयार है, वह महापुरुष आए क्यों नहीं? गुरु जी ने कहा माता जी उस के बैठने के लिए आसन लगाओ वह पहुँच रहे हैं। तब इधर माता जी आसन बिछा रहे थे कि उधर भाई राम कौर (बाबा गुरबख्श सिंघ) जी ने गुरु जी के चरणों में माथा टेका। गुरु जी ने कहा बाबा जी आप जी की माता जी प्रसाद खिलाने के लिए प्रतीक्षा कर रहे थे, जल्दी माता जी के पास जाओ व प्रसाद छको।

माता जी के पास महिलो से जाकर जब बाबा जी ने भोजन खा कर चुली कर ली, तो माता जी ने पूछा बाबा जी आप रमदास (अमृतसर) से इतनी जल्दी किस तरह आ गये हो? बाबा जी ने कहा—

गउड़ महला ५ ।।

काठ की पुत्री कहां करै बपुरी खिलावन हारो जानै।।
जैसा भेखु करावै बाजीगरु ओहु तैसो ही साजु आनै।। ३ ।।

हम काठ की पुतलियाँ हैं, जिस तरह गुरु जी कराते हैं हम उसी तरह ही करते हैं। यह वचन करके बाबा जी माता जी को माथा टेक कर गुरु साहिब जी के पास आ गये।

कढ़ाह प्रसाद की लूट तथा भाई राम कुएर जी को श्राप

गुरु जी ने श्री राम कुएर जी को एक सुन्दर मन्दिर में आवास करा कर बड़े आदर से आसन लगवा दिया। चार दिन के बाद बाबा

www.9009.co.in

जी की संगत भी अमृतसर से बाबा जी के पास पहुँच गई। उस से दूसरे दिन गुरु जी ने खज़ानची को हुक्म दिया कि एक हज़ार रुपये का कढ़ाह प्रसाद तैयार करके दीवान में ले आओ। जब बहुत सारे कढ़ाहे भर कर कढ़ाह प्रसाद दीवान में आ गया, तो उस समय बहुत संगत को इकट्ठी हुई देखकर गुरु जी ने वचन किया कि अब लंगर बाँटने का समय हो गया है। इतनी संगत में कढ़ाह प्रसाद जल्दी-जल्दी बाँटा नहीं जा सकता, इस लिए सब कोई अपनी हिम्मत से लूट कर खा लो। यह वचन करके गुरु जी आप तो अपने महिल में भोजन करने के लिए चले गये तथा पीछे खालसा हल्ला बोलकर कढ़ाह प्रसाद के कढ़ाहों के ऊपर टूट पड़े। जितनी किसी की हिम्मत थी, उतना उसने छीन कर खा लिया।

इस लूट के समय विशेष बात यह हुई कि भाई राम कुएर जी तथा उनकी संगत ने इस लूट में कोई हिस्सा नहीं लिया। दीवान में अपने स्थान पर ही चुप करके बैठे रहे। इस बात का जब गुरु जी को पता चला कि भाई राम कुएर जी तथा उन की संगत ने कढ़ाह प्रसाद नहीं लूटा, तो सतिगुरु जी ने भाई जी को पूछा कि तुम ने कढ़ाह प्रसाद क्यों नहीं लूटा? इस तरह आप जी ने हमारी आज्ञा भंग की है। भाई जी ने कहा कि महाराज ! उस समय कलियुग का समय था। इस लिए हम कलियुग के प्रभाव वाले स्थान पर नहीं जाना चाहते। गुरु जी ने कहा इस कलियुग से डर कर तुम ने कढ़ाह प्रसाद नहीं लूटा। वह किलों तथा दरवाज़ों में से छलांगें मारकर तुम्हारे घर में प्रवेश करेगा। तुम उस से बच नहीं सकते। सतिगुरु जी के यह वचन सुन कर भाई जी ने हाथ जोड़कर आप जी के चरणों पर माथा टेका तथा सत-सत करके वचन स्वीकार कर लिया। गुरु जी के यह वचन भाई जी के पौत्र के समय सफल हुए। आप जी के इस पौत्र का नाम शिआम सिंघ था, यह बहुत कुकर्मी था।

www.9009.co.in

भाई राम कुएर जी ने अमृत छकना

एक दिन गुरु जी के पास एक बड़ा भारी धनुष बाण देखकर भाई राम कुएर जी के मन में भ्रम हो गया कि यह आप जी ने केवल दिखावे के लिए ही रखा होगा, नहीं तो आप गुरु जी अपने पतले सेहे शरीर से इसको उठा नहीं सकते होगे? अन्तर्यामी गुरु जी ने भाई जी की इस शंका को निवृत्त करने के लिए एक दिन हाथी के ऊपर चढ़ते समय भाई जी के कन्धे पर हाथ रखकर जब पैर उठाया तो भाई जी को यूँ लगा कि उनके ऊपर त्रिलोकी का भार पड़ गया है। आप जी के पैर थिड़कने लगे। इतनी देर में गुरु जी ने जब दूसरा पैर उठा कर हौदे में बैठ गए, तो भाई जी ने सुख की साँस ली। बाद में गुरु जी ने भाई जी को भी अपने साथ ही हौदे में बैठा लिया तथा रास्ते में कहा कि तुम्हारे जैसे सिक्खी के थम्म ही डोल गए, तो फिर औरों की क्या बात है। भाई जी ने आँखें नीचे करके कहा कि महाराज ! तुम्हारी माया प्रबल है। जिसने ब्रह्मा जैसे देवते भी भ्रमा दिये। उस के आगे मैं कौन हूँ।

फिर एक दिन समय के साथ भाई जी ने प्रार्थना की कि सच्चे पातशाह ! मुझे भी अमृत छका कर अपने निज स्वरूप में मिला लो। यह प्रेममय प्रार्थना स्वीकार करके गुरु जी ने भाई जी को अमृत छका कर तैयार-बर-तैयार खालसा स्वरूप करके उस का नाम गुरबख्श सिंघ रख दिया।

भाई योगा सिंघ की वारता

एक १२-१३ साल का लड़का अपने पिता के साथ पिशावर की संगत के साथ मिलकर गुरु जी के दर्शन करने आनंदपुर आया। इसको बड़े प्रेम से संगत की सेवा करते हुए देखकर गुरु जी ने पूछा काका तेरा नाम क्या है? उसने हाथ जोड़कर कहा जी

www.9009.co.in

'जोगा' गुरु जी ने कहा अच्छा अब तुम हमारे लिए ही हो। प्रेम से संगत की सेवा किया करो। जब जोगे को कुछ साल सेवा करते बीत गये, तो जोगे का पिता पिशावर से आया तथा वह जोगे की शादी करने के लिए गुरु जी से आज्ञा लेकर उसको अपने साथ पिशावर ले गया। थोड़े दिनों के बाद जब जोगा सिंघ का विवाह रचाया गया, तो पीछे गुरु जी ने एक सिक्ख को भेजकर कहा कि हमारा यह पत्र योगा सिंघ को उस समय देना, जब वह दो फेरे (लावां) ले चुका हो, तो तीसरी के लिए तैयार हो।

सिक्ख ने भाई योगा सिंघ के घर पहुँच कर इसी तरह ही किया कि जब उसकी तीसरी लांव होने लगी, तो उसने गुरु जी का पत्र योगा सिंघ के हाथ में पकड़ा दिया। पत्र में गुरु जी ने लिखा था कि जिस समय ही हमारा हुक्म तुझे मिले, इसको पढ़कर उसी समय आनंदपुर को चल पड़ना। यह पढ़कर भाई योगा सिंघ बाकी की दो लांवां अपने अंगोछे से करने के लिए अपना अंगोछा देकर आप गुरु जी के पास आनंदपुर को चल पड़ा। रास्ते में मन में कहता आए मेरे जैसा गुरु जी का हुक्म मानने वाला अन्य कोई सिक्ख नहीं हो सकता। इसी तरह अहंकार से फूला हुआ ठहरता चलता हुशियारपुर पहुँच गया। रात के समय जोगा सिंघ का मन एक वैश्या को देखकर उस के ऊपर बेईमान हो गया। जब पहर रात गई, तो जोगा सिंघ उस वेश्या को मिलने के लिए उसके पास गया। इस समय अपने एक सिक्ख को इस कुकर्म से बचाने के लिए गुरु जी वैश्या के द्वार के आगे चोबदार बनकर खड़े हो गये। चोबदार को देखकर योगा सिंघ पीछे लौट गया तथा फिर जब आधी रात को आया जब भी पहरेदार खड़ा देखकर वापिस चला गया। तद्उपरान्त जब तीसरी बार एक पहर के रहते गया, तो चोबदार फिर भी वही खड़ा था। उसने योगा सिंघ को कहा, गुरु

के सिक्खा ! इस नरक की सीढ़ी के ऊपर चढ़ने का बार-बार यत्न क्यों करता हैं? जाओ स्नान करके मन को शाँत करो तथा मालिक के नाम में जुड़ जाओ। यह वचन सुनकर योगा सिंघ को आपे का ज्ञान हो गया तथा पश्चाताप करता हुआ अपने डेरे आ गया।

दूसरे दिन जब आनंदपुर पहुँच कर गुरु जी को माथा टेक कर बैठ गया, तो गुरु जी ने हँस कर संगत को कहा कि देखो ! योगा सिंघ अपना विवाह बीच में ही छोड़कर आ गया है। यह बड़ा धैर्यवान सिक्ख है। यह बात सुनकर गुरु जी खिड़ खिड़ाकर हँस पड़े। जब संगत ने इस हँसने का आप जी से कारण पूछा तो आप जी ने कहा इसको ही पूछ लो, जिसने सारी रात हमें सोने नहीं दिया। वैश्या के द्वार के आगे पहरेदार बन कर इसकी खातिर हमको चोबदार बन कर खड़े रहना पड़ा। गुरु जी के यह वचन सुनकर योगा सिंघ लज्जित होकर आप जी के चरणों में गिर पड़ा तथा बार-बार क्षमा याचना की। उसका प्रेम तथा श्रद्धा को देखकर गुरु जी ने उसकी भूल बख्श कर कहा कि जाओ अब अपने घर जा कर गृहस्थ के सुख भोगे तथा सिक्खी सिदक (धैर्य) का निर्वाह करके अपना जीवन सफल करो। आज्ञा प्राप्त करके योगा सिंघ अपने घर पिशावर चला गया तथा गुरु चरणों के ध्यान में अपना जीवन व्यतीत करके परमपदवी को प्राप्त हो गया।

गुरु दरबार की रौणक

गुरु जी अपने सिंघों को रोज़ ही युद्ध विद्या का उपदेश देकर निपुण्य करते रहते थे। सिंघों के प्रति आप जी का हुक्म था कि शस्त्रों को इस तरह समझो जैसे कि यह तुम्हारे शरीर के अंग हैं। एक दूसरे सिक्ख को मिलकर गर्जकर 'वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतह' बुलाओ तथा संगत में नित्य प्रति जरूर आओ।

www.9009.co.in

गुरु जी के विरुद्ध राजा भीम चन्द के पास प्रजा की पुकार

इस तरह जब बहुत सैनिक तथा सिक्ख श्रद्धालु, घोड़े, हाथी आदि आनंदपुर में इकट्ठे हो गये, तो चारे की कमी को देखकर सिक्ख अपने घोड़े, हाथियों के लिए चारा लेने के लिए आस-पास के गाँवों के खेतों में से चारा काट कर लाने लगे। दिन प्रति दिन ऐसा होता देख कर पहाड़ी लोग अपने राजे भीम चन्द के पास जा कर प्रार्थी हुए।

प्रजा की पुकार को सुनकर भीम चन्द ने उन लोगों को कहा कि जब सिंघ इस तरह फिर तुम्हारे गाँवों में आएँ, तो सारे इक्ट्ठे हो कर उनको ऐसी मार मारो कि फिर कभी इधर न आएँ।

राजा बलीया चंद तथा आलम चंद से मुठभेड़

तद्उपरान्त जब एक दिन गुरु जी रणजीत नगारे के ऊपर चोट लगा कर अपने योद्धाओं के साथ जंगल में शिकार खेलने गये, तो सिंघों के जयकारों तथा बंदूकों के चलने से जंगल में बड़ी हल-चल मच गई। राजा बलीया चंद तथा आलम चंद जिनको अपने बाहु बल पर बड़ा गर्व था, नगारे की आवाज़ को सुन कर अपने योद्धाओं के साथ आ कर सिंघों की एक टोली को घेर कर लड़ाई करने लगे। इस मुठभेड़ में जब कुछ सिंघ शहीदी पा गये, तो एक सिंघ ने घोड़ा दौड़ा कर गुरु जी को बताया कि पहाड़ियों ने कुछ सिंघों को घेरे में लेकर शहीद कर दिया है। बाकी के सिंघ मैदान छोड़कर जाने वाले हैं। इस समय यदि हमारी हार हो गई, तो हमारा यहाँ रहना कठिन हो जायेगा। अपने सिक्ख से यह बात सुन कर गुरु जी ने एक ऊँची जगह के ऊपर खड़े होकर पहाड़ियों के ऊपर पाँच तीर चलाये। तीरों की सरसराती हुई आवाज़ से

www.9009.co.in

असंख्य गुप्त फौजें खालसे के साथ आ कर, पहाड़ियों के ऊपर तीरों, बंदूको के वार करने लगीं, जिस से पहाड़ियों के मुखी बलीया चंद तथा आलम चंद दोनों ही बुरी तरह घायल होकर पीछे चले गये तथा उनके सैनिक भी बहुत से आदमी मरवा कर मैदान छोड़ कर भाग गये।

तद्‌उपरान्त गुरु जी ने अपने शहीदों को इक्ट्ठा करके उन का संस्कार कराया तथा घायलों को आनंदपुर ले जाकर उन की मरहम पट्टी करवाई।

शाही सेना से युद्ध

इस तरह मार खा कर अपनी हार हुई देखकर पहाड़ी राजाओं ने परामर्श करके अपना एक वकील दिल्ली के सूबे के पास भेज कर शाही मदद माँगी।

सूबा दिल्ली ने सारे हालात लिखकर बादशाह को दक्षिण में भेज दिये तथा राजाओं को कहा कि बादशाह का हुक्म आने पर तुम्हारी सहायता के लिए शाही सेना भेजी जाएगी।

पहाड़ी राजाओं ने औरंगज़ेब से सहायता माँगी

जब औरंगजेब की ओर से पहाड़ी राजाओं की सहायता के लिए शाही फौज भेजने की स्वीकृति सूबा दिल्ली को आ गई, तब उसने पहाड़ियों से फ़ौज का खर्च लेना करके दीना बेग तथा पैंदे खाँ को पाँच-पाँच हज़ार सेना देकर भीम चंद की सहायता के लिए भेज दिया।

शाही सेना को पहाड़ी राजे आगे आ कर रोपड़ के स्थान पर मिले। शाही सेना की अगवाई करके राजे जब कीर्तपुर के नज़दीक पहुँचे, तो गुप्तचर से इसकी खबर सुन कर गुरु जी शीघ्र रणजीत नगारा बजा कर अपने शूरवीरों के साथ शाही सेना को आगे जा

मिले। आमने-सामने होकर नेज़े, तलवारों तथा बंदूकों से भयानक युद्ध हुआ। कई योद्धे मौत के घाट उतर गये। धरती खून से लाल हो गई।

इस समय पैंदे खाँ ने अपने घोड़े को आगे करके गुरु जी को युद्ध करने के लिए ललकारा। गुरु जी ने कहा तुम ने हमें युद्ध के लिए ललकारा है इस लिए पहला वार तुम कर लो।

यह बात सुन कर पैंदे खाँ ने बड़े गुस्से से एक बाण गुरु जी पर छोड़ा, परन्तु तीर गुरु जी के कान को छूह कर आगे निकल गया। फिर गुरु जी ने कहा एक वार और कर लो। तेरे मन में भ्रम न रह जाए। जब दूसरा बाण पैंदे खाँ ने फिर गुस्से में खींच कर गुरु जी के माथे में मारा, तो वह भी आप जी के दुमाले से छूह कर आगे निकल गया।

पैंदे खाँ की मौत सिंघों की जीत

जब पैंदे खाँ के दोनों वार खाली गये, तो फिर गुरु जी ने उस की (पुड़पुड़ी) कर्णपटी में खींच कर बाण मारा। जिस से पैंदे खाँ घोड़े के ऊपर से उल्ट कर नीचे गिर पड़ा तथा गुरु जी ने तलवार से उसका सिर काट दिया। उधर दीना बेग घायल होकर पीछे भाग गया। सेनापतियों की यह दशा देखकर शाही सेना तथा पहाड़िए मैदान छोड़ कर भाग गये। तद्उपरान्त खालसा जी अपने शहीदों का संस्कार कर के तथा घायलों की मरहम पट्टी करके खुशी के जयकारे बुलाते हुए आनंदपुर आ गये तथा कढ़ाह प्रसाद की खुली देगे बाँटी।

बाईधार के राजाओं की आनंदपुर पर चढ़ाई

इस तरह बुरी तरह हार खा कर राजा भीम चंद ने सारे राजाओं को बुला कर आनंदपुर के ऊपर चढ़ाई कर दी। गुज्जरों

का अगुआ जमतुला भागू भी अपने साथ ज़ारों गुज्जरों की फ़ौज ले कर पहाड़ियों से मिल कर पैदल सेना का मोहरी बन कर चल पड़ा।

जब इस चढ़ाई की खबर गुप्तचर ने गुरु जी को दी, तो आप जी ने शेर सिंघ तथा नाहर सिंघ को पाँच-पाँच सौ सिंघों का जत्था दे कर लोहगढ़ किले के ऊपर मझैल सिंघों को दुश्मन का मुकाबला करने के लिए भेज दिया। बाद में उदै सिंघ आदि अन्य योद्धाओं को शहर के चारों ओर सावधानी रखने के लिए नियत कर दिया।

पहाड़ी फौज़ें मारों-मार करती तथा नगारे वजाती हुई जब सामने आ गई, तो दोनों तरफ से बंदूकें आदि शस्त्र चलने लगे। धरती लाशों से खूनों-खून हो गई। दोनों तरफ से योद्धे बड़े जोश से मार-काट करने लगे। एक तरफ हो कर गुरु जी भी अपने अमोघ वाणों की वर्षा करके शत्रुदल को मौत के घाट उतारते रहे।

अपनी सेना की दशा को देखकर राजा भीम चंद, हरी चंद हडूरीया तथा केसरी चंद जसवालीया ने खालसा दल को घेरा डाल लिया तथा जमतुला भाऊ ने पैदल फ़ौज से सिंघों के ऊपर हमला कर दिया। सिंघ भी बड़े डटकर शस्त्र चलाने लगे-साहिबजादा अजीत सिंघ भी खालसा दल के साथ मिल कर वैरियों की मार-काट करने लगा। युद्धभूमि योद्धाओं की गर्ज से आसमान गूँज उठा। योद्धे टुकड़े-टुकड़े होकर धरती के ऊपर गिरने लगे। इस हल-चल में भाई साहिब सिंघ जी प्यारे ने जमतुला भाऊ के माथे में गोली मार कर उसको सदा की नींद सुला दिया। तद्उपरान्त जब संध्या हो गई, तो पहाड़ी सेना अपनी भारी हानि के कारण पीछे हट कर अपने मोरचों में चली गई।

www.9009.co.in

पहाड़ी राजाओं ने आनंदपुर को घेरा डाल कर बैठ जाना

आनंदपुर के अन्दर रसद पानी जाना बन्द करके गुरु जी को किला छोड़ने के लिए विवश करने के लिए पहाड़ी सेना आनंदपुर को घेरा डाल कर बैठ गई। इसके उत्तर में सिंघों के जत्थे रात के समय हल्ला बोल कर पाहड़ियों के मोरचों में बैठे आदमियों को मार कर खाद्य सामग्री ले कर किले में आ जाते। सिंघों के इन हल्लों से पहाड़ी राजे बहुत चिंतातुर हो गये।

पहाड़ निवासियों ने किला तोड़ने के लिए मस्त हाथी भेजना

इसी तरह जब एक महीना व्यतीत हो गया, तो पहाड़ियों ने केसरी चंद जसवालीए का परामर्श मान कर एक मस्त हाथी को बहुत शराब पिला कर किले का दरवाज़ा टक्कर मार कर तोड़ने के लिए भेजा तथा हाथी के पीछे राजाओं की विशाल सेना भेज दी। जब किले का दरवाज़ा टूट जायेगा, तो अंदर जा कर सिंघों की मार-काट कर देंगे तथा गुरु जी को पकड़ कर ले आएँगे। इस बात का जब गुरु जी को पता चला, तो आप जी ने भाई दुनी चंद को हुक्म दिया कि तुम आगे हो कर इस हाथी का मुकाबला करके इसको पीछे भगा दो। दुनी चंद भले शरीर से बहुत मोटा था, परन्तु भीरू प्रवृत्ति होने के कारण डर कर रात को किले की दीवार को फाड़ कर भाग गया। दुनी चंद का इस तरह दौड़ जाना सुन कर गुरु जी ने भाई बिचित्र सिंघ को हाथी से टक्कर लेने की आज्ञा दी।

भाई बिचित्र सिंघ ने हाथी को भगा देना

भाई बिचित्र सिंघ गुरु जी की आज्ञा का पालन करता हुआ नेज़ा लेकर घोड़े पर सवार होकर तैयार हो गया। उधर से मस्त हाथी झूमता हुआ जब किले के दरवाज़े के पास आया, तो बिचित्र सिंघ ने किले के दरवाज़े से बाहर निकल कर घोड़े की पीठ से उछल कर हाथी के माथे में इतनी ज़ोर से नेज़ा मारा कि हाथी चीखें मारता हुआ पीछे को दौड़ गया। पहाड़ी सेना के अनेक योद्धे इस तरह बे-तहाशा भागे जाते हाथी के पैरों के नीचे आ कर मारे गये। इस से पहाड़ियों की सेना में हलचल मच गई तथा सिंघों ने किले से निकल कर बहुत मार-काट की। इस मुठभेड़ में ही भाई उदय सिंघ ने राजा केसरी चंद का तलवार से सिर काट कर नेज़े के ऊपर टाँग कर गुरु जी के चरणों में आ रखा। केसरी चंद की मौत को देखकर पहाड़ियों के हौसले टूट गये तथा वे मैदान छोड़कर भाग गये।

दूसरे दिन फिर घमासान का युद्ध हुआ दोनों तरफ से बहुत जवानों का जानी नुकसान हुआ। इस घमासान युद्ध में जब राजा घुमंड़ चंद घायल होकर पीछे हट गया तब उसको देख कर पहाड़ी सेना भी मैदान खाली कर गई। सिंघ जीत प्राप्त करके किले में गुरु जी के पास आ गये। गुरु जी सिंघों के ऊपर बहुत प्रसन्न हुए तथा उन्हें शाबाश दे कर बहुत खुशी मनाई।

इधर पहाड़िये रातों-रात ही अपना बचा हुआ सामान तथा आदमी लेकर वापिस अपने प्रदेश को चले गये।

राजा भीम चंद ने सूबा दिल्ली तथा सरहंद से सहायता माँगनी

घर जाकर राजा भीम चंद अपनी हार की बदनामी से बहुत दुखी हुआ। एक दिन उसने कुछ बहुमूल्य चीज़ें अपने वज़ीरों को दे

कर सूबा सरहंद तथा दिल्ली के पास भेज कर प्रार्थना की कि हमारी सहायता करके हम को गुरु गोबिंद सिंघ से बचाओ। हम बहुत दुखी हैं। भीम चंद की प्रार्थना को स्वीकार करके दोनों जरनैलों ने उसके प्रार्थना पत्र को औरंगज़ेब के पास दक्षिण प्रदेश में भेज दिया। औरंगजेब ने जरनैलों को हुक्म भेज दिया कि अपनी फौज से पहाड़ी राजाओं की सहायता करके गुरु जी से आनंदपुर खाली करवा कर भीम चंद का अधिकार करवा दो।

पहाड़ी राजाओं ने गाए की सौगंध देकर गुरु जी से आनंदपुर खाली करवाना

पहाड़ी राजाओं पर विजय प्राप्त करके इधर आनंदपुर में गुरु जी देश-प्रदेश से आई संगत को अपने उपदेश के द्वारा निहाल कर रहे थे तथा उधर पहाड़ी राजे गुरु जी से आनंदपुर छुड़वाने के लिए फिर योजना बना रहे थे। भीम चंद को बहुत शोक में देखकर उस के वजीर परमानंद ने सलाह दी कि अब केवल यही सरल उपाय है कि गुरु जी को गाए की सौगंध देकर कहें कि आनंदपुर एक बार छोड़ जाओ, तो फिर भले ही कुछ समय के बाद वापिस आ जाना। परमानंद की यह सलाह सब ने पसंद की। एक आटे की गाए बना कर रात के अन्धेरे में किले के दरवाज़े के आगे केसर, चंदन तथा चावल आदि से चौंक पूर कर खड़ी कर दी। गाए के साथ एक-एक पत्र भी लिखकर रख दिया कि गुरु जी तुम्हें गाए माता की सौगंध है, तुम एक बार आनंदपुर छोड़ कर चले जाओ।

सवेरे जब यह आटे की गाए से बाँधा हुआ पत्र गुरु जी को बताया गया, तो आप जी ने गाए की सौगंध पढ़ कर तत्काल ही आनंदपुर खाली करने का हुक्म दे दिया। सिंघों ने भले ही बहुत

कहा कि गुरु जी यह इन्होंने छल रचा है। दुश्मन की इस तरह की सौगंध पर भरोसा नहीं करना चाहिए, परन्तु गुरु जी ने कहा यदि हमें गाए की सौगंध न मानेंगे तो और कौन मानेगा। यदि इन्होंने यह फ़रेब रचा है, तो समझो यह जीते ही मर गए हैं। आनंदपुर में हम नहीं रहेंगे। तद्उपरान्त गुरु जी सारा सामान तैयार करके अपने योद्धियों के साथ आनंदपुर से निकल पड़े।

पहाड़ियों का गुरु जी पर तोप का गोला मारना

इस तरह गुरु जी आनन्दपुर खाली करके जब कीर्तपुर से आगे एक टीले पर जो अब निरमोहगढ़ के नाम से प्रसिद्ध है, ठहरे, तो पहाड़ियों ने गुरु जी के ऊपर पीछे से चुपचाप जा हमला किया, परन्तु सिंघों से मार खा कर पीछे हट गए।

दूसरे दिन जब गुरु जी इस टीले के ऊपर बैठे हुए अपने सिंघों से वचन कर रहे थे, तो पहाड़ियों के तोपची ने गुरु जी को दूरबीन से देख कर उन्हीं पर तोप का गोला मारा। इस से गुरु जी तो बाल-बाल बच गए, परन्तु बेचारा चौर बरदार शहीद हो गया। तोपची दूसरी बार गुरु जी के ऊपर गोला चलाने के लिए तोप का निशाना बना ही रहा था कि गुरु जी ने उसको अपने एक बाण से वहाँ ही चित्त कर दिया। दूसरा बाण मार कर गुरु जी ने दूसरे तोपची को भी, जो गुरु जी के ऊपर वार करने के लिए तोप तैयार कर रहा था, वहाँ ही ढेर कर दिया। गुरु जी के इस कारनामे से पहाड़ी राजे भयभीत होकर पीछे हट गए।

सूबा सरहंद का फौज लेकर आना

निरमोहगढ़ टीले के ऊपर बैठे ही गुरु जी रोज़ का नित्यनेम आदि तथा योद्धाओं की देखभाल तथा अपने बचाव के साधन जुटा रहे थे। उधर सूबा सरहंद भी अपनी फ़ौज लेकर आ रहा था कि

गुरु जी को भी इस बात का गुप्तचर ने पता दे दिया। गुरु जी ने सिंघों को कहा कि दुश्मन का मुकाबला शक्तिशाली होकर करना। जीते रहोगे तो राज भेगोगे यदि शहीद हो जाओगे तो परमपदवी प्राप्त करोगे। इतने समय में सिंघों को एक तरफ वज़ीर खाँ की फ़ौज ने तथा दूसरी ओर पहाड़ियों ने आकर घेरा डाल दिया। दोनों ओर से तड़ातड़ तथा चड़ाचड़ शस्त्र चलने लगे। एक ओर होकर गुरु जी भी अपने अमोघ बाण शत्रु दल के ऊपर चलाते रहे। जब दुश्मन की सेना का बहुत नुकसान हो गया, तो वज़ीर खाँ ने अपने आदमियों को कह कर सिंघो के ऊपर हल्ला बोल दिया। आगे सिंघों ने भी बहुत सारे बाण मार कर शत्रुओं के हौसले तोड़ दिए। इस तरह ढेड़ पहर के घोर युद्ध के उपरान्त रात हो जाने से दोनों ओर के योद्धे हट कर अपने-अपने डेरों को चले गए।

सूबा वज़ीर खाँ का अफ़सोस करना

अपने शूरवीरों की बहुत मौतें हुई देखकर वज़ीर खाँ बहुत दुखी हुआ। उसने राजा भीम चंद को पूछा कि गुरु से तुम्हारी शत्रुता किस तरह पड़ गई है? भीम चंद ने कहा, खाँ जी ! हमको गुरु कहता था कि तुम मेरे सिक्ख बन जाओ तथा हम मिलकर गुरु तेग बहादुर जी का औरंगज़ेब से बदला लेंगे।

जब हम ने हज़रत बादशाह के विरुद्ध युद्ध करने की सलाह न मानी, तो वह हमारे साथ वैर भाव रखने लगा और हमारा कोई गुनाह नहीं है।

गुरु जी का सतलुज नदी के पार जाना

दूसरे दिन गुरु जी जब सतलुज नदी पार करके राजा वैशाली के राज्य में जाने लगे, तो शत्रु सेना ने आप जी के ऊपर हल्ला बोल दिया। इस हल्ले में भले ही दोनों ओर का बहुत नुकसान हुआ, परन्तु आप ज़बरदस्ती दरिया को पार कर गए।

www.9009.co.in

यह सब कुछ देख कर वज़ीर खाँ ने भीम चंद को कहा, गुरु पानी के प्रवाह की तरह किसी ओर से भी रोका नहीं गया। ज़बरदस्ती नदी से पार हो गया। इस तरह पछचाताप करता हुआ वज़ीर खाँ अपनी फ़ौज को लेकर सरहंद को लौट गया तथा पहाड़ी राजे लज्जित हो कर अपने घरों को चले गए।

राजा बिसाली के पास निवास

जब राजा बिसाली ने सुना कि गुरु जी उसके राज्य में आ गए हैं, तो वह अपने कुछ अहिलकारों के साथ गुरु जी के पास आया तथा प्रार्थना करके गुरु जी को अपने साथ ले गया। सिंघों का डेरा बाहर लगा दिया तथा गुरु जी को अपने महलों में निवास करवा कर बड़े प्रेम से हर प्रकार की सेवा आरम्भ कर दी। सतिगुरु जी के दोनों समय दीवान लगते, कीर्तन होते तथा दर्शन अभिलाषी दर्शन करके आनन्द प्राप्त करते।

राजा बिभौर के पास निवास

यहाँ से गुरु जी अपने जवानों को साथ लेकर दूर-दूर तक शिकार खेलने चले जाते थे। एक दिन जब आप बिभौर के राज्य में चले गए, तो राजा बिभौर अपने मन्त्रियों को साथ लेकर आप जी को आ मिला तथा आप से प्रार्थना करके उन्हें अपने नगर ले गया। विश्राम करवा कर उस ने गुरु जी की बड़े प्रेम से हर प्रकार की सेवा की तथा गुरु जी की खुशी प्राप्त की।

सतलुज के किनारे एक सुन्दर पहाड़ी स्थान देख कर आप जी बिभौर नगर के बाहर ठहर गए। यहाँ दोनों समय दीवान सजते, शब्द कीर्तन तथा उपदेश होते। आप जी के दर्शन करने के लिए दूर-दूर की संगत भेंट लेकर उपस्थित होती तथा अपना जन्म सफल करके आनन्दित होती। गुरु जी के अटूट लंगर की सेवा राजा बिभौर की ओर से होती रहती।

www.9009.co.in

आनन्दपुर वापिस

इस तरह राजा बिभौर के पास प्रेमपूर्वक आवास करके जब कुछ समय निकल गया, तो आप जी ने वापिस आनन्दपुर जाने की तैयारी कर ली। दूसरे दिन ही रणजीत नगारा बजा कर सब तैयारी सहित आनन्दपुर को चल पड़े। आनंदपुर पहुँच कर गुरु जी ने सब से पहले श्री गुरु तेग बहादर जी के स्थान के दर्शन करके क़ढ़ाह प्रसाद बाँटा और फिर अपने महलों में विश्राम किया। आनंदपुरवासियों ने बहुत खुशी मनाई और दीपमाला की। सतिगुरु जी ने अपने महलों की मुरम्मत करवाई और जो लोग आनंदपुर छोड़ कर चले गए थे, उन को वापिस मँगवा कर उन्हें हर प्रकार की सहायता दे कर फिर से वसाया और शहर की शोभा बढ़ाई।

जैसे-जैसे सिक्ख संगत को गुरु जी के वापिस आनंदपुर आने का पता लगता, संगत घोड़े, शस्त्र और वस्त्र धन आदि बहुत भेंट लेकर गुरु जी के पास उपस्थित होती। दिनों-दिन गुरु जी की महिमा बढ़ने लगी। आनंदपुर शोभा का केन्द्र बन गया।

राजा भीम चंद ने सलाह करनी

जब गुरु जी के तेज प्रताप से आनंदपुर में पहले जैसा ही काम-काज जैसा कि शिकार खेलना, सिक्खों को उपदेश करना और भेंट लेनी, अमृत छकाना और सिंघ सजा कर युद्ध विद्या का अभ्यास करने आदि होने लगे, तो भीम चंद ने गुरु जी से सन्धि करके रहना ही ठीक समझा। उस ने अपने मंत्री परमानंद को अमूल्य भेंट देकर गुरु जी के पास भेजा और प्रार्थना की कि मेरी पिछली भूल क्षमा करके आगे से मेल-मिलाप रखा जाए। गुरु जी ने कहा यदि तुम विरोध छोड़ कर हमारे साथ मेल-मिलाप रखोगे, तो हम भी आपके साथ बिना किसी भेद-भाव के व्यवहार करेंगे।

गुरु जी ने शस्त्र तैयार करवाने

इधर गुरु जी ने अपने कारीगरों को युद्ध के लिए बहुत से शस्त्र तैयार करने का हुक्म दे दिया। हर रोज़ नेज़े, तलवारें, तीर, ढालें और बन्दूकें आदि तैयार होने लगीं। योद्धे युद्ध की तैयारी के लिए शस्त्रों से युद्ध विद्या का अभ्यास करने में जुट गए।

दशाहरा मनाना

इस तरह जब दशहरे का त्यौहार नज़दीक आ गया, तो गुरु जी ने सिंघों को कहा कि सारे नए पुराने शस्त्रों को माँज कर अच्छी तरह से साफ करके एक साथ ऊँचे स्थान पर रख दो। जब आप जी के हुक्म के अनुसार सिंघों ने शस्त्र अच्छी तरह से साफ करके ऊँची जगह पर रख दिए, तो गुरु जी ने उन की धूप तथा फलों से पूजन करके कढ़ाह प्रसाद की देग बाँटी।

तद्उपरान्त दशहरे वाले दिन तीसरे पहर गुरु जी घोड़ सवार होकर अपने साथ घोड़ सवार तथा पैदल सिंघों को तैयार करके नगारे, दुंभियाँ आदि वजाते हुए बाहर मैदान में चले गए तथा सिंघों में वीर रस भरने के लिए शस्त्र चलाने का अभ्यास करवाया फिर संध्या समय वापिस आ कर खालसे को कढ़ाह प्रसाद की देगें बाँट कर खुशी मनाई।

भाई जग्गा सिंघ की निर्माण सेवा

भाई जग्गा सिंघ गुरु जी का बड़ा श्रद्धालु सेवक था। वह आठों पहर गुरु जी की शरण में रहता था और हर प्रकार की सेवा सब से आगे होकर करता था। गुरु जी की उस पर बहुत प्रसन्नता देख कर दूसरे सेवादार उस से बहुत ईर्ष्या करते थे। एक दिन गुरु जी ने जग्गा सिंघ को पूछा कि दूसरे सेवादार उस से ईर्ष्या क्यों करते

www.9009.co.in

हैं? तो जग्गा सिंघ ने कहा कि महाराज ! मुझे लोगों की बातों से कोई वास्ता नहीं है, मुझे केवल आप जी के दर्शन और सेवा से ही वास्ता है। उसकी यह श्रद्धा भावना वाली बात को सुन कर गुरु जी बहुत प्रसन्न हुए।

पत्थर तथा पतासे से शिक्षा

फिर दूसरे सिक्खों को शिक्षा देने के लिए गुरु जी ने एक सिक्ख से एक घड़े के पानी में एक पत्थर का टुकड़ा और एक में पतासा डलवा कर कुछ देर के बाद उसे कहा कि पत्थर का टुकड़ा और पतासा घड़े के पानी से निकाल लाओ। घड़े में हाथ डाल कर सेवादार सिक्ख ने कहा कि महाराज ! पत्थर का टुकड़ा तो मिल गया है, परन्तु पतासा नहीं मिला।

इस प्रथाए गुरु जी ने सिक्ख सेवकों को बताया कि देखो पतासा जो कोमल और मीठा था वह पानी की संगत करके उस के साथ मिल गया है, परन्तु पत्थर का टुकड़ा जो कठोर और बेरस था, वह ज्यों का त्यों ही रहा है। उस पर पानी की संगत का कोई असर नहीं हुआ। इस तरह हमारे पास रहने वाले कुछ सेवक हैं, जिन पर हमारी संगत का कोई असर नहीं हुआ। वे ईर्ष्यावादी ही रहे हैं, परन्तु कुछ सिंघ हमारी संगत करके पतासे की तरह मीठा तथा कोमल हो गये हैं।

मेंडक का प्रमाण

यह सेवादार मेंडक के सामान है, जिन का निवास पानी में कमल के फूलों के साथ होता है, परन्तु वह गुण रूपी कमल को छोड़ कर अवगुण रूपी जाला ही खाते हैं।

गुरु जी के इस प्रकार के वचन सुन कर दूसरे सिक्ख सेवक भी नम्र होकर गुरु संगत की सेवा करने लगे।

भीम चंद की खोटी सन्धि

राजा भीम चंद ने गुरु जी से संधि कर लेने के बाद अपने मंत्रियों को कहा कि गुरु जी के साथ अन्य प्रकार का मेल ही रखो, परन्तु जब भी दाव लगे, इन को आनंदपुर में से निकाल देंगे। यह सन्धि करके उसने अपने मंत्री पुरोहित परमानंद को गुरु जी के पास भेज दिया और उसे समझाया कि गुरु जी का सब तरह के भेद लेकर प्रतिदिन मुझे भेजते रहना। इस हुक्म के अनुसार परमानंद को गुरु दरबार में भेज कर राजे की ओर से दो बन्दूकें और एक घोड़ा गुरु जी को भेंट करके प्रार्थना की कि राजा भीम चंद सदा ही आपके साथ मेल-मिलाप रखने का इच्छुक है। तद्उपरान्त वज़ीर गुरु जी के पास बड़े प्रेम से रहने लगा और दोनों समय गुरु दरबार में उपस्थित होकर बड़ा प्रेम व्यक्त करता। साथ ही साथ पम्मा गुरु दरबार का भेद लिख कर भीम चंद को भेजता रहता।

रवालसर के मेले पर राजाओं से मेल

एक दिन पुरोहित पम्मे ने गुरु जी को प्रार्थना की कि आप रवालसर के मेले चलो, वहाँ इस मेले के समय पहाड़ी राजे भी जाते हैं, उनसे मिलने का यह अच्छा समय होगा।

गुरु जी उसकी सलाह मान कर मेले में जाने के लिए तैयार हो गए। आप जी के साथ माता गुजरी जी और आपकी पत्नी सुन्दरी जी और जीतो जी भी तैयार हो गए। अपने पत्नी, पुत्र परिवार के बिना गुरु जी अपने सिक्ख योद्धाओं को साथ ले कर रवालसर तीर्थ पर पहुँच गए और एक अच्छी जगह देख कर डेरा लगा लिया।

उधर पहाड़ी राजे सभी पहुँच गए और अपने-अपने डेरे लगा कर ठहर गए। दूसरे दिन सभी राजाओं के मंत्रियों ने गुरु जी के

पास आ कर प्रार्थना की कि सारे राजे मिल कर आप जी के दर्शन करना चाहते हैं। आज्ञा दें तो आ जाएँ। गुरु जी से आज्ञा लेकर सारे राजे बड़ी सजधज के साथ अपनी-अपनी भेंट ले कर गुरु जी के दीवान में आए और भेंट अर्पण करके तथा योग्य सम्मान के साथ अपने-अपने स्थान पर बैठ गए। कुशल प्रसन्नता पूछ कर फिर नीति और सामाजिक बातें करके सब ने अपनी पिछली गल्तियों की क्षमा माँगी और आगे से आपके साथ मेल-मिलाप रखने के लिए प्रण लिए। तद्उपरान्त इन राजाओं की रानियाँ भी गुरु जी के दर्शन करने आई और पूरे सम्मान के साथ दर्शन परस कर गुरु जी की खुशी प्राप्त करके अपने डेरों को चली गई।

मंडी के राजे के पास, किला गोबिंदगढ़ का निर्माण

रवालसर के मेले से मंडी का राजा गुरु जी को अपने साथ ले गया और आप जी का डेरा अपने किला कमलाहगढ़ के पास ही गुरु जी की याद में राजे ने एक छोटा सा किला तैयार करवा कर उसका नाम गोबिंदगढ़ रखा।

आनंदपुर में वापिसी

कुछ समय मंडी की सैर करके आप जी आनंदपुर वापिस आ गए। आनंदपुर फिर रौनकें लग गई। नित्य नई संगत अनेक प्रकार की भेंट ले कर दर्शन करने आती और गुरु जी की खुशी प्राप्त करके आनन्दमय होती। गुरु जी के दोनों समय दीवान सजते और संगत कीर्तन उपदेश सुन कर अपना जन्म सफल करती।

जीव की अन्तिम गति का भेद

एक दिन गुरु जी के दरबार में एक पंडित आया। उस से कुछ सिक्खों की बातचीत चल पड़ी कि संसार में मर कर जीव की क्या

गति होती है? सब ने अपने अलग-अलग विचार बता कर फिर गुरु जी के पास इसका निर्णय करने की प्रार्थना की। सतिगुरु जी ने कहा जैसे किसी की इच्छा हो, वैसे ही उसके मन के तरंग होते हैं और इन तरंगों (वासना) का बँधा जीव मरता और पैदा होता है। जिस तरह कूएँ की टिंडें (माला) रस्सी से बँधी हुई कभी भरी और कभी खाली ऊपर नीचे चक्कर लगाती रहती हैं और जो रस्से से टूट जाती है, वे आने-जाने के फेर से छूट जाती हैं। इस तरह ही जीव आत्मा की गति है, जब तक यह वासना की रस्सी से बँधा रहता है, तब तक यह ऊपर नीचे (जन्म मरण) के फेर लगाता रहता है। परन्तु जब वासना की रस्सी टूट जाए, तो इन चक्करों के फेर से छूट जाता है और अपने स्वरूप में लीन हो जाता है। आप जी के यह वचन सुन कर सारी संगत ने आप जी को नमस्कार किया।

और उपदेश

एक दिन कुछ प्रबुद्ध पुरुषों ने गुरु जी के पास प्रार्थना की कि महाराज श्रद्धा से मूर्ति पूजा करनी अच्छी है या नाम जपना अच्छा है? गुरु जी बोले भाई ! मूर्ति पूजा उसका ध्यान तामसी और जड़ श्रद्धा है। परन्तु प्रभु का स्मरण सातो गुणी श्रद्धा है। इस से श्रेष्ठ सुख तथा आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है। हे गुणी जनो ! हमारा मत यह है कि पुरुष ध्यानसहित हो कर श्रद्धा से भजन करे और अच्छी रहनी रहे। कलियुग में प्रभु का नाम जपना ही सब से बड़ा कर्म तथा धर्म है। सिक्ख सुबह उठ कर स्नान करे, परमात्मा का स्मरण करे, भूख लगे तो भोजन खाए व घर के बने हुए भोजन को अमृत करके खाए।

पुरुष पराए शस्त्र, पराए घोड़े, पराई स्त्री, पराए धन और पराए देश से कभी प्रीती न करे। धरती, गाय, लड़की, विद्या यह श्रेष्ठ दान है, परन्तु अन्न दान सब से बड़ा और श्रेष्ठ है। सब पाठों से श्रेष्ठ पाठ नाम-स्मरण है। सभी योनियों में मनुष्य योनि श्रेष्ठ है। परन्तु अच्छी करनी के बिना मरना-जीना दोनों बुरे हैं।

इस तरह गुरु जी नित्य ही उपदेश दे कर संगत में आए नए-नए सिक्खों को अमृत छका कर केश, कछहेरा और शस्त्र धारण करना और नाम-स्मरण का उपदेश दे कर तैयार सिंघ सजा देते थे।

लाल सिंघ की ढाल की परीक्षा

एक दिन पूर्व देश के रहने वाले भाई लाल सिंघ ने गुरु जी के लिए एक गैंडे की ढाल ला कर भेंट की और बड़े गर्व से कहा कि महाराज ! इस ढाल को कोई शस्त्र काट नहीं सकता और बंदूक की गोली इस में से पार नहीं हो सकती। गुरु जी ने सिक्ख का अहंकार दूर करने के लिए भाई आलम सिंघ को कहा कि इस ढाल का निशाना लेकर इसे गोली मारो। हुक्म के अनुसार भाई आलम सिंघ ने तीन बार गोली चलाई, परन्तु कोई भी ढाल को न लगी। फिर गुरु जी ने आप बंदूक पकड़ कर कहा इसने हम से चोरी सिंघ से अरदास करवाई है और तिहावल बाँटा है, अब और भी जो इसका जितना बल है लगा ले, ढाल हम से बच नहीं सकती। गुरु जी का यह वचन सुन कर लाल सिंघ आप जी के चरणों पर गिर पड़ा और कहा कि आप जो चाहे कर सकते हो। सुमेर पर्वत को भी तोड़ सकते हैं अपने सेवक का मान रख लो। लाल सिंघ की यह प्रार्थना सुन कर गुरु जी ने हँस कर कहा कि शस्त्र ऐसा ही होना चाहिए, जिसके पक्केपन पर पूरा गर्व हो और दुश्मन का नाश करने वाला हो।

www.9009.co.in

अरदास की महत्ता

एक दिन उजैन शहर के रहने वाले एक सिक्ख बशंबर दास ने गुरु जी के पास प्रार्थना की कि सच्चे पातशाह ! मेरे घर बड़ी गरीबी है, मुझे धन की बख्शिश करो।

सतिगुरु जी ने फर्माया कि भाई ! सिक्ख को हर कार्य के प्रारम्भ के समय कढ़ाह प्रसाद करके उसे पवित्र चौंकी पर रख कर ऊपर साफ कपड़े से ढक कर पास बैठ कर पूरी पवित्रता से जपुजी साहिब व आनंद साहिब का पाठ करना या करवाना चाहिए। तद्उपरान्त कार्य की सफलता के लिए खड़े होकर हाथ जोड़ कर नम्रता से अरदास करनी अथवा करवानी चाहिए। फिर जो भी कार्य होगा अवश्य सिद्ध होगा। घर जा कर तुम इस तरह ही अरदास करवाना, तेरे घर बहुत धन और सुख सम्पदा की बख्शिश होगी। हे बशंबर दास ! प्रत्येक सिक्ख की यह अरदास होनी चाहिए। बशंबर दास ने कहा, गुरु जी ! महलों और दुशालों में रहते अथवा अति गरीबी के समय हर हालत में आप जी के चरणों का भरोसा मेरे हृदय में ज्यों का त्यों बना रहे। मेरा मन कभी भी सिक्खी भरोसे से न डोले।

पूर्ण सिक्ख के लक्षण

गुरु जी ने वचन किया हे बशंबर दास ! जिस का जीवन धर्म के लिए है और अपना आचरण गुर-मर्यादा के अनुसार रखता है, वही पूर्ण सिक्ख है।

हे बशंबर दास ! सिक्ख अपनी कमाई में से गुरु के निमित्त दशवंध दे। सिक्खी की रहत में रहे, स्नान और ध्यान स्मरण में लग कर समय व्यतीत करे। पराई स्त्री और पराए धन का त्याग करे। गुरुवाणी का पाठ करे, गुरु पर विश्वास रखे।

सिक्ख के धारण करने योग्य बातें

सिक्ख भ्रम न करे, सम्बंधी के मरने पर रोना पीटना न करे, नीच चंडाल को और वैश्या स्त्री को कर्ज न दे। खोटे पुरुष के साथ कभी प्रीति न करे। वाहिगुरु की ओर से विमुख होकर आहें न भरे। गुरुद्वारे जाते समय नखनों तक सारे पैर धोकर अन्दर जाए, रोटी खाने के बाद पेट न बजाए। चलते-चलते खाना तथा टट्टी पेशाब न करे। अन्न खा कर उसकी निंदा न करे। बदचलण पुरुष तथा स्त्री से प्रीति न करे। धर्म पुस्तकों को पढ़ सुन कर अपना अहंकार दूर करे। जीवन की जुमेवारियों को धैर्य से निभाए। खोटा हठ, खोटा भोजन में अपना बड़पन न करे। खाता-पीता मन को प्रभु की याद में लगाए रखे। जो सिक्ख अपने व्यवहार तथा खाने-पीने को शुद्ध रखता है, उसका घर धन से भरपूर रहता है।

कुरुक्षेत्र के मेले जाना

कुछ सिक्खों, माता जी तथा अपने महलों की प्रार्थना को स्वीकार करके गुरु जी ने सूर्य ग्रहण से पूर्व थानेसर पहुँच कर सरोवर की दक्षिणी दिशा में डेरा कर लिया। वहाँ आप जी के दर्शन करने के लिए बहुत लोग आए। उन्हों ने यथा शक्ति भेंट अर्पण करके अपनी कमाई को सफल करके गुरु जी की खुशी प्राप्त की।

चमकौर नगर के पास डेरा करना

मेले की समाप्ति पर थानेसर से चल कर आनंदपुर को वापिस आते हुए गुरु जी रास्ते में चमकौर नगर के पास डेरा करके ठहर गए। आप जी के आने की खबर को सुन कर संगत दूध, दही तथा बहुत सा अन्न लेकर दर्शन करने आई। काबल कंधार से चली हुई संगत भी आप जी को यहाँ ही मिल गई।

www.9009.co.in

भीम चंद ने तुर्क सेना से हमला करवाना

जब यहाँ संगत से प्रेम करके गुरु जी को कुछ दिन हो गए, तो भीम चंद ने अपने आदमी भेज कर लाहौर से दिल्ली को जा रही शाही सेना के सेनापतियों को लुधियाने मिलकर कहा कि इस समय गुरु जी खुले मैदान में बैठे हुए थे, उन्हें अब काबू कर लेना बिल्कुल आसान तथा यकीनी है। हम भी तुम्हारी मदद करेंगे।

भीम चंद की यह बात मान कर दोनों सेनापति अलफ खाँ तथा सैदाबेग अपनी दस हज़ार सेना के साथ सतलुज नदी को पार करके चमकौर को चल पड़े। शाही सेना का आना सुनकर गुरु जी ने भी अपने सिंघों को मुकाबले के लिए तैयार कर दिया। दोनों तरफ से आमने-सामने होने से युद्ध मच गया। इस समय जब तुर्क सेनापति सैदाबेग ने गुरु जी को देखा, तो आप जी की निराली शान तथा प्रताप को देख कर घोड़े से उतर कर गुरु जी के चरण पकड़ कर उस ने कहा हे बड़े पीर ! मुझे बख्श दो, मुझ से भूल हो गई है। मैंने भीम चंद की प्रेरणा से तुम्हारे ऊपर चढ़ाई कर दी। गुरु जी ने उसका प्रेम तथा श्रद्धा को देख कर उसको धैर्य दिया तथा कहा कि तुम बख्शे गए हो।

सैदाबेग गुरु जी की शरण ग्रहण कर लेने के उपरान्त सेनापति अलफ खाँ अपनी सेना ले कर चुपचाप ही पीछे हटकर दिल्ली को प्रस्थान कर गया।

पहाड़ी राजाओं से जंग

शाही सेनापतियों की हार तथा गुरु जी की जीत के नगारे बजते हुए आनंदपुर पहुँचने की खबर को सुन कर राजा भीम चंद बड़ा चिंतित हो गया। उसने सारे पहाड़ी राजाओं को बुला कर कहा कि गुरु दिनों-दिन ज़ोर पकड़ता जा रहा है। यदि हम अब

चुप करके बैठे रहे, तो वह दिन दूर नहीं होगा जब वह हमारा सारा देश काबू कर लेंगे।

सब राजाओं की हाँ से हाँ मिली देख कर भीम चंद ने जंग की तैयारी का हुक्म देकर दस हज़ार सेना से आनंदपुर पर चढ़ाई कर दी। इस चढ़ाई की खबर को सुन कर गुरु जी ने भी अपने योद्धाओं को तैयार करके पहाड़ियों को आनंदपुर से दूर आगे होकर रोकने के लिए भेज दिया।

सिक्ख योद्धाओं ने जब पहाड़ियों को आगे से जा कर रोका, तो आमने-सामने होकर जंग होने लगी। तोपों, बंदूकों की तड़ातड़ की आवाज़ तथा चमकती कृपानों की चमक से भयानक युद्ध खत्म हो गया। संध्या तक अपना बहुत सारा जान माल का नुकसान करवाकर कढ़ाह प्रसाद की देग दे कर खुशी मनाई।

सैदा खां ने गुरु जी की शरण ग्रहण करनी

कुछ देर पहले पहाड़ी राजाओं ने जो अपने मन्त्री दिल्ली भेजे थे। वह झूठ सच बोलकर सवा लाख फौज चढ़ा कर गुरु जी के ऊपर ले आए। इस फौज का सेनापति सैदे खां पठान दिल्ली से फौज लेकर थानेसर आ उतरा। यह खबर गुप्तचर ने जब गुरु जी को आनंदपुर आ कर दी, तो आप जी ने अपने एक नौकर मेमूँ खाँ पठान तथा सैदा बेग, जिसने चमकौर के युद्ध में आप जी की शरण ग्रहण कर ली थी, को पाँच सौ सिक्ख योद्धाओं को तैयार करके शाही सेना के मुकाबले के लिए मैदान में भेज दिया।

गुरु जी आप भी शस्त्रधारी होकर एक ऊँचे टीले के ऊपर बैठ गए। दोनों तरफ से बंदूकों व तलवारों के वारों से योद्धे घायल होकर खूनों-खून धरती के ऊपर गिरने लगे। इस तरह तबाही मची हुई थी कि तुर्क सेना के सेनापति सैदे खाँ पठान ने जब सुना कि

गुरु जी सखी हैं तथा चतुर शरीर करके बलवान योद्धे हैं तथा करामात में भी पूरे हैं, तो उसको आप जी के दर्शन करने की बहुत श्रद्धा तथा प्रेम हुआ। इसने अपने मन में कहा कि आप अन्तर्यामी तथा पीरों के पीर हैं। यदि मेरे दिल की दर्शन अभिलाषा को बूझकर घोड़ सवार होकर मेरे सामने आ जाएँ, तो मेरी आशा पूरी हो जाएगी। सैदा खाँ की श्रद्धापूर्वक प्रार्थना को सुन कर गुरु जी घोड़ सवार होकर सैदा खाँ के सामने आ गए तथा कहा खान जी ! सावधान होकर अपने शस्त्र संभाल कर अपना वार करो तथा हमारा सहारो। इस बोल के सुनने से ही सारी फौज के सामने सैदा खाँ ने हाथ जोड़कर कहा, हे पीरों के पीर ! मैं आप जी की बराबरी नहीं कर सकता। गुरु जी ने कहा, तुम शाही सेना का सेनापति होकर हमारे साथ युद्ध करने आए हो। अब तुझे पीछे नहीं हटना चाहिए, युद्ध करो। यह बात सुन कर सैदा खाँ ने घोड़े से उतर कर आप के चरणों पर सिर रख दिया तथा आशीर्वाद लेकर युद्ध छोड़ कर अलग हो गया। सैदे खाँ की इस कारवाई से तुर्क सेना भी अपना दिल हार कर पीछे हट गई।

रमजान खाँ की मौत तथा आनंदपुर की लूट

जब दूसरे दिन सेनापति रमजान खाँ भी गुस्सा खा कर गुरु जी के सामने होकर लड़ता हुआ मारा गया, तो फिर पहाड़ियों ने तुर्क सेना को ललकार कर बड़े ज़ोर का सिंघों के ऊपर इक्ट्ठे हो कर हल्ला बोल दिया। इस ज़ोरदार हल्ले से सिंघों को हाथ पैरों की पड़ गई तथा तुर्क सेना आनंदपुर से सरहंद की ओर गई तथा पहाड़िए भी पीछे हट गए।

बाद में सिंघों ने इक्ट्ठे होकर दूसरे दिन तुर्क सेना को रास्ते में जा घेरा तथा वैरियों के जान माल का बहुत नुकसान करके अपना लूटा हुआ सारा माल वापिस ले आया।

सैदा खाँ ने गुरु जी की शरण ग्रहण करनी

इस तरह मार तथा हार खा कर जब पहाड़ी राजे तथा सूबा दिल्ली ने फिर सारा वृत्ताँत औरंगज़ेब को लिख कर दक्षिण में भेजा, तो बादशाह ने सूबा दिल्ली, सरहंद तथा लाहौर को हुक्म लिख कर भेज दिए कि अपनी सब सेना लेकर पहाड़ी राजाओं से मिल कर आनंदपुर को घेर कर जैसे भी हो, गुरु को पकड़ कर मेरे पास भेज दो।

बादशाह के इस हुक्म के अनुसार सारे पहाड़ी राजाओं ने मिल कर अपनी सेना के साथ आनंदपुर को आ घेरा और उधर शाही सेना जब सरहंद पहुँची, तो उसके साथ वज़ीर खाँ सूबा सरहंद भी तैयार होकर अपनी सेना के साथ आनंदपुर को चल पड़ा।

इधर जब गुरु जी को इनके आने का पता चला, तो आप जी ने भी अपने सिंघों को दुश्मन की फौज से टकराने के लिए तैयार कर दिया। आमने-सामने होकर दोनों तरफ से शस्त्र चलने लगे। शत्रु दल नीचे मैदान में था और सिंघ ऊँची जगह किला आनंदगढ़ में। इस तरह नीची जगह खड़े होकर शत्रु दल का सिंघ बहुत नुकसान कर रहे थे। एक पहर के भयानक युद्ध के बाद रात हो गई और सब सेना पीछे हट कर अपने डेरों में चली गई। दूसरे दिन फिर आमने-सामने होकर शूरवीरों का युद्ध हुआ। युद्धभूमि लाशों से भर गई। तुर्क सेना को हाथ पैरों की पड़ गई। सिंघ अपने-अपने किले में आ गए। उन्हों ने कढ़ाह प्रसाद की देग बाँटी और घायलों की मरहम पट्टी की।

आनंदपुर को घेरा

इस तरह युद्ध में गुरु जी के साथ कोई पेश न जाती देख कर **राजाओं** ने सूबों से मिल कर सलाह की कि आनंदपुर को घेरा

डाल कर सेनाशक्ति सहित बैठ जाओ और कोई चीज़ खाने-पीने वाली अन्दर न जाने दो। जब अन्दर से अन्न भंडार खत्म हो जाएगा, तो गुरु जी आप ही तंग हो कर बाहर निकल आएँगे और हम पकड़ कर बादशाह के पास भेज देंगे।

इस परामर्श के अनुसार शत्रु दल दूसरे दिन आनंदपुर को घेर कर बैठ गए। इस तरह जब खाने-पीने वाली चीज़ों का अन्दर आना बन्द हो गया, तो सिंघ रात को किसी समय बाहर निकल कर चीज़ें ले आते और कुछ न कुछ काम चलाए जाते।

सिंघों ने तुर्कों की रसद लूटनी

जब तुर्क सेना के द्वारा आनंदपुर को ३-४ महीने से घेरा डालने पर अन्न दाना अन्दर जाना बंद हो गया, तो एक रात शेर सिंघ की अगवाई में एक सिंघों के जत्थे ने तुर्कों के फौजी स्टोर पर धावा बोल दिया और बहुत सारा अन्न आदि लूट कर किले में आ गए। तुर्क और पहाड़ियों की सेना हाथ मलते ही रह गए।

गुरु जी ने सब धन सतलुज में फैंक देना

इस तरह भूख से दुखी होकर कभी-कभी छापा मार कर बाहर से रसद पानी खाने पीने के लिए लूट लाते। परन्तु आनंदपुर निवासी भी ऐसी नाकाबंदी से बहुत दुखी हो गए। सब को जान के दुःख से घबराया हुआ देख कर एक दिन गुरु जी ने अचानक ही सिंघों को कह कर खजाने से सारा धन पदार्थ निकाल कर सतलुज नदी में फैंकवा दिया और कीमती वस्त्र आग लगा कर जला दिए। जब माता जी ने इसका कारण पूछा, तो आप जी ने कहा माता जी ! यह पूजा का धन जहर समान है, जो बल बुद्धि को नष्ट कर देता है। जिस तरह तुम अपने पुत्र को ज़हर नहीं दे

सकते, इसी तरह हम भी अपने सिक्ख पुत्रों को यह पूजा का धन रूपी ज़हर नहीं दे सकते। हमने सतलुज नदी में इसको अमानत रख दिया है और जब हमारे सिकखों का तेज प्रताप बढ़ेगा, तब इसको निकाल कर इस का प्रयोग करेंगे और राज्य सुख भोगेंगे।

राजाओं और बादशाह की तरफ से सौगंध पत्र

अपना सारा जानी तथा माली नुकसान करके जब राजे दिल हार गए, तो उन्होंने सूबों से सलह की कि अब क्या करना चाहिए? सूबे आप भी बहुत तंग आ गए थे, वह घर बाहर का त्याग और शाही सेना तथा खज़ाने का नुकसान होता देख कर घबराए हुए थे। इन सब ने विचार करके औरंगज़ेब को सब हाल लिख कर दक्षिण प्रदेश में भेज कर उस से पूछा कि अब क्या करना चाहिए। इस के उत्तर में औरंगज़ेब ने सूबा दिल्ली के द्वारा गुरु जी को चिट्ठी लिख कर कहा कि मूझे कुरान की सौगन्ध है कि मैं तुम्हारा कभी भी बुरा नहीं करूँगा। तुम एक बार आनंदपुर खाली करके और देश में जहाँ मन करे जा निवास करो और जब अमन शान्ति हो जाएगी, तो फिर चाहे आनंदपुर ही आ जाना।

इस चिट्ठी के साथ पहाड़ी राजाओं ने भी अपने ठाकरों और गाय की सौगंध खा कर चिट्ठी लिख कर अपने मन्त्री को गुरु जी के पास भेजा और यकीन दिलाया कि एक बार आनंदपुर खाली कर जाओगे, तो फिर आपकी ओर कोई आँख उठा कर नहीं देखेगा।

सिंघों ने बेदावा लिख कर देना

जब इन पत्रों का सिंघों को पता चला, तो उन्होंने गुरु जी से प्रार्थना की कि वह हमें बादशाह की कुरान की सौगंध तथा

पहाड़ियों की गाय माता और ठाकरों की सौगंध पर यकीन करके आनंदपुर खाली कर देना चाहिए। यहाँ अब और भूख के दुःख से मरने से हमें आनंदपुर खाली कर जाना ही अच्छा है। परन्तु गुरु जी ने कहा आगे भी दो बार इन्होंने सौगंध खाकर हम से आनंदपुर खाली करवा कर धोखा दिया था। अब हमें इनकी कस्मों पर कोई भरोसा नहीं करना चाहिए। परन्तु जब माता जी और सिंघों के बार-बार विनय करने पर भी गुरु जी न माने, तो बहुत से सिंघों ने बड़े दुःखी होकर गुरु जी को बेदावा लिख कर दे दिया कि आज से हम आपके सिक्ख नहीं और तुम हमारे गुरु नहीं। यह बेदावा पत्र और राजाओं के सूबों के कस्मों वाले पत्र गुरु जी ने अपनी जेब में डाल लिए।

गुरु जी ने आनंदपुर छोड़ना

इस कारवाई के बाद गुरु जी ने सब फालतू सामान मैदान में रख कर आग लगा कर जला दिया। कीमती सामान नकदी आदि कुछ सतलुत में फैंक दिया और कुछ धरती में दबा दिया। शत्रु के लूटने को कोई चीज़ न रहने दी। तत्पश्चात् गुरु जी ने रात के समय आनंदपुर से निकलने के लिए नियत कर दिया।

६ पोख संवत् १७६१ विक्रमी को सिंघ अपने पूरे शस्त्र-वस्त्र पहन कर तैयार हो गए और जब ६ घड़ी रात बीत गई, तो कीर्तपुर के रास्ते रोपड़ की ओर चल पड़े। इनके कुछ देर बाद माता गुजरी जी दोनों छोटे साहिबज़ादे और गुरु जी के दोनों महल (माता सुन्दरी जी और साहिब देवां जी) सिंघों के एक भारी जत्थे के साथ निकल पड़े। सब से बाद गुरु जी आप कुछ योद्धाओं के साथ घोड़ सवार होकर चल पड़े।

पहाड़ियों और तुर्कों ने पीछे से हमला करना

इस तरह गुरु जी और सिंघ जब निर्मोहगढ़ पहुँच गए, तो पीछे पहाड़ी राजाओं और तुर्क सूबों ने अपनी सेना के साथ गुरु जी पर हमला कर दिया। उस दिन के बाद पहाड़ पर वर्षा का पानी आने से सरसा नदी बड़े तेज़ वेग से बह रही थी। दुश्मनों का ज़ोर देख कर सिंघ सरसा नदी में कूद गए। कुछ सिंघ नदी के तेज़ प्रवाह में डूब गए और कुछ किनारे लग गए। पीछे रहते बहुत से सिंघ शत्रु दलों ने शहीद कर दिए और थोड़े से नदी पार कर गए।

परिवार का बिछड़ना

इस हलचल में गुरु जी रोपड़ पहुँच गए। इसके बाद शत्रु दल के बल से गुरु जी ने अपनी दोनों महिलाओं को भाई मनी सिंघ के साथ दिल्ली भेज दिया। माता गुजरी और छोटे साहिबज़ादे सरसा नदी को पार करके हलचल में एक तरफ निकल गए और उन्हें गंगू ब्राह्मण अपने गाँव खेड़ी ले गया। कुछ सिंघ इस हलचल में विपत्ति के मारे इधर-उधर भाग गए।

यहीं आप जी ने बाबा सूरजमल जी के पौत्र गुलाब राए और शाम सिंघ को राजा सरमौर के पास नाहन अपनी एक चिट्ठी देकर भेज दिया और लिखा कि तुर्कों से बहुत झगड़े के कारण हम आनंदपुर छोड़ आए हैं। इन दोनों को तुम एक गाँव गुज़ारे के लिए दे देना, जिसके सहारे वे अपना निर्वाह कर सकेंगे।

बाकी थोड़े से सिंघ और दोनों बड़े साहिबजादे अपने साथ ले कर गुरु जी चमकौर की ओर चल पड़े।

चमकौर की गढ़ी में मोर्चा

जब रोपड़ से गुरु जी चमकौर के पास पहुँचे, तो आप जी को पता चला कि दिल्ली से दस लाख फ़ौज आप जी को पकड़ने आ

रही है और कुछ कर सकने का समय बहुत कम था। इस लिए गुरु जी अपने ४० सिक्खों, दो साहिबज़ादों (अजीत सिंघ जी तथा जुझार सिंघ जी) के साथ एक जाट जगत सिंघ की कच्ची गढ़ी में दाखिल हो गए। पीछे से तुर्क और पहाड़ी दल भी जल्दी आ गया तथा उसने इस कच्ची गढ़ी को घेरा डाल लिया। इस हालित में पोष महीने की सप्तमी की रात बीत गई। जब ८ पोष का दिन निकला, तो तुर्क सेना गढ़ी के चारों ओर मक्खियों की तरह इक्ट्ठी हुई, मारो-मार करके बन्दूकें आदि शस्त्र चलाने लगी। अन्दर से सिंघ भी जो कि आठ-आठ का जत्था बना कर चारों दिशाओं पर बैठे थे, शत्रु दलों पर तीरों और गोलियों की वर्षा करने लगे।

युद्ध चमकौर और बलिदान

आठ पोष संवत् १७६१ विक्रमी को सारा दिन तुर्क सेना का आक्रमण होता रहा, परन्तु जो भी शत्रु दल गढ़ी के पास जाता उसको तीरों तथा बन्दूकों की गोलियों से सदा की नींद सुला दिया जाता। इस समय बड़े साहिबज़ादे अजीत सिंघ जी की आयु १४ साल थी और छोटे साहिबजादे जुझार सिंघ जी ११ वर्ष के थे। जब शत्रु का टिडी दल मारो-मार करता हुआ गढ़ी के दरवाज़े के आगे आ गया, तो दोनों साहिबज़ादे बारी-बारी पाँच सिंघों को साथ गढ़ी से बाहर निकल कर सैंकड़ों शत्रु सेना को मार कर आप परमशहीदी प्राप्त कर गए।

पाँच सिंघों की प्रार्थना स्वीकार करना

सारे दिन के युद्ध में ३५ सिंघ और दो साहिबज़ादे शहीद हो चुके थे। रात हो गई। अन्दर न कोई लंगर का प्रबन्ध था और न ही और गोली सिक्के का। पीछे ५ सिंघ और गुरु जी सारे दिन के

www.9009.co.in

युद्ध के थके मारे पेट से भूखे थकावट से चूर हो गए थे। गढ़ी के चारों ओर शत्रु दल घेरा डाले बैठे थे। यह सारे हालात विचार कर, पाँच सिंघों ने जो इस समय गुरु जी के पास रह गए थे, प्रार्थना की कि महाराज जी ! अब रात के अन्धेरे में आप यहाँ से निकल जाओ। इन बेईमानों के हाथ नहीं आना चाहिए। हम जैसे सिक्ख तो और भी लाखों हो जाएँगे। आपके शरीर की सलामति चाहिए। इस तरह जब सिंघों ने बहुत बार प्रार्थना की, तो आप जी ने उन पाँचों सिंघों को अपने सामने बैठा कर कहा। मैं सदा ही पाँच सिंघों में विद्यमान रहूँगा। जो पुरुष पाँच सिंघों को भोजन और वस्त्र भेंट करके अरदास करवाएगा, उसके मन की कामना पूरी होगी।

गुरु जी का चमकौर की गढ़ी से निकल जाना

इस तरह पाँच सिंघों की महिमा बता कर गुरु जी ने वचन किया कि हम अब गद्दी भी खालसा पंथ को देते हैं। खालसा पंथ सदा अट्टल रहेगा। यह वचन करके आप जी ने उन पाँच सिंघों की तीन परिक्रमा करके 'वाहिगुरु जी का खालसा वाहिगुरु जी की फतह' बुलाई। तद्उपरान्त अपनी कलगी वस्त्र भाई संगत सिंघ को दे कर गढ़ी में रहने की आज्ञा करके आप गुरु जी तीन सिंघ भाई दया सिंघ, भाई धर्म सिंघ और भाई मान सिंघ को साथ ले कर गढ़ी के पिछली तरफ खिड़की से रात के अन्धेरे में बाहर निकल गए। बाहर निकल कर आप जी ने अपने साथी तीन सिंघों को कहा कि यह तारा देख लो और यदि आपिस में बिछड़ कर रास्ता भूल जाएँ, तो इस तारे की दिशा में चले आना। इस तरह यदि रात को इक्ट्ठा न हो सके, तो दिन में हो जाएँगे। सिंघों को इस तरह सावधान करे आप जी ने अपना धनुष बाण पेशाकबज़ और सिरि साहिब (कलगी) लेकर फेंटा बांध लिया और अरदास करके

माछीवाड़े की तरफ चल पड़े। गाँव से बाहर जाकर गुरु जी ने तीन बार ताली मार कर ऊँची आवाज़ से कहा ' सिक्खों का गुरु निकल चला है। ' यह आवाज़ सुन कर रात के अन्धेरे में जो भी तुर्क सामने हुआ, उसे मौत के घाट उतार कर आप जी आगे निकल गए। इसी हलचल में आप जी से तीनों सिंघ आप से बिछड़ गए।

माछीवाड़े पहुँचना

यहाँ से चल कर गुरु जी ने तीन कोस पर एक पानी के जौहड़ के पास एक जगह वृक्ष के नीचे जा विश्राम किया। यहाँ थोड़ा समय विश्राम करके आप जी आगे एक झाड़ी की झुग्गी में कमर सीधी करने के लिए लेट गए और अकाल पुरुष के रंग में आ कर आप ने इस शब्द का उच्चारण किया—

ख्याल पातशाही १०।।

मित्र प्यारे नू हाल मुरीदा दा कहना।।
तुधु बिनु रोग रजाईयां दा ओडन नाग निवासां दे रहना।।
सूल सुराही खंजर पियाला बिंग कसाईया दा सहना।।
यारड़े दा सानूँ सथर चंगा भठ खेड़िया दा रहना।। १।।

इस समय एक पहर रात बाकी थी और दिन निकलने से पहले किसी ठिकाने लगना ज़रूरी था। इस समय आप के लिए पेट से भूखे शरीर की थकावट से चूर और नंगे पाँव छालों से भरे हुए होने के कारण चलना बड़ा कठिन था। परन्तु अपने पिता की तरह अकाल पुरुष की रज़ा में रहने वाले सतिगुरु जी ने हिम्मंत नहीं हारी और धीरे-धीरे चल कर गाँव माछीवाड़े के बाहर एक कूएँ के पास वृक्ष की घनी छाया देख कर आ टिके। कूएँ से एक टिंड (लोटा) खोल कर जल पिया और सिरहाने टिंड (लोटा) रख कर ऊनी कमर कस्से वाला कपड़ा ओड़ कर पोष की कड़कड़ाती सर्दी में अपनी मौज में लेट गए।

घर बाहर छोड़ा, चार पुत्र, सखा बंधप और प्यारे सिक्खों को देश तथा कौम पर कुर्बान कर दिया। मखमलों के बिछौने पर लेटने वाले पातिशाह आज इस दशा में नीचे ठण्डी धरती पर टिंड (लोटे) को सरहाने रख कर लेट गए। हे अर्शी प्रियतम ! हे अकाल सुपुत्र ! आप धन्य हैं। धन्य हैं।

तीन सिंघों का मिलाप और गुलाबे के घर

प्रातः काल के समय भाई दया सिंघ, धर्म सिंघ तथा मान सिंघ भी गुरु जी के बताए हुए तारे की दिशा पर चलते हुए यहाँ आ मिले। इन की प्रार्थना को स्वीकार करके आप जी माछीवाड़े नगर से एक मील दूर पूर्व दिशा में गुलाब मसंद के बाग में चले गए। सारा दिन आप जी ने यहाँ काटा और जब गुलाबे को अपने नौकर से पता चला, तो वह रात के समय आप को तथा तीनों सिंघों के साथ अपने घर ले गया और आप की हर प्रकार की बड़े प्रेम से सेवा की।

भाई संगत सिंघ संत सिंघ की शहीदी

सूबा सरहंद ने गुरु जी को ढूँढने के लिए सारे इलाके में फौजी दस्ते भेजने

जब गुरु जी तीन सिंघों के साथ गढ़ी में से रात के समय निकल आए, तो पीछे भाई संगत सिंघ और संत सिंघ कुछ समय गोली सिक्का चलाते रहे। परन्तु अंत में जब शत्रु दल हल्ला करके गढ़ी में दाखिल हो गया, तो दोनों शूरवीर सिंघ वैरियों से लड़ते हुए शहीदी प्राप्त कर गए। शहीदों को देख कर पहले तो तुर्क सूबों ने धोखा खाया कि हमने गुरु जी को शहीद कर दिया है; परन्तु अंत में जब पता चला कि गुरु जी शहीद नहीं हुए, तो सूबा सरहंद ने अपने इलाके के गाँव-गाँव में गुरु जी की भाल के लिए आदमी भेज दिए।

गनी खाँ नबी खाँ का गुरु जी को मिलना

जब रात बीत गई, तो गुलाबे तथा पंजाबे दोनों भाई गनी खां नबी खां को पता चला कि गुरु जी गुलाबे के घर आए हुए हैं और आप जी को शाही सेना गाँव-गाँव और घर-घर ढूँढ रही है, तो उन्होंने गुरु जी के पास हाज़िर होकर प्रार्थना की कि महाराज ! इस गाँव में आपका और ठहरना ठीक नहीं। यहाँ से जल्दी निकल जाना चाहिए। यह दोनों भाई घोड़ों के सौदागर गुरु जी के पास घोड़े बेचने जाया करते थे। इस लिए गुरु जी से इन के अच्छे सम्बन्ध थे, जिस लिए इन्होंने गुरु जी की सेवा के लिए अपने आप को हाज़िर किया।

उच्च के पीर बनना

शाही सेना के घेरे से निकलने के लिए इन्होंने गुरु जी को उच्च के पीर का भेष धारण करने के लिए प्रार्थना की, जिसे स्वीकार करके गुरु जी ने एक नीला लम्बा चोला पहन लिया। केश पीछे खोल दिए व ऊपर नीली चादर ओड़ ली। गले और हाथों में मुसलमानी ढंग से तसबीय (माला) धारण कर ली। तद्उपरान्त यह पलंघ के चारों ओर सोटियाँ बाँध कर ऊपर कपड़ा तान कर एक पर्देदार डोला बना दिया। डोले पर मोर पंखों के मुट्ठे बांध कर उच्च के पीरों की निशानी कर दी। इस डोले में आप जी को बैठा कर पलंघ के अगले दो पाए इन दोनों भाइयों ने उठा लिए और पिछले दो पाए भाई धर्म सिंघ और मान सिंघ को उठवा कर पीछे भाई दया सिंघ को मोरों के पंखों का एक मुट्ठा दे कर चौर करने के लिए लगा दिया। इस तरह का कौतुक रचा कर गुरु जी को लेकर ११ पोष की पिछली रात को गाँव से निकले।

www.9009.co.in

नबी खाँ गनी खाँ को वरदान

माछीवाड़े से चल कर गुरु जी हेहर गाँव महंत कृपाल दास के पास ठहरे। यहाँ रात दिन विश्राम करके नबी खाँ गनी खाँ दोनों भाइयों को गुरु जी ने एक सोने के कड़ों की जोड़ी और एक अपनी सेवा का प्रशंसापत्र हुक्मनामा वरदान में दिया। इस तरह गुरु जी की खुशी प्राप्त करके यह दोनों भाई वापिस आ गए।

गाँव राए कोट, चौधरी कल्ले के पास छोटे साहिबज़ादों की शहीदी की खबर

हेहरां से अपने सिक्खों से पलंघ उठवा कर गुरु जी राए कोट गाँव के बाहर ही पहुँचे थे कि आप जी का आना सुन कर गाँव का चौधरी राए कल्ला आप जी को बड़े आदर से आ कर मिला। कल्ले का प्रेम और श्रद्धा को देख कर गुरु जी ने उसे कहा कि अपना कोई भरोसेमन्द आदमी भेज कर सरहंद से छोटे साहिबज़ादों और वृद्ध माता जी की खबर जल्दी मँगवाओ।

गुरु जी की आज्ञा का पालन करते हुए रात ही कल्ले ने अपने भैंसों के चरवाहे माही को सरहंद भेज दिया। दूसरे दिन शाम को माही ने सरहंद से वापिस आ कर बताया कि साहिबज़ादों को सूबा सरहंद ने नींव में चिनवा कर शहीद कर दिया है और वृद्ध माता जी उनके वियोग में शरीर त्याग गए हैं।

माही ने बताया कि उस अभाग्य दिन बाबा फूले का पुत्र त्रलोक सिंघ सरहंद सरकारी मामला अदा करने आया हुआ था। उसने माता जी और दोनों साहिबज़ादों के शरीर का बड़े आदर से संस्कार कर दिया है। यह शहीदी साका १३ पोष संवत् १७६१ विक्रमी को हुआ।

तत्पश्चात् माही ने यह भी बड़े दुख से बताया कि जब साहिबज़ादों को नीवों में चिन कर कत्ल करने का हुक्म दिया गया था, तो मलेरीए नवाब के बिना कचैहरी में और किसी मुसलमान ने इस आज्ञा के विरुद्ध आवाज़ नहीं उठाई।

माही की जबानी यह सारी वार्ता सुन कर गुरु जी ने अपने तीर की नोक से एक काही के वृक्ष को उखाड़ कर क्रोध से वचन किया कि इस जालिम तुर्क राज्य की जड़ इस तरह उखाड़ी जाएगी, जिस तरह इस पौधे की।

चौधरी कल्ले को कृपाण का वरदान

चौधरी कल्ले की सेवा पर प्रसन्न हो कर गुरु जी ने उसको अपनी एक कृपाण दी और फर्माया कि जब तक तुम इसका सत्यकार करोगे, तब तक तुम्हारा राज्य बना रहेगा। यदि इसका अनादर करोगे अथवा इसे गले में पहनोगे, तो तुम्हारा राज्य जल्दी ही नष्ट हो जाएगा। गुरु जी से कृपाण ले कर कल्ले ने उसे नमस्कार करके सिर पर रख दिया और घर आ कर एक पलंघ पर अच्छा बिस्तर लगवा कर उस की रोज़ाना धूप, पुष्प सुगंधि से पूजा करता रहता।

दीने गाँव निवास करना

राए कल्ले को खुशी बख्श कर गुरु जी उच्च के पीर के वेष में ही अपने पलंघ को उठवा कर जोधराए के पौत्रों चौधरी लखमीर, समीर और तख्तमल के पास दीने गाँव पहुँच गए। इन चौधरी भाइयों ने गुरु जी को अपने चौबारे में निवास करवा कर बड़ी सेवा की। यहाँ गुरु जी ने बहुत दिन ठहर कर आराम किया और सेना इकट्ठी करने के लिए इलाके में बहुत सारे बराड़ भर्ती कर लिए। योद्धाओं के लिए घोड़े और शस्त्रास्त्र खरीदने आरम्भ कर दिए। अपने पास एक अच्छा जत्था तैयार कर लिया।

www.9009.co.in

यहाँ ही आप जी को भाई रूपे की सन्तान भाई परम सिंघ तथा धर्म सिंघ अपने गाँव भाई रूपे से एक सुन्दर घोड़ा, एक सफेद चादर, पौशाक और कुछ धन भेंट ले कर मिले और साहिबज़ादों की शहीदी का अफसोस करके बहुत रोए। गुरु जी ने उनको धैर्य दिया और कहा कि जगत के पदार्थ की यही गति है कि जो उपजता है वह आगे पीछे करके नष्ट हो जाता है। कोई स्थिर नहीं रहता एक आत्मा ही स्थिर है इत्यादि वचन सुन कर दोनों भाइयों ने धैर्य करके प्रार्थना की कि सच्चे पातशाह ! यह नीला वाणा उतार कर सफेद पोशाक पहन लो। गुरु जी ने उनकी श्रद्धापूर्वक प्रार्थना स्वीकार करके नीले वस्त्र उतार कर सफेद वस्त्र पहन लिए।

औरंगज़ेब को चिट्ठी (ज़फ़रनामा) लिखना

यहाँ गाँव दीने कांगड़ से गुरु जी ने औरंगज़ेब को फ़ारसी बैंतों में एक चिट्ठी लिख कर भाई दया सिंघ तथा धर्म सिंघ के हाथ दक्षिण प्रदेश में भेजी। यह चिट्ठी ज़फ़रनामा नाम से प्रसिद्ध है।

इस में गुरु जी ने औरंगज़ेब को लिखा है कि तुम्हारी कस्मों पर मुझे कोई भरोसा नहीं रहा। तुमने झूठी कस्में से आनन्दपुर खाली करवाया। फिर पीछे हम पर हमला करा कर बहुत से सिंघ और हमारे चार साहिबज़ादे शहीद कर दिए। बादशाहों को अपना धर्म कमाना और प्रजा की रक्षा करनी चाहिए, परन्तु तुम इनके उल्ट काम कर रहे हो। आगे जा कर क्या मुँह दोगे? तुम दरगाह में कभी नहीं बख्शे जाओगे । मेरा खालसा तुम्हें कभी क्षमा नहीं करेगा। सारे बदले लेगा। चिट्ठी औरंगज़ेब को भेज कर आप गुरु जी तैयारी करके चल पड़े।

www.9009.co.in

गाँव दीने कोट कपूर चौधरी कपूरे के पास

दीने से गुरु जी कुछ पैदल और कुछ घोड़सवार सिंघों के साथ जा रहे थे। रास्ते में पहला पड़ाव आप जी ने रखाले गाँव किया। लोग रसद पानी, दूध, गुड़ और घास दाना आदि इकट्ठा करके ले आए और सिंघों ने लंगर तैयार करके छका। फिर एक रात जलाल गाँव डेरा करके गुरु जी भाई बहलो के पौत्र भाई भगते के पास उसके गाँव 'भगता' जा कर उपस्थित हुए। भाई भगते के पुत्रों ने गुरु जी की बड़े प्रेम से सेवा की।

तीन दिन भगते गाँव निवास करके गुरु जी एक रात बंदर गाँव ठहरे श्रद्धालुयों को निहाल किया। यहाँ से चल कर आप जी ने गाँव बरगाड़ी तथा बहिबल से हो कर सिऊरामी जा डेरा किया। यहाँ गाँव के लोगों ने गुरु के सिक्खों को दो-दो चार-चार करके अपने-अपने घर ले जाकर भोजन कराया।

चौधरी कपूरे को श्राप

दूसरे दिन सिऊरामा से कूच करके गुरु जी ने कोटकपूरा नगर से बाहर जा डेरा किया। चौधरी कपूरा आप जी को एक घोड़ा भेंट ले कर मिलने आया। आप जी के दीवान में सैंकड़ों लोग दर्शन करने के लिए आए तथा दूध, घी, आटा मिष्ठान्न आदि अनेक प्रकार के पदार्थ आप जी के लंगर के लिए भेंट किए।

दूसरे दिन गुरु जी ने कपूरे को कहा कि चौधरी ! यदि तुम अपना किला हमें दे दो, तो जो तुर्क दल हमारे ऊपर चढ़ाई करेगा, हम मुकाबला करके उसका नाश कर देंगे, तो तेरा राज्य सतलुज नदी तक हो जाएगा। गुरु जी के यह वचन सुन कर कपूरे ने कहा महाराज ! यदि मैं तुम्हें किला दे दूँ, तो तुर्क मुझे दुश्मन समझ कर बरबाद कर देंगे। इस लिए मैं तुम को किला नहीं दे सकता। गुरु जी ने कहा भाई कपूरे ! तेरा यह किला बरबाद हो जाएगा।

सौढी कौल के पास गाँव ढिलवीं

कपूरे के ऊपर क्रोध करके गुरु जी गाँव ढिलवीं चले गए। इस गाँव में सोढी कौल जी रहते थे। जब कौल जी ने गुरु जी का आना सुना, तो वह अपने सारे पुत्र-पौत्रों को साथ ले कर आप जी को मिलने आया। आप जी का डेरा एक सुन्दर स्थान पर लगवा कर बड़े प्रेम से हर प्रकार की उसने सेवा की। कौल जी ने आप जी को एक सुन्दर सफेद पौशाक भेंट करके पहनाया तथा नीले कपड़े उतरवा दिए। यहाँ इस समय गुरु जी ने यह वचन किया—

नील वस्त्र ले कपड़े फाड़े तुर्क पठाणी अमल गया।।

ढिलवां से चल कर गुरु जी ने गाँव मलूका के बीच जा कर डेरा किया तथा एक दीवाने का उद्धार किया। तद्उपरान्त गुरु जी जैतो एक रात विश्राम करके आगे सुनियार गाँव जा बिराजे। यहाँ एक .डोगर समां को दे कर निहाल किया कि तेरे घर दूध बहुत होगा, कभी कमी नही आएगी।

ढिलवां से खिदराणे की ढाब तक

इतने में एक सिक्ख ने आ कर खबर दी कि गुरु जी ! सूबे का लश्कर सरहंद से चल पड़ा है तथा यहाँ पहुँचने ही वाला है। गुरु जी ने चौधरी कपूरे को कहा कि सूबे के लश्कर से मुकाबला करने के लिए हम को कोई ठिकाना बताऊ। कपूरे ने अपने एक नौकर 'खाना' को कहा कि तू गुरु जी को जंगल में खिदराणे की ढाब के पास छोड़ आना। खाना अपने साथ कुछ और घोड़ सवार ले कर गुरु जी को सिंघों सहित ले कर खिदराणे की ढाब की ओर चल पड़ा।

माझे के सिंघों ने बेदावा देना

खिदराणे की ढाब के नज़दीक रास्ते में ही गुरु जी को माझे के कुछ सिंघ मिले। जिन्हें माझे की पंचायत ने भेजा था। उन्होंने

हाथ जोड़ कर प्रार्थना की कि हम बीच पड़ कर हकूमत से तुम्हारा मेल करवा देते हैं। तुम झगड़ा करना छोड़ दो। तब गुरु जी ने कहा तुम मेल करवाने वाले तब कहा गए थे, जब आनंदपुर को तुर्कों ने घेरा डाला हुआ था तथा तुम हम हो त्याग-पत्र दे कर अपनी जान बचा कर भाग आए थे।

सिक्खों ने कहा गुरु जी यदि तुम हमारी प्रार्थना स्वीकार नहीं करोगे, तो हम बेदावा लिख कर दे जाएगे। गुरु जी ने कहा बेदावा बेशक लिख कर दे जाओं, परन्तु तुम्हारी कायरों वाली बात नही मानी जा सकती।

इस के बाद मफ़ैल सिंघों ने बेदावा लिख कर दे दिया और गुरु जी ने ले कर जेब में रख लिया।

तुर्क सेना से युद्ध करके माफ़े के सिंघों ने शहीद होना

जब माफ़े के सिंघ बेदावा लिख कर थोड़ी ही दूर गए, तो उन्होंने देखा कि तुर्क दल उनके सिर पर आ पहुँचा है। वह जल्दी ही खिदराणे की ढाब का मोर्चा बना कर वैरियों का सामना करने के लिए डट गए। गुरु जी इस से आगे कुछ दूरी पर वृक्षों के झुण्ड में ऊँचे टीले पर जा खड़े हुए थे। दोनों ओर से बन्दूकें चलने लगीं। गुरु जी ने टीले पर ही अपने अमोघ बाणों की वर्षा करके असंख्य वैरियों को मौत के घाट उतारा। जब तुर्क दल मारो-मार करता ढाब के किनारे ही पहुँच गया, तो आगे सिंघ भी ढाब से निकल कर तलवारें खींच कर उन पर टूट पड़े। तलवारों और नेज़ों से आमने-सामने लड़ाई करके वैरियों के हज़ारों आदमी मार कर ४० सिंघ आप भी शहीदी प्राप्त कर गए।

www.9009.co.in

वज़ीद खाँ ने पीछे लौट जाना

यह घटना २६ वैसाख संवत् १७६२ की है। गर्मी के दिन होने के कारण लड़ते-मरते तुर्क सेना प्यास से बहुत व्याकुल हो गई। वज़ीद खाँ ने अपने आदमियों को पानी न मिलने के कारण प्यासे मरते और अधमरे देख कर कपूरे को पूछा कि पानी का कोई ठिकाना बताओ। कपूरे ने कहा खाँ जी ! यहाँ से जल्दी पीछे लौट चलो, नही, तो सब यही मर जाएँगे। कपूरे की सलाह मान कर वज़ीद खाँ अपने सब मुर्दे तथा घायलों को मैदान में ही छोड़कर पीछे हट गया।

भाई महां सिंघ ने टूटी गंढणी तथा शहीदों का संस्कार करना

जब वज़ीर खाँ वापिस चला गया, तो गुरु जी टीले से चल कर ढाब के किनारे रण क्षेत्र में आ गए। शहीद सिंघों के पास जा कर हर एक का मुँह अपने जामे के पल्ले से प्यार से साफ करते हुए किसी को दस हज़ारी, किसी को बीस हज़ारी, किसी को तीस हज़ारी तथा किसी को कहा कि इसकी लाखों ऊपर सरदारी होगी। जितने कदम कोई शूरवीर अपने मोर्चों से आगे होकर लड़ कर शहीद हुआ था, उतने हज़ारी ही उसकी गिनती करके दोनों जहानों के सुख बख्शते रहे। तद्उपरान्त जब आप जी ने देखा कि एक सिंघ अभी साँस ले रहा है, तो आप जी ने उसके पास बैठकर बडे प्यार से कहा कि महां सिंघ ! हम तुम पर बहुत प्रसन्न हैं, जो तुम माँगना चाहो माँग लो। गुरु जी के प्रसन्नतापूर्वक वचन सुन कर महां सिंघ ने प्रार्थना की कि महाराज! यदि प्रसन्न हो तो माझे की संगत वाला बेदावा फाड़ दो। जिस के कारण हम तुम्हारे सिक्ख तथा तुम हमारे गुरु बने रहो। इस टूटी सिक्खी को गाँठ लो। मेरी यही अन्तिम इच्छा है तथा आप जी से यही प्रार्थना है।

भाई महां सिंघ की यह प्रार्थना सुन कर गुरु जी ने कहा—महा सिंघ तुम धन्य हो, जिसने परोपकार की बात करके सारे माझे की रख ली है। यह वचन करके गुरु जी ने बेदावा वाला काग़ज़ जेब से निकाल कर टुकड़े-टुकड़े करके फाड़ दिया। महां सिंघ इस तरह गुरु जी की प्रसन्नता ले कर प्राण त्याग कर परलोक को चला गया। फिर गुरु जी ने सारे शहीदों सिंघों की लाशे एकत्र करा कर एक बड़ी चिता में रख कर उन का संस्कार कर दिया।

खिदराणे की ढाब को मुक्तसर का वरदान

तद्उपरान्त गुरु जी ने खिदराणे की ढाब के किनारे पर बैठ कर फर्माया कि यहाँ चालीस शहीद सिंघों का संस्कार किया गया है, यह परम शहीद गंज है तथा इस खिदराणे की ढाब में यहाँ चालीस सिंघ शहीद हो कर मुक्त हुए हैं, इस का नाम आज से मुक्तसर है। जो स्त्री पुरुष ढाब में स्नान करेगा, उसके पापों का नाश हो जाएगा।

भाई भागो की वार्ता

माझे की पंचायत से सुर सिंघ गाँव के रहने वाली एक माई भागो भी गुरु जी से पुत्रों का वरदान लेने के लिए आई थी तथा इन सिंघों के साथ जख्मी हो गई थी। जब गुरु जी ने इस को जख्मी दशा में देखा, तो आप जी ने हँस कर वचन किया—

पुतां कारण आई अहि पीरी।। सुथण लाहि लई फकीरी।।

अर्थात् हमारे पास पुत्र लेने आई थी। तुमने स्त्री वेष सलवार उतार मरदाना शहीदी वेष धारण कर लिया है तथा धर्म की खातिर लड़ कर ज़ख्मी हुई है। जब उसकी मरहम पट्टी करके गुरु जी ने उसे स्वस्थ कर दिया, तो माई शस्त्र धारण करके गुरु जी की सेना में शामिल हो गई। माई भागो का देहांत नदेड़ साहिब गुरु जी के बाद हुआ। यहाँ इसके नाम का बुंगा बना हुआ है।

www.9009.co.in

जैसा देश वैसा भेस

मुक्तसर से चल कर जब गुरु जी जंगलों को पार करके सिंघो से घोड़ स्वार तथा नौथेहे गाँव के पास निवास करने लगे, तो गाँव के निवासियों ने कहा गुरु जी तुम शाही सेना से लड़ाई करके आए हो, यहाँ निवास न करो। तब गुरु जी ने यहाँ से चल कर आगे फतू संमू गाँव जा कर निवास किया। इस गाँव के हरीके बड़े प्रेम से दर्शन करने आए तथा उन्हों ने एक लुंगी व एक खेस आप को भेंट किया। उनकी श्रद्धा देख कर गुरु जी ने लुंगी कमर से बाँधी तथा खेस कंधों पर रख लिया। यह देख कर मान सिंघ ने कहा गुरु जी तुम तनखाहीए हो गए हो, तुमने लुंगी बाँध ली है, गुरु जी ने हँस कर कहा—'जैसा देश वैसा भेस लुंगी तेड़ ते मोडे खेस' इस तरह करके हमने इन प्रेमियों का प्रेम स्वीकार किया है।

गाँव वज़ीदपुर डेरा

हरीके गाँव से चल कर गुरु जी ने गाँव ढाब के किनारे आ निवास किया। यहाँ गुरु जी ने अपने घोड़े बाँधने के लिए जो जण्ड के तीन कीले गाड़े थे, वह तीन जण्ड के वृक्ष खड़े है तथा यहाँ गुरु जी के द्वारा सुशोभित नाम गुरुसर है।

गाँव थेहड़ी एक नाथ का अहंकार दूर किया

वज़ीदपुर से गुरु जी रुपाण गाँव आए तथा दूसरे दिन थेहड़ी गाँव जा निवास किया। गाँव वालों ने बड़े प्रेम से आप की सेवा की। इस गाँव में एक नाथ रहता था, जो करामात के लिए प्रसिद्ध था। उसने आप जी के दर्शन करके कहा कि आप गुरु कहलाते हो इस लिए कोई करामात दिखाओ। आप जी ने अपना एक तीर धरती के ऊपर स्पर्श करा कर नाथ के सिर के ऊपर ला कर कहा

नाथ जी ! अब बताओ आनंद प्रसंन हो ? नाथ ने कहा गुरु जी ! अब मैं आपके अधीन हूँ। मेरी शक्ति तुमने खींच ली है। गुरु जी ने कहा नाथ जी ! जो तुम्हारी इच्छा करामात देखने की थी, वही फलिभूत हुई है और कुछ नहीं। करामात देखने तथा दिखाने से पुरुष का पुरुषत्व नहीं रहता। नाथ ने यह वचन सुन कर अपनी भूल बख्शाई तथा नमस्कार करके अपने स्थान को चला गया।

बैराड़ नौकरों ने तनखाहें माँगनी

थेहड़ी से गुरु जी झिरानी गाँव तथा वहाँ से छत्ते आने गाँव आ ठहरे। दूसरे दिन यहाँ से चलने लगे, तो बैराड़ नौकरों ने आप जी के घोड़े की लगाम पकड़ कर कहा कि हम को हमारी नौकरियों के पैसे दो। हमारे बाल बच्चे हमारी प्रतीक्षा में बैठे पैसे पूछ रहे हैं। हम ने आगे नहीं जाना यहाँ से ही पैसे लेकर अपने घरों को चले जाना है। गुरु जी ने कहा तुम को तुम्हारी तनखाहें मिल जाएँगी जल्दी न करो, परन्तु वे हठ करके अड़े रहे। इतने में पहले बहुत वर्षा तथा फिर ओले पड़े फिर पीछे से सिक्खों की एक वहीर आ गई। उस वहीर में एक सिक्ख गुरु जी के लिए धन की एक खचर लाद कर लाया। उसने सारा धन गुरु जी को भेंट करके कहा कि महाराज ! यह धन कुबेर ने आप जी को भेजा है। गुरु जी ने छट का मुँह खोल कर आठ आने प्रतिदिन सवार को तथा चार आने पैदल को गिन कर सबको पैसे दे दिए। इस समय गुरु जी के पास पाँच सौ घोड़ सवार तथा नौ सौ पैदल थे। दान सिंघ जो इन्हीं का जत्थेदार था उसने हाथ जोड़ कर पैसे लेने से इन्कार कर दी तथा सिक्खी का वरदान माँगा।

दान सिंघ की इस श्रद्धा तथा प्रेम को देख कर गुरु जी ने प्रसन्न हो कर कहा तुमने इस जंगल प्रदेश (मालवे) पर बहुत परोपकार किया है। जिस तरह सारे माझे का बड़पन भाई महाँ

सिंघ ने रख लिया था, इस तरह ही तुमने सारे मालवे की रख ली है। तद्उपरान्त गुरु जी का वचन मान कर दान सिंघ ने सिर पर केश रख लिए तथा अमृत छक कर गुरु जी की खुशी का पात्र बन गया।

गुप्तसर खजाना रखना

बैराड़ों को तनखाहें बाँट कर बाकी जो धन रहा, वह गुरु जी ने धरती में एक गड्ढा खोद कर दबा दिया तथा वचन किया कि यह गुप्त है, जो यहाँ श्रद्धा से आएगा, उसको धन की प्राप्ति होगी।

ब्रह्मी फकीर अमृत छक कर अजमेर सिंघ

इस जगह एक फ़कीर ब्रह्मी शाह रहता था, उसने एक दिन एक मन घी, एक मन आटा तथा एक मन मीठा गुरु जी को भेंट किया तथा माथा टेक कर कहा कि मुझे अपना सिक्ख बना लो। तुम्हारा पंथ बड़ा उज्ज्वल है, जिसका सतिनाम के स्मरण में मन रंगा रहता है। मुझे सिक्ख बना कर मेरी अभिलाषा पूरी करो। गुरु जी ने उसकी श्रद्धा तथा प्रेम को देख कर अमृत तैयार करवा कर उसे छकाया तथा नाम अजमेर सिंघ रखकर सतिनाम का उपदेश देकर उस को प्रसन्न किया।

सुखू तथा घुदू का प्रेम

छते आने गाँव से चल कर गुरु जी कुछ गाँवों में विश्राम करते हुए बाजक गाँव आ ठहरे। यहाँ के लोगों ने सारे सिंघों को दूध छका कर गुरु जी की प्रसन्नता प्राप्त की।

इस गाँव के नज़दीक ही एक गाँव के महंत सुखू तथा घुदू ने जब सुना कि गुरु जी हमारे नज़दीक आए हुए हैं, तो वह भी गुरु जी के दर्शन करने आए तथा हाज़िर हो कर गुरु जी को ढढ सारंगी से एक सद्द बड़े प्रेम से सुनाई—

www.9009.co.in

सद्द- कचा कोठा विचे वसदा जानी।
सदा न मापे नित नहीं जवानी।
चल अगे कियों होवे गमानी।

गुरु जी ने प्रसन्न होकर इस सद्द को तीन बार सुना, दूसरे दिन जब गुरु जी जाने लगे, तो इस महंतों ने कहा गुरु जी ! जिस तरह तुम पलंघ के ऊपर बैठ कर माछीवाड़े से सफर किया था, उसी तरह ही अब हमारे कंधों पर पलंघ उठवा कर चलो। उन का प्रेम देख कर गुरु जी पलंघ के ऊपर बैठ गए। सुखू और घुदू ने पलंघ के अगले पाए उठा लिए और पिछले पाए दो सिक्ख उठा कर पलंघ को ले चले। पलंघ पर बैठे गुरु जी सुखू के सिर पर हाथ से नगारे की तरह हाथ मारते जाते और सुखू अपने मुँह से नगारे की तरह धौं-धौं बोलता जाए। इस तरह एक कोस का सफर पुरा करके सुखू और घुदू की प्रेम भावना पूरी करके गुरु जी ने निवास कर लिया और प्रसन्न होकर इनको एक रुपया दिया और वचन किया कि इसे पूजते रहोगे, तो तुम्हें वैराग्य का रंग चढ़ा रहेगा।

बग्गा सर की महिमा का प्रसंग

सुखू और घुदू (बुधू) को वरदान दे कर गुरु जी जसी गाँव पहुँच गए। इस गाँव में एक बड़ा तालाब था, उस में गुरु जी अपने मुशकी घोड़े पर शस्त्रोंसहित चढ़े चढ़ाए ही एक तरफ घुस कर दूसरी तरफ निकल कर जा खड़े हुए तो आप जी के वस्त्र और घोड़ा सफेद हो गए। लोगों ने यह कौतुक देख कर बडे हैरान होकर आप जी से पूछा कि महाराज ! आप जी ने यह क्या कौतुक किया है? सारे वस्त्र और घोड़े सफेद करके दिखा दिए हैं। गुरु जी ने कहा एक बार श्री राम चंद्र जी इधर शिकार आए थे और

इस तालाब में नहा कर बहुत प्रसन्न हुए थे। उस दिन से यह तालाब तीर्थ करके प्रसिद्ध है और आज यह समय पूर्व का था जिस लिए हम ने इसमें स्नान किया है। स्नान से हमारे वस्त्र और घोड़े सफेद हो गए हैं। इस तालाब का नाम बग्गासर हैं।

जस्सी आए चले, गुड़ खाए चले

तद्उपरान्त गुरु जी एक जगह डेरा करके आ बैठे। आप जी के दर्शन को बहुत लोग आए आप जी ने सब को सुन कर कहा—"जस्सी आए चले।। गुड़ खाए चले।।" यह वचन जब आप जी ने तीन बार कहे तो सारे लोग चुपचाप देखते रहे। इतने में एक लुबाणा गुड़ का व्योपारी गुड़ ले कर आ गया। उसने बड़े प्रेम से तीस मन गुड़ गुरु जी को भेंट करके माथा टेका। उस दिन गुरु जी ने सब संगत को गुड़ पेट भर कर खाने को दिया तथा घोड़ों को निहारी भी गुड़ की ही दी।

तलवंडी चौधरी डल्ले के पास

जस्सी गाँव से चल कर आप जी तलवंडी के बाहर जा उतरे। यहाँ का चौधरी डल्ला अपने साथ चार सौ जवान ले कर गुरु जी के दर्शन करने आया तथा प्रार्थना करके उन्हें अपने गाँव ले गया।

डल्ले का अहंकार दूर करना

डल्ला गुरु जी की हर प्रकार की सेवा बड़े प्रेम से करता था, एक दिन उसने कहा महाराज ! तुम्हारे ऊपर बहुत विपत्ति आई है। जंग के भारी कष्ट आप को पड़े हैं, चारों साहिबज़ादे शहीद हो गए, वैरियों ने आनंदपुर को बरबाद कर दिया। अनेक सिक्ख शहीद हो गए तब आप जी ने मुझे क्यों न याद किया ? मैं अपने योद्धे ले कर आप जी के पास पहुँचता तथा आप जी के ऊपर इतने कष्ट न पड़ने देता।

गुरु जी ने कहा डल्ला चौधरी ! जंग में मरना मारना ही होता है, उसके लिए पश्चाताप नहीं करना चाहिए। भाग्य में लिखा हो कर ही रहता है, परन्तु डल्ला फिर भी अपने शूरवीरों की बहादुरी की बातें करता ही रहा। इतने में एक सिक्ख लाहौर से एक बंदूक ले कर आ गया। गुरु जी ने कहा चौधरी डल्ला ! तू अपना एक आदमी दे हम ने इस बंदूक का उस के ऊपर निशाना करके बंदूक की परख करनी है। गुरु जी का यह वचन सुन कर डल्ला चुप करके बैठा रहा तथा उसके सारे आदमी आँख बचा कर धीरे-धीरे खिसक गए। जब दो-तीन बार कहने से भी डल्ला चुप का चुप ही रहा, तो गुरु जी ने एक सिक्ख को कहा वह जो आदमी बाप-बेटा रंघरेटे बैठे हैं उन को जा कर कहो, कि गुरु जी तुम में से एक को बुलाते हैं, उन्होंने अपनी बंदूक का निशाना परखना है, शीघ्र चलो।

गुरु जी की आज्ञा को सुन कर वह दोनों बाप-बेटा दौड़ कर गुरु जी के पास आ गए। गुरु जी ने कहा हमने तो तुम दोनों में से एक को बुलाया था, तुम दोनों क्यों झगड़ा कर रहे हो? पिता ने कहा गुरु जी तुम्हारे सिक्ख ने हमारा किसी एक का नाम नहीं लिया, इसलिए मैं तुम्हारे निशाने आगे खड़ा होना चाहता हूँ, परन्तु मेरा पुत्र झगड़ा करता है कि मैं गुरु जी के निशाने के आगे खड़ा हूँगा। पुत्र ने कहा गुरु जी मैं दौड़ कर तुम्हारे पास पहले पहुँच गया था, मेरा पिता बाद में पहुँचा है। निशाना मेरे ऊपर ही करो इस तरह दोनों बाप बेटा का निशाने के आगे खड़ा होने का एक दूसरे से बढ़ कर उत्साह को देख कर गुरु जी ने डल्ले को कहा—देख डल्ला! इन बहादुरों को। मौत से न डरने वाले योद्धे हमारे पास हैं, जो मौत से डरते कायर दौड़ गए है। ऐसे डरपोक तेरे योद्धे रण में बंदूकों तथा तीरों के वारों के आगे किस तरह ठहर सकेंगे।

यह सब कुछ देख सुन कर डल्ले का अहंकार दूर हो गया तथा उसने हाथ जोड़ कर कहा गुरु जी ! तुम्हारे वचन सत्य है तथा तुम्हारे सिक्ख धन्य हैं।

माता सुन्दरी जी तथा साहिब देवां जी ने दिल्ली से आना

गुरु जी के यहाँ तलवंडी ठहरने की जब माता जी को दिल्ली खबर की गई, तो माता जी अपने सिक्ख सेवकों को साथ ले कर तलवंडी आ गई। उस समय गुरु जी का दीवान लगा हुआ था। माता जी ने गुरु जी के चरणों पर माथा टेका तथा साहिबज़ादों से बड़ी माता जी की शहीदी तथा घर बाहर की बरबादी को याद करके उनकी आँखों में पानी बह निकला। गुरु जी ने धैर्य दे कर कहा कि योद्धाओं की माताओं को शोक नहीं करना चाहिए। तुम्हारे पुत्र वीरगति को प्राप्त हुए हैं। फिर आप जी ने दीवान में बैठे सिक्खों की ओर अंगुली करके वचन किया—

"इन पुत्रन के सीस पै वार दीए सुत चार।।
चार मुए तो किआ भया जीवत कई हजार।।"

डल्ले की श्रद्धा

चौधरी डल्ला एक दिन गुरु जी तथा माता जी को सारे सिंघों सहित बड़े प्रेम से अपने घर भोजन कराने के लिए ले गया। गुरु जी को उस ने एक सुन्दर चौंकी के ऊपर तथा माता जी को अपनी बहु-बेटियाँ में बैठा कर तथा सिंघों को पंगत में बैठा कर बड़े प्रेम से अनेक प्रकार के भोजन छकाए। तद्उपरान्त गुरु जी को एक सुन्दर घोड़ा, एक दुशाला तथा एक सौ रुपया माथा टेका। उस ने दोनों माताओं को बड़े कीमती ज़ेवर (तीन-तीन कपड़े) तथा इकावन-इकावन रुपए माथा टेका।

युद्ध का कमरकस्सा (कमरबँध) खोलना तथा तलवंडी का नाम दमदमा रखना

गुरु साहिब जी ने जो युद्ध का कमरकस्सा आनंदपुर साहिब किया था, वह आप जी ने यहाँ आ कर खोल दिया तथा कुछ महीने यहाँ ठहर कर दम लेने के कारण इस स्थान का नाम दमदमा प्रसिद्ध किया। यहाँ भी जब आप जी के ठहरने की संगत को खबर हुई, तो दूर-दूर से दर्शन करने के लिए सिक्ख सेवक आने लगे। पहले पहर गुरु जी दीवान लगाकर संगत को अपने दर्शन उपदेश के द्वारा निहाल करते तथा तीसरे पहर सिंघों को साथ ले कर जंगल में शिकार खेलने जाते तथा जंगली जानवरों का शिकार करके उनकी मुक्ति करते।

शारीरिक तैयारी तथा अरदास करके किसी काम पर जाने की आज्ञा

एक दिन जब गुरु जी शिकार पर गए, तो आप जी को कोई शिकार न मिला। आप जी ने सिंघों को कहा कि आज किसी सिंघ ने शिकार चढ़ने लगे सुचेत हो कर अरदास नहीं की, जिस लिए कोई शिकार हाथ नहीं आया। गुरु जी के वचन सुन कर एक सिक्ख ने कहा महाराज ! शिकार चढ़ते समय मैं जल्दी के कारण केसों को कंघा तथा अरदास नहीं कर सका। मेरे से यह भूल हो गई है, गुरु जी ने उसको कहा अब ही जल्दी कंघा तथा दस्तार सजा कर अरदास करो। तब सिक्ख ने गुरु जी का वचन मान कर उसी तरह ही किया तो थोड़े ही समय में जंगल में बहुत शिकार मिल गये। तद्उपरान्त गुरु जी ने सारे सिंघों को समझाया कि सिंघों को शारीरिक तैयारी तथा अरदास सोध कर ही अपने किसी काम पर जाना चाहिए। इस से सारे काम पूरे हो जाते है।

इस तरह गुरु जी सिक्खों के प्रति नित्य ही उपदेश तथा शिक्षा के द्वारा उन का जीवन सुधारते रहते।

डल्ले को सूबा सरहिंद की चिट्ठी

जब सूबा सरहिंद वज़ीर खाँ को पता लगा कि गुरु जी तलवंडी डल्ले चौधरी के पास उतरे हुए हैं, तो उसने डल्ले चौधरी को लिखा कि गुरु गोबिंद सिंघ ने हमारे लाखों आदमी युद्ध करके मार दिए हैं। यह शाही भगौड़ा है, इसको पकड़ कर मेरे पास जल्दी भेज दो। इस के बदले बादशाह से तुम्हें बहुत इनाम तथा सम्मान दिया जाएगा। परन्तु यदि गुरु को मेरे पास पकड़ कर नहीं भेजोगे, तो मैं सेना ले कर तुम्हें तथा गुरु दोनों को पकड़ कर सख्त सजा दूँगा।

सूबे की यह चिट्ठी पढ़ कर डल्ले ने उसको उत्तर दिया कि गुरु जी हमारे प्राण है, इन को पकड़ कर मैं तेरे पास कभी भी नहीं भेज सकता। यदि तुम सेना ले कर आओगे, तो तुम्हारी सेना को मार कर हम जंगलों में चले जाएँगे। तथा गुरु का साथ कभी नहीं छोड़ेंगे। डल्ले का यह उत्तर पढ़ कर वज़ीर खाँ गुस्से से लाल पीला हो कर बड़ा दुखी हुआ। जब डल्ले के इस उत्तर का गुरु जी को पता लगा, तो आप जी ने कहा डल्ला चौधरी हम तेरे ऊपर बहुत प्रसन्न है। तुमने सूबे से डर कर शूरवीरता दिखाई है।

गुरु जी ने बठिंडे का किला देखना

एक दिन गुरु जी ने डल्ले को कहा, चौधरी हमने सुना है कि बठिंडे का किला लड़ाई करने के लिए बहुत अच्छा स्थान है, हम उसको देखना चाहते हैं। डल्ले ने कहा महाराज ! यह किला बहुत समय से उजड़ा पड़ा है, तुम जिधर इच्छा है विचरो, इधर तुर्क लड़ाई करने नहीं आ सकते। तुम किला देख कर फिर मेरे पास ही

आ जाना और किसी जगह चित्त न लगा लेना। गुरु जी ने कहा हम किला देख कर जल्दी ही तुम्हारे पास आ जाएँगे।

दमदमे वापिस

बठिंडे का किला देख कर तथा अपने और सिक्खों को निहाल करके गुरु जी वापिस तलवंडी (दमदमे) डल्ले के पास आ गए। तलवंडी ठहर कर गुरु जी ने शिकार खेलने के बहाने सारा मालवा प्रदेश घूम कर तथा एक दिन दीवान में वचन किया कि यह प्रदेश बहुत दयावान है। इन लोगों में सिक्खी भाव बहुत है।

सूबा सरहिंद की डल्ले को दूसरी चिट्ठी

जब दूर-दूर तक घूम कर गुरु जी ने चक्कर लगाया, तो सूबा सरहिंद ने फिर गुस्से से डल्ले चौधरी को चिट्ठी लिखी कि बादशाह के दुश्मन को तुम अपने पास रख कर अपना बुरा कर रहे हो यदि तुम गुरु को पकड़ कर मेरे पास नहीं भेजोगे, तो मैं तुझे पकड़ कर तेरा घर बाहर बरबाद कर दूँगा। इस चिट्ठी का उत्तर भी डल्ले ने यही दिया कि गुरु जी को मैं किसी हालत में भी पकड़वा नहीं सकता तुम अपना ज़ोर जैसे इच्छा हो लगा लो।

डल्ले के ऊपर प्रसन्नता, गुरु जी ने वर्षा करानी

डल्ले से यह उत्तर सुन कर गुरु जी बहुत प्रसन्न हुए तथा बचन किया कि चौधरी डल्ला ! हम तुम पर बहुत प्रसन्न है, तेरी जो इच्छा है, मुझे बताओ। डल्ले ने कहा गुरु जी पानी की बड़ी कमी लगी हुई है वर्षा कराओ। गुरु जी ने कहा जाओ जोहड़ आदि साफ करो वर्षा आ रही है। गुरु जी का हुक्म मान कर जब उन्होनें जौहड़ आदि साफ कर दिए, तो बड़े ज़ोर से दो दिन वर्षा होती रही। फिर जब डल्ले ने कहा महाराज ! अब पानी की कोई कमी

नहीं रही। वर्षा बंद कर दो। गुरु जी ने कहा, जाओ खेतों में जा कर ऊपर को मुँह करके कहो हे इन्द्र देवता ! अब वर्षा बंद कर दो। जब डल्ले ने बाहर जा कर ऊपर मुँह करके इन्द्र देवता को इस तरह ही कहा, तो वर्षा बंद हो गई।

डल्ले को अमृत छकाना

एक दिन गुरु जी ने कहा चौधरी डल्ला हम तुम्हारे ऊपर बडे प्रसन्न है, जो तेरे मन की कामना है, माँग ले। डल्ले ने कहा, गुरु जी ! मेरी यही माँग है कि यहाँ तुम्हारा आवास हो वहाँ मुझे भी अपने साथ ही रखना। गुरु जी ने कहा, यदि तेरी यही इच्छा है, तो अमृत छक कर सिंघ सज। डल्ले ने कहा सति बचन गुरु जी! तद्उपरान्त दूसरे दिन गुरु जी ने खंडे का अमृत तैयार करके छका कर उस का नाम डला सिंघ रख दिया। गुरु जी ने उसके प्रेम तथा श्रद्धा के ऊपर प्रसन्न होकर उसको एक जड़ाऊ कडों की जोड़ी, एक ढाल, तलवार, दो अपनी दस्तारें, दो चोले तथा दो पाजामे दिए। यह वरदान डल्ला सिंघ की संतान के पास दमदमे साहिब रखी हुई हैं और वैसाखी के दिन संगत को इन के दर्शन करवाए जाते हैं।

भाई मनी सिंघ से गुरू ग्रंथ साहिब लिखाना

एक दिन सिंघों ने प्रार्थना की किमहाराज ! हमें सिरी गुरू ग्रंथ साहिब की वाणी के अर्थ करके सुनाओ, गुरु जी ने बचन किया कि पाँच सिंघ करतारपुर जाओ, बाबा धीरमल जी से गुरू ग्रंथ साहिब जी की बीड़ ले आओ, उस से अर्थ करके आपको सुनाएँगे परन्तु जब पाँच सिंघों ने करतारपुर पहुँच कर बाबा धीरमल जी को कहा तो उन्हों ने कहा कि यह गुरू ग्रंथ साहिब हम नहीं देंगे। यदि वह गुरु नानक की गद्दी के मालिक गुरु हैं, तो आप उच्चारण कर लें।

यह उत्तर सुन कर जब सिंघों ने वापिस गुरु जी के पास आ कर बताया, तो गुरु जी ने कहा, अच्छा हम बाबा जी का बचन मान लेते हैं। इस के बाद गुरु जी ने अरदास करके भाई मनी सिंघ को लिपिक बना कर अपने अनुभव से लिखाना शुरु कर दिया तथा पाँच महीनों में सारी वाणी लिखवा ली। इसके साथ ही गुरु जी ने प्रथास्थान श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी भी लिखवा दी। रोज़ की लिखाई के बाद आप जी संगत को साथ-साथ ही अर्थ करके सुनाते रहे।

गुरु जी का दक्षिण दिशा को जाना

लगभग एक साल तलवंडी डेरा करके गुरु जी ने कई ज़रूरी काम किए। अपनी सैनिक शक्ति को नए सिरे से संगठित करके आप जी कार्तिक संवत् १७६३ को तैयार हो कर दक्षिण की ओर चल पड़े। अपने साथ गुरु जी ने कुछ पैदल तथा कुछ घोड़सवार सिंघों का एक जत्था भी ले लिया। डल्ला सिंघ तथा राम सिंघ भी घोड़सवार हो कर गुरु जी के साथ चल पड़े। रास्ते में आप जी एक-एक दो-दो गाँवों में डेरा करते हुए सरसे नगर पहुँच गए। इस नगर में आप जी ने कुछ दिन विश्राम किया। यहाँ ही डल्ला सिंघ उसका भाई तथा बैराड़ रात को चोरी गुरु जी से वापिस घरों को भाग गए। यहाँ से चल कर गुरु जी नौहर नगर जा ठहरे। नौहर का ज्योतषि आप जी के दर्शन करने आया तथा उसने बताया कि तुम्हारे दक्षिण पहुँचने से पहले ही औरंगज़ेब मर जाएगा। उस से तुम्हारा मेल नहीं हो सकेगा। गुरु जी ने उस के ऊपर प्रसन्न हो कर धन, वस्त्र तथा सतिनाम का उपदेश देकर उसे खुशी बख्शी। यहाँ जिस स्थान पर गुरु जी ने निवास किया था, उस निवास का नाम 'छीन तलाई' प्रसिद्ध है।

www.9009.co.in

यहाँ से चल कर गुरु जी भाद्र गाँव जा ठहरे, यहाँ के लोगों ने आप जी की हर प्रकार बड़े प्रेम से सेवा की।

भाई धर्म सिंघ, पर्म सिंघ को वरदान

भाई रूपेके धर्म सिंघ पर्म सिंघ दोनों भाई गुरु जी को प्रत्येक पड़ाव पर उन के शयन के लिए नया पलंघ तैयार करके देते थे। उन की इस सेवा के ऊपर गुरु जी ने प्रसन्न हो कर इन को यहाँ भाद्र नगर ठहरते समय घोड़े तथा शस्त्र वरदान में दिये। जब गुरु जी यहाँ से चले, तो रास्ते में सिंघों ने देखा कि भाई पर्म सिंघ, धर्म सिंघ गुरु जी के वरदान में दिये हुए शस्त्रों को सिर पर रख कर घोड़ों की लगामें पकड़ कर आप पैदल जा रहे हैं, जब गुरु जी ने दोनों भाइयों को बुला कर कहा कि हमने घोड़े तुम को चढ़ने के लिए तथा शस्त्र पहनने के लिए दिए थे, परन्तु न तो घोड़ों के ऊपर ही चढ़े हो तथा न शस्त्र पहने हैं, इसका क्या कारण है ? दोनों भाइयों ने हाथ जोड़कर कहा महाराज ! आप जी की बखशिश को हम पूजने योग्य समझते हैं, इस लिए हम इन की पूजा करेंगे, इन्हें प्रयोग नहीं करते। उन की यह भावना को देख कर गुरु जी ने वचन किया कि तुम्हारी जबान से जो वचन निकलेगा वह पूरा होगा। तुम्हारी जबान ही तेज़ तलवार की तरह होगी। इस तरह बखशिश तथा ख़ुशिया बख्श कर आप जी ने श्रद्धालु सेवकों को निहाल कर दिया।

दादू द्वारे चर्चा

भाद्रा से चल कर गुरु जी गाँव सिहाने जा उतरे। यहाँ से गुरु जी ने प्रम सिंघ, धर्म सिंघ को सिरोपा दे कर ख़ुशियाँ बख्श कर घरों को भेज दिया कि अपना व्यवसाय करके परिवार में आनंद

लो। उसके बाद मधू सिंघाने से चल कर गुरु जी अजमेर पुशकर राज तीर्थ पर आए। यहाँ आप जी को पंडित चेतनदास ने मन्दिर के सारे हालात बताए। सभी स्थान दिखाए तथा बताया कि यहाँ ब्रह्मा ने यज्ञ करके महा शिव को प्रसंन किया था।

पुशकर से चल कर गुरु जी नारायण गाँव आ गए। यहाँ दादू भक्त का प्रसिद्ध स्थान है। गुरु जी ने एक सुंदर स्थान देख कर निवास कर लिया। आप जी की महिमा को सुन कर महंत जैतराम जो इस समय दादू जी की गद्दी पर थे, अपने शिष्यों सहित गुरु जी के दर्शन करने आया। चर्चा करते हुए महंत ने कहा हमारे बड़े महंत दादू जी ने कहा है कि संसार में किसी चीज़ का दावा नहीं करना चाहिए, इस से बहुत दुख होता है अनाधिकृत होने में ही सारे सुख हैं। उस ने दादू जी का यह दोहरा बोला —

दोहरा—दादू दावा दूर कर, बिन दावे दिन काट।।
केती सौदा कर गई, ऐत पसारी हाट।।

गुरु जी ने यह दोहा सुन कर कहा कि जिन्होंने धर्म की रक्षा करनी हो, उनके लिए इस तरह करना उचित है कि—

दोहरा—दादू दावा बन के सब को लइए लूट।।
एक रहिसी खालसा, होर सब मरसी हूट।।

महंत जी ! दुष्टों को दंड दिए बिना तो धर्म नहीं रहता। इस लिए शस्त्र धारण करके धर्म के शत्रुओं तथा दुष्टों को मारना चाहिए।

फिर महंत जैतराम ने कहा महाराज ! हमारे गुरु ने कहा है कि क्षमा में ही सारे गुण हैं। जैसा कि—

दोहरा—दादू क्षमा विचार के कलि का लीजै भाए।।
जे को मारे ढेम ईंट लीजे सीस चढ़ाए।।

www.9009.co.in

गुरु जी ने कहा महंत जी यह बातें त्यागियों के लिए हैं, परन्तु जिन्हें कुकर्म करने से रोकना हो तथा धर्म की आन रखनी हो, उन के लिए यही उपयुक्त है।

दोहरा—दादू क्षमा विचार के कलि का लीजै भाए।।
जे को मारे ईंट ढेम पाथर हनै रिसाए।।

महंत जी ! दुष्ट पुरुष का अपराध नहीं सहना चाहिए। प्रबल होकर उस से टकराना चाहिए। फिर आप जी ने कहा महंत जी ! कलियुग का समय है, दुष्टों का तेज़ बहुत बढ़ गया है। जो लोग संत, गरीब तथा गाए- ब्राह्मण के वैरी हैं उनको दण्ड देना ही उचित है। हमारे पंथ में दोनों बातें हैं। शस्त्र धारण करके धर्म की रक्षा करनी तथा सतिनाम का स्मरण करके देव लोक प्राप्त करना।

बाजों ने मोठ बाजरी खानी

गुरु जी के वचन सुन कर महंत जैतराम ने आप जी को नमस्कार किया तथा एक दिन भंडारा करके सारे जत्थे सहित उन्हें भोजन कराया। गुरु जी के बाजों को महंत ने सम्बोधित करके कहा—तुम सतिगुरु जी के सुन्दर बाज धन्य हो। हमारा निवास संतो-महंतों का वैष्णव भोजन खाने वाला है, तुम माँसाहारी हो। यदि तुम कृपा करो, तो आज तुम हमारे निवास से अन्न का दाना ही स्वीकार कर लो। यह प्रार्थना करके महंत ने बाजों के आगे मोठ बाजरी रख दी। जिसको बाज तत्काल ही चिड़ियों कौओं की तरह चुग कर खा गए। यहाँ गुरु जी ने महीना चेत्र संवत् १७०६ में चरण डाले थे।

www.9009.co.in

भाई दया सिंघ का औरंगज़ेब से वापिस आना

दादू द्वारे से चल कर गुरु जी ने कुलाइत नगर जा कर निवास किया, यहाँ गुरु जी बारह दिन विश्राम करके बघौर जा उतरे। गुरु जी यहाँ ही ठहरे हुए थे कि भाई दया सिंघ तथा धर्म सिंघ औरंगज़ेब को ज़फ़रनामा दे कर आ मिले। तद्उपरान्त यहाँ ही गुरु जी ने यह खबर भी सुन ली कि औरंगज़ेब मर गया है तथा उसके छोटे पुत्र ताराजम ने दिल्ली के तख्त पर बैठने की घोषना कर दी है।

बहादुर शाह ने गुरु जी से सहायता माँगनी

२ मार्च सन् १७०७ ई० को जब औरंगज़ेब दक्षिण प्रदेश में मर गया, तो उसके छोटे पुत्र ताराजम (आजमशाह) ने दिल्ली के तख्त पर बैठने की घोषना कर दी, क्योंकि औरंगज़ेब की गैर अनुपस्थिति में पीछे वही कामकाज चलाता था। इसका बड़ा भाई बहादुर शाह उस समय बलख बुखारे गया हुआ था। औरंगज़ेब की मृत्यु का समाचार सुन कर वह दिल्ली आ गया। परन्तु रास्ते मे ही उसको पता लग गया कि ताराजम ने तख्त पर बैठने की घोषना कर दी है। इस समय शाही फौज तथा खजाना ताराजम के हाथ में था। इस लिए बहादुर घबरा कर सोच में पड़ गया कि इस समय किस की सहायता लूँ।

इस सोच तथा चिंता में बहादुर शाह ने भाई नंद लाल को कहा कि तुम गुरु जी के पास जाओ और मेरी तरफ से प्रार्थना करो कि इस समय आप जी मेरी सहायता करके दिल्ली के तख्त पर मुझे बैठाओ। आप की सहायता के बिना मैं ताराजम का मुकाबला करके तख्त प्राप्त नहीं कर सकता।

www.9009.co.in

भाई नंद लाल जी बहादुर शाह की ओर से गुरु जी को प्रार्थना करने के लिए बघौर आ मिले। बहादुर शाह की प्रार्थना को सुन कर गुरु जी ने कहा कि यदि बहादुर शाह यह बात लिख कर मुझे दे कि यदि उसको दिल्ली का तख्त मिल जाए, तो वह हमारा एक सवाल मान लेगा। जब गुरु जी की यह बात बहादुर शाह को आगरे जा कर बताई गई, तो उसने वचन दिया कि यदि गुरु जी की सहायता से मुझे दिल्ली का तख्त मिल गया, तो मैं गुरु जी की बात जो वह कहेंगे मान लूँगा।

जब बहादुर शाह ने गुरु जी की यह शर्त मान ली, तो आप जी ने उसको कहा कि जितनी भी हो सके सेना इक्ट्ठी करके ताराजम से मुकाबला करने के लिए तैयार हो जाओ, हम समय पर आ कर उसकी पूरी सहायता करेंगे। बहादुर शाह ने गुरु जी का हुक्म मान कर यहां वहाँ से फौज इक्ट्ठी करके ताराजम से युद्ध करने की तैयारी कर ली। ताराजम को जब इस तैयारी का पता लगा, तो वह भी अपनी सेना ले कर दक्षिण से आगरे को चल पड़ा।

उसके आगे से रोकने के लिए बहादुर शाह ने अपनी सेना ले कर आगरे से चल कर चंबल नदी से पार हो कर जाजू के स्थान पर मोरचे बना लिए तथा गुरु जी को संदेश भेज दिया कि अब शीघ्र ही अपने सिंघ शूरवीरों को ले कर मेरे पास जाजू पहुँच जाओ। गुरु जी ने उस समय ही भाई धर्म सिंघ को सिंघों का एक शक्तिशाली जत्था दे कर भेज दिया तथा कहा कि हम भी जल्दी ही पहुँच रहे हैं।

ताराजम की मौत और बहादुरशाह की जीत

जब दक्षिण से फौज ले कर ताराजम भी जाजु के पास पहुँच गया, तो दोनों भाइयों की फौजों में आमने-सामने हो कर घोर युद्ध

होने लगा। बहादुरशाह ने भाई धर्म सिंघ को कहा गुरु जी को जल्दी बुलाओ, नहीं तो मेरी हार हो जाएगी। तब भाई धर्म सिंघ ने अरदास की कि गुरु जी आप जल्दी पहुँचें। अरदास से जल्दी ही पीछे भाई धर्म सिंघ ने देखा कि गुरु जी शहीद सिंघों के एक बड़े दल के साथ प्रकट हो गए। शहीदों के हाथों में निशान झूल रहे थे तथा तलवारें चमक रही थीं। गुरु साहिब जी ने हाथ में धनुष बाण पकड़ा हुआ था तथा आप जी एक चंचल घोड़े के ऊपर सवार थे।

ताराजम हाथी पर सवार हो कर अपने योद्धे को ललकार रहा था। गुरु जी ने अपने दो तेज बाण ताराजम को निशाना करके माथे में मारे, जिससे ताराजम हाथी से नीचे गिर कर मर गया तथा इस के साथ ही उसके मददगार जो हाथी के ऊपर बैठे हुए थे वे भी मारे गए। ताराजम की मृत्यु के साथ ही उसके उमरावों ने लड़ाई बंद करके बहादुरशाह की शरण स्वीकार कर ली। तद्उपरान्त बहादुरशाह ने जब ताराजम के माथे में लगा हुआ तीर मँगवा कर देखा, तो उस पर गुरु जी की मोहर निशानी लगी हुई देख कर मान गया कि इसको गुरु साहिब ने ही मारा है, बहादुरशाह ने गुरु जी का धन्यवाद किया तथा इस जीत की खुशी में अपने निवास में उसने बहुत इनाम बाँटे तथा खुशी मनाई।

नवम् गुरु जी की दिल्ली में यादगार स्थापित करनी

१० जून १७०७ ई० को ताराजम को मार कर गुरु जी कुछ सिंघों के साथ चुप-चाप ही दिल्ली चले गए। दिल्ली पहुँच कर आप जी ने यमुना नदी से पार ही अपना निवास रखा। यहाँ आप जी का आना सुन कर दिल्ली की संगत आप जी के दर्शन करने आई तथा आप जी को बेड़ी में बैठा कर यमुना नदी के बीचों-बीच मोती बाग ले गई। माता साहिब देवां जी तथा सुन्दरी जी भी आप जी को

यहाँ आ कर मिलीं। दूसरे दिन जब बहुत संगत आप जी के दर्शन भेंट ले कर आई, तो आप जी ने उन को वचन दिया कि श्री गुरु तेग बहादुर जी के पवित्र शरीर के संस्कार वाले स्थान पर सुन्दर मन्दिर बनवा कर उन की यादगार स्थापित करो। संगत ने आप जी के कहे अनुसार वहाँ एक छोटी सी समाधि तैयार करा दी। यह स्थान 'गुरुद्वारा रकाब गंज' के नाम से प्रसिद्ध है। आज कल यहाँ बड़ा सुन्दर तथा भव्य संगमरमर का गुरुद्वारा बन गया है।

गुरु जी ने आगरे जाना

कुछ दिनों के बाद भाई धर्म सिंघ भी अपने जत्थे के साथ आगरे से बहादुरशाह का संदेश ले कर गुरु जी के पास आ गया कि बहादुरशाह ने आप जी को अपनी जीत की खुशी में शामिल होने के लिए बुलाया है।

बहादुरशाह की प्रार्थना को स्वीकार करके गुरु जी आगरे को चल पड़े। आगरे जाते समय आप जी माता साहिब देवां जी को अपने साथ ले गए तथा माता सुन्दरी जी को उन के सौतेले पुत्र अजीत सिंघ के साथ दिल्ली में ही रहने का प्रबंध करके छोड़ गए।

आगरे पहुँच कर निवास करना

दिल्ली से गुरु जी अपने सिंघों के जत्थे के साथ तीसरे दिन मथुरा पहुँच गए। मथुरा के मन्दिरों के दर्शन करके गोकल, वृंदाबन आदि देखे तथा फिर वहाँ से चल कर आगरे के पास एक बाग में जा कर निवास किया। इस बाग के मालिक खानखाना ने गुरु जी का बड़ा सतिकार किया। गुरु जी ने प्रसन्नता के साथ शाबाश दे कर उसकी पुरानी रींह की दर्द हटा दी।

बहादुरशाह को मिलना

खानखाना से विदा हो कर गुरु जी ने यमुना नदी के किनारे जा निवास किया। यहाँ आगरे के सिंघ सब रसद पानी ले कर उपस्थित हो गए। दो तीन दिन के बाद बहादुरशाह ने अपने उमरावों को भेंट देकर गुरु जी के पास भेजा तथा प्रार्थना की कि आ कर दर्शन दो। बादशाह के बुलावे पर गुरु जी तैयार हो कर एक सिंघों के जत्थे के साथ बहादुरशाह के पास गए। बहादुरशाह ने आप जी को अपने दरबार में एक चंदन की चौंकी पर बड़े आदर के साथ बैठाया तथा आप जी का धन्यवाद किया।

सारी बातचीत के बाद बादशाह ने आप जी को एक कीमती कलगी, एक दोशाला तथा कई कीमती चीजें भेंट करके विदा किया तथा प्रार्थना की कि गर्मी के चौमासे की ऋतु काट कर फिर आगे यहाँ इच्छा हो प्रस्थान करना।

आगरे से दक्षिण को जाना

जब बरसात का चौमासा निकल गया तथा मौसम साफ हो गया, तो बहादुरशाह ने गुरु जी को कहा कि मैं राजपुताने से होता हुआ दक्षिण को जा रहा हूँ। आप भी कृपा करके मेरे साथ चल कर देश-प्रदेश की सैर करो। गुरु जी ने कहा आप आगे चलो। हम भी तुम को आ मिलेंगे।

तद्उपरान्त बहादुरशाह तैयारी करके उदयपुर की ओर चल पड़ा। दशहरे के बाद तिरोदशी वाले दिन गुरु जी भी तैयारी करके चल पड़े तथा चौथे पाँचवें दिन बादशाह के डेरे में जा मिले।

बहादुरशासह उदयपुर, जैपुर तथा जोधपुर के राजाओं से अपनी अधीनता मना कर सब राजाओं राणों रजवाड़ो से नज़राने लेता हुआ चितौढ़गढ़ पहुँच गया। शहर से बाहर बहादुरशाह से दूर गुरु जी ने भी निवास कर लिया।

www.9009.co.in

बुरहानपुर निवास करना

जब बहादुरशाह नीचे दक्षिण को चल पड़े, तो गुरु जी चितौड से चल कर उदयपुर, उजैन और इन्दौर के रास्ते नरबदा नदी के किनारे विश्राम करके ताप्ती नदी के किनारे बुरहानपुर आ गए। अपनी दक्षिण की उदासी के समय श्री गुरु नानक देव जी ने यहाँ चरण डाले थे। इस स्थान पर एकधर्मशाला स्थापित है।

गुरु जी के दर्शन करने के लिए आप जी के डेरे ताप्ती नदी के किनारे बहुत संगत अनेक प्रकार की भेंट तथा पकवान लेकर आई। यहाँ संगत ने आप जी के दर्शन किए तथा उपदेश सुन कर अपना जन्म सफल किए।

नादेड़ पहुँचना

यहाँ कुछ दिन संगत को दर्शन देकर गुरु जी दक्षिण को चल पड़े। नागपुर तथा पूना आदि शहरों की संगत को नामदान के उपदेश के साथ कृतार्थ किया नादेड़ नगर में गोदावरी नदी के किनारे आप जी ने डेरा कर लिया। गुरु जी से कुछ दूर यहाँ गोदावरी नदी के किनारे ही बहादुरशाह ने डेरा किया हुआ था। दक्षिण के राजाओं तथा हुकमरानों से नज़राने लेकर बहादुरशाह तो वहाँ से आगे को चला गया, परन्तु गुरु जी वहाँ ही ठहर गए।

माधोदास बैरागी के साथ मेल-मिलाप

वहाँ नादेड़ गोदावरी के किनारे एक बैरागी साधु माधोदास रहता था, जब गुरु जी ने उसकी बाबत सुना कि वह बड़ा करामती है तथा उसने बवंजा वीर सिद्ध किए हुए है, तो आप जी शिकार खेलते हुए उसके डेरे पर जा कर उसके पलंघ पर बैठ गए। जिस समय माधोदास अपने आश्रम में आया, तो उसने अपने पलंघ पर गुरु जी को बैठे हुए देख कर बड़े क्रोध से अपने वीरों को कहा कि

पलंघ को उलटा कर इस पुरुष को नीचे गिरा दो, परन्तु जब सारा बल लगा कर वीर थक गए तथा गुरु जी का पलंघ उलटा न सके, तो माधोदास गुरु जी के चरणों पर पड़ गया। तब गुरु जी ने पूछा कि तुम कौन हो ? उसने कहा कि मैं आप जी का बंदा हूँ। गुरु जी ने वचन किया यदि तुम हमारे बंदे हो, तो फिर जो कुछ हम कहेंगे वह तुम्हें करना पड़ेगा। माधोदास ने कहा, मुझे जो आज्ञा करोगे, उसको मैं तन-मन से मानूँगा।

माधोदास को अमृत छका कर सिंघ सजाना

माधोदास से यह भरोसा ले कर गुरु जी ने भाई दया सिंघ आदि पाँच सिंघों को आज्ञा की कि अमृत तैयार करके माधोदास को छका कर सिंघ सजा दो। आज्ञा के अनुसार माधोदास को अमृत छका कर उस का नाम गुरबख्श सिंघ रखा। परन्तु पंथ में इसका नाम बंदा सिंघ बंदा बहादुर ही प्रसिद्ध हुआ।

बंदा सिंघ को पाँच तीरों की बख्शिश तथा शिक्षा

जब बंदा सिंघ खालसा सज गया, तो आप जी ने अपने भत्थे से पाँच तीर निकाल कर बंदा सिंघ को देकर वचन किया कि आज से तुम्हें हमने खालसे का जत्थेदार माना है। विपत्ति के समय जब तुम यह तीर छोडोंगे, तो तेरे सब वैरी नष्ट हो जाएँगे। यहाँ तुम्हें कष्ट बने वहाँ पाँच सिंघों से अरदास करानी तेरे कष्ट दुर हो जाएँगे। इसके साथ हमारे यह वचन भी सदा याद रखने—

(१) गुरु बन कर गद्दी पर न बैठना (२) अपना अलग मत न चलाना (३) सिंघों के साथ मिल कर रहना।

जब तक तुम हमारे इन वचनों के अनुसार चलोगा, हम तेरे अंग-संग रहेंगे। माझे तथा मालवे के सिंघों सहित तूम्हारे साथ

www.9009.co.in

हज़ारों शहीदी सिंघों की सेना होगी। यदि तुम हमारे इन वचनों पर नहीं चलोगे, तो तेरा पतन हो जाएगा। सब कुछ सुन कर बंदा सिंघ ने आप जी को माथा टेक कर कहा कि मैं सदा ही आप जी के वचनों की तन तथा मन से पालना करता रहूँगा।

बंदा सिंघ को पंजाब की ओर भेजना

इस तरह बंदा सिंघ को सब कुछ समझा कर, गुरु जी ने पाँच सिंघों बाबा विनोद सिंघ, बाबा काहन सिंघ, बाज सिंघ, राम सिंघ तथा दया सिंघ के साथ तैयार करके हुक्म किया कि तुम बंदा सिंघ के साथ पंजाब जाओ तथा माझे, मालवे के सिंघों को साथ ले कर दुष्टों को पकड़ कर उन्हें योग्य दंड दो।

तद्उपरान्त बंदा सिंघ तैयारी करके पाँचों सिंघों के साथ पंजाब को चल पड़ा तथा कुछ दिनों के बाद ठहरता हुआ खड़ खौड़े रोहतक ज़िला में आ ठहरा। यहाँ से बंदा सिंघ ने गुरु जी के हुक्म की मोहर लगा कर और पाँच सिंघ बाबा बिनोद सिंघ आदि के हस्ताक्षर करा कर माझे मालवे के सारे सिंघ जत्थे को पत्र लिखे कि खालसे के वैरी दुष्टों को दण्ड देने के लिए शस्त्र धारण करके जल्दी ही मेरे पास खड़ खौड़े पहुँच जाओ।

नादेड़ में कौतुक

अपना पक्का पड़ाव करके दर्शन अभिलाषियों को दर्शन उपदेश देने के लिए रोज़ दीवान सजाते तथा कई तरह के उपदेश के द्वारा श्रद्धालुयों को निहाल करते। तीसरे पहर सिंघों के जत्थे के साथ शिकार को जा रहे थे कि वहाँ बहादुरशाह भी आ गया। उसने आप जी को एक बहुमूल्य हीरा भेंट करके नमस्कार किया। गुरु जी ने उस हीरे को देख कर नदी में गिरा दिया। यह देख कर बहादुरशाह बड़ा हैरान तथा चुप का चुप ही रह गया। इस स्थान का नाम हीरा घाट प्रसिद्ध है।

www.9009.co.in

(२) शिकार घाट—गोदावरी के जिस घाट से निकल कर गुरु जी नदी से पार जाते थे उसका नाम शिकार घाट प्रसिद्ध है।

(३) एक दिन जब आप जी नदी के किनारे बैठे हुए थे, तो एक सिक्ख आया तथा उसने बड़ी श्रद्धा से आप जी को एक नगीना भेंट रख कर माथा टेका। आप जी ने इस नगीने को बड़ी अच्छी तरह हाथ में रख कर देखा तथा फिर नदी में गिरा दिया। सिक्ख ने कहा महाराज ! यह नगीना तो बड़ा कीमती था, आप ने इसको मामूली समझ कर गिरा दिया। गुरु जी ने कहा कि यह बहुत कीमती है, तो तुम पानी में जा कर इसको निकाल लो। यह वचन सुन कर सिक्ख पानी में कूद पड़ा तथा उसने देखा कि वहाँ ढेरों नगीने पड़े हुए हैं एक की कौन सी बात है। तब उसने पानी से बाहर आ कर गुरु जी को माथा टेका और अपनी भूल की क्षमा माँगी। गुरु जी ने हँस कर कहा, हरि हरि का स्मरण किया करो, तेरी भूल की यही क्षमायाचना है, यह स्थान 'नगीना घाट' के नाम से प्रसिद्ध है।

गुरु जी के महिल साहिब देवां जी तथा बाबा गुरबख्श सिंघ जी ने पंजाब आना

अन्तर्यामी सतिगुरु जी ने अपने सचखंड जाने का समय नज़दीक आया जान कर अपने महिल सहिब देवां जी को बाबा गुरबख्श सिंघ (भाई राम कुएर) जी के साथ दिल्ली अपने महिल सुंदरी जी के पास भेजने की तैयारी की, तो बाबा जी ने प्रार्थना की पातशाह ! मेरा यह नियम है कि मैं आप जी के दर्शन किए बिना भोजन नहीं पाता। अब मेरा यह नियम किस तरह निभेगा ? गुरु जी ने वचन किया कि जब तुम शस्त्र धारण करके बाहर शिकार खेलने जाया करोगे, तुम्हें हमारे प्रत्यक्ष दर्शन हुआ करेंगे। फिर

आप जी के महल माता साहिब देवां जी ने प्रार्थना की कि स्वामी जी ! मेरा नियम भी है कि मैं आप जी के दर्शन किए बिना भोजन नहीं करती। तुम से अलग हो कर मेरा यह नियम किस तरह पूरा होगा? गुरु जी ने वचन किया, तुम हमारे पाँच शस्त्र ले जाओ इन को आदर के साथ रखना। प्रातः काल करके जब हमारा ध्यान धर कर इन को देखोगे, तो हमारा दर्शन हो जाया करेगा।

इस तरह बचन करके अपने महल श्री मति साहिब देवां जी को पाँच शस्त्र दे कर कुछ सेवादारों सहित बाबा गुरबख्श सिंघ के साथ दिल्ली भेज दिया। बाबा जी माता जी को दिल्ली में माता सुन्दरी जी के पास छोड़कर आप अपने नगर रमदास आ गए।

गुरु जी पर एक पठान का कटार से वार करना

गुरु जी दोनों समय दीवान लगा कर संगत को अपने उपदेश के द्वारा जीवन सफल करने का उपदेश दे कर निहाल करते थे। इस समय दो युवक पठान भी दीवान में उपस्थित हो कर प्रेमसहित आप जी के वचन सुनते थे।

एक दिन संध्या के समय जब गुरु जी अपने तंबू में विश्राम कर रहे थे, तो इन में से एक पठान गुलखाँ ने समय ताड़ कर आप जी के पेट में कटार के दो वार कर दिए। गुरु जी ने तत्काल ही अपने आप को संभाल कर गुलखाँ का सिर कृपाण के एक वार से ही धड़ से अलग कर दिया। यह घटना देख कर गुलखाँ के साथी रुस्तम खाँ को जो तंबू से बाहर खड़ा था पहरेदार सिंघों ने मार दिया। तद्उपरान्त सिंघों ने नादेड़ नगर से जराह को बुला कर आप जी के जख्मों की मरहम पट्टी करवाई तथा रोज़ ही आप जी की देह अरोगता के लिए वाणी का पाठ तथा अरदास करने लगे।

www.9009.co.in

सिरी गुरु ग्रंथ साहिब जी को गुरू स्थापित करना

जब गुरु जी के जख्म बहुत गहरे होने के कारण ठीक होने की कोई आशा न रही, तो सिंघो ने बे-बस हो कर प्रार्थना की कि सच्चे पातशाह ! हमें आप किसके पास छोड़ कर सचखंड की तैयारी कर रहे हो? आप के पीछे हमारी रखवाली कौन करेगा आदि।

सिंघों की प्रार्थना सुन कर गुरु जी ने सिरी गुरू ग्रंथ साहिब का प्रकाश करवाया तथा पाँच तैयार सिंघ हजूरी में खड़े करके, आप ने तीन परिक्रमा करके पाँच पैसे के नारियल सिरी गुरू ग्रंथ साहिब के आगे रख कर माथा टेक कर बचन किया कि आज से देहधारी गुरु का सिलसिला समाप्त करके इस वाणी को आत्मप्रकाश करने वाली बड़े गुरु साहिब तथा प्रभु के भक्तों ने उच्चारण की हुई है, गुरु नानक साहिब जी की गुरुगद्दी पर स्थापित्त कर दिया। हमारे बाद यह गुरु युगों-युग अटल रहेगा। जिसने हमारे आत्मिक दर्शन करने हो, वह इस शब्द गुरु के दर्शन करे और जिस ने हमारे पाँच भूतक शरीर के दर्शन करने हों, तो वह हमारे तैयार बर तैयार खालसे के दर्शन करे।

कार्तिक सुदी दूज संवत् १७६५ वाले दिन आप जी ने खालसा पंथ को सिरी गुरू ग्रंथ साहिब जी के सम्मुख करके यह वचन किया—

दोहरा।। गुरु ग्रंथ जी मानिओ प्रगट गुरां की देह।।
जो प्रभ को मिलबो चहै खोज शबद में लेह।।

सिंघों को धैर्य तथा अन्तिम उपदेश

गुरु स्थापना की मर्यादा करके गुरु जी ने सिंघों को हुक्म दिया कि हमारा अंगीठा तैयार करो तथा उसके चारों तरफ कनात लगा

www.9009.co.in

दो। तब हुक्म मान कर सिंघों ने चंदन का अंगीठा तैयार करके उसके चारों ओर कनात लगा दी।

इस कार्य की तैयारी करके जब आप जी ने सिंघों को बहुत शोकातुर देखा, तो सब को बैठा कर बड़े प्रेम से बचन किए कि हे प्यारे सिंघों ! अकाल पुरुष के नियम के अनुसार, यह अस्थूल शरीर मिलते और बिछड़ते रहते हैं, इनका प्यार कभी नहीं निभता। सिरी गुरू ग्रंथ साहिब की वाणी हमारा हृदय है। रात-दिन इनके मिलने से प्रभु के गुणों को अपने मन में जोड़ना। इन की उपस्थिति में पाँच सिंघ जो हुक्म करेंगे, उसे गुरु का हुक्म मान कर स्वीकार करना।

गुरुवाणी का पाठ और शस्त्रों का अभ्यास करना। गुरु साहिब का इतिहास सुनना। पाँच रहितवान सिंघों को मेरा रूप समझना। जो श्रद्धा से पाँच सिंघों से अरदास कराएगा, उसके सभी मनोरथ पूरे होंगे।

चढ़ाई का कमर कस्सा

सिंघों को धैर्य उपदेश देकर जब आधी रात बीत गई तो आप जी ने पहले 'जपुजी साहिब' फिर—"हरि हरि जन दुइ ऐक है।। बिब बिचार किछु नाहि।। जल ते उपज तरंगि ज्यों जल ही बिखै समाहि।।" आदि पाँच दोहरे पढ़ कर अरदास की और तद्उपरान्त मखमल का कमरकस्सा करके कृपान, धनुष, तीर तथा हाथ में बंदूक पकड़ कर सिक्ख बीरों को हाथ जोड़ कर "वाहिगुरु जी का खालसा।। वाहिगुरु जी की फतहि।।" बुलाई, इस समय सिक्ख संगत जब बड़ी सेजल नेत्रों से आप जी को नमस्कार करने लगीं, तो उनको आप जी के शरीर की कोई छूह प्रतीत न हुई, मगर शरीर करके आप जी के दर्शन सब को हो रहे थे। इस कौतुक को

www.9009.co.in

अनुभव करके सब संगत ने हाथ जोड़ कर धरती पर शीश रख कर आप जी को नमस्कार किया।

अनंत में अंत

अन्तिम समय आप जी ने अपने सिंघों को कहा कि अब तुम सब अपने-अपने घर चले जाना और जथेदार संतोख सिंघ को आज्ञा की कि तुम यहाँ रह कर हमारे स्थान की सेवा करनी जो धन आ जाए उस से लंगर चलाना।

यह वचन करके आप जी कनात अंदर चले गए और चिखा ऊपर चौंकड़ा मार कर बैठ गए। तद्उपरान्त चिखा को अग्नि प्रचंड करा कर ज्योति में ज्योत मिला कर अनंत में लीन हो गए।

वाहिगुरु जी का खालसा ।। वाहिगुरु जी की फतह।।

— इति —

✧❖✧

www.9009.co.in